न्यू पैटर्न

सुबोध

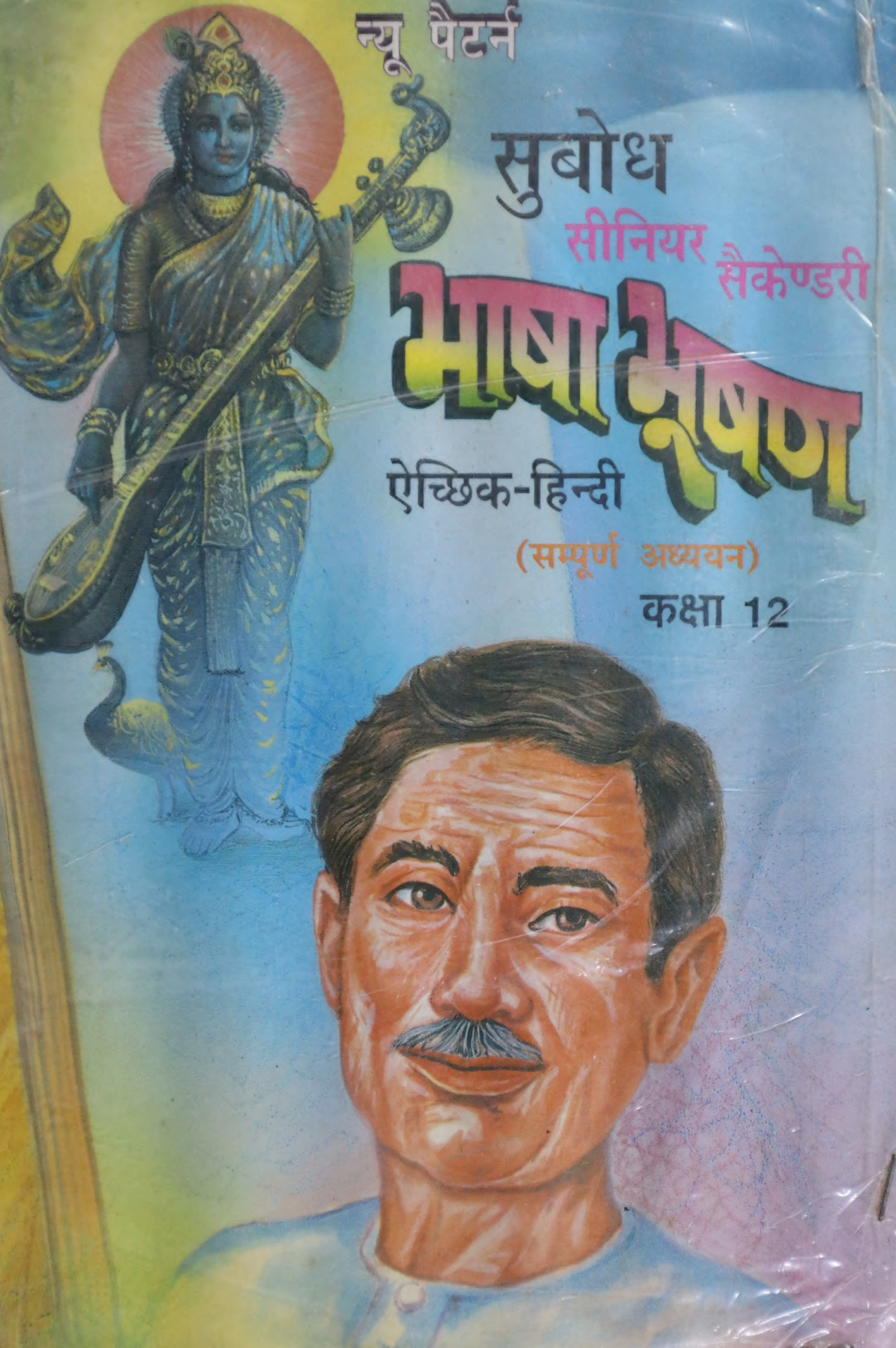
सीनियर सैकेण्डरी

भाषा भूषण

ऐच्छिक-हिन्दी

(सम्पूर्ण अध्ययन)

कक्षा 12



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

न्यू पैटर्न सुबोध

भाषा-भूषण

(रजिस्टर्ड)

(कक्षा 12 की विशेष हिन्दी विद्यार्थियों के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक पुस्तक)

विशेष हिन्दी

सम्पूर्ण अध्ययन

(प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न-पत्र सहित)

A specimen by Dr. K.K. Sharma 18/7/95

लेखक :

श्याम सुन्दर शर्मा

प्रकाशक :

पब्लिकेशन सेन्टर

चूड़ी वाली गली, मथुरा।

वितरक : मीतल प्रकाशन मन्दिर, मथुरा।

प्रकाशक :
कृष्णगोपाल मीतल
पब्लिकेशन सेन्टर
चूड़ी वाली गली, मथुरा
[0565]
फोन : 408143
406187

मूल्य :
साठ रुपया मात्र

लेजर टाइप सैटिंग
लैजर पांइट एवम्
फोटोकोम
आगरा.

मुद्रक
राजेन्द्र प्रिन्टर्स ऑफसैट यूनिट
डी-25, इण्डस्ट्रियल एरिया
साइट 'ए'
मथुरा.

प्राक्कथन

सीनियर सैकण्डरी के छात्रों के निमित्त विशेष हिन्दी का प्रथम संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। सफलता का पर्याय बनी सुबोध भाषा-भूषण उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री का आदर्श उपस्थित करके छात्र हित में अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करने में अद्वितीय सिद्ध हुई है।

'गागर में सागर' में अध्याय के सम्पूर्ण भाव का समावेश करके विद्यार्थियों के ज्ञान लाभ का विशेष ध्यान रखा गया है। ज्ञानाभिवृद्धि तथा उत्तम अंक प्राप्ति में पूर्णरूपेण सहायक यह पुस्तक प्रत्येक कोण से छात्रोपयोगी है। छात्रों की इस पुस्तक के प्रति अत्यन्त प्रियता इस प्रकाशन की श्रेष्ठता तथा पुस्तक की उपयोगिता का सुस्पष्ट प्रमाण है।

प्रकाशन के शुभेच्छुजन एवम् शिक्षार्थियों के अपार स्नेह तथा सहयोग के परिणामस्वरूप ही हम उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के पश्चात् राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद् के लिए छात्रोपयोगी सामग्री का प्रकाशन करने में समर्थ हो सके हैं। एतदर्थ प्रकाशन के सभी सहयोगी बन्धु एवम् शिक्षार्थियों का हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक की विशेषताओं को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए इसे अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए हमें आपके बहुमूल्य परामर्श तथा सुझावों की अपेक्षा है।

पुस्तक की विशेषताएँ-

- सभी अध्यायों के प्रारम्भ में 'गागर में सागर' शीर्षकान्तर्गत उस अध्याय का सार दिया गया है।
- पाठ्य पुस्तक के वस्तुनिष्ठ, अति लघु, लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर अत्यन्त सरस एवम् सरल भाषा में दिए गए हैं।
- परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देकर विद्यार्थियों के अधिकाधिक ज्ञान वृद्धि एवम् परीक्षा में उत्तम अंक प्राप्ति का प्रयास किया गया है।

हमें आशा है कि आपका स्नेह तथा सहयोग हमें सदा प्राप्त होगा।

स्नेहाकांक्षी

लेखक एवं प्रकाशक

विषय सूची

विशेष हिन्दी (प्रथम प्रश्न-पत्र)

निबन्ध 208-263

11. "लज्जा और ग्लानि" लेख के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य पश्चात्ताप की ग्लानि का अनुभव कब करता है ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

12. "अकेलापन और पार्थक्य" पाठ की मूल चेतना क्या है ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

13. "गाँव का जीवन" आत्मकथांश के अनुसार "दशहरा" के दिन किसकी पूजा होती थी और यह समाज के किस वर्ग का त्यौहार माना जाता है ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

14. नेहरू जी ने संस्कृत भाषा से उत्पन्न कौन-कौन-सी भाषाओं की एक लिपि का सवाल उठाया है ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

15. "प्रगतिवाद" नामकरण की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

....

....

$1\frac{1}{2}$

16. "नई कविता" की प्रमुख तीन प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

....

....

$1\frac{1}{2}$

17. "चरित्र के दैवी अंश को अपनाकर साधारण मनुष्य भी महापुरुष बन जाता है।"

इस कथन के आधार पर महापुरुष के लक्षण बताइए।

....

....

2

18. श्रेष्ठ निबन्ध की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

2

भाग 'ब'

समय : 2·1/2 **पूर्णांक : 55**

1. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या लगभग **150** शब्दों में कीजिए :—

मैं अपने देश का एक नागरिक हूँ और मानता हूँ कि मैं अपना देश हूँ। जैसे मैं अपने लाभ और सम्मान के लिए हरेक छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देता हूँ, वैसे ही मैं अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दूँ, यह मेरा कर्त्तव्य है और जैसे मैं अपने सम्मान और साधनों से अपने जीवन में सहारा पाता हूँ वैसे ही देश के सम्मान और साधनों से भी सहारा पाऊँ, यह मेरा अधिकार है। बात यह है मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो हैं ही नहीं।

अथवा

यह युग का अकाट्य सत्य है कि जो व्यक्ति सामाजिक-सांस्कृतिक सीढ़ी पर जितना ऊँचा चढ़ता और बढ़ता है, वह व्यक्ति अपनी भूमि से अपने ही लोगों से उतना ही दूर, उतना ही अलग, उतना ही भिन्न, उतना अन्य और उतना ही अपरिचित, उतना ही अजीब और अजनबी हो जाता है—भले ही वह मंच पर चढ़कर जनता की तरफ से बोले या सौन्दर्यवाद की ओर से या व्यक्ति-स्वातंत्र्य की तरफ से भाषण दे। 3

2. अधोलिखित अवतरण की सप्रंसग व्याख्या लगभग **150** शब्दों में कीजिए :—

अतीत की यह स्मृतिस्वरूपा कल्पना कितनी मधुर, कितनी मार्मिक और कितनी लीन करने वाली होती है, सहृदयों से न छिपा है, न छिपाते बनता है, मनुष्य की अन्तर्प्रवृति पर इसका प्रबल प्रभाव स्पष्ट है। हृदय रखने वाले इसका प्रभाव, इसकी सजीवता अस्वीकृत नहीं कर सकते।

अथवा

विजय की यादगार पर यह कैसा लेख ? मैं कुछ देर तो आश्चर्य में डूब गया। युद्ध, संघर्ष, इनमें सफलता। अपनी आधिभौतिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए खून की नदियाँ बहाने के बाद, उसमें सफलता प्राप्त करने के पश्चात्, उस सफलता के स्मारक पर यह आध्यात्मिक लेख। आसक्ति के प्रतीक पर अनासक्ति की यह प्रेरणा। 3

3. "दूसरों का भय हमें भगा सकता है, हमारी बुराइयों को नहीं। दूसरे से हम भाग सकते हैं, पर अपने से नहीं।"

"लज्जा और ग्लानि" पाठ के आधार पर उक्त कथन की पुष्टि लगभग **100** शब्दों में कीजिए। 3

4. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध "भारतीय संस्कृति की देन" की समीक्षा निम्न बिन्दुओं के आधार पर लगभग **100** शब्दों में कीजिए :—

(क) भाव (ख) भाषा-शैली 3

5. "आँसू" पाठ को आधार मानते हुए पं. बालकृष्ण भट्ट की रचना-शैली की समीक्षा लगभग **100** शब्दों में कीजिए। 3

6. "रामा आज भी सत्य है, सुन्दर है और स्मरणीय है।"

महादेवी वर्मा द्वारा वर्णित "रामा" जैसे किसी अन्य पात्र की कल्पना करते हुए उसका संस्मरणात्मक रेखाचित्र लगभग **100** शब्दों में लिखिए। 3

7. "गाँव का जीवन" आत्मकथांश में उन दिनों गाँव में मनोरंजन के साधन क्या-क्या थे ? वर्तमान में मनोरंजन के साधनों में क्या परिवर्तन आ गये हैं ? 3

8. "लोकगीत लोकजीवन का चित्र है।"

प्रस्तुत कथन की सोदाहरण पुष्टि नरोत्तमदास स्वामी के "लोकगीत" निबन्ध के आधार पर लगभग **200** शब्दों में कीजिए। 5

9. "उत्तर भारत के यात्रियों को दक्षिण का यह प्रदेश अवश्य देखना चाहिए।"

इस कथन का सोदाहरण औचित्य पं. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी के 'आत्मकथांश' के आधार पर लगभग **200** शब्दों में प्रतिपादित कीजिए। 5

10. छायावाद की प्रमुख भावगत प्रवृत्तियों का लगभग **200** शब्दों में उल्लेख कीजिए। 5

11. हिन्दी कहानी के विकास के सोपानों का क्रमबद्ध वर्णन लगभग **200** शब्दों में कीजिए। 4

12. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग **400** शब्दों में निबन्ध लिखिए :— 15

(क) पर्यावरणीय समस्याएँ व समाधान (ख) राष्ट्रीय उत्थान में नारी का योगदान

(ग) साहित्य और समाज (घ) छात्र आक्रोश : कारण व उपाय

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 1995

वैकल्पिक वर्ग I (OPTIONAL GROUP I—HUMANITIES)

विशेष हिन्दी—द्वितीय पत्र

(ADVANCED HINDI — Second Paper)

समय : 3 घण्टे — भाग 'अ' — पूर्णांक : 75

समय-30 मिनट — **पूर्णांक - 20**

1. 'घरु घरु डोलत दीन ह्वै जनु जनु जाचतु जाइ।
दिये लोभ चसमा चखनु लघु पुनि बड़ौ लखाइ॥'
उपर्युक्त दोहे में बिहारी ने क्या सन्देश दिया है ?
(क) घर-घर दीन बनकर नहीं डोलना चाहिए। (ख) हर एक के पास नहीं माँगना चाहिए।
(ग) मनुष्य को लोभ नहीं करना चाहिए। (घ) छोटे को बड़ा नहीं समझना चाहिए।( ) 1/2

2. 'भिक्षुक' नामक कविता में कवि का मनोभाव क्या है ?
(क) आक्रोश (ख) त्रास (ग) ग्लानि (घ) करुणा ( ) 1/2

3. ''अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी॥''
इस पंक्ति में निहित मनोभाव क्या है ?
(क) क्षोभ (ख) रोष (ग) विस्मय (घ) साहस ( ) 1/2

4. ''मुझसे मैंने ही आज स्वयं मुँह फेरा, हे आर्य, बता दो तुम्हीं अभीप्सित मेरा।''
इन पंक्तियों में निहित भरत का मनोभाव क्या है ?
(क) ग्लानि (ख) दीनता (ग) पश्चाताप (घ) विषाद ( ) 1/2

5. 'अनूठी आभा से सरस सुषमा से सुरस से। बना जो देती थीं बहुगुणमयी भू विपिन को॥'
प्रस्तुत पंक्तियाँ किस वर्णिक छंद की हैं ?
(क) द्रुतविलम्बित (ख) मालिनी (ग) शिखरिणी (घ) मन्दाक्रान्ता ( ) 1/2

6. 'अखिल भुवन, चर, अचर, सब हरि मुख में लखि मातु।
चकित भई गद्‌गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु॥'
इन पंक्तियों में किस रस की व्यञ्जना है ?
(क) रौद्र (ख) अद्‌भुत (ग) वीभत्स (घ) भयानक ( ) 1/2

7. 'राम से राम, सिया सी सिया, सिरमौर बिरंचि बिचारि सँवारे।'
इन पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
(क) विभावना (ख) अन्योक्ति (ग) अनन्वय (घ) प्रतीप ( ) 1/2

8. 'देश में मिलते नहीं हैं धीर गाँधी सदृश के।'
इस पंक्ति में कौन-सा काव्य-दोष है ?
(क) श्रुतिकटुत्व (ख) अक्रमत्व (ग) न्यूनपदत्व (घ) अधिकपदत्व ( ) 1/2

प्रश्न-संख्या 9 से 12 तक प्रत्येक का उत्तर लगभग 20 शब्दों में तथा 13 से 18 तक प्रत्येक का उत्तर लगभग 25 शब्दों में दीजिए।

9. 'मन्दाक्रान्ता' छन्द के लक्षण लिखिए।

....

....

$1\frac{1}{2}$

10. रस-प्रक्रिया में स्थायी भाव किसे कहते हैं ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

11. 'वक्रोक्ति' अलंकार की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

....

....

$1\frac{1}{2}$

12. काव्य में 'ओजगुण' किसे कहते हैं ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

13. "गौतम तिय गति सुरति करि, नहिं परसति पग पानि।
मन बिहंसे रघुबंस मनि, प्रीति अलौकिक जानि॥"

सीता जी राम के चरण-स्पर्श करने में अहल्या का स्मरण करके क्यों सकुचा रही थीं ? स्पष्ट कीजिए।

....

....

$1\frac{1}{2}$

14. "मुनियों को दक्षिण देश आज दुर्गम है,
बर्बर कोणप-गण वहां उग्र यम-सम है।
वह भौतिक मद से मत यथेच्छाचारी,
मेटूंगा उसकी कुगति-कुमति मैं सारी॥"

राम के अनुसार मुनियों को दखिण देश दुर्गम क्यों हो गया था ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

15. "विस्मृति आ, अवसाद घेर ले, नीरवते ! बस चुप कर दे,
चेतनता चल जा, जड़ता से आज शून्य मेरा भर दे॥'

मनु चेतना की अपेक्षा विस्मृति क्यों चाहता है ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

16. "नगर ढँढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोइ।'

मीरा के इस कथन को राधा सुनती तो वह क्या कहती ?

....

....

$1\frac{1}{2}$

17. "काज परै कछु और है, काज सरै कछु और। रहिमन भंवरी के भए, नदी सिरावत मौर॥"

इस दोहे में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

....

....

$1\frac{1}{2}$

18. "कि तुम्हारा संगीत मेरी विवशता है
और मोर पाँख का सौन्दर्य तुम्हारी ?" कवि ने ऐसा क्यों कहा ?

....

....

भाग 'ब'

समय : 2 1/2 **पूर्णांक : 55**

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लगभग 200 शब्दों में कीजिए :—

"माधव ! असि तुम्हारि यह माया।
करि उपाय पचि मरिय, तरिय नहिं जब लगि करहु न दाया॥
सुनिय, गुनिय, समुझिय, समुझाइय, दसा हृदय नहिं आवै।
जेहि अनुभव बिनु मोहजनित भव दारुन विपति सतावै॥"

अथवा

"वह छाया है मेरे पावन विश्वासों की,
वह पूँजी है मेरे गूँगे अभ्यासों की,
वह सारी रचना का क्रम है,
वह जीवन का संचित श्रम है,
बस उतना ही मैं हूँ,
बस उतना ही मेरा आश्रय है,
तुम उसको मत वाणी देना।" 5

2. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 200 शब्दों में कीजिए :—

"थी सनक्षत्र शशि-निशा ओस टपकाती,
रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती।
उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी,
सब में भय-विस्मय और खेद भरती थी।

अथवा

"सुरा सुरभिमय बदन अरुण वे नयन भरे आलस अनुराग,
कल कपोल था जहां बिछलता कल्पवृक्ष का पीत पराग।
विकल वासना के प्रतिनिधि वे सब मुरझाये चले गये,
आह ! जले अपनी ज्वाला में फिर वे जल में गल, गये।" 5

3. "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना।"
उपर्युक्त पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम एवं लक्षण लिखिए। (उत्तर-सीमा : 50 शब्द) 3

4. 'द्रुतविलम्बित' छन्द के लक्षण लिखिए एवं उदाहरण दीजिए। (उत्तर-सीमा : 50 शब्द) 3

5. 'कहूँ धूम उठत, बरति कहूँ है चिता, कहूँ होत रोर, कहूँ अरथी धरी अहै,
कहूँ हाड़ परो, कहूँ जरो अधजरो बाँस, कहूँ गीध-भीर माँस नोचत अरी अहै।'
इन पंक्तियों में व्यञ्जित रस का नाम लिखकर इसमें निहित आलम्बन एवं उद्दीपन विभाव को स्पष्ट कीजिए। (उत्तर-सीमा : 50 शब्द) 3

6. न्यूनपदत्व एवं अधिकपदत्व काव्य-दोषों की सोदाहरण विवेचना कीजिए। (उत्तर-सीमा : 50 शब्द) 3

7. "पानी बिच मीन पियासी।
मोहि सुनि आवत हाँसी॥"
कबीर की इस उक्ति को आज का युवा-हृदय किस रूप में ग्रहण करेगा ? कल्पना के आधार पर मौलिक विचार प्रस्तुत कीजिए। (उत्तर-सीमा : 125 शब्द) 4

8. "राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त में देश-भक्ति की गंगा और श्रीराम-भक्ति की यमुना प्रवाहित होती है।"
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के इस कथन की अपने पठित काव्यांश के आधार पर समीक्षा कीजिए। (उत्तर-सीमा : 125 शब्द) 4

9. पठित कविताओं के आधार पर 'जयशंकर प्रसाद' की मधुर एवं कोमल भाषा और उनकी भावाभिव्यंजना की सोदाहरण विवेचना कीजिए। (उत्तर-सीमा : 125 शब्द) 4

10. पठित काव्यांश के आधार पर तुलसीदास की शब्द योजना, शैली एवं भाव-व्यंजना की सोदाहरण विवेचना कीजिए। (उत्तर-सीमा : 250 शब्द) 6

11. डॉ. नन्दकिशोर आचार्य को 'मरुस्थल के सौन्दर्य का कवि' कहना कहाँ तक उचित है ? पठित कविताओं के आधार पर सोदाहरण विवेचना कीजिए। (उत्तर-सीमा : 250 शब्द) 6

12. "यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया।
अपराधिन मैं हूँ तात तुम्हारी मैया॥"
कैकेयी की इन पंक्तियों को यदि दशरथ सुनते तो उनके मन में क्या प्रतिक्रिया होती ? कल्पना के आधार पर मौलिक विचार प्रस्तुत कीजिए। (उत्तर-सीमा : 150 शब्द) 5

13. जल-प्रलय के समय ब्रजवासियों को बचाने हेतु किये गये कृष्ण के व्यवहार से माता यशोदा पर क्या प्रतिक्रिया हुई होगी ? कल्पना के आधार पर उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा : 125 शब्द) 4

विशेष हिन्दी

प्रथम प्रश्न-पत्र

१ मैं और मेरा देश (कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर")

● *गागर में सागर*

***निबन्ध*–** संस्मरणात्मक।

***लेखक*–** कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'। **जन्म–** सन् १९०६। मृत्यु–9 मई सन् 1995 **स्थान–** देवबन्द (सहारनपुर)। **रुचि–** सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, लेखन, पत्रकारिता।

***कृतियाँ*– संस्मरण** –दीप जले, शंख बजे।

***लघु कथा*–** आकाश के तारे : धरती के फूल।

***निबन्ध*–** महके आंगन : चहके द्वार, बाजे पायलिया के घुंघरू।

***रिपोर्ताज*–** क्षणबोले : कण मुसकाये, बूँद-बूँद सागर लहराये।

***रेखाचित्र*–** नयी पीढ़ी : नए विचार, माटी हो गई सोना, जिन्दगी मुसकरायी।

***मैं और मेरा देश*–** राष्ट्र गौरव-रक्षा की प्रेरणा* लाला लाजपत राय, स्वामी रामतीर्थ, कमालपाशा, जवाहरलाल नेहरू के जीवन की प्रमुख घटनाएँ* स्वतन्त्रता तथा कर्तव्य निष्ठा को प्रमुखता* भावनाओं को महत्त्व।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. 'मैं और मेरा देश' निबन्ध का उद्देश्य है–

(क) अपनी महत्ता बताना

(ख) अपने देश का बखान करना

(ग) देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा देना

(घ) देश के प्रति कर्तव्य बोध एवम् दायित्व भावना जागृत करना।

***उत्तर*–** (ख) अपने देश का बखान करना।

प्रश्न २. किस स्थिति में स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन गौरव नहीं दे सकते–

(क) जब व्यक्ति बीमार हो (ख) जब देश गुलाम हो

(ग) मानस में भूकम्प उठा हो (घ) सब ओर अस्थिरता हो।

***उत्तर*–** (ख) जब देश गुलाम हो।

प्रश्न ३. राष्ट्रपति कमाल पाशा ने देहाती बूढ़े के उपहार को सर्वोत्तम क्यों बताया? क्योंकि–

(क) वह शहद बहुत कीमती था

(ख) उसमें हीरे-मोती मिले हुए थे

(ग) वह बड़ी मेहनत से तैयार किया गया था

(घ) उसमें बूढ़े के हृदय का शुद्ध प्यार भरा था।

***उत्तर*–** (घ) उसमें बूढ़े के हृदय का शुद्ध प्यार भरा था।

प्रश्न ४. कौन-सा शब्द उपसर्ग युक्त नहीं है?
(क) अपमान (ख) सम्मान
(ग) ईमान (घ) प्रतिमान।
उत्तर–(ग) ईमान।

प्रश्न ५. 'मैं और मेरा देश' को गद्य की कौन-सी विधा कहा जायेगा–
(क) उपन्यास (ख) एकांकी
(ग) रेखाचित्र (घ) संस्मरणात्मक निबन्ध।
उत्तर–(घ) संस्मरणात्मक निबन्ध।

प्रश्न ६. किसी कार्य को महत्त्वपूर्ण कहा जाता है–
(क) कार्य की भावना के कारण (ख) कार्य की विशालता के कारण
(ग) कार्य के आदर्श के कारण (घ) कार्य की लघुता के कारण।
उत्तर–(क) कार्य की भावना के कारण।

प्रश्न ७. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' प्रसिद्ध हैं–
(क) कवि के रूप में (ख) शैलीकार के रूप में
(ग) आधुनिक गद्य निर्माता के रूप में (घ) कलम के जादूगर के रूप में।
उत्तर–(घ) कलम के जादूगर के रूप में।

प्रश्न ८. 'प्रभाकरजी' की दृष्टि में दीवार क्या है?
(क) जीवन में संघर्ष (ख) मानसिक विचार
(ग) अधिक सन्तान (घ) दुर्बल जाति।
उत्तर–(ख) मानसिक विचार।

प्रश्न ९. 'प्रभाकरजी' ने किसको तेजस्वी पुरुष माना है–
(क) महात्मा गाँधी को (ख) जवाहर लाल नेहरू को
(ग) लाला लाजपतराय को (घ) भामाशाह को।
उत्तर–(ग) लाला लाजपतराय को।

प्रश्न १०. कवि सम्मेलन की सफलता में चार चाँद लग जाते हैं–
(क) उत्तम प्रबन्ध से (ख) कवियों के व्यक्तित्व से
(ग) उपस्थित श्रोताओं से (घ) श्रोताओं की प्रशंसा से।
उत्तर–(घ) श्रोताओं की प्रशंसा से।

प्रश्न ११. 'प्रभाकरजी' ने किस भूकम्प की चर्चा की है–
(क) प्रान्तों के भूकम्प की (ख) मानसिक विचारों के भूकम्प की
(ग) दिल्ली के भूकम्प की (घ) जापान के भूकम्प की।
उत्तर–(ख) मानसिक विचारों के भूकम्प की।

प्रश्न १२. 'प्रभाकर जी' को किस भूकम्प ने हिला दिया–
(क) धरती के भूकम्प ने (ख) आकाश के कम्पन ने
(ग) अनुभव के कम्पन ने (घ) बाद के जल ने।
उत्तर–(ग) अनुभव के कम्पन्न ने।

प्रश्न १३. पराधीनता के दीन-दिनों में, अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाने वाले एक थे–
(क) सरदार पटेल (ख) पं० मदन मोहन मालवीय
(ग) पंजाब केसरी लाला लाजपतराय (घ) सरदार भगतसिंह।
उत्तर–(ग) पंजाब केसरी लाला लाजपतराय।

प्रश्न १४. युद्ध में बहुत महत्त्व है–

(क) लड़ने वालों का (ख) रसद पहुँचाने वालों का

(ग) जय बोलने वालों का (घ) अधिकारियों का।

उत्तर–(ग) जय बोलने वालों का।

प्रश्न १५. स्वामी रामतीर्थ जापान में युवक पर मुग्ध हुए–

(क) उसकी फलों की भेंट के कारण (ख) ताजा फलों के कारण।

(ग) युवक के उत्तर के कारण (घ) फलों का मूल्य न लेने के कारण।

उत्तर–(ग) युवक के उत्तर के कारण।

प्रश्न १६. नागरिक की हीनता तथा गौरव का फल मिलता है–

(क) उस नागरिक को (ख) उसके माता पिता को

(ग) उसके कार्य को (घ) उसके देश को।

उत्तर–(घ) उसके देश को।

प्रश्न १७. युवक के पुस्तक से चित्र निकाल लेने पर दण्ड दिया गया–

(अ) युवक को बन्दी बना लिया

(ब) जापान से निकाल दिया

(स) युवक के अन्य देशवासियों के पुस्तकालय प्रवेश पर रोक लगा दी

(द) तालाशी लेकर छोड़ दिया।

उत्तर–(स) युवक के अन्य देशवासियों के पुस्तकालय प्रवेश पर रोक लगा दी।

प्रश्न १८. कोई भी कार्य हीन माना जायेगा, यदि–

(अ) वह कार्य तुच्छ है

(ब) वह कार्य बुरा है

(स) वह कार्य अच्छी भावना से नहीं किया गया है

(द) वह कार्य सम्मानजनक नहीं है।

उत्तर–(स) वह कार्य अच्छी भावना से नहीं किया गया है।

प्रश्न १९. पंडित नेहरू ने उस किसान को जो उपहार दिया वह–

(अ) खाट के बदले में था

(ब) रंगीन सुतलियों से बुनी होने के कारण था

(स) खाट वाले की भावना का सम्मान था

(द) खाट वाले का पारिश्रमिक था।

उत्तर–(स) खाट वाले की भावना का सम्मान था।

प्रश्न २०. वह देश उच्च है–

(अ) जहाँ के नागरिक समृद्ध हैं

(ब) जहाँ उत्सवों की अधिकता है

(स) जहाँ के नागरिक मतदान में सोच समझ से कार्य लेते हैं

(द) उत्तेजक नारों के प्रभाव में मतदान करते हैं।

उत्तर–(स) जहाँ के नागरिक मतदान में सोच समझ से कार्य लेते हैं।

प्रश्न २१. देश की उच्चता तथा हीनता की कसौटी है–

(अ) देश की विशालता (ब) देश की कृषि

(स) देश के चुनाव (द) देश के उत्सव।

उत्तर–(स) देश के चुनाव।

प्रश्न २२. प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है–

(अ) वह मातृ-पितृ भक्त हो (ब) वह गुरु भक्त हो

(स) चुनाव में मत का सदुपयोग करें (द) नारों से दिशा निश्चित करें।

उत्तर–(स) चुनाव में मत का सदुपयोग करें।

प्रश्न २३. 'प्रभाकरजी' के मत से कौन-सी कहावत शत प्रतिशत झूठ है–

(अ) अन्धों में काना राजा (ब) आगे नाथ न पीछे पगहा

(स) इकला चना क्या भाड़ फोड़े (द) इधर कुआँ तो उधर खाई।

उत्तर–(स) इकला चना क्या भांड़ फोड़े।

प्रश्न २४. शल्य की किस बात ने कर्ण की भावी पराजय की नींव रखी–

(अ) अर्जुन युद्ध को बुरा समझता है

(ब) कर्ण को बाण चलाने के लिए मना करना

(स) अर्जुन की अजेयता का उल्लेख करना

(द) अर्जुन के पास दिव्यास्त्रों का होना।

उत्तर–(स) अर्जुन की अजेयता का उल्लेख करना।

प्रश्न २५. कमाल पाशा को उपहार भेंट करने, वह वृद्ध देर से पहुँचा, क्योंकि–

(अ) वह आलसी था

(ब) अधिक वृद्ध था

(स) तीस मील पैदल चलकर आया था

(द) मार्ग में भटक गया था।

उत्तर–(स) तीस मील पैदल चलकर आया था।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "एक दिन आनन्द की इस दीवार में एक दरार पड़ गई।" यहाँ दरार किसे कहा गया है?

उत्तर–दीवार या अन्य किसी वस्तु के फटने से होने वाली रिक्तता को दरार कहते हैं। किन्तु प्रस्तुत निबन्ध में मन में आए विचारों के परिवर्तन को दरार कहा गया है।

प्रश्न २. "एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव ही वह भूकम्प था जिसने मुझे हिला दिया।" यह अनुभव क्या था?

उत्तर–एक तेजस्वी पुरुष लाला लाजपतराय थे जिनका अनुभव ही भूकम्प था। उनका अनुभव था, "संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।"

प्रश्न ३. जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से फलों के बदले में क्या मूल्य माँगा?

उत्तर–जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से फलों के बदले में माँगा, "आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहियेगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।"

प्रश्न ४. हमारे देश को किन दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज्यादा जरूरत है?

उत्तर–हमारे देश को निम्नांकित दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज्यादा जरूरत है–(१) शक्ति-बोध, (२) सौन्दर्य-बोध।

प्रश्न ५. पं० नेहरू ने उपहार में खाट देने वाले किसान की भावना का सम्मान किस प्रकार किया?

उत्तर– पं० नेहरू ने उपहार में खाट देने वाले किसान की भावना का सम्मान उसको अपना हस्ताक्षर युक्त फोटो उपहार में देकर किया।

प्रश्न ६. देश के 'शक्ति-बोध' को बनाये रखने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

उत्तर– देश के शक्ति-बोध को बनाये रखने के लिए हमें कभी भी देश की दुर्बलता को बढ़ावा देने वाली बातें नहीं करनी चाहिए तथा ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए जो दुर्बल भावनाओं में वृद्धि करते हों।

प्रश्न ७. देश के सौन्दर्य-बोध को आघात पहुँचाने वाले तत्त्व कौन-से हैं?

उत्तर– देश के सौन्दर्य-बोध को आघात पहुँचाने वाले तत्त्व हैं–केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकना। अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकना। मुँह से गन्दे शब्दों में गन्दे भाव प्रकट करना। इधर की उधर, उधर की इधर लगाना। अपना घर, दफ्तर, गली गन्दी रखना। होटलों, धर्मशाला-ओं आदि के जीनों तथा कोनों में पीक थूकना।

प्रश्न ८. देश की उच्चता और हीनता की कसौटी क्या है?

उत्तर– देश की उच्चता और हीनता की कसौटी है–चुनाव। देश वही उच्च है जिसके नागरिक मत का उचित उपयोग जानते हों। देश की हीनता इस रूप में प्रकट होती है कि वहाँ के नागरिक उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के दुष्प्रभाव में मत का दुर्पयोग करते हैं।

प्रश्न ९. "बार-बार के इस उल्लेख ने कर्ण के सघन आत्म-विश्वास में सन्देह की तरेड़ डाल दी।" यह उल्लेख क्या था?

उत्तर– कर्ण के सारथी का नाम शल्य था। वह कर्ण के सघन आत्म-विश्वास में सन्देह की तरेड़ डाल देता था। वह कर्ण की विजय की घोषणा पर अर्जुन की अजेयता का उल्लेख कर देता था।

प्रश्न १०. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

पैरों में बिजली लग जाना, दाद देना, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

उत्तर– मुहावरा– पैरों में बिजली लग जाना।

अर्थ–तीव्रता आ जाना।

प्रयोग– सफलता का समाचार सुनकर तो उसके पैरों में बिजली लग गई।

मुहावरा– दाद देना।

अर्थ– प्रशंसा करना।

प्रयोग– कवि सम्मेलनों की सफलता उसके दाद देने वालों पर निर्भर है।

मुहावरा– अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

अर्थ– अकेले व्यक्ति से महान् कार्य नहीं हो सकता।

प्रयोग– जनतन्त्र में अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

प्रश्न ११. भामाशाह ने देश के लिए क्या त्याग किया?

उत्तर– भामाशाह ने देश के लिए अपने सम्पूर्ण धन को महाराणा प्रताप को भेंट कर दिया ताकि देश की प्रसन्नता के लिए एक शक्तिशाली सेना तैयार की जा सके।

प्रश्न १२. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर–'प्रभाकरजी' की प्रमुख कृतियाँ हैं–

(१) **ललित निबन्ध**–महके आंगनः चहके द्वार तथा बाजे पायलिया के घुँघरू।

(२) **संस्मरण**–दीप जले, शंख बजे।

(३) **रेखाचित्र**–नयी पीढ़ीः नये विचार, जिन्दगी मुसकरायी तथा माटी हो गई सोना।

(४) **लघु-कथा**–आकाश के तारे : धरती के फूल।

(५) **रिपोर्ताज**–बूँद-बूँद सागर लहराये, क्षण बोले, कण मुसकाये।

प्रश्न १३. 'प्रभाकरजी' की भाषा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–प्रभाकरजी भाषा की विशेषताएँ हैं–(१) प्रभाव, (२) प्रवाह, (३) भाव के अनुरूप, (४) लाक्षणिकता तथा, (५) प्रतीकात्मकता।

प्रश्न १४. प्रभाकरजी की रचनाओं का मुख्य गुण क्या है?

उत्तर–प्रभाकरजी की रचनाओं का मुख्य गुण आत्मीयता तथा सहजता है जो पाठक के मन को बाँधे रखने में पूर्ण समर्थ है।

प्रश्न १५. 'मैं और मेरा देश' निबन्ध में नागरिकों को क्या सन्देश दिया गया है?

उत्तर–'मैं और मेरा देश' निबन्ध में नागरिकों को अपना कर्तव्य निभाने तथा अधिकारों का सदुपयोग करने का सन्देश दिया गया है।

प्रश्न १६. 'मैं और मेरा देश' निबन्ध में 'प्रभाकरजी' ने किन महान् व्यक्तियों के जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया है?

उत्तर–'मैं और मेरा देश' निबन्ध में प्रभाकरजी ने पंजाब केसरी लाला लाजपतराय; स्वामी रामतीर्थ, पंडित जवाहरलाल नेहरू, भामाशाह, कमाल पाशा आदि महान् व्यक्तियों के जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया है।

प्रश्न १७. 'मैं और मेरा देश' निबन्ध का उद्देश्य क्या है?

उत्तर–'मैं और मेरा देश' निबन्ध का उदेश्य महापुरुषों के जीवन की घटनाओं का उल्लेख करके कर्तव्यनिष्ठा, स्वतन्त्रता प्रेम, आत्मीयता, सहृदयता आदि सद्‌गुणों के विकास को दिशा देना है।

प्रश्न १८. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की सम्पादक छवि के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर–'प्रभाकरजी' का सम्पादन क्षेत्र में भी विशेष प्रभाव रहा है। पत्रकारिता ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा और ज्ञानोदय का सम्पादन किया। मासिक पत्रिका 'नया जीवन' के वह आज भी सम्पादक हैं।

प्रश्न १९. 'प्रभाकरजी' कला के किस रूप के उपासक हैं?

उत्तर–'प्रभाकरजी' के साहित्य में उच्च नैतिक आदर्शों को मान्यता दी गयी है। उन्होंने कला को जीवन के लिए मानकर अपने साहित्य का सृजन किया है।

प्रश्न २०. 'प्रभाकरजी' को जीवन का क्या अनुभव है?

उत्तर–'प्रभाकरजी' को जीवन का सबसे बड़ा अनुभव यह है कि किसी भी कार्य को विशालता के आधार पर नहीं परखना चाहिए। कार्य करने की भावना को महत्त्व देना चाहिए।

प्रश्न २१. "मैं और मेरा देश' निबन्ध के आधार पर बताइए कि बड़े-से-बड़ा कार्य हीन कब है और छोटे-से-छोटा कार्य महान् कब बन जाता है?

उत्तर–'मैं और मेरा देश' निबन्ध के आधार पर बड़े-से-बड़ा कार्यहीन तथा छोटे-से-छोटा कार्य उसके करने की भावना से, महान् बन जाता है।

प्रश्न २२. "मैं और मेरा देश" निबन्ध में दरार किस दीवार में पड़ने की बात कही गयी है?

उत्तर–'मैं और मेरा देश' निबन्ध में दीवार मानसिक विचारों को कहा गया है जिसमें आनन्द के सीमेण्ट में दरार पड़ने की बात कही गयी है।

प्रश्न २३. 'प्रभाकरजी' ने भूकम्प कहाँ उठने की बात कही है?

उत्तर–'प्रभाकरजी' ने अपने निबन्ध 'मैं और मेरा देश' में हृदय में उठने वाले मानसिक विचारों को भूकम्प की संज्ञा दी है जो एक तेजस्वी पुरुष के अनुभव के फलस्वरूप उठे थे।

प्रश्न २४. स्वर्गीय पंजाब केसरी लाल लाजपतराय को तेजस्वी पुरुष क्यों कहा गया है?

उत्तर–स्वर्गीय पंजाब केसरी लाला लाजपतराय को तेजस्वी पुरुष इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्होंने अपने राष्ट्र की पराधीनता के दीन-दिनों में, अपने रक्त के दीप जलाए और भयंकर बवण्डरों में भी गौरव के दीपों को बुझने नहीं दिया।

प्रश्न २५. 'प्रभाकरजी' ने लाला लाजपतराय के अनुभवों की छाया में क्या सीखा?

उत्तर–'प्रभाकरजी' ने लाला लाजपतराय के अनुभवों की छाया में सीखा कि मेरे कार्यों से देश की स्वतन्त्रता तथा सम्मान में किसी प्रकार की कोई कमी न आवे।

प्रश्न २६. एक नागरिक के रूप में हमारा क्या अधिकार है?

उत्तर–एक नागरिक के रूप में हमारा अधिकार है कि अपने देश के सम्मान का पूर्ण भार मिले तथा उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का हमें, जहाँ भी हों, पूर्ण भरोसा रहे।

प्रश्न २७. 'प्रभाकरजी' ने जीवन को क्या माना है?

उत्तर–'प्रभाकरजी' ने जीवन को एक विशाल समुद्रतट माना है जिस पर प्रत्येक जीवधारी स्थान पा सकता है। उन्होंने जीवन को युद्ध की भी संज्ञा दी है।

प्रश्न २८. युद्ध में जय बोलने वालों का महत्त्व किस उदाहरण द्वारा बताया गया है?

उत्तर–युद्ध में जय बोलने वालों का महत्त्व बताते हुए कहा है कि मैच में दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरता हुआ खिलाड़ी भी तालियों की गड़गड़ाहट से उत्साहित होकर उठ खड़ा होता है।

प्रश्न २९. जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ के मुँह से कब और क्या सुना?

उत्तर–स्वामी रामतीर्थ जापान में रेल यात्रा पर थे। उन्हें जब कहीं फल न मिले तो उनके मुँह से निकला जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते। रेल में अपनी पत्नी को बैठाने आए जापानी युवक ने ये शब्द सुन लिये।

प्रश्न ३०. स्वामी रामतीर्थ की बात सुनकर जापानी युवक ने क्या किया?

उत्तर–स्वामी रामतीर्थ की बात सुनकर जापानी युवक दौड़कर दूर से एक टोकरी ताजे फल लाया और स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए कहा–लीजिए, आपको ताजे फलों की जरुरत थी।

प्रश्न ३१. जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से उन फलों का क्या मूल्य माँगा?

उत्तर–जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से उन फलों के मूल्य के रूप में माँगा–"आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहियेगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।"

प्रश्न ३२. पुस्तक से चित्र चोरी कर लेने पर पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर क्या लिख दिया गया?

उत्तर–पुस्तक से चित्र चोरी कर लेने पर पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि उस देश का (जिसका वह विद्यार्थी था) कोई निवासी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता।

प्रश्न ३३. "मैं और मेरा देश" के अनुसार नागरिक का क्या कर्तव्य है?

उत्तर–'मैं और मेरा देश' के अनुसार नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी उसी प्रकार ध्यान दे जिस प्रकार अपने लाभ और सम्मान के लिए छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देता है।

प्रश्न ३४. 'प्रभाकरजी' ने अपने निबन्ध में नागरिक का क्या अधिकार बताया है?

उत्तर–'प्रभाकरजी' ने अपने निबन्ध में नागरिक का यह अधिकार बताया है कि अपने सम्मान और साधनों से जिस प्रकार सहारा प्राप्त किया जाता है वैसे ही देश के सम्मान और साधनों से सहारा प्राप्त करें।

प्रश्न ३५. तुर्की देश के राष्ट्रप्रति कमाल पाशा एक देहाती बूढ़े के उपहार से क्यों अधिक प्रसन्न हुए?

उत्तर–कमाल पाशा देहाती बूढ़े के उपहार से इसलिए अधिक प्रसन्न हुए, क्योंकि उस उपहार में उस देहाती के हृदय का शुद्ध प्यार मिला था।

प्रश्न ३६. प्रत्येक नागरिक अपने देश के साथ क्यों बँधा है?

उत्तर–प्रत्येक नागरिक अपने देश के साथ इसलिए बँधा है क्योंकि उस नागरिक की हीनता तथा गौरव का फल केवल उसे ही नहीं, अपितु उस नागरिक के देश को भी मिलता है।

प्रश्न ३७. शक्ति-बोध को किस प्रकार चोट पहुँचती है?

उत्तर–हम जब यह कहते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा, बड़ी परेशानी है। दूसरे देशों की तुलना में अपने देश को हीन और दूसरे देश को श्रेष्ठ सिद्ध करने से शक्ति बोध को चोट पहुँचती है।

प्रश्न ३८. सौन्दर्य-बोध को हम किस प्रकार चोट पहुँचा रहे हैं?

उत्तर–केला खाकर छिलका रास्ते में फेंककर, घर का कूड़ा बाहर फेंककर, गन्दे शब्दों में गन्दे भाव प्रकट करके, घर, दफ्तर, गली गन्दी करके तथा धर्मशाला आदि सार्वजनिक स्थानों के कोनों में पीक थूककर हम सौन्दर्य बोध को चोट पहुँचा रहे हैं।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. 'देश के प्रति हमारा कर्तव्य' विषय पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–व्यक्ति के किसी कार्य करने या न करने के दायित्व को कर्त्तव्य कहा जाता है। कर्तव्य का सम्बन्ध मानव की नैतिक भावना से होता है। इससे व्यक्ति के अन्तःकरण तथा उचित कार्य करने की प्रवृत्ति का ज्ञान सरलता से हो जाता है।

हमारा कर्तव्य अपने परिवार, ग्राम, शहर तथा जनपद के प्रति तो है ही, देश के प्रति भी है। हमें भले ही संसार का स्वामित्व मिल जाय किन्तु कभी भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश के सम्मान को ठेस पहुँचे।

हमें देश के विरुद्ध कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश की शक्ति का ह्रास होता हो। वह निर्बल बने। हमारा देश के प्रति कर्तव्य है कि सदा उसको शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करते रहें।

हम सबका कर्त्तव्य है कि देश को गौरवान्वित करने के लिए कमर कसकर तैयार रहें और आवश्यकता के समय प्रत्येक त्याग के लिए अपने आपको समर्पित कर दें। भामाशाह ने वृद्धावस्था में अपने आपको तन से देश सेवा में असमर्थ पाकर धन को महाराणा प्रताप को देकर अपनी देश भक्ति प्रकट की।

निर्वाचन के समय योग्य व्यक्ति को अपना मत देकर हम देश के प्रति अपने कर्तव्य का उचित निर्वाह कर सकते हैं। उत्तेजक नारों अथवा व्यक्तियों के दुष्प्रभाव से बचकर भी हम देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं, ऐसा माना जा सकता है।

यह किसी भी दशा में उचित नहीं है कि हम हर स्थान पर देश की निर्धनता, देश की दुर्बलता तथा देश की परेशानियों की चर्चा करते हुए घूमें। दूसरे देशों की तुलना में, अपने देश को हीन समझें। अपने देश को निष्कपट तथा अन्य देशों को श्रेष्ठ बताएँ।

देश के प्रति हमारा कर्तव्य है कि कभी भी देश के सौन्दर्य-बोध को आघात नहीं पहुँचावें। तुम्हारी सुरुचिपूर्ण क्रियाओं से देश की संस्कृति की रक्षा होती है। देश के सौन्दर्य में वृद्धि होती है। अतः यह आवश्यक है कि कभी भी अपने मुख से गन्दे भाव प्रकट न करें। सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखें। उत्सवों, मेलों, रेलों तथा खेलों में भी अपनी सुरुचि का परिचय दें।

प्रश्न २. हम कैसे जान सकते हैं कि हमारा काम देश के अनुकूल है या नहीं?

उत्तर– व्यक्ति के कार्यों को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है–

(१) देश के प्रतिकूल कार्य

(२) देश के अनुकूल कार्य

(१) देश के प्रतिकूल कार्य वे है जिनके करने से देश के सम्मान को चोट पहुँचती हो। शक्ति क्षीण होती हो और सांस्कृतिक गति विधियों को आघात पहुँचता हो।

देश में ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक है जो जाने-अनजाने में, देश के प्रतिकूल आचरण करते हैं। घर हो या सार्वजनिक स्थान, यात्री गाड़ी हो या यात्री निवास, गाँव हो या चौपाल, हर वक्त, हर स्थान पर देश के गौरव के विरुद्ध अपना भाषण करते हैं। अपने देश को दूसरे देशों की तुलना में तुच्छ बताते हैं। हीन कहते हैं। उनके इस कार्य से देश के मानसिक बल का ह्रास होता है। श्रेष्ठता का वातावरण समाप्त होता है।

(२) देश के अनुकूल कार्य वही माने और कहे जा सकते हैं जिनके करने से देश की शक्ति में वृद्धि होती है। देश को सम्माननीय स्थान की प्राप्ति होती है। गौरवशाली भविष्य की शिला रखी जाती है। हमें कभी भी दूसरे देशों की तुलना में अपने देश को हीन नहीं कहना चाहिए।

सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना। उत्सवों, मेलों तथा रेलों में अपनी सुरुचि का परिचय देना भी देश के अनुकूल कार्य है। इधर की उधर तथा उधर की इधर करना कभी भी उचित नहीं है। हमें, सदा अपने मुख से सत्य तथा शोभनीय शब्दों द्वारा सर्वप्रिय बनने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न ३. महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है।" इस कथन पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– 'मैं और मेरा देश' कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का एक संस्मरणात्मक निबन्ध है जिसमें चिन्तन की प्रधानता है।

प्रस्तुत निबन्ध में 'प्रभाकरजी' ने राष्ट्रीय गौरव की रक्षा के लिए नागरिकों का आह्वान किया है और राष्ट्र को गौरवान्वित करने की प्रेरणा दी है।

उनका यह कथन वास्तव में ही सत्य है, "महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है।"

कार्य करने की भावना को महत्त्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर दो उदाहरण प्रस्तुत किये हैं जो कार्य के करने की भावना को प्रमुखता देते हैं।

'प्रभाकरजी' ने तुर्की के राष्ट्रपति कमाल पाशा के विषय में लिखा है कि उनकी वर्षगाँठ के उपलक्ष में उन्हें विभिन्न बहुमूल्य उपहार प्राप्त हुए किन्तु एक ग्रामीण वृद्ध का उपहार उन्हें सर्वोत्तम प्रतीत हुआ।

यह सर्वोत्तम उपहार उस देहाती की एक छोटी-सी मिट्टी की हण्डिया थी जो पाव भर शहद से पूर्ण थी। राष्ट्रपति कमाल पाशा ने हण्डिया को स्वयं खोला था और उस वृद्ध पुरुष से कहा था–"दादा, आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया है। इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है।"

इस हाँडी में न तो हीरे मोती थे। न शहद ही बहुमूल्य था। यदि कुछ मूल्यवान था तो वह था शहद लाने वाले का भाव जिसे वह तीस मील पैदल चलकर भी कमाल पाशा तक लाया था।

'प्रभाकरजी' ने कार्य के करने की भावना को महत्त्वपूर्ण बताते हुए एक घटना भारत के प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू के समय की प्रस्तुत की है कि एक कृषक रंगीन सुतलियों से एक खाट बुनकर लाया और अपने कन्धे पर रखे वह उनकी कोठी पर पहुँचा। पंडित जी को वह खाट उसने दे दी और भाव मुग्ध होकर उनकी ओर देखता ही रहा। मुँह से कुछ भी नहीं बोल सका।

पंडित नेहरू ने जब उससे पूछा–'क्या चाहते हो तुम? कृषक ने केवल उस खाट को स्वीकार करने का निवेदन किया।

नेहरूजी ने उस कृषक का वह उपहार तो स्वीकार किया ही, अपना एक हस्ताक्षर युक्त फोटो भी दिया जो उस खाट वाले की भावना के सम्मान स्वरूप दिया था अन्यथा हस्ताक्षर युक्त फोटो के लिए तो देश के सभी वर्ग के लोग तरसते रहते हैं किन्तु यह फोटो नहीं प्राप्त होता।

इन उदाहरणों से प्रभाकरजी का यह कथन सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है। महत्त्व उसमें निहित भावना का है। यदि कार्य के पीछे उत्तम भावना है तो छोटे-से-छोटा कार्य भी महत्त्वपूर्ण माना जायेगा और बड़े-से-बड़ा कार्य भी तुच्छ ही गिना जायेगा यदि उसमें उत्तम भावना का अभाव है।

प्रश्न ४. जीवन के सम्बन्ध में लेखक द्वारा प्रस्तुत किये गये निम्न विचारों को स्पष्ट कीजिए–

(क) जीवन कोई आपके मुन्ने की गुड़िया थोड़े ही है।

(ख) जीवन तो एक विशाल समुद्र का तट है, जिस पर प्रत्येक अपने लिए स्थान पा सकता है।

(ग) जीवन एक युद्ध है।

उत्तर–(क) जीवन कोई आपके मुन्ने की गुड़िया थोड़े ही है–

जीवन को सीमा बद्ध नहीं किया जा सकता। वह अन्तहीन है। असीम है। किसी मुन्ने की गुड़िया सदृश जीवन का खेल नहीं होता। गुड़िया मुन्ने का मन बहलाने का साधन हो सकती है। उसके विषय में कोई भले ही यह कह दे कि यह गुड़िया मुन्ने का सब कुछ है किन्तु जीवन के विषय में कोई यह निश्चित रूप से नहीं कर सकता कि जीवन यही है। बस यही है। इससे आगे नहीं है। इसके अतिरिक्त कैसा भी जीवन नहीं है।

जीवन तो विशाल है। अपार है। असीम है। एक समुद्र-तट के सदृश है।

(ख) जीवन तो एक विशाल समुद्र तट है, जिस पर प्रत्येक अपने लिए स्थान पा सकता है।

'प्रभाकरजी' जीवन को एक विशाल समुद्र का तट स्वीकार करते हुए कहते हैं कि जीवन किसी मुन्ने की गुड़िया सदृश तुच्छ या किसी सीमा में आबद्ध नहीं है। जीवन तो एक विशाल समुद्र का तट है। जिस प्रकार समुद्र-तट पर सभी को शरण पाने की सम्भावना है। सभी को समुद्र-तट पर शरण की आशा है। सबको विश्वास है। उसी प्रकार जीवन भी बहुमुखी है। उसमें अनेक धाराओं का सम्मिश्रण है। सबकी गुजर सम्भव है। सबका ठिकाना सुनिश्चित है।

(ग) जीवन एक युद्ध है।

जीवन के विषय में विद्वान् एक मत नहीं हैं। कोई जीवन को विशाल समुद्र-तट कहता है तो कोई उसे एक युद्ध बताता है। दर्शनशास्त्रियों के मतानुसार जीवन बहुमुखी है।

कुछ विद्वानों की यह मान्यता है कि जीवन एक युद्ध के समान है। जिस प्रकार युद्ध में संघर्ष करना पड़ता है। शत्रु से लड़ना पड़ता है। विजय-पराजय का सामना करना पड़ता है–उसी प्रकार जीवन संघर्षों से पूर्ण होता है। बुराई रूपी शत्रुओं से लड़ना पड़ता है। कभी हमारी बुराइयों पर विजय होती है तो कभी हम उनके सम्मुख नतमस्तक हो जाते हैं।

युद्ध में सैनिक लड़ते हैं किन्तु उनको लड़ते रहने के लिए भोजन सामग्री (रसद) पहुँचाना परमावश्यक है। उसी प्रकार जीवन में मोहक सामग्री (रसद) पहुँचाने का कार्य कृषक का है। वह अन्न उत्पन्न करता है जिससे सब का जीवन चलता है।

प्रश्न ५. "इतिहास साक्षी है, बहुत बार अकेले चने ने ही भाड़ फोड़ा है।" इस कथन को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–एक कहावत है–'इकला चना क्या भाड़ फोड़े।" कहावत के अनुसार अकेला व्यक्ति कोई महान् कार्य नहीं कर सकता किन्तु 'मैं और मेरा देश' के लेखक 'प्रभाकरजी' का स्पष्ट कथन है कि 'इकला चना क्या भाड़ फोड़े' वाली कहावत शत प्रतिशत असत्य है।

'प्रभाकरजी' की मान्यता है कि अकेले व्यक्ति से भी महान् कार्य सम्भव है। इतिहास का साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए वह इस कहावत को असत्य कहते हैं।

'प्रभाकरजी' का कथन सर्वथा सत्य प्रतीत होता है। महाराणा प्रताप का उदाहरण हमारे सम्मुख है। इतिहास प्रमाण है कि उन्होंने वन में रहते हुए अनेकानेक कष्टों को सहन किया। साहस तथा धैर्य नहीं त्यागा। स्वतन्त्रता के लिए सेना का पुनर्गठन किया और स्वतन्त्रता दीप प्रज्ज्वलित किया।

छत्रपति शिवाजी को कौन नहीं जानता जिन्होंने मुगल सम्राटों से जीवन पर्यन्त टक्कर ली। लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, नाना फड़नवीस, सरदार भगतसिंह, महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस आदि का नाम आज भी इतिहास में अमर है जिन्होंने अकेले रहकर भी ऐसे महान् कार्य किये जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में जड़े हुए हैं और 'इकला चना क्या भाड़ फोड़े' कहावत को झूठा सिद्ध कर रहे हैं।

प्रश्न ६. प्रस्तुत पाठ के आधार पर लेखक की शैलीगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–प्रस्तुत पाठ 'मैं और मेरा देश' के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं जिनका हिन्दी भाषा और साहित्य को रेखाचित्र तथा लघु-कथा के विकास में विशेष योगदान रहा है।

'प्रभाकरजी' का जन्म देवबन्द (सहारनपुर) में सन् १९०६ में एक साधारण परिवार में हुआ था। सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनीतिक कार्यों मे प्रारम्भिक काल से ही रुचि होने के कारण 'प्रभाकरजी' ने पत्रकारिता तथा लेखन को अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य बनाया।

प्रभाकरजी ने विशुद्ध साहित्यिक हिन्दी को अपने साहित्य में स्थान दिया। सरलता, प्रभावपूर्णता तथा प्रवाह 'प्रभाकरजी' की भाषा में सर्वत्र झलकता है।

विवरणात्मक, वर्णनात्मक तथा व्याख्यात्मक शैली के रूप इनके निबन्धों में मिलते हैं। लेखनी के जादूगर के रूप में 'प्रभाकरजी' का हिन्दी गद्य साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

नयी पीढ़ी: नये विचार, जिन्दगी मुसकरायी, माटी हो गई सोना, आकाश के तारे : धरती के फूल, बाजे पायलिया के घुंघरु, महके आंगन : चहके द्वार, बूँद-बूँद सागर लहराये, क्षण बोले: कण मुसकाये, दीप जले: शंख बजे 'प्रभाकरजी' की प्रमुख कृतियाँ हैं।

प्रश्न ७. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) लाला लाजपतराय	*(ख) स्वामी रामतीर्थ*
(ग) कमाल पाशा	*(घ) प्रेमचन्द*

उत्तर-टिप्पणियाँ -

(क) लाला लाजपतराय

लाला लाजपतराय एक तेजस्वी पुरुष थे। पंजाब की धरती पर जन्मे लाला जी ने सम्पूर्ण देश को अपनी जन्म भूमि माना और उसकी स्वतन्त्रता के लिए अनेकानेक कष्ट सहन किये।

१८८५ के प्रथम कांग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने मुख्य रूप से भाग लिया और अपना रक्त देकर भी भारतीय गौरव की रक्षा की।

विदेशों के भ्रमण के पश्चात् उन्होंने महत्त्वपूर्ण सन्देश यही दिया कि दासता के कलंक को अपने मस्तक पर मत लगा रहने दो।

लाला लाजपतराय का कहना था "संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों परन्तु उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में ही हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।"

लालाजी के ये शब्द आज भी हमारा प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं, "मैं कोई ऐसा न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतन्त्रता और सम्मान को धक्का पहुँचे और उसकी किसी भी प्रकार की शक्ति में कमी आये।"

(ख) स्वामी रामतीर्थ

स्वामी रामतीर्थ भारत के महान् सन्त हुए हैं। "प्रभाकरजी" ने स्वामी रामतीर्थ की जापान भ्रमण की यात्रा का वर्णन करते हुए लिखा है कि वह यात्रा में फल न मिल पाने पर अत्यन्त निराश और उदास स्वर में कहने लगे, 'जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।"

स्वामी रामतीर्थ के शब्द एक जापानी युवक के कानों में पड़े जो अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था। वह युवक कहीं दूर से एक टोकरी फल लाया और स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए उनसे आग्रह किया, "आप अपने देश जाकर किसी से यह न कहना कि जापान में उत्तम फल नहीं मिलते।"

युवक के उत्तर से स्वामी रामतीर्थ अत्यन्त प्रसन्न हुए क्योंकि उस युवक की करनी और कथनी देश के गौरव में वृद्धि करने वाली थी।

(ग) कमाल पाशा

कमाल पाशा तुर्की के राष्ट्रपति थे। वह व्यक्ति की भावनाओं को अत्यन्त महत्त्व देते थे। कमाल पाशा की इस प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए 'प्रभाकरजी' ने राष्ट्रपति के वर्षगाँठ उत्सव का

उल्लेख किया है और बताया है कि कार्य की विशालता से कोई कार्य महान् नही बन जाता। कार्य तो उत्तम भावना होने पर ही महत्त्वपूर्ण बनता है।

लेखक ने कमाल पाशा का उदाहरण दिया है और लिखा है कि राष्ट्रपति को एक देहाती वृद्ध पाव भर शहद की मिट्टी की हाँडी उसके जन्म दिन पर उपहार स्वरूप भेंट करने के लिए तीस मील पैदल चलकर लाया।

राष्ट्रपति कमाल पाशा विश्राम के लिये जा रहे थे किन्तु उसका आगमन इतनी दूर से सुनकर आए और उस वृद्ध किसान का उपहार स्वीकार किया और कहा-"दादा ! आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया है, क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है।"

कमाल पाशा ने हंडिया में से दो अंगुलियाँ भरकर शहद चाटा और तीसरी अंगुली शहद से पूर्ण उस वृद्ध के मुँह में दे दी। इस कार्य से दोनों को आनन्द प्राप्त हुआ।

(घ) प्रेमचन्द

प्रेमचन्द सामाजिक, राष्ट्रीय एवम् धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण करने वाले हिन्दी कहानीकार तथा उपन्यासकार थे जिन्होंने 'गोदान' जैसा सर्वाङ्गपूर्ण और भारतीय कृषक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाला एक सशक्त उपन्यास देकर अमर उपन्यासकार की पदवी प्राप्त की।

प्रेमचन्द पहले तो उर्दू के साहित्यकार थे। तत्पश्चात् हिन्दी साहित्यकार बने। उनकी कला में कृत्रिमता कहीं नहीं झलकती। वह एक यथार्थवादी साहित्यकार थे। मुहावरों तथा लोकोक्तियों से उनकी भाषा अत्यन्त प्रभावशाली बन गयी है। हास्य तथा व्यंग्यात्मक शैली में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों तथा नैतिक ह्रासों का चित्रण किया है।

गोदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

प्रश्न ८. लाला लाजपतराय के अनुभवों और उनकी शिक्षाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-लाला लाजपतराय को पंजाब केशरी की उपाधि से विभूषित किया गया है। उन्होंने अपने रक्त से देश के गौरव के दीप जलाए। सदा इस गौरव की रक्षा के लिए प्रयासरत रहे। अपने अनुभवों से युवकों के कल्याणार्थ समय-समय पर दिशा निर्देशन किया। प्रस्तुत निबन्ध में 'प्रभाकरजी' ने पंजाब केसरी के अनुभवों से निम्नांकित शिक्षाएँ दी हैं-

लाला लाजपतराय ने अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा अन्य देशों के भ्रमण के पश्चात् बताया कि जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।

उनके अनुभव से शिक्षा मिलती है कि गुलामी सबसे बड़ा कलंक का टीका है जिसे कभी भी किसी भी दशा में अपने मस्तक पर नहीं लगने देना चाहिए। गुलामी को उन्होंने इतना बुरा बताया है कि व्यक्ति के पास संसार के ही नहीं, स्वर्ग के भी सब उपहार तथा साधन हों किन्तु देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में ही हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने स्वतन्त्रता के लिए अपनी अपार भक्ति प्रकट करते हुए कहा है कि देश की स्वतन्त्रता, देश के सम्मान तथा देश की शक्ति को कम करने वाला हमारा कोई कार्य नहीं होना चाहिये।

प्रश्न ९. कमाल पाशा को किसान द्वारा दिए गए उपहार का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-कमाल पाशा तुर्की के राष्ट्रपति थे। उनको वर्षगाँठ के उत्सव पर भेंट करने के लिए एक ग्रामीण वृद्ध मिट्टी की छोटी हाँडी में पाव भर शहद लेकर आया। वह वृद्ध पैदल तीस मील चलकर आया था। अतः वर्ष गाँठ के उत्सव में विलम्ब से पहुँचा।

राष्ट्रपति उत्सव के सम्पन्न हो जाने पर अपने भवन में विश्राम के लिए चले गए। सेक्रेटरी ने किसान को कहा कि अब तो उत्सव का समय व्यतीत हो गया है। अब क्या किया जा सकता है? आप विलम्ब से आ पाए हो।

वृद्ध ने देरी का कारण तीस मील पैदल चलकर आना बताया और कमाल पाशा को अपना उपहार भेंट करने का आग्रह किया।

राष्ट्रपति कमाल पाशा को जब किसान के विलम्ब से आने की सूचना दी गयी तो वह विश्राम के वस्त्र ही पहने हुए नीचे चले आए और उस वृद्ध का उपहार स्वीकार ही नहीं किया अपितु उस हंडिया से दो अंगुली शहद चाटा और तीसरी अंगुली शहद में भरकर उस वृद्ध को भी चटाया।

राष्ट्रपति के इस व्यवहार से वह वृद्ध कृषक निहाल हो गया। यही नहीं, कमाल पाशा ने उस किसान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए कहा–"दादा! आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया है क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है। शहद में तुम्हारी भावना समायी हुई है।"

कमाल पाशा उस वृद्ध से इतने अधिक प्रसन्न थे कि आदेश देकर उस वृद्ध को शाही कार द्वारा शाही सम्मान के साथ उसके गाँव पहुँचाया गया।

प्रश्न १०. रंगीन-सुतलियों की खाट के बदले में पंडित नेहरू ने उस किसान को क्या दिया?

उत्तर–पंडित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रधानमन्त्री थे। उनके प्रधान मन्त्रित्व काल में एक किसान रंगीन सुतलियों की एक खाट बुनकर उसे प्रधानमन्त्री को भेंट करने के लिए दिल्ली पहुँचा। दिल्ली स्टेशन से खाट को उस किसान ने अपने कन्धे पर रखा और पंडित नेहरू की कोठी पर पहुँचा।

नेहरू जी उस किसान से मिलने जब आये तो उसने वह खाट पंडितजी को दी। मुँह से कुछ भी न बोल सका। पं० नेहरू की ओर देखता ही रहा। उस किसान की इस मुग्धता को देखकर जवाहरलाल नेहरू ने ही पूछा "तुम क्या चाहते हो?"

किसान ने अत्यन्त ही विनम्र शब्दों में उस खाट को स्वीकार करने का निवेदन किया।

नेहरूजी ने किसान के इस उपहार को तो स्वीकार किया ही, अपना एक फोटो भी दस्तखत करके उसे उपहार में दिया।

फोटो का उपहार नेहरू जी ने खाट के बदले में नहीं दिया था अपितु उस किसान की भावना का सम्मान था जो नेहरू जी ने उस किसान को हस्ताक्षर युक्त फोटो के रूप में दिया था।

प्रश्न ११. 'मैं और मेरा देश' निबन्ध के आधार पर स्वामी रामतीर्थ के जीवन की किसी एक प्रमुख घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–स्वामी रामतीर्थ भारत के एक महान् सन्त हुए हैं। वह एक बार जापान गये हुए थे। जापान में, वह एक दिन यात्री रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे। मार्ग में उन्हें फल खाने की इच्छा हुई। यात्री गाड़ी जब स्टेशन पर ठहरी तो उन्होंने वहाँ इधर-उधर फलों की तलाश की किन्तु कोई फल विक्रेता दिखाई नहीं दिया। फल न मिलने के कारण वह निराश हुए और उनके मुख पर उदासी की रेखा खिंच गयी। वह अन्य कुछ खाने की स्थिति में नहीं थे। उन दिनों फल ही उनका भोजन था। अतः स्टेशन पर फल न मिलने के कारण वह मन्द स्वर में कहने लगे –"जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।"

प्लेटफार्म पर एक जापान का युवक खड़ा था। उसके कान में स्वामी रामतीर्थ के शब्द पड़े। जापान में उत्तम फलों के अभाव की बात युवक को अच्छी नहीं लगी। वह युवक अपनी पत्नी को यात्री गाड़ी में ही छोड़कर तुरन्त फल लेने के लिए दौड़ा। कहीं दूर से, वह जापानी युवक एक टोकरी ताजे फल लेकर आया और स्वामी रामतीर्थ को भेंट किए। युवक ने स्वामी रामतीर्थ से कहा "लीजिए, आपको ताजे फलों की जरूरत थी।"

स्वामी रामतीर्थ ने उस युवक को कोई फल विक्रेता समझा। उन्होंने युवक से फल की टोकरी का मूल्य पूछा। युवक ने कहा-"मैं फल का मूल्य स्वीकार नहीं कर सकता।" मेरा तो आपसे एक ही निवेदन है। आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते"।

स्वामी रामतीर्थ, युवक के इन देश में गौरवान्वित करने वाले शब्दों से अभिभूत होकर उस जापानी युवक की भावना की सराहना करने लगे।

सप्रसंग व्याख्याएँ

पृष्ठ-२२-शब्दार्थ-दरार = दरज, एक रेखाकार अवकाश जो किसी तल के फटने पर दिखाई देने लगता है। हीन = बुरी, गई गुजरी।

पृष्ठ-२३-मानस = हृदय, मन। पराधीनता = दासता, गुलामी। कसक = टीस, मानसिक वह पीड़ा जिसका सम्बन्ध पुरानी घटना के स्मरण से होता है। भूकम्प = धरती का हिलना। उपहार = भेंट।

पृष्ठ-२४-उत्तेजना = उग्रता, तेजी। रसद = खाद्य-सामग्री, खाने का सामान। पैरों में बिजली लगना = तीव्र गति होना। दाद देने वाले = प्रशंसा करने वाले, तारीफ करने वाले। भाड़ = भड़भूजों की भट्टी। साक्षी = गवाह, प्रमाण।

पृष्ठ-२५, २६-दुर्लभ = कठिनाई से प्राप्त। शक्ति-बोध = शक्ति का ज्ञान।

पृष्ठ-२७-ह्रास = पतन, कमी। अजेयता = अविजित, जिस पर विजय प्राप्त न की जा सके। तरेड़ = दरार। ठेलमठेल = परस्पर एक दूसरे को धक्का लगना। ठेस = चोट। उत्तेजक = उत्तेजना उत्पन्न करने वाले।

(१)

एक दिन आनन्द की इस दीवार में एक दरार पड़ गई और तब मुझे सोचना पड़ा कि अपने घर, अपने पड़ौस, अपने नगर की सीमाओं में ममता, सहारा, ज्ञान और आनन्द के उपहार पाकर भी मेरी स्थिति एकदम हीन है और हीन भी इतनी कि मेरा कहीं भी कोई भी अपमान कर सकता है-एक मामूली अपराधी की तरह और मुझे यह भी अधिकार नहीं कि मैं उस अपमान का बदला लेना तो दूर रहा, उसके लिए कहीं अपील या दया-प्रार्थना ही कर सकूँ। **(पृष्ठ-२२)**

सन्दर्भ-प्रस्तुत गद्यावतरण **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित **'मैं और मेरा देश'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग-प्रस्तुत स्थल पर लेखक अपने आनन्दमय जीवन की दीवार में, लाला लाजपतराय की विदेश यात्रा के अनुभवों तथा प्रकट किए गए विचारों से पड़ने वाली दरार का वर्णन करते हुए गुलामी को सबसे बड़ा अपमान बताते हुए कहता है-

व्याख्या-मेरा जीवन सुखी था। आनन्द की कोई कमी नहीं थी। लेकिन मेरा यह आनन्द एक बार में ही समाप्त हो गया। जब मुझे यह ज्ञान हुआ कि मेरा देश दासता के बन्धन में जकड़ा हुआ है। दासता के कलंक की कल्पना ने आनन्द की दीवार में दरार डाल दी। उसे

ऐसा अनुभव होने लगा कि उत्तम घर, पड़ौस, नगर, ममता, ज्ञान, आनन्द आदि की प्राप्ति से कुछ नहीं बन सकता। प्रकृति प्रदत्त सभी उपहार प्राप्त करके भी लेखक अपनी दीन-हीन दशा से बेचैन है। वह जानता है कि कहीं भी जाने पर उसे गुलाम देश का नागरिक कहा जायेगा। मेरा स्वाभिमान इस गुलामी के कलंक के कारण उठ नहीं सकेगा। मुझे और मेरे देश को गुलाम कहकर बुलाया जायेगा। मैं उन कहने वालों के समक्ष विवशता में कुछ कह भी नहीं सकूँगा। ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध अपमानित होकर भी मैं कहीं कोई प्रार्थना नहीं कर सकूँगा। यह तक कि अपनी इस दयनीय स्थिति से सुरक्षा के लिए किसी न्यायालय में भी शरण नहीं ले सकूँगा।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–भाषा तत्सम शब्द-प्रधान शुद्ध साहित्यिक है। सरलता तथा प्रवाह है। अंलकृत है।

(२) **शैली**–चिन्तन प्रधान संस्मणात्मक शैली।

(३) **सन्देश**–राष्ट्र-गौरव तथा उत्तम भावना की प्रेरणा देता है।

(२)

जी हाँ, एक भूकम्प आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गयी और लीजिए आपको कोई नया प्रश्न न पूछना पड़े, इसलिए मैं अपनी ओर से ही कह रहा हूँ कि यह दीवार थी, मानसिक विचारों की, इसलिए यह भूकम्प भी किसी प्रान्त या प्रदेश में नहीं उठा, मेरे मानस में ही उठा था। (पृष्ठ-२३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित **'मैं और मेरा देश'** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक पंजाब केंसरी लाला लाजपतराय के अनुभवों का उसके हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करते हुए कहता है–

व्याख्या–पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के अनुभवों से लेखक को यह ज्ञान हुआ कि गुलामी वास्तव में ही देश को कलंकित करती है। सम्माननीय स्थान प्राप्ति की सम्भावना समाप्त कर देती है। इस गुलामी के कलंक की बात से लेखक के मन में विचारों का ऐसा भूकम्प आया कि जो आनन्द उसके मन में हिलोरें ले रहा था उसमें दासता के इस कलंक के विचार ने दरारें डाल दीं। आनन्द का भाव तिरोहित हो गया। लाला लाजपतराय के अनुभव ने भूकम्प जैसा कार्य किया था। मन के विचारों को उद्वेलित किया था जिससे मानसिक विचारों की दीवार में दरार पड़ गयी थी। मन का चैन चला गया था। लेखक को यह अनुभव होने लगा था कि उसमें अपूर्णता है और अपूर्णता की कसक कचोट रही है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–विशुद्ध साहित्यिक हिन्दी।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक एंवम् संस्मरणात्मक।

(३) **अन्य**–भूकम्प तथा दरार के माध्यम से मन के विचारों का सुन्दर वर्णन है।

(३)

मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतन्त्रता को 'दूसरे शब्दों में' उसके सम्मान को धक्का पहुँचे उसकी किसी भी प्रकार की शक्ति में कमी आये साथ ही उसके नागरिक के रूप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भार मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं हूँ भरोसा रहे।

(पृष्ठ-२३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **कन्हैलायलाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित **'मैं और मेरा देश'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक लाला लाजपतराय के अनुभवों का लाभ देश के नागरिकों को देने के उद्देश्य से कहता है–

व्याख्या–लेखक ने लाला लाजपतराय के अनुभव से यह शिक्षा ग्रहण की कि गुलामी जैसे कलंक को धो देना ही श्रेयस्कर है। वह यह निश्चय करता है कि भविष्य में उसके द्वारा कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जायेगा जो देश की स्वतन्त्रता के मार्ग की बाधा बने। वह ऐसा संकल्प लेता है कि देश के सम्मान को ठेस पहुँचाने वाला कोई भी कार्य उसके द्वारा नहीं किया जायेगा।

लेखक, कर्तव्य के साथ अपने अधिकारों के विषय में भी विचार करता है। वह सोचता है कि देश के सम्मान का दायित्व भी उस पर होना चाहिए ताकि उससे प्राप्त शक्तियों से स्वयं के सम्मान की रक्षा सुनिश्चित हो सके।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–प्रवाह तथा प्रभावपूर्ण है।

(२) **अन्य**–देश के प्रति कर्त्तव्य तथा अधिकारों का सजीव वर्णन।

(४)

अजी, भला एक आदमी अपने इतने बड़े देश के लिए कर ही क्या सकता है। फिर कोई बड़ा वैज्ञानिक हो तो वह अपने आविष्कार से ही देश को कुछ बल दे या फिर कोई बहुत बड़ा धनपति हो तो वह अपने धन को भामाशाह की तरह समय पर त्याग करके ही कुछ काम आ सकता है, प्रत्येक आदमी न तो ऐसा वैज्ञानिक ही हो सकता है न धनिक ही। फिर जो बेचारा अपनी ही दाल-रोटी की फिक्र में लगा हुआ हो वह अपने देश के लिए चाहते हुए भी क्या कर सकता है। **(पृष्ठ-२४)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित **'मैं और मेरा देश'** से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक धनिकों तथा वैज्ञानिकों से कुछ कर दिखाने की आशा व्यक्त करता हुआ कहता है–

व्याख्या–देश-सेवा हम सभी का पुनीत कर्त्तव्य है। देश की उन्नति करना हम सबके लिए आवश्यक है। किन्तु ऐसे व्यक्ति देश के लिए कुछ भी नहीं कर सकते जो अपनी ही समस्याओं में उलझे हुए हैं। जिन्हें दाल-रोटी की चिन्ताओं ने घेरा हुआ है, उनसे देश सेवा की क्या आशा की जा सकती है? देश के लिए एक वैज्ञानिक कुछ वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। एक धनिक अपने धन से देश को विकास के पथ पर अग्रसर कर सकता है।

देशोन्नति हम सबका कर्त्तव्य है। उन्नति किसी एक देशवासी से कदापि सम्भव नहीं है। अतः सब नहीं तो कम से कम समर्थ नागरिकों को तो आगे आना ही चाहिये और देश की उन्नति के लिए किसी प्रकार की कमी बाकी नहीं छोड़नी चाहिए।

साहित्यिक सौंदर्य–(१) **भाषा**–अलंकृत साहित्यिक हिन्दी।

(२) **शैली**–व्यास शैली।

(३) **अन्य**–समर्थ वैज्ञानिकों तथा धनिकों को देश-सेवा के लिए तैयार रहने की प्रेरणा।

(५)

मैं अपने देश का एक नागरिक हूँ और मानता हूँ कि मैं अपना देश हूँ। जैसे मैं अपने लाभ और सम्मान के लिए हरेक छोटी-छोटी बात पर ध्यान देता हूँ वैसे ही मैं अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दूँ, यह मेरा कर्त्तव्य है और जैसे मैं अपने सम्मान और साधनों से अपने जीवन में सहारा पाता हूँ वैसे ही देश के सम्मान और

साधनों से भी सहारा पाऊँ यह मेरा अधिकार है। बात यह है मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो है ही नहीं। **(पृष्ठ-२५)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित **'मैं और मेरा देश'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने यह बताया है कि व्यक्ति और देश एक है। अलग नहीं। नागरिक को देश की संज्ञा देते हुए प्रभाकर जी कहते हैं–

व्याख्या–प्रत्येक नागरिक को यह समझकर देश के प्रति कर्त्तव्य का निर्वाह करना चाहिए कि वह स्वयं देश से पृथक् नहीं है। वह ही देश है। देश से वह है। उसका अस्तित्व है।

नागरिक अपने लाभ के लिए, अपने सम्मान के लिए हर सम्भव प्रयत्न करता है। छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देता है। वह हर ऐसा कार्य करने के लिए भी हिचक नहीं करता जो छोटा दिखाई देता है किन्तु उससे व्यक्तिगत लाभ होता है। सम्मान में वृद्धि होती है। बस, इसी प्रकार नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह देश के लिए उन सभी कार्यों को करने के लिए तैयार रहे जिनके करने से देश का हित हो। देश के सम्मान में वृद्धि हो।

कर्त्तव्य के साथ अधिकार की चर्चा करते हुए लेखक कहता है कि नागरिक को यह अधिकार है कि वह देश के संसाधनों का उपयोग करे और सम्मान से अपने आपको गौरवान्वित करने में पीछे न रहे। जो देश को अपने आप से पृथक समझते हैं, वे निश्चित रूप से अपने चिन्तन में भूल कर रहे हैं, ऐसा समझना चाहिए।

विशेष–(१) **भाषा**–सरल, प्रभाव तथा प्रवाहपूर्ण अलंकृत हिन्दी ।

(२) **शैली**–व्यास शैली।

(३) **अन्य** –अधिकार तथा कर्त्तव्य की व्याख्या करते हुए देश के सम्मान की रक्षा का उपाय सुझाया है।

(६)

मैंने जो कुछ जीवन में अध्ययन और अनुभव से सीखा है, वह यही है कि महत्त्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े-से-बड़ा कार्य हीन है यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे-से-छोटा कार्य भी महान् है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है। **(पृष्ठ-२५)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित **'मैं और मेरा देश'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक अपने अनुभवों के आधार पर कार्य की भावना को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहता है–

व्याख्या–मैंने जीवन में अध्ययन किया है। बहुत कुछ अनुभव किया है। निष्कर्ष भी निकाले हैं और यह कहना पड़ता है कि हमारे किसी भी कार्य का महत्त्व उस कार्य की गुरुता या विशालता के आधार पर नहीं आँका जाना चाहिए। कार्य का सही मूल्यांकन उस कार्य के छोटे या बड़े होने से नहीं हो सकता अपितु उस कार्य की भावना से ही उस कार्य का महत्त्व अथवा महत्त्वहीनता का पता लग सकता है। अतः हमें महत्वपूर्ण कार्य के विषय में यह पता लगाने की आवश्यकता है कि वह कार्य किस भावना को लेकर सम्पादित हुआ है? कार्य करने के पीछे कर्ता की भावना अच्छी थी या बुरी इससे ही कार्य के महत्त्वपूर्ण होने का ज्ञान हो सकता है।

लेखक ने बताया है कि कार्य भले ही बड़ा हो किन्तु उस कार्य में निहित भावना हीनता लिए हुए है तो हमारा वह महान् समझा जाने वाला कार्य भी बड़ा नहीं माना जा सकता। अतः कोई भी कार्य भावनाओं की कसौटी पर कस कर ही बड़ा या छोटा माना जा सकता है।

साहित्यिक परिचय–(१) **भाषा** –सरल, अलंकृत भाषा है।
(२) **शैली**–भावात्मक शैली।
(३) **अन्य**–कार्य की महत्ता, उसमें निहित भावना में है।

(७)

हम अपने कार्यों को देश के अनुकूल होने की कसौटी पर कसकर चलने की आदत डालें यह बहुत उचित है बहुत सुन्दर है। पर हम इसमें तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि हम अपने देश की भीतरी दशा को ठीक से न समझ ले और उसे हमेशा अपने सामने न रखें। (पृष्ठ-२६)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'** लिखित '**मैं और मेरा देश**' निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने यह सन्देश दिया है कि हमें अपने देश की आन्तरिक स्थिति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके ही किसी कार्य के लिए अपना पग आगे बढ़ाना चाहिए।

व्याख्या–व्यक्ति को वही कार्य करने चाहिए जो देश की स्थितियों के अनुकूल हों। कार्यों का देश की स्थिति तथा वातावरण के प्रतिकूल होना न तो उत्तम माना जा सकता है और न उचित। अतः हमारी आदत यह बन जानी चाहिए कि हम कार्य करने से पूर्व देश की अनुकूलता की कसौटी पर उसकी परख कर लें। इससे भी बढ़कर हमारा यह कर्त्तव्य है कि कार्य करने से पूर्व देश की आन्तरिक दशा का भी पूर्णरूपेण ज्ञान प्राप्त करलें। जब तक हमें देश की आन्तरिक परिस्थितियों की जानकारी नहीं है, तब तक हम अपने किसी कार्य में सफल नहीं हो सकते। जब तक हम अपने कार्य करने से पूर्व देश की स्थिति को अपने सम्मुख रखकर कार्य करने का विचार नहीं करेंगे तब तक यही समझना चाहिए कि हमें अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

विशेष–(१) **भाषा**–सरल तथा सुबोध भाषा।
(२) **शैली**–उपदेशात्मक शैली।
(३) **अन्य**–कार्य करते समय देश की स्थिति पर दृष्टि होनी चाहिए।

२ आँसू

(लेखक- पं० बालकृष्ण भट्ट)

● *गागर में सागर*

निबन्ध–कल्पना प्रमुख, भावात्मक निबन्ध।

लेखक–पं० बालकृष्ण भट्ट***जन्म**–सन् १८४४***स्थान**–इलाहाबाद***रुचि**–स्वाध्ययन ***कार्य**–अध्यापन***साहित्यसेवा**–सम्पादन–प्रदीप, हिन्दी शब्द सागर***मृत्यु**–सन् १९१४।

कृतियाँ–निबन्ध संग्रह–साहित्य सुमन, भट्ट निबन्धावली***उपन्यास**–नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान***नाटक**–सीता वनवास, रेल का विकट खेल, बाल विवाह, पद्मावती, नई रोशनी का विष आदि।

आँसू–व्यक्ति के आँसू उसके शरीर में गड़े हुए खजाने के समान हैं। आँसू व्यक्ति के मनोभाव प्रकट करते हैं। आँसुओं के मानव जीवन में प्रसार तथा प्रभाव का विभिन्न रूपों में वर्णन। विधाता द्वारा आँसुओं की सृष्टि। कोमल भावाभिव्यक्ति।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न १. *चिरकाल के वियोग के बाद जब किसी प्रियजन से मुलाकात होती है तब आँखों से निकले आँसू किस मनोभाव को व्यक्त करते हैं।*

(क) प्रेम (ख) हर्ष
(ग) उपालम्भ (घ) पश्चाताप। ***उत्तर***–(क) प्रेम।

प्रश्न २. *अत्यन्त शोक में दारुण दुःख के वेग को सँभालने में कौन समर्थ है?*

(क) ईश्वर-स्मरण (ख) अन्यमनस्कता
(ग) अश्रुपात (घ) इन्द्रिय-निग्रह। ***उत्तर***–(ग) अश्रुपात।

प्रश्न ३. *दांभिक शब्द का अर्थ है–*

(क) उपासक (ख) ढोंगी
(ग) दमन करने वाला (घ) दम भरने वाला। ***उत्तर***–(ख) ढोंगी।

प्रश्न ४. *"किसी को बैंगन बावले किसी को बैंगन पत्थ" लोकोक्ति का वास्तविक अर्थ है–*

(क) किसी को बैंगन बीमार पटक देते हैं और किसी को बैंगन दवा का काम करते है।
(ख) कोई बैंगन खाने से बावला हो जाता है और कोई बैंगन को दवा के रूप में लेता है।
(ग) कभी-कभी बैंगन खाना लाभप्रद होता है।
(घ) बैंगन खाना कोई पसन्द नहीं करता।

उत्तर–(क) किसी को बैंगन बीमार पटक देते हैं और किसी को बैंगन दवा का काम करते है।

प्रश्न ५. *करुण तथा वीर आपस में किस प्रकार के रस हैं–*

(क) सहयोगी (ख) विरोधी
(ग) साथ-साथ वर्णनीय (घ) अविरोधी। ***उत्तर***–(ख) विरोधी।

प्रश्न ६. *'बेदिल या 'बेकलेजे' का शाब्दिक अर्थ है–*

(क) कठोर (ख) क्रोधी
(ग) करुणारहित (घ) हृदय-हीन। ***उत्तर***–(घ) हृदय-हीन।

प्रश्न ७. *'बेकलेजो' की आँखें होती हैं–*

(क) चेहरे की शोभा के लिए (ख) आँसू बहाने के लिए
(ग) देखने भर के लिए (घ) आकृष्ट करने के लिए।

उत्तर–(क) देखने भर के लिए।

प्रश्न ८. *निबन्ध के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट की विधाएँ हैं–*

(क) नाटक, उपन्यास, आलोचना (ख) एकांकी
(ग) जीवनी (घ) यात्रा-वृत्त।

उत्तर–(क) नाटक, उपन्यास, आलोचना।

प्रश्न ९. *सच्चे भक्त की पहचान है–*

(क) उच्च स्वर में भगवान् का नाम लेना
(ख) रात-दिन मन्दिर में जप करना
(ग) नेत्रों से अश्रुपात होना
(घ) ढोल-मजीरा की तान पर कीर्तन करना। ***उत्तर***–(ग) नेत्रों से अश्रुपात होना।

प्रश्न १०. भाव-गोपन की सभी चेष्टाएँ व्यर्थ कर देता है–
(क) अश्रुपात (ख) करुणा
(ग) क्रोध (घ) हास्य **उत्तर**–(क) अश्रुपात।

प्रश्न ११. हृदय को विदीर्ण होने से बचाने का उपाय है–
(क) हृदय को दृढ़ बनाना (ख) अश्रुपात
(ग) करुणा (घ) दया। **उत्तर**–(ख) अश्रुपात।

प्रश्न १२. आँख में आँसू आते हैं–
(क) कपटी व्यक्ति (ख) निर्दयी व्यक्ति के
(ग) अकुटिल सत्पुरुषों के (घ) किंकर्त्तव्य व्यक्ति के।
उत्तर–(ग) अकुटिल सत्पुरुषों के।

प्रश्न १३. मृतक की रूह को राहत पहुँचा सकते हैं–
(क) आलीशान रोजे (ख) कीमती मकबरे
(ग) संगमरमर की कब्रें (घ) दोस्त के आँसू।
उत्तर–(घ) दोस्त के आँसू।

प्रश्न १४. दुःख के वेग में आँसू को रोकने वाला है–
(क) दया-भाव (ख) प्रसन्नता
(ग) धीरज (घ) सुख। **उत्तर**–(ग) धीरज।

प्रश्न १५. आँख के एक कतरा आँसू की कीमत को बादशाहत से बढ़कर माना–
(क) चन्द्रगुप्त ने (ख) सिकन्दर ने
(ग) महाराणा प्रताप ने (घ) शिवाजी ने। **उत्तर**–(ख) सिकन्दर ने।

प्रश्न १६. आँसू की बड़ी जरूरत के लिए –
(क) आँखों में अंगुली छेदनी चाहिए (ख) रोना चाहिए
(ग) प्याज का गट्ठा पास रखना चाहिए (घ) आँख में मिर्च डालनी चाहिए।
उत्तर–(ग) प्याज का गट्ठा पास रखना चाहिए।

प्रश्न १७. अधिक गम्भीर प्रकृति वालों की शक्ति से परे है–
(क) भयभीत होना (ख) झरने वाले आंसुओं को रोकना
(ग) हंसोड़ को देखकर हँसी रोकना (घ) अपनी प्रशंसा सुनकर हर्षित न होना।
उत्तर–(ख) झरने वाले आँसुओं को रोकना।

प्रश्न १८. अश्रुपात का सुन्दर वर्णन किया है–
(क) कालिदास ने (ख) भवभूति ने
(ग) वाल्मीकि ने (घ) तुलसीदास ने **उत्तर**–(ख) भवभूति ने।

सउत्तर अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. इस पाठ में कई अरबी-फारसी के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। उन्हें छाँटकर एक तालिका बनाइये, जैसे–माफिक, नाजुक, वक्ता आदि।

उत्तर–**अरबी-फारसी के शब्द**–मुलाकात, दोस्त, शशोपंज, बगलगीर, दुनिया, मक्कार, आलीशान, खर्च, रोजे, मकबरे, रूह, मुसीबत, बादशाहत, कतरा, तारीफ, तरकीब, बरकत, तदवीर आदि।

प्रश्न २. "अंग-अंग ढीला पड़ना" मुहावरे में 'अंग' शब्द की पुनरुक्ति हुई है ऐसे ही किन्हीं पुनरुक्तिसूचक शब्दों के प्रयोग से कोई दो मुहावरे बनाइए।

उत्तर– पुनरुक्ति सूचक शब्दों का प्रयोग– **मुहावरे**– १. बाल-बाल बचना।

२. आह-आह आँसू रोना।

प्रश्न ३. आँसू की बूँदों को मोती की उपमा क्यों दी गई है?

उत्तर– आँसू की बूँद मोती के समान गोल तथा श्वेत होने के कारण उसे मोती की उपमा दी गई है।

प्रश्न ४. क्या कारण है कि अश्रुपात भाव-गोपन की सारी चेष्टाएँ व्यर्थ कर देता है?

उत्तर– आँसू भय, हर्ष तथा प्रेम की अवस्था में सहसा ही निकल पड़ते हैं। इन आँसुओं को ऐसी स्थिति में रोकना सर्वथा असम्भव है। यह आँसू जब निकलते हैं तो व्यक्ति के गोपनीय भावों को प्रकट कर देते हैं।

प्रश्न ५. आँसू किन व्यक्तियों के आते हैं।

उत्तर– आँसू उन व्यक्तियों के आते हैं जिनका चित्त सरल हो। चित्त में कुटिलता न हो। जो सत्पुरुष हैं, उन्हीं के आँसू आते हैं।

प्रश्न ६. प्रकृति ने चित्त का आँख के साथ कैसा सम्बन्ध जोड़ा है?

उत्तर– प्रकृति ने चित्त का आँख के साथ जो सम्बन्ध जोड़ा है वह बिहारी ने अपने दोहे में व्यक्त किया है–

> **"कोटि जतन कीजै तऊ , नागरि नेह दुरैन।**
> **कहै देत चित्त चीकना ; नई रुखाई नैन।"**

प्रश्न ७. शूरवीर को कौन किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर देते हैं?

उत्तर– शूरवीर को युद्ध यात्रा पर कुटुम्बियों की आँखों से निकलने वाले आँसू किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर देते हैं।

प्रश्न ८. सिकन्दर का क्या कॉल था?

उत्तर– सिकन्दर का कॉल था कि माँ की आँख से निकली आँसू की एक बूँद का मूल्य भी बादशाहत से बढ़कर मूल्यवान् है।

प्रश्न ९. आँखों से प्याज छू जाने पर आँसू तुरन्त क्यों आ जाते हैं?

उत्तर– प्याज में तीखापन की अधिकता के कारण, आँखों में प्याज छू जाने पर आँसू तुरन्त आ जाते हैं।

प्रश्न १०. भवभूति और बिहारी मुख्यतः किस रस के कवि माने जाते हैं?

उत्तर– भवभूति संस्कृत साहित्य में करुण रस के तथा बिहारी हिन्दी साहित्य में श्रृंगार रस के कवि माने जाते हैं।

प्रश्न ११. वीर और करुण रस को विरोधी रस क्यों कहा गया है?

उत्तर– वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है तथा करुण रस का स्थायी भाव शोक है जो एक दूसरे के सर्वथा विपरीत है। अतः वीर और करुण रस को विरोधी रस कहा गया है।

प्रश्न १२. हमारे लिए आँसू बड़ी बला है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर– लेखक ने आँसू को बड़ी बला इसलिए कहा है कि उसे एक बार नजला हुआ। फलतः दिन-रात आँखों से आँसू टपकते रहे। बीनाई भी कम होती गयी।

प्रश्न १३. लेखक ने आँसू को किस के माफिक माना है?

उत्तर–लेखक ने आँसू को शरीर में गड़े हुए खजाने के माफिक माना है जो वक्त पर संचित पूँजी के समान काम देता है।

प्रश्न १४. हर्ष, भय, प्रेम इत्यादि भावों को प्रकट करने में कौन सहायक होता है?

उत्तर–हर्ष, भय, प्रेम इत्यादिं भावों को प्रकंट करने में आँसू ही सहायक होते हैं जो सब इन्द्रियों द्वारा हार स्वीकार कर लेने पर कार्य प्रारम्भ करते हैं।

प्रश्न १५. वियोग के उपरान्त दोस्त से मुलाकात की खुशी प्रकट करने में आँसू ही सबसे बड़ा सहारा क्यों सिद्ध होते हैं?

उत्तर–वियोग के उपरान्त दोस्त से मुलाकात होने पर जो हर्ष और जो प्रमोद बढ़ता है उससे अंग-अंग शिथिल हो जाता है। कण्ठ रुंध जाता है। अतः असीम आनन्द को प्रकट करने में आँसू ही सबसे बड़ा सहारा सिद्ध होते हैं।

प्रश्न १६. अत्यन्त शोक से किस उपाय द्वारा रक्षा सम्भव है?

उत्तर–अत्यन्त शोक से रक्षा का उपाय आँसू ही है जिनके निकलने से हृदय को विदीर्ण होने से बचाया जा सकता है। कभी-कभी तो शोक से रक्षा के लिए रोना, उपाय माना गया है।

प्रश्न १७. सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी किसे माना गया है?

उत्तर–सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी उसके प्रेमाश्रुपात है जो उपास्य देव के नाम-संकीर्त्तन में अवश्य ही उसके नेत्रों द्वारा होना चाहिए।

प्रश्न १८. सृष्टि कर्त्ता यदि अत्यन्त शोक में अश्रुपात प्राकृतिक न कर देता तो क्या होता?

उत्तर–सृष्टिकर्त्ता यदि अत्यन्त शोक में अश्रुपात प्राकृतिक न कर देता तो बज्रपात सम दारुण दुःख के वेग को संभालना सम्भव न होता।

प्रश्न १९. वीर और करुण परस्पर किस प्रकार के रस हैं।

उत्तर–वीर और करुण परस्पर विरोधी रस हैं।

प्रश्न २०. किसकी आँखें दुनिया के दुःख पर नहीं पसीजती?

उत्तर–दुनिया के दुःख पर उन लोगों की आँखे नहीं पसीजती जो निठुर निर्दयी तथा मक्कार हैं।

प्रश्न २१. चित्त की वृत्तियों का किसकी आँखों में प्रभाव दिखाई नही देता?

उत्तर–चित्त की वृत्तियों का बेकलेजे व्यक्तियों की आँखों में कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता। उनकी बड़ी-बड़ी आँखें केवल देखने ही को हैं।

प्रश्न २२. कब्र या मकबरों की रूह को किससे राहत पहुँच सकती है?

उत्तर–कब्र या मकबरों की रूह को दोस्त के आँसुओं से राहत पहुँच सकती है।

प्रश्न २३. लेखक आँसुओं के कितने भेद बताता है?

उत्तर–लेखक आँसुओं के निम्नलिखित भेद बताता है–१. बात कहते रोने वाले आँसू , २. गिरों आँसू।

प्रश्न २४. भट्टजी की प्रमुख नाट्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर–भट्टजी की प्रमुख नाट्य-रचनाओं के नाम हैं–१. बाल-विवाह, २.नई रोशनी का विष, ३. रेल का विकट खेल, ४. सीता वनवास, ५. पद्मावती आदि।

प्रश्न २५. "आँखें चित्त की वृत्तियों को चट पहचान लेती हैं।" 'आँसू' निबन्ध के आधार पर इस उक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (मा० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

उत्तर– आँखें, चित्त वृत्ति की अभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। चित्त का आँखों से सीधा सम्पर्क होने के कारण आँखों से वही भाव व्यक्त होने लगते हैं जो उसके चित्त में है। ऐसा लगता है कि आँखे चित्त की वृत्तियों को चट पहचान लेती हैं।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. इस निबन्ध के आधार पर आँसू का महत्त्व बताइए।

***उत्तर*– भाव प्रधान निबन्ध**–

'आँसू' पं० बालकृष्ण भट्ट का एक भाव प्रधान निबन्ध है जिसमें लेखक की कल्पना शक्ति की प्रखरता के स्थान-स्थान पर दर्शन होते हैं।

आँसू गड़ा हुआ खजाना– आँसू को भट्टजी एक गड़े हुए खजाने के समान मानते हैं। जिस प्रकार कोई व्यक्ति धन का संग्रह करते हुए बड़ा खजाना बना लेता है और इस संचित पूँजी का आवश्यकता के समय निःसंकोच प्रयोग करता है। उसी प्रकार व्यक्ति के शरीर में आँसू गड़े हुए खजाने के समान हैं जिनका प्रयोग व्यक्ति अपने प्रेम या भय, सुख या दुःख आदि भावों को अपनी अन्य इन्द्रियों द्वारा प्रकट करने में असमर्थ होने की स्थिति में करता है।

चिरकाल का वियोग– चिरकाल के वियोग के पश्चात् जब किसी घनिष्ठ मित्र से भेंट का समय आता है तब हृदय में जो आनन्द उमड़ता है, जो प्रसन्नता मन को होती है, उसका वर्णन करना सरल नहीं है। ऐसे अवसर पर अंगों में ऐसी शिथिलता आ जाती है कि कुछ भी करना सम्भव नहीं हो पाता। भाव विह्वलता की ऐसी स्थिति होती है कि कण्ठ रुँध जाता है। जिह्वा शिथिल पड़ जाती है। प्रसन्नता को प्रकट करना कठिन हो जाता है।

आँसू की करामात– घनिष्ठ मित्र से लम्बे अन्तराल के पश्चात् भेंट होने पर अंगों में ऐसी शिथिलता आ जाती है कि इस मिलाप पर आसीम आनन्द प्रकट करने के लिए आँख से आँसू झरने लगते हैं। सच्चा भक्त भी अपने उपास्य देव की मूर्ति के चरणों को प्रेम के आँसुओं से धोने लगता है।

आँसू और भाव गोपन– सुख-दुःख प्रकट करने में भी आँसू महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गम्भीर प्रकृति-व्यक्ति भी अपने भाव नहीं छिपा सकते। आँसू की बूँदे चित्त की कथा कह देती हैं।"

दारुण दुःख और अश्रुपात– भवभूति ने भी अपने काव्य में वर्णन करते हुए लिखा है कि वज्रपात के समान दारुण दुःख के वेग को कम करने में अश्रुपात सहायक होता है। शोक संतप्त व्यक्ति के हृदय को अश्रुपात ही विदीर्ण होने से बचा सकता है। व्यक्ति को राहत प्रदान करता है। कभी-कभी दुःखी व्यक्ति की आँखों से आँसू गिराने के लिए प्रयत्न किये जाते हैं ताकि उसकी वेदना कम हो सके।

सत्पुरुष और आँसू– भट्टजी ने लिखा है कि जो व्यक्ति निर्दयी हैं, जिनका हृदय पत्थर के समान कठोर है, उनकी आँखों से आँसू नहीं निकलते और न वे आँसुओं से पसीजते ही हैं। जो सरल चित्त हैं। जिनके मन में किसी प्रकार का कपट नहीं है उनकी आँखों से आँसू निकलकर उनकी चित्त वृत्ति को प्रकट करते हैं।

उपसंहार– आँसू की आवश्यकता गम्भीर वेदना को कम करने के लिए भी होती है। आँसू भलाई के समय तथा किसी की प्रशंसा करते समय भी आते हैं। कभी-कभी जुकाम की अवस्था में भी आँसू टपकने लग जाते हैं।

प्रश्न २. इस पाठ को ध्यान में रखते हुए इसी प्रकार का एक निबन्ध स्वेद (पसीना) या छींक पर लिखिए।

उत्तर- स्वेद– पसीना व्यक्ति के परिश्रम का द्योतक है। जो श्रमिक विभिन्न उद्योगों में कार्यरत हैं अथवा अन्य किसी परिश्रम साध्य कार्यों में संलग्न हैं, उनके शरीर को सदा पसीने से लथपथ देखा जा सकता है। परिश्रम से लाल हुए श्रमिक के मुख को देखकर उसकी परिश्रम शीलता के साथ उसकी निर्धनता तथा कार्य संलग्नता का परिचय प्राप्त होता है।

पसीना होता तो जल की ही बूँदें हैं किन्तु सद्यस्नात से शरीर पर पड़ी जल की बूँदों को कोई पसीना नहीं कह सकता। ये जल बिन्दु उसके शरीर पर स्पष्ट रूप से यह भान कराते हैं कि ये परिश्रम की बूँदे नहीं हैं। इन बूँदों में श्रमिक का परिश्रम नहीं छिपा। इन बूंदों में दुर्गन्ध नहीं सुगन्ध है। इन बूँदों में रजकण नहीं अपितु स्वच्छता है। सुगन्धित साबुन या शैम्पो की भीनी-भीनी सुगन्ध है।

पसीने में निर्धन की कमाई की झलक है। एक-एक बूँद से उसे आशा है पैसा मिलने और बच्चों के भरण-पोषण की।

प्रश्न ३. बालकृष्ण भट्ट की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'आँसू' निबन्ध के आधार पर पं० बालकृष्ण भट्ट की भाषा-शैली की समीक्षा कीजिए।

उत्तर सीमा १०० शब्द (मा० शि० बोर्ड १९९३)

उत्तर- बालकृष्ण भट्ट–बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के प्रमुख जागरूक लेखक थे जिन्होंने विचार पूर्ण निबन्ध लिखने तथा कलात्मक निबन्ध को प्रतिष्ठित करने में हिन्दी को विशेष योग दिया है।

जन्म तथा साहित्य सेवा–भट्टजी का जन्म ३ जून १८४४ को इलाहाबाद में हुआ था। स्वाध्ययन के बल पर उन्होंने विभिन्न भाषाओं पर अपना अच्छा अधिकार बना लिया और शिक्षा जगत की सेवा करने के पश्चात् 'हिन्दी शब्द सागर' 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादन माध्यम से हिन्दी साहित्य सेवा में संलग्न रहे।

भाषा– भट्टजी ने प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति संस्कृत तत्सम शब्दावली द्वारा की है। भाषा में मुहावरों तथा व्यंग्य की बहुलता है। उर्दू, फारसी के नये शब्दों का भी प्रयोग इनकी भाषा में है। रचनाओं में अँग्रेजी तथा स्थानीय बोलचाल के शब्दों का भी प्रयोग है।

शैली–(१) **व्यावहारिक** –भट्टजी की व्यावहारिक शैली प्रवाहपूर्ण तथा बोधगम्य है। इस शैली में उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों की प्रधानता है।

(२) **भावात्मक**–'आँसू' निबन्ध में लेखक की शैली भावात्मक है। इस शैली में उन्होंने मार्मिक विचार व्यक्त किये हैं।

(३) **कल्पनात्मक**–संस्कृत साहित्य से उद्धरणों का सहारा भट्टजी ने कल्पनात्मक शैली में लिया है।

प्रश्न ४. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) मनुष्य के शरीर में आँसू भी गढ़े हुए खजाने के माफिक है। जैसे कभी कोई नाजुक वक्त आ पड़ने पर संचित पूंजी ही काम देती है, उसी तरह हर्ष, भय, प्रेम इत्यादि भावों को प्रकट करने में जब सब इन्द्रियाँ स्थगित होकर हार मान बैठती हैं, तब आँसू ही उन भावों को प्रकट करने में सहायक होता है।

उत्तर- आशय- प्रस्तुत पंक्तियों में आँसूओं को मनुष्य शरीर में गड़े हुए धन के समान मानते हुए भट्टजी का कहना है कि गड़ा हुआ धन जिस प्रकार विशिष्ट अवसरों पर कार्य में लिया जाता है उसी प्रकार जब व्यक्ति की इन्द्रियाँ, हर्ष, भय, प्रेम, आदि भावनाओं को प्रकट करने में समर्थ नहीं होती तब ये आँसू ही गड़े धन के समान हमारी हर प्रकार की भावनाओं को प्रकट करने में समर्थ होते हैं। हमारी भावनाओं को व्यक्त करने में हर प्रकार से सहायक सिद्ध होते हैं।

(ख) बरसात में तालाब जब लबालब भर जाता है तो बाँध तोड़ उसका पानी बाहर निकाल देना ही सुगम उपाय बचाव का होता है। इसी तरह अत्यन्त शोक से क्षोभित तथा व्याकुल मनुष्य को अश्रुपात ही हृदय को विदीर्ण होने से बचा लेने का उपाय है।

उत्तर- सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित 'आँसू' निबन्ध से उद्धृत हैं।

आशय- सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि का कहना है कि बरसात की अधिकता से जब तालाब जल से पूरित हो जाये और उस जल से आस-पास डूबने का भय हो तो मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है कि बाँध को तोड़ दिया जाय ताकि उसका जल बहकर निकल जाय और सबकी रक्षा हो सके। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति शोक से आकुल हो, हृदय वेदना से विदीर्ण हो रहा हो तो हृदय की वेदना को कम करने का एक मात्र उपाय यही है कि किसी प्रकार उस व्याकुल व्यक्ति के आँसू बहने लग जायँ और वह हृदय वेदना से मुक्ति प्राप्त कर सके।

प्रश्न ५. भवभूति ने अश्रुपात के सम्बन्ध में अपने काव्य में किस प्रकार वर्णन किया है?

उत्तर- भवभूति का संस्कृत साहित्य में विशेष स्थान है। उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति का अत्याधिक सजीव वर्णन किया है। प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण करने के साथ उन्होंने अश्रुपात का वर्णन करते हुए लिखा है-

ईश्वर ने वज्र के समान दारुण दुःख के वेग को कम करने के लिए ही अश्रुपात का सहारा प्रदान किया है। कवि ने एक तालाब का उदाहरण देते हुए कहा है कि जब वह जल से भर जाय और उसके अत्यधिक जल भराव से क्षति की आशंका हो तो मुक्ति के लिए उस बाँध को तोड़ देना ही एकमात्र उपाय है। उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति दारुण दुःख से व्याकुल हो। उसका हृदय वेदना सहन करने में सक्षम न हो तो उसकी इस असहाय पीड़ा का निवारण एक ही उपाय से हो सकता है। उपाय यह है कि उसके आँसू किसी प्रकार बहने लग जायँ। आँसू बहेंगे तो उसके हृदय की पीड़ा कम होगी और इस अश्रुपात से व्यक्ति का हृदय विदीर्ण होने से बच जायेगा।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ- पृष्ठ-३१- माफिक = समान, तरह, सदृश। नाजुक = गम्भीर, विशिष्ट संचित = एकत्र। चिरकाल = अधिक समय, एक अर्सा। अंग-अंग ढीले पड़ना = शिथिल पड़ना, थक जाना। उपासक = उपासना करने वाला, पूजा करने वाला। अश्रुपात = आँसुओं का गिरना। अभिषेक = पूजन, तिलक। दांभिक = झूठा, अभिमानी। भाव-गोपन = भाव छिपाना। बगलगीर = लिपटना, गले लगाना।

पृष्ठ-३२- रणचर्चा = युद्ध की बात। शशोपंज = सोच-बिचार, असमञ्जस। किंकर्त्तव्यविमूढ़ = कर्तव्य निश्चित न कर पाने की स्थिति. समझ में न आना कि क्या किया जाय। विलाप = दुःख में रोना। कुनवा = कुटुम्ब, परिवारीजन। अकुटिल = कुटिलता रहित, सीधा-सच्चा। निठुर = कठोर। निर्दयी = दया रहित, कठोर। बेकलेजे = हृदय हीन।

पृष्ठ-३३- कोटि = करोड़ों। जतन = कोशिश, तरकीब। निगोड़े = व्रज क्षेत्र की एक गाली, अकर्मण्य। रिस = क्रोध, गुस्सा। मृतक = मरा हुआ, शव, मुर्दा। आरास्ता = सजाया जाना, सुसज्जित। रूह = आत्मा। राहत = चैन, सन्तोष, आराम। कतरे = बूँदे, टुकड़े। पनीला = पानी का, जल युक्त। कपार = खोपड़ी, सिर, कपाल। गिरों = रहन, गिरवी। अबला = बलहीन, कमजोर। अधीर = धैर्यरहित, बेचैन। टोटा = हानि, कमी। बरकत = अधिकता, लाभ, बहुतायत। बहुधा = अक्सर, ज्यादातर। बला = मुसीबत। नजला = जुकाम, एक रोग जिसमें सिर का विकार युक्त पानी ढलकर शरीर के अन्य अंगों को खराब कर देता है। कपार = सिर, भाग्य। नहूसत = उदासीनता, मनहूस होने का भाव। अलामत = पहचान, चिह्न।

(१)

मनुष्य के शरीर में आँसू भी गड़े हुए खजाने के माफिक है। जैसा कभी कोई नाजुक वक्त आ पड़ने पर संचित पूंजी ही काम देती है, उसी तरह हर्ष, भय, प्रेम, इत्यादि भावों को प्रकट करने में जब सब इन्द्रियाँ स्थगित होकर हार मान बैठती हैं, तब आँसू ही उन सब भावों को प्रकट करने में सहायक होता है। (पृष्ठ-३१)

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित **'आँसू'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत स्थल पर आँसूओं को शरीर में गड़े हुए खजाने के समान बताते हुए लेखक कहता है-

व्याख्या- आँसू, मनुष्य के शरीर में गड़े हुए धन के समान हैं। जिस प्रकार व्यक्ति अपने संचित धन का प्रयोग संकटकाल में करता है उसी प्रकार जब इन्द्रियाँ हमारे हृदय की भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ सिद्ध होती हैं, तब हमारे हृदय के भावों को प्रकट करने में आँसू ही विशेष सहायक होते हैं।

प्रायः ऐसा होता है कि एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् जब कोई मित्र आता है तब उससे भेंट के समय हृदय की प्रसन्नता से ही मन आनन्द में ऐसा निमग्न हो जाता है कि उसकी क्रियाशीलता समाप्त प्राय हो जाती है। उस आनन्द को प्रकट करने में उसकी वाणी भी असमर्थ रहती है। कण्ठ रुँध जाता है। ऐसे समय में, मिलन के इस असीम आनन्द को प्रकट करने में आँसू ही सहायक होते हैं जो नेत्रों से जल की धार के रूप में प्रकट होते हैं।

विशेष-(१) **भाषा**- विदेशी शब्दों से युक्त है। सरल और तत्सम शब्द लिए हुए है।

(२) **शैली**-भावनात्मक शैली है।

(३) **अन्य**- आँसुओं को शरीर में गड़े हुए ख़जाने के समान बताते हुए उनका महत्त्व बताया गया है।

(२)

सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी भी इसी से हो सकती है। अपने उपास्य देव के नाम-संकीर्तन में जिसे अश्रुपात न हुआ, मूर्ति का दर्शन कर प्रेमाश्रुपात से जिसने उसके चरण-कमलों का अभिषेक न किया, उस दांभिक को भक्ति के आभास मात्र से क्या फल। सरस कोमल चित्तवाले अपने मनोगत सुख-दुःख के भाव को छिपाने को हजार-हजार चेष्टा करते हैं कि दूसरा कोई इनके चित्त की गहराई को न बहा सके पर अश्रुपात भाव गोपन की सब चेष्टा को व्यर्थ कर देता है। (पृष्ठ-३१)

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित **'आँसू'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने आँसुओं के महत्त्व का वर्णन करते हुए उन्हें हृदय के भाव प्रकट करने का अनुपम साधन बताया है।

व्याख्या- आँसुओं द्वारा ही सच्चे भक्त और उपासक की पहचान होती है। सच्चा भक्त वह है जो उपासना के समय ऐसा भाव विह्वल हो जाय कि मूर्ति के समक्ष, प्रेम विभोर हो

जाने पर उसके नेत्रों से अश्रु धारा बहने लगे। संकीर्तन में मग्न उसके नेत्रों से बहते आँसुओं की धार से भगवान् की मूर्ति के चरण कमल का अभिषेक होता हो। जिसकी उपासना में अश्रुपात न हो, उसे सच्चा भक्त या उपासक नहीं समझना चाहिए।

भट्टजी के मतानुसार जिसका चित्त कोमल है। मन में सरसता है वे इस प्रकार के प्रयत्न करते हैं जिनसे उनके मन का सुख या दुःख दूसरों पर प्रकट न हो। लेकिन वे अपने सुख-दुःख को नहीं छिपा पाते। उनके गोपनीय भाव नेत्र से बहते हुए आँसू खोलकर रख देते हैं। कुछ भी छिपाव नहीं हो पाता। छिपाव के सभी प्रयास आँसुओं के सम्मुख व्यर्थ सिद्ध होते हैं।

विशेष–(१) **भाषा**–भाषा सरल तथा विदेशी भाषा के शब्दों से युक्त है।

(२) **शैली**–भाव प्रधान शैली।

(३) **सन्देश**–आँसुओं पर नियन्त्रण सम्भव नहीं है।

(३)

कोई शूरवीर जिसकी रणचर्चा मात्र सुन जोश आ जाता है और जो लड़ाई में गोली तथा वाण की वर्षा को फूल की वर्षा मानता है, वीरता उमंग में भरा हुआ युद्ध-यात्रा के लिए प्रस्थान करने को तैयार है। विदाई के समय विलाप करते हुए अपने कुनबा वालों के आँसू के एक-एक बूँद की क्या कीमत है, यह वही जान सकता है वह शशोपंज में पड़ आगे को पांव रख फिर हटा लेता है। वीर और करूणा ये दो विरोधी रस अपनी-अपनी ओर से उमड़-उमड़ देर तक उसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ किये रहते हैं। (पृष्ठ-३२)

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित 'आँसू' निबन्ध से अवतरित हैं।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने आँसुओं की वास्तविक शक्ति की कसौटी, युद्ध के लिए प्रस्थान करते हुए एक वीर सैनिक को मानते हुए कहा है–

व्याख्या–युद्धभूमि में जो वीर सैनिक वाणों तथा गोलियों की वर्षा से भी नहीं घबड़ाता। जिस शूरवीर को रण की चर्चा मात्र से ही उत्साह आ जाता है, वह भी परिवार से दूर, युद्ध के मैदान में जाने के लिए एकबार असमंजस की स्थिति में आ जाता है, जब वह परिवारीजनों की आँखों से अश्रुपात देखता है। कुटुम्बियों द्वारा युद्ध के लिए प्रस्थान से रुकने के लिए कहते हुए सुनता है तो उस शूरवीर का मन भी डगमगा जाता है। कुछ समय के लिए वह कर्त्तव्य-बोध से विमुग्ध हो जाता है। वह भी रुक जाने का विचार करता है। मन में निश्चयात्मकता नहीं रहती। कभी वीर रस का संचार होता है और वह युद्ध के लिए प्रयाण करने को प्रेरित होता है। कभी करुण रस में बहकर वह युद्धभूमि से कतराने लगता है। उसका मन युद्ध भूमि से दूर, अपने कुटुम्बियों में रहने को करता है।

भट्टजी कहते हैं कि शूरवीर के लिए अपने परिवार वालों के आँसुओं की एक-एक बूँद भी बहुमूल्य है। इन आँसुओं से उस वीर सैनिक के हृदय में उथल-पुथल सी मच जाती है। करुण तथा वीर रस का संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है जो उसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना देता है।

विशेष–(१) **भाषा**–तत्सम शब्द प्रधान, सरल भाषा है।

(२) **शैली**–भावप्रधान शैली।

(३) **अन्य**–युद्धभूमि में जाते हुए शूरवीर की दशा का सजीव चित्रण है।

(४)

आँखों में आँसू उन्हीं अकुटिल सीधे सत्पुरुषों के आता है, जिनके सच्चे सरल चित्त में कपट और कुटिलाई ने स्थान नहीं पाया है। निठुर, निर्दयी, मक्कार की आँखें, जिसके कट्टर कलेजे ने कभी पिघलना जाना नहीं, दुनिया के दुःख पर क्यों पसीजेगी? प्रकृति ने चित्त का आँख के साथ कुछ ऐसा सीधा सम्बन्ध रख दिया है कि आखें चित्त की वृत्तियों को चट पहचान लेती है और तत्काल तदाकार अपने को प्रकट करने में देर नहीं करती। तो निश्चय हुआ कि जो बेकलेजे हैं, उनकी बेल-सी बड़ी-बड़ी आँखे केवल देखने ही को हैं, चित्त की

वृत्तियों का उन पर कभी असर होता ही नहीं। चित्त के साथ आँख के सीधे सम्बन्ध को बिहारी कवि ने कई दोहों में प्रकट किया है। (पृष्ठ-३२)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित 'आँसू' निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में लेखक यह बताना चाहता है कि आँखों का चित्त से सम्बन्ध है और आँसू किन व्यक्तियों की आँखों में आते हैं।

व्याख्या–लेखक के मतानुसार सरल हृदय तथा सज्जनों के नेत्रों से ही अश्रुपात होता है जिन व्यक्तियों के मन में कपट नहीं होता। जो कुटिलता से दूर हैं ऐसे निष्कपट, सरल चित्त सत्पुरुषों के नेत्रों से, दूसरों के दुःख को देखकर अश्रुपात होने लगता है। लेकिन जिनके मन में दया नहीं है। जिनता हृदय कुटिल है, वह दूसरों के दुःख से दुःखी नहीं होते। उनकी आँखों से, दुःखीजन को पीड़ित देखकर आँसू नहीं आते।

भट्ट जी का कहना है कि प्रकृति ने चित्त से आँखों का ऐसा सम्बन्ध जोड़ा है कि चित्त का चित्र आँखों में झलकने लगता है। आँखें मन के भाव को तुरन्त ही समझ लेती है। चित्त की भावना के अनुरूप ही आँखों से अश्रुधार प्रवाहित होने लगती है। लेकिन जिनके हृदय कठोर हैं उन पर मनोविकारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उनकी आँखों को बैल की आँखों के समान केवल देखने भर को ही बड़ी बताते हुए लेखक निष्प्रभावी बताता है।

विशेष–(१) **भाषा**–तत्सम शब्दों का अधिकता के साथ प्रयोग है।

(२) **शैली**–भावात्मक शैली।

(३) **अन्य**–आँसुओं के महत्त्व का निरुपण करते हुए उसका हृदय से सम्बन्ध जोड़ा गया है।

(५)

मृतक के लिए लोग हजारों-लाखों खर्च कर आलीशान रोजे, मकबरे, कब्रें, संगमरमगर या संगमूसा की बनवा देते हैं, कीमती पत्थर, मानिक जमुर्रद से उन्हें आरास्ता करते हैं पर वे मकबरे क्या उसकी रूह को उतनी राहत पहुँचा सकते हैं, जितनी उसके दोस्त आँसू के कतरे टपका कर पहुँचाते हैं? (पृष्ठ-३३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित **'आँसू'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने यह बताना चाहा है कि मृतक के लिए उसके मित्रों के अश्रु बिन्दु जितना सन्तोष प्रदान कर सकते हैं, उतना अन्य नहीं।

व्याख्या–भट्टजी का कहना है कि बड़े-बड़े व्यक्ति, अपने धन तथा पद के मद में अपने प्रियजन की मृत्यु के पश्चात्, उसकी अमरता की इच्छा से लाखों रुपये का व्यय करके उसकी कब्र का निर्माण कराते हैं। आलीशान मकबरा बनवाते हैं। मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए संगमरमर के भव्य स्मारक बनवाते हैं। लेकिन ये रोजे, आलीशान मकबरे, कब्रें आदि सभी मृतक की आत्मा की शान्ति के निमित्त निर्मित साधन महत्त्वहीन हैं। उस मृतक की आत्मा को शान्ति इन निर्माणों से प्राप्त नहीं हो सकती। उसे शान्ति प्राप्त हो सकती है मित्र के आँसूओं की बूँद से, मित्र के रोने से।

विशेष–(१) **भाषा**–भाषा स्वाभाविकता लिए हुए तद्‌भव एवं तत्सम शब्द प्रधान है।

(२) **शैली**–भावात्मक शैली है।

(३) **अन्य**–मित्र के अंश्रुपात से ही मृतक की आत्मा को शान्ति सम्भव है।

(६)

इस आँसू में भी भेद हैं। कितनों का पनीला कपार होता है, बात कहते रो देते हैं। अक्षर उनके मुख से पीछे निकलेगा, आँसुओं की झड़ी पहले ही शुरू हो जायेगी। स्त्रियों के जो बहुत आँसू निकलता है, मानों रोना उनके पास गिरों रहता है इसका कारण यही है कि वे नाम ही की अबला और अधीर है। दुःख के वेग में आँसू को रोकने वाला केवल धीरज

है। उनका टोटा यहाँ हरदम रहता है। तब इनके आँसू का क्या ठिकाना? सत्वशाली धीरज वालों की आँसू कभी आता ही नहीं। कड़ी से कड़ी मुसीबत में दो चार कतरे आँसू के मानों बड़ी बरकत है। (पृष्ठ-३३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित **'आँसू'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक अश्रुपात के भेद स्पष्ट करते हुए कह रहा है–

व्याख्या–कुछ व्यक्ति ऐसे भावुक होते हैं कि बात तो उनकी बाद में पूर्ण होती है, आँसू पहले निकलने लगते हैं। बात-बात में नेत्रों से आँसू निकलना स्वाभाविक हो गया है।

स्त्रियों के विषय में भट्टजी कहते हैं कि वे बलहीन, अबला कहलाती है। उनमें धैर्य की भी कमी होती है। अतः स्त्रियों की आँखों से भी बात-बात में आँसू निकल पड़ते हैं।

गुणी तथा धैर्यवान् व्यक्ति के नेत्रों से अश्रुपात प्रायः कम होता है। वे धैर्य के कारण विपत्तियों को भी सहज में ही सहन कर लेते हैं। उनकी आँखों से धैर्यहीन व्यक्तियों के समान बात-बात में आँसू नहीं निकल पड़ते। घोर संकट की घड़ी में भी वे नहीं घबड़ाते। आँसू नहीं बहाते। घोर आपदाकाल में भी उनकी आँखों से दो चार बूँद आँसू निकलना बहुत बड़ी बात होता है।

विशेष–(१) **भाषा**–सरल, प्रभावपूर्ण भाषा।

(२) **शैली**–भाव प्रधान शैली।

(३) **अन्य**–आँसुओं की विविधता पर प्रकाश डाला है।

(७)

बहुधा आँसू का गिरना भलाई और तारीफ में दाखिल है। हमारे लिए आँसू बड़ी बला है। नजले का जोर है, दिन-रात आँखों से आँसू टपकता है। ज्यों-ज्यों आँसू गिरता है, त्यों-त्यों बीनाई कम होती जाती है। सैकड़ों तदबीरे कर चुके, आँसू का टपकना बन्द न हुआ। क्या जाने, बंगाल की खाड़ी वाला समुद्र हमारी ही कपार में आकर भर रहा है। आँख से तो आँसू चला ही करता है। आज हमने लेख में भी आँसू ही पर कलम चला दी। पड़ने वाले इसे निरी नहूसत की अलामत न मान हमें क्षमा करेंगे। (पृष्ठ-३३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० बालकृष्ण भट्ट** लिखित **'आँसू'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक आँसुओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को प्रकट करते हुए उन्हें एक बड़ी मुसीबत मानता है और कहता है–

व्याख्या–लोग कहते हैं कि आँसू किसी की भलाई अथवा प्रशंसा के सूचक हैं। ये आँसू गिरते ही तब हैं जब कोई अच्छा कार्य करके दूसरों की प्रशंसा का पात्र बना जाता है। लेकिन भट्टजी आँसुओं को एक बहुत बड़ी विपत्ति मानते हैं। उनके विचार से आँसू तभी आते हैं जब नजले का प्रकोप हो। जोर से नजला होने पर कभी-कभी तो ऐसी स्थिति बन जाती है कि अश्रुधार रोकने से भी नहीं रुकती। स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि आँसू रोकने के प्रयास भी निष्फल सिद्ध होते हैं और आँसुओं के गिरते रहने से बीनाई प्रभावित होती है। वह टूटती जाती है और कम होती जाती है। प्रयत्न किया जाता है कि आँसू गिरना बन्द हो जाय किन्तु ऐसा सम्भव होता नहीं दिखाई देता। तब यह सन्देह होने लगता है कि बंगाल की खाड़ी का रूप तो नहीं बन गयी है हमारी खोपड़ी।

अन्त में भट्टजी अपनी लेखनी 'आँसू' जैसे उदासीन निबन्ध पर चलाकर सबसे क्षमा की प्रार्थना करते हैं।

विशेष–(१) **भाषा**–भाषा की सरलता तथा प्रवाह सराहनीय है।

(२) **शैली**–भावात्मक शैली है।

(३) **अन्य**–आँसू जैसे उदासीनता के प्रतीक निबन्ध लेखन के लिए लेखक क्षमायाची है।

३ पगडण्डियों का जमाना

(हरिशंकर परसाई)

● *गागर में सागर*

निबन्ध– व्यंग्यात्मक।

लेखक– हरिशंकर परसाई * **जन्म**– सन् १९२४ * **स्थान**– जमानी (इटारसी मध्य प्रदेश)

शैक्षिक योग्यता– एम. ए. (हिन्दी) **सेवा**– प्राध्यापक * स्वतन्त्र लेखन * 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन * धर्मयुद्ध * धर्मयुग * साप्ताहिक हिन्दुस्तान * सारिका आदि पत्रिकाओं में व्यंग्य रचनाएँ।

कृतियाँ–उपन्यास– तट की खोज * रानी नागफनी की कहानी।

कहानी-संग्रह– हँसते हैं, रोते हैं * जैसे उनके दिन फिरे।

निबन्ध संग्रह– सदाचार का तावीज * तब की बात और थी * भूत के पाँव पीछे * बेईमानी की परत * पगडण्डियों का जमाना और अन्त में * शिकायत मुझे भी है * ठिठुरता हुआ गणतन्त्र * विकलांग श्रद्धा का दौर आदि।

पगडण्डियों का जमाना– ईमानदार बनना भी बहुत बड़ी सफलता का द्योतक है आज सफलता के लिए अनुचित साधन अपनाना अनिवार्य-सा हो गया है। ईमानदार व्यक्ति परिश्रम करता है किन्तु लाभान्वित नहीं रहता। अनुचित साधनों के सहारे परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ जा सकता है। शासन में भागींदारी हो सकती है। समाज में उच्च स्थान प्राप्त हो सकता है। व्यंग्यात्मक शैली में लेखक ने आज के युग को पगडण्डियों का जमाना बताया है। सफलता के आम मार्गों को बन्द बताया है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. ***इस निबन्ध का उद्देश्य है–***

(क) जमाने की पगडण्डियों का वर्णन करना

(ख) आम रास्तों को उखाड़कर पगडण्डियों को जमाने की प्रेरणा देना

(ग) शार्टकट से गन्तव्य तक पहुँचने की कला सिखाना

(घ) जीवन में मेहनत, ईमानदारी और सदाचार की प्रतिष्ठा करना।

उत्तर– (घ) जीवन में मेहनत, ईमानदारी और सदाचार की प्रतिष्ठा करना।

प्रश्न २. ***'वे भुन-भुनाकर चले गये।' इससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?***

(क) द्वेष (ख) रोष

(ग) भय (घ) ईर्ष्या

उत्तर– (क) रोष

प्रश्न ३. ***जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं वे खड़े दरवाजे पर सिर मार रहे हैं और उनके कपोलों से खून बह रहा है।" इस कथन का आशय है कि–***

(क) ईमानदार लोग परिश्रम करके भी हानि ही उठा रहे हैं।

(ख) ईमानदार लोगों के लिए उन्नति के द्वार बन्द हैं।

(ग) अधिक ईमानदारी बघारने वालों का सिर फोड़ दिया जाता है।

(घ) ईमानदारी से उत्तीर्ण होना बहुत कष्टप्रद कार्य है।

उत्तर– (क) ईमानदार लोग परिश्रम करके भी हानि ही उठा रहे हैं।

प्रश्न ४. लेखक ने बिजली को नीग्रो सुन्दरी के दाँतों की उपमा क्यों दी है–

(क) नीग्रो सुन्दरी के दाँत बहुत सफेद होते हैं।
(ख) नीग्रो सुन्दरी केवल क्षणभर के लिए मुस्कराती है।
(ग) नीग्रो सुन्दरी का मुख श्यामवर्ण और दाँत चमकीले होते हैं।
(घ) नीग्रो सुन्दरी का मुख श्यामवर्ण और दाँत पीले होते हैं।

उत्तर–(क) नीग्रो सुन्दरी के दाँत बहुत सफेद होते हैं।

प्रश्न ५. राधेश्याम ने घूस किस कारण से दी–

(क) झूठे हिसाब को सच मनवाने के लिए
(ख) सच्चे हिसाब को सच्चा मनवाने के लिए
(ग) आय को छिपाने के लिए
(घ) झूठ बोलने के कारण। ***उत्तर***–(ख) सच्चे हिसाब को सच्चा मनवाने के लिए।

प्रश्न ६. ईमान किसका बिगाड़ा जाता है–

(क) मित्र का
(ख) शत्रु का
(ग) सम्बन्धी का
(घ) विदेशी का ***उत्तर***–(क) मित्र का।

प्रश्न ७. 'पगडण्डियों का जमाना' निबन्ध के अनुसार नम्बर बढ़वाने या पेपर आउट करने किस महीने में भाग दौड़ होती है–

(क) फरवरी
(ख) मार्च
(ग) अप्रैल
(घ) मई ***उत्तर***–(ख) मार्च।

प्रश्न ८. देश की आम सड़कें अब किस के काम आयेंगी–

(क) निर्धन के
(ख) भविष्य के पुरातत्त्व वेत्ता के
(ग) अशिक्षित के
(घ) बेरोजगार के

उत्तर–(ख) भविष्य के पुरातत्त्व वेत्ता के।

प्रश्न ९. मैंने परिचित अध्यापक से कहकर, नम्बर बढ़वाने का काम क्यों स्वीकार नहीं किया?

(क) रिश्वत न मिलने के कारण
(ख) ईमानदार बन जाने की प्रतिज्ञा के कारण
(ग) कठिन कार्य के कारण
(घ) अध्यापक की बेरुखी के कारण।

उत्तर–(ख) ईमानदार बन जाने की प्रतिज्ञा के कारण।

प्रश्न १०. ईमानदार बन जाने की प्रतिज्ञा सुनकर उन पर क्या प्रभाव पड़ा–

(क) वह प्रसन्न हुए
(ख) भुन-भुनाकर चले गए
(ग) आशीर्वाद दिया
(घ) गालियाँ दी।

उत्तर–(ख) भुन-भुनकर चले गए।

प्रश्न ११. लेखक के अनुसार अच्छी आत्मा किस प्रकार की होनी चाहिए–

(क) पवित्र होनी चाहिए
(ख) फोल्डिंग कुर्सी की तरह होनी चाहिए
(ग) उदार होनी चाहिए
(घ) सुलझी होनी चाहिए।

उत्तर–(ख) फोल्डिंग कुर्सी की तरह होनी चाहिए।

प्रश्न १२. पुरानी कथाओं के दानव अपनी आत्मा को दूर पहाड़ी पर तोते में क्यों रखते थे?

(क) तोते को आकर्षक पक्षी मानकर
(ख) बेखटके दानवी कर्म करने के लिए
(ग) ऊँचाई के कारण
(घ) हरियाली के कारण। ***उत्तर***–(ख) बेखटके दानवी कर्म करने के लिए।

प्रश्न १३. ***देव और दानव में सबसे बड़ा फर्क यह है–***

(क) एक भलाई करता है और दूसरा बुराई

(ख) एक की आत्मा अपने पास ही रहती है और दूसरे की उससे दूर

(ग) एक सबकी सुनता है और दूसरा किसी की नहीं

(घ) एक मन्दिर में पूजा जाता है दूसरा कहीं नहीं।

उत्तर–(ख) एक की आत्मा अपने पास ही रहती है और दूसरे की उससे दूर।

प्रश्न १४. ***अब, लेखक के मत से कुत्ता और सूअर अपनी आत्मा कहाँ रखने लगे हैं–***

(क) दानव में (ख) किसी-किसी आदमी में

(ग) देवता में (घ) बन्दर में

उत्तर–(ख) किसी-किसी आदमी में।

प्रश्न १५. ***लेखक के विचार से बेईमानी सस्ती कब पड़ेगी–***

(क) सच्चाई के लिए घूस देने पर

(ख) झूठा हिसाब रखने पर

(ग) घूस देकर झूठा हिसाब सच्चा बनाने पर

(घ) पूर्ण तया बेईमानी करने पर।

उत्तर–(ग) घूस देकर झूठा हिसाब सच्चा बनाने पर।

प्रश्न १६. ***जुलाई के पहले हफ्ते में जब कोई स्नेही आये तो क्या समझा जाय–***

(क) गीत गाने आया है

(ख) बहार देखने आया है

(ग) स्कूल-कॉलेज में भर्ती करने में मदद लेने आया है

(घ) मिलने आया है।

उत्तर–(ग) स्कूल कॉलेज में भर्ती करने में मदद लेने आया है।

प्रश्न १७. ***अब नम्बर बढ़वाने वाला कहता है–***

(क) संकोच के साथ (ख) बेहिचक

(ग) अधिकारपूर्वक (घ) बगलें झाँकता हुआ।

उत्तर–(ग) अधिकारपूर्वक।

प्रश्न १८. ***पगडण्डी पर चलना प्रारम्भ क्यों हो गया है–***

(क) आम सड़कों की मरम्मत हो रही है

(ख) आम सड़कों पर चलना बन्द हो गया है

(ग) पगडण्डी चिकनी और चौड़ी हो गयी है

(घ) आम सड़क पर चलना पागलपन माना जाता है।

उत्तर–(ग) पगडण्डी चिकनी और चौड़ी हो गयी है।

प्रश्न १९. ***'पगडण्डियों का जमाना' किस प्रकार का निबन्ध है–***

(क) वर्णनात्मक (ख) प्रतीकात्मक

(ग) आलंकारिक (घ) समीक्षात्मक ***उत्तर***–(ख) प्रतीकात्मक।

प्रश्न २०. ***"अच्छी आत्मा फोल्डिंग कुर्सी की तरह होनी चाहिए।" हरिशंकर परसाई की इस उक्ति में कौन-सी भावना निहित है?*** (मा० शि० बोर्ड० १९९३)

(क) वक्रोक्ति (ख) हास्य

(ग) व्यंग्य (घ) उदारता ***उत्तर***–(ग) व्यंग्य।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "दस सालों में यह जो प्रगति हो गई है, यह मुझे परेशान करती है।" इस वाक्य में किस शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक ढंग से हुआ है?

उत्तर– वाक्य में 'प्रगति' शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक ढंग से हुआ है।

प्रश्न २. आज के जमाने को पगडण्डियों का जमाना क्यों कहा गया है?

उत्तर– व्यक्ति को प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अनुचित साधनों के प्रयोग के कारण आज के जमाने को पगडण्डियों का जमाना कहा गया है।

प्रश्न ३. 'अब आम सड़कें खुल भी जायें तो लोग उन पर चलने में झिझकेंगे।" क्यों?

उत्तर– आम सड़कें अब खुल भी जायें तो लोग उन पर चलने में इसलिए झिझकेंगे क्योंकि पगडण्डियों पर चलने का ऐसा समय आ गया है कि यह मार्ग ही सफलता का प्रतीक बन गया है।

प्रश्न ४. 'मेरी परेशानी का कारण दूसरा है।' लेखक ने यहाँ किस कारण की ओर संकेत किया है?

उत्तर– लेखक ने परेशानी का कारण यह बताया है कि परीक्षा में अंक बढ़वाने के लिए व्यक्ति निःसंकोच एवम् निर्लज्जता के साथ कार्य कराने के लिए आने लगे हैं।

प्रश्न ५. इस निबन्ध में लेखक ने कुछ शब्दों का प्रयोग साधारण अर्थ में न करके विशेष अर्थ में किया है। जैसे–'पगडण्डियों शब्द यहाँ 'अनुचित और आसान तरीका' अपनाने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ऐसे शब्दों को (प्रतीक) कहा जाता है। आप निम्नलिखित प्रतीकों का व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए।

(क) खुली सड़क, (ख) मुख्य द्वार, (ग) नाबदान, (घ) सुगन्धित रूमाल।

उत्तर–(क) खुली सडक–उचित मार्ग।

(ख) मुख्य द्वार–प्रमुख बात, गलत साधनों का मार्ग।

(ग) नाबदान–बुरे रास्तों का अनुसरण।

(घ) सुगन्धित रूमाल–गलत तरीके अपनाने के साधन।

प्रश्न ६. इस पाठ में अंग्रेजी, अरबी-फारसी और संस्कृत के शब्द आये हैं। आप निम्नलिखित शब्दों को उनके समुचित भाषा वर्ग में लिखिए–

मूड, नाकामयाब, ईमानदार, तपस्या, हिसाब, फोल्डिंग, हैसियत, सिफारिशी, आत्मीयता, दुश्मन, पेपर, जुलाई, आफीसर, मौसम, हिण्ट, समीक्षक, नम्बर, जमाना, सिलेबस।

उत्तर– समुचित भाषा वर्ग–

अंग्रेजी	फारसी	संस्कृत
मूड	नाकामयाब	तपस्या
फोल्डिंग	हिसाब	आत्मीयता
पेपर	हैसियत	समीक्षक
जुलाई	सिफारिशी	
आफीसर	दुश्मन	
हिण्ट	मौसम	
नम्बर	जमाना	
सिलेबस		

प्रश्न ७. *"बेवकूफ" और "बदनामी" शब्दों की बनावट पर ध्यान दीजिए।" बेवकूफ में "बे" और बदनामी में "बद" उपसर्ग है। "बे" और "बद" उपसर्ग लगाकर आप दो-दो शब्द और बनाइये।*

उत्तर– बेकसूर, बेरहम ('बे' उपसर्ग), बदनाम, बदमिजाज ('बद' उपसर्ग)

प्रश्न ८. लेखक ने हमारे सारे सिलेबस और प्रोस्पैक्ट्स को गलत क्यों बताया है?

उत्तर– लेखक ने हमारे सिलेबस और प्रोस्पैक्ट्स को गलत इस आधार पर बताया है कि इसमें 'पेपर आउट' तथा 'नम्बर बढ़वाने' के पेपर्स का कोई विवरण नहीं दिया है।

प्रश्न ९. "तब उसे सच्चे हिसाब को सच्चा मनवाने के लिए घूस देनी पड़ी।" इस उक्ति में लेखक ने किन लोगों पर व्यंग्य किया है?

उत्तर– लेखक ने इस उक्ति में उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो हर प्रकार से रिश्वत लेने का उपाय सोचते और रिश्वत लेते हैं।

प्रश्न १०. परीक्षा में ईमानदारी पूर्वक अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को क्या करना चाहिए?

उत्तर– परीक्षा में ईमानदारी पूर्वक अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को समय विभाजित करके पाठ्यक्रमानुसार परिश्रम पूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

प्रश्न ११. "सालों से ये सड़कें बन्द हैं और सब पगडण्डियों से जा रहे हैं।" इस पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– सालों से परिश्रम तथा ईमाबदारी के मार्ग पर चलना बन्द हो गया है। व्यक्ति ने जीवन की सफलता का मूलमन्त्र अकर्मण्यता तथा बेईमानी मान लिया है।

प्रश्न १२. परिचित अध्यापक से लेखक ने अंक वृद्धि की सिफारिश क्यों नहीं की?

उत्तर– परिचित अध्यापक से लेखक ने अंक वृद्धि की सिफारिश इसलिए नहीं की क्योंकि उसी दिन लेखक ने पूर्णतया ईमानदार बनने की प्रतिज्ञा की थी।

प्रश्न १३. निबन्ध के आधार पर बताइए कि सज्जन के अंक बढ़वा आने पर लेखक ने क्या विचार किया?

उत्तर– सज्जन के अंक बढ़वा आने पर लेखक ने विचार किया कि मेरी ईमानदारी की प्रतिज्ञा की परीक्षा लेने इस सज्जन के रूप में स्वयं विष्णु भगवान् पधारे हैं।

प्रश्न १४. अंक बढ़वाने के लिए मनाही पर लेखक के विषय में क्या कहा गया?

उत्तर– अंक बढ़वाने के लिए मनाही पर लेखक के विषय में कहा गया, "आजकल यह साला बड़ा ईमानदार बन गया है।"

प्रश्न १५. सज्जन को उनके पुत्र के नम्बर बढ़वाने की मनाही कर देने पर लेखक ने उनसे क्या अपेक्षा की?

उत्तर– नम्बर बढ़वाने की मनाही कर देने पर लेखक ने उनसे यह अपेक्षा की कि उनसे सज्जन से हिन्दी साहित्य के इतिहास में पूरा अध्याय लिखा जाने का वर प्राप्त होगा।

प्रश्न १६. "हे मेरी आत्मा, तू ही बता। क्या गाली खाकर, बदनामी करवाकर मैं ईमानदार बना रहूँ?" लेखक के इस प्रश्न का उसकी आत्मा ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर– लेखक के प्रश्न का उसकी आत्मा ने उत्तर दिया–"नहीं, ऐसी कोई जरूरत नहीं है। इतनी जल्दी क्या है? जमाना बदलने पर ईमानदार बन जाना।"

प्रश्न १७. अच्छी आत्मा को "फोल्डिंग" कुर्सी की तरह क्यों कहा है?

उत्तर– अच्छी आत्मा को "फोल्डिंग" कुर्सी की तरह इसलिए कहा गया है क्योंकि यह आत्मा की आवश्यकतानुसार कार्य में लायी जा सकती है और उसके पश्चात् उपेक्षित सी एक ओर रखी जा सकती है।

प्रश्न १८. पुरानी कथाओं के दानव अपनी आत्मा को दूर किसी पहाड़ी पर तोते में क्यों रख देते थे?

उत्तर– दानव अपनी आत्मा को दूर किसी पहाड़ी पर तोते में इसलिए रख देते थे ताकि उससे मुक्त होकर वे बेखटके दानवी कार्य कर सकें।

प्रश्न १९. देव और दानव में क्या विशेष अन्तर है?

उत्तर– देव और दानव में विशेष अन्तर यह है कि देव की आत्मा उसके पास रहती है तथा दानव की आत्मा उसके पास नहीं होती। उससे दूर होती है।

प्रश्न २०. कुत्ते और सूअर ने नयी विद्या क्या सीख ली है?

उत्तर– कुत्ते और सूअर ने अपनी आत्मा किसी-किसी आदमी में रखने की नयी विद्या सीख ली है।

प्रश्न २१. राधेश्याम ने बिक्री का सही हिसाब दफ्तर में देने के पश्चात् क्या निर्णय लिया?

उत्तर– राधेश्याम ने बिक्री का सही हिसाब दफ्तर में देने के पश्चात् झूठा हिसाब रखने और रिश्वत के बल पर उसे सच्चा बनवाने का निर्णय लिया।

प्रश्न २२. राधेश्याम ने ईमान तथा बेईमानी के सम्बन्ध में अपनी क्या राय बनायी?

उत्तर– राधेश्याम ने ईमान के सम्बन्ध में अपनी राय बनायी कि वह मँहगा है और हैसियत के बाहर है। बेईमानी उसकी राय से सस्ती है।

प्रश्न २३. लेखक ने खुले मन से नम्बर बढ़वाने का विचार क्यों बना लिया?

उत्तर– लेखक ने खुले मन से नम्बर बढ़वाने का विचार इसलिए बना लिया क्योंकि वह समझ गया था कि सिफारिशी चिट्ठी न होने पर कोई दो कौड़ी को भी नहीं पूछता।

प्रश्न २४. लेखक ने जुलाई के पहले हफ्ते में आने वालों के कार्य के विषय में क्या विचार बना लिया था?

उत्तर– लेखक ने जुलाई के पहले हफ्ते में आने वालों के कार्य के विषय में यह विचार बना लिया था कि वे अपने बच्चों को स्कूल-कॉलेज में भर्ती कराने में मदद लेने आये हैं।

प्रश्न २५. मार्च में आने वालों का क्या उद्देश्य हो सकता था?

उत्तर– लेखक के विचार से मार्च में आने वालों का उद्देश्य परीक्षा में अंक बढ़वाना या 'पेपर आउट' कराना हो सकता था।

प्रश्न २६. परीक्षा के मौसम में परीक्षार्थी के अभिभावक को किसकी याद सताने लगती है?

उत्तर– परीक्षा के मौसम में परीक्षांर्थी के अभिभावक को विशेष परिचितों की याद सताने लगती है जो कुछ "हिण्ट" दे सकें या दिला सकें।

प्रश्न २७. पर्चा आउट कराने वाले और नम्बर बढ़वाने वाले अधिकांशतः दया के पात्र क्यों हैं?

उत्तर– पर्चा आउट कराने वाले और नम्बर बढ़वाने वाले अधिकांशतः बेहद परेशान और घबड़ाये हुए होने के कारण दया के पात्र हैं।

प्रश्न २८. आजकल नम्बर बढ़वाने वालों के विषय में लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर– आजकल नम्बर बढ़वाने वालों के विषय में लेखक ने कहा है कि वे सब्जी खरीदने वालों की तरह आते हैं और अधिकार पूर्वक नम्बर बढ़वाने को कहते हैं।

प्रश्न २९. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर– हरिशंकर परसाई के व्यंग्य की विशेषताएँ हैं–१. मुहावरेदार भाषा, २. बोलचाल की व्यावहारिक भाषा, ३. अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग, ४. व्यंग्य-विनोद, ५. चिन्तन तथा चुभन, ६. वर्णनात्मकता।

प्रश्न ३०. परसाई की प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।

उत्तर–परसाई की प्रमुख कृतियों के नाम हैं–(१) **कहानी संग्रह**–"हँसते हैं, रोते हैं", "जैसे उनके दिन फिरे।"

(२) **उपन्यास**–तट की खोज, रानी नागफनी की कहानी।

(३) **निबन्ध संग्रह**–शिकायत मुझे भी है, तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, सदाचार का ताबीज, और अन्त में, ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, विकलांग श्रृद्धा का दौर आदि।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "इस निबन्ध में वर्तमान शिक्षा-पद्धति और भ्रष्ट शासन व्यवस्था पर चुटीला व्यंग्य किया गया है।" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

उत्तर–१. **वर्तमान शिक्षा**–'हरिशंकर परसाई' द्वारा लिखित 'पगडण्डियों का जमाना' एक व्यंग्यात्मक निबन्ध है जिसमें प्रतीकों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा पद्धति तथा भ्रष्ट ,शासन व्यवस्था पर कठोर व्यंग्य किये गये हैं। लेखक ने आधुनिक परीक्षा पद्धति को थोथा आदर्शवादी बताते हुए, पूर्णतः अलाभकारी तथा असत्य मार्गी बताया है।

२. **वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोष**–परसाई जी के विचार से वर्तमान शिक्षा पद्धति दोषपूर्ण है। कोई भी परीक्षार्थी परिश्रम के बल पर सफलता की कामना नहीं करता। पेपर आउट करना अथवा परीक्षा में नम्बर बढ़वाकर उत्तीर्ण होना ही उनकी शिक्षा का उद्देश्य बन गया है। लेखक का कहना है कि परीक्षार्थी ही नहीं अपितु उनके अभिभावक भी अंक-वृद्धि के लिए बिना किसी झिझक के परीक्षक के पास पहुँचने लगे हैं। सिफारिश जुटाने लगे हैं। परिचय ज़ताने लगे हैं और येन केन प्रकारेण परीक्षार्थी के अंक बढ़ाने के लिए प्रयत्लशील रहने लगे हैं।

३. **जुलाई तथा मार्च में आने वाले**–स्नेही तथा परिचितों के मिलने के लिए आने पर सहज ही में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे निश्चित रूप से अपने बच्चों को विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए कुछ सहायता के इच्छुक हैं। अन्यथा जुलाई के प्रथम सप्ताह आने का अन्य उद्देश्य नहीं हो सकता।

मार्च में परीक्षाएँ सम्पन्न होती हैं। उस समय परीक्षोत्तीर्ण होने के लिए या तो पेपर आउट होना चाहिए अथवा नम्बर बढ़ने चाहिए ताकि बिना परिश्रम ही परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ जा सके। शिक्षा पद्धति ही ऐसी है कि छात्र परिश्रम पर इतना ध्यान नहीं देता जितना परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उचित-अनुचित साधनों की तलाश करता है। आश्चर्य इस बात पर होता है कि परिश्रमी छात्र उत्तम अंक प्राप्त नहीं कर पाते। धनी और तिकड़मी छात्र अपने धन तथा अन्य जुगाड़ से उत्तम अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण हो जाते हैं।

४. **भ्रष्ट शासन व्यवस्था**–लेखक हरिशंकर परसाई ने वर्तमान भ्रष्ट शासन व्यवस्था पर करारी चोटें की हैं। लेखक ने बताया है कि शासन में रिश्वत खोरी का जोर है। कोई भी कार्य बिना रिश्वत दिए सम्भव नहीं है। यहाँ तक कि सच्चे हिसाब को भी सत्यापित कराने के लिए रिश्वत देना आवश्यक हो गया है। जनता पर इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है। झूठा हिसाब रखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लेखक ने लिखा है–"सफलता के भवन का सामने का आम दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुस गये हैं और उन्होंने कुण्डी लगा दी है। जो सिर्फ मुख्य द्वार से घुसना चाहते हैं, वे खड़े दरवाजे पर सिर मार रहे हैं और उनके कपालों से खून बह रहा है।"

प्रश्न २. आम सड़कें सब बन्द हो गयी हैं। उन पर तख्ती टंग गयी हैं "सड़क मरम्मत के लिए बन्द हैं।" आप आम रास्ता खुलवाने व सड़क की मरम्मत कराने में किस प्रकार सहयोगी बनेंगे?

***उत्तर*– १. आम सड़कें**–लेखक परसाई जी के विचार से परीक्षा में सफलता के लिए परीक्षार्थियों ने उचित मार्ग का अनुसरण त्याग दिया है। ऐसा ज्ञात होता है कि सही मार्ग अब बन्द हो गया है। उस पर चलने वाले अब है ही नहीं। चारों ओर ऐसे व्यक्तियों की भीड़ बढ़ती जा रही है जो निःसंकोच भाव से अंक बढ़वाने के लिए भाग दौड़ में जुटे हुए हैं। तिकड़म के बल पर सफलता प्राप्त करने में लग हुए हैं।

२. खुली छूट– वर्तमान में उत्तित मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं किन्तु अनुचित मार्ग की बाधाएँ समाप्त होती जा रही हैं। उन्हें अनुचित मार्ग अपनाने की खुली छूट प्राप्त है। एक समय था, जब नम्बर बढवाने वाला बहुत ही संकोच के साथ नम्बर बढ़वाने के लिए जाता था। बात कहते हुए भी उसे झिझक होती थी। लेकिन अब नम्बर बढ़वाने वाले को खुली छूट है। संकोच का कोई स्थान नहीं है।

३. उचित मार्ग– छात्रों में चेतना जाग्रत करंना इस समय अत्यन्त आवश्यक है। छात्र यदि जाग्रत हो गया तो नैतिक सुधारों को वह प्राथमिकता देगा। न तो प्रश्न पत्रों की गोपनीयता भंग होगी और न परीक्षा की पवित्रता पर सन्देह होगा।

४. भ्रष्ट शासन– प्रत्येक विभाग में रिश्वत का बोलबाला है। बिना रिश्वत दिंए सही कार्य भी सम्पन्न नहीं हो पाते। अतः आज सबसे बड़ी आवश्यकता इन भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध समुचित कार्यवाही की है ताकि सबका कार्य सुविधानुसार और समय पर सम्भव हो सके। जब तक रिश्वत का बाजार गर्म रहेगा, तब तक उचित न्याय प्राप्त नहीं हो सकेगा। निर्धन न्याय के लिए तड़पता रहेगा। धनी मौज उड़ाता रहेगा।

५. मेरा कर्तव्य– चारों ओर विषाक्त वातावरण है। भली-भाँति जीवन-यापन भी एक समसम्या बन गया है। ऐसी स्थिति में मेरा यह कर्तव्य है कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए शिक्षाविदों की सहायता से शिक्षा मन्त्री से भेंट करूँ और परीक्षा प्रणाली को दोषमुक्त बनाकर कुशाग्र बुद्धि छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का सुअवसर प्रदान करूँ।

भ्रष्ट शासकों के विरुद्ध जन-जागृति उत्पन्न करके शासन और जनता में अनैतिक कृत्यों की रोक थाम करना भी मेरा कर्त्तव्य है।

प्रश्न ३. "तब उसे सच्चे हिसाब को सच्चा मनवाने के लिए घूस देनी पड़ी।" यदि राधेश्याम व्यापारी के स्थान पर आप होते तो क्या करते?

***उत्तर*– १. सच्चा हिसाब**– समय का व्यक्ति के जीवन में अत्याधिक महत्त्व है। चतुर व्यक्ति समय की गति के साथ अपना पग बढ़ाना इसीलिए सही मानते हैं और "जैसी बहै बयार पीठ पुनि तैसी कीजै" का उपदेश भी दूसरों को देते हैं। उनके विंचार से सच्चा हिसाब रखना सही है। किन्तु ऐसे सच्चे हिसाब से क्या लेना देना जो अविश्वास की दृष्टि से देखा जाय। जिस पर कोई विश्वास ही न करे।

२. राधेश्याम व्यापारी– राधेश्याम भी एक ऐसा व्यापारी था जो अपने व्यवसाय का सच्चा हिसाब रखता था। बिक्री कर छिपाने के लिए झूठा हिसाब रखना अथवा बिक्री कर कार्यालय में झूठा हिसाब प्रस्तुत करना उसकी आदत के विरुद्ध था। वह बिक्री का सही हिसाब करके कार्यालय पहुँचा। उसे सत्यापित करने के लिए भी रिश्वत देनी पड़ी। उसके पश्चात् उसने झूठा हिसाब रखना प्रारम्भ कर दिया। उसने यह विचार किया कि सच्चाई के लिए रिश्वत देने की अपेक्षा झूठ के लिए रिश्वत देना उत्तम है।

३. मैं क्या करता–विजय सत्य की होती है इसमें दो मत नहीं हो सकते। किन्तु सत्य की विजय देखने के लिए धैर्य की आवश्यकता है। समय की जरूरत है। लेकिन आज समय किसके पास है जो धैर्यपूर्वक सत्य की परीक्षा ले। सफलता की प्रतीक्षा करे। इन सबसे बढ़कर आज हम समाज की ओर दृष्टिपात करें तो उसे भी पूर्णरूप से परिवर्तित पाते हैं। समाज का नैतिक पतन हमारे सम्मुख है। अधिकारियों का भ्रष्टाचरण हमारे आचरण को सही बना रहने में बाधक है। किन्तु राधेश्याम व्यापारी के स्थान पर यदि मैं होता तो अवश्य ही सच्चे हिसाब से कार्य करने का प्रयत्न करता और अधिकारियों को भी अपने सच्चे हिसाब से प्रभावित करके उनके भ्रष्टाचरण पर रोक लगाने का प्रयत्न करता। उच्चाधिकारियों तक व्यक्तिगत तथा संगठित रूप में पहुँचकर व्याप्त भ्रष्टाचरण की समाप्ति के लिए जन-चेतना जाग्रत करके उत्तम समाज के निर्माण का प्रयत्न करता।

प्रश्न ४. इस निबन्ध के आधार पर लेखक की रचना-शैली की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–१. लेखक–'पगडण्डियों का जमाना' हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित एक व्यंग्यात्मक निबन्ध है। जिसमें वर्तमान पद्धति तथा शासन व्यवस्था पर करारे व्यंग्य किए गए हैं।

२. लेखक की रचना शैली–व्यंग्यात्मक लेखकों की प्रथम पंक्ति में हरिशंकर परसाई की गणना होती है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के अनुभव के आधार पर उन्होंने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा मिथ्या मान्यताओं के विरुद्ध अपनी सशक्त लेखनी से तीखे व्यंग्य-प्रहार किये और अन्ध-विश्वास तथा अवसरवादिता की कुप्रवृत्तियों का अन्त करने का प्रयास किया।

३. विशेषताएँ–(अ) **सजीवता**–समाज में व्याप्त पाखण्ड, आडम्बर, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता आदि दुष्प्रवृत्तियों का परसाईजी की रचनाओं में सजीव वर्णन मिलता है।

(ब) अन्याय का विरोध–सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक अन्याय का लेखक की रचनाओं में विरोध किया गया है।

(स) परिवर्तन की प्रेरणा–लेखक की शैली में चेतना को झकझोर कर परिवर्तन की एक नयी दिशा देने की प्रेरणा है।

(द) **सार्थक व्यंग्य**–परसाई की शैली में व्यंग्य तो है ही, उसकी सार्थकता उनकी रचना शैली को और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बनाने में सफल है।

(य) **तीक्षण व्यंग्य**–सजीवता तथा तीक्षणता उनकी व्यंग्यात्मक रचना-शैली की विशेषता है। तीखा शब्द प्रहार, उनकी रचनाओं में सर्वत्र पहचाना जा सकता है।

प्रश्न ५. निम्नलिखित उक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) अच्छी आत्मा फोल्डिंग कुर्सी की तरह होनी चाहिए।

(ख) मैं जिसे देवता समझ बैठा था, वह तो आदमी निकला।

(ग) कुछ कुत्ते और सूअर अपनी आत्मा आदमी में रख देते हैं।

(घ) देखता हूँ हर सत्य के हाथ में झूठ का प्रमाण-पत्र है।

उत्तर–उक्ति–(क) अच्छी आत्मा फोल्डिंग कुर्सी की तरह होनी चाहिए।

सन्दर्भ–प्रस्तुत उक्ति **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से उद्घृत है।

आशय–लेखक व्यंग्यात्मक शैली में आत्मा को फोल्डिंग कुर्सी के समान होने पर बल देता हुआ कहता है कि जिस प्रकार फोल्डिंग कुर्सी को आवश्यकतानुसार फैलाकर उस पर आराम से बैठा जा सकता है और आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात् उसे मोड़कर पुनः किसी कोने में रखा जा सकता है। उसी प्रकार आत्मा को भी बना लेना चाहिए जिसे आवश्यकतानुसार कार्य की क्षमता भी प्रदान करनी चाहिए तत्पश्चात् उसे पृथक उठाकर रख देना चाहिए।

उक्ति-(ख) मैं जिसे देवता समझ बैठा था, वह तो आदमी निकला।

सन्दर्भ–प्रस्तुत उक्ति **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से उद्‌धृत है।

आशय–लेखक ने यह प्रतिज्ञा की कि अब कोई भी अनुचित तथा अनैतिक कार्य नहीं किया जायेगा। संयोगवश उसी समय एक सज्जन उनके पास किसी कार्य वश आये। उन्हें लेखक ने इन्द्र या विष्णु के रूप में देखा और मन ही मन प्रणाम भी किया। किन्तु उन सज्जन के वास्तविक स्वरूप को पहचान कर लेखक ने कहा–"मैं जिसे देवता समझ बैठा था, वह तो आदमी निकला।"

उक्ति-(ग) कुछ कुत्ते और सूअर अपनी आत्मा आदमी में रख देते हैं।

सन्दर्भ–प्रस्तुत उक्ति **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से उद्‌धृत है।

आशय–लेखक ने बताना चाहा है कि दानवों में अपनी आत्मा होती ही नहीं है। प्राचीन कथा कहानियों में दानवी आत्मा को दूर पहाड़ी पर तोते में रखना कहा गया है। अब तो ऐसा लगता है कि जानवर भी अपनी आत्मा आदमी में रखने लगे हैं तभी तो ऐसे आदमियों को कुत्ता या सूअर के नाम से पुकारा जाता है। उनके कार्य ही कुत्ता और सूअर जैसे होते हैं।

उक्ति-(घ) देखता हूँ हर सत्य के हाथ में झूठ का प्रमाण-पत्र है।

सन्दर्भ–प्रस्तुत उक्ति **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से उदधृत है।

आशय–राधेश्याम नामक एक व्यवसायी ने बिक्री का सही हिसाब जब कार्यालय में प्रस्तुत किया तो उस हिसाब को झूठा बताया गया। इतना ही नहीं उस सही हिसाब की स्वीकृति के लिए उसे रिश्वत भी देनी पड़ी। तब से उसने बेईमानी को ही अपना लिया क्योंकि महँगा ईमान उसकी हैसियत से परे था और उसने यह निष्कर्ष निकाला था कि हर सत्य के हाथ में झूठ का प्रमाण-पत्र है। बेईमानी बिना समाज में कोई स्थान नहीं है।

प्रश्न ६. राधेश्याम द्वारा झूठा हिसाब रखने की घटना का 'पगडण्डियों का जमाना' निबन्ध के आधार पर वर्णन कीजिए।

उत्तर– **१. राधेश्याम**–पगडण्डियों का जमाना, 'हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित एक व्यंग्यात्मक निबन्ध है। राधेश्याम के विषय में लेखक ने वर्णन किया है कि वह एक सच्चा, ईमानदार तथा परिश्रमी व्यवसायी था। उसकी एक दुकान थी जिसका कोई लम्बा चौड़ा हिसाब नहीं था। छोटी दुकान थी। थोड़ा-सा हिसाब था।

२. रिश्वत–राधेश्याम को बिक्रीकर देने में कोई आपत्ति नहीं थी। हिसाब में किसी प्रकार का फेरबदल या छिपाव उसकी आदत में नहीं था। सही हिसाब करना उसकी उत्तम प्रवृत्ति का द्योतक था। बिक्रीकर की चोरी करना उसके स्वभाव के विपरीत था। एक बार वह बिक्री का सही हिसाब लेकर बिक्रीकर कार्यालय पहुँचा किन्तु उसके सच्चे हिसाब को झूठा बता दिया गया। राधेश्याम को इस झूठे आरोप से बहुत ही क्षोभ हुआ। उसे आश्चर्य इस बात का हुआ कि सच्चे हिसाब को सच्चा मान्य करने के लिए रिश्वत देनी पड़ी।

३. बेईमानी सस्ती–राधेश्याम को सच्चा हिसाब भी झूठा मानने के कारण दुःख हुआ। जब उसने बिक्रीकर कार्यालय में रिश्वत दी तब उसके हिसाब को ठीक माना गया। उसके पश्चात् उसने भी झूठा हिसाब रखना प्रारम्भ कर दिया। रिश्वत के बल पर झूठे हिसाब को सच्चा बनवा लेना उसकी आदत बन गयी। वह बेईमानी करता हुआ भी ईमानदार बन गया। उसके लिए ईमानदारी महँगी तथा बेईमानी सस्ती सिद्ध हुई।

प्रश्न ७.'पगडण्डियों का जमाना' निबन्ध में दस साल पहले और इस समय परीक्षा में अंक बढ़वाने के लिए आने वालों में क्या अन्तर बताया गया है?

उत्तर- परीक्षा में अंक वृद्धि- 'पगडण्डियों का जमाना' हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित एक ऐसा निबन्ध है जिसमें वर्तमान शिक्षा पद्धति पर तीखा व्यंग्य किया गया है और यह भी स्पष्ट किया है कि आज से दस साल पूर्व परीक्षा में अंक बढ़वाने के लिए लोग आते जाते तो अवश्य थे किन्तु उनमें संकोच का भाव होता था। वे अपनी बात खुलकर नहीं कहते थे। झिझक के साथ अंक बढ़वाने की बात कहते थे। अंक बढ़वाने की बात करते हुए उन्हें लज्जा भी होती थी।

२. दस साल पहले- दस साल पूर्व पत्रों में नम्बर बढ़वाने के लिए बहुत ही गोपनीय ढंग से अपनी समस्या रखी जाती थी। पत्र का नमूना प्रस्तुत करते हुए लेखक ने लिखा है-"अपने दोस्त, रमेशचन्द के भाई सुरेश की मोटर साइकिल, जिस पर अंग्रेजी में नम्बर २४३१ लिखा है, बिगड़ गयी है। वह आपके मित्र सिन्हा के पास सुधरने गयी है। आप उसे सुधरवा दें कि कम से कम ४० प्रतिशत तो काम देने लगे।"

इस प्रकार के पत्र का आशय यह होता था कि रमेशचन्द्र के भाई सुरेश का अंग्रेज़ी का प्रश्न पत्र बिगड़ गया है। उसका अनुक्रमांक २४३१ है। इस प्रश्न-पत्र के परीक्षक सिन्हा है। उनसे ४० प्रतिशत अंक दिलवाने हैं।

३. अन्तर- आजकल परीक्षा में अंक वृद्धि के लिए प्रयत्नशील परीक्षार्थियों तथा उनके अभिभावकों में अन्तर आ गया है। अंक बढ़वाने के लिए अब बिना किसी भूमिका के वे परीक्षक के समक्ष अपनी बात निःसंकोच कहने लगे हैं। कोई-कोई तो अधिकार पूर्वक अंक वृद्धि की सिफारिश करता है। ऐसे भी व्यक्ति मिल जायेंगे जो सीधे पत्र भेजकर अपनी बात कहते हैं। यहाँ तक ही नहीं ये सिफारिशी अब खुला कार्ड भेजने में भी किसी प्रकार का भय या झिझक नहीं करते।

प्रश्न ८. हरिशंकर परसाई के निबन्धों की विशेषता का वर्णन कीजिए।

उत्तर- १. व्यंग्यात्मक- हरिशंकर परसाई आधुनिक व्यंग्य लेखकों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। समाज की विसंगतियों को अपने निबन्धों में व्यंग्यात्मक शैली में व्यक्त करके एक नवीन चेतना को जन्म दिया है तथा सामाजिक परिवर्तन को दिशा प्रदान की है।

२. सामाजिक कुरीति का विरोध- परसाईजी के निबन्धों में सामाजिक कुरीतियों, व्याप्त साम्प्रदायिकता, अवसरवादिता तथा भ्रष्टाचार का विरोध मिलता है उन्होंने पाखण्ड, ढोंग, स्वार्थी मनोवृत्ति तथा अन्ध विश्वासों पर अपने निबन्धों में तीखा व्यंग्य किया है।

३. वर्णनात्मक तथा भावात्मक शैली- हरिशंकर परसाई ने अपने निबन्धों में वर्णनात्मक तथा भावात्मक शैली को अपनाया है जिसमें गम्भीर चिन्तन की प्रधानता है।

४. प्रवाहपूर्ण व्यावहारिक भाषा- परसाईजी के निबन्धों की भाषा सरल तथा व्यावहारिक है। भाषा में प्रभाव तथा प्रवाह है। यत्र-तत्र अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है जो व्यंग्य को अधिक तीक्ष्ण बनाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

सप्रसंग व्याख्याएँ

पृष्ठ-३६-३७- शब्दार्थ- अरसा = समय। जमाने = युग, समय। युग प्रवर्तक = युग को परिवर्तन देने वाला, युग निर्माता। लिस्ट = सूची, नामावली। समीक्षक = गुण दोष की विवेचना करने वाला। बेखटके = बिना किसी बाधा के।

पृष्ठ-३८- परमुखापेक्षी = दूसरों पर आश्रित दूसरों की सहायता के सहारे चलने वाले। संदिग्ध = सन्देह के घेरे में, अनिश्चित। आत्मीयता = घनिष्टता।

पृष्ठ-३९–पुरातत्त्ववेत्ता =प्राचीन तत्त्वों की खोज करने वाला। अनुपयोग = बिना उपयोग के। आम सड़क =प्रमुख मार्ग। नाबदान =नाली जिसमें गन्दा जल बहता है। कपोल =गाल। सिर मारना =व्यर्थ का परिश्रम।

(१)

ऐसी आत्मा बड़ी सुलझी हुई बात कह देती है कभी-कभी। अच्छी आत्मा "फोल्डिंग" कुर्सी की तरह होनी चाहिए। जरूरत पड़ी तब फैलाकर उस पर बैठ गये, नहीं तो मोड़कर कोने में टिका दिया। जब कभी आत्मा अडंगा लगाती है, तब मुझे समझ में आता है कि पुरानी कथाओं के दानव अपनी आत्मा को दूर किसी पहाड़ी पर तोते में क्यों रख देते थे। वे उससे मुक्त होकर बेखटके दानवी कर्म कर सकते थे। देव और दानव में अब भी तो यही फर्क है एक की आत्मा अपने पास ही रहती है और दूसरी की उससे दूर। (पृष्ठ-३७)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक देव तथा दानव की आत्मा का अन्तर स्पष्ट करते हुए कह रहा है–

व्याख्या–आत्मा की आवाज सच्ची होती है। उसमें किसी प्रकार की उलझन नहीं होती। उसकी बातें सुलझी हुई होती हैं। अनुचित कार्यों को उसमें कोई स्थान नहीं होता। वह सात्विक होती है।

लेखक कहता है कि समय के परिवर्तन के साथ व्यक्ति की आत्मा में भी परिवर्तन आया है। उसका रूप अब फोल्डिंग कुर्सी के समान हो गया है, जिस प्रकार फोल्डिंग कुर्सी को आवश्यकतानुसार कार्य में प्रयोग किया जाता है उसके पश्चात् उसे फोल्ड करके एक ओर रख दिया जाता है। उसी प्रकार किसी कार्य को करने के लिए अपनी आत्मा को भी कार्य के अनुकूल बना लेना चाहिए। व्यंग्यात्मक शैली में परसाईजी कहते हैं कि कार्य चाहे नैतिक हो या अनैतिक उसके सम्पादन के समय आत्मा को तो एक ओर उठाकर रख देना चाहिए। आत्मा की उपस्थिति का विचार त्यागकर निश्चिन्त होकर अनैतिक कार्यों में भी जुट जाना चाहिए। जब कार्य पूर्ण हो जाय तो ईमानदार बनने का प्रदर्शन करना चाहिए।

लेखक का कहना है कि आत्मा अनुचित कार्य करने में कतराती है। हिचकती है, अवरोध उत्पन्न करती है। उस वक्त मुझे प्राचीन कथाओं का स्मरण होता है। उन कथाओं के दानवों की याद आती है। उनके कार्यों का ध्यान होता है, उनकी आत्मा को बोध होता है। यह ज्ञान होता है कि वे दानव अपनी आत्मा को अपने पास रखते ही नहीं थे। उनकी आत्मा दूर की पहाड़ी पर किसी तोते आदि में रहती थी। आत्मा को दूर रखने का कारण ही यह था कि यह आत्मा जो सात्विक होती है, अनुचित कार्य करने को तैयार नहीं होती, अनैतिक कार्यों को करने में बाधक न बने, आत्मा को दूर रखकर वे बेझिझक दानवी कार्य करने के लिए स्वतन्त्र रहें।

परसाई जी देव और दानव के अन्तर के विषय में कहते हैं कि आज भी यह अन्तर चला आ रहा है। पुरानी कथाओं में वर्णित यह अन्तर समाप्त नहीं हुआ है देव प्रवृति के व्यक्ति की आत्मा उनके साथ रहती है और वे देव कर्म में लगे रहते हैं जो दानव प्रकृति के व्यक्ति हैं उनकी आत्मा उनसे कोसो दूर रहती है वे अपनी आत्मा की आवाज को सुनते ही नहीं। आत्मा को दूर रखकर वे दानवी कर्मों में जुटे रहते हैं।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–व्यंजना प्रधान, सरल भाषा।

(२) **शैली**–व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**–आत्मा को पृथक् रखकर ही दुष्ट कर्म किये जा सकते हैं।

(२)

कोई नहीं आता। मुझे लगता है, हम सबने मान लिया है कि आम सड़कें सब बन्द हो गयी हैं। उन पर तख्ती टंग गयी है–"सड़क मरम्मत के लिए बन्द है।" सालों से ये सड़कें

बन्द हैं और सब पगडंण्डियों से जा रहे हैं। चलते-चलते पगडण्डियों के कांटे और झाड़ियाँ साफ हो गयी है और वे सड़कों जैसी चिकनी और चौड़ी हो गयी है। बेझिझक, नंगे पाँव इन पर लोग चल रहे हैं। आम सड़क पर चलने वाला अब बेवकूफ या पागल समझा जायेगा। अब आम सड़कें खुल भी जायें, तो लोग उन पर चलने में झिझकेंगे। मरम्मत वाले भी इसीलिए ढीले पड़ गये हैं। मगर उपयोग न होने से आम सड़कों पर झाड़ियाँ और जंगली पौधे उगेंगे और वे ढक जायेंगी। तब किसी को आभास भी न होगा कि इस देश में कहीं आम सड़कें भी हैं। (पृष्ठ-३९)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग—परसाईजी के विचार से अंक वृद्धि के लिए पहुँच करने वालों में विगत दस वर्षों में बहुत अन्तर आ गया है। संकोच तो सर्वथा समाप्त ही हो गया है। ऐसा प्रतीत होने लगा है जैसे सही मार्ग का किसी को ज्ञान ही नहीं रहा है।

व्याख्या—आजकल परीक्षा में अंक वृद्धि के लिए आने वालों में किसी प्रकार का संकोच, नहीं रहा है। उनकी दृष्टि में परीक्षा की पवित्रता, परीक्षा का महत्त्व तथा उसकी गोपनीयता की रक्षा सब व्यर्थ है। अर्थहीन है। लेखक को अंक बढ़ाने की बात बेझिझक कहना बहुत खटकता है। बहुत पीड़ादायक है। आत्मा को चोट पहुँचाने वाला है। इसलिए वह चाहते हैं कि कोई तो ऐसा आवे जो परीक्षा सम्बन्धी बात संकोच के साथ कहे। अपनी वेदना व्यक्त करते हुए वे अत्यन्त निराशापूर्ण स्वर में कहते हैं कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं आता जो संकोच के साथ परीक्षा में अंक वृद्धि की बात करता हो।

लेखक अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुऐ कहता है कि परीक्षा में उत्तीर्ण होने का सही मार्ग बन्द हो गया है। ऐसा आभास होता है कि सफलता का साधन मात्र तिकड़म शेष रहा है जिसके अवलम्बन ने उन्हें अनुचित मार्ग का पथिक बना दिया है।

बदले हुए वातावरण का वर्णन करते हुए परसाईजी कहते हैं कि अनैतिक मार्ग पर व्यक्ति बिना किसी बन्धन के स्वतन्त्रतापूर्वक बढ़ रहा है। इसके विपरीत नैतिक मार्ग पर चलकर सफलता प्राप्त करने वाले पागल माने जा रहे हैं। सही मार्ग पर चलने में आना कानी की जा रही है। ऐसी स्थिति में यदि सही मार्ग पर चलने को प्रेरित नहीं किया गया तो निश्चित रूप से देशवासी सही मार्ग पर चलना भूल जायेंगे। उन्हें सही मार्ग का ज्ञान ही नहीं रहेगा।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—व्यंजना प्रधान, सरल, प्रभावपूर्ण भाषा।

(२) **शैली**—व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**—सही मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा दी है।

(३)

सफलता के महल का सामने का आम दरवाजा बन्द हो गया है। कई लोग भीतर घुस गये हैं और उन्होंने कुण्डी लगा दी है। जिसे उसमें घुसना है वह रूमाल नाक पर रखकर नाबदान में से घुस जाता है। आसपास सुगन्धित रूमालों की दुकानें लगी हैं। लोग रूमाल खरीदकर उसे नाक पर रखकर नाबदान में से घुस रहे हैं। (पृष्ठ ३९)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **हरिशंकर परसाई** लिखित **पगडण्डियों का जमाना** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर लेखक भ्रष्टाचरण की भर्त्सना करते हुए कह रहा है—

व्याख्या—आज की परिवर्तित परिस्थितियों में सफलता के सभी सही मार्ग बन्द हो गये हैं। जिन लोगों ने सफलता प्राप्त कर ली है, उन्होंने सफलता के महल के द्वार बन्द कर लिए हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि सही मार्ग अपनाकर उन्होंने अनुचित मार्ग का समर्थन प्रारम्भ कर

दिया है। जो व्यक्ति अनैतिक कार्यों से घृणा करते हैं उनको सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ना सम्भव नहीं रहा है। सफलता के महल में प्रवेश का प्रयास करना अब सार्थक नहीं रहा है। सब निरर्थक है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– व्यंजना प्रधान भाषा।

(२) **शैली**– व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**– भ्रष्टाचारियों को अपने प्रयास में सफलता प्राप्त हो रही है। नैतिक गुणों का कोई महत्त्व नहीं रहा है।

४ लोक गीत *(नरोत्तम दास स्वामी)*

● ***गागर में सागर***

निबन्ध– सांस्कृतिक।

लेखक– नरोत्तम दास स्वामी। **जन्म**– सन् १९०५। **स्थान**– बीकानेर (राजस्थान)। मृत्यु– १९८१ ई०। **सेवा**– बीकानेर, उदयपुर, तथा वनस्थली विद्यापीठ में हिन्दी विभागाध्यक्ष। **भाषा-ज्ञान**– संस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी।

कृतियाँ– सम्पादित– राजस्थान रा दूहा*वीर रस रा दूहा*राजस्थान के लोक गीत *वीर सतसई*पृथ्वीराज रासो का लधुतम रूपान्तर*ढोला मारू रा दूहा क्रिसन रुक्मिणी री वेलि*राजस्थानी गंगा*जागती जोत।

मौलिक– रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो*संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण।

लोकगीत– गान मानव जीवन का भोजन है। आदिम मानव हृदय का गान ही लोकगीत है। लेखबद्ध न होने पर भी अमर। भाषा का आवरण बदल जाता है। प्राणतत्त्व अपरिवर्तनशील। गृहस्थ जीवन नारी का गान। रुदन तथा विनोद दोनों ही। लोक गीत सच्चा काव्य। सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए)

प्रश्न १. ***लोक गीतों का प्रारम्भ किसने किया?***

(क) चारणों ने (ख) जोगियों ने

(ग) ढाढ़ियों ने (घ) आदिम मनुष्य ने।

उत्तर–(घ) आदिम मनुष्य ने।

प्रश्न २. ***"काल का विनाशकारी प्रभाव लोक गीतों का कुछ नहीं बिगाड़ सका।" क्योंकि–***

(क) ये लिखित नहीं होते।

(ख) नगर में इनका प्रवेश नही होता।

(ग) इन्हें पिछड़ी जाति के लोग गाते हैं

(घ) इनमें हृदय की वृत्तियों का सहज चित्रण होता है

उत्तर–(क) ये लिखित नहीं होते।

प्रश्न ३. "आज के शास्त्रीय कलाकार की वाणी लोकगीत को नहीं पहुँच सकती।" कारण कि उसमें होती है–

(क) कृत्रिमता (ख) क्लिष्टता

(ग) अस्पष्टता (घ) अप्रामाणिकता **उत्तर**–(क) कृत्रिमता।

प्रश्न ४. "हाथ धो बैठना" मुहावरे का सही प्रयोग किस वाक्य में हुआ है?

(क) जब अपनी सम्पत्ति से हाथ धो बैठोगे तभी तुम्हें अकल आयेगी।

(ख) हाथ धोकर बैठने से क्या लाभ, इससे पास थोड़े ही हो सकोगे।

(ग) कब तक सिर मारते रहोगे, इससे हाथ धो बैठना अच्छा।

(घ) खाना खाने के लिए हाथ धोकर बैठना चाहिए।

उत्तर–(क) जब अपनी सम्पत्ति से हाथ धो बैठोगे तभी तुम्हें अकल आयेगी।

प्रश्न ५. लोक साहित्य के विकास में बाधक है–

(क) मानव जाति (ख) आधुनिक काव्य

(ग) सभ्यता तथा संस्कृति (घ) आधुनिक नारी।

उत्तर–(ग) सभ्यता तथा संस्कृति।

प्रश्न ६. गीत की धुन में–

(क) किसान सूर्य के प्रखर ताप को भूल जाता है

(ख) बन्दर दौड़ने लगते हैं

(ग) कमल खिल जाते हैं

(घ) मोर नाच उठते हैं। **उत्तर**–(क) किसान सूर्य के प्रखर ताप को भूल जाता है।

प्रश्न ७. जीवन की कठोरता को भूल जाता है–

(क) मजदूर गान में मस्त होकर (ख) धन पाकर

(ग) शादी रचाकर (घ) सन्तान सुख पाकर।

उत्तर–(क) मजदूर गान में मस्त होकर।

प्रश्न ८. आदिम मनुष्य हृदय के गानों का नाम है–

(क) लोक गीत (ख) भोजपुरी गीत

(ग) नृत्य गीत (घ) गद्य-गीत। **उत्तर**–(क) लोकगीत।

प्रश्न ९. लोक गीत में–

(क) मानव के सुख-दुःख की कहानी है (ख) संगीत की बहार है

(ग) वेदना की कथा है (घ) लेखक की रुचि है।

उत्तर–(क) मानव के सुख-दुख की कहानी है।

प्रश्न १०. लोकगीत धारा में आप्लावित होने का आनन्द उठा सकते हैं–

(क) खजाना लुटाकर (ख) सूखी रोटी का एक टुकड़ा पुरस्कार रूप देकर

(ग) अशर्फियाँ देकर (घ) दूर-दूर यात्राएँ करके।

उत्तर–(ख) सूखी रोटी का एक टुकड़ा पुरस्कार रूप देकर।

प्रश्न ११. त्यौहारों पर अनिवार्य हो गया है–

(क) मिठाई बाँटना (ख) नए वस्त्र पहनना

(ग) गीतों का गाया जाना (घ) भेंट चढ़ाना।

उत्तर–(ग) गीतों का गाया जाना।

प्रश्न १२. नरोत्तम दास स्वामी के विचार से हमारा गृहस्थ जीवन–

(क) आनन्द की खान है (ख) नारी का गान है

(ग) रोटी का ठिकाना है (घ) स्वर्ग से महान् है।

उत्तर–(ख) नारी का गान है।

प्रश्न १३. लोकगीत एक चित्र प्रस्तुत करता है–

(क) मानव जीवन का (ख) गृहस्थ जीवन का

(ग) लोक जीवन का (घ) श्रमिक जीवन का।

उत्तर–(ग) लोक जीवन का।

प्रश्न १४. लोक गीत किस प्रकार का साहित्य है–

(क) गद्य साहित्य (ख) मौखिक

(ग) काव्य साहित्य (घ) महाकाव्य।

उत्तर–(ख) मौखिक।

प्रश्न १५. नरोत्तम स्वामी के मतानुसार लिखना पढ़ना सीखकर जाति–

(क) सभ्य हो जाती है

(ख) विकसित हो जाती है

(ग) परम्परागत कथाओं की अवहेलना करने लग जाती है

(घ) गुणवान बन जाती है।

उत्तर–(ग) परम्परागत कथाओं की अवहेलना करने लग जाती है।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. लोक गीत किसे कहते हैं?

उत्तर–मनुष्य हृदय के, समय-समय पर गाये जाने वाले गीतों को ही लोक गीत कहते हैं।

प्रश्न २. जीवन की कठोरता को भुलाने का स्वाभाविक उपाय क्या है और क्यों?

उत्तर–जीवन की कठोरता को भुलाने का स्वाभाविक उपाय लोकगीत हैं। लोकगीतों में मानव जीवन, उसके उल्लास, उसकी उमंग तथा उसके समस्त सुख-दुःख की कहानी चित्रित है।

प्रश्न ३. लोक गीतों को दूर-दूर की यात्रा किन लोगों ने करायी?

उत्तर–लोक गीतों को दूर-दूर की यात्रा चारण जाति के लोगों ने करायी। भैरव के भोपों पाबूजी के थोरियों तथा जोगियों का भी लोक गीतों को दूर-दूर की यात्रा कराने में हाथ रहा।

प्रश्न ४. लोक गीत किन अवसरों पर गाये जाते हैं?

उत्तर–लोक गीत शिशु के गर्भावस्था में आने, उसके जन्म लेने, सोने, जागने आदि विभिन्न संस्कारों के शुभावसर पर गाये जाते हैं।

प्रश्न ५. पाबूजी कौन थे और वे क्यों प्रसिद्ध हैं?

उत्तर–पाबूजी राठौड़ वीर थे। वह वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने देवल चारणी की गायों की रक्षा के लिए अपने आपको बलिदान कर दिया। विवाह मण्डल छोड़कर जींद राव खींची से लड़ना उनके त्याग और बलिदान की अद्वितीय प्रसिद्ध गाथा है।

प्रश्न ६. लोरी कब गायी जाती है और क्यों?

उत्तर–लोरी नवजात शिशु को सुलाने के लिए गायी जाती है। शिशु को जगाने के लिए भी लोरी गायी जाती है।

प्रश्न ७. बनड़े कब गाये जाते हैं?

उत्तर–बालक के युवा हो जाने पर उसके विवाह के मांगलिक अवसर पर वर-यात्रा प्रस्थान के पूर्व तक बनड़े गाये जाते हैं।

प्रश्न ८. लोक गीतों के रक्षण में नारी का क्या योगदान रहा?

उत्तर – लोक गीत अलिखित हैं। इन गीतों को मिटाने के सभी प्रयत्न असफल सिद्ध हुए । नारी ने हर अवसर पर गीत गाकर इन्हें अमरता प्रदान की है।

प्रश्न ९. "लोक गीत लोक जीवन का चित्र है।" कैसे?

उत्तर – लोक गीत, लोक जीवन का चित्र इसलिए है क्योंकि लोकजीवन में जो प्रवाह उमड़ता उसका चित्र लोकगीत में अवतरित हो जाता है।

प्रश्न १०. इस पाठ में (लोक गीत) कई वाक्य सूक्ति के रूप में प्रयुक्त हैं, जैसे–गान नव जीव का भोजन है" आप ऐसी चार सूक्तियाँ छाँटकर लिखिए।

उत्तर–सूक्ति रूप में प्रयुक्त वाक्य–

१. गृहस्थ जीवन नारी का गान है। २. माँ के मीठे स्नेह की सुरसरिता बह रही है। ३. न के पावस प्रेम की सुधा सिंचित सरस्वती ने तो गजब ढा दिया। ४. लोक गीत लोक वन का चित्र है।

प्रश्न ११. गान मनुष्य हृदय के लिए स्वाभाविक क्यों कहा गया है?

उत्तर – मनुष्य सुख में भी गाता है और दुःख में भी। अन्तर केवल यह है कि सुख में कर वह उल्लसित होता है तो दुःख में गाकर वह दुःख को भूल जाता है। इसलिए गान ष्य हृदय के लिए स्वाभाविक कहा गया है।

प्रश्न १२. जीवन में कठोरता को गीत से भूलने के दो उदाहरण इस निबन्ध से दीजिए।

उत्तर – जीवन में कठोरता को भूलने के लिए किसान अपने गान से सूर्य के प्रखर ताप को त जाता है। ऊँट वाला, मरुभूमि शून्यता का भान अपनी तानों में भुला देता है।

प्रश्न १३. लोक गीतों में कौन-सी कहानी चित्रित होती है?

उत्तर – लोक गीतों में मानव जीवन की, उसके उल्लास की, उसकी उमंगों की, उसकी करुणा , उसके रुदन की, उसके समस्त सुख-दुःख की कहानी चित्रित होती है।

प्रश्न १४. लोक गीतों का नारी हृदय आधुनिक सभ्यता के वातावरण से कोसों दूर क्यों ा गया है?

उत्तर – नारी हृदय से सुख-दुःख, आशा-निराशा आदि की लहर गान के रूप में प्रकट होती जिसमें कपट को कोई स्थान नहीं रहता। भाव-गोपन की भावना नहीं होती। अतः यह ा गया है कि लोक गीतों का नारी हृदय आधुनिक सभ्यता के वातावरण से कोसों दूर है।

प्रश्न १५. लोक गीतों को सच्चा काव्य क्यों माना गया है?

उत्तर – काव्य का मुख्य लक्षण है सृष्टि के साथ मनुष्य की आन्तरिक रागात्मक प्रकृति का न्तरिक सामंजस्य होना। काव्य का यह लक्षण गीतों पर पूर्ण रूपेण लागू होने के कारण ही कगीत को सच्चा काव्य माना गया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. यह कहना कहाँ तक उचित होगा कि सभ्यता और संस्कृति लोक साहित्य की है?

उत्तर – **१. सभ्यता और संस्कृति**–युग-युगान्तर से मानव सौन्दर्य की खोज में है। वह अपनी ा से पूर्ण सन्तुष्टि न मानकर ही उसको अधिकाधिक सुन्दर बनाने का प्रयत्न करता है। को ही विकास कहते हैं। संस्कृति के नाम से पुकारते हैं।

जिस जाति की संस्कृति जितनी उच्च होती है, वह उतनी ही सभ्य कहलाती है। संस्कृति भी हो सकती है और बुरी भी।

२. लोक साहित्य–लोक साहित्य लोक जीवन की गाथा है किन्तु उसका कोई लिखित साहित्य नहीं होता। यह मौखिक साहित्य होता है जो एक-दूसरे मनुष्य तक समय समय पर पहुँचता है और अपना प्रभाव बनाता है। लोक गीत भी लोक साहित्य है जिसे आदिम मनुष्य हृदय से गाता चला आ रहा है। काल का विनाशकारी प्रभाव भी इन गीतों का कुछ नहीं बिगाड़ सका है। भले ही ये लेखबद्ध नहीं है किन्तु अमर हैं। साहित्य की अमरनिधि है।

३. शत्रु–शिक्षा व्यक्ति की बौद्धिक एवं रागात्मक वृत्तियों का विकास करती है किन्तु देखा गया है कि शिक्षित व्यक्ति परम्परागत कथाओं की अवहेलना करता है। लोक साहित्य के अध्ययन में लज्जा का अनुभव करता है। यह भूल जाता है कि जो साहित्य मौखिक है, पुरातत्त्व प्रेमियों द्वारा संग्रह के लिए महत्त्वपूर्ण है उसे महत्त्वहीन समझा जाना हमारा अविवेकपूर्ण कार्य है। यह भी ध्यान नहीं रखता कि जो साहित्य समस्त जनता का रहा है वह केवल कम पढ़े निरक्षर व्यक्तियों की सम्पत्ति रह जाती है।

४. उपसंहार–विकसित मानव, शिक्षित व्यक्ति, सभ्य पुरुष लोक साहित्य का शत्रु बन गया है। उसकी अवहेलना करता है। अध्ययन में संकोच करता है। मेरे विचार से शिक्षित व्यक्ति का ऐसा ज्ञान, अज्ञानता का द्योतक है। लोक साहित्य की उपेक्षा है जो सभ्य मानव के लिए उचित नहीं है।

प्रश्न २. इस पाठ के आधार पर राजस्थान के ग्रामीण जीवन का चित्र अंकित कीजिए।

***उत्तर*–राजस्थान**–राजस्थान सदा से वीर राजपुत्रों की जन्म स्थली रही है। वहाँ का इतिहास वीरता की कथा है। त्याग की गाथा है। बलिदान की कहानी है। एक से एक बढ़कर मातृभूमि पर अपने जीवन को उत्सर्ग करने वाले महाबलिदानियों ने राजस्थान के इतिहास को अमर बना दिया है।

ग्रामीण जीवन–राजस्थान के ग्रामीण जीवन की झाँकी वहाँ के लोक गीतों में अंकित है। इन लोक गीतों के अध्ययन से हमें पता लगता है कि ग्रामीण त्याग और बलिदान की भावना से ओत-प्रोत रहे हैं।

मातृभूमि की रक्षा करना वे अपना पावन कर्तव्य समझते थे। आवश्यकता के समय तन, मन और धन से देश की रक्षा करना उनका धर्म था।

स्त्रियों में भी वीर भावना थी। अपने पति के साथ अपने जीवन की भी बाजी लगा देती थीं।

जौहर व्रत अपनाना उनके जीवन का अंग बन गया था। किसी प्रकार भी कलंकित जीवन उन्हें पसन्द नहीं था।

प्रश्न ३. "लोक गीतों का जीवन में महत्त्व' विषय पर एक निबन्ध लिखिए।

***उत्तर*–१. लोक गीत**–आदिम मनुष्य-हृदय के गान को ही लोक-गीत कहा जाता है। गाना व्यक्ति के लिए स्वाभाविक है। वह सुख-दुःख सब में गाते हैं। सुख के क्षणों में उठाकर वह उल्लसित होता है तथा दुःख में गीत गाकर वह अपने दुःखों को विस्मृत करता है।

२. जीवन में महत्त्व–(१) कुटुम्ब–जीवन के सभी सम्बन्धों का स्वाभाविक चित्र गीतों में मिलता है। मातृ-प्रेम की झाँकी लोक गीतों में पाकर उसमें दृढ़ता लाने में लोक गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

(२) दाम्पत्य प्रेम और मार्मिक विनोद का चित्र प्रस्तुत करने में भी लोक गीतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(३) शूरवीरता का वर्णन, हृदयों में वीरता की भावना का संचार करता है।

(४) नारी हृदय में आशा-निराशा, सुख-दुःख उमंगादि को भरने में भी लोक गीतों का प्रमुख स्थान है।

(५) लोक गीतों की निष्कपट भावना व्यक्ति के जीवन को निश्छल बनाती है।

प्रश्न ४. "हमारा समस्त गृहस्थ जीवन नारी का गान है।" यह कहना कहाँ तक युक्ति संगत है।

उत्तर- १. गृहस्थ जीवन- गृहस्थ जीवन २५ वर्ष के बाद की वह अवस्था थी जिसमें नारी के आमोद प्रमोद, सन्तानोत्पत्ति, व्यवसाय आदि की भली-भाँति देखभाल गृहस्थी का कर्तव्य होता था।

२. नारी का गान-लोक गीतों में सम्पूर्ण गृहस्थ जीवन गाया गया है। नारी ने गीत तब से गाना प्रारम्भ किया जब से उसके शिशु ने गर्भावस्था में प्रवेश किया। सीमन्त के गीत गर्भस्थ शिशु के लिए ही गाये जाते हैं। बच्चे के जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत हालरे के नाम से विख्यात हैं।

नवजात शिशु को सोने तथा जगाने के लिए लोरियों का प्रमुख स्थान है। उपनयन संस्कार, पाणिग्रहण संस्कार आदि के समय भी गीत गाये जाते हैं। उत्सवों तथा त्यौहारों पर भी गीतों का प्रमुख स्थान है।

घर में आने वाली नव वधू का स्वागत भी गीतों द्वारा होता है। इन गीतों में भाई- बहिन के प्रेम की सुन्दर झाँकी है। पत्नी प्रेम की मधुर धारा है। इस प्रकार समस्त गृहस्थ जीवन नारी का गान है इसमें कोई सन्देह नहीं।

प्रश्न ५. प्रस्तुत पाठ के आधार पर लेखक की रचना शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- लेखक-प्रस्तुत पाठ **लोक गीत** के लेखक **नरोत्तम दास स्वामी** हैं जिन्होंने हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। साहित्य के प्रति कार्य में पिताजी की प्रेरणा का विशेष योग रहा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संस्कृत तथा हिन्दी में एम०ए० की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् बीकानेर एवं उदयपुर में हिन्दी विभागध्यक्ष रहे। सेवा निवृत्ति के पश्चात् वनस्थली विद्यापीठ में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। सन् १९८१ में इनका निधन हो गया।

रचना शैली-संस्कृत तथा हिन्दी के प्रकाण्ड पंडित होते हुए भी नरोत्तमदास स्वामी की भाषा में सरलता के दर्शन होते हैं। भाषा की सरसता एवम् प्रवाहपूर्णता उनकी भाषा की मुख्य विशेषता है।

राजस्थानी भाषा का उनके साहित्य में प्रमुख स्थान है। व्याकरण का विश्लेषण तथा अलंकारों का निरूपण भी उन्होंने अपनी भाषा में किया है।

स्वामीजी काव्य शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान् थे। गवेषणात्मकता तथा परिचयात्मकता उनकी शैली की विशेषता है। लोक गीतों के महत्त्व के साथ भावपूर्ण शैली में जीवन के गीतों का उन्होंने सुन्दर वर्णन किया है।

प्रश्न ६. निम्नलिखित अवतरणों की व्याख्या कीजिए-

(क) गान मनुष्य हृदय के लिए .... गाता चला आया है।

(ख) कविता वह साधन है .... लोक गीतों से अधिक किस पर लागू होंगे।

उत्तर- (क) गान मनुष्य हृदय के लिए .... गाता चलाआया है।

सन्दर्भ-प्रस्तुत गद्यावतरण **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग-प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने गान को मनुष्य हृदय के लिए स्वाभाविक बताया है।

व्याख्या-गान मनुष्य के लिए अत्यन्त स्वाभाविक है। वह सुख में भी गाता है और दुःख में भी। बिना गाये उसका रहना कठिन है। अन्तर केवल इतना है कि जब वह सुखी होता है तब उसे अत्यन्त उल्लास के साथ गाता है। किन्तु दुःखी होकर जब गाता है तो वह गाना उसके दुःख को भुलाने के लिए होता है। ऐसा लगता है कि जिस प्रकार बिना भोजन जीवन

सम्भव नहीं उसी प्रकार बिना गान के जीवन यापन असम्भव है। इसीलिए तो यह गान आदिकाल से मानव जीवन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है।

(ख) कविता वह साधन है .... लोक गीतों से अधिक किस पर लागू होंगे।

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक कविता का लक्ष्य व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या–लेखक स्वामीजी की दृष्टि में काव्य का मुख्य उद्देश्य है सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्धों की रक्षा करना। व्यक्ति काव्य के आनन्द में विभोर हो जाता है क्योंकि काव्य भी तो मानव मात्र के भावों की अभिव्यक्ति होता है।

लोकगीत भी मानव की आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। अतः हम लोक गीत को सच्चा काव्य कह सकते हैं।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ–पृष्ठ-४३–उल्लासित = उल्लासपूर्ण, प्रसन्न। प्रखर = तेज। ताप = गर्मी। भीषण = भारी, भयंकर। मरुभूमि = रेगिस्तान। शून्यता = सूनापन। भान = अनुभव, ध्यान। प्रतिध्वनि = ध्वनि के ऊपर ध्वनि, गूँज। बारी = पारी, नम्बर। आदेश = आज्ञा। लाव = मोटी रस्सी। प्रोत्साहित = उत्साहित।

पृष्ठ-४४–आदिम = आदिकाल का प्रारम्भिक युग का। उल्लास = आनन्द हर्ष। रुदन = रोना। चीरकर = निकालकर, व्यतीत करके। अमर = मर-मिट न सके, सदा बना रहे। सर्व भक्षक = सबको खा-जाने वाला। जिह्वा = जीभ, वाणी। कालान्तर = समय के अन्तर से कुछ समय पश्चात्। आवरण = ढाँचा। प्राणतत्त्व = मुख्यतत्त्व, जीवन।

पसारे = फैलाए। पाबूजी = राठौर वीर। रावण हत्था = बाद्य यन्त्र। तानपूरा = एक वाद्ययन्त्र। आप्लावित = डुबोया हुआ।

चहारदीवार = चारों तरफ की बाहरी दीवार। लाँघकर = पार करके। मथना = बिलोना, चलाना। प्रभाती = प्रातःकाल का गीत। अन्तःकरण = हृदय। स्नेह = छोटो पर किया जाने वाला प्रेम। विरह-वेदना = वियोग का दुःख, विछोह की पीड़ा. पनिहारियों = पानी भरने वाली ने। वाग्धारा = वाणी की धार, बात।

लोरी = बच्चों को सुलाने तथा जगाने के लिए गीत। नवजात = नया उत्पन्न। बनड़े = गीत जो वर के विवाह में गाये जाते हैं। सम्पन्न = समाप्त, पूर्ण।

पृष्ठ-४५–सुरसरिता = श्रेष्ठ नदी, गंगा नदी। निर्झर = झरना। वेगवती = तीव्र गति वाली, तेज बहने वाली। कालिन्द नन्दिनी = यमुना नदी। पावस = वर्षा ऋतु। स्वर्गीय = स्वर्गजैसा, पवित्र। मनोरम = सुन्दर, मनोहर। मर्मस्पर्शी = मर्म का स्पर्श करने वाली, हृदय को छूने वाली। अन्तस्तल = हृदय। कृत्रिमता = बनावटी, दिखावटी, अप्राकृतिक। उमंग-आह्लाद = प्रसन्नता। निष्छलता = छल-कपट रहित। भाव-गोपन = भावों का छिपाव।

पृष्ठ-४६–वाग्बाण = बातों के बाण, चुभते वचन। स्फुरणा = उत्साह। अलिखित = बिना लिखा। विस्मृति = भुलावा। तिरस्कारोत्पादक = तिरस्कार उत्पन्न करने वाला, उपेक्षा देने वाला। आदिम = आदिकाल के, पुराने। सहचर = साथी। प्रेयसी = प्रेम करने वाली। अटविका = जंगल। यूथप = स्वामी, मालिक। वियुक्त = बिछुड़ी हुई, अलग हुई। सृजन = निर्माण। लोप = नष्ट होना, खत्म होना।

वेग = तीव्रता, तेजी। अवहेलना = तिरस्कार, उपेक्षा। निरक्षर = जो शिक्षित न हो, जो पढ़ा लिखा न हो। पुरातत्त्व = प्राचीन काल सम्बन्धी विद्या।

(१)

गान मानव जीवन का भोजन है। आदिकाल से मानव हृदय गाता चला आया है। सूर्य के प्रखर ताप से हल चलाता हुआ किसान अपने गान से उसकी प्रखरता को भूलता है, अँधेरी रात में चलता हुआ ऊँट वाला तान लगाता चला जाता है और मरुभूमि की भीषण शून्यता का भान भुला देता है, गाड़ी वाला पहियों की ढचक-ढचक ध्वनि के साथ तान मिलाता हुआ उजेली रात में कोस के कोस पार कर जाता है, जंगल में भेड़ों को चराता हुआ गड़रिया गान से सारा जंगल प्रतिध्वनित कर देता है, कुएँ पर बारी आने की प्रतीक्षा में गाता हुआ बारिया लय के आगे बढ़ने का आदेश देता जाता है और लाव पर बैलों के पीछे बैठा हुआ कीलिया अपने गान के द्वारा बैलों को प्रोत्साहित करता हुआ बढ़ाये चलता है, ईंट और गारा ढोता हुआ मजदूर गान में मस्त होकर जीवन में कठोरता को भूल जाता है। (पृष्ठ ४३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक लोक गीतों के महत्त्व का वर्णन करते हुए उन्हें आदिम मनुष्य हृदय का गान बताता है।

व्याख्या–लोक गीतों को मानव जीवन का भोजन बताया गया है।

लेखक का कहना है कि मनुष्य गाए बिना नहीं रह सकता। सुख हो या दुःख दोनों ही अवस्थाओं में व्यक्ति गाने लगता है। अन्तर केवल यह है कि सुख में गीत गाकर वह हर्ष विभोर हो उठता है और दुःख में गीत गाकर वह अपने दुःख को भुलाने का प्रयास करता है।

जीवन को सार्थक बनाने के लिए ही व्यक्ति गाता है। कृषक को देखा गया है कि वह गीत गाकर सूर्य के ताप से होने वाली पीड़ा को कम करता है। ऊँट चलाने वाला अपनी तानों से रात्रि के गहन अन्धकार की भी कोई परवाह नहीं करता। मरुस्थल की निर्जनता भी उसे नहीं अखरती। गाड़ीवान का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए नरोत्तमदास स्वामी कहते हैं कि वह अपनी तानों से कोसों दूर चला जाता है। लम्बा मार्ग तय करने में भी उसे किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती।

लेखक भेड़ चराने वाले गड़रिये के विषय में कहता है कि वह गाता हुआ जंगल में चारों ओर घूमता है और भेड़ें चराता है। उसे घूमते हुए किसी प्रकार की थकावट नहीं होती।

बारी, कीलिया तथा श्रमिकों को अपनी मौज में गाते तथा जीवन की कटुता को विस्मृत करने की बात करते हुए लेखक ने लोक गीतों को आदिम काल से ही मानव मन को मुदित करने वाला बताया है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–तत्सम तथा तद्भाव प्रधान भाषा।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक, भावात्मक शैली।

(३) **अन्य**–लोक गीतों का मानव-हृदय से सम्बन्ध बताते हुए, उसे मानव-जीवन का भोजन बताया गया है।

(२)

आदिम मनुष्य हृदय के इन्हीं गानों का नाम लोक गीत है। मानव जीवन की उसके उल्लास की, उसकी उमंगों की उसकी करुणा की, उसके रुदन की, उसके समस्त सुख-दुख की कहानी इनमें चित्रित है। न जाने कितने काल को चीर कर ये गीत चले आ रहे हैं। काल का विनाशकारी प्रभाव इनका कुछ नहीं बिगाड़ सका। किसी कलम ने इन्हें लेखबद्ध नहीं किया पर ये अमर हैं। (पृष्ठ-४३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक लोक गीतों को आदिम मनुष्य की देन बताते हुए उनकी अमरता के विषय में बता रहा है।

व्याख्या– नरोत्तम दास स्वामी के विचार से लोक गीत आदिम मनुष्य हृदय के गीत हैं। इन लोकगीतों में मानव जीवन के सुख-दुःख का वर्णन मिलता है। जब कभी वह उल्लास में होता है, उसकी झलक लोक गीतों में मिल जाती है। जब भी मानव मन में करुणा का वेग उठा, उसके गीतों में करुणा की अधिकता दिखाई देने लगी यहाँ तक कि मानव-मन का रोना बिलखना और हँसना भी लोकगीतों का विषय बन गया।

लेखक का कहना है कि लोक गीतों के जन्म के विषय में कोई यह तो नहीं कह सकता कि इनका जन्म किस काल में हुआ किन्तु इतना अवश्य ही कहा जा सकता है कि लोकगीत अति प्राचीन हैं। यह भी न मानने का कोई कारण नहीं कि समय-परिवर्तन हुआ है। विनाशकारी लीला भी हुई है लेकिन लोक गीतों पर काल का विनाशकारी प्रभाव नहीं पड़ा है। सच यह भी है कि लोकगीतों को आदिमकाल में कहीं लिखकर सुरक्षित नहीं बनाया गया किन्तु ये आज भी सुरक्षित हैं। नष्ट नहीं हुए हैं। अमर हैं।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– तत्सम तथा तद्‌भव प्रधान, सरल भाषा।

(२) **शैली**– वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**– लोक गीतों की अमरता के विषय में प्रकाश डाला गया है।

(३)

हमारा समस्त गृहस्थ जीवन नारी का गान है। उस गान में कहीं माँ के पीछे स्नेह की सुरसरिता बह रही है, तो कहीं पत्नी के प्रेम निर्झर की वेगवती श्यामा कालिन्द नन्दिनी। बहन के पावस-प्रेम की सुधा सिंचित सरस्वती ने तो गजब ढा दिया। जैसा स्वर्गीय सम्बन्ध भाई-बहन का है, वैसा ही निर्मल मधुर बहन का गान। (पृष्ठ-४४)

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग– प्रस्तुत स्थल पर नरोत्तमदास स्वामी लोक गीतों को सम्पूर्ण गृहस्थ जीवन से सम्बद्ध बताते हुए कहते हैं–

व्याख्या– लोकगीतों का गृहस्थ जीवन से गहरा सम्बन्ध है। ये गीत प्रत्येक संस्कार के समय गाये जाते हैं और हमारे रीति-रिवाज से जुड़े हुए हैं। नारियों को इन गीतों के गाने का श्रेय प्राप्त है। इन गीतों में कहीं तो माँ के मधुर स्नेह की धार बहती दिखाई देती है तो कहीं पति-पत्नी प्रेम की धार प्रवाहित होती दिखाई देती है। इन्हीं गीतों में भाई-बहिन के पवित्र प्रेम की भी झलक है। भाई-बहिन के प्रेम की पवित्रता का जो उदाहरण हमारे लोक गीतों में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इन गीतों में भाई बहिन के सम्बन्ध को स्वर्गीय बताया गया है इन गीतों में ही बहिन की भी अत्यन्त उज्ज्वल छवि प्रदर्शित की गयी है और उसे मधुरता की मूर्ति बताया गया है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– तत्सम तथा तद्‌भव प्रधान, सरल भाषा।

(२) **शैली**– वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**– लोक गीतों में गृहस्थजीवन को नारी का मान बताया गया है।

(४)

नारी हृदय में जब-जब सुख-दुःख निराशा, उमंग-आह्लाद की प्रबल लहर उठ खड़ी हुई तभी वह गाने के रूप में फूट निकली। उसने अपने भावों को (भले हों या बुरे) निष्कपट रूप से शब्दों का रूप दिया है उसमें सरलता है निश्छलता है, भाव-गोपन की भावना कहीं नहीं मिलती। भीतर कुछ और बाहर कुछ यह–तो हमारी इस अति प्रशंसित सभ्यता की ही देन है। लोक गीतों का नारी हृदय इस सभ्यता के वातावरण से कोसों दूर है।

(पृष्ठ ४४-४५)

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यावतरण **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोकगीत** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर नरोत्तम दास स्वामी लोक गीतों को मानव मन की निश्छल भव्यक्ति बता रहे हैं।

व्याख्या–नारी के मन में समय-समय पर जिन भावों का जन्म हुआ उन्होंने ही गीतों का ले लिया। कभी सुख कभी दुःख, कभी मन में आशा, कभी मन में निराशा ने अपना ऐसा धारण किया कि वह गीत के रूप में प्रकट हुआ। गीतों की अभिव्यक्ति में उसने किसी ार का छिपाव नहीं किया। कोई कपट व्यवहार नहीं किया। अपने भले-बुरे सभी प्रकार के ों को निष्कपट रूप में गीतों के रूप में प्रकट किया। अपने भावों को उसने छिपाया नहीं। छल मन से अपने भावों को सरल भाषा में गीतों के रूप में प्रकट किया। आधुनिक सभ्यता कोई भी प्रभाव इन गीतों में नहीं है। ये गीत निष्कपट मन से प्रकट हुए हैं। अतः इसके में अन्तर नहीं है। भावों में कोई अन्तर नहीं है। दो अर्थक नहीं है। इसका एक मात्र ण यह है कि लोक गीतों के गान में नारी हृदय सभ्यता के आधुनिक वातावरण से सदा दूर रहा है। उस पर आधुनिक सभ्यता की छाप नहीं रही है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–तत्सम तथा तद्भव प्रधान, सरल भाषा।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**–लोक गीतों को नारी हृदय की निश्छल भावना से ओत-प्रोत बताया गया है।

(५)

देश और गाँव का इतिहास इन गीतों में गाया गया। इन्होंने शूरों को शूरातन चढ़ाया। हृदयों में वीरत्व की स्फुरणा की। वीर गति पाने वालों का नाम अमर रखा। अलिखित हास को विस्मृति के गर्त में जाने से बचाया। समाचार पत्रों से रहित उस जमाने में हास्य स्कारोत्पादक घटनाओं के व्यंग्य-चित्र भी इनमें उतारे गये। लोक जीवन में जो कोई प्रवाह ड़ा उसी का चित्र लोक गीत में अंकित हो गया। लोक गीत लोक-जीवन का चित्र है।

(पृष्ठ-४५)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने लोक गीतों को लोक जीवन का चित्र बताते हुए कहा है–

व्याख्या–लोक गीत किसी इतिहास से कम नहीं है। यह ऐसा इतिहास प्रस्तुत करते हैं समें देश की सब घटनाओं का वर्णन प्राप्त है। लोक गीतों में गाँव का इतिहास भी पढ़ा सकता है।

लेखक लोक गीतों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि ये गीत शूरवीरता की ना उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं। वीरता का संचार करते हैं। वीर गति पाने वालों अमरत्व प्रदान करने में लोक गीतों का ही विशेष हाथ है। लोक गीतों में उनकी वीर ाओं ने उन वीरों को अमर बना दिया है। इतना समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी गीतों में उनकी गाथाएँ गायी जा रही हैं।

स्वामीजी कहते हैं कि प्राचीनकाल का जो इतिहास नहीं लिखा गया वह इन लोक के सहारे आज तक भुलाया नहीं जा सका है। आज भी उसका स्मरण दिलाने में ये गीत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

ऐसे समय में जब कि समाचार पत्रों का कोई अस्तित्व नहीं था, इन लोक गीतों में ऐसी ाओं का चित्र व्यंग्यात्मक शैली में चित्रित किया गया जो हास्य तथा तिरस्कार उत्पन्न करने थी।

लेखक अपने विचारों को उपसंहार की ओर ले जाते हुए कहता है कि व्यक्ति के जीवन त्येक घटना को लोक गीत के माध्यम से सही चित्रांकन में योग देने वाला तथा इतिहास विस्मृति के गर्त में जाने से रक्षा करने में लोक गीतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये लोक लोक-जीवन का चित्र प्रस्तुत करने वाले हैं।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–तत्सम तथा तद्भव प्रधान, प्रवाहपूर्ण सरल भाषा।
(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।
(३) **अन्य**–लोक गीतों को लोक जीवन का चित्र बताया गया है।

(६)

ये लोक गीत सच्चे काव्य हैं। कविता वह साधन है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा तथा निर्वाह होता है। सृष्टि के नाना रूपों के साथ मनुष्य की भीतरी रागात्मिका प्रकृति का भीतरी सामंजस्य ही कविता का लक्ष्य है। ये लक्षण लोक गीतों से अधिक किस पर लागू होंगे? प्रकृति अपने नाना रूपों में इन रूपों में अंकित हुई है।
(पृष्ठ-४५)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **नरोत्तमदास स्वामी** लिखित **लोक गीत** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक लोक गीतों को सच्चे काव्य की संज्ञा देते हुए काव्य के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कह रहा है–

व्याख्या–लोक गीतों को सच्चा काव्य कहा जा सकता है। काव्य का मुख्य उद्देश्य है सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्धों की रक्षा करना। मनुष्य काव्य पढ़ता है और आनन्द में विभोर हो जाता है क्योंकि काव्य भी तो मानव-मात्र के भावों की अभिव्यक्ति होता है।

लेखक काव्य का अर्थ समझाते हुए आचार्यों की परिभाषा देता है और कहता है कि रसात्मक वाक्य ही काव्य है (रसात्मकं वाक्यं काव्यं) काव्य ही मानव मन की भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ है। लोकगीत भी मानव की आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। अतः हम लोकगीत को सच्चा काव्य कह सकते हैं।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–तत्सम तथा तद्भव प्रधान, सरल तथा प्रवाहपूर्ण भाषा।
(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।
(३) **अन्य**–लोक गीतों को सच्चा काव्य बताया गया है।

५ चरित्र का मानदण्ड (डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल)

● *गागर में सागर*

निबन्ध–प्रेरणादायक विचारात्मक निबन्ध।

लेखक–डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल। **जन्म**–सन् १९०४। **स्थान**–खेड़ा (मेरठ)। **मृत्यु**–सन् १९६७। **भाषाज्ञान**–संस्कृत, प्राकृत, पाली, हिन्दी, अंग्रेजी। **शैक्षिक योग्यता**–एम० ए०, डी० लिट्०। **सेवा**–काशी विश्वविद्यालय में इंडोलोजी प्रोफेसर।

रचनाएँ–हर्षचरित, कल्प वृक्ष*पृथिवीपुत्र*कल्पलता-ज्योति*मातृभूमि आदि।

चरित्र का मानदण्ड–महापुरुष में ईश्वरीय गुणों की अधिकता। ईश्वरीय गुणों का प्रतीक*महापुरुष का मन साधारण व्यक्ति से अधिक उन्नत*मन की शक्ति को खोखला करने वाले दोषों से मुक्त। महापुरुष सामाजिक स्थिति तथा जीवन के लिए अनमोल विभूति है। लोकोत्तर कल्याण भावना की प्रमुखता। चरित्र की प्रमुखता जिसमें सभी गुण समाये हुए हैं। चरित्र के आदर्श में शरीर तथा मन का विकास सम्मिलित। **सन्देश**–महापुरुष का चरित्र-युग के लिए पथ-प्रदीप है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए)

प्रश्न १. वह मूल्यवान तत्त्व कौन-सा है जो महापुरुषों को साधारण जन से पृथक् करता है–
(क) मन (ख) शरीर
(ग) हाथ पाँव का उपयोग (घ) देखने सुनने की शक्ति।

उत्तर–(क) मन।

प्रश्न २. मन के भीतर जो स्वाभाविक तेज या चमक है वह किस कारण कम पड़ जाती है–
(क) शक्तिहीनता के कारण (ख) अकर्मण्यता के कारण
(ग) आलस्य एवं प्रमाद के कारण (घ) विवेकहीनता एवं उदासीनता के कारण।

उत्तर–(ग) आलस्य एवं प्रमाद के कारण।

प्रश्न ३. "रामो विग्रहवान धर्मः" कथन से वाल्मीकि कहना चाहते हैं–
(क) चरित्र ही धर्म है। (ख) धर्म ही चरित्र है।
(ग) राम ही धर्म है। (घ) धर्म का मूर्तिमान रूप राम है।

उत्तर–(घ) धर्म का मूर्तिमान रूप राम है।

प्रश्न ४. साधारण मनुष्य को भारतीय चरित्र की परिभाषा में–
(क) दुष्ट प्रकृति कहते है (ख) 'प्राकृत' मनुष्य या जन कहते हैं।
(ग) देवता कहते हैं (घ) दानव कहते हैं।

उत्तर–(ख) 'प्राकृत' मनुष्य या जन कहते हैं।

प्रश्न ५. महापुरुष में अधिक मात्रा में प्रकट होता है–
(क) दयाभाव (ख) प्रेमभाव
(ग) ईश्वरीयँ गुणों का प्रकाश (घ) चरित्रगुण।

उत्तर–(ग) ईश्वरीय गुणों का प्रकाश।

प्रश्न ६. ईश्वर को संज्ञा प्रदान की गयी है–
(क) महापुरुष की (ख) योगी की
(ग) कर्मयोगी की (घ) सर्वव्यापी की।

उत्तर–(क) महापुरुष की।

प्रश्न ७. महापुरुष–
(क) उत्तम चरित्र होता है (ख) ईश्वरीय गुणों का साक्षात् प्रतीक होता है
(ग) कष्ट में सहायक होता है (घ) उत्तम शैक्षिक योग्यता रखता है।

उत्तर–(ख) ईश्वरीय गुणों का साक्षात् प्रतीक होता है।

प्रश्न ८. महापुरुष को खोजने में सहायक हुआ है–
(क) महाभारत (ख) रघुवंश
(ग) रामायण (घ) ऋग्वेद **उत्तर**–(ग) रामायण।

प्रश्न ९. "रामायण" की रचना की थी–
(क) व्यास ने (ख) तुलसीदास ने
(ग) वाल्मीकि ने (घ) जयदेव ने। **उत्तर**–(ग) वाल्मीकि ने।

प्रश्न १०. मर्त्य शरीर का अमृत किसे कहा गया है–

(क) मन को (ख) आत्मा को

(ग) संजीवनी बूटी को (घ) वैद्य को। ***उत्तर***–(क) मन को।

प्रश्न ११. चरित्रबल में वृद्धि के लिए आवश्यक तत्त्व है–

(क) बुद्धि (ख) मन

(ग) शरीर और मन (घ) शरीर। ***उत्तर***–(ग) शरीर और मन।

प्रश्न १२. महापुरुष का सबसे बड़ा लक्ष्य क्या है–

(व) सन्मार्ग पर चलना (ख) अन्धकार से परे होना

(ग) क्षुद्रता त्याग देना (घ) परोपकार करना।

उत्तर–(ख) अन्धकार से परे होना।

प्रश्न १३. महापुरुष एक अनमोल विभूति है–

(क) सामाजिक स्थिति और जीवन के लिए।

(ख) दुर्बलों के लिए

(ग) पिछड़ों के लिए

(घ) पीड़ितों के लिए। ***उत्तर***–(क) सामाजिक स्थिति और जीवन के लिए।

प्रश्न १४. महापुरुष की भावना होती है–

(क) कल्याणकारी (ख) लोकोत्तर

(ग) सामाजिक (घ) दयापूर्ण ***उत्तर***–(ख) लोकोत्तर।

प्रश्न १५. वाल्मीकि के दृष्टिकोण में क्या है–

(क) भक्ति भावना (ख) चरित्र योग की सच्ची जिज्ञासा

(ग) राम का ईश्वर रूप (घ) रावणत्व की समाप्ति।

उत्तर–(ख) चरित्र योग की सच्ची जिज्ञासा।

प्रश्न १६. राष्ट्रीय सैन्य दलों के संगठन में किस काल के कवि की याद आनी चाहिए।

(क) राजपूत काल की (ख) गुप्तकाल की

(ग) मध्यकाल की (घ) आधुनिक काल की।

उत्तर–(ख) गुप्तकाल की।

प्रश्न १७. 'चरित्र का मानदण्ड' निबन्ध के आधार पर वाल्मीकि की महान् रचना की विशेषता है–

(क) प्रकृति चित्रण (ख) राम की कल्पना

(ग) श्रेष्ठ प्रबन्धात्मकता (घ) रस-योजना

उत्तर–(ख) राम की कल्पना।

प्रश्न १८. लेखक के विचार से प्राकृत पुरुष और महापुरुष में अन्तर है–

(क) आलस्य (ख) ईश्वरीय गुणों का प्रकाश

(ग) सदाचार (घ) सदुपयोग

उत्तर–(ख) ईश्वरीय गुणों का प्रकाश।

सउत्तर अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. लेखक ने महापुरुष किसे माना है?

उत्तर–लेखक ने महापुरुष उसे माना है जिसमें देवी अंश या चरित्र सम्बन्धी गुणों का विकास अधिक मात्रा में प्रकट होता हो।

प्रश्न २. लेखक ने स्थूल शरीर की दृष्टि से प्राकृत पुरुष और महापुरुष दोनों में क्या अन्तर बतलाया है?

उत्तर–लेखक ने स्थूल शरीर की दृष्टि से प्राकृत पुरुष में ईश्वरीय अंश की न्यूनता, आलस्य आदि दुर्गुणों का होना बताया है और महापुरुष में ईश्वरीय गुणों का प्रकाश अधिक मात्रा में बताया है।

प्रश्न ३. मानसिक प्रकाश का अभीष्ट अर्थ क्या है?

उत्तर–मानसिक प्रकाश का अभीष्ट अर्थ है–सत्य, धृति, अभय, ज्ञान, मित्रता आदि दैवी गुणों का होना।

प्रश्न ४. राम के शरीर सौष्ठव की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–चौड़े और उठे हुए कंधे, लम्बी भुजाएँ, शंख जैसी गर्दन, चौड़ी छाती, घुटनों तक लम्बे हाथ, उत्तम सिर, बड़ी आँखें, उन्नत ललाट, चमकीला रंग तथा बराबर विभक्त अंग राम के शरीर का सौष्ठव था।

प्रश्न ५. 'चरित्र की दृढ़ता ही राष्ट्रीय जागृति है" कैसे?

उत्तर–चरित्र की दृढ़ता से व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र निर्माण की धुरी बनता है और राष्ट्रीय जागृति में सहायक हो सकता है क्योंकि चरित्रवान् ही अपने धर्म का पालन कर सकता है।

प्रश्न ६. लेखक ने मन को किस रूप में परिभाषित किया है?

उत्तर–लेखक ने मन को सृष्टि की अपरिचित शक्तियों का गूढ़ भण्डार बताया है और कहा है कि मन सचमुच ही हमारे मर्त्य शरीर में अमृत या दैवी अंश है।

प्रश्न ७. प्रस्तुत निबन्ध में मानसिक दुर्बलताओं से जूझने का मार्ग क्या बतलाया है?

उत्तर–प्रस्तुत निबन्ध में मानसिक दुर्बलताओं से जूझने का मार्ग यह बतलाया है उन दोषों से मन को मुक्त रखा जाय जो मन को निःशक्त बनाते हैं।

प्रश्न ८. "जनपद कल्याणी भावना" का दूसरा नाम क्या प्रतिपादित किया गया है?

उत्तर–"जनपद कल्याणी भावना" का दूसरा नाम सर्वभूतों के प्रति मैत्री और दया भाव प्रतिपादित किया गया है क्योंकि महापुरुष की कल्याण भावना लोकोत्तर होती है।

प्रश्न ९. "वाल्मीकि का सारा दृष्टिकोण चरित्रयोग की सच्ची शिक्षा है।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर–वाल्मीकि ने चरित्रवान् व्यक्ति की खोज करते हुए ही आदि काव्य रामायण की रचना की। उन्होंने राम के जीवन को चरित्र से युक्त किया है जो यह सिद्ध करता है कि वाल्मीकि का सारा दृष्टिकोण चरित्र योग की सच्ची शिक्षा है।

प्रश्न १०. "वर्तमान जीवन और समाज चारित्रिक संकट से ग्रस्त है।" इस संकट से मुक्त होने के लिए आप क्या प्रयास करेंगे?

उत्तर–वर्तमान जीवन और समाज को चारित्रिक संकट से मुक्त करने के लिए मानसिक दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न ११. मन की शक्तियों के विकास में बाधक तत्त्वों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–मन की शक्तियों के विकास में बाधक तत्त्व व्यक्ति का आलस्य, प्रमाद तथा असत्य है जिसके अन्धकार में मन की शक्तियाँ विकसित नहीं हो पाती।

प्रश्न १२. मनुष्य को महान् बनने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर–मनुष्य को महान् बनने के लिए अपने आलस्य, प्रमाद, तन्द्रा तथा असत्य के व्यवहार का परित्याग करना चाहिए।

प्रश्न १३. किन गुणों के आधार पर मानसिक प्रकाश सम्भव हो सकता है?

उत्तर–देवी गुणों के आधार पर मानसिक प्रकाश सम्भव हो सकता है। दैवी गुणों में सत्य, ज्ञान, अभय, मैत्री आदि गुणों की गणना की जाती है।

प्रश्न १४. समाज के लिए महापुरुष की क्या देन है?

उत्तर–महापुरुष अपने जीवन में चरित्र तथा नीति सम्बन्धी गुणों को अपनाकर समाज के समक्ष उन्हें अपनाने का आदर्श प्रस्तुत करता है।

प्रश्न १५. मन के ऐसे विकारों का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है।

उत्तर–मन के ऐसे विकार जिनके कारण उसका विकास सम्भव नहीं होता निम्नांकित हैं– १. आलस्य, २. तन्द्रा, ३. प्रमाद, ४. असत्य।

प्रश्न १६. महापुरुष की खोज का सफल प्रयास किस महाकाव्य में हुआ है?

उत्तर–महापुरुष की खोज का सफल प्रयास वाल्मीकि रचित 'रामायण' महाकाव्य में हुआ है।

प्रश्न १७. जीवन के लिए बहुमूल्य कौन-सा मार्ग है?

उत्तर–जीवन के लिए बहुमूल्य मार्ग धर्म और सत्य का उच्चादर्श है जिसको व्यावहारिक रूप प्रदान करना श्रेयस्कर है।

प्रश्न १८. साधारण व्यक्ति को महान् बनने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर–साधारण व्यक्ति को महान् बनने के लिए सत्य, अभय, धृति आदि गुणों का विकास तथा असत्य, आलस्य, तन्द्रा आदि अवगुणों का परित्याग करना चाहिए।

प्रश्न १९. स्कन्दगुप्त के उस शिलालेख का नाम बताइये जिसमें चरित्र सम्बन्धी गुणों की सूची दी गई है।

उत्तर–चरित्र सम्बन्धी गुणों की सूची वाले स्कन्दगुप्त के शिलालेख का नाम है–जूनागढ़ के शिलालेख।

प्रश्न २०. गुप्तकाल के उस कवि का नाम बताइये जिसकी कल्पना में शारीरिक गठन को राष्ट्रीय आदर्श माना गया हो।

उत्तर–गुप्तकाल के उस कवि का नाम कालिदास है जिसकी कल्पना में शारीरिक गठन को राष्ट्रीय आदर्श माना गया है।

प्रश्न २१. राष्ट्रीय सैन्य दलों के संगठन में हमें किस प्रकार के नवयुवकों की आवश्यकता है?

उत्तर–राष्ट्रीय सैन्य दलों के संगठन में हमें चौड़ी छाती तथा साल वृक्ष के समान ऊँचे नवयुवकों की आवश्यकता है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. चरित्र के आदर्श में लेखक ने शरीर और मन दोनों के विकास को सम्मिलित किया है।" उदाहरण द्वारा इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर–आदर्श चरित्र–चरित्र का मानदण्ड 'डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल' लिखित एक प्रेरणाप्रद निबन्ध है जिसमें उन्होंने स्वाभाविक शैली में चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख किया है और यह मत व्यक्त किया है कि आदर्श चरित्र के लिए शरीर तथा मन दोनों का ही विकास आवश्यक है।

शारीरिक विकास–लेखक ने वाल्मीकि रामायण के राम का आदर्श प्रस्तुत करते हुए मन के विकास के साथ यह आवश्यक माना है कि शरीर का भी विकास हो। राम के आदर्श चरित्र के साथ शारीरिक श्रेष्ठता के विषय में वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार का वर्णन है–

उत्तम शरीर–"राम के कन्धे चौड़े और उठे हुए, भुजाएँ लम्बी, गर्दन शंख की तरह, ठोड़ी दोहरी, छाती चौड़ी, हाथ घुटनों तक लम्बे, गले की हड्डी मांस से दबी हुई, सिर उत्तम, ललाट चौड़ा, आँखे बड़ी, रंग चमकीला, सब अंग बराबर बँटे हुए थे। ऐसे शुभ गुणों से युक्त राम का शरीर था।"

उत्तम मन–नारदजी के मुख से राम के शारीरिक लक्षणों का वर्णन करते हुए कवि वाल्मीकि ने मन की सुदृढ़ता पर भी प्रकाश डाला है और कहा है कि मन जितना उन्नत होगा, चरित्र भी उतना ही आदर्श पूर्ण होगा। राम का वर्णन करते हुए रामायण में वाल्मीकिजी ने उनके शरीर और मन दोनों के ही उत्कर्ष का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया है कि आदर्श चरित्र के लिए शरीर और मन दोनों ही विकसित होने चाहिए।

आदर्श राम–डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है कि राम के आदर्श आज भी हमारे लिए अनुकरणीय बने हुए हैं। युग परिवर्तन हुआ है। इतिहास ने भी परिवर्तन की दिशा ग्रहण की है किन्तु राम के आदर्श आज भी राष्ट्रीय शक्ति का प्रतीक बने हुए हैं। इसका प्रमुख कारण यही है कि राम के चरित्र में शारीरिक तथा मानसिक विकास को सम्मिलित किया गया है।

प्रश्न २. "चरित्र के दैवी अंश को अपनाकर साधारण मनुष्य भी महापुरुष बन सकता है।" लेखक के इस मन्तव्य को सतर्क स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–महापुरुष–डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने चरित्र का मानदण्ड निबन्ध में महापुरुष बनने की विधि बताते हुए लिखा है कि साधारण व्यक्तित्व भी असाधारण व्यक्तित्वशाली बन सकते हैं। लेकिन एक शर्त रखी है। एक शर्त यह है कि व्यक्ति में दैवी गुण हों। वह आलस्य, तन्द्रा, प्रमाद, असत्य के अन्धकार में डूबा हुआ न हो। उसकी मानसिक चेतना जाग्रत हो।

सत्य , अहिंसा , ब्रह्मचर्य–डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने मानसिक विकास के लिए दैवी गुणों को आवश्यक बताते हुए लिखा है कि सत्य का जीवन में पालन होना चाहिए। हिंसा की प्रवृत्ति पर नियन्त्रण होना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का जीवन में स्थान होना चाहिए।

दैवी गुण–दैवी गुणों का नामोल्लेख करते हुए लेखक का कहना है कि सत्य, धृति, अभय, ज्ञान, मैत्री आदि इस प्रकार के गुण है जिनसे मानसिक विकास सम्भव है। ये गुण व्यक्ति के मानसिक विकास में योग देते हैं। उसके मन के अन्धकार को दूर करते हैं।

मन का महत्त्व–प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में मन का प्रमुख स्थान होता है। मन को दैवी अंश मानते हुए लेखक का कहना है कि मन सृष्टि की महत्त्वपूर्ण रचना है। यह मन अपरिचित शक्तियों का भण्डार है। लेकिन मन पर असत्य का परदा पड़ा हुआ है। आलस्य और प्रमाद के अन्धकार में पड़ा मन शक्तियों से अपरिचित बना हुआ है।

महापुरुष–जो व्यक्ति आलस्य, असत्य आदि दुर्गुणों से बचकर मन की शक्तियों का विकास कर लेता है, वह महापुरुष बनने का अधिकारी है। अतः साधारण व्यक्ति को भी अन्धकार से बचकर मानसिक प्रकाश का प्रयास करना चाहिए ताकि वह महापुरुष के रूप में अपनी छवि स्थापित कर सके।

प्रश्न ३. "चरित्र का मानदण्ड निबन्ध बड़ा प्रेरणादायी है।" क्या आप पाठ में अंकित तत्त्वों को जीवन में लाना पसन्द करेंगे। क्यों?

उत्तर–प्रेरणादायक निबन्ध–डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा लिखित 'चरित्र का मानदण्ड' निबन्ध बड़ा ही प्रेरणादायक है। लेखक ने जीवन में अपनाने योग्य इस प्रकार के तत्वों का वर्णन किया है जिनके सहारे व्यक्ति का जीवन एक आदर्श रूप ग्रहण करने में समर्थ हो सकता है।

महानता के पथ-प्रदर्शक–प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए उन आदर्श गुणों को अपनाने का विचार बना ले जिनका अनुसरण करके व्यक्ति महान् बनने का गौरव प्राप्त करता है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने उत्तम चरित्र बनने तथा महानता में सहायक तत्त्वों का इस निबन्ध में वर्णन करके महानता के लिए जो पथ-प्रदर्शित किया है, वह सराहनीय तो है ही हम सबके लिए अनुकरणीय भी है। ऐसा कौन अभागा होगा जो ऐसे गुणों को अपनाकर अपना जीवन धन्य न करना चाहे? महानता के पथ-प्रदर्शक तत्त्वों को न अपनाना चाहे?

प्रेरणादायी तत्त्व–महापुरुष में ईश्वरीय गुणों का अधिक मात्रा में विकास होता है। उसे ईश्वरीय गुणों का प्रतीक कहा जाता है। अतः महान् बनने का हमें प्रयास करना चाहिए।

मन और महापुरुष–मन को अपरिचित शक्तियों का गूढ़ भण्डार बताया गया है। इसके स्वाभाविक तेज को प्रकाशित करने के लिए आलस्य, प्रमाद, तन्द्रा तथा असत्य का पर्दा हटाने की आवश्यकता पर बल देते हुए लेखक ने क्षुद्रता को त्याग देना आवश्यक बताया है और बताया है कि महापुरुषों को अन्धकार से दूर रहना चाहिए।

मानसिक प्रकाश–डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने सत्य, धृति, अभय, ज्ञान, मैत्री आदि को दैवी गुणों की संज्ञा देते हुए, इन्हें मानसिक प्रकाश के लिए आवश्यक माना है।

सामाजिक जीवन के स्तम्भ–महापुरुषों के जीवन में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि गुणों का सामाजिक जीवन के टिकाऊ स्तम्भ के रूप में विशेष महत्त्व है। इन गुणों की निर्बलता से जीवन-ढाँचा लड़खड़ा जाता है।

महापुरुष का सन्देश–महापुरुष सामाजिक स्थिति तथा जीवन के लिए अनमोल विभूति होता है। वह सामाजिक संगठन के लिए क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में अपनी छवि स्थापित करता है। उसकी कल्याण-भावना लोकोत्तर होती है।

जीवन में स्थान–राम के जीवन को आदर्श चरित्र का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए शरीर और मन दोनों के विकास पर लेखक ने बल दिया है। उसका कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में इन गुणों को अपनाकर महान बनने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न ४. "जब-जब समाज में चारित्रिक गुणों का ह्रास हुआ , तब-तब महापुरुषों ने जन्म लेकर चरित्र के मानदण्ड स्थापित किये।" प्रस्तुत कथन के आधार पर निबन्ध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–१. महापुरुष–महापुरुष वह है जो आवश्यक चरित्र तथा नीति सम्बन्धी गुणों को अपने जीवन में प्रमुखता देता है और जो अनुभव प्राप्त होते हैं उनका नया पाठ समाज को पढ़ाता है। इसीलिए तो महापुरुष के सम्बन्ध में कहा गया है–"तमसः परस्तात्।" महापुरुष वह है जिसका मन जनपद की कल्याण भावना से ओत-प्रोत होता है।

२. **समाज**–समाज में सभी प्रकार के व्यक्ति रहते हैं। कुछेक तो अपनी मानसिक दुर्बलताओं के विरुद्ध संघर्षरत रहते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो उन दोषों से अपनी रक्षा का प्रयास करते हैं जिनसे मन की शक्ति समाप्त होती है।

३. **चरित्र सम्बन्धी गुण**–डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने 'चरित्र का मानदण्ड' निबन्ध में–१. सत्य, २. धृति, ३. अभय, ४. ज्ञान, ५. मैत्री आदि गुणों को दैवी गुण बताते हुए उन्हें मन के प्रकाश के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताया है। लेखक ने यह भी बताया है कि समाज में जब चरित्र सम्बन्धी गुणों का ह्रास होने लगता है तब निश्चित रूप से ऐसे महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता है जो समाज में पुनः दैवी गुणों की स्थापना के लिए जन जागरण अभियान प्रारम्भ करके उनमें चेतना लाते हैं। चरित्र का मानदण्ड स्थापित करके समाज की दशा के सुधार का पथ प्रदर्शित करते हैं।

४. **उद्देश्य**–'चरित्र का मानदण्ड' निबन्ध का उद्देश्य नीति सम्बन्धी गुणों को जीवन में प्रधानता देना तथा गुणों के प्रति जागरूक निष्ठा रखना है ताकि व्यक्ति में मनुष्योचित शिष्टता, व्यवहार बुद्धि तथा शान्ति एवम् न्याय की भावनाओं का जन्म हो सके।

प्रश्न ५. चरित्र के प्रति सजगता प्रारम्भ से ही हमारी विशेषता रही है। इस कथन को भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–१. चरित्र की महत्ता–चरित्र की महत्ता को प्राचीन ऋषि-मुनियों तथा आधुनिक मनीषियों ने स्वीकार किया है। व्यक्ति तथा समाज निर्माण की आधार शिला माना है। इतिहास में भी चरित्र निर्माण को देशोन्नति का प्रमुख मार्ग माना है और चरित्र के प्रति सजगता को विशेष स्थान दिया गया है।

२. **चरित्र के प्रति सजगता**–धार्मिक ग्रन्थ हों या इतिहास की पुस्तकें, सभी में चरित्र के प्रति सदा सजग बने रहने पर बल दिया गया है। इतिहास साक्षी है कि खुदाई करने पर गुप्तकाल के विषय में जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह यह प्रकट करता है कि धृति शर्मा तथा सत्यशर्मा गुप्तकाल के ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने चरित्र के प्रति सजग बनकर नाम कमाया है।

३. **सजगता के सुपरिणाम**–चरित्र के प्रति सजग रहने पर मनुष्योचित शिष्टता के साथ व्यवहार बुद्धि बनती है। शान्ति स्थापना को मन बनता है। व्यक्ति सदा न्याय-पथ का पथिक बनता है। उत्तम चरित्र ही युग के लिए पथ-प्रदर्शक बनता है। राष्ट्रोत्थान का कारण बनता है। भारतीय संस्कृति में सदा चरित्र के प्रति सजग बने रहने का उपदेश किया है। वाल्मीकि ने भी चरित्र सम्बन्धी आदर्शों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

गुप्तकालीन काव्य, शिलालेख तथा पुरातत्त्व सामग्री भी उत्तम चरित्र बनने पर बल देते हैं। चरित्र सम्बन्धी आदर्शों की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हैं।

प्रश्न ६. वाल्मीकि की दृष्टि से संसार में मनुष्य कितने तरह से रहते हैं? वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–१. वाल्मीकि–वाल्मीकि को काव्य का जन्मदाता, रामायण का प्रणेता तथा सुप्रसिद्ध महर्षि के रूप में जाना जाता है।

२. **मनुष्य का रहना**–वाल्मीकि की दृष्टि में प्राणी का जीवन दो प्रकार से व्यतीत होता है। एक प्रकार का जीवन तो ऐसा है जिसमें व्यक्ति साधारणतः अपना जीवनयापन करता है। वाल्मीकि जी ने ऐसे व्यक्तियों को प्राकृत नर बताते हुए उन्हें पराक्रम रहित माना है।

कुछ व्यक्ति धर्म तथा सत्य के आदर्श का पालन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे व्यक्ति धैर्य धारण करने वाले तथा उत्तम चरित्र होते हैं। धर्म तथा सत्य का मार्ग जीवन में बहुमूल्य होता है। इसीलिए इस कोटि के व्यक्तियों की संख्या कम ही रहती है। इस प्रकार के व्यक्ति प्रतिज्ञा में सच्चे तथा खरे उतरते हैं। अपने व्रत में दृढ़ होते हैं। प्रदर्शन से दूर रहते हैं।

३. **उपसंहार**–संसार में ऐसे व्यक्तियों का मिलना सरल है जो साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे व्यक्ति भी आसानी से प्राप्त हो सकते है जो प्रतिज्ञा तो करते हैं किन्तु उन्हें पूर्ण करने का कभी अवसर नहीं देते। हमें और हमारे समाज को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता सदा बनी रहती है जो सच्चाई पर दृढ़ रहने वाले हों। धर्म का आचरण करने वाले हों। धैर्यवान् हों। दृढ़ निश्चयी हों।

प्रश्न ७. निम्न गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

(क) वस्तुतः ये और इसी प्रकार के और दूसरे गुण मनुष्य जीवन और सामाजिक जीवन के टिकाऊ खम्भे है। जीवन इनके दृढ़ ठाट पर सब देश और सब कालों में पनपता हुआ

चलता रहता है यदि इन उपयोगी तत्त्वों में निर्बलता या संकटता उत्पन्न हो जाती है तो जीवन का ढाँचा भी लड़खड़ाने लगता है।

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है। जिसमें लेखक गुणों को मनुष्य जीवन का दृढ़ स्तम्भ बताते हुए कहता है–

व्याख्या–मनुष्य जीवन में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये गुण सामाजिक जीवन के दृढ़ आधार हैं। इन गुणों के अभाव में मनुष्य का सामाजिक जीवन उन्नति की दिशा में नहीं बढ़ सकता। इन गुणों के सहारे व्यक्ति अपना सामाजिक जीवन उत्तम बना सकता है। देश को समृद्ध बना सकता है। देशोत्थान में सहायक बन सकता है।

मनुष्य जीवन में जब सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि जैसे गुणों का अभाव हो जाता है अथवा इन गुणों के अनुपालन में शिथिलता आ जाती है तो जीवन नौका डगमगाने लगती है। जीवन का ढाँचा चरमरा जाता है। जीवन की गति मन्द पड़ जाती है तथा जीवन की वास्तविक आनन्द प्राप्ति बाधित होती है।

सन्देश–लेखक ने गुणों को सामाजिक जीवन का आधार बताया है।

(ख) साधारण जीवन बिताने वाले मनुष्य तो यहाँ ढ़ेरों दिखायी पड़ते हैं पर जीवन की जाँच में पूरा उतरने वाले, प्रतिज्ञा के सच्चे और व्रतों में दृढ़ मनुष्य बिरले ही होते हैं।

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है। लेखक दो प्रकार के मनुष्यों का उल्लेख करते हुए यह बताना चाहता है कि सच्चे तथा दृढ़ निश्चयी व्यक्तियों की इस संसार में कमी है।

व्याख्या–लेखक अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहता है कि इस संसार में सामान्य **जीवन-यापन** करने वाले व्यक्ति तो अधिक संख्या में हैं। पराक्रम रहित व्यक्तियों की भी कोई कमी नहीं है किन्तु धर्म तथा सत्य के उच्चादर्शों पर चलने वालों की वास्तव में ही कमी है। ऐसे व्यक्तियों की कमी हमें अखरती है जो प्रतिज्ञा में सच्चे तथा संकल्प में दृढ़ न हों। जीवन की सच्ची परख व्यक्ति के स्वभाव से होती है। जिसके स्वभाव में दृढ़ता होती है, प्रतिज्ञा में सच्चाई होती है उनका जीवन महान् होता है। लेकिन दुःख इस बात का है कि इस प्रकार के सच्चे तथा दृढ़ व्रती बहुत ही कम व्यक्ति होते हैं।

सन्देश–लेखक ने सच्चे तथा दृढ़ प्रतिज्ञ बनने पर बल दिया है।

(ग) धर्म का मूर्तिमान रूप राम है, चरित्र ही धर्म और धर्म ही चरित्र है। मन, कर्म और वाणी से राम जो भी चरित्र करते हैं, उसने हमें धर्म की नयी-नयी व्याख्या प्राप्त होती है।

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **चरित्र का मानदण्ड** निबन्ध से अवतरित है जिसमें लेखक ने राम के जीवन को चरित्र से युक्त बताते हुए वाल्मीकि रामायण के अरण्य काण्ड को उद्धृत किया है और राम को धर्म का मूर्तिमान रूप बताया है।

व्याख्या–डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल वाल्मीकि के राम के विषय में कहते हैं कि वह धर्म का मूर्तिमान रूप हैं। राम का चरित्र धर्म का पर्याय बन गया था। उन्होंने धर्म की जो व्याख्या की उसमें हमें नवीनता के दर्शन होते हैं। उनका चरित्र, धर्म से किसी भी रूप में कम नहीं था। मन, वचन तथा कर्म से राम ने जो भी चरित्र प्रस्तुत किये वह धर्म का ही रूप थे। उनके चरित्र ने धर्म के स्वरूप को अधिक स्पष्टता प्रदान की। इसीलिए तो वाल्मीकि ने राम के विषय में कहा है कि वह सदा रहने वाले धर्म वृक्ष के बीज हैं।

सन्देश–लेखक ने उत्तम चरित्र को धर्म का ही रूप बताया है।

(घ) चरित्र के प्रति जब राष्ट्र इस प्रकार सजग हो उठता है, तभी उसमें मनुष्योचित शिष्टता, व्यवहार बुद्धि और सुख शान्ति न्याय की भावनाओं का जन्म होता है। इस प्रकार

की जागरूकता को उत्पन्न करने का सबसे बड़ा श्रेय महापुरुष को ही होता है जो अपने चरित्र की साधना से उस युग के लिए पथ-प्रदीप बन जाता है और उत्थान के लिए बार-बार राष्ट्रीय महाप्रजाओं का आमन्त्रण करता है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है जिसमें लेखक गुणों के प्रति जागरूकता को प्रमुखता देने को कह रहा है ताकि व्यक्ति तथा राष्ट्र में शिष्टता, शान्ति एवम् न्याय भावनाओं की वृद्धि हो सके।

व्याख्या—राष्ट्र को चरित्र के प्रति सजग रहना आवश्यक है। बिना उत्तम चरित्र के गुणों में वृद्धि नहीं हो सकती और यह भी निश्चित है कि उत्तम चरित्र बनने के लिए व्यक्ति को सजग रहना पड़ेगा। सजगता बिना व्यक्ति गुणवान् नहीं बन सकता। उत्तम चरित्रवान् नहीं बन सकता। राष्ट्र व्यक्तियों से बनता है। जब व्यक्ति चरित्रवान् होगा तो राष्ट्र भी उत्तम चरित्र का बन सकेगा। राष्ट्र की चरित्र के प्रति इस सजगता का सुपरिणाम यह होगा कि उसमें मानवोचित शिष्टता आ जायेगी। उसकी व्यवहार बुद्धि बनेगी। सुख-शान्ति में वृद्धि होगी तथा भावनाओं में भी अन्तर आयेगा। उसकी भावनाओं में न्याय प्रियता होगी।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल कहते हैं कि राष्ट्रों में जागरूकता का बीजारोपण महापुरुष ही कर सकते हैं। वे अपने चरित्र का उत्तम आदर्श राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत करके उस युग के पथ-प्रदर्शक बनते हैं। राष्ट्र को सही दिशा प्रदान करते हैं और देशोत्थान में सहायक बनते हैं।

सन्देश—चरित्र के प्रति सजगता परमावश्यक है।

प्रश्न ८. 'चरित्र का मानदण्ड' निबन्ध में डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने साधारण तथा महापुरुष में क्या अन्तर बताया है?

उत्तर—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने चरित्र का मानदण्ड निबन्ध में इस पृथ्वी पर दो प्रकार के मनुष्यों का निवास बताया है। एक प्रकार के व्यक्ति तो साधारण श्रेणी में आते हैं। साधारण श्रेणी के व्यक्तियों को 'अल्प सत्व', 'प्राकृत' मनुष्य अथवा 'जन' के नाम से पुकारा जाता है।

साधारण पुरुषों में साधारण प्रकाश होता है। उनमें ईश्वरीय अंश भी कम ही दिखायी देता है। वे पराक्रमी नहीं होते। साधारण व्यक्ति होते हैं।

महापुरुष देखने में तो साधारण पुरुष जैसे ही होते हैं। उनका शरीर, रूप रंग सभी कुछ एक जैसा होता है। कोई भी बाह्य अन्तर दिखायी नहीं देता किन्तु महापुरुष के व्यक्तित्व का गम्भीरता से चिन्तन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि महापुरुष का मन साधारण पुरुष से भिन्न होता है। महापुरुष का मन आलस्य, प्रमादादि से दूर रहता है, अहंकार, क्रोध, आलस्यादि दुर्गुणों की छाया उनके मन पर नहीं पड़ पाती। उनका मन सदा, सद्गुणों के प्रकाश से प्रकाशित रहता है। लोक-कल्याण की भावना साधारण मनुष्य से अधिक होती है। साधारण व्यक्ति की जन कल्याण भावना में भी स्वार्थ बुद्धि की अधिकता होती है जब कि महापुरुष की भावना स्वार्थ भावना से उठकर लोक कल्याण की भावना पर आधारित होती है। उसका मन शक्तियों का अपरिमित भण्डार होता है। मन की इन शक्तियों के बल पर वे जन-मानस में समा जाते हैं और प्रशंसा के पात्र बनते हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ-पृष्ठ-४९—मन्त्रदृष्टा = मन्त्रों के अर्थ का ज्ञाता, मन्त्रों का अर्थ जानने और बनाने वाला। प्राकृत = साधारण। मानदण्ड = योग्यता का पता लगाने का माप। दुर्धर्ष शक्ति = प्रबल शक्ति, प्रचण्ड बल। मर्त्य = मरणशील, नाशवान। प्रमाद = अहंकार। तन्द्रा = ऊँघ की स्थिति। क्षुद्रता = संकीर्णता।

पृष्ठ-५०– तमस = अन्धकार। सार्वभौम = सबका, सम्पूर्ण जगत का। धृति = धैर्य। अभय = Yायरहित, भयमुक्त। मैत्री = मित्रता। घनीभूत = अधिक, घना। अग्रदूत = आगे चलना वाला, नेता। लोकोत्तर = दैवी, संसार से परे। कल्याणी = कल्याण की भलाई की।

पृष्ठ-५१– तालिका = सूची, नामावली। परे = पृथक, अलग, एक ओर। युक्त = सहित। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। धुरी = कीली, आधार। अल्प सत्व = साधारण अस्तित्व, साधारण व्यक्ति। बिरले = थोड़े, कोई-कोई। उत्कर्ष = उन्नति, विकास। अन्तर्वेदी = शुभकार्य का स्थान।

पृष्ठ-५२–सैन्य दल = सैनिक दल, सेना। नियतात्मा = प्रकृति के सृष्टा। धनुर्वेद = धनुष विद्या। मनुष्योचित = मनुष्य के लिए उचित।

(१)

साधारण पुरुष और महापुरुष के तुलनात्मक संबंध की ओर भी निश्चित संकेत प्राप्त होता है। साधारण मनुष्य को भारतीय चरित्र की परिभाषा में "प्राकृत" मनुष्य या जन कहते हैं। चरित्र के जिस मानदण्ड का आविष्कार और जिसकी कल्पना हमारे अपने समाज में हुई है, उसके एक छोर पर प्राकृत मनुष्य है और दूसरे छोर पर महापुरुष। प्राकृत जन में ईश्वरी अंश का कम से कम या साधारण प्रकाश देखा जाता है। इसके प्रतिकूल महापुरुष में देवी अंश या चरित्र सम्बन्धी ईश्वरीय गुणों का प्रकाश कहीं अधिक मात्रा में प्रकट होता है।

(पृष्ठ-४९)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **चरित्र का मानदण्ड** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर साधारण तथा महान् पुरुष के अन्तर को स्पष्ट करते हुए लेखक कहता है–

व्याख्या–यजुर्वेद के अनुसार सर्वशक्तिमान् ईश्वर को महान् पुरुष कहा जाता है। 'वेदान्तमेतं पुरुष महान्तम्" द्वारा साधारण तथा असाधारण पुरुष के सम्बन्ध में जो संकेत प्राप्त होते हैं उसके द्वारा यह स्वीकार करना पड़ेगा कि साधारण पुरुष को "प्राकृत" मनुष्य कहते हैं। भारतीय चरित्र में इस अन्तर को सुस्पष्ट करते हुए बताया गया है कि प्राकृत मनुष्य में ईश्वरीय अंश साधारण रूप में प्राप्त होता है। महापुरुष में यह ईश्वरीय अंश अधिक मात्रा में प्राप्त होने के कारण ही वह साधारण पुरुष से पृथक् अस्तित्त्व स्थापित करने में सक्षम होता है। विचारों की अधिक सुस्पष्टता के लिए यह कहा जा सकता है कि चरित्र के मानदण्ड में एक ओर प्राकृत मनुष्य है तो दूसरे छोर पर महापुरुष है जो भारी अन्तर का सूचक है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल और सुबोध भाषा।

(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली।

(३) **अन्य**–साधारण तथा महापुरुष के अन्तर की सुस्पष्ट झाँकी।

(२)

जिस ऋषी ने ईश्वर की शक्ति और ईश्वर के स्वरूप का विचार करते हुए अपने ज्ञान पथ में आगे बढ़कर ईश्वर को महापुरुष की संज्ञा प्रदान की उसने मानवीय चरित्र शास्त्र की एक बड़ी पहेली या उलझन को सरल बना डाला। महापुरुष ईश्वरीय गुणों का साक्षात् प्रतीक होता है। स्थूल शरीर की दृष्टि से प्राकृत पुरुष और महापुरुष दोनों में थोड़ा ही अन्तर होता है। देखने-सुनने आदि की शक्ति, हाथ-पैरों को व्यावहारिक उपयोग में लाने की शक्ति और इन्द्रियों की कार्यक्षमता में दोनों लगभग एक से दिखायी पड़ते हैं, किन्तु वह मूल्यवान् तत्त्व जो महापुरुषों को साधारण जन से पृथक् करता है जो उसे समाज के सम्मुख एक दुर्धर्ष शक्ति की अनमोल विभूति के रूप में आगे रखता है, वह मन है। (पृष्ठ-४९)

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद्यांश **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक साधारण तथा महापुरुष के अन्तर को स्पष्ट करता हुआ उनके सूक्ष्म अन्तर के विषय में कहता है–

व्याख्या–ऋषियों ने ईश्वर को महापुरुष कहा है। उस शक्ति को महापुरुष कहने और मानने से सर्वाधिक लाभ हमें यह हुआ है कि मानव चरित्र की एक बड़ी उलझन अब सरल हो गयी है।

वास्तविकता यह है कि ईश्वरीय गुणों का प्रतीक यदि किसी को माना जा सकता है तो केवल महापुरुष को। शारीरिक दृष्टि से साधारण और महान् पुरुष में भले ही कोई अन्तर समझ में न आता हो। देखने-सुनने, उठने-बैठने, चलने-फिरने में भले ही कोई अन्तर न भाँपा जा सके किन्तु सूक्ष्म निरीक्षण करने पर दोनों में अन्तर स्पष्ट झलकता है। यह अन्तर मन का है। यह मन दोनों में बड़ा भारी अन्तर हमारे सम्मुख रखता है। यह मन अत्यन्त ही मूल्यवान् है और पुरुष को मूल्यवान् बना देता है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल तथा बोधगम्य भाषा।

(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली।

(३) **अन्य**–मन की शक्ति को अद्वितीय बताया है।

(३)

मन सचमुच ही हमारे मर्त्य शरीर में अमृत या दैवी अंश है। मन सृष्टि की अपरिचित शक्तियों का गूढ़ भण्डार है। मन के भीतर छिपी हुई विलक्षण शक्तियों का साधारणतः प्रकाश नहीं होता। मन के भीतर जो स्वाभाविक तेज चमक है उसके ऊपर अन्धकार का ऐसा परदा पड़ा देखा जाता है कि मन की शक्तियों का प्रकाश या विकास नहीं होने पाता। आलस्य, प्रमाद, तन्द्रा और असत्य से बार-बार जूझता हुआ मन थककर जहाँ का तहाँ रह जाता है। इस प्रकार के घनीभूत अंधेरे को हटाकर मन के साथ सत्य व्यवहार में प्रवृत्त होने का प्रयत्न जब किया जाता है, मनुष्य अपनी क्षुद्रता को त्याग कर महान् बनने लगता है। महापुरुष का सबसे बड़ा लक्ष्य यही है कि उसका मन उस तरह से अंधेरे के, जो साधारण मनुष्यों को जकड़े रहता है, ऊपर उठ जाता है। महापुरुषों को अंधकार से परे होना चाहिए। **(पृष्ठ ४९)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक मन के अन्धकार को दूर करने पर विशेष बल देते हुए कहता है–

व्याख्या–मनुष्य को शरीर ऐसा मिला है जो नाशवान् है। मन अवश्य ऐसा है जो दैवी गुणों से परिपूर्ण तथा अमृत रूप है। लेखक ने मन को असाधारण शक्तियों का भण्डार माना है किन्तु यह बताना चाहता है कि मन के स्वाभाविक प्रकाश में व्यक्ति का आलस्य बाधक है। तन्द्रा और प्रमाद भी स्वभाविक चमक समाप्त कर देते हैं। असत्य का अन्धकार भी मन के प्रकाश को अपने आवरण में छिपा लेता है। आलस्य, तन्द्रा प्रमाद, असत्य, आदि दुर्गुणों में उलझा मन अपनी शक्तियों का स्वभाविक विकास करने में असमर्थ हो जाता है। अतः पुनः उस चमक को प्राप्त करने के लिए अन्धकार के दोषी इन दुर्गुणों को दूर करने की आवश्यकता है।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का कहना है कि मन में आये लघुता के भाव को दूर करके ही व्यक्ति में महापुरुष के लक्षण स्थान प्राप्त कर सकते हैं। अतः महापुरुष बनने के लिए यह परमावश्यक है कि मन को अन्धकार युक्त न रखा जाय। यह मन अन्धकार से मुक्त हो।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल तथा प्रवाहपूर्ण भाषा।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–साधारण तथा महान् पुरुष का अन्तर स्पष्ट करते हुए मन के अन्धकार को दूर करने को कहा गया है।

(४)

सत्य, धृति, अभय, ज्ञान, मैत्री आदि चरित्र सम्बन्धी जितने दैवी गुण है वे सब मानसिक प्रकाश के ही उदाहरण हैं। मन के भीतर उज्ज्वल प्रकाश बाहर प्रकट हुए बिना नहीं रह पाता। तुम से ऊपर उठने अथवा अंधकार को हटाने अथवा अपनी ही मानसिक दुर्बलताओं से जूझते हुए उन पर विजयी होने के कितने ही मार्ग हो सकते हैं, पर उनका सार एक ही है अर्थात् मन की शक्ति को खोखला करने वाले दोषों से अपना छुटकारा करने की शक्ति। ये दोष और त्रुटियाँ मनुष्यों में अनेक प्रकार से प्रकट होती है और होती रहेंगी। **(पृष्ठ-५०)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने यह बताना चाहा है कि मन की शक्ति को खोखला बनाने वाले दोषों का सदा प्रतिकार करना चाहिए।

व्याख्या–लेखक की मान्यता है कि मानसिक प्रकाश के लिए चरित्र को उत्तम बनाना होगा। चरित्र को उत्तम बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने मन में दैवी गुणों को स्थान प्रदान करे। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने सत्य को दैवी गुण बताया है। धैर्य को भी उन्होंने मन में स्थान देने पर बल दिया है। भयमुक्त मन को भी उत्तम चरित्र का अंग बताया है और कहा है कि चरित्रवान् के लिए ज्ञान और मित्रता भी आवश्यक है।

मन की शक्ति बढ़ाना भी उत्तम चरित्र के लिए आवश्यक है। यों तो मन अनगिनत दोषों से युक्त है। ये दोष व्यक्ति को दुर्बल बनाते हैं। अतः इन दोषों से मुक्त रहना भी अनिवार्य है। दोषमुक्ति के लिए व्यक्ति अनेकानेक प्रयास करता है। दोषों पर नियन्त्रण पाने का हर सम्भव प्रयत्न करता है किन्तु उसे यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि जब तक मानसिक प्रकाश नहीं होगा तब तक दैवी गुण भी व्यक्ति के मन में नहीं समा सकते। अतः हम सबको यह मानकर चलना चाहिए कि दैवी गुणों तथा मानसिक प्रकाश दो बात नहीं है। यदि सत्य, धैर्य, अभय, ज्ञान, मैत्री आदि गुणों को मन में स्थान प्राप्त हो जायेगा तो मानसिक प्रकाश भी सम्भव हो जायेगा।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–विषयानुकूल सरल तथा सुबोध भाषा।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–मानसिक प्रकाश के लिए सत्य, धृति, अभय, ज्ञान, मैत्री आदि की आवश्यकता पर बल दिया है।

(५)

जिन चरित्र सम्बन्धी गुणों के विषय में हम सोचते हैं अथवा कल्पना करते हैं महापुरुष का जीवन स्पष्ट उनकी समझ में आने वाली व्याख्या उपस्थित करता है। जीवन के उपयोगी तत्त्व-सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, आदि केवल कहने-सुनने की बात रह जाते, यदि हम उन्हें महापुरुषों के जीवन में प्रत्यक्ष चरितार्थ होते हुए न देख पाते। (वस्तुतः ये और इसी प्रकार के और दूसरे गुण मनुष्य जीवन और सामाजिक जीवन के टिकाऊ खम्भे हैं। जीवन इनके दृढ़ ठाठ पर सब देश और सब कालों में पनपता हुआ, चलता रहता है। यदि इन उपयोगी तत्त्वों में निर्बलता या संकरता उत्पन्न हो जाती है तो जीवन का ढाँचा भी लड़खड़ाने लगता है।

(पृष्ठ-५०)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने यह बताया है कि जीवन को स्थिरता प्रदान करने में महापुरुषों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

व्याख्या—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के विचार से सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि इस प्रकार के गुण हैं जिनके द्वारा व्यक्ति के चरित्र की जाँच हो सकती है। ये गुण व्यक्ति के चरित्र का मापदण्ड है जो मनुष्य चरित्र के विशेष गुण भी कहे जा सकते हैं। इन गुणों को व्यक्ति तथा सामाजिक जीवन के दृढ़ स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया जाता है। महापुरुष सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि गुण अपनाता है और दूसरे के लिए इन गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

लेखक के मतानुसार इन गुणों को अपने जीवन में चरितार्थ करना साधारण व्यक्ति की सामर्थ्य से परे है। महापुरुषों के लिए इन आदर्श गुणों का अनुपालन कोई कठिन कार्य नहीं है। यदि वे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि गुणों को अपने जीवन में चरितार्थ न करते तो ये गुण केवल सिद्धान्त की बात बनकर रह जाते।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपनी बात पर विशेष बल देते हुए लिखा है कि चरित्र के आधार पर ही सामाजिक जीवन में स्थिरता सम्भव है। ये गुण ही सामाजिक जीवन के ऐसे सुदृढ़ स्तम्भ हैं जिन पर सामाजिक जीवन का विकास आधारित है। ये गुण इतने उपयोगी है कि इनका अभाव तथा इसकी निर्बलता सामाजिक जीवन के विकास में आड़े आती है। अतः इन गुणों को अपनाकर सामाजिक उत्थान का प्रयास अवश्य होना चाहिए।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—भाषा सरल तथा भावानुकूल है।

(२) **शैली**—गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**—चरित्र के लिए सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि गुणों का महत्त्व बताया गया है।

(६)

महापुरुष प्रत्येक युग के लिए आवश्यक चरित्र और नीति सम्बन्धी गुणों को अपने जीवन में प्रधानता देकर उनके अनुभव का नया पाठ समाज को पढ़ाता है। समाज तथा व्यक्तियों की मानसिक व्याधि की चिकित्सा के रूप में उस विशेष नीति-सम्बन्धी गुण के विषय में यह एक नयी श्रद्धा और चमत्कार पूर्ण भावना उत्पन्न करता है। (पृष्ठ-५०)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित ***'चरित्र का मानदण्ड'*** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर लेखक महापुरुष की समाज के लिए अनुपम सामाजिक देन पर प्रकाश डालते हुए कहता है—

व्याख्या—प्रत्येक युग में रीति-नीति परिवर्तित होती रहती है। इन नीतियों का निर्धारण युग की आवश्यकतानुसार करना परमावश्यक है। जो व्यक्ति युग की धारा के साथ नहीं बहता वह महापुरुष के लक्षण से विहीन है ऐसा समझना चाहिए।

लेखक का कहना है कि महापुरुष अपने जीवन में युग के अनुसार अपने चरित्र का निर्माण करता है। नीति निश्चित करता है और तदानुसार अपने जीवन की गति निर्धारित करके समाज के अन्य प्राणियों को उसका अनुसरण करने की प्रेरणा देता है। महापुरुष का कार्य यहीं समाप्त नहीं हो जाता। वह उनके मार्ग-दर्शन के लिए भी तत्पर रहता है। सामाजिक जीवन में उन गुणों को प्रवेश दिलाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

महापुरुष के विषय में लेखक का कहना है कि वह समाज में नीति सम्बन्धी गुणों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। समाज में नवीन श्रद्धा का भाव भरता है और चमत्कारपूर्ण भावना से समाज की मानसिक वेदना का हरण करके समाज को स्वस्थ वातावरण प्रदान करता है।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—सरल, सुबोध भाषा।

(२) **शैली**—गवेषणात्मक शैली।

(३) **अन्य**—महापुरुष नीति सम्बन्धी गुणों को अपने जीवन में चरितार्थ करता है।

(७)

समाज के प्रति महापुरुष की बड़ी भारी देन है। जिसकी पूर्ति के लिए महापुरुष प्रत्येक युग में समाज में जन्म लेता है। इस दृष्टिकोण से महापुरुष सामाजिक स्थिति और जीवन के लिए एक अनमोल विभूति है। महापुरुष को पाकर प्रत्येक समाज धन्य होता है, माना महापुरुष के रूप में दैवी शक्ति या दैवी गुणों का एक घनीभूत तेज पुंज प्रकट होकर किसी असाधारण चेतना से समाज के संगठन और शरीर को झकझोर देता है इस दृष्टि से महापुरुष का व्यक्तित्व क्रान्ति का अग्रदूत बनता है। (पृष्ठ-५०)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने महापुरुष को क्रान्ति का अग्रदूत माना है और समाज के लिए ही उसका जन्म होना स्वीकार किया है।

व्याख्या–लेखक यह मानता है कि महापुरुष प्रत्येक युग में जन्म धारण करता है। उसका जन्म समाज के लिए वरदान सिद्ध होता है। वह समाज के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य करता है इसीलिए तो महापुरुष को सामाजिक जीवन के लिए अनमोल विभूति कहा जाता है। समाज के प्रति उसकी महान् देन की सराहना की जाती है।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल कहते हैं कि महापुरुष को प्राप्त करके समाज धन्य हो जाता है। प्रत्येक सामाजिक प्राणी को वह महापुरुष दैवी गुणों की साक्षात् प्रतिमा प्रतीत होता है वह महापुरुष सामाजिक संगठन में परिवर्तन की दिशा प्रदान करता है। समाज में अद्वितीय चेतना लाने का श्रेय भी महापुरुष को ही मिलता है। इसीलिए तो महापुरुष को सामाजिक क्रान्ति का अग्रदूत कहा जाता है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल, सुबोध भाषा है।

(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली है।

(३) **अन्य**–महापुरुष को क्रान्ति का अग्रदूत माना गया है।

(८)

सदियों से सुप्त पड़े हुए संस्कार महापुरुष का जागृति सन्देश पाकर उठ खड़े होते हैं नये विचारों का वसन्त महापुरुष से वरदान पाकर समाज के शरीर को जीवन रस की हरियाली से हरा-भरा बना देता है। महापुरुष की कल्याण भावना लोकोत्तर होती है। साधारण व्यक्ति के छोटे और परिमित मन में सामाजिक कल्याण के थोड़े भाव ही उत्पन्न हो सकते हैं महापुरुष का मन समस्त जनपद की कल्याण भावना से ओत-प्रोत होता है। जनपद कल्याण भावना का ही दूसरा नाम सर्वभूतों के प्रति मैत्री और दया का भाव है। (पृष्ठ-५०)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर महापुरुष के सामाजिक क्षेत्र के योगदान का वर्णन करते हुए लेखक कहता है–

व्याख्या–सामान्यतः समय के परिवर्तन के साथ समाज के आचार-विचारों में भी परिवर्तन आता है। समाज की सुप्त भावनाओं को जागृति का अवसर प्राप्त होता है। उत्तम प्रभाव पुनः दृष्टिगोचर होने लगते हैं। इस परिवर्तन में प्रमुख योग महापुरुष के उन श्रेष्ठ गुणों का होता है जिन्हें वह महापुरुष अपने जीवन में चरितार्थ करके समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। महापुरुष के गुणों से पुनः उत्तम संस्कारों को जाग्रत होने का सुअवसर प्राप्त होता है।

लेखक कहता है कि महापुरुष ही नवीन विचारों की हरीतिमा के समान मन को जीवन रस से परिपूर्ण कर देते हैं। आनन्द की लहरों से वातावरण को सुखद बना देते हैं।

महापुरुष की कल्याणकारी भावना में व्यापकता के दर्शन होते हैं। वह केवल व्यक्तिगत हित के विचार से कार्य नहीं करता। केवल परिवार तक ही उसकी कल्याण भावना सीमित

नहीं होती। वह तो समस्त प्राणियों की कल्याण भावना से ओत-प्रोत होता है। साधारण व्यक्ति के मन में केवल अपनी ओर अपने परिवार की कल्याण भावना रहती है। उसकी कल्याण भावना का क्षेत्र संकुचित होता है।

लेखक प्रस्तुत स्थल पर महापुरुष की व्यापक कल्याणकारी भावना की सराहना करते हुए यह कहता है कि सर्वभूतों के प्रति मित्रता तथा दयाभाव का होना ही जनपद की कल्याण भावना है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–भाषा की सरलता सराहनीय है।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–महापुरुष के सामाजिक योगदान तथा उसकी कल्याण भावना का वर्णन किया गया है।

(९)

चरित्र के आदर्श में शरीर और मन दोनों का विकास सम्मिलित है। राम के वर्णन में वाल्मीकि ने उनके शारीरिक सौन्दर्य और गठन का एक सजीव चित्र खींचा है। जो कितने ही युगों में ऐतिहासिक परिवर्तनों में से होता हुआ आज भी हमारी राष्ट्रीय जन-शक्ति के शारीरिक उत्कर्ष के लिए एक तगड़ा आदर्श सामने रखता है। (पृष्ठ-५१)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से उद्‌धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक यह बताना चाहता है कि चरित्र के आदर्श में शरीर तथा मन दोनों का ही विकास आवश्यक है।

व्याख्या–लेखक वासुदेवशरण अग्रवाल राम को चरित्र का आदर्श बताते हुए कहते हैं कि उनके चरित्र के आदर्श में शरीर और मन दोनों का विकास सम्मिलित था। वाल्मीकि कवि ने रामायण में जहाँ राम के आदर्श चरित्र पर प्रकाश डाला है वहीं उन के शारीरिक सौन्दर्य तथा गठन का सजीव चित्रण किया है।

लेखक का कथन है कि इतिहास साक्षी है कि परिवर्तन तो प्रत्येक युग में हुए हैं किन्तु इतना अधिक समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी राम का चरित्र आज भी हमें शारीरिक विकास के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। यह एक तथ्य है कि शरीर के विकास के साथ मन और मन के साथ चरित्र का विकास हुआ करता है। राम का चरित्र इस तथ्य को पूर्ण उजागर करने वाला और राष्ट्रीय शक्ति के लिए एक सशक्त आदर्श उपस्थित करने वाला है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल, सुबोध, विषय के अनुरूप भाषा।

(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली।

(३) **अन्य**–चरित्र के आदर्श के साथ शरीर तथा मन दोनों का विकास आवश्यक है।

(१०)

गुणों के प्रति इस प्रकार की जागरूक निष्ठा हमें गुप्तकाल के वैयक्तिक नामों तक में दिखायी पड़ती है। पुरातत्व की खुदायी में प्राप्त गुप्तकालीन मिट्टी की मोहरों पर पहली बार धृतिशर्मा, सत्यशर्मा आदि के नाम प्राप्त होते हैं। (चरित्र के प्रति जब राष्ट्र इस प्रकार सजग हो उठता है तभी उसमें मनुष्योचित शिष्टता व्यवहार बुद्धि और सुख, शान्ति एवं न्याय की भावनाओं का जन्म होता है । इस प्रकार की जागरूकता को उत्पन्न करने का सबसे बड़ा श्रेय महापुरुष को ही होता है जो अपने चरित्र की साधना से उस युग के लिए पथ प्रदीप बन जाता है और उत्थान के लिए बार-बार राष्ट्रीय महाप्रजाओं का आमन्त्रण करता है।)

(पृष्ठ-५२)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल** लिखित **'चरित्र का मानदण्ड'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने चरित्र के प्रति जागरूकता को परमा‍़ . बताते हुए कहा है–

व्याख्या–गुप्तकाल में चरित्र के प्रति जागरूकता थी। गुप्तकाल में की गरं खुदाई से प्राप्त मिट्टी की मोहरों पर धृति शर्मा, सत्य शर्मा आदि के नामों से यह अनुमान होता है कि चरित्र के प्रति जागरूकता व्यक्तिगत नामों तक थी।

लेखक डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल कहते हैं कि जब किसी राष्ट्र में इस प्रकार की चेतनता आती है, तब शिष्टता, व्यवहार, बुद्धि, सुख-शान्ति एवम् न्याय की भावना का जन्म होता है। महापुरुष अपने उत्तम चरित्र द्वारा मार्ग दर्शक दीप बनकर नागरिकों के चरित्र में सुधार लाता है। नागरिक उत्तम चरित्र बनकर राष्ट्रीय उत्थान में योग देने वाले बन जाते हैं। राष्ट्र उत्थान के मार्ग पर बढ़ने लगता है। इस प्रकार की जागरूकता तथा राष्ट्रीय उत्थान का श्रेय महापुरुष को ही प्राप्त होता है जो सामाजिक तथा राष्ट्रीय सजगता का प्रयत्न करता है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल, प्रवाह, तथा प्रभावपूर्ण भाषा।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–महापुरुष ही राष्ट्र को जागरूक बनाता है।

६ | दक्षिण गंगा : गोदावरी (काका कालेलकर)

● ***गागर में सागर***

निबन्ध–यात्रा-वृत्त।

लेखक–काका कालेलकर। **जन्म**–दिसम्बर १८८५। **स्थान**–सतारा (महाराष्ट्र)। **मृत्यु**–सन् १९८१। **भाषा ज्ञान**–मराठी, हिन्दी, बंगला, गुजराती, अंग्रेजी। **सेवा**–गुजरात विद्यापीठ के उपकुलपति।

रचनाएँ–आत्म चरित्र–(१) स्मरण-यात्रा। (२) धर्मोदय। **यात्रावृत्त**–(१) हिमालय प्रवास, (२) सूर्योदय का देश, (३) उस पार के पड़ौसी (४) लोक माता।

अन्य–(१) बापू की झाँकियाँ। (२) जीवन लीला (३) जीवन का काव्य (४) उत्तर की दीवारें आदि।

दक्षिण गंगा : गोदावरी–गोदावरी दक्षिण की गंगा है जो दक्षिणी भाग को धन-धान्य से पूरित करती है। गोदावरी भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। इसके पवित्र जल का पान श्रीराम ने किया था। लक्ष्मण और सीता ने भी किया था। शूरवीर उत्पन्न हुए और ईश भक्त भी। पूर्वजों की अधिष्ठाती है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर/का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए

प्रश्न १. गोदावरी को दक्षिण गंगा क्यों कहा गया है?

(क) दक्षिण दिशा में होने के कारण

(ख) अनुकूल प्रवाह के कारण

(ग) पवित्रता के कारण

(घ) शीतलता के कारण। **उत्तर**–(क) दक्षिण दिशा में होने के कारण।

प्रश्न २. दक्षिण के उन्नत प्रदेश को समृद्ध करती है–

(क) सिन्धु और ब्रह्मपुत्र (ख) नर्मदा और ताप्ती

(ग) गंगा और यमुना (घ) कृष्णा और गोदावरी।

उत्तर–(घ) कृष्णा और गोदावरी।

प्रश्न ३. छोड़े-बड़े जहाज नदी में लगते थे–

(क) बच्चों जैसे (ख) भँवरों जैसे

(ग) शिखर जैसे (घ) प्रासाद जैसे। ***उत्तर***–(क) बच्चों जैसे।

प्रश्न ४. गोदावरी नदी के प्रवाह की तुलना किससे की गयी है?

(क) विविध रंगी बादलों वाले अनन्त आकाश से

(ख) चंचल कमलों के बीच निस्तब्ध बगुलों से

(ग) विपत्तियों में से विजय के साथ पार हुए देश से

(घ) वैदिक प्रभात की सौम्य सुन्दरता से।

उत्तर–(घ) वैदिक प्रभात की सौम्य सुन्दरता से।

प्रश्न ५. विक्रमशाली महाप्रजाओं का पोषण करने वाली नदियाँ हैं–

(क) गंगा और यमुना (ख) सिन्धु और ब्रह्मपुत्र

(ग) कृष्णा और गोदावरी (घ) नर्मदा और ताप्ती।

उत्तर–(ग) कृष्णा और गोदावरी।

प्रश्न ६. सलिल-समृद्ध तथा इतिहास-समृद्ध है–

(क) सिन्धु (ख) नर्मदा

(ग) गोदावरी (घ) ताप्ती। ***उत्तर***–(ग) गोदावरी।

प्रश्न ७. गोदावरी का इतिहास शुरू होता है–

(क) सहनवीर रामचन्द्र और दुःख मूर्ति सीता माता के वृतान्त से

(ख) त्रयम्बक गाँव से

(ग) ब्रह्मगिरि से

(घ) महाराष्ट्र की संस्कृति से।

उत्तर–(क) सहनवीर रामचन्द्र और दुःखमूर्ति सीता माता के वृतान्त से।

प्रश्न ८. महाराष्ट्र की भयानक उजाड़ से रक्षा कर रहा है–

(क) राम का वरदान (ख) साधु-सन्तों की मंगल वाणी

(ग) लक्ष्मण का आशीर्वाद (घ) राजाओं का प्रयास

उत्तर–(ख) साधु-सन्तों की मंगल वाणी।

प्रश्न ९. गोदावरी की शोभा कहाँ अनोखी है–

(क) नासिक के पास (ख) बैजवाड़े के पास

(ग) राजमहेन्द्री के पास (घ) भद्राचलम के पास।

उत्तर–(ग) राजमहेन्द्री के पास।

प्रश्न १०. लेखक ने कृष्णमाता के दर्शन कहाँ किये जिनसे उन्हें गर्व का अनुभव हुआ–

(क) त्रयम्बक में (ख) बैजवाड़ा में

(ग) नासिक में (घ) गुजरात में। ***उत्तर***–(ख) बैजवाड़ा में।

प्रश्न ११. सफेद बादलों को लेखक ने कैसा बताया है–

(क) झरने जैसा (ख) पहाड़ जैसा

(ग) ऋषियों जैसा (घ) धूप जैसा। ***उत्तर***–(ग) ऋषियों जैसा।

प्रश्न १२. माता की गोद में चाहे जैसे कब नाचा जा सकता है–

(क) माता के दुलार पर

(ख) माता के हँसमुखपन पर

(ग) माता के स्वभाव से परिचित होने पर

(घ) माता के सौम्य स्वभाव पर।

उत्तर–(ग) माता के स्वभाव से परिचित होने पर।

प्रश्न १३. संस्कृति के उपासक भारतवासी इसी स्थान पर गंगाजल के कलश आधे गोदा में उड़ेलते हैं और फिर गोदा के पानी से उन्हें भरकर ले जाते हैं।" लेखक की दृष्टि में यह सब–

(क) अन्ध विश्वास है (ख) भैंडापन है

(ग) भव्य विधि है (घ) श्रद्धा भाव है।

उत्तर–(ग) काव्य विधि है।

प्रश्न १४. गोदावरी को लेखक ने कैसी माता माना है–

(क) स्नेहमयी (ख) धीरोदत्त

(ग) कठोर (घ) सुन्दर। उत्तर–(क) धीरोदात्त।

प्रश्न १५. "राजामहेन्द्री के पास की गोदावरी की शोभा कुछ अनोखी ही थी। इस स्थान पर मैंने जितना भव्य काव्य का अनुभव किया है, उतना शायद ही कहीं किया होगा।" काका कालेलकर के इस कथन के पीछे उनके मन की किस भावना का परिचय मिलता है? (माध्य० शिक्षा बोर्ड० १९९३)

(क) प्रकृति सौन्दर्य (ख) भक्ति

(ग) विश्वास (घ) आस्था। उत्तर–(क) प्रकृति सौन्दर्य।

सउत्तर अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. "वह जितनी सलिल-समृद्ध है उतनी है इतिहास-समृद्ध भी।" गोदावरी नदी के लिए ऐसा क्यों कहा गया है।

उत्तर–जल की अधिकता के कारण गोदावरी को सलिल समृद्ध तथा प्राचीन ऐतिहासिक नदी होने के कारण इतिहास समृद्ध कहा गया है।

प्रश्न २. लेखक ने महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानियाँ किन्हें कहा है?

उत्तर–लेखक ने महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानियाँ वाई सतारा जो कृष्णा के किनारे है और नासिक पैठण को कहा है जो गोदावरी के किनारे है।

प्रश्न ३. मिस्र देश की संस्कृति की माता किसे कहा गया है?

उत्तर–मिस्र देश की संस्कृति की माता नील नदी को कहा गया है।

प्रश्न ४. श्री रामचन्द्रजी के अत्यन्त सुख के दिन इस गोदावरी के तट पर ही बीते थे और जीवन का दारुण आघात भी उन्हें यहीं सहना पड़ा था।" यह कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–श्रीरामचन्द्र जी पंचवटी में जानकी जी के साथ सुख-पूर्वक रहे थे और गोदावरी के तट पर ही पंचवटी से जानकी जी का हरण हुआ जिसका दारुण दुःख उन्हें सहना पड़ा था।

प्रश्न ५. गोदावरी को धीरोदात्त माता क्यों कहा गया है?

उत्तर–गोदावरी को उसके सुन्दर दृश्यों तथा समुद्र में मिलते समय भी उसमें उतावलापन न होने के कारण ही धीरोदात्त माता कहा गया है।

प्रश्न ६. "रावण-राज्य" और "राम-राज्य" से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर–रावण राज्य से लेखक का तात्पर्य दुष्ट शक्तियों का राज्य और राम-राज्य से तात्पर्य स्वराज्य से है जिसके बल पर दैवी राज्य सम्भव है।

प्रश्न ७. 'तेरे नीर के एक बिन्दु का सेवन भी व्यर्थ नहीं जायेगा।" इस कथन के पीछे लेखक की क्या भावना है?

उत्तर–तेरे नीर के एक बिन्दु का सेवन भी व्यर्थ नहीं जायेगा कथन के पीछे लेखक की आशावादिता है।

प्रश्न ८. राजमहेन्द्री के पास की गोदावरी की शोभा को अनोखी क्यों कहा गया है?

उत्तर–लेखक ने राजमहेन्द्री के पास की गोदावरी की शोभा को भव्य काव्यात्मक अनुभव के आधार पर अनोखी कहा है।

प्रश्न ९. साधु-सन्त सर्वत्र किस उद्देश्य से विचरते हैं?

उत्तर–साधु सन्त समता की स्थापना चाहते हैं वे जीवन की विषमता को भुला देना चाहते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही वे सर्वत्र विचरते हैं।

प्रश्न १०. नासिक (पंचवटी) पहुँचने पर लेखक ने क्या अनुभव किया?

उत्तर–नासिक (पंचवटी) पहुँचने पर लेखक ने अनुभव किया कि पंचवटी आज भी उदास है और 'सीता-सीता' पुकार रही है।

प्रश्न ११. प्रस्तुत पाठ में नदी के लिए 'सरिता' और जल के लिए 'नीर' शब्दों का प्रयोग हुआ है। आप नदी और जल के अन्य तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर–**तीन-तीन पर्यायवाची शब्द**–

नदी–रजवती, तरंगिनी, तटनी।

जल–वारि, सलिल, तोय।

प्रश्न १२. महाराष्ट्र और आन्ध्र कृष्णा और गोदावरी का ऋणी क्यों है?

उत्तर–कृष्णा और गोदावरी नदियाँ महाराष्ट्र और आन्ध्र में बह रही है। इन नदियों ने यहाँ के भूतकाल को बनाया और भविष्य की महान् आशाओं की प्रेरक हैं। अतः महाराष्ट्र और आन्ध्र कृष्णा और गोदावरी का ऋणी है।

प्रश्न १३. लेखक ने गोदावरी को किस-किस की माता कहा है?

उत्तर–लेखक ने गोदावरी को राम, सीता, लक्ष्मण तथा जटायु को स्तन्यपान कराने वाली माता कहा है। शूरवीर, तत्त्वचिन्तक, सन्त, राजनीतिज्ञ, देशभक्त तथा ईश भक्तों की भी माता कहा है।

प्रश्न १४. गोदावरी का उद्‌गम स्थान कहाँ हैं?

उत्तर–गोदावरी का उद्‌गम स्थान त्रयम्बक के निकट पहाड़ की एक बड़ी दीवार है।

प्रश्न १५. लेखक ने महाराष्ट्र की सच्ची सांस्कृतिक राजधानियाँ किसे माना है?

उत्तर–लेखक ने महाराष्ट्र की सच्ची सांस्कृतिक राजधानियाँ कृष्णा के किनारे वाई सतारा और गोदावरी के किनारे नासिक पैठण को माना है।

प्रश्न १६. नासिक (पंचवटी) किस कारण उजाड़ प्रदेश नहीं हुआ है?

उत्तर–नासिक (पंचवटी) महाराष्ट्र के साधु सन्तों की मंगलवाणी के कारण उजाड़ प्रदेश नहीं हुआ है।

प्रश्न १७. गोदावरी के तट पर भक्त लोग क्या करते हैं?

उत्तर–गोदावरी के तट पर भक्त लोग नदी की लहरों से मन्द मन्दिर के घण्टों की स्वर लहरी को एक तट से दूसरे तट तक पहुँचाया करते हैं।

प्रश्न १८. गोदावरी के जल की कलिमा में वृद्धि का क्या कारण था?

उत्तर–गोदावरी के जल की कालिमा में वृद्धि का यह कारण था कि जल तो धूलि-धूसरित था ही, आकाश में बादल घिर आये थे और धूप नहीं थी।

प्रश्न १९. गोदावरी ने दक्षिण को क्या दिया है?

उत्तर–गोदावरी ने दक्षिण को अपने जल से सींचकर, धन-धान्य से पूर्ण किया है।

प्रश्न २०. काका कालेलकर की भाषा तथा शैली की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–काका कालेलकर की भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। शैली में व्यंग्य, उपदेश, गम्भीरता तथा पाण्डित्य के दर्शन होते है।

लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "गोदावरी की सम्पूर्ण कला भद्राचलम से ही देखी जा सकती है।" इस कला का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर–**१. गोदावरी**–गोदावरी को दक्षिण की गंगा कहा जाता है। यह गोदावरी इतिहास समृद्ध है। भूतकालीन इतिहास का गौरवशाली पृष्ठ है और सृष्टि का अनुपम सौन्दर्य है। महाराष्ट्र की समृद्धि का कारण हैं।

२. गोदावरी की कला–गोदावरी के सौन्दर्य की विविधता तथा भव्यता दूर दूर तक व्याप्त है। उसकी कला के दर्शन हमें भद्राचलम से ही होने लग जाते हैं।

गोदावरी का उद्‌गम स्थान खायी है जो मात्र दो गज है। यह नदी ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखरों के मध्य प्रवाहित होती हुई अपना मार्ग बनाती है। इसका पाट दो किलोमीटर तक चौड़ा है। भारी गर्जना के साथ जब वह तीव्र गति से आगे बढ़ती है तब संसार को विस्मय में डाल देती है।

३. गोदावरी का रूप–गोदावरी का पूर पन्द्रह मीटर ऊँचा है। घोड़ापूर तथा हाथीपूर की बातें सुनकर हमें ऊँचाई पर विश्वास नहीं होता किन्तु गोदावरी के प्रवाह में यह सब सम्भव है। यह अत्यधिक ऊँचाई के पूर वाली नदी है।

गोदावरी का निकास स्थान सँकरी खाई है जिसका पिछला भाग पानी के लिए सपाट बना हुआ है। इस रूप को देखकर अर्घ्य देने की बात याद आती है। जिस प्रकार अर्घ्य देते समय अंजलि की एक छोटी-सी नाली बन जाती है, उसी प्रकार खाई के पिछले भाग में भी एक नाली बन जाती है जो भयंकर मालूम पड़ती है।

४. साहसी नाविक–पानी का पृष्ठ भाग भयानक दिखायी देता है किन्तु ऐसे साहसी नाविक भी वहाँ रहते हैं जो इस भयंकर नाली में से अपनी नाव ले जाने का साहस रखते हैं। ये नाविक पानी की ऊँची-ऊँची दीवारों को नाव के वेग से दौड़ाते हुए दिखायी देते हैं और मनुष्य के मन में विभिन्न विचारों को जन्म देते है।

प्रश्न २. "नयी-नयी आशाएँ लेकर मैं तेरे दर्शन के लिए आया हूँ।" लेखक की ये आशाएँ क्या हो सकती हैं?

उत्तर–**१. लेखक**–काका कालेलकर "दक्षिण गंगा : गोदावरी" के लेखक हैं। प्रस्तुत निबन्ध लेखक की यात्रा का वृतान्त है जिसमें उन्होंने गोदावरी को दक्षिण की गंगा बताते हुए उसके उद्‌गम तथा विशाल प्रवाह का भावपूर्ण वर्णन किया है।

२. लेखक के विचार–लेखक काका कालेलकर के विचारों तथा सिद्धान्तों पर महात्मा गाँधी तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों की छाप थी। कालेलकर जी महात्मा गाँधी तथा टैगोर के सान्निध्य में रहे थे। उन्होंने हिन्दी के प्रचार और प्रसार का व्रत ही नहीं लिया था अपितु हिन्दी साहित्य की सेवा में अपना समय भी दिया था।

३. यात्रावृत्त का समय–काका कालेलकर ने जिस समय 'दक्षिण गंगा : गोदावरी' यात्रा वृतान्त लिखा था वह समय भारत की पराधीनता का था। भारत में ब्रिटिश शासन था। देश भक्त भारतीय, भारत की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की भी बलि दे रहे थे। उनके मन में देश की स्वतन्त्रता के प्रति लगन थी, उत्साह था।

४. लेखक की आशाएँ (अ) स्वतन्त्रता–लेखक काका कालेलकर गोदावरी दर्शन के लिए नवीन आशाएँ संजोये हुए दक्षिण की इस गंगा की ओर जब गये तो सर्वप्रथम उनके मन में आशा यह जाग्रत हुई कि भारत माँ की परतन्त्रता की बेड़ियाँ कटनी चाहिए। भारत को स्वाधीन होना चाहिए।

(ब) देशोन्नति–लेखक के मन में दूसरी आशा देशोन्नति की उत्पन्न हुई। वह विचार करने लगे कि भारत देश की प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति होनी चाहिए। आर्थिक सम्पन्नता से देश की समृद्धि सम्भव है। अतः देश धन-धान्य से पूर्ण होना चाहिए।

(स) सुख-शान्ति–काका कालेलकर ने देश में सुख तथा शान्ति की भी कामना की। उन्हें आशा थी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से देशवासियों का जीवन सुखी बन जायेगा। मन की अशान्ति दूर होगी। देश में शान्त वातावरण होगा। लेखकों को हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो सकेगा।

प्रश्न ३. "किन्तु मेरी आशाएँ तृप्त नहीं हुई हैं।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर–१. लेखक–काका कालेलकर सर्वोदयी विचार धारा के लेखक थे। मानव मूल्यों की स्थापना तथा हिन्दी का उत्थान ही उनके जीवन का लक्ष्य था।

२. लेखक की आशाएँ–लेखक ने देश की स्वाधीनता, समृद्धि, सुख-शान्ति की स्थापना की आशाएँ लेकर गोदावरी के दर्शन तथा स्नानार्थ यात्रा की। मन में कुछ सन्तोष भी हुआ। दर्शन से वह कृतार्थ भी हुए किन्तु पूर्ण तृप्ति नहीं हुई।

३. अतृप्त आशाएँ–लेखक गोदावरी के दर्शन से तो कृतार्थ हो गये किन्तु उनकी आशाओं को तृप्ति नहीं मिली। उन्हें आशा थी कि देश की स्वतन्त्रता से अत्याचारों की समाप्ति हो जायेगी। दुष्टों का अन्त हो जायेगा। राम राज्य की स्थापना होगी। किन्तु देश में अत्याचारों में वृद्धि हो रही है। दुष्टों का बोलबाला है। वे निर्धन, असहाय, दुर्बलों को सता रहे हैं। त्रेता युग में केवल एक ही रावण था किन्तु अब कलियुग में तो चारों ओर रावण ही रावण दिखायी दे रहे हैं।

लेखक गोदावरी माँ से प्रार्थना करता है कि वह कृपा करके मन से दुष्टता की छाप को मिटा दे। देश में व्याप्त अत्याचारों का अन्त कर दें।

काका कालेलकर के मन में गोदावरी के जल के प्रति इतनी श्रद्धा है कि वह गोदावरी के जल में अमोघ शक्ति स्वीकार करते हुए उसकी एक बूँद के सेवन से ही सब कार्यों में सफलता मानते हैं।

प्रश्न ४. निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लेखक की शैलीगत विशेषताएँ बताइये–

(क) चित्रात्मकता, (ख) भावप्रवणता, (ग) प्राकृतिक दृश्य, (घ) तत्सम शब्दावली

उत्तर–लेखक–काका कालेलकर ने अपने यात्रा-वृत्त में 'दक्षिण गंगा : गोदावरी' लिखकर अहिन्दी क्षेत्र के राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रेमियों पर विशेष कृपा की है। कालेलकर का पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर था जिनका जन्म दिसम्बर १८८५ ई० में महाराष्ट्र के सतारा नगर में हुआ था। कालेलकर जी कई भाषाओं के विद्वान् थे, किन्तु गुजराती तथा हिन्दी ही उनके लेखन के प्रमुख विषय रहे।

शैलीगत विशेषताएँ–

(क) चित्रात्मकता–काका कालेलकर के निबन्धों में चित्रात्मकता के दर्शन होते हैं। यात्रा-वृत्त में उन्होंने विशेष स्थलों की यात्रा के अनुभवों का चित्रण किया है जो अत्यन्त सरस और

सरल शैली में लिखे गये है। इस शैली में लिखे उनके यात्रावृत्तों को पढ़ने पर विषय, सम्पूर्ण घटनाएँ तथा व्यक्ति का चरित्र पाठक के सम्मुख प्रस्तुत हो गया है। "दक्षिण गंगा : गोदावरी" यात्रा वृत्त में गोदावरी नदी, उसका जल, तपस्वियों की भक्ति-भावना, संकरी खाई, वहाँ का सूर्योदय आदि का चित्र पूर्णतः नेत्रों के सम्मुख नृत्य करता प्रतीत होता है। गोदावरी के किनारे जाये बिना ही गोदावरी तट की छटा का आनन्द प्राप्त होने लगता है।

(ख) **भाव प्रवणता**–काका कालेलकर के निबन्धों में भावात्मकता के साथ उन्हें प्रकट करने में पूर्णता के दर्शन होते है। उन्होंने अपने भावों को अत्यन्त ही कुशलता के साथ स्पष्ट किया है। इस विशेषता के आधार पर उनके यात्रावृत्त अत्यन्त प्रेरणादायी बन गये है।

(ग) **प्राकृतिक दृश्य**–प्राकृतिक दृश्यों का काका कालेलकर ने अत्यन्त सजीव तथा सुन्दर चित्रण किया है। गोदावरी के प्रवाह का वर्णन करते हुए काका कालेलकर जी लिखते हैं–

"विपत्तियों में से विजय के साथ पार हुआ देश जैसे वैभव की नयी-नयी छटाएँ दिखाता जाता है और चारों ओर समृद्धि फैलाता जाता है वैसे हीं गोदावरी का प्रवाह पहाड़ों से निकलकर अपने गौरव के साथ आता हुआ दिखायी देता है।"

(घ) **तत्सम शब्दावली**–संस्कृत से हिन्दी में प्रयोग किये जाने वाले मूल शब्द तत्सम शब्द कहलाते है। काका कालेलकर ने तत्सम शब्दावली पर विशेष बल दिया है। उनके निबन्धों में तत्सम शब्दों की अधिकता है। इससे लेखक की शैली में साहित्यकता, सरलता तथा सुन्दरता के दर्शन होते हैं। शैली प्रेरणादायी बन गयी है तथा पाठकों पर अपना प्रभाव छोड़ने में समर्थ है।

प्रश्न ६. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) नदी का किनारा यानी मानवी कृतज्ञता का अखण्ड उत्सव।

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्ति **काका कालेलकर** लिखित **दक्षिण गंगा : गोदावरी** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग–लेखक नदी के तट के विषय में कहता है–

आशय–गोदावरी के तट को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ मनुष्य की कृतज्ञता का भाव ऊँचे-ऊँचे प्रासादों के रूप में दिखायी दे रहा है। तट पर उपासना में लीन भक्तों की भीड़ देखकर ऐसा लगता है जैसे यहाँ कोई उत्सव हो रहा है जो कभी टूट ही नहीं सकता।

(ख) संस्कृति के उपासक भारतवासी इसी स्थान पर गंगाजल के कलश आधे गोदा में उड़ेलते हैं और फिर गोदा के पानी से उन्हें भरकर ले जाते हैं कितनी भव्य विधि है। कितना पवित्र भाव प्रधान काव्य है।

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ **काका कालेलकर** लिखित **"दक्षिण गंगा : गोदावरी"** निबन्ध से उदधृत है।

प्रसंग–गोदावरी में स्नान के लिए आये हुए भक्त स्नानार्थियों के क्रिया कलापों का वर्णन करते हुए लेखक कहता है–

आशय–गोदावरी में स्नान के लिए दूर-दूर से धर्म प्रेमी आते हैं। वे स्नान के पश्चात् गंगाजल को अपने कलश से गोदावरी में उड़ेलते हैं और जाते समय अपने कलश को गोदावरी के पवित्र जल से भरकर ले जाते हैं। उनकी यह विधि किसी पवित्र भावना युक्त काव्य से किसी भी दशा में कम नहीं है।

प्रश्न ७. दक्षिण गंगा : गोदावरी के प्रवाह एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अपनी कल्पना के आधार पर कीजिए। **(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड १९९३)**

उत्तर– १. भारत की नदियाँ–गंगा उत्तर भारत की प्रमुख तथा पवित्र नदी है जिसके जल को अमृत के समान माना गया है। सिन्धु, ब्रह्मपुत्र आदि नदियों का स्थान उनकी प्राकृतिक छटाओं के कारण प्रमुख है।

गोदावरी को दक्षिण की गंगा माना जाता है। पवित्रता तथा प्राकृतिक शोभा में वह अनुपम । प्राकृतिक स्थलों से प्रवाहित होती हुई अन्त में उसका समुद्र से मिलन होता है।

२. **गोदावरी का उद्‌गम स्थल**–त्रयम्बक पर्वत गोदावरी का उद्‌गम स्थल है। त्रयम्बक पर्वत निकलकर गोदावरी उच्च-शिखर पर्वतों से अपना मार्ग बनाती हुई आगे बढ़ती है। पहाड़ी लानों पर जब यह गोदावरी प्रवाहित होती है तब उसके प्रवाह में तीव्रता होती है। उसके ढ़ते प्रवाह को देखते हुए ऐसा लगता है कि गोदावरी को यदि कोई चिन्ता है तो अपने स्तार की है। इसीलिए तो भद्राचल से धवलेश्वर तक उसके प्रवाह में वृद्धि होती दिखायी ती है।

३. **गोदावरी का जल**–गोदावरी की जलधारा अत्यन्त स्वच्छ तथा धवलता लिए हुए रहती । जलधारा को देखकर ऐसा लगता है कि पर्वत की यह शुभ्र चोटी है। जब गोदावरी वनों, तों तथा वृक्षों के निकट से प्रवाहित होती है तो उसकी धवलता पर्वतों पर बहने वाले रूप तो नहीं होती किन्तु उसकी त्याग भावना का पता लगता है। जहाँ होकर यह दक्षिण गंगा वाहित होती है, वह प्रदेश हरा-भरा दिखायी देता है। धन-धान्य से पूर्ण हो जाता है। निर्धनता ी समाप्ति हो जाती है।

४. **गोदावरी की यात्रा**–गोदावरी लगभग बारह सौ किलोमीटर की लम्बी यात्रा करती है। रा-भरा तथा मनोरम स्थल बना देना जैसे उसका स्वभाव बन गया है। अन्त में पूर्वी समुद्र मिलकर उसकी शोभा तथा जल वृद्धि करती है।

सप्रसंग व्याख्याएँ

शब्दार्थ–पृष्ठ-५६– **अत्युक्ति** = अतिशयोक्ति, बढ़ा-चढ़ाकर कहना। **साक्षी** = गवाह, प्रमाण। लिल-समृद्ध = जल से समुद्र। **उद्‌गम** = निकलने का स्थान। **दारुण** = कठोर अप्रहनीय।

पृष्ठ-५७– **आघात** = चोट। **विदीर्ण** = फटना। **भय कम्पित** = भयवश काँपना। खाश्रुओं = दुःख के आँसू। **विमल** = स्वच्छ, साफ। **कषाय** = कसैला। **चौमासा** = वर्षा के चार हीने। **तृण सृष्टि** = घास का उगना। **बिहारने** = देखने। **कातर** = दुःखी।

पृष्ठ-५८– **नाविक** = नाव खेने वाला मल्लाह। **त्यागाय संभृतार्थानाम्** = त्याग के लिए, न के लिए एकत्र करना। **निस्तब्ध** = शान्त। **कालिमा** = कालापन।

पृष्ठ-५९– **अखण्ड** = जो खण्डित न हो, निरन्तर। **प्रासाद** = महल। **कृतज्ञता** = असहान दी। **भव्य** = शानदार। **रव** = शब्द, आवाज। **नाद** = स्वर, आवाज। **सरित्पति** = नदी का पति, मुद्र। **सम्भ्रम** = उतावलापन। **धीरोदात्त** = धैर्यवान् और उदार, वह पात्र जो क्षमावान्, गम्भीर, नयशील तथा दृढ़ प्रतिज्ञ हो। **पताका** = ध्वज, झण्डा। **पुलिन** = किनारा, तट।

(१)

ये नदियाँ भूतकाल के गौरवशाली इतिहास की जितनी साक्षी है उतनी ही भविष्य की हान् आशाओं की प्रेरक भी हैं। इनमें भी गोदावरी का माहात्म्य कुछ अनोखा ही है। वह तनी सलिल-समृद्ध है उतनी ही इतिहास समृद्ध भी। गोपाल कृष्ण के जीवन में जिस तरह र्वत्र विविधता ही विविधता भरी हुई है, एक-सा उत्कर्ष दिखायी देता है, उसी तरह गोदावरी अति दीर्घ प्रवाह के किनारे सृष्टि-सौन्दर्य की विविधता और विपुलता भरी पड़ी है।

(पृष्ठ-५६)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश काका कालेलकर लिखित 'दक्षिण गंगा : गोदावरी' निबन्ध से धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने गोदावरी को अधिक महत्वपूर्ण बताते हुए लिखा है–

व्याख्या–लेखक के विचार से कृष्णा तथा गोदावरी का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। देश के उत्तम भविष्य की आशाएँ भी इन नदियों पर आधारित रही हैं। इन नदियों ने आशाओं की प्रेरणा दी है।

काका कालेलकर गोदावरी को कृष्णा नदी की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहते हैं कि गोदावरी हर दृष्टि से अनूठी है। वह जल से तो समृद्ध है ही उसका ऐतिहासिक महत्त्व भी कम नहीं है।

गोपाल कृष्ण का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लेखक कहता है कि गोदावरी में भी अनेकरूपता है। जिस प्रकार कृष्ण के जीवन में सर्वत्र अनेकरूपता के दर्शन होते हैं, उसी प्रकार गोदावरी भी अनेकों रूप लेकर हमारे सम्मुख आती है। गोदावरी के प्रवाह में विशालता है। उसके तट पर विश्व सौन्दर्य की झलक है जो विविध रूपों में दृष्टिगोचर होती है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल तथा सुबोध भाषा।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**–गोदावरी तट के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

(२)

राजपाट छोड़ते समय राम को दुःख नहीं हुआ किन्तु गोदावरी के किनारे सीता और लक्ष्मण के साथ मनाये हुए आनन्द का अन्त होते ही राम का एकदम विदीर्ण हो गया। बाघ-भेड़ियों के अभाव में निर्भय बने हुए हरिण आर्य रामचन्द्र की दुःखोन्मत्त आँखें देखकर दूर भाग गये होंगे। सीता की खोज में निकले देवर लक्ष्मण की दहाड़ें सुनकर बड़े-बड़े हाथी भी भय कम्पित हो गये होंगे और पशु-पक्षियों के दुःखाश्रुओं से गोदावरी का विमल जल भी कषाय हो गया होगा।
पृष्ठ-५७

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **काका कालेलकर** लिखित **"दक्षिण गंगा : गोदावरी"** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक काका कालेलकर के दुःख-सुख को गोदावरी से जोड़ते हुए कह रहे हैं।

व्याख्या–श्रीरामचन्द्रजी ने अपने सुख के दिन गोदावरी पर ही व्यतीत किए थे। सीताजी के विछोह का दारुण दुःख भी राम को इसी गोदावरी तट पर ही सहन करना पड़ा। जो क्षण लक्ष्मण और सीता के साथ राम ने यहाँ आनन्द के साथ व्यतीत किये, सीताजी के अपहरण के पश्चात् उनका अन्त हो गया। राम के सम्मुख अब हृदय-विदीर्ण करने वाली, महान् कष्टकारी सीता के अपहरण की घटना थी जिसने राम को कठोर आघात पहुँचाया था। दुःख की झलक राम के नेत्रों से स्पष्ट दिखायी दे रही थी। जो हिरण निर्भीकता से वन में विचरण करते थे, वे श्रीराम के दुःखी किन्तु भयावह नेत्रों को देखकर दूर भागने लगे थे।

माँ सीता के अपहरण पर दहाड़ें मारकर रोने वाले लक्ष्मण की आवाज से भयभीत हाथी भी काँप उठे होंगे।

लेखक ने कल्पना की है कि पशु-पक्षी इतने दुःखी हुए होंगे कि आँसुओं से गोदावरी का जल भी कसैला हो गया होगा।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा।

(२) **शैली**–परिचयात्मक शैली।

(३) **अन्य**–सीताजी के वियोग का प्रभाव वर्णित है।

(३)

सरित्पति से जब सरिता मिलने जाती है तो उसे सम्भ्रम तो होता ही है। किन्तु गोदावरी तो धीरोदात्त माता है। उसका सम्भ्रम भी उदात्त रूप में ही व्यक्त हो सकता है। उस ओर के

ीप अलग ही किस्म के थे। उनमें वनश्री की शोभा पूरी-पूरी खिली हुई थी। बहते पानी के ामने टक्कर लेने वाले इन द्वीपों में किसी ने ऊँचे प्रासाद बनाये होते तो शायद वे दूर से ी दीख पड़ते। प्रकृति ने तो केवल ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की विजय पताकाएँ खड़ी कर रखी थीं ौर बायीं ओर राजमहेन्द्री और धवलेश्वर की सुखी बस्ती आनन्द मना रही थी। ऐसे विरल श्य से तृप्त होने के पहले ही नदी के दाँये किनारे पर उन्मत्तता के साथ बहते हुए कास की फेद कलगियों का स्थावर प्रवाह दूर-दूर तक चलता हुआ नजर आया। (पृष्ठ-५९)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **काका कालेलकर** लिखित **'दक्षिण गंगा गोदावरी'** निबन्ध से वतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक गोदावरी के पूर्व दिशा की शोभा का वर्णन करते हुए कह ा है–

व्याख्या–गोदावरी सचमुच ही क्षमावान् तथा गम्भीर माता के समान है। वह समुद्र में लते वक्त भी तीव्रता धारण नहीं करती। उसमें उतावलेपन का लेश भी नहीं होता। अन्यथा मुद्र से मिलते समय नदियों में उतावलापन होना चाहिए। किन्तु उसमें नहीं है। उसमें तो म्भीरता की झलक है।

लेखक गोदावरी की पूर्व दिशा का वर्णन करते हुए कहता है कि इस ओर के द्वीप भी छ भिन्न प्रकार के थे। इन द्वीपों में सुन्दर वन थे। ऊँचे-ऊँचे वृक्ष थे जो दूर से ही दृष्टिगोचर ते थे। इन वृक्षों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे ये विजय पताकाएँ हैं।

राजमहेन्द्री ने बाँयी ओर की धवलेश्वर बस्ती का वर्णन करते हुए कालेलकर जी ने लिखा कि इस बस्ती को किसी प्रकार का कोई दुःख नहीं था। यह बस्ती सुखी थी और आनन्द न थी। इन सुनहरे दृश्यों से पूर्ण तृप्त होने से पूर्व ही गोदावरी की दाहिनी ओर कांस की त कलंगियों का प्रवाह देखने को प्राप्त हुआ। ऐसा लगता था कि इस प्रवाह में स्थिरता । नदी के जल में तीव्रता है किन्तु ऐसा लगता था कि लहरें है ही नहीं।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**–गोदावरी तथा उसके तट का सुन्दर वर्णन है।

(४)

माता गोदावरी, राम-लक्ष्मण सीता से लेकर वृद्ध जटायु तक सबको तूने स्तन्यपान कराया । तेरे किनारे शूरवीर भी पैदा हुआ है, और तत्त्वचिन्तक भी। सन्त भी पैदा हुये है और जनीतिज्ञ भी। देशभक्त भी पैदा हुए है और ईशभक्त भी। सभी की तू माता है। मेरे पूर्वजों ी अधिष्ठाती है। नयी-नयी आशाएँ लेकर मैं तेरे दर्शन के लिए आया हूँ। दर्शन से तो तार्थ हो गया हूँ। किन्तु मेरी आशाएँ तृप्त नहीं हुई हैं। जिस प्रकार तेरे किनारे रामचन्द्र ने रावण के नाश का संकल्प किया था, वैसा ही संकल्प मैं कब से अपने मन में लिये हूँ। ी कृपा होगी तो हृदय में से तथा देश में से रावण का राज्य मिट जायेगा, रामराज्य की ापना होते मैं देखूँगा और फिर तेरे दर्शन के लिए आऊँगा। (पृष्ठ-६०)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **काका कालेलकर** लिखित **"दक्षिण गंगा : गोदावरी"** निबन्ध से धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक रामराज्य की स्थापना के स्वप्न सजोये हुए रावण राज्य की ाप्ति की प्रार्थना करता है।

व्याख्या–गोदावरी को सबकी माता बताते हुए लेखक कहता है कि गोदावरी ने तो सबको ान भाव से जल पान कराया है। राम को भी जल पिलाया और लक्ष्मण-सीता को भी। ायु के साथ भी किसी प्रकार का असमान व्यवहार नहीं किया। इसे भी राम-लक्ष्मण, सीता समान जल पान कराया।

गोदावरी का जल शूरवीरों ने पिया। सन्त और राजनीतिज्ञ भी इस जल का पान करते रहे। देशभक्त और ईश्वर भक्त भी इस जल का पान करके बड़े हुए। गोदावरी ने सबके साथ माता सदृश व्यवहार किया। सबको एक निगाह से देखा।

लेखक गोदावरी को अत्यन्त पूज्यनीय रूप में देखते हुए उसे पूर्वजों को स्थापित करने वाली अध्यक्षा मानता है और नवीन आशाओं की पूर्ति की कामना करता है। गोदावरी के दर्शन से अपने आपको धन्य मानते हुए लेखक अपनी इच्छा आकांक्षा प्रकट करते हुए कहता है कि मैं तेरे दर्शन के लिए एक बार पुनः आना चाहता हूँ। किन्तु चाहता हूँ कि देश से अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो जाय। जिस प्रकार राम ने गोदावरी के तट पर रावण राज्य समाप्त करने का संकल्प लिया था। उसी प्रकार मैं भी अंग्रेजों के शासन का अन्त और स्वराज्य की स्थापना चाहता हूँ।

लेखक की इच्छा यह भी है कि मन से लोभ, मोह आदि विकारों की समाप्ति हो। ये सब विकार रावण राज्य से कम नहीं है। अतः इन विकारों का अन्त करके मैं तेरे दर्शन के लिए पुनः आऊँगा।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल, सुबोध भाषा।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**–देश-भक्ति का भाव प्रकट हुआ है।

७ लज्जा और ग्लानि (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

● *गागर में सागर*

निबन्ध–मनोवैज्ञानिक।

लेखक–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। **जन्म**–सन् १८८४। **स्थान**–अगोना (बस्ती)। **मृत्यु**–सन् १९४१। **भाषा ज्ञान**–हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी। **सेवा**–हिन्दी शब्द सागर के सहायक सम्पादक। काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक। तत्पश्चात् हिन्दी के विभागाध्यक्ष।

कृतियाँ–**आलोचना ग्रन्थ**–तुलसीदास।

निबन्ध–चिन्तामणि ३ भागों में, विचार वीथी आदि।

साहित्यिक–हिन्दी साहित्य का इतिहास, रस मीमांसा।

भूमिका–भ्रमर-गीत सार तथा जायसी ग्रन्थावली।

लज्जा और ग्लानि–स्वच्छन्दता के विघात का अनुभव **लज्जा** कहलाता है*बुरा भला कह जाने की परवाह न करने वाला निर्लज्ज कहलाता है*अपनी बुराई, मूर्खता, तुच्छता आदि का एकान्त अनुभव करने की वृत्तियों में आयी शिथिलता को ग्लानि कहते हैं*यह अन्तःकरण की शुद्धि का एक विधान है*जिनके अन्तःकरण में उत्तम संस्कार होते हैं, उन्हीं को ग्लानि होती है*बुराई से बचने के मनोविकार–१. ग्लानि, २. लज्जा, ३. भय। सच्चरित्र व्यक्तियों में लज्जा का भाव होता है*स्त्रियों का लज्जा आभूषण है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए।

प्रश्न १. संसार का व्यवहार मुख्यतः किस गुण पर आधारित है।
(क) मनोभावों की परस्पर अनुकूल स्थिति पर
(ख) लज्जा एवं ग्लानि का अनुभव करने पर
(ग) परस्पर सहनशीलता रखने पर
(घ) परस्पर निःस्वार्थ प्रेम पर। **उत्तर**–(क) मनोभावों की परस्पर अनुकूल स्थिति पर।

प्रश्न २. सामान्य व्यवहार में अनिश्चयात्मक वृत्ति कहलाती है–
(क) शंका (ख) आशंका
(ग) पश्चाताप (घ) लज्जा। **उत्तर**–(ख) आशंका।

प्रश्न ३. किसी भी अप्रिय कार्य करने का संकल्प लेने पर तदर्थ बुराई से बचने के लिए सात्विक वृत्ति वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक मनोविकार है–
(क) ग्लानि (ख) धैर्य
(ग) लज्जा (घ) भय। **उत्तर**–(क) ग्लानि।

प्रश्न ४. चित्रकूट में भरत-राम के मिलाप के स्थान पर जब जनक के आने का समाचार पहुँचा, तब कैकेयी के मन में किस भावना का संचरण हुआ?
(मा० शिक्षा बोर्ड० १९९३)
(क) लज्जा (ख) शोक
(ग) ग्लानि (घ) विस्मय। **उत्तर**–(ग) ग्लानि।

प्रश्न ५. जिन्होंने हमारी मूर्खता या तुच्छता का प्रमाण पा चुका है, उनके सामने हम जाते हैं–
(क) धड़ाके के साथ (ख) धड़ाके के साथ नहीं
(ग) निर्भीकता पूर्वक (घ) प्रेमपूर्वक।
उत्तर–(ख) धड़ाके के साथ नहीं।

प्रश्न ६. स्वच्छन्दता के विघात के अनुभव का नाम है–
(क) ग्लानि (ख) लज्जा
(ग) भय (घ) शोक। **उत्तर**–(ख) लज्जा।

प्रश्न ७. लज्जा के कारण–
(क) लोग सिर ऊँचा कर लेते हैं (ख) लोग सिर ऊँचा नहीं करते
(ग) सिर हिलाते हैं (घ) सिर खुजलाते हैं
उत्तर–(ख) लोग सिर ऊँचा नहीं करते।

प्रश्न ८. "कोई बुरा कहे चाहे भला" इसकी परवाह न करके काम करने वाले कहलाते हैं।
(क) बुरे (ख) निर्भीक
(ग) निर्लज्ज (घ) बेपरवाह। **उत्तर**–(ग) निर्लज्ज।

प्रश्न ९. जिसके साथ हमने कोई बुराई की होती है उसे देखकर हमारी क्या दशा होती है–
(क) अधिक चेष्टा करने लगते हैं। (ख) चेष्टाएँ मन्द पड़ जाती हैं
(ग) सिर ऊँचा हो जाता है (घ) मुँह फेर लेते हैं।
उत्तर–(ख) चेष्टाएँ मन्द पड़ जाती हैं।

प्रश्न १०. वन से लौटने पर जब लक्ष्मण कैकयी से मिले तो कैकयी–

(व) हर्षित हुई (ख) दुःखी हुई

(ग) लज्जित हुई (घ) उत्साहित हुई। ***उत्तर–*** (ग) लज्जित हुई

प्रश्न ११. ग्लानि एक विधान है–

(क) तुच्छता का (ख) श्रेष्ठता का

(ग) अन्तःकरण की शुद्धि का (घ) मूर्खता का

उत्तर– (ग) अन्तःकरण की शुद्धि का।

प्रश्न १२. ग्लानि को एक द्वार कहा जा सकता है–

(क) दुःख का (ख) सच्चे सुधार का

(ग) सुख का (घ) छिपाव का

उत्तर– (ख) सच्चे सुधार का।

प्रश्न १३. आशंका एक वृत्ति है–

(क) अनिश्चय की (ख) निश्चय की

(ग) भय की (घ) निर्भीकता की।

उत्तर– (क) अनिश्चय की।

प्रश्न १४. किसी बुरे प्रसंग में यदि निमित्त रूप से भी हमारा नाम आ जाता है तो हमें–

(क) गर्व होता है (ख) प्रसन्नता होती है

(ग) लज्जा होती है (घ) बुराई लगती है

उत्तर– (ग) लज्जा होती है।

प्रश्न १५. दुष्कर्म पर उत्तम कोटि के मनुष्यों को–

(क) दुःख होता है (ख) ग्लानि होती है

(ग) लज्जा होती है (घ) अपमान होता है।

उत्तर– (ख) ग्लानि होती है।

प्रश्न १६. अकारण अपमान पर होने वाली ग्लानि को कहा जा सकता है–

(क) अहंकार (ख) तुच्छता

(ग) बड़प्पन (घ) मर्यादा। ***उत्तर–*** (ख) तुच्छता।

प्रश्न १७. लज्जा का हल्का रूप कहा जाता है–

(क) मर्यादा (ख) संकोच

(ग) भय (घ) आशंका। ***उत्तर–*** (ख) संकोच।

प्रश्न १८. शुक्लजी ने मनोविकारों पर एक निबन्ध संग्रह किया है–

(क) विचार-वीथी (ख) चिन्तामणि

(ग) रस मीमांसा (घ) भ्रमरगीत-सार। ***उत्तर–*** (ख) चिन्तामणि।

सउत्तर अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. लज्जा किसे कहते हैं?

उत्तर– अपने विषय में दूसरों के चित्त में उत्पन्न तुच्छ धारणा की आशंका मात्र से वृत्तियों के संकोच से स्वच्छन्दता के विघात का जो अनुभव होता है उसे लज्जा कहते हैं।

प्रश्न २. ग्लानि किसे कहते हैं?

उत्तर– वृत्तियों की वह शिथिलता, जो अपनी बुराई, तुच्छतादि का एकान्त में अनुभव करने पर आती है, ग्लानि कहते हैं।

प्रश्न ३. समाज के सम्मुख हम अपनी सजीवता के लक्षणों को किस स्थिति में व्यक्त नहीं कर सकते है?

उत्तर–समाज के सम्मुख हम अपनी सजीवता के लक्षणों को उस स्थिति में व्यक्त नहीं कर सकते जब कि हम कोई बुराई करते हैं तथा समाज में अपनी किसी धृष्टता का प्रमाण दे चुके होते हैं।

प्रश्न ४. "ग्लानि" का अनुभव कौन-से व्यक्ति प्रायः अधिक करते हैं?

उत्तर–'ग्लानि' का अनुभव वे व्यक्ति प्रायः अधिक करते हैं जिनके संस्कार सात्विक हैं। अन्तःकरण सत्वप्रधान है। भाव कोमल तथा उदार हैं।

प्रश्न ५. "हम बुरे है जब तक यह न समझेंगे तब तक अच्छे नहीं हो सकते हैं।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर–इस कथन से हम पूर्णतया सहमत इसलिए हैं क्योंकि अपने दोषों का अनुभव करना या अपने अपराध की स्वीकृति कर लेने से आन्तरिक अस्वस्थता का उपचार होता है तथा सच्चे सुधार का मार्ग प्रशस्त होता है।

प्रश्न ६. मनुष्य में ऐसे कौन से अवगुण होते हैं जिसके आधार पर उसको निर्लज्ज कहा जाता है?

उत्तर–मनुष्य को निम्नांकित अवगुणों के आधार पर निर्लज्ज कहा जाता है–१. कार्य की बुराई-भलाई का विचार न करना। २. समाज की परवाह किये बिना कार्य में जुट जाना।

प्रश्न ७. मनुष्य पश्चाताप की ग्लानि का अनुभव कब करता है?

उत्तर–मनुष्य पश्चाताप की ग्लानि का अनुभव तब करता है जबकि वह कहता है, "यदि हमने ऐसा न किया होता तो हमारी यह गति क्यों होंती?"

प्रश्न ८. लज्जा एवं आशंका में क्या अन्तर है?

उत्तर–लज्जा एक निश्चयात्मक वृत्ति है जिसमें आशंका का भाव हो सकता है किन्तु आशंका अनिश्यचात्मक वृत्ति है।

प्रश्न ९. क्षमाशील मनुष्यों की क्या विशेषताएँ होती हैं?

उत्तर–क्षमाशील मनुष्यों की निम्नांकित विशेषताएँ हैं–(१) वे सबसे प्रेम-भाव रखते हैं। (२) सबको अपेक्षित सहयोग प्रदान करते हैं। (३) बुराई की शिकायत नहीं करते।

प्रश्न १०. यदि एक दण्डधारी दुर्जन और आपके गुरु एक साथ मिल जावें तो आप उस समय सबसे पहले क्या करना पसन्द करेंगे?

उत्तर–उस समय पहले दण्डधारी दुर्जन से होने वाले अनिष्ट का निवारण (दुष्ट की पिटाई) करूँगा तत्पश्चात् गुरुजी के चरण स्पर्श करके आनन्द का अनुभव करूँगा।

प्रश्न ११. मनुष्य उत्तम कार्य करते हुए भी संकोच का अनुभव क्यों करते हैं?

उत्तर–उत्तम कार्य करते हुए भी संकोच का अनुभव वे मनुष्य करते रहते हैं जो यह विचार करते रहते हैं कि उनका कार्य किसी को बुरा न लगे। इस आशंका से उन्हें उत्तम कार्य करने पर भी संकोच का अनुभव होता है।

प्रश्न १२. महिलाओं का लज्जाशील होना कहाँ तक उपयुक्त है?

उत्तर–महिलाओं का अपने अधिकारों के उपभोग में स्वतन्त्र किन्तु अपने शील और विनय की रक्षा हेतु लज्जाशील होना पूर्णतः उपयुक्त है।

प्रश्न १३. मनुष्य जीवन को खुशहाली युक्त बनाने के लिए कितने रूपों में प्रतिबन्ध लगाता है?

उत्तर–मनुष्य दो रूपों में प्रतिबन्ध लगाकर जीवन को खुशहाली युक्त बनाता है–

१. बाह्य प्रतिबन्ध, २. आन्तरिक प्रतिबन्ध।

प्रश्न १४. अपने आचरण पर प्रतिबन्ध किस प्रकार लगाया जा सकता है?

उत्तर–अपने आचरण पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए अपने पड़ौसियों की धारणा का अधिकाधिक ध्यान रखना चाहिए। उनकी धारणा का जितना अधिक ध्यान रखा जायेगा उतना ही अधिक प्रतिबन्ध आचरण पर होगा।

प्रश्न १५. हम धड़ाके के साथ किसके सामने नहीं जाते?

उत्तर–हम धड़ाके के साथ उन व्यक्तियों के सामने नहीं जाते जो हमारी बुराई, मूर्खता तथा तुच्छता का प्रमाण पा चुके हैं।

प्रश्न १६. लज्जा का क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर–लज्जा के प्रभाव से व्यक्ति सिर ऊँचा नहीं करता। मुँह नहीं दिखाता तथा बात को साफ नहीं कह पाता।

प्रश्न १७. निर्लज्ज किसे कहा जाता है?

उत्तर–निर्लज्ज उसे कहा जाता है जो इस बात की परवाह ही नहीं करता कि कौन उन्हें बुरा कह रहा है और कौन अच्छा कह रहा है।

प्रश्न १८. ग्लानि के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर–ग्लानि अन्तःकरण की शुद्धि का एक विधान है। इसमें अपनी बुराई, मूर्खता, तुच्छता आदि के अनुभव से जो संताप होता है वह अकेले में भी होता है और दस आदमियों के सम्मुख भी प्रकट किया जाता है। ग्लानि में किसी प्रकार के दुःख की प्रवृति नहीं रहती।

प्रश्न १९. बुराई से रक्षा के कौन-कौन से मनोविकार हैं?

उत्तर–बुराई से रक्षा के मनोविकार हैं–१. सात्विक प्रवृत्ति वालों के लिए ग्लानि। २. राजसी प्रवृत्ति वालों के लिए लज्जा तथा ३. तामसी प्रवृत्ति वालों के लिए भय।

प्रश्न २०. लोक-मर्यादा की दृष्टि से कितनी सामर्थ्य होनी चाहिए?

उत्तर–लोक-मर्यादा की दृष्टि से इतनी सामर्थ्य होनी चाहिए कि कोई व्यक्ति हमारे सम्मान को ठेस न पहुँचा सके। हमें अपमानित नहीं कर सके।

सउत्तर लघू एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. मनुष्य लज्जा और ग्लानि का अनुभव कब करता है? इससे बचने के लिए उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर–१. **लज्जा**–अपने विषय में जब दूसरों के चित्त में तुच्छ धारणा उत्पन्न होने की आशंका होती है तो उनकी स्वच्छन्दता का जो आघात अनुभव किया जाता है उसे लज्जा कहा जाता है।

२. **लज्जा का अनुभव**–व्यक्ति जब लज्जा का अनुभव करता है तब वह लज्जा के कारण अपना सिर ऊँचा नहीं कर पाता। दूसरों के सामने आने में संकोच करता है। अपना मुँह दिखाने का भी साहस नहीं कर पाता। अपनी बात भी स्पष्ट रूप से किसी के समक्ष नहीं रख सकता। किसी कार्य में उत्साह नहीं झलकता। सभी कार्यों में तीव्रता समाप्त हो जाती है। चेष्टाएँ मन्द पड़ जाती हैं।

३. **ग्लानि**–व्यक्ति जब अपनी मूर्खता अथवा तुच्छता का एकान्त में अनुभव करता है तो उसकी वृत्तियों में व्याप्त शिथिलता को ग्लानि कहते हैं।

४. **ग्लानि का अनुभव**–ग्लानि का अनुभव उन व्यक्तियों को होता है जिनके सात्विक संस्कार होते हैं। जिनका अन्तःकरण सत्वप्रधान होता है, उनको ग्लानि का अनुभव होना स्वाभाविक है। जिनकी भावनाओं में उदारता तथा कोमलता की अधिकता होती है वे ही अपने कुत्सित कार्यों के लिए ग्लानि का अनुभव करते हैं।

५. **लज्जा तथा ग्लानि से बचने के उपाय**– व्यक्ति को प्रत्येक कार्य यह विचार करके करना चाहिए कि उसके कार्यों के लिए उसे कोई बुरा नहीं कहता हो। उसके मन में यह भावना स्थायी रूप से होनी चाहिए कि हमें बुरा नहीं समझा जाय। इस प्रकार की भावना से लज्जा-शीलता में वृद्धि होती है और लज्जित करने वाले कार्यों से बचाव होता है।

संस्कारों में सात्विकता का भाव जाग्रत कर लेने से ग्लानि के दुख से बचाव हो सकता है। अतः व्यक्ति को उदारता तथा कोमलता के भाव में वृद्धि करनी चाहिए।

प्रश्न २. दुष्कर्म से बचने के लिए मनुष्य को क्या-क्या कार्य करना चाहिए?

उत्तर– १. दुष्कर्म– व्यक्ति के वे बुरे कार्य, जो दूसरों के हित में नहीं होते स्वयं को भी पीड़ादायक तथा असन्तोषप्रद होते हैं, दुष्कर्म कहलाते हैं।

२. **दुष्कर्म से रक्षा**– दुष्कर्म कभी भी व्यक्ति को आनन्द प्रदान नहीं कर सकते। कभी भी आत्म सन्तुष्टि में सहायक नहीं हो सकते। सदा बेचैन बनाये रखते हैं। कभी उत्तम फल नहीं देते। अपमान कराने वाले तथा तुच्छता का अनुभव कराने वाले दुष्कर्म सदा ही कड़ुआ फल देने वाले होते हैं।

दुष्कर्म से रक्षा के निमित्त हमें अपने दुष्कर्म पर ग्लानि करनी चाहिए। जब व्यक्ति अपने किसी दुष्कर्म के लिए पश्चाताप करता है तब समझ लेना चाहिए कि व्यक्ति दुष्कर्म से बचाव के लिए कार्य कर रहा है।

व्यक्ति को अपने मन से तुच्छता का भाव निकाल देना चाहिए तथा संसार में सामर्थ्यहीन बनकर जीवन यापन नहीं करना चाहिए। सदा इतनी शक्ति अवश्य होनी चाहिए कि दूसरे व्यक्ति बिना कारण अपमान न कर सकें। अकारण अपमान करने वालों को हम अपनी शक्ति के अनुसार रोकने की क्षमता प्राप्त कर सकें तभी दुष्कर्म से बचाव हो सकता है।

दुष्कर्म से रक्षा के लिए हमें अपनी मान-मर्यादा की रक्षा का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति जब मान-मर्यादा की रक्षा के लिए चिन्ता करता है तो उसके मन में दुष्कर्म से बचाव की बात भी आती है।

३. **उपसंहार**– उत्तम मनुष्य सदा ही दुष्कर्मों से बचते हैं। लज्जा तथा ग्लानि से बचने के लिए दुष्कर्मों से बचना एक उत्तम मार्ग है।

प्रश्न ३. प्रस्तुत निबन्ध की शैली में "राग और द्वेष" मनोविकार पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर– १. मनोविकार– मानव मन सागर के समान है जिसमें समय-समय पर लहरें उठती, वेगवती बनती तथा स्वयं ही शान्त भी हो जाती हैं। मन ऐसा भण्डार है जिसमें मूल्यवान् आवेग रत्न भरे पड़े हैं जो समय तथा स्थिति के अनुसार चमकते और धुँधले पड़ते रहते हैं।

२. **राग और द्वेष**– राग और द्वेष मानव मन के ऐसे विकार हैं जो कभी भी सराहनीय नहीं कहे जा सकते। हमारे पूर्वजों, प्राचीन ऋषि मुनियों तथा आधुनिक सन्त-मनीषियों एवम् राजनेता-ओं ने भी व्यक्ति को राग द्वेष से दूर रहने का उपदेश दिया है।

द्वेष ऐसी मनोवृत्ति है जिनसे मानव-मन अकारण ही बेचैन रहता है। दूसरों की उन्नति, दूसरों की समृद्धि उन्हें फूटी आँख भी नहीं भाती। मन में जलन रहती है। ईर्ष्यालु स्वभाव बन जाता है। दूसरों को हानि पहुँचाने को ताने-बाने बुने जाते हैं।

प्रश्न ४. यदि आपसे कोई ऐसा कार्य या व्यवहार हो जाये जो कि सामाजिक शिष्टता या मर्यादा के विपरीत हो तब आपके मन में कौन-कौन से विकार आयेंगे और क्यों?

उत्तर– १. कार्य या व्यवहार– व्यक्ति की पूजा उसके कार्यों या व्यवहार के कारण होती है। जो व्यक्ति समाज में रहकर समाज हित के समयोचित कार्य करते हैं उनकी प्रशंसा होती

है तथा इसके विपरीत कार्य करने वाले सदा समाज की दृष्टि में गिर जाते हैं और बुराई के पात्र बन जाते हैं।

२. **मर्यादा विपरीत कार्य**–समाज में रहकर शिष्टता का व्यवहार करना ही मनुष्य के लिए शोभनीय है। उसके ऐसे कार्य जो सामाजिक मर्यादा के विपरीत हैं, किसी भी दशा में उचित नहीं कहे जा सकते।

३. **मर्यादा विपरीत कार्य का प्रभाव**–सामाजिक मर्यादा के विपरीत कार्य करने से मन में लज्जा का भाव यह सोचकर आता है कि दूसरों की दृष्टि में मैं उत्तम कार्य नहीं कर रहा हूँ। अतः मैं उनकी दृष्टि में अच्छा नहीं हूँ। यह विचार मन में आने पर अपने मर्यादा विपरीत कार्यों पर ग्लानि भी होती है। हम स्वयं अपनी ही दृष्टि में गिरा हुआ अनुभव करते हैं।

लोकबद्ध प्राणी होने के कारण व्यक्ति अपनों से सम्बन्धित पुत्र, भाई आदि के दुराचार, अयोग्यता, असभ्य व्यवहार से अपने आपको पृथक् नहीं समझता। उनके कर्मों के गुण दोष का स्वयं को भागीदार समझता है। कभी उसकी गर्दन गर्व से उन्नत हो जाती है तो कभी शर्म से झुक जाती है।

बुरे प्रसंगों में नाम आ जाने मात्र से हमें लज्जा का अनुभव होता है। समाज में अपमानित होने पर कभी क्रोध का भाव उत्पन्न होता है तो कभी तुच्छता का अनुभव होता है।

जो व्यक्ति उत्तम कोटि के हैं उन्हें अपने दुष्कर्म पर ग्लानि होती है। रामचरितमानस के आधार पर कैकयी का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है जो चित्रकूट में राम और भरत के मिलाप के समय अपने कुकृत्य के कारण ग्लानि का अनुभव करने लगी। तुलसीदास जी ने लिखा है–"गरइ गलानि कुटिल कैकेयी।"

४, **उपसंहार**–वास्तव में अन्तःकरण की शुद्धि का विधान ग्लानि से बढ़कर अन्य कोई हो भी नहीं सकता। व्यक्ति को विभिन्न विकारों के उत्पन्न होने से पूर्व यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि उसका कोई भी कार्य सामाजिक मर्यादा के विपरीत न हो अन्यथा उसे तरह तरह के मनोविकारों का सामना करना पड़ेगा।

प्रश्न ५. प्रस्तुत पाठ के आधार पर शुक्लजी की निबन्ध कला पर प्रकाश डालिए।

***उत्तर*–१. रामचन्द्र शुक्ल**–रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य में युगान्तरीय क्रान्ति के जन्मदाता हैं जिनका जन्म बस्ती जनपद के अगोना ग्राम में सन् १८८४ में हुआ था। इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रविष्ट न होकर मिर्जापुर के न्यायालय में कुछ समय कार्य किया। वहाँ से त्याग-पत्र देकर परीक्षण कार्य में रुचि ली। डॉ० श्यामसुन्दर दास ने काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में नियुक्त कराया और उनके अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् वहाँ हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर आसीन हुए। सन् १९४१ में हिन्दी की सेवा करते हुए वह परलोकवासी हुए।

२. **शुक्लजी की निबन्ध कला**–शुक्लजी की निबन्ध कला अत्यन्त पुष्ट तथा प्रौढ़ता लिए हुए है। उनके निबन्ध विषय प्रधान होते हुए भी व्यक्ति प्रधान हैं। उनकी निबन्ध कला की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(अ) **विचारात्मक निबन्ध**–विचारात्मक निबन्ध कला में शुक्लजी ने आगमन तथा निगमन पद्धति को अपनाया है। निगमन शैली का प्रयोग अधिकता के साथ हुआ है। विचारात्मक निबन्धों में उन्होंने सजीवता तथा रोचकता को प्रमुख स्थान दिया है।

(ब) **आलोचनात्मक निबन्ध**–आलोचनात्मक निबन्धों में शुक्लजी ने इस प्रकार की आलोचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इन निबन्धों में विचारों की गम्भीरता है। वाक्य छोटे हैं किन्तु अर्थ गर्भित हैं।

(स) गवेषणात्मक निबन्ध—नवीन खोजपूर्ण विषयों पर रामचन्द्र शुक्ल ने गवेषणात्मक शैली का सहारा लिया है। इस प्रकार के निबन्धों में दुरूहता है। संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। दार्शनिक भावों की झलक है। बड़े-बड़े वाक्यों की अधिकता है।

(द) भावात्मक निबन्ध—शुक्लजी के मनोवैज्ञानिक निबन्धों में भावात्मकता के दर्शन होते हैं। रामचन्द्र शुक्ल को भावात्मक निबन्धों का जन्मदाता माना जाता है क्योंकि इस शैली का सर्वप्रथम व्यवहार उन्होंने ही किया। भाषा की सरलता, सुबोधता तथा व्यावहारिकता प्रशंसनीय है।

(य) सूत्रात्मकता—विषयवस्तु को एक सूत्र से प्रस्तुत करने के पश्चात्, उसकी व्याख्या की गयी है। इस प्रकार के निबन्धों को समास-शैली भी कहा जा सकता है। यथा—"बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।"

उपसंहार—व्यंग्यात्मक तथा व्यासात्मक निबन्ध कला में भी रामचन्द्र शुक्ल का नाम प्रख्यात है। उन्होंने साहित्य की जिस विधा का स्पर्श किया वही धन्य हो गयी। वह उत्कृष्ट निबन्धकार, निष्पक्ष इतिहासकार तथा महान् शैलीकार के रूप में हिन्दी साहित्य में सदा अमर रहेंगे।

प्रश्न ६. निम्न कथनों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) दूसरों का भय हमें भगा सकता है, हमारी बुराइयों को नहीं। दूसरों से हम भाग सकते हैं, पर अपने से नहीं।

प्रसंग—प्रस्तुत कथन **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **'लज्जा और ग्लानि'** निबन्ध से अवतरित है।

व्याख्या—कभी-कभी हम लोग अपने दोष प्रकट होने की स्थिति में दूसरों की दृष्टि में गिर जाते हैं। इस बात से बेचैन होकर आत्मिक सुधार का प्रयास करते हैं। किन्तु प्रत्येक अवस्था में सुधार की ही इच्छा उत्पन्न होगी यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

सामान्यतः दूसरों के भय के परिणामस्वरूप हम उस भय से बचाव के लिए दूर रहने का प्रयास करते हैं। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि ऐसा करने पर हमारे दुर्गुण दूर हो जायेंगे। हम अच्छे लगने लगेंगे, यह भी नहीं कहा जा सकता। दूसरों के भय की आशंका से हम भले ही भाग लें किन्तु अपने आप कैसे दूर जाया जा सकता है। अपने आप में तो हमें सुधार लाना ही होगा। अपने दुर्गुणों को तो दूर करना ही होगा।

(ख) दूसरों के हृदय में अज्ञान की प्रतिष्ठा करके वे उसकी शरण में जाते हैं। पर अज्ञान चाहे अपना हो चाहे पराया, सब दिन रक्षा दिन नहीं कर सकता।

प्रसंग—प्रस्तुत कथन **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **'लज्जा और ग्लानि'** निबन्ध से अवतरित है।

व्याख्या—सामान्यतः व्यक्ति ऐसा कार्य नहीं करता जो दूसरों को अप्रिय हो। वह ऐसे कार्य में ही अपनी रुचि प्रकट करता है जो सबको प्रिय हो। इसके अतिरिक्त व्यक्ति ऐसे कार्य करना चाहता है जिनसे समाज में प्रतिष्ठा हो। दूसरों की दृष्टि में उत्तम पुरुषों में गणना हो। यदि उत्तम पुरुषों में गणना न हो तो लज्जा का अनुभव करते हैं। अज्ञानता की अवस्था में भले ही कोई हमें बुरा न कहे अथवा अज्ञानतावश हमें कोई कुछ समय तक प्रतिष्ठा प्रदान करता रहे किन्तु यह सच है कि अज्ञानता से सदा हम दूसरों की दृष्टि में सम्मानपूर्ण स्थान नहीं बनाये रह सकते हैं। कभी न कभी तो यह भ्रम टूटता ही है।

(ग) जो संसार त्यागी या आत्म त्यागी है, उनका विगतमान होना तो बहुत ठीक है पर लोक व्यवहार की दृष्टि से अनिष्ट से बचने बचाने के लिए इष्ट यही है कि हम दुष्टों का हाथ थामें और धृष्टों का मुँह, उनकी वन्दना करके हम पार नहीं पा सकते।

प्रसंग—प्रस्तुत कथन **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **'लज्जा और ग्लानि'** निबन्ध से अवतरित है। जिसमें लेखक बताना चाहता है कि—

प्रत्येक व्यक्ति में अकारण होने वाले अपमान का सामना करने की सामर्थ्य होनी चाहिए।

व्याख्या– जिन व्यक्तियों ने संसार का परित्याग कर दिया है, जो पूर्णतया वैराग्य धारण कर चुके हैं, उनके विषय में तो कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। अन्यथा सभी को अपने मान-सम्मान की इच्छा होती है। सभी ससम्मान सामाजिक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।

जीवन में कभी कोई अनिष्ट की आशंका हो तो दुष्टतापूर्ण कृत्य करने वाले व्यक्ति को अवश्य ही उसके कुकृत्य के लिए सजा दें। यदि हम दुष्टों की वन्दना करेंगे, उनकी प्रशंसा करेंगे या उनके अनुचित कार्य के लिए दण्डित नहीं करेंगे तो वह अवश्य ही कुकृत्यों के प्रति साहसी बनता जायेगा। उसके दुष्कृत्यों में वृद्धि होती रहेगी। अतः अच्छा यही होगा कि उसके दुःसाहस को तोड़ दिया जाय। इसमें ही सबकी भलाई है।

प्रश्न ७. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'लज्जा और ग्लानि' निबन्ध के आधार पर लज्जा और ग्लानि का सोदाहरण अन्तर स्पष्ट कीजिए। **(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, १९९३)**

उत्तर– १. लज्जा और ग्लानि– लज्जा और ग्लानि **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** लिखित मनोविकारों के स्वरूप को स्पष्ट करने वाला मनोवैज्ञानिक निबन्ध है जिसमें शुक्लजी ने लज्जा और ग्लानि के अन्तर को विभिन्न उदाहरणों द्वारा अधिकाधिक स्पष्ट किया है।

२. **लज्जा**– दूसरों के चित्त में अपने विषय में बुरी या तुच्छ धारणा होने के निश्चय अथवा आशंका मात्र से वृत्तियों का जो संकोच होता है उनकी स्वच्छन्दता के विघात का जो अनुभव होता है उसी का नाम 'लज्जा' है।

३. **लज्जा का स्वरूप**– व्यक्ति जब लज्जित होता है तब उसका मस्तक लज्जा से झुक जाता है। वह लज्जा के कारण अपना मुख भी नहीं दिखाना चाहता। दूसरों के सम्मुख जाने में भी उसे संकोच का अनुभव होता है। वह सदा यही सोचता रहता है कि हमें बुरा न समझा जाय। कोई हमारी बुराई न करे।

४. **ग्लानि**– अपनी बुराई, अपनी तुच्छता, अपनी मूर्खता आदि का एकान्त अनुभव करने से चित्त की वृत्ति में जो शिथिलता आती है, उसे 'ग्लानि' कहते हैं।

५. **ग्लानि का स्वरूप**– जिन व्यक्तियों का अन्तःकरण सत्व प्रधान होता है। जिनके संस्कारों में सात्विकता होती है। जिनके भावों में उदारता होती है उनको ही अपने कार्यों के लिए पश्चाताप स्वरूप ग्लानि का अनुभव होता है।

६. **लज्जा और ग्लानि में अन्तर**– लज्जा में एकान्त अनुभव नहीं होता। ग्लानि का एकान्त अनुभव किया जाता है। ग्लानि उत्पन्न होने पर जो दुःख या पश्चाताप होता है उसे पचासों व्यक्तियों के सम्मुख प्रकट करने में भी किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं होती।

लज्जा इस प्रकार का मनोविकार है जिसमें निश्चयात्मकता का अभाव रहता है। लज्जावश हमारी चेष्टाएँ मन्द पड़ जाती हैं। हमारे ऊपर घड़ों पानी पड़ जाता है। हमारी अवस्था निर्जीव के समान बन जाती है।

लज्जा में आशंका बनी रहती है। निश्चय का भाव नहीं बन पाता। ग्लानि में किसी प्रकार की आशंका को स्थान नहीं होता। यह एक निश्चयात्मक वृत्ति है।

लज्जा और ग्लानि एक दूसरे के पूरक मनोविकार हैं किन्तु दोनों के विकास की प्रक्रिया स्वतन्त्र रूप से होती है।

प्रश्न ८. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ग्लानि को अन्तःकरण की शुद्धि का सुन्दर उपाय बताया है। लज्जा और ग्लानि के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– १. ग्लानि– ग्लानि एक मनोविकार है जो अपनी बुराई मूर्खता, तुच्छता इत्यादि का एकान्त अनुभव करने पर उत्पन्न होता है। ग्लानि उनके मन में ही उत्पन्न होती है जिनका

अन्तःकरण सत्वप्रधान होता है। जिनके संस्कार सात्विक तथा मन उदार होता है उनको ही अपनी मूर्खता तथा बुराई पर ग्लानि होती है।

२. **ग्लानि का प्रकट होना**– व्यक्ति को अपनी तुच्छता तथा मूर्खता पर सन्ताप का अनुभव होता है। मन का यह सन्ताप एकान्त में भी हो सकता है तथा पचासों मनुष्यों के मध्य भी हो सकता है।

३. **अन्तःकरण की शुद्धि**– वास्तविकता तो यह है कि अन्तःकरण की शुद्धि का एक विधान ग्लानि है। इस विधान में किसी प्रकार का कोई छिपाव नहीं होता। दुःख नहीं होता।

ग्लानि का सन्ताप होने पर हम अपने अपराध को अनेकों व्यक्तियों के सम्मुख भी स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं करते। सबके सम्मुख स्पष्ट रूप में स्वीकार कर लेते है।

व्यक्ति जब अपने दोष का अनुभव करे तो इससे बढ़कर सच्चे सुधार का अन्य कोई मार्ग नहीं हो सकता। अपनी दुर्बलता का ज्ञान होने तथा उनका निराकरण करने पर ही आत्मा भी शुद्धि हो सकती है। आत्मग्लानि से आत्मा शुद्ध होती है। अतः ग्लानि को अन्तःकरण की शुद्धि का सुन्दर उपाय बताया गया है।

महत्त्वपूर्ण सप्रसंग व्याख्याएँ

शब्दार्थ-पृष्ठ-६३– प्रतिबन्ध = बंधन, रोक। तुच्छता = छुटपना। धड़ाके = तेजी, संकोच-हीनता, बेझिझक। आगा पीछा = सोच विचार। धारणा = विचार। विघात = आघात, चोट। निर्लज्ज = लज्जा रहित, बेशर्म। धृष्टता = ढीठपन गुस्ताखी। स्वत्व = अधिकार। समेटना = जुटाना, एकत्र करना।

पृष्ठ-६४– उपहास = हँसी, मजाक, खिल्ली उड़ाना। आसरां = आश्रय, सहारा। छिः-छिः करता = घृणा करना, दुतकारना। शैथिल्य = शिथिलता, ढिलाई, कमजोरी। ग्लानि = दुःख पश्चाताप। अन्तःकरण = आत्मा। क्रूर = कठोर। निमग्न = मग्न, डूबा हुआ। सन्ताप = दुःख, कपट। दुराव = छिपाव।

पृष्ठ-६५– उपचार = चिकित्सा, इलाज। सर्वांग = सभी अंग, सभी भाग। भक्षण = भोजन, खाना। व्यवधान = रुकावट, बाधा। तामसी = तमोगुणी, क्रोधी। प्रसर = आगे बढ़ना।

पृष्ठ-६६– असह्य = असहनीय। स्वच्छन्दता = पूर्ण स्वतन्त्रता। कुचक्र = षड्यन्त्र। ह्रास = पतन। प्रतिकार = विरोध।

पृष्ठ-६७– परिहार = त्यागना। विरसता = रस हीनता, उपेक्षा। कटुता = कड़वापन, कठोरता, बैर। सामर्थ्य = क्षमता, शक्ति। रजसम = धूल के समान, नगण्य।

पृष्ठ-६८– साष्टांग = आठ अंगों सहित, सम्पूर्ण अंगों सहित लेटकर प्रणाम्। अनिष्ट = बुरा। प्रयत्न साध्य = प्रयत्न पर आधारित। मनः प्रवृत्यात्मक = मनः प्रवृत्ति अनुसार। आभ्यंतर = अन्तःकरण का, अन्दर का, मन का।

पृष्ठ-६९-७०– विधेय = उचित, न्याययुक्त। निर्दिष्ट = निर्देशित, निर्देश दिया हुआ। भीरू = कमजोर, डरपोक। रस कोविद = रस सिद्ध, रस प्रवीण। उन्मत्त = पागल, मतवाला।

(१)

लज्जा का कारण अपनी बुराई, त्रुटि या दोष और हमारा अपना निश्चय नहीं दूसरे के निश्चय का निश्चय या अनुमान है जो हम बिना किसी प्रकार का प्रमाण पाये केवल अपने आचरण या परिस्थिति विशेष पर दृष्टि रखकर ही कभी-कभी कर लिया करते हैं। हम अपने को दोषी समझें यह आवश्यक नहीं, दूसरे हमें दोषी या बुरा समझें यह भी आवश्यक नहीं, आवश्यक है हमारा यह समझना कि दूसरा हमें दोषी या बुरा समझता है या समझता होगा।

(पृष्ठ ६३-६४)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **"लज्जा और ग्लानि"** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर शुक्लजी लज्जा के कारण पर प्रकाश डालते हुए कह रहे हैं—

व्याख्या–कुछ व्यक्तियों का ऐसा विचार है कि अपनी बुराई या दोष लज्जा का कारण है। लेकिन लज्जा न तो अपनी त्रुटि पर आती है और न अपने निश्चय पर अपितु दूसरे के निश्चय का अनुमान हमारी लज्जा का कारण बनता है।

लेखक कहता है कि कभी-कभी हम यह अनुमान लगा लेते हैं कि दूसरा व्यक्ति हमें तुच्छ समझता है। वह हमें दोषी समझता है। हमारे इस अनुमान का कोई निश्चित प्रमाण तो होता नहीं लेकिन अपने आचरण के आधार पर ऐसा मन बना लेते हैं कि दूसरे हमें बुरा समझते हैं। गलत समझते हैं।

शुक्लजी के विचार से लज्जा के लिए दूसरों को हमें बुरा समझना अथवा स्वयं को दोषी समझना कोई कारण नहीं है। लज्जा तो इससे ही आने लग जाती है कि दूसरा व्यक्ति हमें बुरा समझता है। हम जब यह अनुमान लगा बैठते हैं कि अन्य व्यक्ति हमें दोषी समझते होंगे तभी लज्जा मनोविकार का प्रारम्भ समझना चाहिए।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–तत्सम प्रधान सरल भाषा।

(२) **शैली**–मनोविश्लेषणात्मक गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–लज्जा के कारणों को स्पष्ट किया गया है।

(२)

निन्दा का भय लज्जा नहीं है भय ही है और कई बातों का, जिसमें लज्जा भी एक है। हमें निन्दा का भय है इसका मतलब है कि हमें उसके परिणामों का भय है, अपने कुढ़ने, दुःखी होने, लज्जित होने, हानि सहने इत्यादि का भय है। पृष्ठ-६४

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल जी** लिखित **"लज्जा और ग्लानि"** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने लज्जा और भय को पृथक् रूपों में स्पष्ट करते हुए बताया है–

व्याख्या–यह समझना सर्वथा गलत है कि लज्जा तथा भय दोनों एक हैं। सच तो यह है कि लज्जा और भय दो पृथक् भाव हैं लज्जा के भय को हमें 'भय' ही स्वीकार करना होगा क्योंकि लज्जा के कारण मन में दुःख होगा और निन्दा के कारण भय उत्पन्न होगा जिसे हम लज्जा नहीं कह सकते। हम जानते हैं कि निन्दा से कुढ़ना होगी। दुःख होगा। लज्जित भी होना पड़ेगा। अतः लाज के भय को 'भय' ही समझा जाना चाहिए। इस प्रकार के भय को लज्जा नहीं कहा जा सकता।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल भाषा।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–निन्दा से उत्पन्न भय को लज्जा नहीं कहा जा सकता।

(३)

विशुद्ध लज्जा अपने विषय में दूसरे की ही भावना पर दृष्टि रखने से होती है। अपनी बुराई, मूर्खता, तुच्छता इत्यादि का एकान्त अनुभव करने की वृत्तियों में जो शैथिल्य आता है उसे "ग्लानि" कहते है। इसे अधिकतर उन लोगों को भोगना पड़ता है जिनका अन्तःकरण सत्त्व प्रदान है, जिनके संस्कार सात्विक होते हैं, जिनके भाव कोमल और उदार होते हैं। जिनका हृदय कठोर होता है, जिनकी वृत्ति क्रूर होती है जो सिर से पैर तक स्वार्थ में निमग्न होते हैं उन्हें सहने के लिए संसार में इतनी बाधाएँ, इतनी कठिनाइयाँ, इतने कष्ट होते हैं कि ऊपर से और इसकी भी न उतनी जरूरत रहती है, न जगह। (पृष्ठ-६४)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **"लज्जा और ग्लानि"** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने ग्लानि तथा लज्जा के अन्तर को स्पष्ट किया है।

व्याख्या–रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि हमें यह सोचकर तथा निश्चय करके लज्जा होती है कि दूसरे व्यक्ति हमें बुरा समझते हैं अथवा तुच्छ समझते होंगे। दूसरों के समक्ष जब जाते हैं तब हमें लज्जा का अनुभव होता है। किन्तु जिस स्थिति में मन में अपनी बुराई, दोषादि की आशंका से ढीलापन आता है, उस स्थिति को ग्लानि कहा जाता है।

लेखक की मान्यता है कि ग्लानि का अनुभव केवल वे ही करते हैं जिनके संस्कारों में सात्विक भावनाएँ हैं। जिनका हृदय उदार भावनाओं से ओतप्रोत है तथा जो कोमल हृदय हैं। अन्यथा निर्दयी भावनाओं वाले, कठोर हृदय तथा स्वार्थी व्यक्ति के मन में कभी ग्लानि का भाव आता ही नहीं है।

साहित्यिक विशेषताएँ–(१) **भाषा**–सरल-सरस भाषा।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–लज्जा तथा ग्लानि का अन्तर स्पष्ट किया गया है।

(४) **पृष्ठ-६४-६५**

ग्लानि में अपनी बुराई, मूर्खता, तुच्छता आदि के अनुभव से जो सन्ताप होता है वह अकेले में भी होता है और दस आदमियों के सामने प्रकट भी किया जाता है। ग्लानि अन्तःकरण की शुद्धि का एक विधान है। उससे इसके उद्गार में अपने दोष अपराध, तुच्छता, बुराई इत्यादि का लोग दुःख से या सुख से कथन भी करते हैं, उसमें दुराव या छिपाव की प्रवृत्ति नहीं रहती। अपने दोष का अनुभव, अपने अपराध का स्वीकार, आन्तरिक अस्वस्थता का उपचार तथा सच्चे सुधार का द्वार है। "हम बुरे हैं" जब तक यह न समझेंगे तब तक अच्छे नहीं हो सकते।" "हम बुरे हैं" दूसरों के कान में पड़ते ही इसका अर्थ उलट जाता है।

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल जी** लिखित **"लज्जा और ग्लानि"** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने आत्म सुधार पर बल देते हुए कहा है कि ग्लानि से अन्तःकरण की शुद्धता सम्भव है।

व्याख्या–रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि व्यक्ति जब ग्लानि के भाव से परिपूर्ण होता है तब अपनी बुराई, तुच्छता, मूर्खतादि दुर्गुणों का अनुभव होता है। दुर्गुणों के विचार से मन को दुःख पहुँचता है। यह दुःख एकान्त में भी अनुभव किया जा सकता है और समूह के समक्ष भी। ऐसा व्यक्ति अकेले में भी दुःखी रहता है और समाज के बड़े समुदाय के मध्य ग्लानि प्रकट करने में भी उसे कोई संकोच नहीं होता।

ग्लानि का सबसे बड़ा मन्तव्य हृदय को पवित्र बनाना है। देखा गया है कि जो व्यक्ति ग्लानि का अनुभव करते हैं उन्हें अपनी तुच्छता, अपनी बुराई या अपनी मूर्खता को छिपाने की आवश्यकता नहीं होती। वे अपने दोषों को स्वीकार करने में लेश मात्र भी नहीं हिचकिचाते। अपने दोषों को स्वीकार कर लेने से मन की दुर्बलता दूर होती है। मानसिक क्लेशों की समाप्ति होती है। वास्तविक सुधार का प्रारम्भ होता है।

लेखक कहता है कि जब तक व्यक्ति अपने मन में यह नहीं समझेगा कि "हम बुरे हैं" तब तक हममें सुधार नहीं आ सकता। अतः सच्चे सुधार के लिए आत्मालोचन आवश्यक है। अपने दोषों की ओर ध्यान देना जरूरी है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरस तथा सरल भाषा।

(२) **शैली**–गम्भीर शैली।

(३) **अन्य**–ग्लानि को अन्तःकरण की शुद्धि का विधान बताया गया है।

(५)

संकल्प या प्रवृत्ति हो जाने पर बुराई से बचने वाले तीन मनोविकार है–सात्विक वृत्तिवालों के लिए ग्लानि, राजसी वृत्तिवालों के लिए लज्जा और तामसी वृत्तिवालों के लिए भय। जिन्हें अपने किये पर ग्लानि नहीं हो सकती वे लोकलज्जा से, जिनमें लोकलज्जा का लेश नहीं रहता वे भय से बहुत से कामों को करते हुए हिचकते हैं। प्रायः कहा जाता है कि बहुत से लोग इच्छा रखते हुए भी बुरे काम लज्जा के मारे नहीं करते। (पृष्ठ-६५)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल जी** लिखित **"लज्जा और ग्लानि"** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक बुराई से बचने के मनोविकारों का उल्लेख करते हुए लज्जा को बुरे कार्यों से बचने का सर्वोत्तम उपाय बताता है।

व्याख्या–रामचन्द्र शुक्ल ने बुराइयों से बचने के लिए कहा है और बताया है कि बुराइयों से रक्षा के लिए तीन मनोविकारों की सहायता की अपेक्षा की जाती है। जिनकी प्रवृत्ति सात्विक है वे अपनी बुराइयों तथा दोषों को स्वीकार करके ग्लानि का अनुभव करते हैं। उनमें अपने दोषों को छिपाने की प्रवृत्ति नहीं होती।

लेखक कहता है कि अपनी बुराइयों को दूर करने के लिए राजसी वृत्ति वाले लज्जा की सहायता लेते हैं तथा जिनकी तमोगुणी प्रवृत्ति है वे भयभीत होकर अपने दोषों से मुक्त होने का प्रयास करते हैं।

कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिन्हें बुरे कार्यों पर भी ग्लानि नहीं होती। ऐसे व्यक्ति लोक लाज के कारण बुरे कार्य करने के लिए तैयार नहीं होते। जो व्यक्ति लोक लाज भी नहीं मानते, वे भय के कारण बुरे कार्य करने में हिचकते हैं।

सामान्यतः व्यक्ति यह स्वीकार करते हैं कि लज्जा ऐसा मनोविकार है जो बुराइयों से व्यक्ति को दूर रखता है। देखा गया है कि अधिकांशतः व्यक्ति बुरे कार्यों की इच्छा तो करते हैं किन्तु लज्जा के भय से नहीं कर पाते। वे बुरे कार्यों से दूर भागते है केवल लज्जावश।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल, सरस भाषा।

(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली।

(३) **अन्य**–लज्जा से बुरे कार्यों की ओर प्रवृत्ति नहीं होती।

(६)

आशंका अनिश्चयात्मक वृत्ति है। लज्जा की आशंका ही हो सकती है जिसका सम्बन्ध दूसरों की धारणा से होता है। ग्लानि की आशंका नहीं हो सकती, क्योंकि उसका सम्बन्ध अपने से कहीं बाहर की बुरी धारणा से तो होता नहीं, अपनी ही बुरी धारणा से होता है जिसमें अनिश्चय का भाव नहीं रह सकता। (पृष्ठ-६५)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **लज्जा और ग्लानि** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर रामचन्द्र शुक्ल लज्जा का सम्बन्ध आशंका से प्रदर्शित करते हुए कह रहे हैं–

व्याख्या–आशंका ऐसा मनोविकार है जिसमें किसी प्रकार की निश्चयात्मकता नहीं होती। सदा ही अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है। आशंका की यह स्थिति लज्जा के कारण होती है। व्यक्ति लज्जा के कारण किसी भी बात के लिए ठोस संकल्पित पग नहीं बढ़ा पाता। हमारी यह धारणा बनी रहती है कि दूसरे हमको बुरा या मूर्ख समझते हैं।

ग्लानि की अवस्था में हम अपने मन में अपनी बुराइयों तथा मूर्खता के कारण ग्लानि से भर जाते हैं। दूसरों के समझने या न समझने का कोई महत्त्व नहीं होता। ग्लानि में यह भाव उत्पन्न होता है कि हम बुरे हैं और बुराई पर हमें पश्चाताप होता है। अनिश्चय जैसी कोई स्थिति इसमें नहीं होती।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल तथा सरस भाषा।
(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली।
(३) **अन्य**–ग्लानि में आशंका को कोई स्थान नहीं होता।

(७)

दूसरों के चित्र में हमारे प्रति जो प्रेम या प्रतिष्ठा का भाव रहता है उसका ह्रास कुचक्र के साथ अपना नाम मात्र का सम्बन्ध समझकर भी हम समझे बिना नहीं रह सकते। जब स्थिति ऐसी होती है कि इस ह्रास का न समाधान द्वारा निराकरण कर सकते हैं, न क्रोध द्वारा प्रतिकार तो सिवा इसके कि हम अपनी हीनता का अनुभव करें और कर भी क्या सकते हैं? **(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, १९९३) (पृष्ठ-६६)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रामचन्द्र शुक्ल** लिखित **लज्जा और ग्लानि** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक यह बताना चाहता है कि लज्जा के कारण हीन-भावना का जन्म होता है।

व्याख्या–अपयश तथा अपमान प्राप्त होने की दशा में व्यक्ति को लज्जा आती है। वह अपमानित होकर हीनता का अनुभव करता है। क्रोधित भी होता है। उसके मन में एक ही बात आती है कि दूसरों के मन में मेरी प्रतिष्ठा गिर गयी है। प्रेम भाव में कमी आयी है। सत्कार का भाव समाप्त हो गया है।

लेखक कहता है कि क्रोध करने से अपमान का बदला पूर्ण नहीं हो सकता। प्रतिष्ठित पद की प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि हीन-भावना हमें कुछ भी नहीं करने देती। हम तुच्छता का अनुभव करते हैं किन्तु ग्लानि के अतिरिक्त उपाय कुछ भी हमारे पास नहीं होता जो हमें तुच्छता की परिधि से बाहर निकाल सके।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल एवम् सरस भाषा।
(२) **शैली**–गवेषणात्मक शैली।
(३) **अन्य**–लज्जा के कारण हीन-भावना का जन्म होता है।

८ स्टिल लाइफ

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

● *गागर में सागर*

निबन्ध–रिपोर्ताज।

लेखक–फणीश्वर नाथ 'रेणु'। **जन्म**–सन् १९२१। **स्थान** –पूर्णिया जिले का गाँव (बिहार)। **मृत्यु**–सन् १९७७। **भाषा ज्ञान**–हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी। **सेवा**–नेपाल के क्रान्तिकारी आन्दोलनकारी*कहानी उपन्यास साहित्य की सेवा।

कृतियाँ–संस्मरण–नेपाली क्रान्ति कथा।

उपन्यास–मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड आदि।

चर्चित कहानियाँ–रस प्रिया, लाल पान की बेगम, तीसरी कसम।

कहानी संग्रह–एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी आदि।

स्टिल लाइफ–अस्पताल जीवन का यथार्थ चित्रण*अस्पताल में न तो प्रमाणित नाम चलता है न साहित्यिक उपनाम*बैड नं० से रोगी का नाम रख लिया जाता है। रोगियों की चीख पुकार और रोना धोना*भयावनी रातें*सामान्य रोगी की देखभाल करने वाला कोई नहीं* जीवन में गति नहीं* जड़ता है*यान्त्रिकता है*हृदय हीनता है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए।

प्रश्न १. ''स्टिल लाइफ" से तात्पर्य है–
(क) फौलादी जीवन (ख) जड़ जीवन
(ग) रोग ग्रस्त जीवन (घ) कष्टप्रद जीवन।
उत्तर–(ख) जड़ जीवन।

प्रश्न २. "अस्पताल की भयावनी रातों में कभी पूर्णिमा का चाँद नहीं आता।" इस कथन का आशय है–
(क) अस्पताल में बिजली सदा गुल रहती है
(ख) रोगियों की चीख पुकार से चाँदनी मन्द पड़ जाती है
(ग) बारहों महीने अमावस्या की अँधियारी छायी रहती है
(घ) निराशा में आशा का संचार नहीं होता है।
उत्तर–(घ) निराशा में आशा का संचार नहीं होता है।

प्रश्न ३. "आखों का तारा होना" मुहावरे का अर्थ है–
(क) अत्यधिक प्यारा होना (ख) आँसुओं से तर होना
(ग) आँख की पुतली होना (घ) अँधेरे में चमकना।
उत्तर–(क) अत्यधिक प्यारा होना।

प्रश्न ४. "नर्स की चाल तेज हो जाती है खुट-खुट-खुट-खुट"। "खुट-खुट" किस प्रकार का शब्द है–
(क) तत्सम (ख) तद्भव
(ग) देशज (घ) अनुकरणात्मक। ***उत्तर***–(ख) तद्भव।

प्रश्न ५. बैड नं० चार की जाँच करने वाली नर्स को जब यह पता लगा कि वह रोगी तो मर गया है, तब उसके मन में कौन-सी भावना उदित हुई है?
(माध्य० शिक्षा बोर्ड० १९९३)
(क) दुःख (ख) क्षोभ
(ग) करुणा (घ) घबराहट। ***उत्तर***–(घ) घबराहट।

प्रश्न ६. अस्पताल में दाखिल होते ही बदल जाता है–
(क) पता (ख) नाम
(ग) जाति (घ) धर्म ***उत्तर***–(ख) नाम।

प्रश्न ७. वार्ड में दाखिल होते ही क्या सुनाई देता है–
(क) नर्सों के जूतों की आवाज (ख) नये रोगियों की चीख पुकार
(ग) डाक्टर की गर्जना (घ) कुलियों का चिल्लाना।
उत्तर–(ख) नए रोगियों की चीख पुकार।

प्रश्न ८. फणीश्वर नाथ रेणु का नाम अस्पताल में क्या रखा गया–
(क) बैड नम्बर चार (ख) रेणु साहब
(ग) बैड नम्बर दो (घ) बैड नम्बर एक।
उत्तर–(घ) बैड नम्बर एक।

प्रश्न ९. पार्टी वाले रोगी कौन-सी किताब लाते हैं–

(क) रामायण (ख) गीता

(ग) फिल्म फेयर (घ) मनोहर कहानियाँ।

उत्तर–(ग) फिल्म फेयर।

प्रश्न १०. बैड नम्बर चार के मुँह से कपड़ा हटाने पर क्या सच्चाई प्रकट हुई–

(क) घोड़ा बेचकर सोया था (ख) टैम्परेचर अधिक था

(ग) एक्सपायर्ड (घ) दवा की प्रतीक्षा थी।

उत्तर–(ग) एक्सपार्यड।

प्रश्न ११. फणीश्वर रेणु के प्रथम उपन्यास का क्या नाम है–

(क) परती परिकथा (ख) जुलूस

(ग) मैला आँचल (घ) पल्टू बाबू। *उत्तर*–(ग) मैला आँचल।

प्रश्न १२. "स्टिल लाइफ" निबन्ध को गद्य की किस विधा का नाम देंगे–

(क) नाटक (ख) रिपोर्ताज

(ग) उपन्यास (घ) कहानी। *उत्तर*–(ख) रिपोर्ताज।

सउत्तर अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. अस्पताल में दाखिल होते ही रोगी का नाम क्यों बदल जाता है?

उत्तर–अस्पताल में दाखिल होते ही रोगी का नाम बैड नं० के मशहूर हो जाने के कारण बदल जाता है।

प्रश्न २. लेखक अस्पताल में किस नामं से पुकारा जाता था?

उत्तर–लेखक असपताल में बैड नं० १ के नाम से पुकारा जाता था।

प्रश्न ३. लेखक को बैड नम्बर चार की याद क्यों आ जाती है?

उत्तर–लेखक को बैड नम्बर चार की याद इसलिए आ जाती है क्योंकि वह बेसहारा तंथा अनाथ था। उसकी मृत्यु पर कोई आँसू बहाने वाला भी नहीं था।

प्रश्न ४. "वार्ड में दाखिल होते ही नये रोगियों की चीख पुकार तेज हो जाती है।" क्यों?

उत्तर–वार्ड में दाखिल होते ही नये रोगियों की चीख पुकार तेज हो जाती है क्योंकि वे रोग से पीड़ित होने के कारण कुछ अधिक ही चीख पुकार करते हैं।

प्रश्न ५. "कभी-कभी उत्पात मचाने वाले रोगी आते हैं।" ऐसे रोगी कौन होते हैं?

उत्तर–कभी-कभी उत्पात मचाने वाले रोगी आते हैं जो कि किसी पार्टी से सम्बद्ध होते हैं और मिनिस्टर से सम्बन्धित होने की बात करते हुए सुविधाएँ चाहते हैं।

प्रश्न ६. "बैड नम्बर चार ने ऐसा कोई उत्पात नहीं किया।" यहाँ किस उत्पात की ओर संकेत है?

उत्तर–यहाँ इस प्रकार के उत्पात की ओर संकेत है कि कोई रोगी पलंग की टूटी हुई स्प्रिंग की शिकायत करता है। कोई गर्म पानी की थैली ठण्डी बताकर फैंक देता है किन्तु बैड नम्बर चार के आने पर किसी प्रकार का कोई हड़कम्प नहीं मचा। कोई डाक्टर परेशान नहीं हुआ। किसी नर्स को कोई अनावश्यक कष्ट नहीं हुआ।

प्रश्न ७. बैड नं० ११ के टैम्परेचर चार्ट को हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियों का रेखांकन क्यों कहा है?

उत्तर–बैड नं० ११ के टैम्परेचर चार्ट को हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियों का रेखांकन रोगी चार्ट की लम्बाई को देखकर कहा गया है।

प्रश्न ८. "बैड नम्बर चार न हिला, न डुला, चुपचाप लेटा रहा।" इसमें निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– बैड नम्बर चार के न हिलने-डुलने में संवेदना की भावना प्रकट होती है तथा यह संकेत मिलता है कि रोगी का शरीरान्त हो चुका था।

प्रश्न ९ सबने एक साथ हँसकर कहा, "धत्तेरी की जय हो।", यह कथन किस स्थिति की ओर संकेत करता है?

उत्तर– 'धत्तेरी की जय हो' कथन अनाथ रोगियों के प्रति लापरवाही की स्थिति की ओर संकेत करता है।

प्रश्न १०. प्रस्तुत पाठ में अस्पताल के जीवन से सम्बन्धित कई शब्द प्रयुक्त हुए हैं जैसे स्ट्रेचर, आउटडोर, टी० वी० वार्ड, बैकरेस्ट आदि। आप ऐसे शब्दों को छाँटिये और उनकी एक तालिका बनाइये।

उत्तर– **अस्पताल-जीवन से सम्बन्धित शब्द**– बैड नं०, ब्लड, सीपी डायट, एनिमा, वार्ड नर्स, बैवी वार्ड, विमेन्स हॉस्पिटल, नार्मल, सिस्टर, आइस कैप कोरामिन, स्पंजिंग, हॉट वाटर बैग, टैम्परेचर चार्ट आदि।

प्रश्न ११. "तकिये पर अनजाने ही दो बूँद आँख का पानी गिर गया..........बेवजह बेकार जिसका कोई अर्थ नहीं।" 'स्टिल लाइफ' की यह पंक्ति किस ओर इंगित करती है।

(माध्य० शिक्षा बोर्ड १९९३)

उत्तर– 'स्टिल लाइफ' की यह पंक्ति सामाजिक जीवन की संवेदनहीनता की ओर इंगित करती है।

प्रश्न १२. नाम खोकर किसी नम्बर के नाम से मशहूर हो जाने के ३ उदाहरण दीजिए।

उत्तर– नम्बर के नाम से मशहूर होने के ३ उदाहरण– डाक्टर कहता है– १. बैड नं० ५ को 'सीपी डायट" चलेगा। २. नं० ३ को एनिमा देना है। ३. नं० १२ का "ब्लड" लेना है।

प्रश्न १३. लेखक का क्यों और कौन-सा नाम परमानैंट सा हो गया?

उत्तर– लेखक का लगातार चौदह महीने तक अस्पताल में पड़े रहने के कारण बैड नं० १ नाम परमानैंट-सा हो गया।

प्रश्न १४. लेखक की भेंट होने पर वार्ड कुली किस नाम से सलाम करता था?

उत्तर– लेखक की भेंट होने पर वार्ड कुली सलाम करता हुआ कहता था– बहुत दिनों बाद इधर आना हुआ एक नम्बर बाबू।

प्रश्न १५. जब-जब लेखक अस्पताल जाता है, उसे किसकी याद आ जाती है?

उत्तर– जब-जब लेखक अस्पताल जाता है उसे बैड नं० ४ की याद आ जाती है।

प्रश्न १६. वार्ड में दाखिल होते ही नये रोगियों की क्या स्थिति होती है?

उत्तर– वार्ड में दाखिल होते ही नये रोगियों की यह स्थिति होती है कि चीख पुकार तेज हो जाती है। रोना-धोना बढ़ जाता है, बुखार तेज हो जाता है तथा दिल की धड़कन बढ़ जाती है।

प्रश्न १७. वार्ड में जब कोई मरीज मरता है तो डाक्टर से लेकर कुली तक उनके सगे सम्बन्धियों को चुप करने के लिए किस प्रकार डाटते हैं?

उत्तर– डाक्टर से लेकर कुली तक मरीज की मृत्यु पर उसके सगे सम्बन्धियों को चुप करने के लिए डाटते हैं– बाहर जाकर रोना-पीटना करो। "हल्ला-नहीं"।

प्रश्न १८. रात में सारे अस्पताल में मरने वालों की संख्या का अनुमान बैड पर पड़े ही किस प्रकार लगाया जा सकता है?

उत्तर– रात में सारे अस्पताल में मरने वालों की संख्या का अनुमान बैड पर पड़े सहज में ही वार्ड की ओर से आने वाली आवाज से लगाया जा सकता है क्योंकि रात्रि में वहाँ शान्त वातावरण में रोने की आवाजों से मरने वालों का अनुमान हो जाता है।

प्रश्न १९. लेखक के विचार से किसका दिल मजबूत हो गया समझना चाहिए।

उत्तर–लेखक के विचार से उसका दिल मजबूत हो गया समझना चाहिए जिसने अस्पताल की मनहूस रातें करवटें लेकर काटी हों।

प्रश्न २०. बैड नं० ४ के अस्पताल लाये जाने पर किस प्रकार की स्थिति बनी?

उत्तर–बैड नं० ४ के अस्पताल लाए जाने पर स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कोई हड़कम्पं नहीं मचा। वह न रोया, न चिल्लाया। कराहने की भी आवाज नहीं सुनायी पड़ी।

प्रश्न २१. कभी-कभी किसी रोगी के आते ही क्या सरगर्मी शुरू हो जाती हैं?

उत्तर–कभी-कभी किसी रोगी के आते ही उसके सगे-सम्बन्धी बार-बार ड्यूटी रूम से नर्स और डाक्टरों को बुला ले जाते हैं। नर्स की चाल तेज हो जाती है। डॉक्टर की आवाज गम्भीर हो जाती है। वार्ड के महतरों और कुलियों को रोगी के आदमी धमकी देते हैं।

प्रश्न २२. उत्पात मचाने वाले रोगी क्या करते हैं?

उत्तर–उत्पात मचाने वाले रोगी पलंग की टूटी हुई स्प्रिंग की शिकायत करते हैं। तुरन्त "स्पंजिंग" माँगते हैं। गर्म पानी का थैला उठाकर फेंकते हैं। कहते हैं–सिस्टर ! यह गर्म पानी का थैला है?

प्रश्न २३. रोगी के साथ आने वाले किस प्रकार की धमकी देते हैं?

उत्तर–रोगी के साथ आने वाले मेहतरों और कुलियों को धमकी देते हुए कहते हैं "पेशाबदानी साफ करके जल्दी दे जाओ .... यह मत समझो कि ऐसे-वैसे का रोगी है।"

प्रश्न २४. रोगी के आदमियों द्वारा डाँटे जाने पर कुली क्या बड़बड़ाता है?

उत्तर–रोगी के आदमियों द्वारा डाँटे जाने पर कुली बड़बड़ाता है, "हाँ, भाई, राज ही तुम लोगों का है।"

प्रश्न २५. लेखक को बैड पर पड़े-पड़े यह किस प्रकार अनुमान हुआ कि कोई बच्चा चल बसा है।

उत्तर–बेबी वार्ड से किसी की रोती आवाज से लेखक को अनुमान हुआ कि कोई बच्चा चल बसा है। माँ रो-रोकर कह रही थी–"तोता रे तोता! लाल लाल होठ तेरे काले क्यों पड़ गये रे?"

प्रश्न २६. बैड पर पड़े-पड़े यह किस प्रकार अनुमान हुआ कि प्रसव में छटपटाती कोई माँ मर गयी है?

उत्तर–बैड पर पड़े-पड़े यह अनुमान कि प्रसव में छटपटाती कोई माँ मर गई है इस आधार पर हुआ कि लेखक ने पतली तीखी आवाज विमेन्स हॉस्पीटल से आती हुई सुनी थी।

प्रश्न २७. मिस साहिबा को बैड नं ४ से विरक्ति क्यों हुई?

उत्तर–बैड नम्बर चार के न हिलने डुलने तथा चुपचाप लेटे रहने के कारण मिस साहिबा को विरक्ति हुई।

प्रश्न २८. बैड नम्बर चार के मरने का क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर–बैड नम्बर चार के मरने का कोई प्रभाव नहीं हुआ। न किसी का सुहाग लुटा। न किसी की आँख का तारा टूटा। कोई सामूहिक रुदन भी नहीं हुआ।

प्रश्न २९. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों की क्या विशेषता है?

उत्तर–फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों की विशेषता है– (१) ग्रामीण जीवन की झलक। (२) आत्मीयता। (३) बोलचाल का लहजा।

प्रश्न ३०. रेणुजी की विशेष चर्चित कहानियों के नाम लिखिए।

उत्तर–रेणुजी की विशेष चर्चित कहानियों के नाम हैं–(१) तीसरी कसम। (२) लाल पान की बेगम। (३) रस प्रिया।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "यह रिपोर्ताज अस्पताल की यथार्थ जिन्दगी का आइना है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

***उत्तर*–१. आइना**–आइना ऐसा पदार्थ है जिसमें किसी भी व्यक्ति या वस्तु का स्वरूप ज्यों का त्यों प्रतिबिम्बित होता है। फणीश्वर नाथ रेणु का स्टिल लाइफ रिपोर्ताज भी किसी आइने से कम नहीं है। इस आइने में अस्पताल के जीवन की यथार्थ स्थिति हमारी दृष्टि में झलकने लगती है। रोगियों का जीवन तथा चिकित्सकों का व्यवहार यथार्थ रूप में उभरकर नेत्रों के सम्मुख नृत्य करने लगता है।

२. अस्पताल की चहल पहल–अस्पताल में रोगी को जब प्रवेश प्राप्त होता है, रोगी की जब चिकित्सा प्रारम्भ होती है, उसे जब विस्तार दे दिया जाता है तब व्यक्ति का वास्तविक नाम परिवर्तित हो जाता है। व्यक्ति का नाम उसके बैड नम्बर के नाम से जाना जाता है।

अस्पताल में प्रविष्ट होते ही, रोगी को जब किसी वार्ड में स्ट्रेचर द्वारा लाया जाता है तो उस वार्ड में रोगियों की चीख पुकार में वृद्धि हो जाती है। रोगी के साथ आने जाने वालों के कारण चहल पहल बढ़ जाती है।

३. अस्पताल का जीवन–रोगी के आने और उसके रोग की परीक्षा के पश्चात् टैम्प्रेचर चार्ट बनाया जाता है। नर्सें डॉक्टर के निर्देशानुसार एक रोगी के पश्चात् दूसरे रोगी के पास जाती और सेवा कार्य करती हैं। उन पर स्थान-स्थान पर छींटा कसी भी की जाती है किन्तु नर्सें सैंडिल से खुट-खुट शब्द करती हुई रोगियों को दवा देती हुई अपने सेवा कार्य में व्यस्त रहती हैं। बैड नम्बर के नाम से रोगी को पुकारते हुए किसी को उठने, किसी को मुँह खोलने तथा किसी को दवा निंगलने को कहती हुई आगे बढ़ती जाती है। उन्हें किसी की फब्तियों की चिन्ता नहीं। किसी के भला-बुरा बोलने की ओर ध्यान नहीं।

४. यथार्थ जिन्दगी का आइना–रिपोर्ताज 'स्टिल लाइफ' में लावारिस रोगी की मृत्यु पर लापरवाही, मृतक के स्वजनों का रोना-धोना, नर्सों तथा डाक्टरों के व्यवहार की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की गयी है। अतः यह रिपोर्ताज अस्पताल की यथार्थ जिन्दगी का आइना कहना उचित है।

प्रश्न २. इस पाठ (स्टिल लाइफ) में लेखक ने अस्पताल की किन विकृतियों की ओर संकेत किया है?

उत्तर–फणीश्वरनाथ रेणु लिखित 'स्टिल लाइफ' में अस्पताल की विकृतियों की ओर संकेत किया गया है। लेखक ने उन सभी विकृतियों का वर्णन किया है जो अस्पतालों में प्रतिदिन देखने को मिलती हैं।

१. रोगियों के टैक्प्रेचर में असावधानी–अस्पतालों में रोगी का टैम्प्रेचर लेने में इस प्रकार की असावधानी देखी जाती है कि कभी-कभी स्वस्थ व्यक्ति का टैम्प्रेचर उस रोगी के स्थान पर अंकित कर दिया जाता है। बैड नम्बर चार का उदाहरण देते हुए लेखक ने अपनी बात पर बल दिया है और लिखा है कि उस रोगी के स्थान पर एक स्वस्थ व्यक्ति का टैम्प्रेचर अंकित किया गया।

२. कर्मचारियों में संवेदना का अभाव–अस्पताल के डॉक्टर, नर्स तथा अन्य कर्मचारियों में संवेदना का अभाव होता है। वे किसी रोगी के असाध्य रोगों में तो दूर, किसी की मृत्यु पर भी कोई संवेदना प्रकट नहीं करते। उनमें सर्वथा हृदय-हीनता ही दृष्टिगोचर होती है। सगे-सम्बन्धियों को रोते-बिलखते देखकर भी वे हृदय-शून्य बने रहते हैं। उन्हें डाँटकर चुप करते हुए कहते हैं–"बाहर जाकर रोना पीटना करो। हल्ला नहीं।"

३. नर्सों के साथ सद्व्यवहार में कमी—अस्पताल में नर्सों के साथ सद्व्यवहार नहीं होता। उन्हें देखकर रोगी तथा उनके साथी हँसते हैं। फब्तियाँ कसते हैं। कभी-कभी तो हँसी मजाक करके नर्सों को अप्रसन्न भी कर देते हैं। शरारत पूर्ण माँगे रखने में भी संकोच नहीं करते।

४. असमान व्यवहार—अस्पतालों में समान व्यवहार नहीं होता। निर्धन तथा असहाय व्यक्तियों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। फणीश्वर नाथ रेणु ने बैड नम्बर चार के रोगी की मृत्यु के पश्चात् वहाँ के कर्मचारियों द्वारा लिखे शब्दों का उल्लेख इस प्रकार किया है—

रोगी का नाम—रोगी अचेतनावस्था में। **पता**—लावारिस टैम्प्रेचर चार्ट पर, लाल रेखा के नीचे एक काली बिन्दी पड़ी हुई थी। सभी ने एक साथ हँसकर कहा—"धत्तेरे की जय हो।"

प्रश्न ३. "तकिये पर अनजाने ही दो बूँद आँख का पानी गिर गया।" लेखक की यह स्थिति क्यों बनी?

***उत्तर*—१. आँख का पानी**—आँख का पानी, किसी वेदना के कारण झरता है और दुःख के बादलों को छाँटने में सहायक होता है। दूसरों के दुःख से दुःखी होकर भी आँख से अश्रु-बिन्दु गिरने लगते हैं।

२. लेखक की स्थिति—लेखक कुछ अधिक ही संवेदनशील होता है। वह दूसरों के दुःख से दुःखी होता है। दूसरों की तड़पों से उसे भारी तड़पन होती है। अन्याय से घृणा होती है। अत्याचारों से वह सिहर उठता है।

३. लेखक पर प्रभाव—अस्पताल में डॉक्टरों तथा अन्य कर्मचारियों के संवेदना रहित व्यवहार का लेखक पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसके नेत्रों से आंसू की दो बूँदे गिर पड़ीं।

४. कारण—लेखक की आँख से पानी गिरने की स्थिति, अस्पताल के कर्मचारियों के संवेदना रहित व्यवहार के कारण बनी। बैड नम्बर चार के रोगी का "बैड-हैड-टिकिट" तथा "टैम्परेचर चार्ट" बन गया था, किन्तु वह किसी के सम्मुख कभी न रोया था न किसी से झगड़ा किया था। जब वह मरा तो रोगियों के रजिस्टर की पूर्ति में रोशनाई की एक बूँद और भी खर्च हो गयी।

मेडिकल स्टूडैण्ट्स वार्ड नर्स से बैड नम्बर चार का बैड-हैड टिकट देखने की इच्छा प्रकट करने लगे। नर्स पहले तो कुछ मुस्करायी। कुछ क्षण पश्चात् बैड-हैड-टिकट तथा टैंम्परेचर चार्ट निकालने लगी।

मेडिकल स्टुडैण्ट्स ने बैड-हैड टिकट को उलट-पलट कर देखा। इस टिकट पर रोगी के नाम के स्थान पर लिखा था—एक रोगी—अचैतन्यावस्था में। पते के स्थान पर लिखा था—लावारिस। टैम्परेचर चार्ट पर, लाल रेखा के नीचे एक काली बिन्दी थी।

सभी मैडीकल स्टुडैण्ट्स ने हँसते हुए कहा—"धत्तेरी की जय हो।"

प्रश्न ४. यदि आप अस्पताल में डॉक्टर होते तो बैड नम्बर चार के प्रति अपना दायित्व कैसे निभाते?

***उत्तर*—१. डाक्टर**—सच्चे अर्थों में डॉक्टर वह है जो सेवा भाव से रोगी की चिकित्सा करता है और अपने मधुर वचन तथा सद्व्यवहार से उसे प्रसन्न रखता है। जो मात्र धनार्जन की ओर अपनी दृष्टि रखता है, जिसे, रोगी की चिकित्सा करके उसे स्वस्थ बनाने में रुचि नहीं है, वह उत्तम डॉक्टर नहीं कहा जा सकता है।

२. डॉक्टर का दायित्व—बैड नम्बर चार का रोगी बिना किसी परिवारीजन को लिए अकेला ही आकर अस्पताल में प्रविष्ट हुआ था। ऐसा लगता था कि वह बेसहारा है। असहाय है तथा निर्धन है। ऐसे उपेक्षित रोगी का डॉक्टर के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता। यदि डॉक्टर भी उसकी उपेक्षा करेगा तो उसको सान्त्वना देने वाला, उसकी चिकित्सा करके जीवन देने वाला कौन बनेगा?

३. **दायित्व निभाना**—डॉक्टर को अपना दायित्व भली-भाँति निभाना चाहिये। प्रत्येक रोगी की ओर ध्यान देना चाहिए। बैड नम्बर चार की देखभाल वाला, उसका कोई परिवारीजन उसके साथ न होने के कारण वह असहाय था, निर्धन भी था। अतः ऐसे रोगी के प्रति डाक्टर होने की स्थिति में मेरा दायित्व होता कि मैं अपना अधिकाधिक समय उसकी चिकित्सा में लगाता। नर्सों को विशेषरूप से उसकी सेवा में जुटाता तथा आवश्यक दवाओं का विशेष प्रबन्ध करके उसकी चिकित्सा करता।

प्रश्न ५. इस पाठ (स्टिल लाइफ) को ध्यान में रखते हुए कोर्ट के वातावरण पर एक रिपोर्ताज लिखिए।

उत्तर—१. **कोर्ट**—कोर्ट न्याय सुलभता का प्रतीक है जहाँ व्यक्ति को अपनी शिकायत के निस्तारण का अवसर प्राप्त होता है। अपने अन्याय की गुहार करने तथा न्याय प्राप्त करने का कोर्ट से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है।

२. **वातावरण**—कोर्ट में पहुँचते ही, वहाँ की चहल-पहल वातावरण को चुस्त बनाती प्रतीत हुई। काले कोटधारी काले बादलों के समान मँडराते दिखायी दिये जिनमें जल नम्रता शून्यता दिखायी देने लगती है। हाँ, अपने मुवक्किलों पर क्रोध की वर्षा करते हुए देखे जा सकते हैं—"पैसा नहीं है तो, क्यों आए हो? न्याय पाने ? भूल जाओ न्याय। यहाँ राजा भोज नहीं बैठा है। जो तुम्हारी बातें सुनकर पसीज जाय। तुम्हें दूध का दूध और पानी का पानी करके तुम्हारे सम्मुख अन्याय मिटाने की बात करे।"

न्यायाधीश अधिवक्ताओं को लताड़ते देखे जा सकते हैं। यहाँ तक कह दिया जाता है—"क्यों सूखे शंख बजा रहे हो?"

पेशकार और अर्दलियों से घर आने और बाजार का काम काज निपटाने को कहना कोई बड़ी बात नहीं है।

मोटर कार की ओर बढ़ते हुए जब कोई न्यायाधीश अपने अर्दली से कहता है कि "आज मेम साहब शिकायत कर रही थीं कि सब्जी दो दिन से नहीं पहुँची है।"

"कल जन्माष्टमी है, दूध और खोये का प्रबन्ध आवश्यक है।" कार स्टार्ट हो जाती है और अर्दली खोआ के विचारों में खो जाता है।

प्रश्न ६. प्रस्तुत पाठ के आधार पर फणीश्वरनाथ "रेणु" की रचना शैली पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—**फणीश्वरनाथ 'रेणु'**—फणीश्वर नाथ 'रेणु' हिन्दी कथा साहित्य में जनवादी तथा समाजवादी कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।

२. **रचना शैली**—'रेणु' ने बिहार में अछूते अंचल की ग्रामीण रूढ़िवादिता एवम् अशिक्षा को अपने रिपोर्ताज का विषय बनाकर समस्त अस्पतालों में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा कर्तव्यहीनता का वर्णन किया है।

मनोवैज्ञानिकता, स्वाभाविकता, सजीवता तथा यथार्थवादिता फणीश्वरनाथ 'रेणु' की रचना शैली की विशेषता है। अस्पतालों के यथार्थ चित्रण में उनको पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है।

३. **भाषा**—लेखक फणीश्वरनाथ 'रेणु' को भाषा का धनी माना जाता है। भाषा में नवीन प्रयोग उनकी विशेषता है। भाषा की सरलता, स्पष्टता तथा रोचकता उनकी विशेषता है। अंग्रेजी शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग उनकी भाषा को आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाने में योग देता है।

शब्दों का लाक्षणिक तथा वातावरण के अनुकूल प्रयोग भाषा में नवीन जीवन शक्ति प्रदान करने वाला है।

रिपोर्ताज शैली के अन्तर्गत वर्णनात्मकता तथा चित्रात्मकता का अनुपम प्रयोग करके 'रेणु' ने अस्पताल के जीवन का सुन्दर चित्रण किया है।

प्रश्न ७. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) मर गया चार नम्बर। वह सिर्फ मर गया। किसी का सुहाग नहीं लुटा और न सी की आँख का तारा ही टूटा। उसके मरने के बाद किसी प्रकार के सामूहिक रूदन का कोई आयोजन नहीं हुआ। वह सिर्फ मर गया। सिर्फ मरने में अन्तर है।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश **'फणीश्वरनाथ 'रेणु'** लिखित **'स्टिल लाइफ'** रिपोर्ताज से उद्धृत है।

प्रस्तुत स्थल पर बैड नम्बर चार की मृत्यु के पश्चात् अस्पताल की गति विधि तथा ावरण को अप्रभावित बताते हुए लेखक कहता है—

व्याख्या—बैड नम्बर चार का कोई परिवारीजन उसके साथ न प्रवेश कराते समय था और अब जब कि उसकी अस्पताल में मृत्यु हुई। मृत्यु से विवाहित व्यक्ति की पत्नी का सुहाग ता है, किन्तु बैड नम्बर चार की मृत्यु से कोई स्त्री विधवा नहीं हुई जिससे पता लगता है उसकी पत्नी नहीं थी। वह अविवाहित था। उसकी माँ भी नहीं थी। यदि माँ होती तो नख-बिलख कर अपनी आँख के तारे के लिए करुण क्रन्दन कर रही होती।

परिवार का कोई सदस्य होता तो अवश्य ही वहाँ सामूहिक रूप से उस रोगी की मृत्यु पश्चात् विलाप कर रहा होता। ऐसे पत्नी, माँ तथा परिवार रहित व्यक्ति के लिए कौन ा? उसकी मृत्यु का किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह मर गया, ठीक ही हुआ। उसके े का किसी को कोई शोक नहीं हुआ। वह लावारिस जो था।

(ख) अस्पताल में दाखिल हुआ इन-डोर रोगियों के रजिस्टर के एक बूँद रोशनाई खर्च । वार्ड में आया टैम्प्रेचर चार्ट पर रोशनाई की दूसरी बूँद खर्च हुई। वह मर गया मरते रोगियों के रजिस्टर की खाना पूरी में तीसरी बूँद।

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश **'फणीश्वरनाथ 'रेणु'** लिखित **'स्टिल लाइफ'** रिपोर्ताज से अवतरित

प्रस्तुत स्थल पर बैड नम्बर चार के रोगी के लिए चिकित्सा में कोई व्यय नहीं किया ा। रोगी की मृत्यु तक अस्पताल की मात्र तीन बूँद रोशनाई व्यय हुई।

व्याख्या—बैड नम्बर चार के रोगी को जब वार्ड में प्रवेश दिया गया तो रजिस्टर में उसका लिखने में अस्पताल की रोशनाई की एक बूँद व्यय हुई।

रोगी के चार्ट पर तापक्रम अंकित करने में अस्पताल की रोशनाई की दूसरी बूँद खर्च हुई।

अस्पताल से तीसरी बूँद रोशनाई तब व्यय हुई जब उसकी मृत्यु पर रोगियों के रजिस्टर उसकी मृत्यु की खाना-पूर्ति करने में रोशनाई का प्रयोग हुआ। इस प्रकार बैड नम्बर चार चिकित्सा में अस्पताल से कोई व्यय नहीं किया गया। ऐसा लगा कि वह वार्ड में प्रविष्ट ा और मर भी गया। जिस प्रकार गर्म पानी के थैले का जल कुछ समय पश्चात् ठण्डा हो ा है, उसी प्रकार बैड नम्बर चार का रोगी भी कुछ समय पश्चात् ठण्डा हो गया। उसकी कत्सा की ओर किसी ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

प्रश्न ८. फणीश्वर नाथ 'रेणु' के 'स्टिल लाइफ' रिपोर्ताज की मूल संवेदना क्या है? प में वर्णन कीजिए।

उत्तर—फणीश्वर नाथ 'रेणु' का 'स्टिल लाइफ' हिन्दी रिपोर्ताज का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत ा है जिसमें अस्पताल जीवन का यथार्थ तथा प्रभावशाली वर्णन किया गया है।

रेणुजी ने एक वार्ड के बैड नम्बर चार रोगी को अपनी बात कहने का आधार बनाया है उस असहाय रोगी के माध्यम से यह सन्देश प्रसारित किया है कि लावारिस समझकर ी रोगी की उपेक्षा उचित नहीं है।

अस्पताल के चिकित्सकों तथा अन्य कर्मचारियों को ऐसे रोगियों की ओर तो विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिनका कोई साथी न हो। जो असहाय हैं निर्धन हैं, वे अस्पताल की चिकित्सा के वास्तविक अधिकारी हैं। लेकिन अस्पतालों में इसके विपरीत कार्य होता है संवेदना और सहायता के वास्तविक अधिकारियों को हर दशा में उपेक्षा का पात्र बना दिया जाता है। उसे उपहास का पात्र बना दिया जाता है।

लेखक ने स्टिल लाइफ रिपोर्ताज द्वारा चिकित्सा सुविधाओं को जन साधारण के लिए असम्भव बताते हुए यह संकेत दिया है कि चिकित्सा सर्व सुलभ होनी चाहिये। धनी-निर्धन बड़े-छोटे का भेद सर्वथा भुलाकर चिकित्सकों, नर्सों तथा अन्य कर्मचारियों को सहृदय तथा संवेदनशील होना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ-७३—ब्लड =रक्त, खून। बैक रैस्ट=पीठ को आराम पहुँचाने वाला। भृगु संहिता =ज्योतिष का ग्रन्थ। आउटडोर= बाहर से।

पृष्ठ-७४—मनहूस =अशुभ। हड़कम्प =तहलका। आइस-कैप =वर्फ की थैली। कानून बघारना =व्यर्थ के तर्क रखना। पार्टी-पेशेंट=किसी दल के सम्बद्ध रोगी।

पृष्ठ-७५—घोड़ा बेचकर सोना =गहरी नींद सोना। ललाट=मस्तक। विला गईं=नष्ट हो गयी, गायब हो गयीं, समा गयीं। एक्सपायर्ड=मर गया, मृत। रुदन=रोना।

(१)

वार्ड में दाखिल होते ही नये रोगियों की चीख-पुकार तेज हो जाती है, रोना-धोना बढ़ जाता है। नये वातावरण की प्रतिक्रिया बहुत तेजी से होती है। बुखार तेज हो जाता है, दिल की धड़कन बढ़ जाती है और आँखों की रोशनी कुछ ऐसी हो जाती है कि हर आदमी की सूरत भयावनी मालूम पड़ती है। यह अवस्था प्रायः चौबीस घण्टे तक रहती है। अस्पताल की भयावनी रातों में कभी पूर्णिमा का चाँद नहीं आता। बारहों महीने-तीसों रात अमावस्या की अँधियारी छायी रहती है। (पृष्ठ - ७३)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **फणीश्वरनाथ** 'रेणु' द्वारा लिखित '**स्टिल लाइफ**' रिपोर्ताज से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर फणीश्वर नाथ 'रेणु' नये रोगियों के प्रवेश से उत्पन्न अस्पताल की भयावह अवस्था का वर्णन करते हुए कहते हैं—

व्याख्या—अस्पताल के वार्ड में जब नये रोगियों का प्रवेश होता है तब उनकी चीख पुकार से वार्ड में पहले से ही उपस्थित रोगियों पर प्रतिक्रिया इस तीव्र गति से होती है कि उनका रोना धोना भी प्रारम्भ हो जाता है।

लेखक कहता है कि नये प्रविष्ट रोगियों पर भी अस्पताल के वातावरण का कम प्रभाव नहीं पड़ता। उनके हृदय की धड़कन में तीव्रता आ जाती है। उन्हें ज्वर में भी तीव्रता मालूम पड़ती है।

उन नए रोगियों को अस्पताल के प्रत्येक व्यक्ति की मूर्ति भयावह लगती है। सम्पूर्ण वातावरण भयंकर लगता है जो हर वक्त ही ऐसा बना रहता है।

'रेणुजी' अस्पताल के वातावरण को देखकर कहते हैं कि वहाँ रोगियों में हर घड़ी निराशा छायी रहती है। ऐसा लगता है कि आशा का संचार वहाँ के वातावरण में सम्भव ही नहीं है।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—सरल-सजीव भाषा जिसमें विदेशी भाषाओं के शब्दों की विशेषता।

(२) **शैली**—वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**—अस्पताल का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

(२)

बैड नम्बर चार एक्सपायर्ड। मर गया चार नंबर। यह सिर्फ मर गया। किसी का सुहाग ं लुटा और न किसी की आँख का तारा ही टूटा। उसके मरने के बाद किसी प्रकार के ूहिक रुदन का भी कोई आयोजन नहीं हुआ। वह सिर्फ मर गया। (पृष्ठ-७५)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **'फणीश्वर नाथ 'रेणु'** लिखित **'स्टिल लाइफ'** रिपोर्ताज से तरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर लेखक बैड नं० चार के एक्सपायर्ड (मृत) रोगी का एक चित्र ुत करते हुए कहता है—

व्याख्या—अस्पताल की स्थिति भी विचित्र है। जैसे ही नये रोगी आते हैं वहाँ रोगियों चीख पुकार बढ़ जाती है। रोने की आवाज भी अधिक सुनायी देने लगती है उससे भी धक रोने की मन दहलाने वाली आवाजें तब सुनायी देती हैं जब किसी रोगी की मृत्यु हो ी है। लेकिन **'फणीश्वरनाथ 'रेणु'** बैड नं० चार के रोगी की मृत्यु का अत्यन्त ही करुण विचित्र चित्र अंकित करते हुए कहते हैं कि यह रोगी जब अस्पताल में प्रविष्ट हुआ था किसी प्रकार की कोई सरगर्मी नहीं हुई थी। वह लावारिस था उसका कोई साथी या तेदार उसके साथ नहीं था। अतः उसकी मृत्यु पर कोई रोने वाला नहीं था। उसकी न तो पत्नी थी जिसका सुहाग उजड़ता। न उसकी माता-पिता थे जो उसकी मृत्यु पर शोकाकुल करते। उसकी मृत्यु पर सामूहिक रुदन का कार्यक्रम कौन करता? कोई रोने वाला ही था।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—सरल सजीव भाषा।

(२) **शैली**—वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**—मृत रोगी का करुण स्तूप चित्रित किया गया है।

(३)

ठंडे होते हुए 'हाटवाटर बैग' की तरह धीरे-धीरे वह ठंडा हो गया। अस्पताल में दाखिल -इन-डोर रोगियों के रजिस्टर के एक कोष्ट को भरने के लिए एक बूँद रोशनाई खर्च वार्ड में आया-टैम्प्रेचर चार्ट पर रोशनाई की दूसरी बूँद खर्च हुई। वह मर गया, मरे हुए यों के रजिस्टर की खाना पूरी में तीसरी बूँद.......। (पृष्ठ-७६)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **'फणीश्वरनाथ 'रेणु'** लिखित **'स्टिल लाइफ'** रिपोर्ताज से ृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर 'रेणुजी' बैड नं० चार के रोगी के मृत होने पर कहते हैं—

व्याख्या—बैड नं० चार का रोगी उसी प्रकार ठण्डा हो गया जिस प्रकार थैले में भरा गया जल धीरे-धीरे शीतल हो जाता है। वह रोगी ऐसा रहा जिसके प्रवेश के समय भी शान्ति और मृत्यु पर भी किसी प्रकार का रुदन या शोर नहीं हुआ। उसकी चिकित्सा की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। न चिकित्सक ने, न ही किसी कर्मचारी ने। केवल रोगी नाम द लिखने में एक बूँद स्याही खर्च हुई। चार्ट पर तापक्रम लिखने में स्याही की दूसरी बूँद हुई और अस्पताल की स्याही की तीसरी बूँद तब खर्च हुई जब बैड नं० चार की मृत्यु लिखा पढ़ी रजिस्टर में की गई और इस प्रकार बैड नम्बर चार का सब कुछ समाप्त या।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—सरल भाषा।

(२) **शैली**—वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**—एक रोगी का करुण चित्र चित्रित किया गया है।

९ भारतीय संस्कृति की देन

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

● *गागर में सागर*

निबन्ध—विचारात्मक सांस्कृतिक।

लेखक—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। **जन्म**—सन् १९०७। **स्थान**—छपरा (बलिया)। **मृत्यु**—सन् १९७९। **भाषा ज्ञान**—संस्कृत, हिन्दी। **सेवा**—शान्ति निकेतन में हिन्दी अध्यापक*काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष। पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष*उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष*उपाधि—लखनऊ विश्वविद्यालय से डी० लिट्*भारत सरकार द्वारा "पद्म भूषण"*केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

कृतियाँ— उपन्यास—चारु चन्द्र लेख*पुनर्नवा*बाणभट्ट की आत्मकथा*अनामदास का पोथा।

आलोचना—हिन्दी साहित्य की भूमिका*सूर साहित्य*कबीर*हिन्दी साहित्य का आदिकाल*नाथ सम्प्रदाय आदि।

निबन्ध संग्रह—विचार एवं वितर्क*कुटज*अशोक के फूल*कल्पलता*विचार प्रवाह*आलोक पर्व आदि।

भारतीय संस्कृति की देन—मानव संस्कृति के विविध पक्षों का ज्ञान आवश्यक है*विभिन्न साधना, कलात्मक प्रयत्न*सेवा-भक्ति*योग मूलक अनुभूतियाँ महान् तत्त्वों के ज्ञान में सहायक*संघर्षों से गुजरकर ही महान् संस्कृति का ज्ञान तथा आनन्द विभोर होना सम्भव है*हठधर्मी उचित नहीं है*स्थूल तथा सूक्ष्म वृत्ति को सन्तुष्ट रखना चाहिए *संगठन को गतिशील बनाने के लिए दण्ड-पुरस्कार की व्यवस्था की गयी*प्रयोजन से परे हार्दिक आनन्द का रूप संस्कृति है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर का क्रमाक्षर दाहिनी ओर कोष्ठक में लिखिए।

प्रश्न १. *"यह एक लेखक ऐसा दुर्लभ लक्ष्य है जिसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न आवश्य*
है।" लेखक ने किस लक्ष्य की ओर संकेत किया है?

(क) मानव सभ्यता में परिवर्तन (ख) भारतीय संस्कृति के मूल्यों की रक्षा

(ग) मानव संस्कृति का निर्माण (घ) स्थूल से सूक्ष्म की प्राप्ति।

उत्तर—(ग) मानव संस्कृति का निर्माण

प्रश्न २. *निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है—*

(क) श्रेष्ठ लक्ष्य सबके लिए भिन्न-भिन्न होते हैं।

(ख) विरोधी मतों में सत्य का अभाव होता है।

(ग) सम्पूर्ण सत्य विरोध पर आधारित हैं।

(घ) श्रेष्ठ लक्ष्य परस्पर विरोधी नहीं होते।

उत्तर—(घ) श्रेष्ठ लक्ष्य परस्पर विरोधी नहीं होते।

प्रश्न ३. संसार में मनुष्य का चरम लक्ष्य होता है–
(क) धर्म की प्राप्ति (ख) आनन्द की प्राप्ति
(ग) अर्थ की प्राप्ति (घ) कामनाओं की प्राप्ति।
उत्तर—(ख) आनन्द की प्राप्ति।

प्रश्न ४. भारतीय दर्शन का आधार है–
(क) मानव सभ्यता (ख) मानव संस्कृति
(ग) धर्म (घ) मानव ज्ञान। **उत्तर**—(ग) धर्म।

प्रश्न ५. इनमें सबसे स्थूल है–
(क) बुद्धि (ख) शरीर
(ग) मन (घ) प्राण। **उत्तर**—(ख) शरीर।

प्रश्न ६. 'भारतीय संस्कृति की देन' निबन्ध के आधार पर भारत में किसका विकास सम्भव नहीं हो सका–
(क) मन्त्र विद्या का (ख) तन्त्र विद्या का
(ग) ज्योतिष विद्या का (घ) दर्शन विद्या का।
उत्तर—(ग) ज्योतिष विद्या का।

प्रश्न ७. 'भारतीय संस्कृति की देन' निबन्ध में सत्य का रूप बताया है–
(क) विरोधी (ख) अविरोधी
(ग) दृढ़ (घ) दुर्बल। **उत्तर**—(ख) अविरोधी।

प्रश्न ८. सच्चे धर्म के विषय में बताया गया है कि धर्म–
(क) विरोधी होता है (ख) अविरोधी होता है
(ग) परिवर्तनशील होता है (घ) दूसरे धर्म को बाधित करता है।
उत्तर—(ख) अविरोधी होता है।

प्रश्न ९. समस्त गलतियों के बावजूद मनुष्य बढ़ रहा है–
(क) मानवता की ओर
(ख) मनुष्यता की उच्चतर अभिव्यक्तियों की ओर
(ग) उन्नति की ओर
(घ) आर्थिक विकास की ओर।
उत्तर—(ख) मनुष्यता की उच्चतर अभिव्यक्तियों की ओर।

प्रश्न १०. हमारे वाह्यकरण हैं–
(क) मन (ख) बुद्धि
(ग) कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय (घ) शरीर।
उत्तर—(ग) कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय।

प्रश्न ११. पृथ्वी अन्याय ग्रहों के साथ सूर्य के चारों ओर इस प्रकार नाचती रही–
(क) जिस प्रकार राधा कृष्ण के चारों ओर नाचती थी
(ख) जिस प्रकार नौकर मालिक के आगे पीछ नाचता है
(ग) जिस प्रकार खिलाड़ी के इशारे पर सरकस के घोड़े नाचते रहते हैं
(घ) जिस प्रकार मिनिस्टर के इशारे पर अधिकारी नाचते हैं।
उत्तर—(ग) जिस प्रकार खिलाड़ी के इशारे पर सरकस के घोड़े नाचते रहते हैं।

प्रश्न १२. सबसे अधिक सूक्ष्म है—

(क) शरीर (ख) म
(ग) बुद्धि (घ) नेत्र। **उत्तर**—(ग) बुद्धि

प्रश्न १३. ज्योतिषी कोटि-कोटि प्रकाश वर्षों में फैले हुए ग्रह नक्षत्रों की नाप-जोख किया क हैं—

(क) मन द्वारा (ख) बुद्धि द्वारा
(ग) कलम द्वारा (घ) अन्तरतम द्वारा।

उत्तर—(ग) अन्तरतम द्वारा

प्रश्न १४. बड़े-बड़े प्रयत्नों का रहस्य समझ में आ सकता है—

(क) मन को सन्तुष्ट करके (ख) इन्द्रियों को सन्तुष्ट करके
(ग) गहराई में पैठ करके (घ) बुद्धि को सन्तुष्ट करके।

उत्तर—(ग) गहराई में पैठ करके

प्रश्न १५. सबसे सूक्ष्म, ज्ञान का प्रमुख तत्त्व है—

(क) तप (ख) अन्न
(ग) प्राण (घ) आनन्द (अध्यात्म तत्त्व)

उत्तर—(घ) आनन्द (अध्यात्म तत्त्व)

प्रश्न १६. भारतीय दर्शन की विशेषता है—

(क) शारीरिक शुद्धि (ख) सत्य का अनुभव
(ग) बाह्य और अन्तःकरण की शुद्धि (घ) बैराग्य।

उत्तर—(ग) बाह्य और अन्तःकरण की शुद्धि

प्रश्न १७. चंचल चित्त को वश में करने के उपाय का नाम है—

(क) विज्ञान (ख) चंचलता का त्याग
(ग) योग (घ) इच्छाओं का त्याग। **उत्तर**—(ग) योग

प्रश्न १८. भारत के सांस्कृतिक पतन का मुख्य कारण है—

(क) स्वार्थपरता
(ख) वैराग्य की उपेक्षा
(ग) महान् आदर्शों को भूल जाना
(घ) नयी परिस्थितियों को अनुकूल न बनाना।

उत्तर—(ग) महान् आदर्शों को भूल जाना

सउत्तर अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. संस्कृति किसे कहते हैं?

उत्तर—मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओं को संस्कृति कहते हैं।

प्रश्न २. मनुष्य किस प्रकार के प्रयत्न करने पर महान् लक्ष्य तक पहुँच सकता है?

उत्तर—मनुष्य सत्कर्मों के प्रयत्न करने पर महान् लक्ष्य तक पहुँच सकता है।

प्रश्न ३. "संस्कृति" शब्द के साथ भारतीय विशेषण का क्या आशय है?

उत्तर—"संस्कृति" शब्द के साथ भारतीय विशेषण का आशय भारतवासियों द्वारा अधिग तथा साक्षात् कृत अविरोधी धर्म की बात है।

प्रश्न ४. मनुष्य के किस व्यवहार एवं मनोदशा को सभ्यता कहा है?

उत्तर—मनुष्य के नियमवद्ध तथा सामाजिक संगठन की मनोदशा को सभ्यता कहा है।

प्रश्न ५. लुहार की दुकान की खटाखट और धूल धक्कड़ से क्यों नहीं घबराना चाहिये?
उत्तर—लुहार की दुकान की खटाखट और धूल-धक्कड़ एक सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत करने है अतः घबराना नहीं चाहिए। एक दिन उसके द्वारा तैयार किए गए वीणा के तारों से मधुर त सुनने को मिलेगा जो मन को आनन्दित करेगा।

प्रश्न ६. सच्चा धर्म अविरोधी होता है। कैसे?
उत्तर—सच्चा धर्म विश्व में एक ही है। अतः वह अविरोधी होता है।

प्रश्न ७. मनुष्य के कर्तव्य क्या हैं? लिखिए।
उत्तर—मनुष्य के कर्तव्य हैं—(१) स्थूल की आवश्यकताओं की पूर्ति।
(२) सूक्ष्म तत्वों की आपूर्ति।

प्रश्न ८. सभ्यता के स्तम्भ कौन-कौन से हैं?
उत्तर—सभ्यता के स्तम्भ है—(१) नैतिक परम्परा, (२) आर्थिक व्यवस्था, (३) राजनीतिक ठन, (४) सौन्दर्य बोध।

प्रश्न ९. भारतीय संस्कृति के अनुसार ऋण कौन-कौन से हैं?
उत्तर—भारतीय संस्कृति के अनुसार तीन ऋण हैं—(१) देवऋण। (२) आचार्य ऋण। पितृ ऋण।

प्रश्न १०. "गहराई में बैठने" के कथन को मानव जीवन हेतु क्यों आवश्यक माना है?
उत्तर—मानव जीवन हेतु 'गहराई में बैठने' के कथन को इसलिए आवश्यक माना है क्योंकि करने से धर्म तथा सम्प्रदाय के मध्य के समस्त विरोध नगण्य हो जाते हैं।

प्रश्न ११. "बौद्धिक वैराग्य ही मनुष्य को संस्कृत बताता है।" इस कथन का आशय ताइए।
उत्तर—बौद्धिक वैराग्य से मनुष्य स्थिति प्रज्ञ हो जाता है और स्वार्थ से परे हो जाता है।

प्रश्न १२. "मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति है।" भारतीय संस्कृति की देन निबन्ध आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए। **(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, १९९३)**
उत्तर—मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ उसका धर्म, कला, भक्ति योगादि है जो संस्कृति का ण करती हैं।

प्रश्न १३. संस्कृति की सर्वसम्मत परिभाषा क्यों नहीं बन सकी है?
उत्तर—संस्कृति की सर्वसम्मत परिभाषा इसलिए नहीं बन सकी है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ी रुचि और संस्कारों के अनुसार इसका अर्थ समझता है।

प्रश्न १४. हजारीप्रसाद द्विवेदी कहाँ सोचने की जरूरत बताते हैं?
उत्तर—हजारीप्रसाद द्विवेदी वहाँ सोचने की जरूरत बताते हैं जहाँ विरोध दिखायी देता हो।

प्रश्न १५. महाभारत में कुधर्म किसे कहा गया है?
उत्तर—महाभारत में उस धर्म को कुधर्म कहा गया है जो दूसरे धर्म को वाधित करता हो।

प्रश्न १६. सच्चा धर्म कैसा होना चाहिए?
उत्तर—सच्चा धर्म अविरोधी होना चाहिए।

प्रश्न १७. भारतीय संस्कृति का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर—भारतीय संस्कृति का मुख्य उद्देश्य उसका अध्ययन, मनन और प्रकाशन है।

प्रश्न १८. प्रकृति का अचल विधान क्या है?
उत्तर—प्रकृति का अचल विधान यह है कि जो कुछ जैसा होना है वह होकर ही रहेगा।

प्रश्न १९. मनुष्य की मनुष्यता किस बात में है?

उत्तर—मनुष्य की मनुष्यता इस बात में है कि वह जो कुछ जैसा होने वाला है, उसको वैसा ही न मानकर जैसा होना चाहिए, उसकी ओर जाने का प्रयत्न करे।

प्रश्न २०. व्यक्ति को नाना प्रकार के नियम क्यों बनाने पड़े?

उत्तर—व्यक्ति को नाना प्रकार के नियम सामाजिक संगठन के लिए बनाने पड़े।

प्रश्न २१. लेखक ने बाह्यकरण किसे बताया है?

उत्तर—लेखक ने बाह्यकरण कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय को बताया है।

प्रश्न २२. भृगु ने ब्रह्म को जानने के लिए वरुण से जब प्रश्न किया तो उन्होंने क्या कहा?

उत्तर—भृगु ने ब्रह्म को जानने के लिए वरुण से जब प्रश्न किया तो उन्होंने उन्हें तप करने की आज्ञा दी।

प्रश्न २३. ब्रह्म और चरम सत्य क्या है?

उत्तर—आनन्द ही ब्रह्म है और चरम सत्य है।

प्रश्न २४. सभ्यता तथा संस्कृति में क्या अन्तर है?

उत्तर—व्यक्ति के बाह्य प्रयोजनों को लक्ष्य करने का विधान सभ्यता है तथा प्रयोजनातीत आन्तरिक आनन्द की अभिव्यक्ति संस्कृति है।

प्रश्न २५. भारत का दर्शन किस पर आधारित है?

उत्तर—भारत का दर्शन धर्म पर आधारित है।

प्रश्न २६. दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर—सिद्ध महात्माओं के देखे सत्यों को प्रतिपादित करने को दर्शन कहते हैं।

प्रश्न २७. 'भारतीय संस्कृति की देन' के अनुसार व्यक्ति गलत वस्तु को सत्य कब समझता है?

उत्तर—'भारतीय संस्कृति की देन' के अनुसार व्यक्ति गलत वस्तु को सत्य तब समझता है जब उसका बाह्य भीतर शुद्ध तथा पवित्र नहीं है।

प्रश्न २८. मन को किस प्रकार नियन्त्रण में लिया जा सकता है?

उत्तर—मन को अभ्यास तथा वैराग्य के द्वारा नियन्त्रण में लिया जा सकता है।

प्रश्न २९. वास्तविक वैराग्य कब हो सकता है?

उत्तर—वास्तविक वैराग्य, समस्त इन्द्रियों से स्वयं को पृथक् करके हो सकता है।

प्रश्न ३०. सच्चाई तक किस प्रकार पहुँचा जा सकता है?

उत्तर—सच्चाई तक, बौद्धिक वैराग्य द्वारा पहुँचा जा सकता है।

प्रश्न ३१. साधना के लिए किन ऋणों से मुक्ति आवश्यक है?

उत्तर—साधना के लिए देव ऋण, ऋषि ऋण तथा पितृ ऋण से मुक्ति आवश्यक है।

प्रश्न ३२. सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के पतन का क्या कारण है?

उत्तर—सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के पतन का कारण हमारा महान् आदर्शों को भूल जाना है।

प्रश्न ३३. लेखक ने चरम सत्य किसे कहा है?

उत्तर—लेखक ने चरम सत्य आनन्द को कहा है।

प्रश्न ३४. चित्त की स्थिरता के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर—चित्त की स्थिरता के लिए अभ्यास तथा वैराग्य धारण करना चाहिए।

प्रश्न ३५. पितृ ऋण से मुक्ति का क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर—पितृऋण से मुक्ति का उपाय सन्तान उत्पन्न करना तथा उसे शिक्षित बनाकर समाज के हाथ सौंपना बताया है।

प्रश्न ३६. ऋषि-ऋण से किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है?

उत्तर—ऋषि-ऋण से मुक्ति ज्ञान की धारा की रक्षा और उसे अग्रसर करने से मिल सकती है।

प्रश्न ३७. देव ऋण से मुक्ति के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर—देव ऋण से मुक्ति के लिए हमें बाँटकर भोग करना चाहिए।

प्रश्न ३८. भारतवर्ष में प्रत्येक व्यक्ति से क्या आशा की गयी है?

उत्तर—भारतवर्ष में प्रत्येक व्यक्ति से यह आशा की गयी है कि वह समाज को स्वस्थ और शिक्षित सन्तान देगा। प्राचीन ज्ञान परम्परा की रक्षा करेगा तथा प्राकृतिक शक्तियों से प्राप्त सम्पत्ति को निजी समझकर दवाए नहीं रहेगा।

प्रश्न ३९. देव ऋण, ऋषि ऋण तथा पितृ ऋण बिना चुकाए मोक्ष की कामना करने वाले व्यक्ति को मनुस्मृति में क्या कहा गया है?

उत्तर—तीनों ऋण बिना चुकाये मोक्ष की कामना करने वाले व्यक्ति को मनुस्मृति में अधः पतित कहा गया है।

प्रश्न ४०. भारतीय संस्कृति की देन किस प्रकार का निबन्ध है?

उत्तर—भारतीय संस्कृति की देन एक सांस्कृतिक निबन्ध है।

लघूत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "संस्कृति मानव जीवन की पथ-प्रदर्शिका है। इस कथन को स्पष्ट करते हुए भारतीय संस्कृति की देन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—१. संस्कृति—मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति कही जाती हैं। सम्पूर्ण विश्व की एक सामान्य-मानव संस्कृति हो सकती है किन्तु यह संस्कृति अब तक समस्त विश्व में अनुभूत एवम् स्वीकार नहीं हो सकी है।

२. भारतीय संस्कृति की देन—भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति की जननी है। एशिया और यूरोप को अहिंसा तथा मैत्री का सन्देश भारतीय संस्कृति ने ही दिया।

३. आध्यात्मिकता—आध्यात्मिकता, भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। भारतीय संस्कृति में क्षुद्र स्वार्थों का परित्याग करके, आध्यात्मिक अनुभूतियों को प्रमुखता दी गयी है। विभिन्न देशों को आध्यात्मिक सन्देश भारत ने ही दिया। भौतिकवाद का भारतीय संस्कृति में सदा विरोध किया गया है।

४. साहित्य तथा दर्शन—भारतीय साहित्य को विश्व के प्रमुख देशों में महत्त्व प्रदान किया गया। भारतीय दर्शन को उच्च स्थान प्राप्त हुआ।

५. विज्ञान—भारतीय विज्ञान, शिल्प, चिकित्सा, ज्योतिषादि को विश्व में सम्माननीय स्थान प्राप्त है।

६. स्थूल की उपेक्षा—भारतीय विद्वानों ने वैराग्य को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म को प्रधानता दी है। क्षुद्र स्वार्थों की दासता कभी स्वीकार नहीं की है।

भारतीय धर्म, भारतीय मन्दिर, भारतीय मूर्तियों को विश्व में विशिष्ट स्थान प्राप्त है और मानव जीवन की पथ-प्रदर्शिका बनी हुई है।

प्रश्न २. भारतीय संस्कृति दुर्जेय रही है, विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है।" इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।

उत्तर-१. संस्कृति–धार्मिक साधनाओं, कलात्मक प्रयत्नों और सेवा, भक्ति तथा योग मूलक अनुभूतियों के भीतर से मनुष्य उस महान् सत्य के व्यापक तथा परिपूर्ण रूप को संस्कृति द्वारा व्यक्त करता है। अतः मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति कहलाती है।

२. सच्चा धर्म–सन्त रज्जबदास का कथन है–"सब साँच मिलै सो साँच है, न मिलै सो झूँठ।"

सन्त का यह कथन पूर्णतया सत्य है। जहाँ सत्य होता है, वहाँ विरोध नहीं होता। व्यक्ति को वहाँ विचार करने की आवश्यकता होती है जहाँ विरोध दिखायी देता है।

महाभारत में भी कहा गया है–

धर्मों यो बाधते धर्म न स धर्मो कुधर्म तत्।
अविरोधी युतो धर्मः स धर्मो मुनि सत्तम्॥

जो धर्म दूसरे धर्म को बाधिक करता है, वह धर्म नहीं है, कुधर्म है। सच्चा धर्म तो अविरोधी होता है।

३. भारत की दुर्जेय संस्कृति–भारतीय संस्कृति अविरोधी है। विशेष ऐतिहासिक परम्परा के अन्तर्गत मनुष्य के सर्वोत्तम को प्रकाशित करने के लिए ही इस देशवासियों ने सदा प्रयास किया है। भारतीयों को अपने प्रयत्न में सफलता ही प्राप्त हुई है। उसने भारतीय संस्कृति की धाक जमायी है। उसे दुर्जेय बनाया है। बुद्धि को सन्तोष प्रदान करने वाला बनाया है। वरुण के पुत्र भृगु की कथा इसका सजीव उदाहरण है।

प्रश्न ३. लेखक (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी) ने बाह्य प्रयोजन एवम् आन्तरिक अभिव्यक्ति किसको कहा है? उदाहरण सहित लिखिए?

उत्तर-१. लेखक–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा बिहार प्रान्तीय संस्कृति सम्मेलन, मंदार भागलपुर में दिया गया अभिभाषण हमारी पाठ्य पुस्तक में संग्रहीत है। व्यास प्रधान शैली के नायक द्विवेदी जी ने अपने भाषण में भारतीय संस्कृति की देन पर उत्तम प्रकाश डाला है।

२. बाह्य प्रयोजन–व्यक्ति के स्थूल प्रयोजनों के निवर्त्तकों को ही बाह्य प्रयोजन है। कर्मेन्द्रिय तथा ज्ञानेन्द्रिय की गणना बाह्य प्रयोजन में की जाती है। मन तथा बुद्धि सूक्ष्म प्रयोजन कहे जा सकते हैं किन्तु बुद्धि को हम बड़ी चीज नहीं कह सकते।

३. आन्तरिक अभिव्यक्ति–गीता में कहा है–

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिद्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

जो वस्तु केवल इन्द्रियों को सन्तुष्ट कर सके, वह बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है। जो वस्तु मन को सन्तुष्ट कर सके, अर्थात् हमारे भावावेगों को सन्तुष्ट कर सके, वह पहली से सूक्ष्म होने पर भी बहुत बड़ी नहीं है। जो बात बुद्धि को सन्तोष दे सके वह अवश्य ही बड़ी है। परन्तु वह भी बाह्य है।

बुद्धि से परे सन्तोष है जिसकी सबको इच्छा रहती है तथा आनन्द ही चरम सत्य है।

प्रश्न ४. प्रस्तुत निबन्ध में भाषा-शैली का जो सौष्ठव एवम् प्रौढ़त्व झलकता है, उसका विवेचन कीजिए।

उत्तर-१. निबन्ध–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'भारतीय संस्कृति की देन' उनके भागलपुर में दिये गये भाषण का एक अंश है जिसमें भारतीय संस्कृति की देन पर प्रकाश डाला गया है।

२. **भाषा**—द्विवेदी जी ने प्रस्तुत निबन्ध 'भारतीय संस्कृति की देन' में संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक एवम् सरल भाषा का प्रयोग किया है। संस्कृत के अतिरिक्त उर्दू, फारसी एवम् अँग्रेजी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया है। कहावतों तथा मुहावरों का भी समुचित प्रयोग किया है। भाषा में स्वाभाविकता, सजीवता तथा प्रवाह है।

३. **शैली**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने विचारों की अभिव्यक्ति में विविध शैलियों का प्रयोग किया है किन्तु उत्तम वक्ता के लक्षण होने के कारण उन्होंने प्रस्तुत निबन्ध में वक्तात्मक शैली का प्रयोग किया है। उनके मस्तिष्क में भावों का रूप व्याख्यान बनकर प्रस्तुत हुआ है जिसमें सजीवता तथा प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं।

प्रश्न ५. निम्न कथनों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) सम्पूर्ण सत्य अविरोधी होता है। जहाँ भी विरोधी दीखे, वहाँ सोचने की जरूरत होगी।

प्रसंग—प्रस्तुत कथन **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** लिखित **'भारतीय संस्कृति की देन'** नामक निबन्ध से अवतरित है।

प्रस्तुत स्थल पर द्विवेदी जी यह बताना चाहते हैं कि श्रेष्ठ लक्ष्य में परस्पर विरोध नहीं होता। जो सत्य है, उसका कोई विरोध नहीं कर सकता।

व्याख्या—श्रेष्ठ लक्ष्य का कोई विरोध नहीं कर पाता। वह तो सदा, सब काल तथा देशों में समान रूप में विद्यमान रहता है। सभी सम्प्रदायों में उसे समान रूप से मान्यता प्राप्त होती है। यदि दो सम्प्रदायों में कोई विरोध दिखायी दे तो उस स्थिति में विचार करने की आवश्यकता होती है अन्यथा सम्पूर्ण सत्य में किसी प्रकार के विरोध को स्थान नहीं होता।

(ख) प्रकृति अपने प्रयोग में कृपण कभी नहीं रही है।

प्रसंग—प्रस्तुत कथन **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** लिखित **'भारतीय संस्कृति की देन'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रस्तुत कथन में हजारीप्रसाद द्विवेदी ने प्रकृति को अत्यन्त ही दयालु तथा कृपालु बताया है।

व्याख्या—प्रकृति अनेकों प्रयोग करती हुई मनुष्य तक पहुँची है। उसके प्रयोगों में कभी स्वार्थपरता दृष्टिगोचर नहीं होती। प्रकृति कभी कंजूसी भी नहीं बरतती। वह सदा सदय रहती है। सबको सब कुछ प्रदान करती है। कभी अपनी बरबादी का भी विचार नहीं करती। दस वृक्षों के लिए दस लाख बीज बनाने में भी वह कभी कोई कमी नहीं करती।

(ग) प्रयोजन के जो अतीत है, जहाँ मनुष्य की आनन्दिनी वृत्ति ही चरितार्थ होती है, वहाँ मनुष्य की ऊर्ध्वगामिनी वृत्ति को सन्तोष होता है।

प्रसंग—प्रस्तुत कथन **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** लिखित **'भारतीय संस्कृति की देन'** निबन्ध से अवतरित है।

प्रस्तुत कथन में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि व्यक्ति कई रूपों में पशु तुल्य है। मनुष्य होने के नाते सूक्ष्म की तृप्ति उसका महान् उद्देश्य बताते हुए द्विवेदी जी कहते हैं—

व्याख्या—मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तत्व की ओर अग्रसर होना है। चित्त की उन्नति की ओर उठने वाली प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करना भी जीवन का उद्देश्य है। यह निश्चित है कि ऊर्ध्वगामिनी वृत्ति का सन्तोष तब होता है जब वह आनन्द का अनुभव करता है। अतएव आनन्द की परम भूमि में पहुँचना ही मनुष्य का महान् लक्ष्य है।

१० रामा

महादेवी वर्मा

● *गागर में सागर*

निबन्ध–संस्मरणात्मक रेखाचित्र।

लेखक–महादेवी वर्मा। **जन्म**– सन् १९०७। **स्थान**– फर्रुखाबाद (उ० प्र०)। **मृत्यु**– सन् १९८९। **भाषा ज्ञान**– हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत। **सेवा**–प्राचार्य महिला विद्यापीठ इलाहाबाद। साहित्यकार संसद की संस्थापिका 'पद्म-भूषण' से अलंकृत।

कृतियाँ–काव्य– नीहार*नीरजा*रश्मि*सान्ध्य गीत (यामा) दीपशिखा।

काव्यानुवाद– सप्तपर्णा।

समालोचना– विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था।

संस्मरण तथा रेखाचित्र– अतीत के चलचित्र*शृंखला की कड़ियाँ*स्मृति की रेखाएँ *पथ के साथी*क्षणदा आदि।

रामा– रामा का नाटा, कांला और गुण कुरूप शरीर। भावनाएँ उदार। विश्वास ममता की मूर्ति। अत्याचार सहन करने वाला। दशहरे का मेला। रामा से बिछुड़ना। घर पर रामा को डाँट फटकार। फूल के स्थान पर पिल्ला चुराने जाना। रामा का उपदेश। कान पकड़ना। माँ का एक मनोवैज्ञानिक उपदेश। रामा की खिन्नता। बालिकाओं से भिन्नता का कारण रामा का प्रभाव। रामा के पास कहानी तथा कहावत का विशाल कोष। रामा के कारण ही भयंकर रोग से रक्षा। रामा का पत्नी लीना। गृह कलह। पत्नी का त्याग। माँ के समझाने पर रामा का पत्नी लेने जाना किन्तु वापिस न आना।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर के क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए।

प्रश्न १. रामा बच्चों को अच्छा लगता था–

(क) अपने नाटे, काले, गढ़े शरीर के कारण
(ख) रोचक कहानियाँ एवं चुटकले सुनाने के कारण
(ग) लम्बी शिखा एवम् बुंदेल खण्डी जूतों के कारण
(घ) स्नेह सद्भावपूर्ण व्यवहार के कारण।

उत्तर–(घ) स्नेह सद्भाव पूर्ण व्यवहार के कारण।

प्रश्न २. पूजा और रसोई घर का कार्य माँ किसी को सौंप ही नहीं सकती थी।" इस कथन से माँ की किस मनोभावना का पता चलता है?

(क) शुद्धता (ख) आशंका
(ग) धार्मिकता (घ) जिम्मेदारी।

उत्तर–(क) शुद्धता।

प्रश्न ३. रामा के किस आंगिक सौन्दर्य के लिए "काले पत्थर की प्याली में दही" की उपमा दी गई है?

(क) संकीर्ण माथे पर खूब घनी भौहों के लिए
(ख) छोटी-छोटी स्नेह-तरल आँखों के लिए

(ग) सघन सफेद दन्त-पंक्ति के लिए
(घ) मुक्त हँसी-युक्त फूले हुए ओठों के लिए।

उत्तर–(ग) सघन सफेद दन्त-पंक्ति में लिए।

प्रश्न ४. किस शब्द में "कु" उपसर्ग नहीं है–
(क) कुरुप
(ख) कुपुत्र
(ग) कुमार्ग
(घ) कुशल।

उत्तर–(घ) कुशल।

प्रश्न ५. रामा अपनी कुडौलता की प्रदर्शनी करता रहता था–
(क) क्योंकि उसके पास कुर्ता नहीं था
(ख) क्योंकि बुंदेलखण्डी जूते नहीं थे
(ग) क्योंकि उसे अपनी कुरुपता का पता नहीं था
(घ) सजने की उपयुक्त सामग्री का अभाव था।

उत्तर–(ग) क्योंकि उसे अपनी कुरुपता का पता नहीं था।

प्रश्न ६. भूख तो ऐसा रोग नहीं है–
(क) जिसका इलाज न हो सके
(ख) जिसमें दवाओं से इलाज हो सके
(ग) जिसमें उपचार का क्रम टूट सके
(घ) जिसमें जीवित रहना असम्भव हो।

उत्तर–(ग) जिसमें उपचार का क्रम टूट सके।

प्रश्न ७. रामा, माँ की ममता का सहज की अधिकारी बन बैठा–
(क) विमाता के अत्याचार के कारण
(ख) बुंदेलखण्ड से भागने के कारण
(ग) अपनों तथा रहने का ठिकाना न होने के कारण
(घ) माँगने खाने के कारण।

उत्तर–(ग) अपनों तथा रहने का ठिकाना न होने के कारण।

प्रश्न ८. माँ के कारण रामा के आ जाने से घर बना रहता था–
(क) धर्मालोक
(ख) "जू"
(ग) कोठरी
(घ) भण्डार घर।

उत्तर–(ख) "जूं"।

प्रश्न ९. माँ को चिढ़ाने में बाबूजी को क्या लगता था–
(क) घबराहट
(ख) सुख
(ग) दुःख
(घ) ग्लानि।

उत्तर–(ख) सुख।

प्रश्न १०. माँ किसी की पात्रता-अपात्रता का मापदण्ड किसे मानती थी–
(क) खुशामद को
(ख) सेवा को
(ग) सहज संवेदना को
(घ) सुन्दरता को।

उत्तर–(ग) सहज संवेदना को।

प्रश्न ११. लेखिका के विचार से उपासना अनिवार्य है–
(क) शारीरिक शुद्धता के लिए
(ख) आत्मा के लिए
(ग) स्वर्ग प्राप्ति के लिए
(घ) बुराइयों से रक्षा के लिए।

उत्तर–(ख) आत्मा के लिए।

प्रश्न १२. माँ के महान् अनुष्ठानों में हम मंडराते रहते थे–
(क) उसकी रक्षा के लिए
(ख) बाधा डालने के लिए
(ग) सहायता के लिए
(घ) सफलता के लिए।

उत्तर–(ख) बाधा डालने के लिए।

प्रश्न १३. मैंने (लेखिका) दशहरे का मेला किस प्रकार देखने का निश्चय किया–

(क) रामा की अंगुली पकड़कर (ख) रामा की अंगुली छोड़कर

(ग) भाई की अंगुली पकड़कर (घ) भाई की अंगुली छोड़कर।

उत्तर–(ख) रामा की अंगुली छोड़कर।

प्रश्न १४. लेखिका को दशहरे के मेले में रामा का स्मरण कब हुआ–

(क) जब डर हुआ (ख) जब भूख लगी

(ग) जब बैचेनी हुई (घ) जब माँ की याद आई।

उत्तर–(ख) जंब भूख लगी।

प्रश्न १५. लेखिका ने हलवाई के द्वारा विश्राम के लिए किये गये आग्रह को स्वीकार कर लिया–

(क) क्योंकि वह भूखी थी

(ख) क्योंकि उसके पाँव थक चुके थे

(ग) क्योंकि वहाँ विश्राम का पर्याप्त प्रबन्ध था

(घ) क्योंकि मिठाइयों से सजे थालों से मिठाई मिलने का लोभ था।

उत्तर–(ख) क्योंकि उसके पाँव थक चुके थे।

प्रश्न १६. पड़ौसी ठाकुर साहब के घर से फूल चुराने को वे क्यों गये–

(क) अपना घर सजाने के लिए

(ख) रामा को खिझाने के लिए

(ग) ठाकुर साहब के घर की शोभा नष्ट करने के लिए

(घ) चोरी का आनन्द उठाने के लिए। **उत्तर**–(ख) रामा को खिझाने के लिए।

प्रश्न १७. भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से महादेवी वर्मा को किस कृति के कारण सम्मानित किया गया–

(क) नीरजा (ख) यामा

(ग) सप्तपर्णा (घ) सांध्य गीत। **उत्तर**–(ख) यामा

प्रश्न १८. महादेवी वर्मा द्वारा लिखित "रामा" को किस प्रकार की रचना कहा जायेगा–

(क) आत्मकथा (ख) रिपोर्ताज

(ग) संस्मरणात्मक रेखाचित्र (घ) यात्रा-वृत्त

उत्तर–(ग) संस्मरणात्मक रेखाचित्र।

सउत्तर अति लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "रामा पुरुष था परन्तु तब उससे भव्य साथी की कल्पना भी हमें असहाय थी।" महादेवी ने यह कहकर रामा के चरित्र की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर–महादेवी वर्मा ने रामा के चरित्र की सद्‌भावना, स्नेह तथा कर्तव्य परायणता आदि विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

प्रश्न २. "माँ के कारण हमारा घर अच्छा खासा "जू" बना रहता था।" यहाँ घर को "जू' क्यों कहा गया है।

उत्तर–लेखिका की माँ उदार थी। उनके यहाँ अनाथ व्यक्तियों को सहज ही शरण प्रदान की जाती थी। अतः विभिन्न प्रकृति और आकृति के व्यक्ति उस घर में उसी प्रकार रह रहे थे जिस प्रकार किसी जू में विभिन्न पशु-पक्षी रहते हैं। अतः घर को अच्छा खासा "जू" कहा गया है।

प्रश्न ३. "यह किस लोक का जीव ले आये हैं धर्मराज जी।" बाबूजी ने रामा के लिए ऐसा क्यों कहा?

उत्तर–घर में शरण दिए जाने पर ही रामा की कुरुपता पर व्यंग्य करते हुए बाबूजी ने ऐसा कहा, "यह किस लोक का जीव ले आये हैं धर्मराज जी।"

प्रश्न ४. इस पाठ के आधार पर बाल-स्वभाव की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–बाल-स्वभाव की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं– १. मिष्ठान प्रियता। २. स्पर्धा। ३. कहानी सुनने को उत्सुक। ४. गुड्डे गुड़िया का खेल।

प्रश्न ५. रामा और उसकी पत्नी के स्वभाव का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–रामा एक सरल ह्रदय, स्नेह तरल, स्वामिभक्त तथा कर्तव्यपरायण व्यक्ति था। उसकी पत्नी कंठोर, स्नेह रहित तथा विद्रोही स्वभाव की थी।

प्रश्न ६. इस पाठ के आधार पर लेखिका की माँ की किन चरित्रगत विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तर–इस पाठ के आधार पर लेखिका की माँ की निम्नलिखित चरित्रगत विशेषताओं का पता चलता है–१. मानवता। २. कोमलता। ३. क्षमा शीलता। ४. उदार भावना। ५. स्नेह-शीलता। ६. धार्मिकता।

प्रश्न ७. "रामा को हम विद्रोहियों को वश में रखने का गुरु कर्तव्य सौंप कर कुछ निश्चिन्त हो सकीं।" यहाँ किस गुरु कर्तव्य की ओर संकेत हैं?

उत्तर–बच्चों की भली-भाँति देख-रेख माता-पिता का गुरु-कर्तव्य है जिसकी ओर लेखिका ने संकेत किया है।

प्रश्न ८. यदि रामा की पत्नी का स्वभाव रामा के समान होता तो रामा के जीवन में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर–रामा की पत्नी का स्वभाव यदि रामा के समान होता तो वे दोनों सदा ही महादेवी वर्मा के परिवार से जुड़े रहकर अपना गृहस्थ जीवन सुखमय बना लेते।

प्रश्न ९. रामा के आगमन की कथा विचित्र क्यों है?

उत्तर–रामा के आगमन की कथा विचित्र इसलिये है कि वह एक भिखारी के समान महादेवी वर्मा के पैरों पर लेट गया और खाने को मांगने लगा। माँ ने उसे अपने यहाँ ही स्थान दे दिया।

प्रश्न १०. "पर वह था बडा घाघ पुजारी।" लेखिका ने रामा को घाघ पुजारी क्यों कहा?

उत्तर–रामा को घाघ पुजारी इसलिए कहा है कि वह एक चतुर पुजारी के समान अपने आराध्य बच्चों को प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया करता था।

प्रश्न ११. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाय–

धरती-आकाश एक करना, दम घुटना, महाभारत के अंकुर जमना, म्याऊँ की ठौर पकड़ना।

उत्तर– ***धरती-आकाश एक करना***—राम मोहन ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के लिए धरती-आकाश एक कर दिया।

दम घुटना–अशान्त वातावरण में तो मेरा दम घुटता है।

महाभारत के अंकुर जमना–सम्पत्ति विभाजन की असमानता से दोनों भाइयों में महाभारत के अंकुर जम गये हैं।

म्याऊँ की ठौर पकड़ना–चोर पकड़ने की बात तो सब करते रहे किन्तु म्याऊँ के ठौर पकड़ने को कोई तैयार नहीं हुआ।

प्रश्न १२. लेखिका के बाबूजी ने जब रामा को देखा तो उनकी माँ से क्या पूछा-

उत्तर-बाबूजी ने रामा को देखकर लेखिका की माँ से हँसते हुए पूछा-"यह किस लोक का जीव ले आये हैं' धर्मराज जी?"

प्रश्न १३. लेखिका का रामा की किस चीज से सनातन परिचय था।

उत्तर-लेखिका का नाटे, काले, गठे शरीर वाले रामा के बड़े नखों से लम्बी शिखा तक सनातन परिचय था।

प्रश्न १४. लेखिका को रामा की क्या-क्या वस्तु जानी बूझी थी?

उत्तर-लेखिका को रामा की सफेद हथेली और पेड़ की टेड़ी-मेढ़ी गाँठदार टहनियों जैसी उँगलियों वाले हाथ की रेखा जानी बूझी थी।

प्रश्न १५. रामा से चलने वाले विग्रह की सन्धि किस समय होती थी?

उत्तर-रामा से चलने वाले विग्रह की सन्धि केवल उससे कहानी सुनते समय होती थी।

प्रश्न १६. रामा को पुनर्जीवन देकर समस्या और जटिल क्यों हो गयी?

उत्तर-रामा को दूध, मिठाई आदि का रसायन देकर पुनर्जीवन तो दे दिया किन्तु समस्या जटिल इसलिए हो गयी क्योंकि भूख ऐसा रोग नहीं है जिसका उपचार निरन्तर न किया जाय। भूख को तो सदा ही शान्त करने की आवश्यकता है।

प्रश्न १७. बाबूजी की बाहर से लौटने पर घर में क्या दृश्य दिखायी देता था?

उत्तर-बाहर से लौटने पर बाबूजी को दिखायी देता था कि कोई लंगड़ा भिखारी बाहर के दालान में भोजन कर रहा है। कोई सूरदास खंजड़ी बजाता हुआ भजन सुना रहा है। पड़ौस का दरिद्र बालक नया कुर्ता पहिने आंगन में दौड़ रहा है।

प्रश्न १८. रामा के विषय में माँ ने बाबूजी को क्या बताया?

उत्तर-रामा के विषय में माँ ने बाबूजी को बताया कि उन्होंने रामा को खासतौर से अपने लिए नौकर रख लिया है।

प्रश्न १९. रामा के नौकर रखे जाने की बात सुनकर बाबूजी को क्या आश्चर्य हुआ?

उत्तर-रामा के नौकर रखे जाने की बात सुनकर बाबूजी को इस बात का आश्चर्य हुआ कि जो स्वयं क्षण भर विश्राम नहीं करता वह केवल अपने लिए नौकर क्यों रखेगा।

प्रश्न २०. अज्ञात कुलशील रामा के विषय में मां से तर्क करना व्यर्थ क्यों था?

उत्तर-माँ से तर्क करना इसलिए व्यर्थ था क्योंकि माँ की पात्रता-अपात्रता का मापदण्ड सहज संवेदना थी जिसके आधार पर उन्होंने रामा के सरल हृदय को परख लिया था।

प्रश्न २१. दशहरा-मेला देखते समय लेखिका के साथ क्या घटना हुई?

उत्तर-दशहरा मेला देखते समय रामा को चेतावनी की उपेक्षा करके लेखिका ने अंगुली छोड़ दी और बिछुड़ गयी। रामा को तलाश करने लगी, भूख से व्याकुल एक मिठाई की दुकान पर विश्राम करने लगी। दुकानदार से प्राप्त मिठाई खाकर अपनी कथा सुनाई।

प्रश्न २२. रामा को खिझाने के लिए बच्चों ने क्या चुराने का विचार किया?

उत्तर-रामा को खिझाने के लिए बच्चों ने पड़ौसी ठाकुर साहब के आंगन से फूल चुराने का विचार किया। किन्तु जीने की अन्तिम सीढ़ी पर पहुँचकर विचार में परिवर्तन आ गया।

प्रश्न २३. पिल्ला चुराने के लिए दिये गये दण्ड की शिकायत बच्चों ने माँ से किस प्रकार की?

उत्तर-बच्चों ने माँ से शिकायत की-"रामा ने मेरे कान खींच कर टेढ़े कर दिये हैं और बड़े भी अब डॉक्टर को बुलवाकर इन्हें ठीक करा दे और रामा को अँधेरी कोठरी में बन्द कर दो।"

प्रश्न २४. ऐसा कौन-सा गीत था जिसे रामा केवल बच्चों के लिए गाता था और बच्चे केवल उसके लिए सुनते थे।

उत्तर–रामा जिस गीत को केवल बच्चों के लिए गाता था और बच्चे केवल उसके लिए सुनते थे वह था–"ऐसा सिय रघुवीर भरोसो।"

प्रश्न २५. माँ को रामा की कौन-सी बात असहाय मालूम पड़ी?

उत्तर–माँ को रामा का अपनी पत्नी को पुराने खिलौने के समान फैंक देना असहाय मालूम पड़ा।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "हम पर रामा की ममता जितनी अथाह थी, उस पर हमारा अत्याचार भी उतना ही सीमाहीन था।" इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–१. **रामा**–रामा महादेवी वर्मा द्वारा लिखित संस्मरणात्मक रेखाचित्र "रामा" का प्रमुख पात्र है जिसके प्रति लेखिका ने अपने अगाध स्नेह तथा सहानुभूति का भाव प्रकट किया है। बाल स्नेही, सेवा परायण तथा सरल हृदय रामा अपनी विमाता के अत्याचारों से पीड़ित होकर अपने घर का परित्याग करके लेखिका के यहाँ सेवा कार्य करता है।

२. **रामा की अथाह ममता**–लेखिका ने रामा के चरित्र की विशेषता बताते हुए लिखा है–'रामा कुरुप था, परन्तु तब उससे भव्य साथी की कल्पना भी हमें असह्य थी।"

रामा का हाथ कठोर अवश्य था किन्तु रजाई से बच्चों को उठाने में उसके हाथों में कोमलता ही रहती थी।

बच्चों के हाथ-मुँह धुलाना और गीत-गाते जाना उसकी ममता को प्रकट करता है, वह गाता जाता था–"दूध बताशा राजा खाय।"

प्रत्येक बच्चे को सन्तुष्ट करने के लिए वह पृथक्-पृथक् रूप से कान में हौले से कहता था–"तुमई बड्डे राजा हौ जू, नन्हें नइयाँ।"

दूध पिलाने तथा फल खिलाने में भी उसकी अथाह ममता स्पष्ट झलकती है और यह स्वीकार करना पड़ता है कि रामा की ममता अथाह थी।

३. **रामा का अत्याचार**–रामा का बच्चों के प्रति स्नेह तथा ममता का व्यवहार था किन्तु उसकी कठोरता तथा अत्याचार भी कम नहीं था। प्रत्येक बालक स्वतन्त्रता चाहता है, परन्तु रामा बच्चों को लेश मात्र भी स्वतन्त्रता नहीं देता था। लेखिका ने दशहरे के मेले में जाने का वर्णन करते हुए लिखा है कि मेले में उंगली पकड़कर ही ले गया और सचेत किया, "उंगरिया जिन छोड़ियो राजा भइया।"

पिल्ला चुराकर लाते समय दोनों कानों से पकड़कर अधर में उठाते हुए रामा ने पूछा, "कहो जू, कहो जू, कित गए रहे?"

रामा में ममता तथा अत्याचार का ऐसा अद्भुत मेल था जो समय तथा परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तन में कोई वक्त नहीं लेता था। इसीलिए लेखिका ने रेखाचित्र में रामा का चरित्र अंकित करते हुए लिखा है–"हम पर रामा की ममता जितनी अथाह थी उस पर हमारा अत्याचार भी उतना ही सीमाहीन था।"

प्रश्न २. रामा के शरीर की बनावट और वेशभूषा को ध्यान में रखकर उसका शब्द चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर–१. **रामा**–रामा महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र का एक पात्र है जो अपनी विमाता के अत्याचारों के कारण लेखिका के घर एक घरेलू नौकर के रूप में कार्य करने लगा था।

२. **शरीर की बनावट**–संकीर्ण माथे पर घनी भौंहे, मोटी नाक, फैले हुए नथुने, काले होठ, सघन श्वेत दन्त पंक्ति, छोटे-छोटे बाल, लम्बी शिखा, नाटा, काला, कुरुप शरीर था रामा का।

३. **रामा की वेशभूषा**–घुटनों तक ऊँची धोती तथा मिर्जई रामा की विशेष वेशभूषा थी। कुर्ता लम्बा तथा अस्तर लगा होता था। सिर पर साफा, बुन्देलखण्डी जूते तथा हाथ में लाठी रामा को विशेष रूप से शोभा देती थी।

४. **उपसंहार**–हृदय में अथाह ममता लिए रामा उदार भावनाओं की प्रतिमूर्ति था जो घरेलू नौकर होते हुए भी पूर्ण सहानुभूति के साथ गृह-कार्य में मग्न रहता था। स्वभाव में सरलता किन्तु आवश्यकता के समय कठोरता की मूर्ति रामा एक विश्वास पात्र सेवक के रूप में प्रस्तुत होता है।

प्रश्न ३. 'रामा आज भी सत्य है, सुन्दर है और स्मरणीय है।' महादेवी के इस कथन के परिप्रेक्ष्य में रामा के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

***उत्तर*–१. रामा**–महादेवी वर्मा ने रामा को अपने संस्मरणात्मक रेखाचित्र में एक घरेलू सेवक के रूप में चित्रित किया है। वह स्वभाव से सरल, स्नेह एवम् सहानुभूति की मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

२. **सत्य**–रामा शरीर से काला तथा कुरुप है, किन्तु उसका हृदय स्नेह तथा सहानुभूति का आगार है। बच्चों को स्नेहपूर्वक जगाना, जलपान कराना तथा उनका मनोरंजन करना रामा की दैनिक चर्या है। एक घरेलू सेवक से यही अपेक्षाएँ है। आत्मीय भावनाओं से ही निर्वहन सम्भव है। सेवक की सहृदयता से ही उसका गुजारा है।

३. रामा शरीर से भले ही सुन्दर न दिखायी देता हो किन्तु वह हृदय का सुन्दर है। उसका व्यवहार बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण है। बच्चों को अपनापन देना उसका स्वभाव है। तभी तो बच्चे भी उससे प्रेम करते हैं।

४. **स्मरणीय**–महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरणात्मक रेखाचित्र 'रामा' में रामा के चरित्र को स्मरणीय बना दिया है। प्रातःकाल से रात्रिकाल तक उसके कार्यकलाप रामा को स्मरणीय बनाने में पूर्णरूपेण सहायक हैं। भावपूर्ण शैली में लेखिका ने रामा के चरित्र को विविध स्मृतियों के माध्यम द्वारा स्मरणीय बना दिया है। दशहरे के मेले में खिलौने क्रय करने के लिए किसी को कंधे पर बैठाया और किसी को गोद में लिया तथा उंगली पकड़ाते हुए उसका यह कहना सदा स्मरणीय रहेगा–"उंगरिया जिन छोड़ियो राजा भईया।"

रामा से बिछुड़ने पर ध्यान आया कि उँगरी छोड़ना कैसा कष्टदायक रहा।

कुत्ते के बच्चे को चुराये जाने पर रामा का बच्चों के कान पकड़कर अधर में उठाना और उपदेश देना सदा ही स्मरणीय रहेगा तथा रामा की स्वामिभक्त भी।

प्रश्न ४. रामा जैसे किसी अन्य पात्र की कल्पना करते हुए उसका संस्मरणात्मक रेखाचित्र अंकित कीजिए।

उत्तर–मुझे निर्धनों के प्रति सहानुभूति है, इसमें दो मत नहीं। किन्तु ऐसे व्यक्तियों से घृणा है और कोई संवेदना नहीं जो निर्धनता का ढोंग करते हैं। दूसरों से सहायता की प्रार्थना करते हैं। शारीरिक श्रम करने में जिनकी नानी मरती है।

कार्यालय से लौटने पर ज्ञात हुआ कि पिताश्री ने एक निर्धन की सहायता के रूप में उसे अपने यहाँ स्कूली बच्चों को पहुँचाने तथा लाने के लिए सेवा का अवसर प्रदान किया है।

कार्यालय-अवकाश-दिवस में उससे मेरी लगभग एक घण्टे तक बात हुई। उसके स्वभाव तथा कार्य-कलाप का मुझ पर भी प्रभाव पड़ा। नम्र तथा मितभाषी रघुनन्दन ने अपनी शालीनता तथा बातचीत से मुझे मोह लिया। अब तक, बच्चों के मुख से उसकी प्रशंसा सुनकर मैं

आशंकित था। मुझे बच्चों की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन आज एक घण्टे की बातचीत से मैं भी रघुनन्दन का प्रशंसक बन गया। मेरी सहानुभूति भी उसके प्रति बढ़ी और मैंने अन्य कार्यों का उत्तरदायित्व भी उसे सौंप दिया।

गेहुँआ रंग, सुन्दर चेहरा, गठा शरीर, छोटे-छोटे पीछे की ओर काढ़े गये उसके काले घुँघराले बाल बरबश ही चित्त को आकर्षित कर लेते थे।

नेकर तथा साधारण कपड़े की बुश शर्ट ही उसकी वेश भूषा थी। ठीक ढंग से वस्त्र धारण करना उसकी एक अन्य विशेषता थी। कार्य को पूर्ण रुचि के साथ सम्पन्न करना उसकी आदत थी। एक ही आवाज में "जी आया।" हाँ बाबूजी अभी आया। "माता जी ! आ रहा हूँ।" कहता हुआ दौड़-दौड़कर सबके कार्य निपटाना उसकी परिश्रम शीलता तथा आज्ञाकारिता का स्पष्ट प्रमाण था।

कहते हैं–भले आदमी अधिक दिन नहीं रहते। न कोई रोग, न कभी चारपाई पर पड़ना लेकिन दस मिनट में ही उससे विद्रोह हो गया। बच्चे उसका स्मरण करते ही रह गये। पिताश्री रघुनन्दन को रटते ही रह गये और वह एक मोटर की चपेट में आकर दूसरे लोक का वासी हो गया।

प्रश्न ५. इस पाठ को ध्यान में रखते हुए "बच्चों के लिए खिलौने का संसार" विषय पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–बच्चों को खेल अत्यन्त प्रिय होते हैं और उससे भी अधिक प्रिय होते हैं खिलौने। विभिन्न प्रकार के खिलौने। विभिन्न रंग के खिलौने। भाँति-भाँति के आकर्षक खिलौने उनके मन में गुदगुदी उत्पन्न कर देते हैं। उत्साह भर देते हैं। बच्चों का मन बहलाया करते हैं। उन्हें प्रसन्न बनाते हैं। उनके ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

कोई मेला हो, कोई प्रदर्शनी हो या कोई उत्सव हो बच्चों ने खिलौने जहाँ देखे वहीं उनका मन रम गया, खाना-पीना, उठना-बैठना सब कुछ भूलकर एक ही रट रह जाती है–हम हाथी लेगें, हमें घोड़ा चाहिए। मुझे तो यह मोर पसन्द है।" कोई कहता है–"यह तोता तो ऐसा लगता है कि अब उड़ा। अब उड़ा। मुझे तो यह तोता ही चाहिए। कितना बढ़िया है।"

मिठाई भी खिलौनों के सम्मुख फीकी पड़ जाती है। अच्छी नहीं लगती है। ऐसा होता है बच्चों के लिए खिलौनों का संसार जिसमें खिलौने ही खिलौने दिखायी देते हैं।

छोटे-छोटे बच्चों के सम्मुख छोटे-छोटे खिलौने उनके मन बहलाव का तो साधन है ही, उनके ज्ञान वर्द्धन में भी सहायक होते हैं। इसीलिए तो बच्चों के मनोवैज्ञानिक को पहचानते हुए बड़े लोगों ने प्लास्टिक के सुन्दर खिलौनों का बनाना प्रारम्भ किया है। चाबी से चलती रेल और कार बच्चों को आनन्द तो देती ही है उनके ज्ञान में भी वृद्धि करती है। वायुयान और जलयान के विषय में भी वे छोटी अवस्था में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

प्रश्न ६. "रामा" के आधार पर महादेवी की रचना शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–**१. महादेवी**–साहित्यकारों को हिन्दी की दीपशिखा महादेवी वर्मा ने अपनी लेखनी से साहित्यकारों को प्रकाश देने का अद्वितीय कार्य किया है। शिक्षित परिवार में उत्पन्न महादेवी वर्मा ने अपनी अनुभूति प्रधान लेखनी से साहित्य का श्रृंगार किया तथा भव्य के नीरस मरुस्थल को भी हरा भरा बना दिया।

२. भाषा–महादेवी वर्मा की भाषा प्रसाद, ओज तथा माधुर्य गुण से पूर्ण अत्यन्त सरलता लिए हुए है। संस्कृत शब्दों को अपनाया अवश्य है किन्तु भाषा की व्यापकता के लिए उर्दू, फारसी एवम् अंग्रेजी शब्दों का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है। भाषा में चुलबुलाहट उत्पन्न करने के लिए ग्रामीण तथा नागरिक शब्दों का यथास्थान प्रयोग हुआ है।

३. **शैली**–"रामा" महादेवी वर्मा का संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। जिसमें माधुर्य तथा ओज की ऐसी प्रधानता है जो चित्र के वास्तविक रूप का दर्शन कराने में समर्थ है। शब्द-चयन चुस्त है। रेखाचित्रों में महादेवी वर्मा ने परिचित व्यक्तियों की आकृति तथा उनके व्यवहार के शब्द चित्रों का सुन्दर चित्रण किया है।

प्रश्न ७. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) शैशव की स्मृतियों में एक विचित्रता है। जब हमारी भाव-प्रवणता गम्भीर और प्रशान्त होती है, तब अतीत की रेखाएँ कुहरे में से स्पष्ट होती हुई वस्तुओं के समान अनायास ही स्पष्ट से स्पष्टतर होने लगती हैं, पर जिस समय हम तर्क से उनकी उपयोगिता सिद्ध करके स्मरण करने बैठते हैं, उस समय पत्थर फेंकने से हटकर मिल जाने वाली पानी की काई के समान विस्मृति उन्हें फिर-फिर ढँक लेती है।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'रामा' संस्मरणात्मक रेखाचित्र से अवतरित है। प्रस्तुत स्थल पर लेखिका शैशव कालीन घटनाओं का स्मरण करती है और इस अवस्था की विचित्रताओं का उल्लेख करती हुई कहती है।

व्याख्या–कुहरा होने पर वस्तुएँ स्पष्ट नहीं दिखायी देती लेकिन कुहरा छट जाने पर जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु स्पष्ट दिखायी देने लगती है। उसी प्रकार बचपन के पश्चात् जब चेतना जाग्रत होती है तब अतीत भी स्मृतियाँ हृदय-पटल पर चित्रपट के समान आती जाती हैं। इनमें बचपन की यादें प्रमुख होती हैं। बचपन का स्मरण तथा उसकी उपयोगिता पर तार्किक दृष्टि से विचार करने पर बचपन की यादें इस प्रकार आती और विदा हो जाती है। जिस प्रकार प्रस्तर प्रहार से कोई पृथक् होती तथा पुनः छा जाती है और जल कभी शुद्ध कभी काई युक्त गन्दा दिखायी देता है।

(ख) वास्तव में जीवन सौन्दर्य की आत्मा है, पर वह सामंजस्य की रेखाओं में जितनी मूर्तिमत्ता पाता है, उतनी विषमता में नहीं। जैसे-जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'रामा' संस्मरणात्मक रेखाचित्र से अवतरित है।

प्रस्तुत अवतरण में लेखिका जीवन की पहचान के सम्बन्ध में बता रही है।

व्याख्या–जीवन का रूप सौन्दर्यशाली है। जीवन के मेल-मिलाप में जीवन का सौन्दर्य रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, लेकिन जीवन में जहाँ विषमता होती है, वहाँ यह रूप अधिक सजीव नहीं हो पाता। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है तैसे-तैसे वह मूल स्वरूप को विस्मृत करता जाता है वह सृष्टि के बाह्य रूपों की अनेकरूपता में घुलने लगता है उनसे पूर्णरूप से मिल जाता है और मूलस्वरूप का उसे कोई ध्यान नहीं रहता।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ–पृष्ठ-९०– विविधता = विभिन्नता, अनेकता। नख = नाखून। शिखा = चोटी। सनातन = पुराना।

पृष्ठ-९१– विग्रह = लड़ाई-झगड़ा। आहट = आवाज। शैशव = छुटपन, बचपन। अतीत = बीता काल। संकीर्ण = तंग, सिकुड़ा हुआ। साम्य = समानता। म्याऊँ का ठौर = बिल्ली का स्थान कार्य का कठिनतम भाग।

पृष्ठ-९२– अर्गला = जंजीर, सांकल, सिटकिनी। अक्षय = असीम, जो नष्ट न हो। क्लान्त = थका हुआ। हक्का बक्का = अचम्भित, आश्चर्य चकित। जू = अजायबघर, चिड़ियाघर।

गठियाते = गाँठ मारती हुई, पोटली बन्द करती हुई। विरक्ति = वैराग्य भाव, अनाशक्ति। उद्विग्न = व्याकुल, बेचैन।

पृष्ठ-९३– अज्ञात कुलशील = जिसके कुल तथा स्वभाव का पता न हो। अनुष्ठान = आराधना, शास्त्रानुसार कर्म। गुरु कर्तव्य = महान् उत्तरदायित्व, बड़ा कार्य। सर्वांग = सम्पूर्ण शरीर। मुख्य प्रक्षालन = मुँह धोना। लाजा = बच्चों की तोतली बोली-राजा। अमोध = अचूक, जो व्यर्थ न हो। उत्फुल्ल = प्रफुल्लित, प्रसन्न।

पृष्ठ-९४– अर्चना = पूजा। घाघ = चालाक, धूर्त। पुजामा = पूजा की सामग्री। हुलिया = आकृति तथा रंग-रूप।

पृष्ठ-९५– भाष्यकार = सूत्रों की व्याख्या करने वाला। शयनागार = शयनकक्ष, सोने के लिए कक्ष। संयत = सन्तुलित।

पृष्ठ ९६-९७– समकालीन = उस समय का। अभ्यर्थना = स्वागत। झावा = बड़ी डलिया, बड़ी टोकरी। पलायमान = भाग जाना। अनुभूति = अनुभव। सघन = घना।

पृष्ठ-९८– घर बसाना = शादी करना। प्रतिद्वंदी = विरोधी। नासमिय, मुँहझौंसा = गाली। सभीत = भयभीत, डरयुक्त। संशक्ति = शंकावान, शंका वाला। निषेध सूचक = मनाही का बोध कराने वाला। महाभारत = लड़ाई-झगड़ा। अंकुर = बीज।

पृष्ठ ९९-१००– अवज्ञा = आज्ञा का उल्लंघन। प्रतिशोध = बदला। निर्वाक = मौन, चुप। निस्तन्द्र = तन्द्रा या आलस्य रहित।

(१)

शैशव की समृतियों में एक विचित्रता है। जब हमारी भावप्रवणता गंभीर और प्रशान्त होती है, तब अतीत की रेखाएँ कुहरे में से स्पष्ट होती हुई वस्तुओं के समान अनायास ही स्पष्ट से स्पष्टतर होने लगती है पर जिस समय हम तर्क से उनकी उपयोगिता सिद्ध करके स्मरण करने बैठते है, उस समय पत्थर फैंकने से हटकर मिल जाने वाली, पानी की काई के समान विस्मृति उन्हें फिर-फिर ढक लेती है। (पृष्ठ-९१)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश **महादेवी वर्मा** लिखित **"रामा"** नामक रेखाचित्र से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखिका अपने शैशव की घटनाओं का चित्र प्रस्तुत कर रही है।

व्याख्या–बचपन की स्मृतियाँ भी विचित्र होती है। ये स्मृतियाँ पुनः नवीन हो उठती हैं जब हमारी चेतना गम्भीरता और शान्ति के रूप में होती है। ये स्मृतियाँ उसी प्रकार स्पष्ट होने लगती हैं जिस प्रकार-घना कुहरा हटने पर प्रत्येक वस्तु स्पष्ट झलकने लगती है।

महादेवी वर्मा कहती हैं कि जिस प्रकार काई को हटाने के लिए एक पत्थर का टुकड़ा फैंक देना ही पर्याप्त है काई दूर हो जाती है। पानी पर किसी प्रकार का काई का आचरण न रहने पर पानी स्वच्छ दिखायी देने लगता है किन्तु यह स्थिति अधिक समय तक नहीं बनी रहती। शीघ्र ही काई पुनः उस जल पर अपना आवरण फैलाने लगती है। यहाँ तक पुनः पानी को देखना कठिन हो जाता है। उसी प्रकार तर्कों द्वारा बचपन की स्मृतियाँ तो पुनः ताजी हो जाती है किन्तु कुछ समय पश्चात् ही विस्मृति के गर्त में समा जाती है और पानी की काई के समान विस्मृति का आवरण स्मृति को ढक लेता है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– अलंकृत भाषा।

(२) **शैली**– वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**– शैशव काल की विचित्रताओं पर प्रकाश डाला गया है।

(२)

वास्तव में जीवन सौन्दर्य की आत्मा है; पर वह सामंजस्य की रेखाओं में जितनी मूर्तिमत्ता पाता है, उतनी विषमता में नहीं। जैसे-जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं। बालक स्थूल विविधता से विशेष परिचित नहीं होता, इसी से वह केवल जीवन को पहचानता है। जहाँ से जीवन से स्नेह-सद्भाव की किरणें फूटती जान पड़ती हैं, वहाँ वह व्यक्त विषम रेखाओं की उपेक्षा कर डालता है और जहाँ द्वेष, घृणा आदि के धूम से जीवन ढका रहता है, वहाँ वह बाह्य सामंजस्य को भी ग्रहण नहीं करता। **(पृष्ठ-९९)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **महादेवी वर्मा** लिखित **"रामा"** नामक रेखाचित्र से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखिका बताना चाहती है कि बालक को जीवन की सच्ची पहचान होती है। उसे जीवन की विविधताओं का ज्ञान नहीं होता।

व्याख्या–महादेवी वर्मा कहती हैं कि सौन्दर्य के लिए सच्चा जीवन अपेक्षित है, जीवन को सौन्दर्य की आत्मा बताते हुए लेखिका कहती है कि जीवन में ताल-मेल होना चाहिए। विषमताओं से पूर्ण जीवन सुन्दर नहीं कहा जा सकता। जीवन का बाह्यरूप उलझन में डालने वाला होता है। व्यक्ति जीवन की मूलभूत समस्याओं को भी उसकी उलझन में भूलता जाता है।

लेखिका का कथन है कि बालक को विविधताओं का तो ज्ञान नहीं होता किन्तु जीवन की प्रत्येक गति-विधि से पूर्णरूपेण परिचित होता है। उसे जीवन से स्नेह प्राप्त होता है। सद्भावना प्राप्त होती है। फलतः वह उसे विषमताओं से दूर रखता है। जहाँ से उसे द्वेष, घृणा आदि प्राप्त होते हैं, वहाँ उसे सामंजस्य से भी दूर रहने की चाह होती है। वह सामंजस्य को भी ग्रहण नहीं करता।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल तथा अलंकृत भाषा।

(२) **शैली**–वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**–सच्चे जीवन की झलक, बच्चे को प्राप्त रहती है।

(३)

पर मां को अन्याय का कोई भी रूप असहाय था–रामा अपनी पत्नी को हमारे पुराने खिलौने के समान फैंक दे, यह उन्हें बहुत अनुचित जान पड़ा, इसलिए रामा को कर्तव्य ज्ञान सम्बन्धी विशुद्ध और जटिल उपदेश मिलने लगे। इस बार रामा के जाने में वही करुण विवशता जान पड़ती थी, जो उस विद्यार्थी में मिलती है, जिसे पिता के स्नेह के कारण मास्टर से पिटने जाना पड़ता है। (पृष्ठ-९९)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **महादेवी वर्मा** लिखित **रामा** संस्मरणात्मक रेखाचित्र से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखिका ने अपनी माँ के उस रूप को चित्रित किया है जिसमें वह सदा अन्याय का विरोध करती हैं।

व्याख्या–माँ को अन्याय किसी भी रूप में सहन नहीं होता था। इसीलिए तो उन्हें रामा का अपनी पत्नी के साथ किया गया व्यवहार कदापि उचित नहीं लगा। माँ को रामा की यह बात सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण लगी कि रामा ने अपनी पत्नी को इस प्रकार त्याग दिया था जिस प्रकार टूटे हुए खिलौने को त्याग दिया जाता है। उपेक्षित समझा जाता है।

माँ ने रामा के इस अन्यायपूर्ण व्यवहार के लिए उसे बहुत कुछ समझाया। रामा को उसके कर्तव्य से परिचित कराया। उपदेश दिए। तब कहीं रामा के मन में यह बात समायी कि उसे अपनी पत्नी को ले आना चाहिए। उसकी यह इच्छा नहीं थी कि पत्नी को लाया जाय किन्तु माँ के उपदेश तथा माँ के कर्तव्यज्ञान ने उसे इस प्रकार विवश कर दिया जिस प्रकार किसी विद्यार्थी को अपने गुरुजी से पिटने को विवश हो जाना पड़ता है। वह जानता है कि गुरुजी

द्वारा पिटाई होगी किन्तु उनके स्नेह के कारण वह पिटाई को भी कुछ महत्व नहीं देता। तुरन्त ही आज्ञा का पालन करता है। उसी प्रकार रामा भी विवश होकर अपनी पत्नी को लेने चला गया।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– अलंकार युक्त भाषा।

(२) **शैली**– वर्णनात्मक शैली।

(३) **अन्य**– माँ के अन्याय विरोधी स्वरूप को चित्रित किया है।

११ अकेलापन और पार्थक्य

(गजानन माधव मुक्तिबोध)

- ***गागर में सागर***

निबन्ध– डायरी।

लेखक– गजानन माधव मुक्तिबोध। **जन्म**– सन् १९१७। **स्थान**– श्योपुर (ग्वालियर)। **मृत्यु**– सन् १९६४। **भाषा ज्ञान**– अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, मराठी, उर्दू आदि। **सेवा**– पत्रकारिता, वायुसेना में सेवा। काव्य रचना।

कृतियाँ–काव्य संग्रह– भूरी-भूरी खाक धूल है*चाँद का मुँह टेढा है।

आलोचना– नयी कविता का आत्म संघर्ष, एक साहित्यिक की डायरी, नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, सतह से उठता आदमी।

रचना संग्रह– मुक्ति बोध रचनावली भाग १ से ६ तक।

अकेलापन और पार्थक्य– साहित्यकार जब अपने आपको अकेला समझता है तो उसकी प्रवृत्ति रचना की ओर होती है। समाज से पृथक रहना एक विडम्बना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह असन्तुष्ट रहता है। सामाजिक समस्याओं का भली भाँति अध्ययन नहीं कर पाता। साहित्यकार में किसी की रुचि नहीं होती। कभी-कभी तो साहित्य रचना बन्द करने को मन होता है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(सही उत्तर के क्रमाक्षर दाहिनी ओर के कोष्ठक में लिखिए।)

प्रश्न १. *"हर आदमी को सोचने-विचारने के लिए मन-मन्थन के लिए एकान्त चाहिए जिसमें केवल वह ही वह हो और कोई न हो।" लेखक ने विचार हेतु किस तत्व की अत्यधिक आवश्यकता समझी?*

(क) अकेलापन (ख) पार्थक्य

(ग) एकान्त (घ) चिन्तकों का समूह।

उत्तर–(ग) एकान्त।

प्रश्न २. *पार्थम्य को दूर करने के लिए मुख्यतः किस गुण की आवश्यकता होती है–*

(क) सहानुभूति पूर्ण गहरी मनुष्यता (ख) आत्मीयता

(ग) निःस्वार्थ प्रेम (घ) परस्पर मिलना जुलना।

उत्तर–(क) सहानुभूति पूर्ण गहरी मनुष्यता।

प्रश्न ३. "मन अपने को भूनकर खाता है।" इससे मुक्त होने के लिए आवश्यकता है-

(क) अच्छी पुस्तकों की (ख) अच्छी शिक्षा की

(ग) मार्गदर्शी मित्र की (घ) उपयुक्त कर्म की।

उत्तर-(ग) मार्गदर्शी मित्र की।

प्रश्न ४. लेखक किस प्रकार के उपन्यास को पढ़ने के लिए चाहता है-

(क) जो सामाजिक हो

(ख) जो राजनीतिक हो

(ग) जिसमें उस जैसी समस्या वाले व्यक्ति का चरित्र हो

(घ) जिसमें जासूसी घटनाएँ दी गयी हों।

उत्तर-(ग) जिसमें उस जैसी समस्या वाले व्यक्ति का चरित्र है।

प्रश्न ५. लेखक ने आधुनिकतावादियों को देखा है और उनके विषय में कहा है-

(क) वह ही सत्य है (ख) वह सच्चा समझा है

(ग) वह एक स्वांग है (घ) वह समस्या निरोधक है

उत्तर-(ग) वह एक स्वांग है।

प्रश्न ६. कविता के खुद फटेहाल होने का कारण है-

(क) कविता का समृद्ध न होना (ख) अच्छे कवियों का अभाव

(ग) पार्थक्य (घ) उपेक्षा। **उत्तर**-(ग) पार्थक्य।

प्रश्न ७. लेखक ने कविता लिखना अपने लिए कैसा माना है-

(क) उत्तम (ख) मूर्खतापूर्ण

(ग) लाभप्रद (घ) कष्टप्रद। **उत्तर**-(ख) मूर्खतापूर्ण।

सउत्तर अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. व्यक्ति के मन में बेचैनी घर किए कब रहती है?

उत्तर-व्यक्ति के मन में बेचैनी तब घर किए रहती है जब वह अपनी समस्याओं से सम्बन्धित साहित्य को अध्ययन के लिए चाहता है।

प्रश्न २. लेखक के अनुसार बेचैनी से मुक्त होने का कौन-सा मार्ग है?

उत्तर-लेखक के अनुसार बेचैनी से मुक्त होने का मार्ग यह है कि उसे देशी या विदेशी ऐसा साहित्य अध्ययनार्थ उपलब्ध हो जिसके द्वारा उसकी समस्याओं पर प्रकाश पड़े।

प्रश्न ३. लेखक प्रस्तुत निबन्ध में आधुनिक साहित्यकारों के प्रति अपना क्या दृष्टिकोण व्यक्त करता है?

उत्तर-लेखक प्रस्तुत निबन्ध में अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहता है कि साहित्यकार को अपने साहित्य में उन सभी समस्याओं तथा प्रश्नों का समावेश करना चाहिए जो वातावरण को विषैला बनाते हैं। इन समस्याओं से तटस्थ रहना ठीक नहीं है।

प्रश्न ४." जिस चबूतरे पर मैं खड़ा हूँ उसके पाये का यह पाप है।" इस कथन में लेखक का क्या दर्द छिपा हुआ है।

उत्तर-चबूतरे के पाये का पाप लेखक ने उन मान्यताओं को कहा है जो समाज में विकृति को बढ़ावा दे रही हैं। लेखक को समाज की सामर्थ्य हीनता पर भी अधिक पीड़ा होती है जो शोषण आदि बुराइयों को दूर नहीं कर पाती।

प्रश्न ५. लेखक ने आजकल आदमी में दिलचस्पी कम होने का मुख्य कारण क्या माना है? स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– आदमी में दिलचस्पी कम होने का मुख्य कारण लेखक ने पार्थक्य को माना है। सहानुभूतिपूर्ण गहरी मनुष्यता विदा होती जा रही है और आदमी में दिलचस्पी कम होती जा रही है।

प्रश्न ६. लेखक के मतानुसार सच्चा जीना किस रूप में है? आप इस रूप से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर– लेखक के मतानुसार सच्चा जीवन वह है जो आलोकपूर्ण हो। सच्चा जीना के इस रूप से हम पूर्णतया सहमत हैं।

प्रश्न ७. जीवनगत कार्य किसे कहा है? उससे लेखक किस रूप को प्रतिपादित करना चाहता है?

उत्तर– जीवनगत कार्य विशिष्ट को व्यापक से जोड़ने को कहा है। लेखक चाहता है कि आज के इस असन्तोष को व्यापक बनाकर क्षेत्रबद्धता समाप्त हो जाय।

प्रश्न ८. लेखक की सबसे बड़ी जरूरत क्या है?

उत्तर– लेखक की सबसे बड़ी जरूरत एक गुरु, मार्गदर्शी मित्र तथा प्यार-भरे सलाहकार की है जो सभी समस्याओं तथा स्वभाव पर प्रकाश डाल सके।

प्रश्न ९. लेखक ने आधुनिकतावादियों के विषय में क्या विचार प्रकट किए हैं?

उत्तर– लेखक ने आधुनिकतावादियों के विषय में विचार प्रकट किया है कि उसमें दम नहीं है। वे समस्या को बड़ा और आदमी को छोटा प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न १०. लेखक को कविता के पश्चात् कैसा लगने लगा?

उत्तर– लेखक को कविता लिखने के पश्चात् ऐसा लगने लगा कि कविता में पूरे रंग अभी नहीं आ पाए हैं। यह कविता अत्यधिक घनीभूत तथा पूर्ण हो सकती थी।

प्रश्न ११. "कलाकार हमेशा अकेला होता है।" इस प्रकार लेखक ने क्या टिप्पणी की है?

उत्तर– लेखक ने टिप्पणी की है कि प्रत्येक व्यक्ति को, सोचने विचारने के लिए, मनो-मन्थन के लिए, एकान्त चाहिए जिसमें केवल वह ही वह हो और कोई न हो।

प्रश्न १२. लेखक के मतानुसार पार्थक्य को दूर करने के लिए किसकी आवश्यकता है?

उत्तर– लेखक के मतानुसार पार्थक्य को दूर करने के लिए सहानुभूति पूर्ण गहरी मनुष्यता की आवश्यकता है।

प्रश्न १३. कविता के फटेहाल होने का कारण लेखक ने क्या माना है?

उत्तर– कविता के फटेहाल होने का कारण लेखक ने पार्थक्य को माना है। वह मानता है कि रचना-प्रक्रिया का मन्थन तो हो रहा है किन्तु पार्थक्य में वृद्धि होती जा रही है।

प्रश्न १४. लेखक ने किस बात को अच्छा नहीं माना है?

उत्तर– लेखक ने आदमी और उसकी जिन्दगी में दिलचस्पी कम होना अच्छा नहीं माना है क्योंकि इससे स्व तथा पर दोनों ही दण्ड भोगते हैं।

प्रश्न १५. 'अकेलापन और पार्थक्य' निबन्ध के आधार पर बड़ी और बहुत बड़ी जिन्दगी जीना कब सम्भव है?

उत्तर– बड़ी और बहुत बड़ी जिन्दगी जीना तब सम्भव है जब हम मानव की केन्द्रीय प्रक्रियाओं के अविभाज्य तथा अनिवार्य अंग बनकर जीवन व्यतीत करें।

प्रश्न १६. कौन व्यक्ति अपनी भूमि तथा अपने लोगों से भिन्न हो जाता है?

उत्तर– अपनी भूमि तथा अपने लोगों से वे व्यक्ति भिन्न हो जाते हैं जो सामाजिक सांस्कृतिक सीढ़ी पर ऊँचा चढ़ते हैं।

प्रश्न १७. क्या कारण है कि व्यक्ति अपने स्वरूप को भूलते जा रहे हैं?

उत्तर–व्यक्ति अपने स्वरूप को भूलते जा रहे हैं क्योंकि वे सुख-सुविधापूर्ण जीवन के फेर में जुट गए हैं।

प्रश्न १८. लेखक ने पार्थक्य के क्या कारण बताए हैं?

उत्तर–लेखक ने पार्थक्य के कारणों में प्रमुख कारण व्यक्ति का पारस्परिक समस्याओं में कम दिलचस्पी होना बताया है। कविता का फटेहाल होना भी पार्थक्य का कारण है।

प्रश्न १९. "अकेलापन और पार्थक्य" के आधार पर किस साहित्य को निष्फल बताया गया है?

उत्तर–'अकेलापन और पार्थक्य' के आधार पर उस साहित्य को निष्फल बताया गया है जिसमें मूर्खता के स्रोतों का वास्तविक चित्रण नहीं किया गया हो।

प्रश्न २०. लेखक ने 'अकेलापन और पार्थक्य' निबन्ध में किस बात को मूर्खता बताया है?

उत्तर–लेखक ने 'अकेलापन और पार्थक्य' निबन्ध में दिशात्मक सम्भावनांओं में आस्था न होना तथा उसके अनुकूल कार्य न करने को मूर्ख़ता बताया है।

प्रश्न २१. लेखक मुक्तिबोध की काव्य प्रतिभा का परिचय हमें किस रचना से मिल जाता है?

उत्तर–मुक्तिबोध की काव्य-प्रतिमा का परिचय हमें 'तारसप्तक' की रचनाओं से मिल जाता है।

प्रश्न २२. मुक्तिबोध की रचनाओं का संग्रह किस नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तर–मुक्तिबोध की रचनाओं का संग्रह मुक्तिबोध रचनावली भाग-१ से ६ नाम से प्रसिद्ध है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "एक साहित्यिक की डायरी" के प्रस्तुत अंश में मुक्तिबोध का निजी व्यक्तित्व मुखरित हुआ है।" प्रस्तुत निबन्ध के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर–१. मुक्तिबोध–बचपन से ही अत्यन्त स्वाभिमानी मुक्तिबोध का सन् १९१७ में मध्यप्रदेश के श्योपुर कस्बे में जन्म हुआ था।

२. **व्यक्तित्व**–संघर्ष मुक्तिबोध के जीवन का आवश्यक अंग बन गया था। स्वभाव से स्वाभिमानी, आचार-विचार में सुदृढ़ रहने वाले मुक्तिबोधजी एक परम्परावादी साहित्यकार थे। समाज की दशा में सुधार के लिए वह सदा प्रयत्नशील रहे और विचारक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की।

३. **एक साहित्यिक की डायरी तथा मुक्तिबोध का व्यक्तित्व**–मुक्तिबोधजी सामाजिक अलगाव को उचित नहीं मानते थे। कलाकार के जीवन को मनोमय मानते हुए उन्होंने लिखा है कि उसे एकान्त में रहकर साहित्य सेवा में निमग्न रहना चाहिए। इस प्रकार के अकेलेपन को पार्थक्य से अलग मानते हुए मुक्तिबोधजी पार्थक्य को दूर करने का संकेत देते हैं।

मानव की केन्द्रीय प्रक्रियाओं के अविभाज्य तथा अनिवार्य अंग बनकर ही जीवन-व्यतीत करना चाहिए। जो व्यक्ति सामाजिक उन्नति की दौड़ में आगे हैं उन्हें पीछे रह जाने वालों से दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए।

प्रश्न २. प्रस्तुत पाठ (अकेलापन और पार्थक्य) में लेखक ने "आधुनिक बौद्धिक मनुष्य की प्रमुख विडम्बना-सामाजिक अलगाव की चर्चा की है" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–समाज में परस्पर मिलकर रहने तथा सामाजिक क्रियाओं को समान रूप से निभाने में ही जीवन का वास्तविक आनन्द है। सामाजिक समस्याओं को समझने तथा उन्हें सुलझाने में ही जीवन का सर्वोच्च आनन्द प्राप्त हो सकता है।

बौद्धिक मनुष्य की विडम्बना का वर्णन करते हुए लेखक की यह मान्यता है कि जो व्यक्ति जितनी अधिक उन्नति करता है वह उतना ही अपने देश और अपने समाज से पृथक होता जाता है। सच्चाई तो यह है कि आज व्यक्ति सर्वथा बदल गया है। सुख-सुविधापूर्ण जीवन के पीछे ऐसा दीवाना बना हुआ है कि अपने आपको भी विस्मृत कर चुका है। साधारण व्यक्ति की बात तो दूर है साहित्यकार भी उच्च वर्ग के जाल में ऐसा फँसा है कि 'अपने परिजनों का भी कुछ ध्यान नहीं रहा है। स्वजनों से भी पृथक हो गया है। वातावरण विषाक्त होता जा रहा है। व्यक्तिगत जीवन विकृत हो रहा है। सभी व्यक्तिगत जीवन के फेर में समाज को भूलते जा रहे हैं। अलगाव बढ़ता जा रहा है जो बौद्धिक मनुष्य की प्रमुख विडम्बना कहा जायेगा।

प्रश्न ३. प्रस्तुत निबन्ध (अकेलापन और पार्थक्य) के आधार पर पार्थक्य और अकेलेपन के बीच का अन्तर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-१. **अकेलापन**–सोचने विचारने तथा मनो-मन्थन के लिए जिस एकान्त की अपेक्षा की जाती है, उसे अकेलापन कहा जाता है। यह अकेलापन साहित्यकार के लिए आवश्यक है क्योंकि सोचने विचारने के लिए ऐसा स्थान होना आवश्यक है जो एकान्त हो। शोर-गुल रहित हो। शान्त हो।

२. **पार्थक्य**–समाज में रहकर भी समाज की इच्छानुकूल न चलना, दूसरों के जीवन में कोई रुचि न रखना पार्थक्य का लक्षण है। व्यक्ति अपने जीवन से अत्यधिक मोह करने लगा है। अन्य व्यक्तियों का उसे लेशमात्र भी ध्यान नहीं है। कविता की दशा भी उत्तम नहीं रही है। रचनाकार दूसरों की आलोचना में तो व्यस्त है किन्तु आत्मालोचन की कोई आवश्यकता वह नहीं समझ रहा है। यह पार्थक्य का लक्षण है।

प्रश्न ४. "अकेलापन और पार्थक्य" पाठ के आधार पर मुक्तिबोध की भाषा शैली पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

उत्तर-१. मुक्तिबोध–मुक्तिबोध का पूर्ण नाम गजानन माधव मुक्तिबोध था जिनका जन्म मध्यप्रदेश के श्योपुर कस्बे में सन् १९१७ में हुआ था। स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् शिक्षण कार्य किया। पत्रकारिता एवम् सम्पादन भी उनके जीवन के प्रमुख कार्य थे।

२. **भाषा**–भाषा की सरलता एवम् सुबोधता इनकी विशेषता है। मौलिकता तथा चिन्तन के सर्वत्र दर्शन होते हैं। श्रेष्ठ अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू आदि भाषाओं के शब्द भी उनकी भाषा में स्थान-स्थान पर प्राप्त हैं। यथा–"लाइब्रेरियों में जाता हूँ। किताबें टटोलता रहता हूँ। कुछ पूरी पढ़ता हूँ, कुछ आधी पढ़कर वापिस कर देता हूँ।"

३. **शैली**–मुक्तिबोध की रचनाओं में व्यंग्यात्मक शैली की प्रधानता है। मानव जीवन की प्राथमिक समस्याओं का विश्लेषण, विचार एवम् चिन्तन की ओर प्रेरित करता है।

प्रश्न ५. डायरी के प्रस्तुत अंश में "कवि लेखक का आत्म-चिन्तन अभिव्यक्त हुआ है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–गजानन माधव मुक्तिबोध ने 'एक साहित्यिक की डायरी' में स्पष्ट लिखा है–"यह एक आत्मग्रस्त शोध है। ऐसा कहीं कोई भी मिलने का, जो मेरी समस्याओं जैसी समस्याओं और मेरे स्वभाव जैसे स्वभाव पर कोमल किन्तु तीव्र प्रकाश डाले, उन्हें मूर्त और नाजुक तरीके से, हल्के से, बस यूँ ही, इत्मीनान दिलादे और रास्ते चलते मुझे भी रास्ता बता दे।"

डायरी के प्रस्तुत अंश में आत्म चिन्तन द्वारा यह विचार अभिव्यक्त किया गया है कि आधुनिकतावादियों में कोई बल नहीं है। उनको अत्यन्त दुर्बल बताते हुए लेखक कहता है कि वे समस्या को बड़ा करके बताते हैं।

आत्मबोधजी का कहना है कि कविता रचना सबके वश की बात नहीं है। मनो-मन्थन के लिए एकान्त की आवश्यकता होती है। मनोमय जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को अकेला होना चाहिए।

बड़ी तथा बहुत बडी जिन्दगी जीने के लिए मानव को केन्द्रीय प्रक्रियाओं के अविभाज्य तथा अनिवार्य अंग बनकर जीवन धारण करना होगा। हर प्रकार से प्रस्तुत अंश में कवि हो या लेखक, उसके आत्म-चिन्तन की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न ६. "अकेलापन और पार्थक्य" पाठ की मूल चेतना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–अकेलापन और पार्थक्य के लेखक मुक्तिबोध ने कविता की रचना प्रक्रिया की विवेचना करते हुए बुद्धिजीवियों के सामाजिक अलगाव की चर्चा की है और यह चेतना जाग्रत की है कि यह अलगाव किसी भी रूप में उचित नहीं है।

मुक्तिबोध जी ने संकेत दिया है कि एकान्त की आवश्यकता एकाग्रचित्तता के लिए महत्वपूर्ण मानी जा सकती है किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम समाज से पृथक अपना जीवन यापन करें।

सामाजिक चेतना के लिए मुक्तिबोधजी की यह मान्यता है कि प्राणियों में सद्‌भावना हो। एक दूसरे के प्रति प्रेम हो। एक दूसरे के कार्य में सहायक सिद्ध होते हों। हम यदि एक दूसरे से पृथक बने रहे, एक दूसरे से प्रेम का व्यवहार नहीं किया तो हमारा काव्य भी इस दुष्प्रवृत्ति से प्रभावित होगा और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि हमारी कविता का रूप और भी विकृत बन जाय।

अतः आवश्यकता है–मनुष्यता की। व्यक्ति के जीवन में दिलचस्पी की। संवेदनशीलता की। आत्मालोचन की तथा जीवन का सर्वोच्च आनन्द प्राप्त करने की जिसे समाज से पृथक् रहकर कदापि प्राप्त नहीं किया जा सकता।

प्रश्न ७. कविता लिखने के बाद कवि जिस भयानक मनः स्थिति से ग्रस्त हो जाते हैं, उसका शब्द चित्र अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर–कविता कवि के मन के ऐसे उद्‌गार हैं जो स्वतः उसके होठों से निकलते और लेखनी को अर्पित हो जाते हैं। समाज की वास्तविक दशा का, अपनी कल्पना के आधार पर चित्रण करके वह आदर्श और यथार्थ का ऐसा चित्र प्रस्तुत करता है जो हम सबके लिए अनुकरणीय बन जाता है।

मुक्तिबोध के विचार से आजकल कविता का उचित प्रयोग नहीं हो रहा है। कवि अपने उत्तरदायित्व को भली-भाँति नहीं निभा रहा है। कवि एक सामाजिक प्राणी होने के कारण, समाज के बन्धन में बँधा है। उसका अपने परिवार से भी कुछ सम्बन्ध है और उसके प्रति कर्तव्य भी है। उसे सर्वप्रथम अपने बच्चों की ओर, भविष्य के कर्णधारों की ओर ध्यान देना चाहिए। उनके स्वास्थ्य का, उनकी शिक्षा का, उनके खान-पान का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

जिस कवि ने अपने गृहस्थ जीवन का भली-भाँति उत्तरदायित्व नहीं निभाया, उसका जीवन निरर्थक है, ऐसा समझना चाहिए जिसे अपने बच्चों की परवाह नहीं, यथोचित्त ध्यान नहीं उस कवि को हम कर्तव्य परायण नहीं मान सकते। जिस कवि को अपनी स्त्री से बात करने का भी समय नहीं वह एक उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य नहीं कर रहा, यह समझना चाहिए।

जिस कवि को प्रत्येक क्षण बेचैनी रहती है। एक उत्तेजना जिसे बनी रहती है, वह एक कर्तव्यनिष्ठ कवि नहीं माना जा सकता।

प्रश्न ८. निम्न कथनों का आशय सप्रसंग स्पष्ट कीजिए–

(क) उनमें दम नहीं है, वे पोचे हैं। वे समस्या को बड़ा करके बताते हैं, आदमी को छोटा करके नचाते हैं।

प्रसंग–प्रस्तुत कथन **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** निबन्ध से उद्धृत है।

आशय–प्रस्तुत कथन में आधुनिकतावादियों का चरित्रांकन किया गया है। आधुनिकतावादियों को लेखक ने भली-भाँति परखा है। उनकी भली-भली भाँति पहचान की है और यह निष्कर्ष दिया है कि उनमें किसी प्रकार का भी बल नहीं है। वे शक्तिहीन हैं। वे निर्बल हैं। समस्या को बढ़ा चढ़ाकर बताना उनका स्वभाव बन गया है। आधुनिकतावादियों ने मनुष्य को महत्वहीन समझ रखा है। वे मनुष्य को अति साधारण समझते हैं। उसे तुच्छ समझते हैं जब कि उन्हें चाहिए कि वह मनुष्य का मूल्य पहिचानें, उसे साधारण न समझें।

ख. वह महान् आत्म-शक्ति मुझमें नहीं जो मुझमें पूर्ण रूपान्तर उपस्थित कर दे। मैं क्या-का-क्या हो जाऊँ।

प्रसंग–प्रस्तुत कथन **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** निबन्ध से उद्धृत है।

प्रस्तुत कथन में अपनी महत्वाकांक्षा तथा उसकी पूर्ति में उस महान शक्ति के अभाव का वर्णन किया गया है।

आशय–मुक्तिबोधजी कहते हैं कि मैं कई दिनों तक एक विचित्र मनः स्थिति में रहा। मन से जो कुछ बनने की आवाज आ रही थी, वह नहीं बन सका।

मेरा मन असम्भव को भी सम्भव बना देना चाहता है। मन चाहता है कि मैं स्वयं के कन्धों पर चढ़ जाऊँ। लेकिन यह स्वप्न में भी सम्भव नहीं हो सकता। मेरे पास ऐसी आत्म शक्ति नहीं है कि मन में जैसा विचार आवे वह उसी रूप में पूर्ण भी हो जावे। जिस प्रकार आकाश का स्पर्श करना असम्भव है, उसी प्रकार मन में उत्पन्न भावों को तदाकार करना भी असम्भव है।

ग. जनता में से निकले हुए साहित्यिक भी उच्च मध्यवर्गीय मनोहर दीप्ति के सम्मोह में स्वजनों-परिजनों को विसार गए।

प्रसंग–प्रस्तुत कथन **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** से उद्धृत है।

प्रस्तुत कथन में मुक्तिबोध की यह मान्यता है कि कवि का साहित्यकार बनकर, उनका अपने स्वजनों को भी विस्मृत कर देना किसी भी दशा में उचित नहीं है।

आशय–मुक्तिबोध कहते हैं कि उन्नति की सीढ़ियों पर चढ़कर व्यक्ति अपने ही लोगों से अपरिचित बन जाता है। अपनों को, अपने से दूर मानने लगता है। उनको अजनबी समझने लगता है। अपरिचित समझता है। यह दशा जन साधारण की है। साहित्यकार भी उनसे पृथक नहीं है। वह उच्च वर्ग की प्रशंसा करते-करते उनके मोह में ऐसा फँस गया है कि अपने परिवार का उसे ध्यान ही नहीं रहा है। स्वजनों के प्रति भी आत्मीयता का भाव नहीं रहा है।

घ. विशिष्ट को व्यापक से सम्बद्ध किया जाना एक जीवनगत कार्य है, कार्य बौद्धिक व्यापार मात्र नहीं।

प्रसंग–प्रस्तुत कथन **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** से उद्धृत है।

प्रस्तुत कथन में विशिष्ट व्यक्ति की पहचान को जीवनगत कार्य माना गया है।

आशय–मुक्तिबोध का कहना है कि समाज में कुछ विशिष्ट व्यक्ति होते हैं। उनका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है। उनके कार्य को सीमावद्ध नहीं किया जा सकता। उनके कार्य को सीमा में बाँधना किसी भी दशा में उचित नहीं माना जा सकता। उनका कार्य जितना शारीरिक होता है, उससे भी अधिक बौद्धिक भी होता है। इसलिए उनके कार्य का सम्बन्ध जीवन तथा बुद्धि दोनों से ही मानना चाहिए।

व. चिनगारियाँ है–राख में पड़ी हुई, उसमें सनी हुई चिनगारियां जो जरा हवा लगते ही चमक उठती है और तुरन्त ही नष्ट हो जाती हैं।

प्रसंग–प्रस्तुत कथन **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** से उद्धृत है।

प्रस्तुत कथन में मुक्तिबोध का वह असन्तोष व्यक्त हो रहा है जो आज समाज में व्याप्त है।

आशय–संसार के प्रत्येक प्राणी में असन्तोष की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही है। वातावरण असन्तोषजनक होने के कारण अत्यन्त ही विस्फोटक बनता जा रहा है। ऐसा लगता है कि असन्तोष की ये चिनगारियाँ उस जैसे विचारों को पाकर चमकने लगती हैं तथा तुरन्त ही नष्ट भी हो जाती हैं।

प्रश्न ९. "पार्थक्य का भाव केवल मेरी ओर से नहीं, सभी की ओर से है।" मुक्तिबोध कृत "अकेलापन और पार्थक्य" निबन्ध के आधार पर इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।

(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड १९९३)

उत्तर–समाज का निर्माण व्यक्तियों से हुआ है। इसीलिए तो व्यक्ति के संगठित समूह का नाम समाज कहा जाता है। आज समाज की दशा बिगड़ती जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति में स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। वह स्वं पर केन्द्रित हो गया है। शिक्षित व्यक्तियों में अधिकांशतः आत्मनिष्ठा की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। वह एकान्त-चिन्तन में निमग्न है। उसे दूसरों के हित चिन्तन को अवकाश ही नहीं है।

आधुनिक कलाकारों और कवियों की दशा तो और भी चिन्ता का विषय बन गयी है। इन कलाकारों और कवियों ने तो पृथकता को अत्यधिक बढ़ावा दिया है। समाज में रहते हुए भी, समाज का हित-चिन्तन नहीं करता। एकान्त चिन्तन की ओर उसका ध्यान है जिसे मुक्तिबोध उचित नहीं मानते। उनके एकान्त चिन्तन को अलगाव की पनपती प्रवृत्ति मानते हुए मुक्तिबोध उनकी बुराई करते हुए उससे दूर रहने का संकेते देते हैं।

सहानुभूति के अभाव को मनुष्यता का अभाव मानते हुए मुक्तिबोध आधुनिक कवियों से कहते हैं कि उन्हें सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और अलगाव की प्रवृत्ति से सदा दूर रहकर समाज का हित चिन्तन करना चाहिए।

बौद्धिक मानव के व्यवहार में भी अन्तर आता जा रहा है। वह सबके साथ संवेदना का व्यवहार नहीं करता। मुक्तिबोध ने मनुष्य में व्यावसायिक लगाव की ओर बल देते हुए उसे अपने व्यवहार में परिवर्तन को आवश्यक बताया है।

सप्रसंग व्याख्याएँ

शब्दार्थ–पृष्ठ-१०३–राहत = चैन, आराम। शोध = खोज।

पृष्ठ-१०४–पोचे = कमजोर। स्वांग = तमाशा, दिखावा। रूपान्तर = रूप का अन्तर, परिवर्तन। घनीभूत = घना। विनाशक = विनाश करने वाला, भयंकर, उत्तेजना, पार्थक्य = अलहदगी, अलगाव।

पृष्ठ-१०५–आत्मसात = समेट लेना। आत्मसात् = समेटना। मित् भाषण = कम बोलना।

पृष्ठ-१०६–विसार गये = भूल गये। किनारा कशी = उपेक्षा, किनारा करना। आवेग = तेजी, शक्ति। प्रधावित = तेज दौड़ता हुआ।

पृष्ठ-१०७–कीमियागर = कीमिया बनाने की विद्या, रसायन शास्त्र। प्रतिमा = मूर्ति रूप।

(१)

आज कई दिनों से एक विचित्र मनः स्थिति से गुजरता रहा। भयानक आत्म-ग्लानि ने घर कर लिया। मैं क्या हो सकता था, लेकिन नहीं हुआ। मेरे विकास के संभावित विकल्प

खड़े हो गये। और मैंने पाया कि वह महान् आत्म-शक्ति मुझमें नहीं जो मुझसे पूर्ण रूपान्तर उपस्थित कर दे, मैं क्या-का-क्या हो जाऊँ। मैं अपने खुद के कंधों पर चढ़ जाना चाहता हूँ, आकाश छूना चाहता हूँ, चाहे उस आकाश में हाइड्रोजन अणु का धुआँ ही क्यों न हो। मैं पृथ्वी के पेट में घुस जाना चाहता हूँ चाहे उस विवर में लायट्रोन बम के विस्फोटात्मक प्रयोग ही क्यों न होते हों। **(पृष्ठ-१०४)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** नामक निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर कवि हृदय लेखक मुक्तिबोध अपनी महत्वाकांक्षा व्यक्त करते हुए कहते हैं–

व्याख्या–मैंने असम्भव को सम्भव बनाने की धुन में जीवन की गम्भीर चुनौतियों का डटकर सामना करने का मन बना लिया। मन में रात-दिन एक ही चिन्ता सताने लगी। एक ही विचार कौंधने लगा और चौंकाने लगा कि मैं वह क्यों नहीं बन सका जो बनना चाहता था।

मुक्तिबोधजी कहते हैं कि मैंने अपने विकास के जो ताने बाने बुने थे उनकी पूर्ति के लिए अनेकों विकल्प मेरे मन में आए लेकिन कोई भी विकल्प आत्मशक्ति के अभाव में खरा नहीं उतरा।

लेखक को मन में उस आकाश तक पहुंचने की इच्छा घर कर गयी जो हाइड्रोजन अणु के धुएँ से भरा है। उसके मन में पृथ्वी के अन्दर पहुँचने की इच्छा जाग्रत हुई। वह जानता है कि वहाँ लायट्रोन बम के विस्फोटात्मक प्रयोग हो रहे हैं और पृथ्वी के पेट में घुसना किसी भी दशा में न तो सम्भव है और न उचित किन्तु इच्छा तो इच्छा ही है। उस पर किसी का कोई वश नहीं है।

लेखक जानता है कि उसमें वह शक्ति तो नहीं है जो महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर सके। अतः उसका मन ग्लानि से भर गया। महत्वाकांक्षाओं की अपूर्णता के कारण निराश भी हुआ किन्तु आत्म शक्ति के अभाव में मन कचोट कर रह गया।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल भाषा।

(२) **शैली**–व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**–लेखक कीमहत्त्वाकांक्षा व्यक्त हुई है।

(२)

तत्काल अनुभव हुआ कि वीरान अमानवीय दूरियाँ मुझे घेरे हुए हैं। आदिम प्रज्जवलनशील द्रव्य का एक पंजीकृत तारा, जो सिर्फ दूरियों के बीच जलता हुआ चलता है। यह पार्थक्य घनघोर है। यह मेरा किया नहीं है। मैं इस पार्थक्य का विधाता नहीं। वह मेरे जमाने की बदनसीबी है। **(पृष्ठ-१०४)**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** निबन्ध से अवतरित हैं।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने व्यक्ति के पार्थक्य का वर्णन करते हुए कहा है–

व्याख्या–मुक्तिबोध जी कहते हैं कि व्यक्ति मानवीय दूरियों से घिरा हुआ है। पार्थक्य की दुर्भावना उसके मन में समाई हुई है जो उसे उसके मन और उसके मस्तिष्क को सता रही है। यह अलगाव की भावना अत्यन्त भयावह है।

लेखक का कहना है कि अलगाव का भाव मैंने न तो चाहा न फैलाया। मैंने अलगाव को जन्म नहीं दिया। मैं इसका विधाता नहीं हूँ। यह अलगाव तो दुर्भाग्य का द्योतक है। समाज का पाप है जिसके लिए मैं उत्तरदायी नहीं हूँ।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल भाषा।

(२) **शैली**–व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**–मानवीय अलगाव का सटीक वर्णन है।

(३)

मुझे कहने दीजिए कि आजकल आदमी में दिलचस्पी कम होती जा रही है। सामान्यीकरणों के अरूप समुदाय बढ़ रहे हैं। कविता के तत्वों का विश्लेषण, रचना-प्रक्रिया का मंथन, खूब चल रहा है, कविता खुद फटेहाल हो रही है। यह सब-मेरे लेखे-पार्थक्य के कारण है।

(पृष्ठ-१०५)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक पार्थक्य के परिणामों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहता है–

व्याख्या–मुक्तिबोध जी व्यक्ति को सावधान करते हुए कहते हैं कि मानव सेवा हमारा धर्म होना चाहिए। व्यक्ति को एक दूसरे से सहानुभूति रखनी चाहिए। एक दूसरे के काम आना चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। सहानुभूति पूर्ण वातावरण में धीरे-धीरे कमी आती जा रही है। व्यक्ति एक दूसरे में दिलचस्पी नहीं ले रहा है। फलतः समुदायों में वृद्धि हो रही है। एक के बाद एक नया समुदाय बन रहा है। जिसकी कोई आकृति नहीं है। कोई रूप नहीं है। सेवा-धर्म नहीं है।

-कविता के आधुनिक स्वरूप का वर्णन करते हुए मुक्तिबोध जी कहते हैं कि कविता अब समृद्ध नहीं है। वह दुर्दशा में है। कविता के तत्वों का, इसकी रचना प्रक्रिया का विश्लेषण तो हो रहा है। मन्थन भी हो रहा है किन्तु समृद्धि के लक्षण दिखाई नहीं दे रहे हैं। लेखक के विचार से समृद्धि में सबसे बड़ी बाधा पार्थक्य की प्रवृत्ति है। पार्थक्य के कारण कविता फटेहाल में है। दिन प्रतिदिन दयनीय स्थिति में पहुँच रही है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल साहित्यिक भाषा।

(२) **शैली**–व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**–पार्थक्य के दुष्प्रभाव को बताया गया है।

(४)

चाहे प्रगतिवादी हो चाहे प्रयोगवादि जिसने भी उच्च-मध्यवर्ग की सफेदपोश भद्रता के महत्व की कुर्सियों पर आराम किया कि वह गया, मर गया, ऐसा मेरा ख्याल है। पर ख्याल कुछ लोगों के लिए खतरनाक है–चाहे वे कितने ही प्रगतिवादी या इसके विपरीत बंगले के निवासी तकली-कातू गाँधीवादी क्यों न हों। हमारे बहुत से साथी इसी जिन्दगी में स्वर्ग देखना चाहते हैं और अपने बाल बच्चों को स्वर्ग दिखाना चाहते हैं। (पृष्ठ-१०५-१०६)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **गजानन माधव मुक्तिबोध** लिखित **अकेलापन और पार्थक्य** निबन्ध से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक जीवित रहने के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हुए कहता है–

व्याख्या–निबन्धकार मुक्तिबोध उन सफेद पोशों को सचेत कर रहे हैं जो उच्च वर्ग के समान बनना चाहते हैं। कुर्सी के आराम की ओर ध्यान दिलाते हुए उन्हें आगाह करते हुए कहते हैं कि इस प्रकार विलासिता में वे अपना जीवन ही नष्ट कर लेंगे। अतः प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी का अन्तर विस्मृत करते हुए वे सभी को चेतना का सन्देश देते हुए कहते हैं कि मानव की केन्द्रीय प्रक्रियाओं का व्यक्ति को अनिवार्य अंग बनना चाहिए। जब तक वह आवश्यक अंग नहीं बन जाता, तब तक वह एक उत्तम जीवन नहीं व्यतीत कर सकता ।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल, प्रवाह तथा प्रभावपूर्ण भाषा।

(२) **शैली**–व्यंग्यात्मक शैली।

(३) **अन्य**–जीवन के सत्य का उद्घाटन किया गया है।

प्रेरक आत्मकथाएँ

● *गागर में सागर*

आत्मकथा– आत्मकथा किसी का जीवन वृत्त होता है जो स्वयं उसी के द्वारा लिखा जाता है।

डॉ० तारकनाथ बाली– कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है तब उसे 'आत्मकथा' कहते हैं।

जीवन चरित्र– जब किसी व्यक्ति के जीवन वृत्त को कोई अन्य व्यक्ति लिखता है, तो उसे जीवन-चरित्र कहते हैं।

आत्मकथा का उद्‌भव काल– सत्रहवीं शताब्दी।

प्रथम आत्मकथा– अर्धकथानक।

लेखक– बनारसी दास जैन।

साहित्यिक आत्मकथाओं के लेखक– राहुल सांस्कृत्यायन, वियोगीहरि, सेठ गोविन्द दास, आचार्य चतुर सेन शास्त्री, पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र' आदि।

राजनीति की आत्म कथाओं के लेखक– महात्मा गाँधी, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० राधाकृष्णन, पं० जवाहर लाल नेहरू, जयप्रकाश नारायण आदि।

१ गाँव का जीवन

(डॉ० राजेन्द्र प्रसाद)

● *गागर में सागर*

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद– जन्म– ३ दिसम्बर १८८४। ***स्थान*** –बिहार के सारन जिले में जीरादेई स्थान। ***जीवन***– छपरा में प्रारम्भिक शिक्षा। पटना में २ वर्ष अध्ययन। एण्ट्रेन्स परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान। एम० ए०, एल-एल० बी० की उपाधि। ***कार्य***– चम्पारन में गाँधी के साथ कार्य किया। देश की स्वाधीनता पर प्रथम राष्ट्रपति पद पर आसीन।

आत्मकथा– गाँव के सादा जीवन का चित्र। प्रेरक धार्मिक जीवन। रामलीला दर्शन से रामायण में रुचि उत्पन्न। दीपावली, होली आदि उत्सवों में सबका सम्मिलित होना। मुहर्रम में भी सबका उत्साह। पंचों द्वारा झगड़ों का निपटारा। अपराध संख्या कम।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

न १. ***एक चीज जिसका डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पर बचपन से ही प्रभाव पड़ा, वह थी–***

(अ) रामायण (ब) महाभारत
(स) रामलीला (द) कृष्णलीला
(य) गीता।

उत्तर–(अ) रामायण।

न २. ***कथा, रामलीला, रामायण-पाठ और व्रत-त्यौहारों से गाँव में जगा रहता था–***

(अ) सामाजिक जीवन (ब) राष्ट्रीय जीवन
(स) धार्मिक जीवन (द) राजनीतिक जीवन
(य) दार्शनिक जीवन।

उत्तर–(स) धार्मिक जीवन।

प्रश्न ३. उन दिनों गाँव के झगड़े होते थे-
(अ) गाँव के मुखिया द्वारा
(ब) गाँव के पढ़े-लिखे लोगों द्वारा
(स) गाँव के बिना पढ़े-लिखें लोगों के द्वारा
(द) गाँव के सभी लोगों के द्वारा
(य) गाँव के पंच लोगों के द्वारा। **उत्तर**-(य) गाँव के पंच लोगों के द्वारा।

प्रश्न ४. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के गाँव का चित्र सहज, सुबोध और प्रभावशाली बन गया क्योंकि-
(अ) चित्रण सरल भाषा में है
(ख) चित्रण ज्यों का त्यों कर दिया है
(ग) चित्रण सोदाहरण है
(द) चित्रण में आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग है
(य) चित्रण विवरणात्मक है। **उत्तर**-(ब) चित्रण ज्यों का त्यों कर दिया है।

प्रश्न ५. जीरादेई और जमापुर गाँव में किसको मनोरंजन का साधन नहीं माना जाता था-
(अ) होली (ब) दीपावली
(स) जन्माष्टमी (द) रामलीला
(य) दरोगा या सिपाही का गाँव में आना।
उत्तर-(य) दरोगा व सिपाही का गाँव आना।

प्रश्न ६. जुमराती के रूप में मौलवी साहब को कुछ पैसे मिल जाया करते थे-
(अ) सोमवार को (ब) मंगलवार को
(स) बुधवार को (द) वृहस्पतिवार को
(य) शुक्रवार को। **उत्तर**-(द) वृहस्पतिवार को।

प्रश्न ७. वानरों के कपड़ों का रंग होता था-
(अ) लाल (ब) हरा
(स) पीला (द) गुलाबी
(य) नीला। **उत्तर**-(अ) लाल।

प्रश्न ८. राक्षसों के कपड़ों का रंग होता था-
(अ) काला (ब) हरा
(स) नीला (द) पीला
(य) लाल। **उत्तर**-(अ) काला

प्रश्न ९. "जब वह गाँव आता तो हम बच्चों का कौतूहल का ठिकाना न रहता।" यहाँ व शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है-
(अ) साधु के लिए (ब) संन्यासी के लिए
(स) मौलवी के लिए (द) पण्डित के लिए
(य) फारसी की किताबें व स्याही की बोतलें लाने वाले के लिए।
उत्तर-(य) फारसी की किताबें व स्याही की बोतलें लाने वाले के लिए

प्रश्न १०. गाँव वालों को किस फल की प्राप्ति में सुविधा होती थी-
(अ) अंगूर (ब) संतरा
(स) सेव (द) पपीता
(य) केला। **उत्तर**-(अ) अंगू

प्रश्न ११. तुलसी चबूतरे पर आकाश में कंदील किस महीने लटकाये जाते थे–

(अ) क्वार (ब) पूस में
(स) कार्तिक में (द) फाल्गुन में
(य) अगहन में।

उत्तर–(स) कार्तिक में।

प्रश्न १२. पिताजी के समय में चलते हुए भूमि सम्बन्धी मुकदमे को तय कराया–

(अ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने (ब) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के चाचा ने
(स) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के भाई ने (द) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की चाची ने
(य) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की बहिन ने।

उत्तर–(अ) ड.० राजेन्द्र प्रसाद ने।

प्रश्न १३. राजेन्द्र बाबू चम्पारन दौरे में साथ रहे थे–

(अ) सरदार पटेल के (ब) रामानुग्रह के
(स) अब्दुलकलाम आजाद के (द) गोखले के
(य) गाँधी के।

उत्तर–(य) गाँधी के।

प्रश्न १४. गाँव में मनोरंजन और शिक्षा का दूसरा साधन था–

(अ) नौटंकी (ब) कृष्णलीला
(स) रामलीला (द) भजन-कीर्तन
(य) रासलीला।

उत्तर–(स) रामलीला।

प्रश्न १५. गाँव के लोगों के विश्वास के अनुसार कौन कोढ़ी हो जायेगा–

(अ) जो गाली देगा (ब) जो अन्याय करेगा
(स) जो शराब पियेगा (द) जो धन चुरायेगा
(य) जो किसी को मारेगा।

उत्तर–(स) जो शराब पियेगा।

प्रश्न १६. दशहरा त्यौहार माना जाता था–

(अ) ब्राह्मणों का (ब) वैश्यों का
(स) धनिकों का (द) राजनीतिज्ञों का
(य) जमींदारों का

उत्तर–(य) जमींदारों का।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. गाँव में कोयरी अधिक थे। अतः उनके होने से क्या लाभ था?

उत्तर–गाँव में कोयरी अधिक थे। अतः उनके होने से गाँव को शाक सब्जी अधिकता से ...त होने का लाभ था।

प्रश्न २. होली पर मीठी प्रतियोगिता में लोग किस बात का ध्यान रखते थे।

उत्तर–होली पर मीठी प्रतियोगिता में लोग इस बात का ध्यान रखते थे कि गाँव की इज्जत ...सी भी दशा में नष्ट न हो।

प्रश्न ३. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के वंश में शराब न पीने के पीछे क्या विश्वास था?

उत्तर–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के वंश में शराब न पीने के पीछे यह विश्वास था कि शराब ... वाला कोढ़ी हो जायेगा।

प्रश्न ४. "पर मेरे घर में एक बहुत पुरानी प्रथा चली आ रही है।" डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ...किस प्रथा की ओर संकेत किया है? (माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

उत्तर–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने प्रस्तुत कथन में अपने घर में बहुत पुरानी प्रथा शराब न पीने ...प्रथा की ओर संकेत किया है।

प्रश्न ५. गाँव में आने वाला कौन था जो बच्चों में कौतूहल उत्पन्न करता था।

उत्तर– गाँव में आने वाला मौलवी था जो बच्चों में फारसी की पुस्तकों तथा स्याही की बोतलों से कौतूहल उत्पन्न करता था।

प्रश्न ६. बच्चों को क्या देखकर खुशी होती थी?

उत्तर– बच्चों को नारंगी-नीबू आदि की टोकरी बेचने के लिए आने वालों को देखकर खुशी होती थी।

प्रश्न ७. उस समय अंगूर की बिक्री का क्या ढंग था तथा किसके द्वारा लाये जाते थे

उत्तर– उस समय अंगूर की बिक्री का ढंग यह था कि काठ की छोटी पेटी में रुई के फोहे के मध्य रखकर बेचे जाते थे तथा चाचा साहब द्वारा लाये जाते थे।

प्रश्न ८. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के गाँव में हिन्दू-मुस्लिम भेद-भाव को समाप्त करने वाले प्रमुख तत्त्व क्या थे?

उत्तर– डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के गाँव में हिन्दू-मुस्लिम भेद-भाव को समाप्त करने वाले प्रमुख तत्त्व होली तथा मुहर्रम के त्यौहार थे।

प्रश्न ९. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के गाँव में रामायण पाठ की क्या विधि थी?

उत्तर– डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के गाँव में प्रतिदिन संध्या समय कुछ व्यक्ति मठ या किसी के दरवाजे पर एकत्रित हो जाते थे तथा एक व्यक्ति रामायण से चौपाई पढ़ता था। दूसरे उसे दुहराते थे।

प्रश्न १०. गाँव में किसके आने पर हंगामा होता तथा सनसनी व्याप्त हो जाती थी?

उत्तर– गाँव में दरोगा तथा सिपाही के आने पर हंगामा होता तथा सनसनी व्याप्त हो जाती थी।

प्रश्न ११. गाँव में छोटे-बड़े का लिहाज कब उठ जाता था?

उत्तर– गाँव में छोटे-बड़े का लिहाज होली के दिन उठ जाता था जब कि गाँव के बू जवान और लड़के एक साथ मिलकर, नाम ले लेकर गालियाँ देते, धूल और कीचड़ डालते हु बढ़ते थे।

प्रश्न १२. दीपावली पर बड़े लोग क्या करते थे?

उत्तर– दीपावली पर बड़े लोग मकान पर बहुत दीपक जलाते थे। केले के खम्भे गाड़ बाँस की मेहराब बनाते तथा दीपकों से रंग बिरंगी तसवीरें बनाते थे।

प्रश्न १३. दशहरा खास करके किसका त्यौहार माना जाता था? नवरात्रि में किसकी पू होती थी?

उत्तर– दशहरा खास करके जमीदारों का त्यौहार माना जाता था। नवरात्रि में काली माँ पूजा होती थी।

प्रश्न १४. किस त्यौहार में सभी लोग सम्मिलित होते थे? वह कब मनाया जाता था

उत्तर– अनन्त चतुर्दशी के व्रत में सभी लोग सम्मिलित होते थे। यह व्रत भादों चतुर्दशी को मनाया जाता था।

प्रश्न १५. गाँव में धार्मिक जीवन किस प्रकार जगा रहता था?

उत्तर– गाँव में धार्मिक जीवन कथा, रामलीला, रामायण पाठ तथा व्रत-त्यौहारों द्वारा ज रहता था।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. गाँव वाले साधु के भोजन की व्यवस्था क्यों करते थे?

उत्तर– गाँव वाले साधु के भोजन की व्यवस्था इसलिए करते थे क्योंकि छोटे-छोटे मठों में साधु रहते थे तथा सुबह-शाम घण्टा बजाकर आरती करते थे। आरती के समय कुछ व्यक्ति एकत्र हो जाते थे तथा साधु के हाथ से तुलसीदल का प्रसाद ग्रहण करते थे।

उत्सवों के समय मठ में विशेष तैयारी होती थी। सभी व्यक्ति इन उत्सवों में सम्मिलित थे। बच्चे बड़े उत्साह से कागज तथा पन्नी के फूल काटकर ठाकुरवारी के दरवाजों और हासन पर लगाते थे। साधु द्वारा घण्टा बजाकर आरती करने के कारण ही ग्रामीण उनके जन की व्यवस्था करते थे।

प्रश्न २. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार साक्षरता की क्या स्थिति थी?

उत्तर– डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार गाँव में साक्षरता की दशा शोचनीय थी। बहुत थोड़े क्तियों को अक्षर ज्ञान था। प्राइमरी अथवा दूसरे प्रकार के स्कूल गाँव में थे ही नहीं। मौलवी साहब थोड़ा अक्षर ज्ञान कराते थे। वे तीन या चार रुपये मासिक लेते थे और जन सामग्री प्राप्ति से ही सन्तुष्ट होकर पढ़ाते थे।

गाँव में एक मुसलमान भाई और थे जो जाति के जुलाहा थे। वह पहाड़ा, ड्यौढ़ा इत्यादि -सेर की बिक्री तथा खेत की पैमायश का हिसाब जानते तथा पढ़ाते थे। उनकी एक पाठशाला जिसमें गाँव के बच्चे पढ़ते थे।

प्रश्न ३. निरक्षर लोग रामायण पाठ में किस प्रकार हिस्सा लेते थे?

उत्तर– गाँव में अधिकांशतः निरक्षर व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्तियों की संख्या अंगुली पर गणना ने योग्य थी जिन्हें अक्षर-ज्ञान था। शिक्षा की कोई समुचित व्यवस्था न होने के कारण गाँव निरक्षर लोगों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही थी।

निरक्षर लोग भी रामायण पाठ में भाग लेते थे। संध्या के समय प्रतिदिन ही कहीं न कहीं, ठ में या किसी के दरवाजे पर एकत्र हो जाते थे। एक व्यक्ति रामायण की पुस्तक से चौपाई लता था और अन्य एकत्रित समूह उसे दुहराता था। झाल और ढोलक के साथ होने वाले मायण पाठ में निरक्षर व्यक्ति भी रामायण पढ़ने वाले के साथ चौपाई दोहराते हुए रामायण ठ में भाग लेते थे।

प्रश्न ४. मुहर्रम मनाने में हिन्दुओं का क्या योगदान होता था? उसका क्या प्रभाव पड़ता था? अपने विचार लिखिए।

उत्तर– मुहर्रम मुसलमानों में तथा रामलीला, रामायण-पाठ, जन्माष्टमी आदि व्रत-त्यौहार हिन्दु- में विशेषरूप से मनाए जाते हैं किन्तु जीरादेई और जमापुर में सम्पन्न हिन्दू, मुहर्रम का त्योहार भी उत्साहपूर्वक मनाते थे। हिन्दुओं में भी ताजिया रखने की प्रथा थी। उनका ताजिया र्धन मुसलमानों के ताजियों से भी बड़ा तथा शानदार होता था।

हिन्दुओं द्वारा मुहर्रम पर ताज़िया रखने से हिन्दू-मुस्लिम एकता को बल प्राप्त होता था। न्दू-मुसलमान में भेद की सम्भावना कम होती जा रही थी।

प्रश्न ५. 'गाँव का जीवन' आत्म-कथा अंश के आधार पर शैलीगत विशेषताओं का लेख कीजिए।

उत्तर– 'गाँव का जीवन' आत्म-कथा अंश के लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं। उन्होंने अपने हित्य की खड़ी बोली में रचना की। भाषा की विशेषता के आधार पर उन्हें हिन्दी साहित्य अद्वितीय कलाकार माना जाता है।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक राजनीतिक नेता थे। अतः उन्होंने संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, फारसी दि के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग करके भाषा को सरल तथा सुबोध बनाया। अपनी बात

श्रोताओं तथा पाठ... के लिए बोधगम्य बनाने के लिए अपने विचारों को विषय के अनुरूप बनाने का प्रयास कि...। संस्मरणात्मक तथा भावात्मक शैली का प्रयोग करके साहित्य का श्रृंगार किया। विचारों में क्रमबद्धता तथा स्पष्टता उनकी विशेषता है।

प्रश्न ६. उन दिनों गाँवों में मनोरंजन के साधन क्या-क्या थे? आज क्या परिवर्तन आ गये हैं? जीवन में क्या परिवर्तन आ गये हैं?

उत्तर–उन दिनों (लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के बाल्यकाल के समय) गाँवों में मनोरंजन के साधनों का अभाव था। जहाँ ये साधन थे भी तो सीमित थे। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने 'गाँव का जीवन' आत्मकथा में मनोरंजन के साधनों का इस प्रकार वर्णन किया है–

१. दैनिक आरती, रामायण तथा पुराणों की कथा–गाँव के मठ में प्रातः सायं घण्टा बजाकर होने वाली आरती तथा तुलसीदल-प्रसाद-वितरण मनोरंजन का साधन था। रामनवमी, जन्माष्टमी आदि पर व्रत तथा उपवास रखना एवम् जन्मोत्सव मनाना गाँव में मनोरंजन का साधन था। कभी-कभी महीनों या उससे अधिक अवधि के लिए रामायण, महाभारत, भागवत अथवा पुराणों की कथा होती थी। ये धर्म चर्चाएँ और धार्मिक प्रक्रियायें ही उनके मनोरंजन का साधन थीं।

२. रामलीला–...लीला गाँव के जीवन में मनोरंजन का साधन थी। रामलीला करने गाँव से बाहर की कोई ...क मण्डली आकर राम की लीलाओं को अपने अभिनय द्वारा प्रस्तुत करती थी। गाँव में ...ा की अवधि में बड़ी चहल-पहल रहती थी। सम्पूर्ण वातावरण मनोरंजन पूर्ण रहता था।

३. होली–होली हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार था। बसन्त पंचमी से होली के दिन तक गाँव में होली गीत होते थे। वातावरण मनोरंजन पूर्ण रहता था। मुसलमान भाई भी हिन्दुओं के साथ मिलकर इस त्यौहार का भरपूर आनन्द उठाते थे।

४. मुहर्रम–गाँव में हिन्दू मुस्लिम एकता का इससे उत्तम उदाहरण अन्य कोई और क्या हो सकता है कि मुहर्रम के त्यौहार पर हिन्दू भी ताजिया रखते थे और मुसलमानों के साथ मिलकर उत्साह से अन्य सभी त्यौहार मनाते थे और पूर्ण मनोरंजन करते थे।

रक्षाबन्धन, जन्माष्टमी, अनन्त चतुर्दशी, दीपावली आदि उत्सव भी गाँव के भरपूर मनोरंजन के साधन थे जिनका आनन्द हिन्दू और मुसलमान, जातीय भेद-भाव भूलकर सम्मिलित रूप से उठाते थे।

प्रश्न ७. आजकल आपके गाँव में मुकदमों की अधिकता के पीछे क्या कारण मालूम पड़ते हैं? इनके निवारण के लिए आप सुझाव दीजिए।

उत्तर–एक समय था, जब गाँव में लड़ाई-झगड़े कम होते थे और न्याय के लिए मुकदमों की संख्या भी नगण्य थी। किन्तु आज समय ने ऐसी करवट ली है कि गाँव में मुकदमों के नीचे वहाँ के लोग दबे जा रहे हैं। उनके मध्य होने वाले झगड़ों और मुकदमों के निपटारे के सभी उपाय व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं। मुकदमों की अधिकता दिन प्रतिदिन होती जा रही है। मुकदमों की अधिकता के पीछे निम्नांकित कारण हैं–

१. जनसंख्या वृद्धि–भारत के गाँवों में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। कृषि योग्य भूमि का बँटवारा होने लगा है। भूमि विभाजन को लेकर परिवार में परस्पर लड़ाई झगड़े तथा मुकदमों का होना स्वाभाविक बन गया है। जनसंख्या वृद्धि ने निवास योग्य भूमि को भी छोटा बना दिया है। सहनशीलता समाप्त हो गयी है। थोड़ी-थोड़ी भूमि के लिए भी परस्पर मुकदमों का प्रारम्भ हो गया है।

२. जमींदारी प्रथा की समाप्ति–जमींदारी प्रथा का अन्त तथा कृषि भूमि सीलिंग सम्बन्धी नियमों ने भी मुकदमों की संख्या में वृद्धि की है। नियमों को लेकर मुकदमे हुए। पंचायतों द्वारा उनका निपटारा सम्भव नहीं हो सका। अतः न्यायालयों की शरण लेनी पड़ी।

३. **राजनीतिक चेतना**— गाँवों में राजनीतिक चेतना ने, ग्रामीणों को जमींदारों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा दी। पंचायत निर्वाचन ने राजनीतिक गुटबन्दी उत्पन्न की और छोटे-छोटे झगड़ों को भी उकसाकर इतना बड़ा बना दिया कि न्यायालयों के दरवाजे भी उनके लिए छोटे पड़ने लगे।

४. **निवारण**— गाँव में कुटीर उद्योगों का विकास ही मुकदमों के निवारण का मुख्य उपाय है। कुटीर उद्योगों के विकास से ग्रामीणों का निठ्ठलापन दूर होगा। वे कार्य में व्यस्त रहेंगे। व्यर्थ के झगड़ों के लिए उनके पास समय ही नहीं रहेगा।

जनसंख्या वृद्धि पर रोक, मनोरंजन साधनों की उपलब्धता तथा प्रतिभा-पलायन पर नियन्त्रण भी मुकदमों की अधिकता के निवारण में सहायक सिद्ध होगा।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— पृष्ठ-९, १०— सादा = सरल, कृत्रिमता रहित। हर्ज = नुकसान, बुरा। रुतबा = महत्त्व, रौब, प्रभाव। गठरी = पोटली। जुटना = एकत्रित होना।

पृष्ठ-११, १२— आसिन = क्वार महीना। गढ़ = किला। निशाचर = राक्षस।

(१)

वह कस्बा है, जो देहात के लोगों के लिए उन दिनों बहुत बड़ी जगह का रुतबा रखता था। मुझे याद है कि गाँव के बाहर से सगे-सम्बन्धियों के सिवा बहुत कम लोग आया करते थे। मौलवी साहब के यहाँ दो चार महीने में एक बार एक आदमी फारसी की छोटी- मोटी किताबों की एक छोटी गठरी और एक दो बोतलों में सियाही (आजकल की ब्लूब्लैक रोशनाई नहीं) लिये आता था। जब वह आता तो हम बच्चों के कौतूहल का ठिकाना न रहता।

(पृष्ठ-१०)

सन्दर्भ— प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद** द्वारा लिखित **गाँव का जीवन** आत्मकथा से अवतरित है।

प्रसंग— प्रस्तुत स्थल पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने गाँव के सादा जीवन का चित्रण किया है।

व्याख्या— गाँव में आवश्यकताएँ अधिक नहीं होतीं। जो भी आवश्यकताएँ होती हैं उनकी पूर्ति गाँव में ही हो जाती है। अतः वहाँ के निवासियों को गाँव से बाहर जाने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

गाँव में बाहरी लोगों के आने का तो कोई अभिप्राय नहीं। हाँ, वहाँ किन्हीं के सगे सम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों का तो कम ही आगमन सम्भव था। यदि किसी का आगमन होता भी था तो वह कौतूहल उत्पन्न करता था। कौतूहल का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि एक आदमी, फारसी की कुछ छोटी-मोटी पुस्तकों की एक गठरी तथा एक-दो बोतल स्याही की लेकर आता था। उस व्यक्ति तथा उसकी वस्तुओं को देखकर बच्चे कौतूहल से पूर्ण हो जाते थे। बच्चों के कौतूहल का ठिकाना नहीं रहता था।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**— भाषा सरल एवम् भावानुकूल है।

(२) **शैली**— आत्मकथात्मक शैली है।

(३) **अन्य**— गाँव के स्वावलम्बी तथा सीमित क्षेत्रीय जीवन का सरल चित्रण है।

(२)

कथा, रामलीला, रामायण-पाठ और इन व्रत-त्यौहारों द्वारा गाँव में धार्मिक जीवन हमेशा जगा रहता था। इनके अलावा मुहर्रम में ताजिया रखने का भी रिवाज था। इसमें हिन्दू-मुसलमान दोनों शामिल होते थे। जीरादेई और जमापुर में कुछ हिन्दू ही कुछ सम्पन्न थे, इसलिए उनका ताजिया गरीब मुसलमानों के ताजियों से अधिक बड़ा और शानदार हुआ करता

था। मुहर्रम पर प्रायः रोज गदका, लाठी, फरी वगैरह के खेल लोग करते और पहलाम के दिन तो बहुत बड़ी भीड़ होती। गाँव-गाँव के ताजिया कर्बला तक पहुँचाये जाते हैं। (पृष्ठ-१४)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद** द्वारा लिखित **गाँव का जीवन** आत्मकथा से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर गाँव के धार्मिक तथा सामाजिक जीवन तथा उनकी एकता का चित्रण किया गया है।

व्याख्या–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद लिखते हैं कि गाँव में त्यौहारों के कारण धार्मिक जीवन में उत्साह रहता है। वहाँ जब कथा होती है तो ग्रामवासी बहुत ही प्रेम तथा भक्ति के साथ कथामृत का पान करते हैं। श्रीराम की लीला हो अथवा श्रीकृष्ण लीला, होली हो या दीपावली, जन्माष्टमी हो या अनन्त चतुर्दशी सभी व्रत-त्यौहारों द्वारा वहाँ धार्मिक जागृति बनी रहती है।

हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव गाँव में है ही नहीं। मुहर्रम के त्यौहार पर हिन्दू-मुसलमान दोनों ही अपने-अपने ताजिया निकालते थे। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद लिखते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम एकता की भावना यहाँ तक देखी जाती थी कि सम्पन्न हिन्दुओं के ताजिए निर्धन मुसलमानों के ताजियों से अधिक शानदार होते थे।

हिन्दू-मुस्लिम प्रेमभाव तथा एकता की झलक इस रूप में भी मिलती है कि वे भेद-भाव भूलकर अत्यधिक उत्साहपूर्वक गदका, लाठी, फरी आदि के खेल खेलते थे। ये ताजिए कर्बला तक पहुँचा कर ही उन्हें सन्तोष प्राप्त होता था।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–सरल तथा भावानुकूल भाषा है।

(२) **शैली**–आत्मकथात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

(३) **अन्य**–हिन्दू-मुस्लिम एकता के दर्शन होते हैं।

२ (अ) अन्तर्जातीय विवाह और लिपि का प्रश्न (आ) पूर्ण स्वाधीनता और उसके बाद

(पं० जवाहर लाल नेहरू)

● ***गागर में सागर***

पं० जवाहर लाल नेहरू*–** ***जन्म–१४ नवम्बर १८८९। **स्थान**–इलाहाबाद। **जीवन**–प्रारम्भिक शिक्षा घर पर। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध स्कूल 'हैरो' में शिक्षा। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से बी० ए०। १९१२ में बैरिस्ट्री की उपाधि के पश्चात् स्वदेश लौटना। **कार्य**–पिता पं० मोतीलाल नेहरू के साथ वकालत। गाँधीजी से प्रभावित होकर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में सहयोग। १९२९ में काँग्रेस के सभापति निर्वाचित। १५ अगस्त १९४७ को स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् भारत के प्रधानमन्त्री के रूप में सेवाएँ। २७ मई १९६४ को परलोकवास।

आत्मकथा–(अ) कृष्णा बहिन के विवाह की समस्या*अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन*कानून की आवश्यकता।

(आ) लिपि की समस्या। एकता के लिए हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती की एक ही लिपि पर बल। हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा का रूप देना आवश्यक। दक्षिणी भाषाओं के व्यवहार को बढ़ावा। भाषा को लचीला बनाना लाभप्रद।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. नेहरू जी अपने फुरसत का समय प्रयोग करते थे–
(अ) सैर करने में।
(ब) अखबार पढ़ने में।
(स) अखबार के लिए लेख लिखने में।
(द) बातचीत करने में।
(य) लोगों से मिलने जुलने में। **उत्तर**–(स) अखबार के लिए लेख लिखने में।

प्रश्न २. 'सिविल मैरिज एक्ट' के तहत विवाह करने को वर-वधू के लिए आवश्यक था–
(अ) अपने-अपने धर्मों का परित्याग करना।
(ब) अपने-अपने धर्मों में रहने की घोषणा करना।
(स) वधू को वर का धर्म स्वीकार करना।
(द) वर को वधू का धर्म स्वीकार करना।
(य) वर-वधू का किसी भी धर्म को स्वीकार करना।

उत्तर–(अ) अपने-अपने धर्मों का परित्याग करना।

प्रश्न ३. पंडित नेहरू के मतानुसार लिपि बदलने की जोखिम किस भाषा में ली जानी चाहिए–
(अ) जिसमें कोई उल्लेखनीय साहित्य हो।
(ब) जिसमें कोई उल्लेखनीय साहित्य न हो।
(स) जिसमें कोई उल्लेखनीय वैज्ञानिक कृति न हो।
(द) जिसमें कोई उल्लेखनीय वैज्ञानिक कृति हो।
(य) जिसमें न कोई उल्लेखनीय कृति हो और न उल्लेखनीय साहित्य हो।

उत्तर–(ब) जिसमें कोई उल्लेखनीय साहित्य न हो।

प्रश्न ४. गंगा-स्नान को जाते हुए लोगों को देखकर नेहरूजी क्या सोचते थे–
(अ) क्या वे राजनैतिक और सामाजिक कार्यों में नहीं लग सकते?
(ब) क्या वे आर्थिक और सामाजिक कार्यों में नहीं लग सकते?
(स) क्या वे दार्शनिक और राजनैतिक कार्यों में नहीं लग सकते?
(द) क्या वे दार्शनिक और आर्थिक कार्यों में नहीं लग सकते?
(य) क्या वे राजैनितक और आर्थिक कार्यों में नहीं लग सकते?

उत्तर–(य) क्या वे राजनैतिक और आर्थिक कार्यों में नहीं लग सकते?

प्रश्न ५. नेहरूजी ने कहाँ के अस्पताल से माताजी को इलाहाबाद ले जाने का निश्चय किया–
(अ) बम्बई से (ब) अयोध्या से
(स) दिल्ली से (द) लखनऊ से। **उत्तर**–(द) लखनऊ से।

प्रश्न ६. नेहरू जी ने किस भाषा को भारत की राष्ट्र भाषा के उपयुक्त बताया–
(अ) बंगला (ब) गुजराती
(स) डडिया (द) हिन्दुस्तानी। **उत्तर**–(द) हिन्दुस्तानी।

प्रश्न ७. नेहरूजी का भवन किस आश्रम के निकट था–
(अ) भारद्वाज आश्रम (ब) बाल्मीकि आश्रम
(स) दधीचि आश्रम (द) वशिष्ट आश्रम।

उत्तर–(अ) भारद्वाज आश्रम।

प्रश्न ८. नेहरूजी के घर हजारों लोग अपनी आँखों से क्या बरसा रहे थे?

(अ) श्रद्धा व प्रेम (ब) ईर्ष्या-भाव

(स) करुणा-भाव (द) गुस्सा। उत्तर-(अ) श्रद्धा व प्रेम।

प्रश्न ९. कहाँ की कांग्रेस में सीमा प्रान्त से लोग आये थे-

(अ) बम्बई कांग्रेस में (ब) देहली कांग्रेस में

(स) लाहौर कांग्रेस में (द) कलकत्ता कांग्रेस में।

उत्तर-(स) लाहौर कांग्रेस में।

प्रश्न १०. बीसवीं सदी के प्रारम्भ में किस भाषा में रचनात्मक साहित्य की रचना हुई-

(अ) उड़िया (ब) बंगला

(स) गुजराती (द) मराठी। उत्तर-(ब) बंगला।

प्रश्न ११. लाहौर कांग्रेस में भारतीय स्वाधीनता का विरोध किया-

(अ) सबने (ब) लगभग ५ आदमियों ने

(स) लगभग २० आदमियों ने (द) लगभग १०० आदमियों ने

उत्तर-(स) लगभग १० आदमियों ने।

प्रश्न १२. कहाँ के लोग थे जो सीधे-सादे किन्तु बड़ा काम करने वाले थे-

(अ) सीमा प्रान्त के (ब) लाहौर के

(स) अमृतसर के (द) दिल्ली के। उत्तर-(अ) सीमा प्रान्त के।

प्रश्न १३. कांग्रेसी मेम्बरों को असेम्बली के पदों से कब इस्तीफा देने को कहा गया-

(अ) बम्बई कांग्रेस के बाद (ब) लाहौर कांग्रेस के बाद

(स) दिल्ली कांग्रेस के बाद (द) अमृतसर कांग्रेस के बाद।

उत्तर-(ब) लाहौर कांग्रेस के बाद।

प्रश्न १४. देश की नब्ज पहचानने की दृष्टि से कब स्वतन्त्रता दिवस मनाना तय हुआ-

(अ) १५ अगस्त को (ब) २० जनवरी को

(स) २६ जनवरी को (द) ३० जनवरी को।

उत्तर-(स) २६ जनवरी को।

प्रश्न १५. नेहरूजी के घर प्रतिदिन आने वाली भीड़ क्या माँगने आती थी?

(अ) आर्थिक सहायता (ब) कष्टों का निवारण

(स) भारत की स्वाधीनता (द) भ्रातृभाव और सहानुभूति।

उत्तर-(द) भ्रातृ-भाव और सहानुभूति।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. यदि किसी भाषा की लिपि बदल दी जाय तो साहित्य के क्षेत्र में क्या कठिनाइयाँ आ जाएगी?

उत्तर-भाषा की लिपि बदल देने पर प्राचीन तथा नवीन साहित्य के मध्य एक दीवार उठ खड़ी होगी और प्राचीन साहित्य विदेशी भाषा में लिखा जान पड़ेगा।

प्रश्न २. लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में ३१ दिसम्बर की रात में क्या महत्त्वपूर्ण फैसला किया गया?

उत्तर-लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में ३१ दिसम्बर की रात में यह महत्त्वपूर्ण फैसला किया गया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को स्वाधीनता संघर्ष चलाने का अधिकार दिया जाय।

प्रश्न ३. पंडित नेहरू ने भाषा को समृद्ध बनाने का कौन-सा तरीका बतलाया?

(माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

उत्तर—पंडित नेहरू ने भाषा को समृद्ध बनाने का तरीका यह बतलाया कि उसे इतना लचीला रखा जाय कि दूसरी भाषाओं के भाव और शब्द भी उसमें सम्मिलित होकर पृथक् प्रतीत न हों।

प्रश्न ४. पंडित नेहरू ने लिपि सुधार की दृष्टि से किस कदम की चर्चा की है?

उत्तर—पंडित नेहरू ने लिपि सुधार की दृष्टि से हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती भाषाओं की एक लिपि बनाये जाने के कदम की चर्चा की है।

प्रश्न ५. बनारस हिन्दी साहित्य गोष्ठी में नेहरूजी ने किस बात की आलोचना की।

उत्तर—बनारस हिन्दी साहित्य गोष्ठी में नेहरूजी ने उन दिनों की क्लिष्ट तथा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की आलोचना की।

प्रश्न ६. नेहरूजी ने कृष्णा की शादी किसी प्रकार की धूमधाम से क्यों नहीं की?

उत्तर—नेहरूजी ने कृष्णा की शादी किसी प्रकार की धूमधाम से नहीं की क्योंकि उनकी माताजी अस्वस्थ थीं तथा सविनय अवज्ञा-भंग आन्दोलन जारी था और बहुत से उनके साथी जेलों में सड़ रहे थे।

प्रश्न ७. नेहरूजी ने कृष्णा के विवाह का निमन्त्रण-पत्र किस भाषा में मुद्रित कराया था?

उत्तर—नेहरूजी ने कृष्णा के विवाह का निमन्त्रण-पत्र लेटिन अक्षरों तथा हिन्दुस्तानी भाषा में मुद्रित कराया था।

प्रश्न ८. कृष्णा के विवाह के निमन्त्रण-पत्र में क्या नवीनता थी?

उत्तर—कृष्णा के विवाह के निमन्त्रण-पत्र में हिन्दुस्तानी भाषा का होना एक नवीनता थी क्योंकि इस प्रकार के निमन्त्रण पत्र सामान्यतः नागरी या फारसी लिपि में ही लिखे जाते थे।

प्रश्न ९. लिपि बदलने का जोखिम किस भाषा में लिया जाना चाहिए?

उत्तर—लिपि बदलने का जोखिम उसी भाषा में लेना चाहिए, जिसका कोई उल्लेखनीय साहित्य न हो।

प्रश्न १०. भारत में लिपि परिवर्तन का विचार क्यों नहीं किया जा सकता ?

उत्तर—भारत में लिपि परिवर्तन का विचार इसलिए नहीं किया जा सकता क्योंकि हमारा साहित्य सम्पन्न और अमूल्य तो है ही, सर्वसाधारण जनता के जीवन से इसका गहरा सम्बन्ध है।

प्रश्न ११. नेहरूजी ने हिन्दी लेखकों से क्या अपेक्षा की?

उत्तर—नेहरूजी ने हिन्दी लेखकों से हिन्दुस्तान की आम जनता के लिए इस प्रकार की भाषा में लिखने की अपेक्षा की, जिसे लोग समझ सकें।

प्रश्न १२. लाहौर के व्यक्तियों द्वारा नेहरूजी का शानदार स्वागत किसलिए था?

उत्तर—लाहौर के व्यक्तियों द्वारा नेहरूजी का शानदार स्वागत एक प्रतीक तथा आदर्श के लिए था।

प्रश्न १३. लाहौर कांग्रेस में किस प्रकार के प्रस्ताव करने की आवश्यकता थी?

उत्तर—लाहौर कांग्रेस में इस प्रकार के प्रस्ताव करने की आवश्यकता थी जिससे सम्पूर्ण देश हिल जाय और जिसका प्रभाव लाखों के जीवन पर पड़े।

प्रश्न १४. विशेष प्रस्ताव कब पारित हुआ?

उत्तर—विशेष प्रस्ताव ३१ दिसम्बर की अर्द्ध रात्रि के घण्टे की चोट के साथ पारित हुआ।

प्रश्न १५. नेहरूजी को छोटेपन का अनुभव कब होने लगता था?

उत्तर—नेहरूजी को छोटेपन का अनुभव आने वाले देशवासियों की अपार श्रद्धा तथा प्रेम की अधिकता के कारण होने लगता था।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. नेहरूजी की बहिन कृष्णा का विवाह धूमधाम से न होने के पीछे क्या प्रमुख कारण थे?

उत्तर—कृष्णा पं० जवाहर लाल नेहरू की बहिन थी। उसकी सगाई के पश्चात् शादी का निश्चय किया गया। विवाह अन्तर्जातीय होने के कारण दोनों को ही अपना धर्म त्यागने अथवा परिवर्तन करने की आवश्यकता थी।

कृष्णा का विवाह 'सिविल मैरिज एक्ट' के अनुसार हुआ। शादी में किसी प्रकार की कोई धूमधाम नहीं हुई। अत्याधिक सरलता के साथ उसका विवाह कार्य सम्पन्न हुआ।

कृष्णा के विवाह में सादगी का प्रमुख कारण माताजी की अस्वस्थता थी। वह अस्पताल में पड़ी-पड़ी ऊब रही थी। अतः उन्हें इलाहाबाद वापस लाना था।

कृष्णा का विवाह धूमधाम से न होने का एक कारण यह भी था कि उस समय सविनय-अवज्ञा-भंग आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था तथा बहुत से साथी जेलों जीवन-यापन कर रहे थे। अतः शादी में प्रदर्शन के रूप में कोई भी कार्य करना उचित नहीं था।

प्रश्न २. बनारस में हिन्दी साहित्य की संस्था में सम्मानित होने पर नेहरूजी ने क्या-क्या विचार प्रकट किये?

उत्तर—नेहरूजी की यह मान्यता रही है कि लिपि का साहित्य से अटूट सम्बन्ध है अतः लिपि परिवर्तन एक क्रान्तिकारी कार्य है जिसे जब चाहो, तब नहीं किया जा सकता। बनारस में जब पं० जवाहर लाल नेहरू को सम्मानित किया गया तब उन्होंने भाषा के सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया कि हिन्दुस्तानी ही भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा पद पर आरूढ़ हो सकती है।

हिन्दी का आलंकारिक तथा क्लिष्ट रूप कभी भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। नेहरूजी ने हिन्दी लेखकों से यह निवेदन किया कि वे पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन करें तथा पाश्चात्य साहित्य का हिन्दी अनुवाद करके लाभ उठावें।

प्रश्न ३. नेहरूजी को आजादी की लड़ाई में सीमा-प्रान्त के लोग क्यों पसन्द थे?

उत्तर—काँग्रेस अधिवेशन स्थान-स्थान पर आयोजित हुए। लाहौर में भी काँग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में सीमा प्रान्त के भी बहुत से व्यक्ति आये थे। इनकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक थी। ये भारत के सच्चे युवक प्रतीत होते थे।

लाहौर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन का उन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे राजनीतिक लहर में पड़ गये। उनकी सरलता तथा कर्मठता का लोहा सभी ने स्वीकार किया।

देश की स्वाधीनता के लिए ऐसे नवयुवकों की ही आवश्यकता होती है जो तर्क-कुतर्क में समय व्यतीत न करते हों। जो अनावश्यक तथा महत्त्वहीन विषयों को चर्चा का विषय न बनाते हों। जो कार्य को ही प्रमुखता देते हों, ऐसे नवयुवकों में सीमा प्रान्त के व्यक्तियों का नाम मुख्य है। वे देश सेवा के कार्य में जुट गये। राजनीतिक विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने अपने प्रान्त को लौटकर लोगों को संगठित किया और १९३० में राजनीतिक आन्दोलन में भाग लिया। नेहरूजी उनकी इस भावना से प्रभावित हुए और आजादी की लड़ाई में उनको सबसे अधिक पसन्द किया।

प्रश्न ४. मोतीलाल नेहरू ने असेम्बली के कांग्रेसी मेम्बरों को असेम्बली से स्तीफा देने की क्यों सलाह दी?

उत्तर– काँग्रेस की बैठक में सीमा प्रान्त से व्यक्तिगत प्रतिनिधि सदा ही सम्मिलित होते थे। खान अब्दुल गफ्फार खाँ भी कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया करते थे। जब लाहौर में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित हुआ तब भारत के सच्चे नवयुवकों का एक बहुत बड़ा दल वहाँ उपस्थित हुआ। यह दल राजनीतिक लहर के सम्पर्क में आने पर अत्यधिक प्रभावित हुआ और भारत के स्वाधीनता संघर्ष में पूर्णरूपेण सहयोग का संकल्प लिया।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सीमा प्रान्त के स्त्री पुरुषों की भागीदारी १९३० से कुछ अधिक ही हो गयी।

लाहौर-कांग्रेस में यह निश्चय किया गया था कि असहयोग प्रकट करने के लिए कांग्रेस सदस्य असेम्बली से स्तीफा दे दें। अतः मोतीलाल नेहरू ने असेम्बली के कांग्रेसी मेम्बरों को असेम्बली से स्तीफा देने की सलाह दी।

प्रश्न ५. नेहरूजी के आवास पर आने-जाने वालों का ताँता क्यों लगा रहता था?

उत्तर– नेहरूजी जी को १९२९ के कांग्रेस अधिवेशन में राष्ट्रीय कांग्रेस का सभापति निर्वाचित किया गया। नेहरूजी भारत की स्वाधीनता के पक्ष में थे। स्वतन्त्रता के लिए उनका संघर्ष प्रारम्भ हो गया था। स्वतन्त्रता सेनानियों ने नेहरूजी के पूर्ण स्वतन्त्रता संघर्ष की घोषणा को गाँव-गाँव में प्रसारित कर दिया था।

प्रयाग में १२ वर्ष पश्चात् कुम्भ का मेला आयोजित होता है। कुम्भ के स्नान के लिए दूर-दूर से स्नानार्थी आते हैं। संयोग से नेहरूजी का भवन भी भारद्वाज आश्रम के निकट था।अतः भारद्वाज आश्रम में जाने वाले व्यक्ति नेहरूजी के दर्शनार्थ भी पहुँचते थे। कुछ व्यक्ति राजनीतिक झुकाव के कारण भी नेहरूजी के भवन को जाते थे तथा कांग्रेस की समस्याओं और सुझावों का ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। कुछ आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिए भी नेहरूजी के भवन को पहुँचते थे। अतः नेहरूजी के आवास पर आने-जाने वालों का ताँता लगा रहता था।

प्रश्न ६. लिपि-सुधार की दृष्टि से नेहरूजी ने क्या सुझाव दिए हैं? उनसे आप कहाँ तक सहमत हैं और क्यों?

उत्तर– 'अन्तर्जातीय विवाह और लिपि का प्रश्न' आत्मकथा अंश में लेखक पं० जवाहर लाल नेहरू ने लिपि-सुधार की दृष्टि से बहुत से सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

बहन कृष्णा की शादी के समय जो निमन्त्रण-पत्र मुद्रित कराये गये उनमें लैटिन भाषा का प्रयोग किया गया। लैटिन के प्रयोग को सभी ने नकार दिया। स्वयं गाँधीजी ने भी इसका विरोध किया। अन्त में नेहरूजी ने भी हिन्दी लिपि में परिवर्तन अस्वीकार किया।

लिपि सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुए नेहरूजी ने हिन्दी, मराठी बंगला तथा गुजराती को एक दूसरे की भाषा मानते हुए उनको एक लिपि के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा है कि इन चारों भाषाओं को एक करके एक ही लिपि की खोज सरलतापूर्वक हो सकती है।

नेहरूजी का यह सुझाव भी ध्यान देने योग्य है जिसमें उन्होंने फारसी या नागरी दोनों ही लिपियों को हिन्दुस्तानी के लिए अधिकृत रूप प्रदान किया और उसे व्यावहारिक भी बताया।

नेहरूजी की यह मान्यता है कि किसी भाषा की लिपि में परिवर्तन करना उचित नहीं है। इस प्रकार के परिवर्तन से उस भाषा का ऐतिहासिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। अतः किसी भी भाषा की लिपि में परिवर्तन करना अव्यावहारिक तथा अनुचित है।

नेहरूजी ने संस्कृत से निःसृत भाषाओं के अध्ययन को भी आवश्यक बताया और कहा कि अन्य प्रान्त की अथवा अन्य भाषा की लिपियों को भी प्रमुखता देनी चाहिए।

प्रश्न ७. हिन्दुस्तानी की वृद्धि के लिए नेहरूजी का क्या दृष्टिकोण रहा है? इसके औचित्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– पं० जवाहरलाल नेहरू हिन्दुस्तानी के पक्षधर थे। उनके विचार से हिन्दुस्तानी ही राष्ट्रभाषा पद को सुशोभित करने में समर्थ थी। अतः उन्होंने हिन्दुस्तानी की अभिवृद्धि के लिए सदा प्रयास किया और कहा–

१. **भारतीय भाषाओं के साथ व्यवहार में वृद्धि**– पं० जवाहरलाल नेहरू ने बंगला, मराठी, गुजराती उड़िया आदि अन्य दक्षिणी भाषाओं के साथ हिन्दुस्तानी भाषा को व्यवहार वृद्धि पर बल दिया और कहा कि प्रयत्न यह भी होना चाहिए कि कोई भी भाषा अन्य भाषाओं के विकास के मार्ग में बाधा न पहुँचाये।

२. **नागरी तथा फारसी लिपियों को मान्यता**– पं० नेहरूजी के दृष्टिकोण से नागरी तथा फारसी दोनों ही लिपियों को मान्यता प्रदान कर देनी चाहिए और दोनों ही लिपियों में कार्य करने की स्वतन्त्रता प्रदान होनी चाहिए। दोनों लिपियों को अधिकृत करते हुए नेहरूजी ने इस बात पर बल दिया है कि भाषा को संस्कृतनिष्ठ बनाना अथवा फारसीनिष्ठ बना देना, किसी भी दशा में उचित नहीं है।

३. **विदेशी शब्दों को आत्मसात करना**– हिन्दुस्तानी की वृद्धि के लिए नेहरूजी ने विदेशी भाषाओं के शब्दों को अपनाने तथा आत्मसात करने का भी परामर्श दिया है। उन्होंने कहा है कि भाषा का लचीलापन तथा प्रचलित शब्दों को अपनाना भाषा की समृद्धि में योग देता है।

४. **जन-भाषा शैली अपनाना**– हिन्दुस्तानी के विकास के लिए जवाहरलाल नेहरू का सुझाव यह भी था कि क्लिष्ट भाषा को नहीं अपनाया जाय। आम बोल-चाल की भाषा से ही हिन्दुस्तानी का विकास सम्भव है तथा लेखकों को उत्तम लिखने की प्रेरणा की अपेक्षा की जा सकती है।

५. **पश्चिमी साहित्य का अनुवाद हो**– हिन्दी लेखकों के विचार परिवर्तन के लिए यह आवश्यक है कि पाश्चात्य साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया जाय। हिन्दी अनुवाद से पश्चिमी विचारों से अवगत होना सरल होगा तथा वहाँ से साहित्य का अध्ययन भी सभी के लिए सम्भव हो सकेगा।

हिन्दुस्तान के विकास की दृष्टि से नेहरूजी के विचार सर्वथा उचित हैं तथा स्वीकार करने योग्य हैं।

प्रश्न ३. 'स्वतन्त्रता के पीछे नई जिन्दगी' शीर्षक से अपनी आत्मकथा के रूप में एक पृष्ठ लिखिए।

उत्तर– स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है किन्तु खेद का विषय है कि वह पग-पग पर बन्धनों में आबद्ध है।

प्रत्येक देशवासी स्वदेश के गौरव के लिए, उसकी स्वतन्त्रता के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है। भारत में भी स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन हुए, देश की स्वाधीनता के लिए देश प्रेमियों ने 'वन्देमातरम्' तथा 'भारत माता की जय हो' आदि नारे लगाते हुए फाँसी के तख्ते पर पहुँच गये। प्राणों की आहुति देकर सबको स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयास किया। देशभक्तों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। देश स्वतन्त्र हुआ। एक नये जीवन का प्रारम्भ हुआ।

भारत के स्वतन्त्रता के वातावरण में स्वास लेना प्रारम्भ किया है प्रगति की ओर पग बढ़ाया है। नये-नये अनुसन्धान होने लगे हैं। उद्योगों को नई दिशा प्राप्त हुई है। प्राचीन रीति रिवाजों

का अन्त हुआ है। रूढ़िवादिता समाप्त हुई है। विश्वास होता जा रहा है कि इस प्रकार का विकास होता रहा तो देश का स्वरूप ही बदल जायेगा और भारत का स्थान विश्व में प्रथम होगा।

प्रश्न ४. भाषा और शैली-सौन्दर्य की दृष्टि से नेहरूजी के आत्मकथांश का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर– पं० जवाहरलाल नेहरू भाषा और शैली-सौन्दर्य की दृष्टि से अमर साहित्यकारों की श्रेणी में तो नहीं आते किन्तु भारतीय संस्कृति के प्रति उनके अपार प्रेम को प्रकट करता है, इसमें दो मत नहीं हो सकते।

१. **भाषा**– नेहरूजी की भाषा सरल, सुबोध तथा अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों से पूर्ण है। उसमें सजीवता, कलात्मकता तथा चित्रात्मकता है।

२. **शैली**– नेहरूजी का प्रस्तुत आत्मकथांश उत्तम पुरुष शैली में लिखा गया है किन्तु अपने गुणों का उन्होंने कहीं भी वर्णन नहीं किया है। आत्मश्लाधा रहित नेहरूजी की आत्मकथा का यह अंश प्रत्येक दृष्टि से सराहनीय है।

३. **अनावश्यक विस्तार से मुक्त**– अनावश्यक विस्तार से नेहरूजी की शैली मुक्त रही है। उन्होंने अपने भाव संक्षेप में ही प्रस्तुत किये हैं। घटनाओं का वर्णन करने में भी एक सीमा तक ही गये हैं। प्रतीकात्मक शैली में अपना दृष्टिकोण पाठकों के समक्ष रखने में नेहरूजी को सफलता प्राप्त हुई है।

४. **युग चेतना का संकेत**– नेहरूजी ने अपने राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विचारों के प्रस्तुतीकरण में प्रतीकों का सहारा लिया है। भाषा तथा शैली की सरलता एवम् चित्रात्मकता सर्वत्र प्रसंगानुसार ही रही है जो युग-चेतना का संकेत भी है।

सप्रसंग व्याख्याएँ

शब्दार्थ–पृष्ठ २२-२३– आसारों = सहारों, माध्यमों। सविनय = विनय पूर्वक, शान्तिपूर्वक। बाकायदा = नियमानुसार, तरीके से। मुताबिक = अनुसार। परित्याग = त्यागना, छोड़ देना। बाहि-यात = व्यर्थ का, बेकार का। मुख़ालिफ = पृथक्, भिन्न। सदमा = धक्का, दुख, कष्ट। रद्दो-बदल = बदलाव, परिवर्तन। जोखिम = खतरा, साहसपूर्ण। दरअसल = वास्तव में असल में। रोजमर्रा = दैनिक, हर दिन। हद = सीमा। निरर्थक = बेकार, व्यर्थ।

पृष्ठ २४-२५– बेजा = अधिक, विशेष। सतत् = निरन्तर, लगातार। समृद्धि = उन्नति, धन-धान्य से पूर्णता, सम्पन्नता। स्मृति = याद, ध्यान। तादाद = संख्या। नुक्ता चीनी = आलोचना। राय = विचार, मत। जाहिर = प्रकट। न्यौता = आमन्त्रण, बुलावा। आगाह = सचेत, सावधान। पैगाम = सन्देश।

पृष्ठ २६-२७– मोहब्बत = समय, अवधि। इख्तियार = अधिकार। नजदीक = समीप, पास। कामयाबी = सफलता। आदेशानुसार = आज्ञा के अनुसार। बावत = विषय में। कारगर = सफल, प्रभावशाली। वे-शुमार = बहुत, अनगिनत।

(१)

किसी भी भाषा के लिए जिसका प्राचीनकाल उज्जवल रहा हो, लिपि का बदलना बहुत बड़ी क्रान्ति है, क्योंकि लिपि का उस साहित्य से बहुत गहरा सम्बन्ध रहता है। लिपि बदल दीजिए तो सामने कुछ और ही शब्द चित्र नजर आयेंगे, ध्वनि बदल जायेगी, भाव बदल जायेंगे। पुराने और नये साहित्य के बीच एक अटूट दीवार उठ खड़ी होगी। पुराना साहित्य एकदम किसी विदेशी भाषा में लिखा हुआ-सा जान पड़ेगा, ऐसी भाषा में जो मर चुकी हो।

लिपि बदलने का जोखिम उसी भाषा में लेना चाहिए, जिसका कोई उल्लेखनीय साहित्य न हो। हिन्दुस्तान में तो मैं ऐसी रद्दो-बदल का ख्याल भी नहीं कर सकता हूँ, क्योंकि हमारा साहित्य केवल सम्पन्न और अमूल्य ही नहीं बल्कि हमारे इतिहास और विचार-परम्परा से सम्बद्ध है और हमारी सर्व-साधारण जनता के जीवन के साथ उसका बड़ा गहरा नाता रहा है। हमारे देश पर इस तरह का परिवर्तन लाद देना एक क्रूर विच्छेद के समान होगा और सार्वजनिक शिक्षा के रास्ते में बाधक होगा। (पृष्ठ-२३)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **जवाहरलाल नेहरू** द्वारा लिखित **अन्तर्जातीय विवाह और लिपि का प्रश्न** आत्मकथा अंश से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर नेहरूजी अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि किसी भी साहित्य की लिपि में परिवर्तन सम्भव नहीं है।

व्याख्या–किसी भी प्राचीन साहित्य की भाषा की लिपि में परिवर्तन उस गौरवशाली साहित्य में क्रान्ति समझनी चाहिए। साहित्य से उसकी लिपि का अटूट सम्बन्ध होता है। यदि लिपि में परिवर्तन कर दिया जाय तो उसका प्रभाव उसकी भाषा उसके भावादि पर निश्चित रूप से पड़ेगा। ऐसी दशा में प्राचीन साहित्य भी ऐसा मालूम पड़ेगा जैसे कोई पाश्चात्य भाषा का साहित्य हो। ऐसा ज्ञात होगा कि यह भाषा ही प्रायः मृत है। अतः यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि लिपि में परिवर्तन कोई सरल कार्य नहीं है। यह परिवर्तन बहुत ही कठिन तथा अत्यन्त साहसिक कार्य है।

नेहरूजी अन्त में कहते हैं कि जिस भाषा का साहित्य महत्त्वपूर्ण नहीं होता, उसकी लिपि में परिवर्तन करना कोई साहसिक कार्य नहीं है। ऐसे साहित्य की लिपि में सरलता-पूर्वक परिवर्तन किया जा सकता है। भारतीय साहित्य सदा से ही समृद्ध रहा है। इसका भारतीय विचारों से अटूट सम्बन्ध है। इतिहास से इस प्रकार जुड़ा है कि पृथक नहीं किया जा सकता। ऐसी दशा में भारत में लिपि परिवर्तन यहाँ के नागरिकों पर परिवर्तन लाद देना सिद्ध होगा जो सर्वथा अनुचित है। अमानवीय कृत्य है। जनता के साथ क्रूरता पूर्ण कार्य है।

साहित्य सौन्दर्य–(१) **भाषा**–हिन्दुस्तानी।

(२) **शैली**–आत्मकथात्मक शैली।

(३) **अन्य**–गौरवशाली साहित्य की लिपि में किसी भी प्रकार का परिवर्तन अमानवीय कार्य है।

(२)

हिन्दुस्तानी अंग्रेजी व दूसरी विदेशी भाषाओं से बहुत से शब्द अपने में ले लें। इस बात की जरूरत है, क्योंकि आजकल जो नयी चीजें निकलती हैं, हमारी भाषा में उनके अर्थ द्योतक शब्द नहीं मिलते। इसलिये यही बेहतर है कि संस्कृत, फारसी या अरबी से नये और मुश्किल शब्द गढ़ने के बजाय हम उन्हीं सुप्रचलित शब्दों को काम में लावें। भाषा की पवित्रता के हावी विदेशी शब्दों का विरोध करते हैं, लेकिन मेरा ख्याल है कि वे गलती करते हैं। असल में किसी भाषा को समृद्ध बनाने का तरीका यही है कि वह इतनी लचीली रखी जाय कि दूसरी भाषाओं के भाव और शब्द उसमें शामिल होकर उसी के हो जायें। (पृष्ठ-२४)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण '**पं० जवाहरलाल नेहरू**' द्वारा लिखित '**अन्तर्जातीय विवाह और लिपि का प्रश्न**' आत्मकथा अंश से अवतरित है।

प्रसंग–प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने भाषा के स्वरूप पर विचार करते हुए उसके लचीलेपन पर विशेष बल दिया है।

व्याख्या–नेहरूजी के विचार से हिन्दुस्तानी भाषा की लिपि के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भी विवाद निरर्थक है। यद्यपि कुछ विद्वान् लिपि का नागरी होना आवश्यक मानते हैं। कुछेक

उसकी फारसी लिपि को महत्त्व देते हैं। कुछ साहित्यकार संस्कृत प्रधान भाषा को प्रमुखता देते हैं। लेखक के मतानुसार ये विभिन्न प्रवृत्तियाँ भाषा के समुचित विकास के मार्ग में बाधक है।

हिन्दी की समृद्धि के लिए नेहरूजी ने अंग्रेजी तथा अन्य पाश्चात्य भाषा के शब्दों को अपनाने की प्रेरणा देते हुए यह सुझाव दिया है कि विदेशी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाना प्रत्येक दशा में श्रेयस्कर है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– सरल, सुबोध हिन्दुस्तानी।

(२) **शैली**– आत्मकथात्मक शैली।

(३) **अन्य**–लेखक ने फारसी तथा नागरी लिपि के विवाद की निरर्थकता पर प्रकाश डाला है।

(३)

जब मैं इस बड़ी भीड़ को और संगम पर जाते और आते हुए लोगों की अटूट धारा को देखता तो मैं सोचा करता था कि ये लोग सत्याग्रह और शान्तिपूर्ण सीधे हमले की पुकार का कितना साथ देंगे? इनमें से कितने लोग लाहौर के प्रस्तावों को जानते हैं या उनकी परवाह करते हैं? उनका वह विश्वास कितना आश्चर्यजनक और मजबूत है, जिसमें वे और उनके बुजुर्ग हजारों बरसों से हिन्दुस्तान के हर हिस्से से पवित्र गंगा में स्नान करने के लिए चले आते थे।

(पृष्ठ २७)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० जवाहरलाल नेहरू** द्वारा लिखित **अन्तर्जातीय विवाह और लिपि का प्रश्न** आत्म कथा अंश से अवतरित है।

प्रसंग– प्रस्तुत स्थल पर लेखक माघ के कुम्भ मेले पर प्रयाग-स्नानार्थ आने वाले धर्म-प्रेमियों के विषय में बता रहे हैं।

व्याख्या–प्रयाग के कुम्भ स्नानार्थ आने वाले लाखों यात्रियों के धर्म-प्रेम को देखकर नेहरूजी विचार करते थे कि ये सरल-सच्चे धर्म-भीरू यात्री हमारे सत्याग्रह में इस अटूट श्रद्धा तथा अदम्य उत्साह के साथ भाग नहीं ले सकते। इनमें धर्म के प्रति अन्ध भक्ति है। ये धर्म के लिए सब कुछ करने को उद्यत हो सकते हैं किन्तु राजनीतिक चेतना का इनमें अभाव है। ये देश की राजनीतिक अवस्था में परिवर्तन लाने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं कर सकते। ये लाहौर अधिवेशन से अनभिज्ञ हैं। इन्हें लाहौर कांग्रेस अधिवेशन के प्रस्तावों के विषय में न कोई जानकारी है। न उन प्रस्तावों की परवाह है।

नेहरूजी ने इन धर्म-प्रेमियों के विश्वास पर ध्यान दिया था। संसार-सागर से पार होने का, धर्म-प्राण भारतीयों का अडिग विश्वास नेहरूजी ने परखा था। यात्रियों के अडिग तथा आश्चर्य-जनक उत्साह को देखकर लेखक के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ था कि इस उत्साह की दिशा में परिवर्तन से इनका आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पलट सकता है। देश को स्वतन्त्रता भी प्राप्त हो सकती है। अतः इस धर्म प्रेमी जनता को राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– सरल हिन्दुस्तानी।

(२) **शैली**– आत्मकथात्मक शैली।

(३) **अन्य**– धर्मप्रेमियों के विश्वास को प्रकट किया है।

(४)

वे अपनी प्रेम-भरी चमकती आँखों से, जिनमें पीढ़ियों की गरीबी और मुसीबतें झलक रही थीं, देखते हुए हमारे ऊपर अपनी श्रद्धा और प्रेम बरसा रहे थे और उसके बदले में सिवाय भ्रातृ-भाव और सहानुभूति के अलावा और कुछ नहीं माँगते थे। मैं इस प्रेम और श्रद्धा की अधिकता के असर से अपने हृदय में छोटापन अनुभव किये बिना नहीं रह सकता था।

(पृष्ठ-२८) (माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यावतरण **पं० जवाहरलाल नेहरू** द्वारा लिखित **अन्तर्जातीय विवाह और लिपि का प्रश्न** आत्मकथा अंश से अवतरित है।

प्रसंग– प्रस्तुत स्थल पर नेहरूजी ने कुम्भ स्नान के लिए आने वाले धर्म प्रेमियों की मनः स्थिति का चित्रण करते हुए कहा है कि यही स्नानार्थी नेहरूजी के पास भी दर्शनार्थ आ रहे थे और उनकी सहानुभूति चाहते थे।

व्याख्या– इलाहाबाद में नेहरूजी जब अपने आवास पर निवास कर रहे थे लाखों आगन्तुक उनके दर्शन करने के लिए आते थे। आने वाले ये लोग अधिकांशतः इस प्रकार के थे जो पीढ़ियों से निर्धन थे और आपदाएँ सहन करने के अभ्यस्त हो चुके थे। कांग्रेसी नेता भी नेहरूजी से भेंट करने आते थे। वे उनसे कुछ प्राप्त करने नहीं आते थे। वे उन पर अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाने आते थे। उनकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए आते थे।

नेहरूजी ने लिखा है कि सबसे, सब समय मिलना सम्भव नहीं था। उनके इस प्रेम तथा श्रद्धा की अधिकता के सम्मुख उन्हें अपने छोटेपन का अनुभव होता था।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**– सरल हिन्दुस्तानी भाषा है।

(२) **शैली**– आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग है।

(३) **अन्य**– जनसाधारण का भारतीय नेताओं के लिए प्रेम तथा श्रद्धा का सजीव चित्र है।

३ अपने देश पर अभिमान

(गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर)

● *गागर में सागर*

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर–जन्म–७ मई १८६१। **स्थान**– कलकत्ता। **जीवन**– पिता देवेन्द्रनाथ से प्रार्थना तथा उपासना का पाठ पढ़ा। साहित्य, कला, संगीत की शिक्षा। शान्ति-निकेतन को कर्मभूमि बनाया। १२ वर्ष की अल्पायु में "पृथ्वीराज पराजय" नाटक लिखा। काव्य-रचना की। यूरोपीय साहित्य का अध्ययन किया। ४० वर्ष की आयु में साहित्य साधना में जुट गये। स्वदेश कल्याण की सदा कामना की। विश्व यात्राएँ की। गाँधीजी को पूर्ण समर्थन प्रदान किया। "जन-गण-मन अधिनायक जय हे" राष्ट्रगीत की रचना की।

आत्मकथा– रवीन्द्रनाथ टैगोर के परिवार में स्वदेश के अभिमान की ज्योति प्रज्ज्वलित थी। सभी भाइयों ने देश-प्रेम से सम्बद्ध कविताओं की रचना की। टैगोर ने राष्ट्रगीत की रचना की। शान्ति निकेतन की स्थापना की।

[illegible] वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. ***'भारतेजय' नामक लोकप्रिय राष्ट्रगीत किसने लिखा था?***

(अ) रवीन्द्रनाथ टैगोर ने। (आ) उनके प्रथम बड़े भाई ने।
(इ) उनके दूसरे बड़े भाई ने। (ई) उनके पिताजी ने।
(उ) बंकिम चन्द्र चटर्जी ने।

उत्तर–(इ) उनके दूसरे बड़े भाई ने।

प्रश्न २. ***लार्ड लिटन के समय पत्र में लिखे गये लेख में लेखक ने कैसे विचार प्रस्तुत किये थे?***

(अ) देशभक्ति के। (आ) क्रान्तिकारी।

(स) प्रभावपूर्ण। (ई) भड़काने वाले।
(उ) तीखे।
उत्तर-(उ) तीखे।

प्रश्न ३. 'राष्ट्रीय पोशाक' के विषय में लेखक का क्या भरोसा है?
(अ) इसे पहनने में लोग गौरव का अनुभव करेंगे।
(आ) इसे पहनकर आम रास्ते पर चलने की हिम्मत बहुत कम लोग करेंगे।
(इ) इसे पहनकर चलने में लोग असभ्य होने के भय से ग्रस्त होंगे।
(ई) इसे पहनकर चलने की कोई हिम्मत नहीं करेगा।
(उ) इसे पहनकर चलने वालों को नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।
उत्तर-(आ) इसे पहनकर आम रास्ते पर चलने की हिम्मत बहुत कम लोग करेंगे।

प्रश्न ४. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने "पृथ्वीराज पराजय" नामक पहला नाटक लिखा-
(अ) १२ वर्ष की अवस्था में। (आ) १८ वर्ष की अवस्था में।
(इ) २० वर्ष की अवस्था में। (ई) २१ वर्ष की अवस्था में।
(उ) ४० वर्ष की अवस्था में।
उत्तर-(अ) १२ वर्ष की अवस्था में।

प्रश्न ५. शिकार मण्डली में खून खराबी सहित, रसिक व्यक्ति का नाम था-
(अ) रवीन्द्रनाथ। (आ) देवेन्द्रनाथ।
(इ) ज्योतिरिन्द्र। (ई) बृज बाबू।
(उ) नवगोपाल मित्र।
उत्तर-(ई) बृजबाबू।

प्रश्न ६. 'हिन्दू मेला' की व्यवस्था कौन करता था?
(अ) देवेन्द्रनाथ। (आ) बृजबाबू।
(इ) नवगोपाल मित्र। (ई) प्रोफेसर मोरले।
(उ) राजनारायण बोस।
उत्तर-(इ) नवगोपाल मित्र।

प्रश्न ७. 'हिन्दू मेला' का प्रमुख उद्देश्य था-
(अ) राष्ट्र स्तर की बुद्धिमत्ता और कौशल को बढ़ावा देना।
(आ) मनोरंजन देना। (इ) निधनों की सहायता करना।
(ई) यात्रा के अवसर प्रदान करना। (उ) लेखकों को प्रोत्साहित करना।
उत्तर-(अ) राष्ट्र स्तर की बुद्धिमत्ता और कौशल को बढ़ावा देना।

प्रश्न ८. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने हिन्दू मेले में कविता कहाँ पढ़ी थी-
(अ) नवीन सेन के सम्मुख। (आ) पेड़ के नीचे।
(इ) ज्योतिरिन्द्र के सम्मुख। (ई) पुलिस कमिश्नर के सम्मुख।
(उ) टूटे-फूटे मकान में।
उत्तर-(आ) पेड़ के नीचे।

प्रश्न ९. टैगोर' का भाई शिकार को किस दिन जाया करता था-
(अ) शनिवार को। (आ) रविवार को।
(इ) सोमवार को। (ई) मंगलवार को।
(उ) बुधवार को।
उत्तर-(आ) रविवार को।

प्रश्न १०. 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे'. गीत के रचयिता कौन हैं?
(अ) देवेन्द्रनाथ (आ) ज्योतिरिन्द्र
(इ) रवीन्द्रनाथ टैगोर (ई) राजनारायण बोस
(उ) बंकिमचन्द्र चटर्जी।
उत्तर-(इ) रवीन्द्रनाथ टैगोर।

सउत्तर अतिलघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. लेखक के अनुसार किस समय देश के पढ़े-लिखे लोगों ने अपनी जन्म भूमि की भाषा और विचारों का बहिष्कार कर रखा था?

उत्तर– लेखक के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में देश के पढ़े-लिखे लोगों ने अपनी जन्मभूमि की भाषा और विचारों का बहिष्कार कर रखा था।

प्रश्न २. लेखक के पिता ने अंग्रेजी के पत्र को ज्यों का त्यों क्यों लौटा दिया था?

उत्तर– लेखक के पिता ने अंग्रेजी के पत्र को ज्यों का त्यों इसलिए लौटा दिया था क्योंकि वह अंग्रेजी भाषा में था जो हिन्दी के विकास में बाधक थी।

प्रश्न ३. मानव जाति के शरीर में भरी हुई अतिप्रिय ताकत कौन-सी है?

उत्तर– मानव जाति के शरीर में भरी हुई अति प्रिय ताकत बहादुरी के विषय में ज्ञात आदर की है।

प्रश्न ४. "साम्राज्य की फैली हुई राज्य व्यवस्था में सिर्फ क्लर्की का रास्ता खुला रखने से ही काम नहीं चलेगा।" लेखक की यह उक्ति उनके किस प्रकार के विचारों को व्यक्त करती है?

उत्तर– "साम्राज्य की फैली हुई राज्य व्यवस्था में सिर्फ क्लर्की का रास्ता खुला रखने से ही काम नहीं चलेगा" उक्ति उनके देश-प्रेम तथा साहस भरे जिम्मेदारी के काम को सिर पर लेने के विचारों को व्यक्त करती है।

प्रश्न ५. हिन्दू मेला की क्या विशेषता थी?

उत्तर– हिन्दू मेला की विशेषता जन्म भूमि की निर्मल कीर्ति से पूर्ण पद गायन, स्वदेश प्रेम-पूर्ण कविता पाठ तथा राष्ट्र स्तर की बुद्धिमता और कौशल की वृद्धि थी।

प्रश्न ६. रवीन्द्रनाथ टैगोर के गद्य लेख का किसी पर भी प्रभाव क्यों नहीं पड़ा?

उत्तर– रवीन्द्रनाथ टैगोर के गद्य लेख का किसी पर भी प्रभाव उनकी चौदह वर्ष की अल्पायु के कारण नहीं पड़ा।

प्रश्न ७. रवीन्द्रनाथ के चौथे भाई ज्योतिरिन्द्र की सरकारी संस्था के प्रमुख कौन थे?

उत्तर– रवीन्द्रनाथ के चौथे भाई ज्योतिरिन्द्र की सरकारी संस्था के प्रमुख राजनारायण बोस थे।

प्रश्न ८. बच्चा होते हुए भी, हमारा एक मात्र काम क्या था?

उत्तर– बच्चा होते हुए भी, हमें संकोच और अपनी काबिलियत पर भरोसा न होना या डर का नाम भी मालूम न था। केवल जोश की गर्मी में तपते रहना ही हमारा एकमात्र काम था।

प्रश्न ९. रवीन्द्रनाथ के शिकार की क्या विशेषता थी?

उत्तर– रवीन्द्रनाथ के शिकार की यह विशेषता थी कि उसमें खून-खराबा कभी नहीं हुआ।

प्रश्न १०. शिकार से भूखे पेट कभी न आने का क्या कारण था?

उत्तर– शिकार से भूखे पेट कभी न आने का कारण यह था कि टैगोर की भौजाई पूड़ियाँ तथा खाने की दूसरी चीजें खूब बाँध दिया करती थीं।

प्रश्न ११. बृजबाबू कौन थे।

उत्तर– बृजबाबू मैट्रो पालटिन इन्स्टीट्यूट के व्यवस्थापक थे।

प्रश्न १२. इन्सान की आत्मा कब छटपटाने लगती है?

उत्तर– इन्सान की आत्मा साहसपूर्ण उत्तरदायित्व का कार्य न मिलने की दशा में बन्धन मुक्ति के लिए छटपटाने लगती है।

प्रश्न १३. टैगोर के मण्डल का क्या कार्य था?

उत्तर–टैगोर के मण्डल का कार्य आग पेटी तैयार करना और दूसरे छोटे-छोटे धन्धों को बढ़ावा देना था।

प्रश्न १४. राजनारायण बाबू के गुणों को न जान सकने का क्या कारण था?

उत्तर–राजनारायण बाबू के गुणों को न जान सकने का कारण अल्पायु था।

प्रश्न १५. व्यवहार चतुर लोगों के समाज में प्रविष्ट होने का क्या प्रभाव हुआ?

उत्तर–व्यवहार चतुर लोगों के समाज में प्रविष्ट होने का यह प्रभाव हुआ कि उन्होंने अपने व्यवहार ज्ञान से हमारा छोटा-सा बगीचा तहस-नहस कर डाला।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. ज्योतिरिन्द्र किस प्रकार की संस्था को जन्म देने वाले थे? इस संस्था के काम-काज के बारे में लेखक ने क्या लिखा है?

उत्तर–ज्योतिरिन्द्र एक सरकारी संस्था को जन्म देने वाले थे। राजनारायण बोस इस सरकारी संस्था के प्रमुख थे। संस्था की बैठकें कलकत्ता की एक ऐसी गली में हुआ करती थी जो आड़ी-तिरछी दिखाई देती थी। मकान भी टूटा-फूटा था जिसमें सरकारी संस्था की बैठक सम्पन्न हुआ करती थी।

ज्योतिरिन्द्र की संस्था के काम-काज के विषय में लेखक ने अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि इस संस्था के विचार सब पर प्रकट नहीं थे क्योंकि विचार-विमर्श रहस्यपूर्ण तथा गुप्त होते थे।

बैठक के आगे वाले दरवाजे पर सदा ताला लगा होता था। अन्दर पहुँचकर, कमरे में धीरे-धीरे बात होती थीं जिसे कोई बाहर से सुन नहीं सकता था। जोशीलापन इस संस्था का प्रमुख काम-काज था।

प्रश्न २. बहादुरी के विषय में लेखक के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–बहादुरी के विषय में लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि एक समय ऐसा भी आता है जब बहादुरी में कुछ अभाव उत्पन्न हो जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में बहादुरी के सम्बन्ध में एक ज्ञात आदर व्यक्ति के अन्तः में छिपा रहता है जो समय आने पर ही प्रकट होता है।

प्रश्न ३. मण्डल के ऐसे कौन-से काम थे जिन्हें याद करने पर लेखक को हँसी आए बिना नहीं रहती?

उत्तर–रवीन्द्रनाथ टैगोर के चौथे भाई का नाम, ज्योतिरिन्द्र था। उन्होंने एक मण्डल की स्थापना की थी। मण्डल के कार्य इस प्रकार के थे जिनकी याद करने पर हँसी आना स्वाभाविक था। स्वयं लेखक को मण्डल के कार्यों पर हँसी आती थी। इस प्रकार के कार्य निम्नांकित हैं–

(१) **राष्ट्रीय पोशाक**–मण्डल ने धोती को ढीला तथा पायजामे को विदेशी मानते हुए दोनों को मिलाकर पहनने का तीसरा ढंग निकाला। पगड़ी तथा टोपी के मेल से डरावने शिर ढकने के लिए रचना की गयी।

(२) **आग-पेटी**–आग-पेटी तैयार करने में मण्डल के प्रत्येक सदस्य को अपनी आय से दसवाँ भाग देना होता था। इस कार्य में केवल एक पेटी भर सलाई ही बनायी जा सकी।

(३) **शिकार**–शिकार मण्डली में सभी जाति के व्यक्ति सम्मिलित थे। कार्यक्रम का सर्वाधिक आश्चर्यजनक पहलू यह था कि शिकार में रक्त नहीं बहाया जाता था। किसी तालाब के तट पर बैठकर साथ लाये हुए भोजन से क्षुधाशान्त की जाती थी।

(४) **हाथ करघा**–एक युवक छात्र द्वारा वाष्पचालित हाथ-करघा तैयार करने की सूचना पर मण्डल के सदस्यों ने उसका ऋण चुकाकर उसे क्रय कर लिया। बृजबाबू अपने सिर पर मोटा-टॉबिल लपेटे आये तथा सूचना दी कि यह टॉबिल अपने करघे का है।

प्रश्न ४. लेखक के भाई ज्योतिरिन्द्र ने कौन-सी राष्ट्रीय पोशाक की खोज की थी?

उत्तर–ज्योतिरिन्द्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर के भाई थे। उन्होंने एक राष्ट्रीय पोशाक की खोज की थी। उनके इस नवीन तथा विचित्र राष्ट्रीय पोशाक की खोज का कारण यह विचार था कि धोती ढीली-ढाली होती है। पायजामा से विदेशीपन झलकता है। अतः दोनों के मेल से उन्होंने जिस पोशाक की खोज की उसमें पायजामे के आगे पीछे भी धोती का बनावटी पटली लगाकर पायजामे को सुन्दर रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया गया था।

पगड़ी तथा टोपी के मेल से सिर के लिए जो नवीन पोशाक तैयार की थी वह अत्यन्त भयावह थी।

प्रश्न ५. लेखक का भाई हर इतवार को अपनी मण्डली के साथ जिस शिकार को जाता था, उसका विवरण दीजिए तथा उसके उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–रवीन्द्रनाथ टैगोर के भाई ज्योतिरिन्द्र का प्रत्येक रविवार को शिकार पर जाने का कार्यक्रम निश्चित था। वह अपनी मण्डली के साथ घर से पूड़ियाँ तथा अन्य खाद्य सामग्री लेकर शिकार पर जाते थे। शिकार की मण्डली में ऐसे व्यक्ति भी सम्मिलित हो जाते थे, जिनसे किसी प्रकार का परिचय नहीं था।

शिकार-मण्डली में लगभग सभी जातियों के सदस्य थे। रक्त पात को इस मण्डली में कोई स्थान नहीं था।

शिकार-मण्डली का विचित्र और आनन्ददायक विषय यह था कि न तो किसी जीव को मारा जाता था और न घायल किया जाता था। किसी को मारने अथवा घायल करने को किसी प्रकार का महत्त्व प्रदान नहीं किया जाता था। महत्व तो उस खाद्य सामग्री को दिया जाता था जिसे घर से तैयार कराकर साथ में ले जाया जाता था और किसी बाग या बगीचे में जाकर साथ लाये पदार्थों को पेट को सौंप दिया जाता था। तालाब के तट पर बैठकर उन पूड़ियों तथा अन्य खाद्य सामग्री को मण्डली के सभी सदस्य मिल बाँटकर खाते थे। जात-पाँत को कोई स्थान प्राप्त नहीं था।

शिकार मण्डली के सदस्यों में उल्लेखनीय नाम बृजबाबू का था। वह मेट्रो पालिटिन इन्स्टीट्यूट के व्यवस्थापक थे। मण्डली के उत्साही कार्यकर्ता थे। बातचीत कला में निपुण और समझदारी से कार्य करने वाले थे। एक दिन तो उन्होंने एक बाग के माली से बड़ी चतुराई से हरे नारियल तुड़वाकर उसका मजेदार पानी भी पिया।

प्रश्न ६. "जात-पाँत का भेद किये बिना किसी एक तालाब के घाट पर बैठकर साथ वाले पदार्थ पर हाथ साफ किया करते थे।" लेखक की यह उक्ति उसके किस प्रकार के विचारों की ओर संकेत करती है? तर्क सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर–लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एकता तथा समानता का सन्देश देने के लिए लिखा है, 'जात-पाँत का भेद किए बिना किसी एक तालाब के घाट पर बैठकर साथ वाले पदार्थ पर हाथ साफ किया करते थे।"

लेखक के भाई का नाम ज्योतिरिन्द्र था। वह अपनी मण्डली के साथ शिकार पर विभिन्न जातियों के सदस्यों को लेकर जाते थे।

शिकार में किसी भी जीव-जन्तु को चोट नहीं पहुँचायी जाती थी। शिकार की समाप्ति के पश्चात् सभी मिलकर किसी बगीचे में अथवा तालाब के तट पर बैठकर भोजन करते थे। भोजन करते समय इनके मन में किसी प्रकार का दुर्भाव नहीं होता था। घर से जो भी कुछ

खाद्य सामग्री लायी जाती थी, उसे सभी सदस्य एक साथ बैठकर खाते थे। उस समय उनके मन में जाति का भेद-भाव नहीं रहता था। लेखक की यह उक्ति उनके समता तथा एकता के विचारों को प्रतिपादित करती है। लेखक के आत्मिक एकता के विचारों को महत्त्व देती हुई मनुष्य के निष्कपट, निश्छल विचारों की ओर संकेत करती है।

प्रश्न ७. इस पाठ में जिन स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण करने का विवरण दिया गया है उसके सम्बन्ध में लेखक के विचारों से क्या आप सहमत हैं? तर्क पूर्ण उत्तर दीजिए?

उत्तर–रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण कार्य तथा प्रयोग को महत्त्व देते हुए ज्योतिरिन्द्र के मण्डल की चर्चा की है। भाई ज्योतिरिन्द्र के मण्डल ने आग पेटी तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया था। इस कार्य के भली-भाँति संचालन के लिए यह निश्चय लिया गया था कि मण्डल का प्रत्येक सदस्य अपनी आय का दसवाँ भाग इस उद्योग-धन्धे के लिए दें।

लघु उद्योगों को महत्त्वपूर्ण स्थान देने के विचार से ही दियासलाई की पट्टी तैयार करने का विचार किया गया था। किन्तु कठिनाई यह थी कि उत्तम लकड़ी प्राप्त नहीं हो रही थी। बहुत से प्रयत्न तथा प्रयोग करने पर भी दियासलाई के इस उद्योग में हमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। मात्र एक पेटी सलाई बनायी जा सकीं। देश प्रेम तथा उच्च भावना से प्रेरित होकर जो स्वदेशी वस्तु निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया था उसमें न तो उन्हें कुछ आर्थिक लाभ हुआ और न देशभिमान की भावना से कोई वृद्धि हुई।

लघु उद्योगों के क्षेत्र में स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण में दूसरा कार्य हाथ-करघा का था। हाथ करघा को प्राप्त करने के लिए हमने एक युवक छात्रं से सम्पर्क किया। छात्र के सम्बन्ध में यह सुना गया था कि कल पुर्जों के क्रय करने में वह ऋणी बन गया है उसकी इस दयनीय अवस्था में इस मण्डल ने सहायता की। उसका ऋण चुकाया और हाथ-करघा प्राप्त किया। उस करघे से बना टॉबिल सिर पर लपेटे जब बृजबाबू प्रसन्नता से नृत्य करते हुए आये तो मण्डल के सभी सदस्यों को प्रसन्नता हुई।

लेखक ने स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण को महत्त्व देने के लिए जिन घटनाओं का वर्णन किया है उनसे लेखक के विचारों को समझने तथा स्वदेशी वस्तु अपनाने को प्रत्येक भारतीय को तैयार रहना चाहिए।

प्रश्न ८. राजनारायण बाबू के व्यक्तित्व एवम् उनके गुणों का अपने शब्दों में रेखांकन कीजिए।

अथवा

"उनकी ऐसी काबिलियत थी कि मेरे देश के भाई इस सज्जन पुरुष का चरित्र अपनी याद के पटल पर खोदकर उसका हमेशा जय-जयकार करते रहें।" टैगोर कृत 'अपने देश पर अभिमान' आत्मकथांश के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड, १९९३)

उत्तर–राजनारायण बाबू ज्योतिरिन्द्र संस्था के प्रमुख थे। उनमें विभिन्न सद्गुणों का वास था। व्यक्तित्व प्रभावशाली था। प्रौढ़ता को प्राप्त हो जाने पर भी उनमें चंचलता थी। उत्साह था। कार्य में तत्परता थी। उनमें ऐसे अनेक गुण थे जिनके कारण समाज में प्रतिष्ठा थी। प्रशंसनीय स्थान प्राप्त था।

(१) **प्रसन्न मुख**–राजनारायण बाबू ज्ञान का भण्डार थे। वयोवृद्ध थे। सिर तथा दाढ़ी के बालों में सफेदी आ गयी थी किन्तु सांसारिक झंझटों से मुक्त नहीं थे। गम्भीरता होते हुए भी उनके मुख से हँसी का फब्बारा फूटता दृष्टिगोचर होता था। निष्कपट हास्य की झलक दिखाई देती थी।

(२) **देश भक्ति**–राजनारायण बाबू का पालन कांग्रेसी संस्कारों में हुआ था। उनको पूर्णतः अंग्रेजी वातावरण प्राप्त हुआ था किन्तु बंगला साहित्य के वे भक्त थे। देश-भक्ति की स्पष्ट झलक उनके अंग्रेजी साहित्य के प्रति अधिक रुचि न लेने में प्राप्त होती है।

(३) **शान्त स्वभाव**–राजनारायण बाबू अत्यन्त शान्त स्वभाव के थे। उन्हें क्रोध नहीं आता था किन्तु देश के गौरव की रक्षा के लिए उनके स्वभाव में यहाँ तक परिवर्तन आ जाता था कि वे एक ज्वाला के रूप में प्रकट होते थे और विरोधियों को भस्म करने की अपार शक्ति का पुंज बन जाते थे।

राजनारायण बाबू सज्जन, योग्य, गम्भीर तथा हास्य की विचित्र मूर्ति थे। देश सेवा के लिए सदा तैयार रहना उनके चरित्र की प्रमुख विशेषता थी।

प्रश्न ९. प्रस्तुत पाठ के शीर्षक की उपयुक्तता पर तर्कपूर्ण विवेचन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–प्रस्तुत आत्मकथांश में देश-प्रेम की झलक सर्वत्र प्राप्त होने के कारण 'अपने देश पर अभिमान' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने परिवार के सदस्यों में देश प्रेम की भावना, देश के गौरव को वृद्ध करने वाली कामना का चित्रण करके प्रस्तुत कथांश को शीर्षक के अनुरूप बना दिया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के भाई ज्योतिरिन्द्र के मण्डल का उदाहरण सर्वथा उचित है जिसकी बैठकों, उसके सदस्यों की भावनाओं तथा कार्यों में देश को गौरवान्वित करने की प्रबल आकांक्षा थी।

ज्योतिरिन्द्र के विषय में टैगोर ने लिखा है कि इनके परिवार में देश-प्रेम सभी सदस्यों के हृदय में कूट-कूट कर भरा था। इनके हृदय में देश-प्रेम की धारा प्रबल वेग से प्रवाहित होती थी।"

रवीन्द्रनाथ टैगोर का गद्य लेख भी 'देश के अभिमान' पर आधारित था। लोकप्रिय राष्ट्रगीत 'भारतेजय', 'हिन्दू मेला' नामक वार्षिक यात्रा भी देश-प्रेम का प्रतीक था।

ज्योतिरिन्द्र की मण्डली के सभी सदस्य और उनकी गतिविधियाँ देशभिमान से पूर्ण थीं उनकी राष्ट्रीय पोशाक का निर्धारण, हाथ-करघा उद्योग की अभिवृद्धि भी राष्ट्रप्रेम की भावना से पूर्ण थी। अतः आत्मकथांश का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

प्रश्न १०. रवीन्द्रनाथ टैगोर की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

उत्तर–रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कलकत्ता के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। पिता देवेन्द्रनाथ एक समाज सुधारक थे। प्रसिद्ध सन्त थे। शान्ति तथा उपासना का मूल मन्त्र उन्हें अपने पिताजी से प्राप्त हुआ था। १२ वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने हिमालय की यात्रा की तथा 'पृथ्वीराज पराजय' नाटक और कुछ गीत लिखे। 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे ! राष्ट्रगीत उन्हीं की रचना है। शान्ति निकेतन उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध स्मृति-चिह्न है।

भाषा–रवीन्द्र टैगोर की भाषा अत्यन्त गम्भीर तथा भावपूर्ण है। दर्शन की प्रधानता उनकी भाषा की विशेषता है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है। बंगला साहित्य का प्रभाव भी उनकी भाषा में दिखाई देता है। व्यंजना प्रधान उनकी भाषा प्रभावपूर्ण थी।

शैली–रवीन्द्रनाथ टैगोर ने समास प्रधान शैली का प्रयोग किया है। अपने भावों को संकेतात्मक रूप से व्यक्त करने में उन्हें महारथ प्राप्त था। उनके संकेतों में गम्भीरता व प्रभाव था।

भाषा तथा शैली की चित्रात्मकता पाठकों पर अपना पूर्ण प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। घटनाओं का यथा तथ्य वर्णन करने की उनमें क्षमता है। टैगोर की चित्रात्मकता, भावों के ऐसे आवरण से ढकी है जिसे पार कर लेने पर ही उनकी इस शैली के दर्शन सम्भव है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ-पृष्ठ ३२-३३–चलन = चलना, व्यवहार। खासियत = प्रमुखता, विशेषता। लबालब = भरा हुआ। हुनर = कला। गहनता = गम्भीरता, गहराई। नियत = निश्चित। बदराना = बात करना। माहौल = वातावरण। काबिलियत = योग्यता।

पृष्ठ ३४-३५-३६–**प्रहार** = चोट, आक्रमण। सराहना = तारीफ, प्रशंसा, गुणगान। काबिल = योग्य।

(१)

मानव जाति के शरीर में भरी हुई अतिप्रिय ताकत को बाहर न आने देकर उसके निकलने के सभी दरवाजों को बन्द करने से तुच्छ कोटि के धन्यों के अनुकूल बनावटी स्थिति पैदा हो जाती है, इसमें शक नहीं है। साम्राज्य की फैली हुई राज व्यवस्था में सिर्फ क्लर्की का रास्ता खुला रखने से ही काम न चलेगा। यदि साहस भरे जिम्मेदारी के काम सिर पर लेने का मौका नहीं मिले तो इन्सान की आत्मा बन्धन से छुटकारा पाने हेतु छटपटाने लगती है और इसके लिए यह कंकरीले, पथरीले एवं विचार शून्य उपायों के सहारे की मंशा करने लगता है।

(पृष्ठ-३४)

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यावतरण **रवीन्द्रनाथ टैगोर** लिखित **अपने देश पर अभिमान** आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग–ज्योतिरिन्द्र की संस्था में आयोजित बैठकों में वीरता के सम्बन्ध में होने वाली बातों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने के विषय में रवीन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं–

व्याख्या–व्यक्ति में वीरता है। उसका मन वीरता के प्रति सम्मान की भावना से पूर्ण है। वीरता की इस शक्ति को मनुष्य के मन से निकलने की स्वतन्त्रता न हो। इन भावों को निकलने में बाधा पहुँचाई जाती हो तो प्रत्येक कार्य में कृत्रिमता आ जायेगी। मानव स्वभाव को परखते हुए ही ब्रिटिश सरकार ने भारतवासियों को मात्र क्लर्क बनाया। उनको कोई उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य नहीं सौंपा। रवीन्द्रनाथ टैगोर का कहना है कि व्यक्ति को उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य निभाने का अवसर प्रदान नहीं किया जाय तो वह प्रतिबन्धों से मुक्ति के लिए तड़पता है। उसकी आत्मा छटपटाती है और इन परिस्थितियों में वह किसी भी प्रकार का मार्ग चुनने में संकोच नहीं करता। वह कठिनतम मार्ग पर चलने के लिए भी विवश हो जाता है।

साहित्यिक सौन्दर्य–(१) **भाषा**–अलंकार प्रधान हिन्दी।

(२) **शैली**–आत्मकथात्मक समास प्रधान शैली।

(३) **अन्य**–मानव स्वभाव का सही चित्रण है।

□

४ (अ) अस्पृश्यता अभी कहाँ दूर हुई? (ब) हरिजन-निवास

(वियोगीहरि)

● *गागर में सागर*

वियोगी हरि–जन्म–१८९६ ई० । **स्थान**- छतरपुर। **शिक्षा**–१९७२ में मैट्री-क्यूलेशन। **परिचय**–पिता बलदेव द्विवेदी। गाँधीजी से सम्पर्क। दलितवर्ग की सेवा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रबन्ध संचालक। सम्मेलन पत्रिका का सम्पादन। हरिजन उद्योगशाला का संचालन। भक्ति तथा प्रेम की कविताओं की रचना। ९ मई १९८८ को स्वर्गवास। **कृतियाँ**–मेरा जीवन प्रवाह। **काव्य**–गद्यकाव्य नाटक-निबन्ध संग्रह विभिन्न पत्रिकाओं का सम्पादन।

आत्मकथा– अस्पृश्यता उन्मूलन का प्रयास*हरिजन-सेवक-संघ से आत्मिक सम्बन्ध *हरिजन-सेवक-संघ की स्थापना तथा घनश्याम दास बिड़ला द्वारा निःशुल्क हरिजन-छात्रावास की नींव रखना*गाँधीजी का एक मास विश्राम*साँझ की प्रार्थना में हजारों की भीड़। हरिजन निवास की स्थापना*हरिजन-उद्योगशाला खुलना*प्रार्थना-मन्दिर का निर्माण, गाँधीजी के रहने से पुण्य स्थल घोषित।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. ***'अस्पृश्यता-निवारण' की ओर अपने झुकाव का कारण मानते हैं–***

(अ) गुरुजनों के उपदेश
(आ) वैष्णव संस्कार
(इ) माता-पिता के आदर्श
(ई) सुसंस्कृत संस्कार
(उ) साधु सत्संग ।

उत्तर–(आ) वैष्णव संस्कार।

प्रश्न २. ***वियोगीहरि की भाषा की कहीं-कहीं स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है–***

(अ) संस्कृत के तत्सम शब्दों के बीच उर्दू के शब्दों के प्रयोग से।
(आ) संस्कृत के तत्सम शब्दोंके बीच ब्रजभाषा के शब्दों के प्रयोग से।
(इ) संस्कृत के तत्सम शब्दों के बीच विदेशी शब्दों के प्रयोग से।
(ई) संस्कृत के तत्सम शब्दों के बीच तद्भव शब्दों के प्रयोग से।
(उ) संस्कृत के तत्सम शब्दों के बीच देशज शब्दों के प्रयोग से।

उत्तर–(अ) संस्कृत के तत्सम शब्दों के बीच उर्दू के शब्दों के प्रयोग से।

प्रश्न ३. ***हिन्दुस्तानी को हिन्दी भाषा नाम देने का कारण था–***

(अ) साम्प्रदायिकता पूर्ण।
(आ) अराष्ट्रीयता पूर्ण।
(इ) राष्ट्रीयता पूर्ण।
(ई) असाम्प्रदायिकता पूर्ण।
(उ) राजनीतिकता पूर्ण।

उत्तर–(अ) साम्प्रदायिकता पूर्ण।

प्रश्न ४. ***वियोगीहरि ने किस पत्रिका की ग्राहक संख्या सन्तोषजनक बतलायी–***

(अ) सर्वोदय पत्रिका
(आ) सरस्वती पत्रिका।
(इ) हरिजन सेवक पत्रिका।
(ई) कल्पना पत्रिका।
(उ) कल्याण।

उत्तर–(उ) कल्याण।

प्रश्न ५. हरिजन सेवक की भाषा में प्रयुक्त हुई–

(अ) अंग्रेजी। (आ) हिन्दी।
(इ) गुजराती। (ई) मराठी।
(उ) हिन्दुस्तानी।

उत्तर–(उ) हिन्दुस्तानी।

प्रश्न ६. आचार्य मलकानी के उद्योग भवन का बाद में क्या नाम पड़ा–

(अ) हरिजन उद्योगशाला (आ) गाँधी आश्रम
(इ) हरिजन बस्ती (ई) हरिजन कालौनी।
(उ) गाँधी उद्योग भवन।

उत्तर–(आ) गाँधी आश्रम।

प्रश्न ७. हरिजन निवास को ताँगे वाले किस नाम से पुकारते थे–

(अ) हरिजन कालौनी। (आ) हरिजन उद्योग भवन।
(इ) गाँधी आश्रम। (ई) हरिजन उद्योग होम।
(उ) हरिजन बस्ती।

उत्तर–(इ) गाँधी आश्रम।

प्रश्न ८. किस क्षेत्र में मार्ग पलटना आत्महित नहीं कहा जा सकता–

(अ) राजनीतिक क्षेत्र में। (आ) आर्थिक क्षेत्र में।
(इ) सरकारी क्षेत्र में। (ई) जनसेवा क्षेत्र में।
(उ) शिक्षा के क्षेत्र में।

उत्तर–(ई) जनसेवा क्षेत्र में।

प्रश्न ९. गाँधी आश्रम में प्रार्थना मन्दिर का निर्माण किसने कराया–

(अ) डालमिया ने। (आ) बिड़ला ने
(इ) टाटा ने। (ई) गाँधीजी ने।
(उ) ब्रज कृष्ण चाँदी वाले ने।

उत्तर–(उ) ब्रज कृष्ण चाँदी वाले ने।

प्रश्न १०. हरिजन निवास का आकर्षक स्थान है–

(अ) अतिथि भवन। (आ) भोजन कक्ष।
(इ) प्रार्थना मन्दिर। (ई) उद्योग भवन।
(उ) गाँधी कक्ष।

उत्तर–(इ) प्रार्थना मन्दिर।

प्रश्न ११. "हिन्दुस्तान की हंडिया में एक विचित्र सी खिचड़ी पकायी जाती है।" वियोगीहरि के इस कथन में उनके मन की किस भावना का परिचय मिलता है।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड, १९९३)

(अ) व्यंग्य। (आ) खीझ।
(इ) वेदना। (ई) उपहास।
(उ) क्षोभ।

उत्तर–(अ) व्यंग्य।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. 'हरिजन-निवास की आधार शिला रखे जाने के समय बिड़लाजी ने क्या कहा?

उत्तर–'हरिजन निवास' की आधार शिला रखे जाने के समय बिड़लाजी ने कहा था "हम चाहते हैं कि जिस तरह सूर्य से सब लोग प्रकाश पाते हैं, उसी तरह यह स्थान सारे भारत को अपना प्रकाश दान दे।"

प्रश्न २. 'हरिजन-निवास' के प्रतिलोगों का आकर्षण क्यों बढ़ गया?

उत्तर–हरिजन निवास के प्रति लोगों का आकर्षण गाँधीजी के वहाँ निवास करने तथा सायंकालीन प्रार्थना के कारण बढ़ गया।

प्रश्न ३. 'हरिजन निवास' की आधारशिला के अवसर पर गाँधीजी ने क्या कहा?

उत्तर–'हरिजन निवास' की आधार शिला के अवसर पर गाँधीजी ने कहा था–"जिस स्थान पर मैं आज यह शिलारोपण कर रहा हूँ ईश्वर करे उसकी खूब उन्नति हो और यह स्थान एक तीर्थ क्षेत्र बन जाये।"

प्रश्न ४. 'हरिजन-सेवक' के प्रारम्भ में सम्पादक कौन थे?

उत्तर–प्रारम्भ में हरिजन-सेवक के सम्पादक श्री प्यारेलालजी थे।

प्रश्न ५. वियोगीहरि की दृष्टि में वैष्णव कौन है?

उत्तर–वियोगीहरि की दृष्टि में वैष्णव वह है जो आत्मशुद्धि का विरोधी न हो।

प्रश्न ६. सेवा-धर्म पालन कर्ता का जीवन किस प्रकार का होना चाहिए?

उत्तर–वियोगीहरि की दृष्टि में अस्पृश्यता का आन्तरिक रूप है–ऊँच-नीच के व्यवहार का त्याग तथा सबको आत्मवत समझना।

प्रश्न ८. वियोगीहरि को किस से घृणा होने लगी थी?

उत्तर–वियोगीहरि को भेद-सूचक नाम से घृणा होने लगी थी।

प्रश्न ९. वियोगीहरि के सम्मुख-धर्म संकट कब उपस्थित हुआ?

उत्तर–वियोगीहरि के सम्मुख धर्म संकट तब उपस्थित हुआ जब माँ उनके साथ हरिजन निवास में सम्मिलित नहीं हुई।

प्रश्न १०. वियोगीहरि को कब आश्चर्य हुआ?

उत्तर–वियोगीहरि को उस समय आश्चर्य हुआ जब उन्होंने अपनी माँ को बड़े रसोड़े में सबके साथ बैठकर रोटी खाते देखा।

प्रश्न ११. सेवा-धर्म की साधना का क्या फल प्राप्त होता है?

उत्तर–सेवा-धर्म की साधना का फल चित्त की स्थिरता अथवा आध्यात्मिक जीवन की झाँकी प्राप्त होता है।

प्रश्न १२. सेवा का सच्चा स्वरूप क्या है?

उत्तर–सेवा का सच्चा स्वरूप अहंकार का विनाश है।

प्रश्न १३. वियोगीहरि को सेवा के किस रूप से दुःख हुआ?

उत्तर–वियोगीहरि को सेवा के पेशे के रूप को देखकर दुःख प्राप्त हुआ।

प्रश्न १४. हरिजन-उद्योगशाला का पहला नाम क्या था?

उत्तर–हरिजन-उद्योगशाला का पहला नाम हरिजन इण्डस्ट्रियल होम था।

प्रश्न १५. धर्मस्तम्भ का निर्माण किसने कराया था?

उत्तर–धर्मस्तम्भ का निर्माण सेठ जुगल किशोर बिड़ला ने कराया था।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. सेवा के क्षेत्र में वेतन का मापदण्ड सामने रखकर आने वाले आत्महित न करते। क्यों?

उत्तर–सेवा के क्षेत्र में वेतन का माप दण्ड सामने रखकर कार्य करना किसी भी दशा उचित नहीं है। वियोगीहरि की यह मान्यता थी कि कर्मचारी का दृष्टिकोण, मात्र वेतन प्राप करना है। वह कार्य विधि पर दृष्टि नहीं रखता। उचित-अनुचित का विचार नहीं करता। उसव

ध्यान तो केवल किसी प्रकार वेतन प्राप्त करने पर केन्द्रित रहता है। किन्तु सेवा का क्षेत्र सर्वथा विपरीत होता है। सेवा के क्षेत्र में अर्थ को प्रमुखता नहीं दी जाती। वहाँ तो सेवा को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वेतन का मापदण्ड दृष्टि में होने पर मन में अशान्ति रहती है। वह आत्म-हित में सर्वथा असफल रहता है।

प्रश्न २. "पेशेवर जन-सेवकों की अपेक्षा कुछ साधारण लोगों में सेवा-भावना अधिक होती है।" इसकी पुष्टि में वियोगी हरि ने क्या उदाहरण दिये हैं?

उत्तर—जन-सेवा का कार्य सर्वथा व्यक्ति की भावना पर निर्भर होता है। जो व्यक्ति जितना स्वार्थ-त्यागी होगा वह उतना ही सफल जन-सेवी बन सकता है। उसका चरित्र आम होगा। जीवन में सच्चाई होगी। दया का गुण होगा। शीलादि गुण स्वभावतः उसके जीवन के आवश्यक अंग होंगे।

जन-सेवा को जिसने अपना पेशा बना लिया है उसका ध्यान जन-सेवा की ओर न होकर आर्थिक लाभ की ओर अधिक रहता है। अपने नाम की ओर अधिक होता है। भूखे को रोटी खिलाकर, प्यासे को पानी पिलाकर बहुत बड़े जन-सेवक बनते हैं। लेखा-जोखा रखते हैं। दूसरों पर रौब जमाते हैं।

साधारण से साधारण व्यक्ति भी इन पेशेवर जन-सेवकों की अपेक्षा सेवा-भावना में अधिक होता है।

प्रश्न ३. अस्पृश्यता निवारण के लिए वियोगी हरि ने क्या-क्या सोचा और क्या किया?

उत्तर—अस्पृश्यता निवारण के सम्बन्ध में वियोगी हरि का कथन है—"अस्पृश्यता निवारण के धर्म के साथ तब भी मेरा आत्म-सम्बन्ध था, जब संघ की रचना भी नहीं हुई थी। झूठे सच्चे वैष्णव संस्कार कहीं दबे पड़े होंगे, उन्हीं का परिणाम मैं अस्पृश्यता निवारण की ओर अपने झुकाव को मानता हूँ। मेरा विश्वास है कि एक वैष्णव अपने आपको ऊँचा और दूसरे को नीच मान ही नहीं सकता।"

वियोगीहरि अस्पृश्यता को समाज का कलंक मानते थे। उनकी दृष्टि में अस्पृश्यता महापाप था। वह समाज को अस्पृश्यता के महापाप से बचाना चाहते थे। धर्म को अस्पृश्यता के नाम पर कलंकित नहीं होने देना चाहते थे। हरिजन-सेवक संघ की स्थापना का उद्देश्य अस्पृश्यता का निवारण ही था।

वियोगीहरि ने अस्पृश्यता निवारण के लिए सर्वप्रथम विनम्रता का आश्रय लिया। विनम्रता के परिणामस्वरूप बाह्य रूप में अस्पृश्यता दूर करने में आंशिक सफलता भी प्राप्त हुई। किन्तु वियोगीहरि को 'हरिजन' शब्द से भी घृणा होने लगी। क्योंकि 'हरिजन' शब्द भेद-सूचक लगने लगा था।

वियोगीहरि ने अस्पृश्यता निवारण के लिए जाति-भेद भुलाकर सबके साथ बैठकर कार्य करना प्रारम्भ किया। उनकी दृष्टि में कोई दलित ही नहीं था। वे सभी के हाथ का बना भोजन बेहिचक कर लेते थे। किसी के भी हाथ का पानी-पीने में उन्हें कोई संकोच नहीं था। वे सबको आत्मवत समझने लगे।

प्रश्न ४. "तभी वह स्थान अपनी आन्तरिक शोभा को अपनी सच्ची सुन्दरता और सुगन्ध को प्रस्फुटित कर सकेगा।" वियोगी हरि के अनुसार 'हरिजन-निवास' कब यह शोभा पा सकेगा?' उनके मंतव्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हरिजन-निवास की शोभा के विषय में वियोगी हरि का यह मंतव्य था कि यह हर प्रकार से सुन्दर और शोभाशाली रहे। मात्र इसका भवन शोभायुक्त हो, यह उन्हें कदापि पसन्द नहीं था। यद्यपि हरिजन निवास का भोजनालय, छात्रावास, अतिथि भवन एवम् प्रधान कार्यालय

सुन्दरता तथा विशालता में अद्वितीय थे। कस्तूरबा कुटीर तथा प्रार्थना मन्दिर भी अत्यन्त भव्य थे। विद्या मन्दिर श्री महादेव देसाई पुस्तकालय तथा संग्रहालय की शोभा भी देखते ही बनती थी। लेकिन वियोगी हरि की दृष्टि में बाहरी चमक दमक ही पर्याप्त नहीं थी। वह आन्तरिक शोभा के भी पक्षधर थे।

वियोगीहरि ने 'हरिजन निवास' के कर्मचारियों में आन्तरिक शोभा का परामर्श देते हुए यह इच्छा प्रकट की कि उनका मन त्याग, सेवा तथा तप की पवित्र भावना से ओत-प्रोत होना चाहिए।

वियोगीहरि आन्तरिक शोभा के लिए कर्मचारियों में आत्म चिन्तन तथा आत्म निरीक्षण की अपेक्षा करते थे। उनके विचार से किसी भी कर्मचारी को लोभ में नहीं पड़ना चाहिए। मोह के बन्धन से उसे मुक्त रहना चाहिए। उनका हरिजन निवास के कर्मचारियों से कहना था, 'इस स्थान के निवासियों को हरिजन अर्थात् भगवान् के जन. या जनता जनार्दन के सेवक बनने का प्रयत्न करना ही चाहिए। तभी यह स्थान अपनी आन्तरिक शोभा को, अपनी सच्ची सुन्दरता को और सुगन्ध को प्रस्फुटित कर सकेगा।"

अतः हरिजन निवास की शोभा के लिए वियोगीहरि का मंतव्य उसकी आन्तरिक तथा बाह्यशोभा की वृद्धि था।

प्रश्न ५. श्री वियोगीहरि तरंग शैली में लिखने वाले गद्य-गीतकार क्यों माने जाते हैं? तर्क पूर्ण पुष्टि कीजिए। (सीमा एक पृष्ठ)

उत्तर—वियोगी हरि ने गद्य-गीतकार के रूप में विशेष यश अर्जित किया। यद्यपि काव्य, नाटक, निबन्ध, आत्मकथादि में भी उन्होंने अपना पूर्णाधिकार सिद्ध किया है तथापि गद्य-काव्य में वियोगी हरि अग्रणी माने जाते हैं।

गद्य-गीतकार की जिस वाटिका में रायकृष्णदास ने पौधे उगाये, उन पर पुष्पों को विकसित कराने में वियोगीहरि का अनुपम योगदान है।

गद्य-काव्य की सरसता तथा अलंकारपूर्णता, भावात्मक रूप में जब प्रस्तुत होती है तब पाठक ऐसा अनुभव करने लगता है कि वियोगी हरि ने इस गद्य-गीत की तरंग शैली में रचना की। भाषा में आवेश तथा लालित्य मन को आकृष्ट करता है। उनकी सहृदयता तल्लीनता तथा भावुकता उनके गद्य काव्य में सर्वत्र झलकती है। इसीलिए तो उनकी ख्याति एक नाटककार के रूप में भी उतनी नहीं है जितनी की गद्य-गीतकार के रूप में है।

गद्य काव्य की भाषा दुरूह तथा क्लिष्ट अवश्य है किन्तु संस्कृत के तत्सम शब्द उसमें इतने खटकने वाले नहीं हैं जितने उनकी तरग शैली को व्यक्त करते हैं। इसीलिए वियोगी हरि को तरंगशैली में लिखने वाला गद्य-गीतकार माना जाता है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ ४१-४२—असहज = कठिन, असामान्य। अस्पृश्यता = न छूना, अछूतपन। प्रयोजन = उद्देश्य, कार्य। आत्म-हित = अपना भला। प्रयोजन-सिद्धि = उद्देश्य पूर्ति। वेग = गति, तेज़ी, शक्ति।

पृष्ठ ४३-४४—अन्तर = हृदय, मन। समूल = जड़ सहित, पूर्ण रूप से। अशक्य = असम्भव। अन्तराकाश = हृदय-आकाश। अद्वैत = एकता, एक। उषा = सूर्य। सहभोज = एक साथ बैठकर भोजन करना। साहस = हिम्मत। उन्मूलन = समाप्ति। रूढ़ = प्राचीन। क्षय = विनाश, समाप्ति। अर्थ-बल = धन की शक्ति, धन। आसक्ति = आकर्षण, मोह।

पृष्ठ ४५-४६—निर्मूल = आधार रहित, व्यर्थ। बीहड़ = वीरान। छात्रावास = छात्रों के रहने का स्थान। सपिच्छा = उत्तर विचार, इच्छा। अनुमोदन = समर्थन। सामूहिक = समूह में, संगठित। पुनीत = पवित्र। प्रवास = बाहर रहना।

(१)

जिस सेवा के द्वारा अहंकार का क्षय न होकर उलटे उसकी वृद्धि होती हो, वह सेवा कैसी? जो सेवा-साधना अर्थ-बल पर ही आधार रखती हो, वह सेवा भी भला कोई सेवा है? ऐसी जनसेवा के प्रति स्वभाव से मेरी अरुचि ही रही है। सेवा को पेशे के रूप में देखकर मुझे दुःख ही हुआ है। सुना था कि 'सेवाधर्म' तो योगियों के लिए भी अगम्य है। पर सेवा-धर्म का अनुसरण करने वाले को फिर भी योगारूढ़ तो होना ही चाहिए। उसका जीवन यथासाध्य संयमी, असंग्रही और तपःशील होना चाहिए। निश्चय ही राजनीति के कोष में जन-सेवा का यह अर्थ नहीं किया गया है। पर हमें उस कोष को देखने की आवश्यकता नहीं। (पृष्ठ-४३-४४)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **वियोगीहरि** द्वारा लिखित **अस्पृश्यता अभी कहाँ दूर हुई** आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग—अस्पृश्यता निवारण के निमित्त शुद्ध सेवा पर बल देते हुए वियोगी हरि लिखते हैं—

व्याख्या—अस्पृश्यता-उन्मूलन के लिये वियोगीहरि ने सेवा-व्रत को अपनाना श्रेष्ठ उपाय बताया है। उनका यह भी कहना है कि सेवा से अहंकार का विनाश होता है। जो सेवा हृदय में अहंकार का भाव उत्पन्न करती हो उसे सेवा-धर्म कदापि नहीं कहा जा सकता।

सच्ची सेवा भावना का उल्लेख करते हुए वियोगीहरि का कहना है कि अहंकार की समाप्ति में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः सच्ची सेवा तो वही है जो अहंकार से मुक्ति दिलाने में सहायक हो। जिस सेवा की ओट में हम धन-अर्जित करना चाहते हैं, वह सेवा-भाव कहला ही नहीं सकता। अन्त में वियोगीहरि अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि सेवा को पेशा नहीं बनाना चाहिए। सेवा को सेवा की भावना से ही करना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि योगियों के लिये भी सेवा-धर्म अगम्य है। लेकिन इसमें संदेह नहीं कि सेवाधर्म निभाने वालों को संयमी होना चाहिए। तपस्वी होना चाहिए, असंग्रही भी उसके गुणों में मानना चाहिए।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—ब्रज तथा खड़ी-बोली।

(२) **शैली**—भावात्मक शैली।

(३) **अन्य**—सेवा-धर्म को अहंकार से मुक्ति दिलाने वाला बताया है।

(२)

हमारे अन्दर धर्म शासन के प्रति आदर की भावना नहीं आई। एक जगह बैठकर घड़ी आध घड़ी हम कभी आत्म-चिन्तन या आत्म-निरीक्षण करते हैं? यमित रूप से हम प्रार्थना तक में तो सम्मिलित होते नहीं। हमारा काफी समय व्यर्थ प्रमाद में चला जाता है। चित्त वृत्तियों का झुकाव प्रायः लोभ और मोह की ओर रहता है। पृष्ठ ४४

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **वियोगीहरि** द्वारा लिखित **अस्पृश्यता अभी कहाँ दूर हुई** आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर वियोगीहरि 'हरिजन निवास' के आन्तरिक स्वरूप का चित्रण करते हुए कह रहे हैं—

व्याख्या—वियोगी हरि 'हरिजन निवास' की आन्तरिक शोभा में वहाँ के कार्यकर्ताओं की भूमिका की चर्चा करते हुए कहते हैं कि 'हरिजन निवास' के कार्यकर्ताओं में त्याग, तप तथा सेवा-भावना का होना परमावश्यक है। इन गुणों में 'हरिजन निवास' के आन्तरिक स्वरूप में सुधार होगा। बाह्य स्वरूप की शोभा भी आवश्यक अवश्य है किन्तु आन्तरिक स्वरूप की कान्तीहीनता किसी भी दशा में उत्तम नहीं स्वीकार की जा सकती।

हरिजन-निवास के कर्मचारियों में आत्म-चिन्तन का अभाव था। वे आत्म-निरीक्षण करना ही नहीं चाहते थे। प्रार्थना में नियमित रूप से सम्मिलित नहीं होते थे। आलस्य में पड़े रहते थे। कार्यालय के कार्यों को निपटाकर अपने कार्य की इतिश्री समझ लेते थे। लोभ के वशीभूत होकर वे अपने कार्य करते थे। मोह-जाल में बँधे ये कर्मचारी सच्चे भाव से सेवा-कार्य नहीं करते थे, चित्त में तो केवल धन लोलुपता थी। अतः हरिजन-निवास की आन्तरिक शोभा पूर्णतः क्रान्तिहीन थी, जिसमें सुधार आवश्यक था।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—ब्रज तथा खड़ी बोली का मेल।
(२) **शैली**—भावात्मक शैली।
(३) **अन्य**—आन्तरिक स्वरूप का सजीव चित्रण है।

५ भारत के कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण

(सेठ गोविन्ददास)

● *गागर में सागर*

सेठ गोविन्द दास—**जन्म**—सन् १८९६ । **स्थान**—जबलपुर (मध्यप्रदेश)। **परिचय**—समृद्ध, धार्मिक परिवार। १२ वर्ष की अवस्था में 'चम्पावली' उपन्यास की रचना। गाँधी के अनुयायी बनकर लगन के साथ देश सेवा में संलग्न। सक्रिय राजनीति के कारण संसद सदस्य बने। नाटकों की अधिकांशतः रचना।

आत्मकथा—भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का परिचय प्राप्त करने के लिए ऐतिहासिक स्थलों का दर्शन। साँची के बौद्ध स्तूप, खजुराहो।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. ***सेठ गोविन्ददास को ऐतिहासिक स्थानों को देखने की प्रेरणा दी—***
(अ) इतिहास के ज्ञान ने। (आ) इतिहास के प्रेम ने।
(इ) इतिहास के अध्ययन ने। (ई) इतिहास के कौतूहल ने।
(उ) इतिहास के वीर पुरुषों ने।
उत्तर—(आ) इतिहास के प्रेम ने।

प्रश्न २. ***साँची के बौद्ध स्तूप अद्भुत थे, क्योंकि उनमें—***
(अ) महानता थी। (आ) सौन्दर्य था
(इ) महानता के साथ सौन्दर्य था। (ई) महानता के साथ आकर्षण था।
(उ) सौन्दर्य के साथ आकर्षण था।
उत्तर—(इ) महानता के साथ सौन्दर्य था।

प्रश्न ३. ***"मेरी ऐसी दशा अब तक की यात्रा में कभी नहीं हुई थी और न इसके बाद ही हुई।" यह बात सेठ गोविन्ददास ने किस स्थल पर कही—***
(अ) आगरा में (आ) दिल्ली में
(इ) फतेहपुर सीकरी में (ई) चित्तौड़ में
(उ) उज्जैन में।
उत्तर—(ई) चित्तौड़ में।

प्रश्न ४. ***सेठ गोविन्ददास की आत्म-कथा का नाम है—***
(अ) कुलीनता (आ) पृथ्वी परिक्रमा
(इ) सेवापथ (ई) एकादशी
(उ) आत्म निरीक्षण।
उत्तर—(उ) आत्म निरीक्षण।

प्रश्न ५. *खुजराहो का प्रसिद्ध मन्दिर है—*

(अ) चतुर्भुज मन्दिर। (आ) जगदीश मन्दिर।
(इ) पार्श्वनाथ मन्दिर। (उ) शिवमन्दिर।
(उ) केदरिया महादेव का मन्दिर। **उत्तर**—(उ) केदरिया महादेव का मन्दिर।

प्रश्न ६. *'चम्पावती' प्रसिद्ध विधा है—*

(अ) नाटक की। (आ) कथा साहित्य की।
(इ) आत्मकथा की। (ई) यात्रावृत्त की।
(उ) तिलिस्मी उपन्यास की। **उत्तर**—(उ) तिलिस्मी उपन्यास की।

प्रश्न ७. *ताजमहल से सेठगोविन्ददास के मन में किस प्रकार की भावना आयी—*

(अ) दुःख की (आ) सुख की
(इ) श्रृंगार की (ई) करुणा की
(उ) घृणा की। **उत्तर**—(अ) दुःख की।

प्रश्न ८. *'दीन ए इलाही' के प्रवर्तक का नाम था—*

(अ) बाबर (आ) हुमायूँ
(इ) अकबर (ई) जहाँगीर
(उ) शाहजहाँ। **उत्तर**—(इ) अकबर।

प्रश्न ९. फतेहपुर सीकरी को राजधानी बनाया—

(अ) बाबर ने (आ) अकबर ने
(इ) जहाँगीर ने (ई) शाहजहाँ ने
(उ) औरंगजेब ने। **उत्तर**—(आ) अकबर ने।

प्रश्न १०. *सेठ गोविन्ददास में विभिन्न स्थानों के देखने का शौक किससे जाग्रत हुआ—*

(अ) भारत-भ्रमण से। (आ) मन बहलाव से।
(इ) तीर्थयात्रा से। (ई) सौन्दर्य स्थल देखने से।
(उ) इतिहास से। **उत्तर**—(इ) तीर्थयात्रा से।

प्रश्न ११. *यात्रा में ठहरने का प्रबन्ध कहाँ पर कदापि नहीं किया—*

(अ) धर्मशाला में (आ) मन्दिर में
(इ) घर में (ई) होटल में
(उ) मस्जिद में। **उत्तर**—(ई) होटल में।

प्रश्न १२. *महानता तथा सौन्दर्य किस बौद्ध स्तूप में हैं—*

(अ) बिहार के स्तूप में। (आ) राँची के स्तूप में।
(इ) साँची के स्तूप में। (ई) बनारस के स्तूप में।
(उ) गया के स्तूप में। **उत्तर**—(ई) साँची के स्तूप में।

प्रश्न १३. *राम-कृष्ण के पश्चात सेठ गोविन्ददास की श्रद्धा और भक्ति के पात्र कौन हैं?*

(अ) भगवान् परशुराम (आ) भगवान् बुद्ध
(इ) देवी दुर्गा (ई) माता जानकी
(उ) महावीर स्वामी। **उत्तर**—(आ) भगवान बुद्ध।

प्रश्न १४. *छतरपुर महाराज से व्यक्तिगत सम्बन्ध कैसे बने थे—*

(अ) उनके विनम्र स्वभाव के कारण। (आ) उनके साहित्य प्रेम के कारण।
(इ) उनके मैत्रीपूर्ण स्वभाव के कारण। (ई) उनकी छतरपुर में नौकरी के कारण।
(उ) पारिवारिक परिचय के कारण। **उत्तर**—(आ) उनके साहित्य प्रेम के कारण।

प्रश्न १५. मुगल सम्राटों के हिन्दू धर्म प्रेम का प्रतीक है–

(अ) पार्श्वनाथ मन्दिर (आ) जगन्नाथ मन्दिर।

(इ) लाल किले का शिवमन्दिर। (ई) आगरा-किले का जोधाबाई मन्दिर।

(उ) चतुर्भुज मन्दिर। **उत्तर**—(ई) आगरा-किले का जोधाबाई मन्दिर

प्रश्न १६. दिल्ली की नयी राजधानी का नाम क्या था–

(अ) सिकन्दरा। (आ) रायसीना

(इ) दौलताबाद (ई) इन्द्रप्रस्थ

(उ) हस्तिनापुर। **उत्तर**—(उ) हस्तिनापुर

प्रश्न १७. अन्तिम हिन्दू सम्राट का नाम था–

(अ) शिवाजी (आ) लक्ष्मीबाई

(इ) पृथ्वीराज (ई) चन्द्रगुप्त

(उ) समुद्रगुप्त। **उत्तर**—(इ) पृथ्वीराज

प्रश्न १८. सेठ गोविन्ददास किस भवन की कला से अधिक प्रभावित हुए–

(अ) निजामुद्दीन औलिया का मकबरा। (आ) हुमायूँ का मकबरा।

(इ) फतेहपुर सीकरी। (ई) कुतुबमीनार

(उ) शेरशाह का किला। **उत्तर**—(ई) कुतुबमीनार

प्रश्न १९. दिल्ली का लाल किला बनवाया था–

(अ) शेरशाह ने। (आ) अकबर ने।

(इ) शाहजहाँ ने। (ई) जहाँगीर ने।

(उ) मुमताज महल ने। **उत्तर**—(ई) शाहजहाँ ने

प्रश्न २०. पुरानी दिल्ली बसायी थी–

(अ) बाबर ने। (आ) फीरोजशाह ने।

(इ) मुहम्मद तुगलक ने। (ई) शाहजहाँ ने।

(उ) औरंगजेब ने। **उत्तर**—(ई) शाहजहाँ ने

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. आधुनिक काल के इतिहासज्ञ बुद्ध के अस्तित्व के विषय में सन्देह क्यों न करते?

उत्तर—आधुनिक काल के इतिहासज्ञ बुद्ध के अस्तित्व के विषय में उनके प्राप्त स्तू स्तम्भों आदि के कारण सन्देह नहीं करते।

प्रश्न २. एलीफैन्टा गुफाओं के भीतर शिव को किस-किस रूप में अंकित किया है

उत्तर—एलीफैन्टा गुफाओं के भीतर शिव को सृजनहार, पालनहार तथा प्रलयंकार के र में अंकित किया है।

प्रश्न ३. आत्मकथाकार ने भारत के कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किस आधार लिपिबद्ध किया है?

उत्तर—आत्मकथाकार (सेठ गोविन्ददास) ने भारत के कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्र पुरानी टिप्पणियों के आधार पर लिपिबद्ध किया है।

प्रश्न ४. एलोरा गुफा के मुख्य अंगों का नाम बताइए।

उत्तर—एलोरा गुफा के मुख्य अंगों का नाम है—(१) बौद्ध गुफाएँ, (२) हिन्दू गु (३) जैन गुफाएँ।

प्रश्न ५. एलोरा की हिन्दू-गुफाओं की संख्या और एक नाम बताइए।

उत्तर—एलोरा की हिन्दू-गुफाओं की संख्या १७ है और एक गुफा का नाम रंग महल है।

प्रश्न ६. एलोरा की किसी प्रसिद्ध बौद्ध गुफा का नाम बताइए।

उत्तर—एलोरा की प्रसिद्ध बौद्ध गुफा का नाम दसवीं विश्वकर्मा गुफा है।

प्रश्न ७. एलोरा की दो प्रसिद्ध जैन गुफाओं के नाम बताइए।

उत्तर—एलोरा की दो प्रसिद्ध जैन गुफाओं के नाम हैं—(१) इन्द्रसभा (२) जगन्नाथ सभा।

प्रश्न ८. रहीम खानखाना के मकबरे को देखकर किन भावनाओं का उठना स्वाभाविक है?

उत्तर—रहीम खानखाना के मकबरे को देखकर इन भावनाओं का उठना स्वाभाविक है कि योद्धा थे, राजनीतिज्ञ थे तथा महान् कवि थे।

प्रश्न ९. एक निर्धन व्यक्ति को ताजमहल के पास खड़े देखकर सेठ गोविन्ददास के हृदय क्या विचार उत्पन्न हुआ?

उत्तर—एक निर्धन व्यक्ति को ताजमहल के पास खड़े देखकर सेठ गोविन्ददास के हृदय यह विचार उत्पन्न हुआ कि धनी व्यक्ति ताजमहल बनवाकर अपने दिल के दुःख को प्रकट ता है तथा निर्धन व्यक्ति उस दुःख को अपने दिल में ही दफन कर लेता है।

प्रश्न १०. भारतीय शिल्प का प्राचीनतम स्तूप कौन-सा है तथा उसकी प्रमुख विशेषता ा हैं?

उत्तर—भारतीय शिल्प का प्राचीनतम स्तूप साँची का बौद्ध-स्तूप है। उसकी प्रमुख विशेषता है कि बुद्धजी के शरीर की कोई अस्थि इसमें सुरक्षित है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "चाँदनी में मेड़ाघाट और ताज की शोभा का कोई मिलान नहीं किया जा कता।" ऐसा आत्मकथाकार ने कहकर क्या भिन्नता बतायी है?

उत्तर—सेठ गोविन्ददास को चन्द्रमा की शुभ्र किरणों में ताजमहल की शोभा ने अत्यधिक वित किया। उन्हें अपनी यात्रा में मेड़ाघाट देखने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दोनों ही शोभा अनुपम बताते हुए गरीबी के साथ तुलना करने पर उन्हें जो भिन्नता दृष्टिगोचर उसका विवरण देते हुए सेठजी कहते हैं—

१. **शोभा में अन्तर**—ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज महल की त में कराया था। यह एक मकबरा है जो आगरे को एक दर्शनीय स्थान बनाये हुए है। महल देखकर शाहजहाँ के वियोग की वेदना का भाव सम्मुख आ जाता है।

मेड़ाघाट की शोभा प्राकृतिक है तथा दिव्य आनन्द प्रदायिनी है।

२. **भावना में अन्तर**—ताजमहल से शाहजहाँ की वेदना जुड़ी हुई है। मानव हृदय की ा भावना का प्रतीक है यह ताजमहल।

मेड़ाघाट को देखकर प्रकृति का महत्त्व तथा दिव्य भावनाओं का संचार होता है।

प्रश्न २. फतेहपुर सीकरी के बुलन्द दरवाजे पर लेख को पढ़कर सेठ गोविन्ददास आश्चर्य यों डूब गये?

उत्तर—फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजे का निर्माण अकबर ने कराया था। इस दरवाजे क आध्यात्मिक लेख भी लिखा गया। इस लेख को सेठ गोविन्ददास ने भी पढ़ा। उन्हें लेख पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ। यह दरवाजा अकबर की विजयों की स्मृति स्वरूप निर्मित था। पूर्ण रूप से आसक्ति का प्रतीक था यह दरवाजा लेकिन अनासक्ति की प्रेरणा देने बना हुआ होने के कारण सेठ गोविन्ददास यह लेख पढ़कर आश्चर्य में डूब गए।

प्रश्न ३. रहीम खान खाना के मकबरे को देखकर आत्मकथाकार के मन में क्या भाव उठी? उन्हें पूरा करने को क्या प्रयत्न किये ?

उत्तर—आत्मकथाकार सेठ गोविन्ददास के दिल्ली के समीप देखे मकबरों में रहीम खान खाना का भी था। इस मकबरे को देखकर सेठ जी के मन में विविध साहित्यिक भावनाओं जन्म लिया।

रहीम खानखाना का व्यक्तित्व विचित्र था। वह राजनीति के कुशल खिलाड़ी थे। उच्च कोटि के कवि भी थे। वीरता तथा कोमलता का अद्भुत सम्मिश्रण था रहीम खानखाना में आत्मकथाकार सेठ गोविन्ददास उन्हें एक आदर्श पुरुष मानते हुए उनकी रामचन्द्रजी से समत करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार भगवान् राम वज्र से भी अधिक कठोर तथा पुष्प से भ अधिक कोमल थे उसी प्रकार रहीम खानखाना वीरता की कठोरता तथा कवि की कोमलता क अद्भुत चरित्र थे।

रहीम खानखाना का मकबरा भग्न पड़ा हुआ देखकर सेठजी के मन में उसके जीर्णोद्धा का विचार आया। विचार की सफलता के लिए उन्होंने संसदीय हिन्दी समिति की ओर से भारत के राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के सभापतित्व में एक आयोजन किया। प्रधानमन्त्री ज वाहरलाल नेहरू ने भी उस मकबरे की दशा का अवलोकन किया और मकबरे के जीर्णोद्धा का आश्वासन दिया।

प्रश्न ४. "अजन्ता के चित्र संसार भर में अद्वितीय हैं" ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर—अजन्ता की गुफाएँ और उनकी चित्रकारी विश्व प्रसिद्ध है। गुफाओं के अधिकां चित्र भगवान् बुद्ध के चरित्र की कथाओं से चित्रित हैं जिनमें स्वाभाविकता तथा सौन्दर्य के दर्शन होते हैं।

चित्रों में करुणा तथा सहानुभूति का ऐसा मिश्रण है जो दर्शक को वरबस आकृष्ट कर में सक्षम है। माता और पुत्र को भिक्षा देने का चित्र सादगी, दीनता तथा निर्धनता का अद्भु सम्मिश्रण है।

भगवान् बुद्ध का चित्र शान्ति, अहिंसा तथा वैराग्य को प्रकट करता हुआ है। इस प्रक का सुन्दर चित्र आज तक चित्रित नहीं हुआ है। सभी कला मर्मज्ञ स्वीकार करते हैं कि अजन के चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं। इन चित्रों में समाज के विभिन्न आदर्शों तथा भारतीय संस्कृति लक्ष्यों को भली-भाँति चित्रित किया गया है।

प्रश्न ५. "तीन तल गुफा मनुष्य के सतत् प्रयत्न और धैर्य का उत्कृष्ट नमूना है।" कि आधार पर ऐसा कहा है?

उत्तर—बौद्ध गुफाओं का प्रारम्भिक रूप अत्यन्त सरलतापूर्ण था। उनमें किसी प्रकार क कृत्रिमता नहीं है। बौद्ध गुफाओं की संख्या बारह है। बारहवीं गुफा को तीन तल गुफा कहा जाता है। यह गुफा तीन तल वाली है। यहाँ पर बनी मूर्तियों आकार, धार्मिक भाव आदि के आधार पर प्रसिद्ध है। ये मूर्तियाँ सजावट की दृष्टि से बेजोड़ हैं।

तीन मंजिल वाली गुफा को देखकर व्यक्ति के प्रयत्न की प्रशंसा करनी पड़ेगी। उनक लगनशीलता के विषय में कहना पड़ेगा कि व्यक्तियों ने बड़े धैर्यपूर्वक पाषाण खण्डों को का है। कठोर परिश्रम किया है। तब कहीं तिमंजिली कलाकृति हमारे सम्मुख विद्यमान है।

केवल धन में इतनी सामर्थ्य क़दापि सम्भव नहीं है जो इस तीन तल गुफा को देखक कही जा सकती है । मनुष्य की कर्त्तव्यनिष्ठा को ही इस तिमंजिली गुफा के निर्माण का श्रे दिया जा सकता है। अपना मत व्यक्त करते हुए सेठ गोविन्ददास कहते हैं कि बिना आस तथा कर्तव्यनिष्ठा के कोई भी महान कार्य सम्भव नहीं है।

प्रश्न ६. आत्मकथा और जीवन चरित्र में क्या अन्तर होता है?

उत्तर—

आत्मकथा	जीवन चरित्र
१. व्यक्ति जब स्वयं अपने जीवन की कथा लिखता है, उसे आत्मकथा कहते हैं।	१. किसी व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के जीवन की कथा को लिखना जीवन चरित्र कहलाता है।
२. स्वयं के गुणवर्णन में अतिशयोक्ति का ध्यान रखा जाता है कि वह अधिक न हो। अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन आत्म-श्लाघा माना जाता है।	२. जीवन चरित्र में नायक के गुणों का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण होने पर भी आत्म-श्लाघा नहीं माना जाता है।
३. आत्मकथा अधिकांशतः उत्तम पुरुष में लिखी जाती है।	३. जीवन-चरित्र अन्य पुरुष शैली में लिखी जाती है।
४. आत्मकथा में अन्तर्मन का स्वाभाविक तथा मार्मिक चित्रण होता है।	४. जीवन चरित्र में जीवन के बाह्य रूप का चित्रण होता है।
५. आत्मकथा में चरित्र नायक के दोषों का वर्णन उत्तम माना जाता है।	५. जीवन चरित्र में चरित्र नायक के दोषों का वर्णन उत्तम नहीं माना जाता है।

प्रश्न ७. अतीत की स्मृतियों को आकर्षक बताने के पीछे सेठ गोविन्ददास ने क्या तर्क दिए हैं?

अथवा

"अतीत की स्मृतियाँ मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण हैं।" सेठ गोविन्ददास कृत 'भारत के कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण' निबन्ध के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(माध्य० शिक्षा बोर्ड, 1993)

उत्तर—सहृदय, सुशिक्षित विद्वानों ने एकमत से यह स्वीकार किया है कि अतीत की स्मृतियाँ मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण हैं। ऐसा शायद ही कोई विद्वान् होगा जिसकी दृष्टि अतीत की ओर न जाय। अतीत हमारी संस्कृति का खजाना है। हमारे सच्चे आनन्द का स्रोत है। हमारे वर्तमान और भविष्य का विधाता है। सेठ गोविन्ददास अतीत की स्मृतियों को प्रमुखता देते हुए कहते हैं—

(१) **मर्मस्पर्शी**—अतीत की स्मृतियाँ मर्मस्पर्शी होती हैं। व्यक्ति के जीवन के समान ही स्मृतियाँ भी मर्मस्पर्शी होती हैं। व्यक्तिगत जीवन के समान ही अतीत की स्मृतियाँ भी मधुर होती हैं।

(२) **सुखद**—भारत के गौरवपूर्ण अतीत और उसकी स्मृतियाँ मनुष्य को सुख देती हैं। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। किन्तु अतीत का विचार आते ही मनुष्य कल्पना लोक में विचरण करने लगता है। कल्पना का यह लोक अत्यन्त प्रिय होता है। सुखकारी होता है। सुख-दुःख की भावना से परे होता है।

(३) **तल्लीनता वाली**—व्यक्ति अतीत की स्मृतियों में तल्लीन रहता है। आत्मा उस असीम का आभास करने में लीन रहती है। ईश्वर से तादात्म्य की भावना में मग्न रहता है। व्यक्ति की कल्पना उस काल की मार्मिक घटनाओं की ओर आकृष्ट होती हैं। ये कल्पनाएँ मार्मिक होती हैं। मधुर होती हैं और तल्लीनता वाली होती हैं।

इसीलिए सेठ गोविन्ददास यह मानते हैं कि अतीत की स्मृतियाँ मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण हैं।

प्रश्न ८. एलोरा की गुफाओं के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर—एलोरा की गुफाएँ गुप्तकालीन वास्तुकला का उत्तम प्रमाण है। छोटे-मोटे पठार को काटकर इन गुफाओं का निर्माण हुआ है। मीलों लम्बी इन गुफाओं को काट-छाँटकर बनाने में बहुत समय लगा होगा। परिश्रम भी कठोर किया गया, इसमें सन्देह नहीं।

एलोरा के प्रमुख तीन अंग हैं—

(१) **बौद्ध गुफाएँ**—बौद्ध गुफाओं में सादगी स्पष्ट झलकती है। विश्वकर्मा गुफा तथा तीन तल गुफा अत्यधिक प्रसिद्ध है। विश्वकर्मा गुफा की विशेषता यह है कि अन्दर की ओर यह भाग सकरा होता गया है और अन्तिम भाग मात्र २७ फीट लम्बा तथा १५.५ फुट चौड़ा रह गया है। तीन मंजिली गुफा को सजावट की दृष्टि से अनुपम कहा जा सकता है। इस गुफा में अंकित मूर्तियों से धार्मिक भावना पूर्णरूप से प्रकट होती है। इस तिमंजिली गुफा के निर्माण में मनुष्य ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा तथा आस्था का पूर्ण परिचय दिया है।

(२) ***हिन्दू गुफाएँ***—हिन्दू गुफाओं में कैलाश अथवा रंग महल गुफा सुप्रसिद्ध है। शिव के अतिरिक्त विष्णु आदि पौराणिक विभूतियों के चित्र इसमें अंकित हैं। पाषाण खण्ड को काटकर निर्मित इस गुफा की विशालता देखते ही बनती है। इस गुफा की विशालता, उसकी लम्बाई तथा चौड़ाई से सहज ही ज्ञात हो जाती है। यह गुफा २७६ फुट लम्बी, १५४ फुट चौडी तथा १०७ फुट ऊँची है। रामेश्वर तथा सीता गुफा का भी उल्लेखनीय स्थान है।

(३) **जैन गुफाएँ**—जैन गुफाओं पर ब्राह्मण गुफाओं की कला का प्रभाव है। इन गुफाओं में बौद्ध गुफाओं जैसी तन्मयता नहीं झलकती तथापि ये गुफाएँ कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ-५१-५२—गड़े मुरदे उखाड़ना = पुरानी बातें याद करना। प्रयोजन = उद्देश्य, मतलब। अर्थ व्यवस्था = धनलोलुप, अर्थ को महत्त्व देने वाले। भग्नावशेष = खण्डहर। नित्यता = अमरता, सदा बना रहने वाल अस्तित्व।

पृष्ठ-५३-५४—प्रतिमा = मूर्ति। काष्ठ = लकड़ी, काठ। अश्लील = शीलरहित, भद्दी। स्तम्भ = खम्भा।

पृष्ठ-५५-५६-५७—बीरान = उजड़े। भव्य = शानदार, सुन्दर। दिव्य = दैवी। अनन्त = अन्तरहित। असहय = असहनीय, जो सहन न की जा सके।

पृष्ठ-५८-५९-६०—श्वेत = सफेद। सर्वतोमुखी = चहुँमुखी, सब प्रकार की। मटियामेट = पूर्णतः नष्ट। बलवा = विद्रोह, बगावत। विशद् = विस्तृत। दक्ष = कुशल। जीर्णोद्धार = पुरानी को पुनः बनाना।

पृष्ठ-६१-६२-६३—आयोजन = कार्यक्रम। सदृश्य = समान। अग्रलिखित = आगे लिखा हुआ। उल्लासित = उल्लासपूर्ण। अगणित = अनगिनत। रण = युद्ध। हुतात्मा = बलिदानी। अद्वितीय = बेजोड़। शौर्य = शूरवीरता, पराक्रम। जर्जर = पुराना, बुरी दशा में। मुद्रा = चित्त वृत्ति।

पृष्ठ-६४-६५-६६—भित्तियों = दीवारों। निर्धनता जनित = निर्धनता से उत्पन्न। वैधण्य = विधवापन। श्रृंगीबाजा = सींघ का बाजा। आसीन = बैठे, सवार। बोध = ज्ञान। छत्र = छतरी। साम्य = समानता।

पृष्ठ-६७-६८-६९—उत्कृष्ट = उत्तम, उच्च। रोचक = रुचिकर, सुन्दर प्रिय। स्वल्प = थोड़ा, कम। भीमकाय = बड़े शरीर वाले, बड़े। प्रतिस्पर्धा = होड़, प्रतियोगिता। खण्डित = टूटे हुए। सृजन हार = निर्माण कर्ता, बनाने वाला। प्रलयकार = प्रलय करने वाला, महाविनाश करने वाला। मनमोहक = मन को मोहने वाला, चित्ताकर्षक। अभिनव = नवीन, नयी। प्रतिमा = मूर्ति।

(१)

"यह दुनिया एक पुल के सदृश है। इस पुल पर से निकल जा, लेकिन इस पर मकान ...ाने का विचार न कर। जो यहाँ घड़ी भर भी रुकने की इच्छा करेगा, वह सदैव के लिए ...ही ठहरने का इच्छुक हो जाएगा। इस दुनियाँ का जीवन तो क्षणमात्र है उसे भगवद्-स्मरण ...था भगवद्भक्ति में बिता। भगवान् की उपासना के सिवा और सब कुछ निरर्थक है, ...सार है।" (पृष्ठ-५७)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण सेठ गोविन्ददास द्वारा लिखित भारत के कुछ ऐतिहासिक स्थलों ...ा भ्रमण आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग—सेठ गोविन्ददास प्रस्तुत स्थल पर फतेहपुर सीकरी के बुलन्द दरवाजे पर लिखित ...लेख का आशय समझाते हुए कह रहे हैं—

व्याख्या—यह संसार एक पुल के समान है। जिस प्रकार पुल पर आने-जाने वालों का ...रन्तर आवागमन बना रहता है उसी प्रकार इस संसार में व्यक्ति जीवन धारण करता है और ...स संसार से विदा हो जाता है। यहाँ कोई भी सदा-सदा के लिए नहीं रह पाता।

मानव जाति को सन्देश देते हुए उस आलेख में कहा गया है कि जीवन की क्षण-भंगुरता ...ा विचार करते हुए व्यक्ति को स्थायी निवास का विचार त्याग देना चाहिए। माया तथा मोह ...ा परित्याग करके अपने क्षण भंगुर जीवन को भगवान् के ध्यान में और उसकी भक्ति में ...तीत करना चाहिए। इस संसार की कोई भी वस्तु तत्त्वपूर्ण नहीं है। केवल भगवान् की पूजा ...र्चना ही सार्थक है। अन्य सब सारहीन है। निरर्थक है। इसलिए माया-मोह के वशीभूत नहीं ...ना चाहिए।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा** —साहित्यिक हिन्दी।

(२) **शैली**—चित्रात्मक कथा शैली।

(३) **अन्य**—बुलन्द दरवाजे के लेख पर आश्चर्य प्रकट करते हुए आसक्ति के प्रति ...नासक्ति की प्रेरणा बताया है।

(२)

एक ही स्तम्भ पर इस दीवाने खास की सारी छत खड़ी है। अद्भुत स्थापत्य-कला है ...स भवन की। यह स्तम्भ अन्य स्तम्भों के सदृश नीचे के ऊपर तक एक से व्यास अथवा ...चे कुछ मोटा और ऊपर कुछ पतला नहीं है। यह नीचे पतला और ऊपर मोटा है। ...न-ए-इलाही का आरम्भ इसी भवन में हुआ और यह स्तम्भ मानों उसका प्रतीक है। एक ...र्म के पतले पाये पर खड़े होकर अन्य धर्मों को सम्मिलित करते और ऊपर चढ़ते हुए अकबर ...ा हृदय उसी प्रकार विशाल हो गया था जिस प्रकार यह स्तम्भ। (पृष्ठ-५८)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण सेठ गोविन्ददास द्वारा लिखित भारत के कुछ ऐतिहासिक स्थलों ...ा भ्रमण आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर दीवान-ए-खास का वर्णन करते हुए सेठ गोविन्ददास कह रहे हैं—

व्याख्या—दीवान-ए-खास की स्थापत्य कला अद्वितीय है। आश्चर्य तो यह देखकर होता ... कि सम्पूर्ण छत एक ही स्तम्भ पर टिकी हुई है। दीवान-ए-खास का स्तम्भ अन्य स्तम्भों से ...छ भिन्न है जिससे इस स्तम्भ की उच्च कला का परिचय प्राप्त होता है। सामान्यतः स्तम्भों ...ा निर्माण नीचे से मोटा तथा ऊपर की ओर पतला होता है। लेकिन दीवान-ए-खास का स्तम्भ ...सके विपरीत नीचे से पतला तथा ऊपर की ओर मोटा होता गया है।

दीवान-ए-खास के इस स्तम्भ को देखकर ऐसा आभास होता है कि दीन-ए-इलाही धर्म के ...ले पाए पर खड़े होकर अकबर ने धीरे-धीरे अन्य धर्मों को सम्मिलित कर लिया। दीन-ए-...ाही उसी स्तम्भ की तरह विशाल होता गया।

साहित्यिक सौन्दर्य (१) **भाषा**—साहित्यिक सरल हिन्दी।

(२) शैली —चित्रात्मक कथा शैली।
(३) अन्य—दीन-ए-इलाही धर्म के विकास को चित्रात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

६ दक्षिण प्रान्त की कुछ बातें

(महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी)

● *गागर में सागर*

पं० गिरधरशर्मा चतुर्वेदी—जन्म—सम्वत् १९३८। **स्थान**—जयपुर। **शिक्षा**—शास्त्री। **जीवन परिचय**—पिता-गोकुलचन्द। पत्रकारिता व्यवसाय। हरिद्वार ऋषिकुल में सेवा। लेखन में आधुनिक "वेदव्यास"। शास्त्रार्थ में भीष्म पितामह।

आत्मकथा—दक्षिण प्रान्त की वस्तुएँ, प्रसिद्ध मन्दिर, दक्षिण भारतीय रेलवे तथा मालावार प्रदेश का परिचय। विविधता में एकता के दर्शन। राष्ट्रीय एकता की स्थापना में सहायक विचार। देश-प्रेम वृद्धि का सन्देश।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. पंडित गिरधर शर्मा दक्षिण भारत में कोडियाल क्यों गये—
(अ) अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन में भाग लेने।
(आ) अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन में भाग लेने।
(इ) आखिल भारतीय लेखक-लेखिका सम्मेलन में भाग लेने।
(ई) अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भाग लेने।
(उ) अखिल भारतीय साधु सम्मेलन में भाग लेने।
उत्तर—(आ) अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन में भाग लेने।

प्रश्न २. महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा की भाषा की विशेषता है—
(अ) माधुर्य और ओजस्विता। (आ) माधुर्य।
(इ) ओजस्विता। (ई) माधुर्य के स्थान पर ओजस्विता।
(उ) ओजस्विता के स्थान पर माधुर्य। **उत्तर**—(ई) माधुर्य के स्थान पर ओजस्विता।

प्रश्न ३. महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा ने अपने कथन के निष्कर्ष निकाले हैं—
(अ) विवरणात्मक शैली में। (आ) वर्णनात्मक शैली में।
(इ) विचारात्मक शैली में। (ई) निगमनात्मक शैली में।
(उ) आगमनात्मक शैली में। **उत्तर**—(ई) निगमनात्मक शैली में।

प्रश्न ४. ट्रावनकोर राज्य के अधीश्वर का नाम है—
(अ) ब्रह्मजी। (आ) विष्णुजी।
(इ) गणेशजी। (ई) पद्मनाभ भगवान्।
(उ) महादेवजी। **उत्तर**—(ई) पद्मनाभ भगवान्।

प्रश्न ५. जर्नादन क्षेत्र में चतुर्भुज की खड़ी मूर्ति है—
(अ) महादेव की। (आ) श्रीराम की।
(इ) श्रीकृष्ण की। (ई) गणेश की।
(उ) जर्नादन भगवान् की। **उत्तर**—(उ) जर्नादन भगवान् की।

प्रश्न ६. *मालावार में किस प्रकार का क्लेश है–*
(अ) धर्म का। (आ) भाषा का।
(इ) जाति का। (ई) मौसम का।
(उ) भोजन का।
उत्तर—(आ) भाषा का।

प्रश्न ७. *दक्षिण के मन्दिरों में परिक्रमा से घिरा होने के कारण अन्धकार से पूर्ण स्थान है–*
(अ) देवस्थान का अग्रभाग। (आ) सुवर्ण मण्डित शिखर।
(इ) परिक्रमा स्थल। (ई) स्तम्भ।
(उ) मुख्यदेव स्थान।
उत्तर—(उ) मुख्य देव स्थान।

प्रश्न ८. *श्रीराम मन्दिर की सर्वोत्कृष्टता है–*
(अ) शिल्पकला में। (आ) स्वर्ण मण्डित शिखरों में।
(इ) विस्तार में। (ई) सीढ़ियों में।
(उ) चित्रकला में।
उत्तर—(इ) विस्तार में।

प्रश्न ९. *रंग स्वामी आयंगर के सुप्रबन्ध से अखिल भारतीय संस्कृत सहित्य-सम्मेलन का पाठ अधिवेशन हुआ है–*
(अ) जनवरी में। (आ) फरवरी में।
(इ) मार्च में। (ई) अप्रैल में।
(उ) मई में।
उत्तर—(आ) फरवरी में।

प्रश्न १०. *दक्षिण में प्रधानता रहती है–*
(अ) शीतलता की। (आ) शुष्कता की।
(इ) उष्णता की। (ई) आर्द्रता की।
(उ) वर्षा की।
उत्तर—(इ) उष्णता की।

प्रश्न ११. *स्वाद रहित आम दक्षिण में पाया जाता है–*
(अ) जनवरी में। (आ) अप्रैल में।
(इ) मई में। (ई) बारहों मास।
(उ) गर्मियों में।
उत्तर—(ई) बारहों मास।

प्रश्न १२. *दक्षिण भारत के मन्दिर मनुष्य के चकित कर देते हैं–*
(अ) उच्च शिखर के कारण। (आ) चित्रकला के कारण।
(इ) विशालता के कारण। (ई) मूर्तियों के कारण।
(उ) शिल्प और विस्तार के कारण।
उत्तर—(उ) शिल्प और विस्तार के कारण।

प्रश्न १३. *प्राचीन भारत का अद्भुत शिल्प-चातुर्य अब कहाँ देखने को मिलता है–*
(अ) मथुरा के मन्दिरों में। (आ) बनारस के मन्दिरों में।
(इ) अयोध्या के मन्दिरों में। (ई) दक्षिण के मन्दिरों में ।
(उ) उत्तर के मन्दिरों में।
उत्तर—(ई) दक्षिण के मन्दिरों में।

प्रश्न १४. *श्री रामेश्वर मन्दिर के जीर्णोद्धार कार्य में किस सुधार का अधिक प्रयत्न है–*
(अ) प्रकाश का। (आ) सुन्दरता का।
(इ) विस्तार का। (ई) भव्यता का।
(उ) कम व्यय का।
उत्तर—(अ) प्रकाश का।

प्रश्न १५. *त्रिवेन्द्रम में सबसे बड़ा क्लेश किस बात का है–*
(अ) शिक्षितों के अभाव का। (आ) संस्कृत समझने का।
(इ) अंग्रेजी न जानने का। (ई) धर्मशाला का।
(उ) उत्तरभारत की भाषाएँ बिल्कुल न समझने का।
उत्तर—(उ) उत्तर भारत की भाषाएँ बिल्कुल न समझने का।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. दक्षिण में उत्तर भारत के प्रत्येक मनुष्य को चकित कर देने वाली प्रधान वस्तु क्या है–

उत्तर—दक्षिण में उत्तर भारत के प्रत्येक मनुष्य को चकित कर देने वाली प्रधान वस्तु वहाँ के मन्दिरों की शिल्प और उनका विस्तार है।

प्रश्न २. वर्तमान में पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते समय किस बात का ध्यान रखते हैं?

उत्तर—वर्तमान में पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार करते समय मुख्य देवस्थान का ध्यान रखते हुए वहाँ प्रकाश की उत्तम व्यवस्था रखते हैं।

प्रश्न ३. दक्षिण के तीनों मन्दिरों के विषय में बताइये कि वे किस-किस क्षेत्र में सर्वोत्तम हैं?

उत्तर—दक्षिण के तीनों मन्दिरों में श्रीरंग मन्दिर विस्तार में, श्री रामेश्वर मन्दिर चित्रों की अधिकता में तथा मदुरा का मीनाक्षी मन्दिर शिल्प-कला में सर्वोत्तम है।

प्रश्न ४. जनार्दन क्षेत्र में जनार्दन भगवान् के किन रूपों को दिखाया गया है?

उत्तर—जनार्दन क्षेत्र में, जनार्दन भगवान् को राम, वंशीधर, कृष्ण, नरसिंह, मोहिन आदि रूपों में दिखाया गया है।

प्रश्न ५. मालाबार प्रदेश के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों के नाम बताइये।

उत्तर—मालाबार प्रदेश के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों के नाम हैं—तनकाशी, पद्मनाभ, जनार्दन, पर्णीनदी, कन्याकुमारी आदि।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. "जीर्णोद्धार होने पर वहाँ हानि भी हो रही है।" इसमें किस हानि की ओर संकेत किया है? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं और क्यों?

उत्तर—दक्षिण के अधिकांश मन्दिरों में परिक्रमा स्थल बने हुए हैं। मुख्य देवस्थान के परिक्रमाओं से घिरा होने के कारण देवस्थान पर प्रकाश भली-भाँति नहीं पहुँच पाता। वहाँ अन्धकार की अधिकता रहती है।

वर्तमान में, जहाँ मन्दिरों का जीर्णोद्धार हो रहा है वहाँ प्रकाश की उचित व्यवस्था का प्रयास हो रहा है। जाली आदि लगायी जा रहीं है। इसका दुष्परिणाम यह हो रहा है कि प्राचीन शिल्पकला नष्ट होती जा रही है।

जीर्णोद्धार के समय देव प्रतिमाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में प्राचीन मूर्तियाँ खण्डित होती जा रही हैं। फलतः प्राचीन शिल्प नष्ट होता जा रहा है।

जीर्णोद्धार होना अवश्य चाहिए किन्तु इस प्रकार से कि प्राचीन शिल्प को कोई क्षति न हो। उसका महत्त्व ही समाप्त न हो जाय।

प्रश्न २. "मालाबार प्रदेश की यात्रा छोड़ देना इतने बड़े द्रव्य और परिश्रम का पक्ष छोड़ देना है" ऐसा लेखक ने क्यों कहा है?

उत्तर—पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी ने अपने आत्मकथांश में लिखा है कि वह उत्तर भारत से दक्षिण के क्षेत्र में गये थे। दक्षिण की यह यात्रा जयपुर से प्रारम्भ हुई थी जो समय की दृष्टि से तो अधिक थी ही धन-व्यय में भी किसी भी दशा में कम नहीं थी।

दक्षिण में जाकर मालाबार प्रदेश की यात्रा न करना कोई उचित पग नहीं था क्योंकि मालावार की यात्रा पर पुनः व्यय भार बढ़ता जिसे सहन करना शक्ति से परे था। समय भी अधिक लगता इससे सन्देह नहीं।

अतः लेखक का यह सोचना हर दृष्टि से उचित था कि मालाबार प्रदेश की यात्रा छोड़ देना समय और परिश्रम को छोड़ देना था। इसके अतिरिक्त विचार यह भी था कि मालाबार प्रदेश अत्यन्त चित्ताकर्षक है। यहाँ की भूमि हरी-भरी है। चारों ओर सौन्दर्य बिखरा पड़ा है। विशाल तथा भव्य यहाँ के मन्दिर है। इन्हीं कारणों से मालाबार की यात्रा को पंडित गिरधर शर्मा ने उत्कृष्ट बताया है।

प्रश्न ३. "दक्षिण भारत में शैव-वैष्णवों का अत्यन्त विद्वेष बढ़ा हुआ है।" ऐसा क्यों है?

उत्तर—शैव मताबलम्बी शिवजी की पूजा करते हैं। वे शिव को विश्व का प्राचीनतम आदि देव मानते हैं।

वैष्णवों की आस्था विष्णु में है। आर्यों के समय से ही यह देवता माने गये हैं। पद्मनाभ भगवान् को विष्णु भगवान् का रूप स्वीकार करते हुए वैष्णव समुदाय में उनकी पूजा है। भगवान् के चार हाथों में से एक हाथ शिवलिंग पर है। अतः शैवों का कहना है कि यह सम्प्रदाय वैष्णव सम्प्रदाय से अधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रकार दक्षिण प्रदेश में शैव-वैष्णवों का विद्वेष एक दूसरे के विरुद्ध अत्यन्त बढ़ा हुआ है। ऐसा लगता है कि अपने-अपने सम्प्रदाय को महान् बताने की उनमें होड़ लगी हुई है।

प्रश्न ४. कन्याकुमारी क्षेत्र में भिन्न-भिन्न दर्शनों के लिए भिन्न-भिन्न तरह का अर्ध्य चढ़ाना पड़ता है। यह कहाँ तक उचित है। अपने विचार लिखें।

उत्तर—पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी ने दक्षिण प्रान्त की कुछ बातें, आत्मकथा में कन्याकुमारी तथा जनार्दन क्षेत्र के मन्दिरों के विषय में लिखा है कि वहाँ मन्दिरों में मूर्तियों का शृंगार भिन्न-भिन्न रूपों में किया जाता है। दर्शनों के लिए, उनके श्रृंगार के अनुसार अर्ध्य चढ़ाया जाता है। अतः मन्दिरों में यह भेंट पृथक्-पृथक् दर्शनों के अनुसार होती है।

इतना तो स्पष्ट है कि भेंट चढ़ाने में अन्तर है किन्तु यह कोई भी नहीं कह सकता कि यह अन्तर कितना है? अथवा यह भी कहना कठिन है कि यह अन्तर किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है? अतः अन्तर स्पष्ट हुए बिना दक्षिण के भिन्न-भिन्न अर्ध्य चढ़ाने की मात्रा के सम्बन्ध में कुछ भी कहना उचित नहीं है।

प्रश्न ५. कन्या कुमारी क्षेत्र की रमणीयता एवम् मूर्ति शृंगार की विशेषताओं को बताइए।

उत्तर—कन्या कुमारी क्षेत्र की रमणीयता एवम् मूर्ति शृंगार की विशेषताओं के सम्बन्ध में पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी कहते हैं—

रमणीयता—कन्याकुमारी के तीन ओर समुद्र है। समुद्र में जब लहरें आती हैं तो कन्याकुमारी का सौन्दर्य द्विगुणित हो उठता है। वहाँ की छवि अवर्णनीय हो जाती है।

कन्याकुमारी के मध्य छोटी-सी बस्ती है जो स्वच्छता में बेजोड़ है। धर्मशाला में भी स्वच्छता का साम्राज्य देखने को मिलता है। बस्ती तथा धर्मशाला ही नहीं, वहाँ के निवासियों के हृदय भी स्वच्छता के प्रतीक हैं। तपस्या का स्थान भी समुद्र में थोड़ी दूर एक पहाड़ी है जहाँ कुमारी ने तप किया था।

मूर्ति शृंगार—मूर्तियों का शृंगार भी विलक्षण है। केवल चन्दन तथा आभूषणों की सहायता से मूर्तियों को विभिन्न आकर्षण तथा आश्चर्यजनक रूप में सजाने की कला में वहाँ के पुजारी प्रसिद्ध हैं। पं० गिरधर शर्मा ने शृंगार की विशेषता का वर्णन करते हुए लिखा है कि रात्रि को दर्शन में भगवती का रूप आभूषणों की प्रतिभा से सुवर्णमयी प्रतीत हो रहा था। उसी मूर्ति के निकट पहुँचने पर गौर वर्ण देखा। जो कुमारी भगवती की मूर्ति दूर से सुवर्ण की और समीप से देखने पर गौरवर्ण में देखा, वही मूर्ति स्नान के पश्चात् श्याम पाषाण की दिखायी दी।

इस प्रकार आत्मकथा लेखक ने कन्याकुमारी प्रदेश में प्रतिमा के श्रृंगार की आश्चर्यजनक कला को देखकर वहाँ की इस विशेषता की प्रशंसा की है।

प्रश्न ६. "उत्तर भारत के यात्रियों को दक्षिण का यह प्रदेश अवश्य देखना चाहिए।" ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर—उत्तर भारत के यात्रियों के लिए दक्षिण प्रदेश जाने का बार-बार अवसर प्राप्त नहीं होता। उत्तर भारत के वासियों के लिए दक्षिण प्रदेश दूर है और दूर के लिए धन की भी अधिक आवश्यकता होगी, इसमें दो मत नहीं हो सकते।

दक्षिण में, मालाबार प्रदेश भी दर्शनीय है। वहाँ ताम्रपर्णी नहीं, पद्मनाभ, जनार्दन तथा कन्याकुमारी क्षेत्र का सौन्दर्य देखते ही बनता है। जो यात्री रामेश्वरम् दर्शन के लिए जाते हैं किन्तु मालाबार प्रदेश को महत्त्वहीन, शोभाहीन समझकर उपेक्षा करते हैं, वे भूल करते हैं। उत्तर से दक्षिण जाना दूरी के कारण समय और धन दोनों ही दृष्टि से कोई सरल कार्य नहीं है। अतः रामेश्वरम् जाकर भी मालाबार प्रदेश में न जाना प्राकृतिक सौन्दर्य तथा मन्दिरों की विलक्षणता से मुँह मोड़ लेना है।

मालाबार के प्राकृतिक सौन्दर्य, कन्याकुमारी तथा जनार्दन मन्दिरों की विलक्षणता का वर्णन करते हुए लेखक कहता है—

१. **प्राकृतिक सौन्दर्य**—मालाबार प्रदेश प्रकृति का सुन्दर आगार है। समुद्र-तट, जल की अनन्त धार, जल-क्रीड़ा-मग्न जीव, जल-प्रपातों का अद्भुत दृश्य मन को बरबस ही आकृष्ट करने में समर्थ है। पहाड़ों की हरियाली, पुष्पित तथा फलित वहाँ के वृक्ष, मेवा आदि की समृद्धि वहाँ की प्राकृतिक छवि में वृद्धि करती है।

२. **मन्दिर**—कन्याकुमारी, जनार्दन भगवान मन्दिर, भगवान् पद्मनाभ मन्दिर अपनी विलक्षणता तथा सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। इसीलिए लेखक कहता है कि उत्तर भारत के यात्रियों को दक्षिण का यह प्रदेश अवश्य देखना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ-७२,७३—समीप = पास, नजदीक। आनरेवल = प्रतिष्ठित, सम्माननीय। अनौचित्य = अनुचित। पराकाष्ठा = सीमा। बृहत् = बड़ा, विस्तृत। अवलोकनार्थ = देखने के लिए। उष्णता = गर्मी। प्रचुरता = अधिकता। प्रतिमा = मूर्ति। वीथी = गली।

पृष्ठ-७४-७५—खण्डित = टूटी। प्रपात = झरना। द्वादश = बारह। उच्छ्वास = गहरी साँस। असंकीर्ण = जो तंग न हो, फैली-फूटी। सुवर्णमयी = सोने की, सुनहली। वंचित = अछूते, पृथक्।

(१)

पद्मनाभ भगवान् की पूजा स्मार्त सम्प्रदाय के अनुसार होती है। भगवान् के चार हाथों में से एक हाथ शिवलिंग पर है। विष्णु भगवान् सोते हुए भी निरन्तर उस एक हाथ से लिंग पूजा करते हैं, यह प्रसिद्धि है। दक्षिण प्रदेश में, जहाँ कि शैव-वैष्णवों का अत्यन्त विद्वेष बढ़ा हुआ है, वहाँ इस प्राचीन मूर्ति का दर्शन कर चित्त उच्छ्वास लेता है। यह मूर्ति पुराण-प्रसिद्ध मूर्ति है। प्राचीन भावों का आदर्श इससे भली-भाँति सामने आता है। (पृष्ठ-७४)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांवतरण महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा लिखित दक्षिण प्रान्त की कुछ बातें आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर लेखक ने दक्षिण यात्रा के समय वहाँ सम्मुख आने वाले मन्दिरों तथा पुराण-प्रसिद्ध मूर्तियों के विषय में कुछ परिचय दिया है और त्रिवेन्द्रम, की पद्मनाभ भगवान् की पूजा के विषय में कहते हैं—

व्याख्या—स्मार्त सम्प्रदाय के अनुसार त्रिवेन्द्रम् के पद्मनाभ भगवान् की पूजा होती है। भगवान् की यह प्रतिमा सोयी हुई दिखायी गयी है। उनके चार हाथ दिखाये गये हैं। एक हाथ शिवलिंग पर दिखाया गया है जो शिव-पूजा को महत्त्व दिया जाना सिद्ध करता है।

पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी को पद्मनाभ भगवान् का यह रूप अत्यन्त शुभ, सुन्दर तथा शान्तिदायक प्रतीत हुआ। मूर्ति की प्राचीनता तथा शैव-वैष्णवों में सामंजस्य का प्रतीक पद्मनाभ भगवान् के दर्शन करके लेखक को अतीव आनन्द प्राप्त हुआ। पुराण प्रसिद्ध इस मूर्ति में उन्हें प्राचीन भावों का आदर्श स्पष्ट झलकने लगा। शैव और वैष्णवों के विद्वेष को कम करने में यह मूर्ति सहायक प्रतीत होने लगी। इस मूर्ति ने यह सिद्ध कर दिया कि शैव-वैष्णवों का वाद-विवाद उचित नहीं है। भगवान् प्रत्येक रूप में पूज्य है। जो जिस रूप में उनकी पूजा करे, मान्यता दे, वह उसी रूप में उसकी पूजा स्वीकार करता है।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—सरल हिन्दी।

(२) **शैली**—व्यास तथा आत्मकथा शैली।

(३) **अन्य**—शैव-वैष्णवों के पारस्परिक विद्वेष का वर्णन किया है तथा पद्मनाभ भगवान् को इस विद्वेष की समाप्ति में सहायक बताया है।

(२)

हाँ, एक क्लेश इस प्रदेश में अवश्य है। यात्रियों का प्रसार कम होने से उधर के मनुष्य उत्तर भारत की भाषाएँ बिल्कुल नहीं समझते। इस भाषाओं का भी क्लेश मात्र भी इधर के लोग भला क्यों समझते? अतः वहाँ काम चलाना भी बड़ा कठिन हो जाता है। शिक्षित मनुष्यों की भी यहाँ न्यूनता है, अतः संस्कृत या अंग्रेजी से भी काम मुश्किल से निकल सकता है। त्रिवेन्द्रम में ट्रावन्कोर राज्य की तरफ से पद्मनाभ मन्दिर में दो एक बहुभाषामित्र दर्शक नियत हैं, वे दर्शन आदि में सहायता किस कदर देते हैं, किन्तु इतने से काम नहीं चलता। धर्मशाला ढूँढने तक में बड़ा कष्ट होता है। (पृष्ठ-७५)

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण **महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी** द्वारा लिखित **दक्षिण प्रान्त की कुछ बातें** आत्मकथांश से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर चतुर्वेदी जी ने उत्तर भारत के यात्रियों की दक्षिण यात्रा के समय उनके सम्मुख आने वाली कठिनाइयों का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या—मालाबार क्षेत्र में पहुँचने पर लेखक ने उन समस्याओं की ओर ध्यान दिया जो दक्षिण भारत की यात्रा करते समय यात्रियों के सम्मुख प्रस्तुत होती हैं। लेखक ने अनुभव किया कि उत्तर भारत से यहाँ आने वाले यात्रियों की संख्या बहुत कम है। इन यात्रियों का इधर-उधर प्रसार न होने के कारण दक्षिण भारत के लोग उत्तर भारत की भाषाओं के ज्ञान से वंचित रह जाते हैं। उत्तर भारत की भाषाओं के ज्ञान के अभाव में वे लोग उत्तर भारत की भाषाएँ समझने में असमर्थ रहते हैं। यहाँ तक कि यात्रियों के यहाँ बातचीत करना भी बहुत कठिन कार्य हो जाता है। एक दूसरे की भाषा को न समझने से वहाँ बड़ी कठिनाई होती है।

शिक्षित व्यक्तियों की कमी भी इस क्षेत्र का दुर्भाग्य है। यहाँ के व्यक्तियों के सम्मुख हिन्दी तो दूर, अंग्रेजी अथवा संस्कृत को भी न समझ पाने से प्रत्येक कार्य में कठिनाई उपस्थित रहती है। कोई भी कार्य करना सरल नहीं होता।

ट्रावनकोर राज्य की ओर से त्रिवेन्द्रम के पद्मनाभ भगवान् मन्दिर में बहुभाषा मित्र दर्शक नियत हैं। इनका कार्य मन्दिर के दर्शन आदि में यात्रियों की सहायता करना है। बहुभाषा मित्र दर्शकों की संख्या कम होने से यात्रियों को उनका कोई लाभ नहीं हैं। अच्छा तो यह हो कि इनकी संख्या में वृद्धि की जाय ताकि यात्रियों की भाषा सम्बन्धी कठिनाइयों का निराकरण हो सके। अन्यथा यात्रियों की धर्मशाला प्राप्ति की कठिनाइयों में भी कोई सरल मार्ग नहीं मिल सकेगा।

साहित्यिक सौन्दर्य—(१) **भाषा**—सरल, सुबोध हिन्दी।

(२) **शैली**—व्यास शैली।

(३) **अन्य**—दक्षिण में हिन्दी प्रचार की आवश्यकता है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आधुनिक काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

छायावादी काव्य

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. विश्व मानवता का आलेख जगाने वाली कविता को कहा जाता है—

(अ) छायावाद। (ब) मानवतावाद।

(स) रहस्यवाद। *उत्तर*—(अ) छायावाद।

प्रश्न २. छायावाद का प्रारम्भ हुआ—

(अ) सन् १९१० से। (ब) सन् १९१८ से।

(स) सन् १९३८ से। *उत्तर*—(ब) सन् १९१८ से।

प्रश्न ३. छायावाद की प्रयोगशाला का प्रथम आविष्कार माना जाता है—

(अ) आँसू। (ब) उच्छ्वास।

(स) झरना को। *उत्तर*—(स) झरना को।

प्रश्न ४. कामायनी के 'मनु' में है—

(अ) वैयक्तिकता। (ब) सामाजिकता।

(स) सामूहिकता। *उत्तर*—(अ) वैयक्तिकता।

प्रश्न ५. वैविध्यपूर्ण सृजन किसकी कविता में है—

(अ) पन्त। (ब) निराला।

(स) प्रसाद। *उत्तर*—(ब) निराला।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. छायावाद की शैल्पिक प्रवृत्तियों में से किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।

(माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

उत्तर—छायावाद की तीन शैल्पिक प्रवृत्तियाँ—

१. भाव सौन्दर्य में व्यक्तिवादिता का प्रथम स्थान।

२. नारी के प्रति पवित्र तथा पूज्य भाव का संचार।

३. कल्पना की प्रवृत्ति की अधिकता।

प्रश्न २. छायावाद का आविर्भाव कैसे हुआ?

उत्तर—छायावाद का आविर्भाव द्विवेदी युग की गद्याभास देने वाली और बहिर्मुखी स्थल कविताओं की प्रतिक्रियास्वरूप छायावाद का आविर्भाव हुआ।

प्रश्न ३. छायावाद के मूल में किसे माना जा सकता है?

उत्तर—छायावाद के मूल में तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना तथा नवीन मानवीय चेतना का हाथ माना जा सकता है।

प्रश्न ४. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद के विषय में क्या कहा है?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद के विषय में कहा है—"छायावाद अभिव्यंजना की एक विशेष शैली है।"

प्रश्न ५. डॉ० रामकुमार वर्मा छायावाद के विषय में क्या कहते हैं?

उत्तर—डॉ० रामकुमार वर्मा छायावाद के विषय में कहते हैं—'परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।"

प्रश्न ६. डॉ० नगेन्द्र छायावाद के विषय में क्या कहते हैं?

उत्तर—डॉ० नगेन्द्र छायावाद के विषय में कहते हैं—"छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। वह एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है और जीवन के प्रति एक प्रकार का भावात्मक दृष्टिकोण है।

प्रश्न ७. गंगाप्रसाद पाण्डेय का छायावाद के विषय में क्या विचार है?

उत्तर—गंगाप्रसाद पाण्डेय का छायावाद के विषय में विचार—"छायावाद वस्तुवाद और रहस्यवाद के बीच की कड़ी है।"

प्रश्न ८. छायावाद की सर्वाधिक सफलता क्या है?

उत्तर—छायावाद की सर्वाधिक सफलता जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म राग संवेदनों को उभारने में मिली है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. छायावादी काव्य का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—आधुनिक काल का सूत्रपात भारतेन्दु युग के साथ हो गया था। किन्तु काव्य में यह परिवर्तन केवल कथ्य (विषय) के क्षेत्र में हुआ। कविता का माध्यम अब भी ब्रज-भाषा बनी रही। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस दिशा में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। उन्होंने कविता में खड़ीबोली के प्रयोग की ओर कवियों का ध्यान आकृष्ट किया। कविता की विषय-वस्तु, शिल्प और शैली, सभी के विषय में उन्होंने नियम बनाये। इन नियमों का कड़ाई से पालन भी किया गया। किन्तु स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए कविता की आत्मा छटपटाने लगी। द्विवेदी-युगीन प्रतिबन्धों के विरोध में जो काव्य-प्रवृत्ति उभर कर आयी उसे छायावाद के नाम से जाना गया।

मुख्य रूप से चार कवि छायावाद के स्तम्भ माने जाते हैं। वे हैं—जयशंकर 'प्रसाद' सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त और महादेवी वर्मा। छायावाद का मूल स्वर है मानव-भावनाओं की मुक्त अभिव्यक्ति। कहीं सीधे और कहीं प्रकृति के माध्यम से इन कवियों ने अपने मन की बात को कहा है।

छायावाद को बीसवीं शताब्दी के दो दशकों की भारतीय सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना तथा पुनरुत्थान की काव्यात्मक परिणति कहा जा सकता है। इसमें स्वच्छन्दतावादी विद्रोह की अभिव्यक्ति महत्त्वपूर्ण है।

छायावाद के सम्बन्ध में शान्तिप्रिय द्विवेदीजी ने कहा है—

"छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है।"

डॉ० नगेन्द्र ने कहा है—"छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। वह एक विशेष प्रकार की भाव-पद्धति है और जीवन के प्रति एक विशेष प्रकार का भावात्मक दृष्टिकोण है।"

प्रश्न २. छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—आधुनिक काल के स्वराज्य आन्दोलन और सुधारवादी दृष्टिकोण ने काव्य जगत को भी प्रभावित किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षकों ने काव्य धारा को

नियन्त्रित करने के लिए कुछ नियम निर्धारित किये। इन नियमों के बोझ से दबकर कविता की आत्मा कसमसाने लगी। द्विवेदी-युगीन प्रतिबन्धों के विरोध में जो काव्य-प्रवृत्ति उभरकर आयी उसे छायावाद के नाम से जाना गया।

छायावाद काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ—

(१) आत्म प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त करना।

(२) सूक्ष्म उपमानों द्वारा सुन्दरता को प्रस्तुत करने का प्रयास।

(३) हृदयहारी प्रकृति चित्रण किया जाना।

(४) वेदना तथा करुणा की झलक।

(५) काव्य में रहस्यवादी स्वर को स्थान।

(६) उत्साह तथा प्रेरणा का सन्देश।

(७) कल्पना एवम् सौन्दर्य का प्रवाह।

(८) गीत की प्रधानता।

(९) भाषा-शैली को परिष्कृत बनाना।

(१०) शृंगार, करुण तथा शान्त रस की प्रधानता।

प्रश्न ३. छायावाद का अर्थ बताते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—छायावाद को 'निर्मल ब्रह्म की विशद छाया' तथा 'अस्पष्टता और संगीत का अपूर्ण एकीकरण' मानते हुए अनेक विद्वानों ने छायावाद का अर्थ अपने ढंग से समझाया है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने छायावाद का अर्थ बताते हुए कहा है—

"परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।"

शान्तिप्रिय द्विवेदी का कहना है—'छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है।"

विशेषताएँ—(१) आत्म प्रकाशन का काव्य—द्विवेदी युग की कविता वर्णनात्मक और बहिर्मुखी थी। व्यक्ति के निजी सुख-दुःख और संवेदना को प्रकट होने का अवकाश न था। छायावादी काव्य ने सर्वप्रथम आत्म प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त किया। कवि उत्तम पुरुष में सामने आया। मीरा और कबीर का युग-अनुकूल संस्करण सामने आया। प्रसादजी के 'आँसू' और महादेवी जी के गीतों में व्यक्तिगत अनुभवों का मर्मस्पर्शी प्रकाशन हुआ है। यथा—

(१) "इस करुणा कलित हृदय में क्यों विकल रागिनी बजती" **(प्रसाद)**

(२) "मैं नीर भरी दुःख की बदली" **(महादेवी)**

(२) प्रेम और सौन्दर्य का मनमोहक चित्रण—द्विवेदी-युगीन काव्य पर आदर्शवाद का अंकुश रहा। उसमें व्यक्तिगत प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए अवकाश न था। छायावाद ने इस प्रतिबन्ध को तोड़ा। अधिकांश छायावादी कवियों ने प्रेम को काव्य का विषय बनाया है। छायावादी कवियों ने मानवीय सौन्दर्य को भी नवीन दृष्टि से देखा और नवीन कल्पना में चित्रित भी किया। सूक्ष्म उपमानों एवं अछूती शैली में सुन्दरता को प्रस्तुत करने का प्रयास छायावाद की निजी विशेषता है। यथा—

(१) कौन तुम संसृति जलनिधि-तीर, तरंगों से फेंकी मणि एक?

(२) 'कुसुम-वैभव में लगता समान, चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम।

(३) अनुपम प्रकृति-चित्रण—छायावादी प्रकृति-चित्रण भी अपने पूर्ववर्तियों से सर्वथा पृथक और हृदयहारी है। यहाँ प्रकृति निर्जीव सौन्दर्य का पिटारा अथवा रीतिकालीन 'उद्दीपन का मसाला' मात्र नहीं रही है। वह मानव के सुख-दुःख की सहभागिनी बनकर आयी है। उसका सफल मानवीकरण छायावाद में हुआ है । यथा—

(१) "सैकत शैया पर दुग्ध धवल, तन्वंगी ग्रीष्म विरल
लेटी है शान्त, क्लान्त निश्चल !" (पंत)

(२) "सिन्धु सेज पर धरा-वधू अब तनिक संकुचित बैठी-सी।" (प्रसाद)

(४) **रहस्यवादी स्पर्श**—छायावादी काव्य में यत्र-तत्र रहस्यवादी स्वर भी सुनने को मिलते हैं। प्रकृति के पीछे उपस्थित किसी अज्ञात परन्तु सजीव सत्ता का छायावादी कवियों ने अनुभव किया है और उसका प्रकाशन भी।

(१) 'हे अनन्त रमणीय कौन तुम, यह मैं कैसे कह सकता'। (प्रसाद)

(२) 'न जाने नक्षत्रों से कौन, निमन्त्रण देता मुझको मौन'। (पंत)

(५) **वेदना एवं करुणा का काव्य**—छायावादी कविता को वेदना की कविता कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। जीवन के कटु यथार्थ से चोट खाकर ये कवि अपनी ही दुनियाँ में सीमित हो गये और संसार के हर व्यवहार से करुणा का संकलन करते रहे। प्रसाद और महादेवी का काव्य इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

(१) "इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना, असीम गरजती !" (प्रसाद)

(२) "तुमको पीड़ा में ढूंढा तुममें ढूँढूँगी पीड़ा"। (महादेवी)

(६) **निराशा एवं पलायन की प्रवृत्ति**—अधिकांश छायावादी काव्य में निराला का स्वर प्रमुख रहा है। इन कवियों में संसार के संघर्ष और कटु यथार्थ से बचकर चलने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है । कवि कल्पना और सौन्दर्य के संसार में मग्न रहना चाहता है। प्रसाद के शब्दों में यह प्रवृत्ति दर्शनीय है—

'ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे।'

(७) **प्रेरणा के स्वर**—छायावादी कवियों में केवल निराशा और पलायन ही नहीं है, उनके काव्य में उत्साह और प्रेरणा का सन्देश भी प्राप्त होता है। यथा—

'डरो मत अरे अमृत सन्तान अग्रसर है मंगलमय वृद्धि।" (प्रसाद)

(८) **गीति-प्रधान**—छायावादी कविता गीति-काव्य की समस्त विशेषताओं को लेकर चली है। श्रेयता, सरसता, मार्मिकता, संक्षिप्तता, वैयक्तिकता आदि सभी गीतिकाव्य के गुण छायावादी कविता में हैं।

(९) **भाषा-शैली**—छायावादी कवियों ने भाषा को परिष्कृत किया। उसमें कोमलता, मार्मिकता तथा लाक्षणिकता को प्रतिष्ठित किया चित्रात्मकता, भावात्मकता तथा लाक्षणिकता का आश्रय लेकर अद्वितीय काव्य की सृष्टि हुई।

(१०) **रस एवं अलंकार**—छायावादी काव्य में शृंगार, करुण तथा शान्त रस को प्रस्तुत किया गया। मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय आदि नवीन अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ।

हिन्दी कविता को भावों को गम्भीरता तथा कलात्मकता प्रदान करने में छायावादी काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

रहस्यवाद

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. रहस्यवाद में छिपा होता है—

(अ) प्रभु का रूप। (ब) आश्चर्य का भाव।
(स) श्रद्धा भाव।

उत्तर—(ब) आश्चर्य का भाव।

प्रश्न २. रहस्यवाद में छिपी होती है—
(अ) अद्वैतमूलक विचार धारा। (ब) छायावाद।
(स) धर्म भावना। **उत्तर**—(अ) अद्वैत मूलक विचार धारा।

प्रश्न ३. सूफियों ने परब्रह्म की अनुभूति किस रूप में की है—
(अ) राम के रूप में। (ब) प्रियतमा अथवा माशूका के रूप में।
(स) कृष्ण के रूप में। **उत्तर**—(ब) प्रियतमा अथवा माशूका के रूप में।

प्रश्न ४. प्राचीन रहस्यवादी कवियों में प्रमुख है—
(अ) कबीरदास। (ब) तुलसीदास।
(स) रहीमदास। **उत्तर**—(अ) कबीरदास।

प्रश्न ५. रहस्यवाद का सम्बन्ध किससे है—
(अ) परम सत्ता से। (ब) स्पष्टवक्ता से।
(स) छायावाद से। **उत्तर**—(अ) परमसत्ता से।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रहस्यवाद किसे मानते हैं?
उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रहस्यवाद मानते हैं—'ज्ञान के क्षेत्र में जिसे अद्वैतवाद कहते हैं, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद कहलाता है।"

प्रश्न २. प्रिंगल पैटिसन ने रहस्यवाद किसे माना है?
उत्तर—प्रिंगल पैटिसन ने रहस्यवाद माना है—"परमोच्च के साथ प्रत्यक्ष मिलन के परम पवित्र आनन्द को उपलब्ध कराने का मानवीय मन का प्रयत्न 'रहस्यवाद' है।

प्रश्न ३. दास गुप्त के विचार से रहस्यवाद क्या है?
उत्तर—दास गुप्त के विचार से 'रहस्यवाद' कोई बौद्धिकवाद नहीं है। यह मूलतः एक सक्रिय, रूपात्मक, रचनात्मक, उन्नायक तथा उत्कर्षप्रद सिद्धान्त है।

प्रश्न ४. 'रहस्यवाद' में क्या होता है?
उत्तर—रहस्यवाद में परमात्मा के प्रति आत्म निवेदन, मिलन के लिए प्रयास और मिलन-क्षण की ध्वनि होती है।

प्रश्न ५. रहस्यवाद का मुख्य क्षेत्र क्या है?
उत्तर—रहस्यवाद का मुख्य क्षेत्र आत्मा, परमात्मा और जगत है।

प्रश्न ६. प्राचीन रहस्यवादी कवियों के नाम लिखिए।
उत्तर—प्राचीन रहस्यवादी कवियों के नाम हैं—१. कबीरदास। २. मलिक मुहम्मद जायसी।

प्रश्न ७. प्रमुख आधुनिक रहस्यवादी कवियों के नाम लिखिए।
उत्तर—प्रमुख आधुनिक रहस्यवादी कवियों के नाम हैं— १. जयशंकर प्रसाद। २. सुमित्रानन्दन पन्त। ३. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'। ४. महादेवी वर्मा।

प्रश्न ८. हिन्दी काव्य में रहस्यवादी रचनाओं की प्रथम तथा महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?
उत्तर—हिन्दी काव्य में रहस्यवादी रचनाओं की प्रथम तथा महत्वपूर्ण विशेषता अद्वैतवादी धारणा है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. रहस्यवाद का अभिप्राय समझाते हुए उसके तत्वों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर—**रहस्यवाद का अभिप्राय**—रहस्यवाद को अंग्रेजी में 'मिस्टिसिज्म' कहते हैं। समीक्षा जगत में 'रहस्यवाद' तथा 'छायावाद' की मनमानी व्याख्याएँ होती रही हैं। कुछ समय पश्चात्

रामचन्द्र शुक्ल आदि मनीषियों ने अपना मत व्यक्त करके 'रहस्यवाद विषयक चिन्तन को एक आधार प्रदान किया। **रामचन्द्र शुक्ल** ने रहस्यवाद के सम्बन्ध में कहा—

"ज्ञान के क्षेत्र में जिसे अद्वैतवाद कहते हैं, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद कहलाता है।"

डॉ० रामकुमार वर्मा ने कहा—"रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहता है।

रहस्यवाद के प्रमुख तत्व—

१. **मानव प्रेम**—रहस्यवाद में मानव प्रेम रहता है। भक्त तुलसीदास ने तो समस्त संसार को ही राम और सीता मय माना है और प्राणि मात्र की उपासना की है। उन्होंने लिखा है—"सियाराम मय सब जग जानी करहु प्रमाण जोर जोण पानी।"

२. **आश्चर्य भावना**—श्रीमद्‌भगवद गीता के विराटस्वरूप दर्शन में तथा कबीर की उलट वासियों में, तुलसी के काव्य में तथा महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यात्मक आश्चर्य भावना प्रकट हुई है। यथा—

"केशवकहि न जाय का कहिये ।"

—**तुलसीदास**

'तब चमक जो लोचनों को मूँदता, तड़ित सी मुसकान में वह कौन है।"—**महादेवी वर्मा**

३. **अद्वैत मूलक विचार धारा**—रहस्यवाद में आत्मा तथा परमात्मा को अभिन्न स्वीकार किया गया है। अद्वैतवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति कबीर ने इस प्रकार की है—

"जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी
फूटा कुम्भ जल, जलहिं समाना, यह तत कथ्यौ गियानी।"

४. **अपरोक्ष अनुभूति**—परब्रह्म को कण-कण में व्याप्त देखा जाता है तथा विविध भावों की सृष्टि की जाती है। ऋणात्मक सम्बन्ध की समर्पणमूलक अनुभूति होती है। कबीर कहते हैं—

"मैं हूँ राम की बहुरिया।"

हिन्दी काव्य साहित्य में रहस्यवाद का विशेष महत्त्व है क्योंकि रहस्यवाद से रागात्मक चेतना विकसित हुई है।

प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. *छायावाद की प्रतिक्रिया रूप में उद्‌भव हुआ—*

(अ) प्रगतिवाद का। (ब) रहस्यवाद का।
(स) समाजवाद का।

उत्तर—(अ) प्रगतिवाद का।

प्रश्न २. *समाज तथा साहित्य का शाश्वत धर्म क्या है?*

(अ) परिवर्तनशीलता। (ब) मानवता।
(स) वैयक्तितता।

उत्तर—(अ) परिवर्तनशीलता।

प्रश्न ३. *प्रयोग का मुख्य उद्देश्य होता है—*

(अ) आलोकित होना। (ब) सत्यान्वेषण।
(स) परिवर्तनशीलता।

उत्तर—(ब) सत्यान्वेषण।

प्रश्न ४. *प्रयोग की प्रक्रिया—*

(अ) स्थायी होती है। (ब) कभी-कभी होती है।
(स) प्रत्येक काल में विद्यमान रहती है।

उत्तर—(स) प्रत्येक काल में विद्यमान रहती है।

प्रश्न ५. प्रयोग की प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं—
(अ) राजनीति में। (ब) व्यवहार में।
(स) जीवन और साहित्य में।
उत्तर—(स) जीवन और साहित्य में।

प्रश्न ६. प्रगतिवाद के प्रमुख कवि हैं—
(अ) शिवमंगलसिंह 'सुमन'। (ब) डॉ॰ रामकुमार वर्मा।
(स) महादेवी वर्मा।
उत्तर—(अ) शिवमंगलसिंह 'सुमन'।

प्रश्न ७. 'तारसप्तक' के पूर्व के कवियों में प्रयोगवाद के समीप कहा जा सकता है—
(अ) नागार्जुन को। (ब) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को।
(स) रांगेय राघव को।
उत्तर—(ब) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को।

प्रश्न ८. जनवादी कवियों में प्रमुख नाम है—
(अ) त्रिलोचन का। (ब) भगवती प्रसाद मिस्र का।
(स) मुक्तिबोध का।
उत्तर—(स) मुक्तिबोध का।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. प्रगतिवाद का क्या अभिप्राय है?

उत्तर—प्रगतिवाद साम्यवाद का पोषक तथा पूँजीवाद का शत्रु है। यह 'प्रगति' तथा 'वाद' के मेल से बना है।

प्रश्न २. लक्ष्मीकान्त वर्मा ने प्रगतिवाद के विषय में क्या कहा है?

उत्तर—लक्ष्मीकान्त वर्मा ने कहा है—"प्रगतिवाद" सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आन्दोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु-सत्य को उत्तर छायावाद काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थवाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी।"

प्रश्न ३. प्रगतिवाद किस प्रकार का साहित्य है?

उत्तर—प्रगतिवाद कोई साहित्यिक दृष्टिकोण या धारा नहीं है। यह लक्ष्यों की सम्पूर्ति के लिए लिखा गया विचारात्मक साहित्य है।

प्रश्न ४. प्रगतिवाद की दृष्टि किस ओर रही है?

उत्तर—प्रगतिवाद की दृष्टि समाज की ओर रही है।

प्रश्न ५. प्रगतिवादी कविता में किस प्रकार की तस्वीर सामने आयी?

उत्तर—प्रगतिवादी कविता में जन-जीवन की भीतरी और बाहरी दोनों ही तस्वीर उभरकर सामने आयी।

प्रश्न ६. प्रगतिवादी कविता की किसी उल्लेखनीय विशेषता को लिखिए।

उत्तर—प्रगतिवादी कविता की उल्लेखनीय विशेषता है—अन्तर्राष्ट्रीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति।

प्रश्न ७. प्रगतिवाद के प्रमुख पाँच कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रगतिवाद के प्रमुख पाँच कवियों के नाम हैं—१. केदार अग्रवाल। २. शिव मंगलसिंह 'सुमन'। ३. नागार्जुन। ४. मुक्तिबोध। ५. रांगेय राघव।

प्रश्न ८. प्रयोग का वास्तविक अर्थ क्या है?

उत्तर—प्रयोग का वास्तविक अर्थ है—किसी वस्तु की पूर्वमान्य प्रकृति का पुनर्ज्ञान प्राप्त करना।

प्रश्न ९. प्रयोग का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

उत्तर—प्रयोग का वास्तविक उद्देश्य है—सत्य का अन्वेषण तथा उससे पाये सत्य का ग्रहण करना।

प्रश्न १०. आधुनिक हिन्दी कविता का विकास किस का परिणाम है?

उत्तर—आधुनिक हिन्दी कविता का विकास प्रयोग-प्रक्रिया का परिणाम है।

प्रश्न ११. डॉ० धर्मवीर भारती ने प्रयोगवाद किसे माना है?

उत्तर—डॉ० धर्मवीर भारती—प्रयोगवादी कविता में भावना है, किन्तु हर भावना के आगे एक प्रश्न चिह्न लगा हुआ है—

प्रश्न १२. प्रयोगवादी कविता की एक विशेषता बताइए।

उत्तर—प्रयोगवादी कविता की एक विशेषता है—वैयक्तिकता की चरम सीमा जिसका कारण है—विरोधीकरण की प्रक्रिया।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. प्रगतिवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रगतिवाद का अर्थ—प्रगति का सामान्य अर्थ है—आगे बढ़ना। साहित्य के सन्दर्भ में प्रगति का अर्थ है—साहित्य का वह रूप जो जीवन को स्वस्थ एवम् हितकारी दिशा प्रदान करता है प्रगतिवाद कहलाता है। दूसरे शब्दो में यह कहा जा सकता है—

प्रगतिवाद वह साहित्य धारा है जो एक विशेष पद्धति से और विशेष दिशा में आगे बढ़ती है और उसी ओर जीवन को भी ले जाती है।

शिवदानसिंह चौहान प्रगतिवाद के विषय में कहते हैं—

"प्रगतिवाद साहित्य की धारा नहीं, साहित्य का मार्क्सवादी दृष्टिकोण है।जैसे रस सिद्धान्त साहित्य की धारा नहीं, साहित्य का प्राचीन अध्यात्मिक दृष्टिकोण है। अतः प्रगतिवाद को सौन्दर्यशास्त्र सम्बन्धी मार्क्सीय दृष्टिकोण का हिन्दी नामकरण समझना चाहिए।"

डॉ० नगेन्द्र ने बताया है—"प्रगतिवाद साम्यवाद का पोषक है और पूंजीवाद का शत्रु है। बल्कि यों कहना चाहिए कि प्रगतिवाद साम्यवाद की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति है।

प्रश्न २. प्रगतिवाद की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—प्रगतिवाद की विशेषताएँ—

१. **पूँजीवाद का विरोध**—साधारण जनता को पूँजीपतियों के हाथ की कठपुतली बनना प्रगतिवादी कवियों को अच्छा नहीं लगा। पूँजीपतियों पर व्यंग्य करते हुए निरालाजी लिखते हैं—

"अबे सुनबे ओ गुलाब।
भूल मत जो पाई खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।
पूँजीपतियों के प्रतिरोष व्यक्त करते हुए लिखा गया—
"मेरी कुटिया की आंगन की धूप को
कैद कर लिया
पास के तिमंजलें मकान ने।"

२. **मानवतावादी दृष्टिकोण**—नरेन्द्र शर्मा ने मानवता को महत्त्वं देते हुए लिखा—

"जाने कब तक घाव भरेंगे, इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे, सपने सबकी समता के?"

३. **सामाजिक रूढ़ियों का विरोध**—प्रगतिवादी कवियों ने सड़ी गली मान्यताओं को ललकारते हुए समाज के दलित वर्ग को क्रान्ति के लिए प्रोत्साहित किया। लिखा—

"आज तक इतिहास में जो भी पली हो।
रूढ़ियों के वृक्ष की जड़ खोखली हो।"

४. **छन्द तथा अलंकार**—भावों की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की सुविधा के लिए छन्दों का बन्धन स्वीकार नहीं किया गया। तुकान्त तथा अतुकान्त दोनों प्रकार की छन्द रचना हुई। अलंकारों पर भी विशेष ध्यान नहीं दिया गया।

५. **भाषा**—प्रगतिवादी कविताओं में भाषा को जन भाषा के अधिक निकट लाया गया। उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का स्वतन्त्रता से प्रयोग होने लगा।

निरालाजी, पन्त, दिनकर, नरेन्द्र शर्मा, डॉ० रामविलास शर्मा आदि नाम प्रगतिवादी कवियों की श्रेणी में प्रमुख हैं।

प्रश्न ३. प्रयोगवाद का अर्थ समझाइए और प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रयोगवाद हिन्दी काव्य की नवीनतम प्रवृत्ति है जिसका जन्म प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ है।

अज्ञेयजी प्रयोगवाद के सम्बन्ध में लिखते हैं—

"प्रयोगशील कविता में नये सत्यों या नई यथार्थताओं का जीवित बोध भी है। इन सत्यों के साथ नये रागात्मक सम्बन्ध भी हैं और उनको पाठक या सहृदय तक पहुँचाने या साधारणीकरण करने की शक्ति है।"

लक्ष्मीकान्त वर्मा ने कहा है—

"प्रयोगवाद ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने की बौद्धिक जागरूकता है।"

प्रयोगवादी प्रमुख कवि—अंज्ञेयजी, गिरिजाकुमार माथुर, डॉ० धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, प्रभाकर माचवे, भवानीप्रसाद मिश्र, नेमीचन्द जैन, गजानन मुक्तिबोध, भारत भूषण अग्रवाल, केदारनाथ, सूर्यप्रताप, शमशेर बहादुर, रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ० जगदीश गुप्त आदि।

प्रश्न ४. प्रयोगवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं। उन्होंने सात नये कवियों की कविताओं का एक संग्रह तार-सप्तक के नाम से प्रकाशित कराया। सप्तकों की इस प्रवृत्ति को ही प्रयोगवाद के नाम से जाना गया।

प्रमुख विशेषताएँ—

(१) **रूढ़ियों के प्रति विद्रोह**—प्रयोगवाद सभी रूढ़ियों के विरुद्ध खुला विद्रोह है। यों तो छायावाद ने भी स्वयं को क्रान्ति-दूत कहकर अपने नयेपन की धाक जमायी थी; तथापि वह थोड़े-बहुत अंशों में परम्परा से जुड़ा रहा। यदि कहें कि छायावाद निकट अतीत को त्यागकर अति प्राचीन का ग्रहण था तो अतिश्योक्ति न होगी। प्रयोगवादी ने 'नयेपन' को अधिक नये रूप में स्वीकार किया। उसने अपनी विषय-वस्तु को शास्त्रों या प्राचीन ग्रन्थों में न खोजकर अपने ही जगत् से चुना। इसी प्रकार प्रयोगवादी कवि ने प्राचीनकाव्य रूढ़ियों (रस, भाव, अलंकार, छन्द आदि) को भी धत्ता बतायी। उसके उपमान और बिम्ब भी नितान्त अपने थे। इस नवीनता के आग्रह ने कहीं-कहीं प्रयोगवादी कविता को दुरूह भी बना दिया।

(२) **अनास्था का स्वर**— प्रयोगवादी कवि और उसका काव्य ऐसे युग की उपज है जिसमें आस्था का स्वर निरन्तर गिर रहा है। आज के कवि की आस्था न ईश्वर के प्रति है और न किसी धर्म शास्त्र के प्रति । वह धीरे-धीरे मनुष्य के प्रति भी अपना विश्वास खोता

जा रहा है। जब कवि संसार की अव्यवस्था के प्रति रोष व्यक्त करता है तो भगवान को भी अदालत के कटघरे में खड़ा कर देता है।

(३) **व्यक्तिवाद**—व्यक्तिवाद आधुनिक काव्य की विशेषता है। प्राचीन कवियों की लेखनी ईश्वर अथवा राजाओं के गुण-गान में व्यस्त रही। छायावादी कवि को रूमानी भावनाओं के चित्रण से ही फुर्सत नहीं मिली। सामान्य जन की ओर प्रगतिवाद का ध्यान गया। किन्तु प्रगतिवादी कवियों ने जन-समस्याओं को समाज की दृष्टि से देखा, व्यक्ति की दृष्टि से नहीं। उन्होंने एक वर्ग को ही अपनी सहानुभूति दी। इस प्रकार व्यक्ति को सबसे पहले प्रयोगवाद ने महत्त्व दिया। इन कवियों का मत है कि व्यक्ति पहले है और समाज की इकाई बाद में। अतः समाज में किसी व्यक्ति के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता।

मै रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत × ×   **(धर्मवीर भारती)**

(४) **यथार्थ का महत्त्व**—प्रयोगवादी कवि सही अर्थों में यथार्थवादी है। वह दिन को दिन कहने में विश्वास रखती है। अपने कड़वे कथ्य को वह शिष्टता की चाशनी लगाकर प्रस्तुत नहीं करता। यही कारण है कि कहीं-कहीं प्रयोगवादी कविता अश्लील सी लगती है।

(५) **बुद्धि-भाव**—प्रयोग-वादी कवि भावनात्मक प्राणी नहीं है। वह आज के विज्ञान-प्रधान युग में भावुकता को बोझ मानता है। इसीलिए आज की कविता तर्क-प्रधान होती जा रही है। अब उसे समझने के लिए भाव ग्रहण के सामर्थ्य की आवश्यकता नहीं। सूक्ष्म विवेचना-शक्ति होनी चाहिए।

(६) **बिम्ब विधान**—प्रयोगवादी कवि सभी काव्य-रूढ़ियों को त्याग चुका है। आज वह कविता के लिए बिम्ब-विधान आवश्यक समझता है। आधुनिक कविता में कहीं-कहीं सुन्दर शब्द चित्र देखने को मिलते हैं।

यह प्रयोगवाद ही है जिसने मानव-मन की बात को सीधे-सादे ढंग से कहने का मार्ग खोजा। बिना किसी बनावट के स्वाभाविक रूप में नवीनता के साथ अपने भावों को व्यक्त किया।

□

आधुनिक काव्य की प्रमुख प्रवृति

नयी कविता

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. आधुनिक कविता में सबसे अधिक मान प्राप्त हुआ है–
(अ) नयी कविता को। (ब) रहस्यवादी कविता को।
(स) भक्तिकालीन कविता को। **उत्तर**—(अ) नयी कविता को।

प्रश्न २. यथार्थ की ठोस धरती पर लाने का कार्य किया है–
(अ) रीतिकालीन कविता ने। (ब) प्रसाद कालीन कविता ने।
(स) नयी कविता ने। **उत्तर**—(स) नयी कविता में।

प्रश्न ३. नयी कविता का बीज निहित है–
(अ) छायावाद में (ब) प्रयोगवाद में
(स) रहस्यवाद में। **उत्तर**—(ब) प्रयोगवाद में।

प्रश्न ४. नयी कविता का प्रारम्भिक वर्ष है–
(अ) सन् १९४७ (ब) सन् १९५०
(स) सन् १९५१ **उत्तर**—(स) सन् १९५१।

प्रश्न ५. छायावाद के पश्चात् लिखी गई समस्त कविता को 'नयी कविता' के अन्तर्गत समझने वाले हैं–
(अ) गिरिजाकुमार माथुर। (ब) रामकुमार वर्मा।
(स) महादेवी वर्मा। **उत्तर**—(अ) गिरिजा कुमार माथुर।

सउत्तर अतिलघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. नयी कविता के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
उत्तर—नयी कविता के चार प्रमुख कवियों के नाम हैं—१. जगदीश गुप्त। २. डॉ० धर्मवीर भारती। ३. नरेश मेहता। ४. अज्ञेयजी।

प्रश्न २. नयी कविता की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
उत्तर—नयी कविता की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं—१. अति यथार्थवाद। २. बौद्धिकता की अधिकता। ३. नवीन-विम्ब तथा प्रतीक।

प्रश्न ३. नयी कविता के सहयोग से क्या प्राप्त हुआ है?
उत्तर—कवियों ने भी वह सब संकट सहन किये हैं जिन्हें आज व्यक्ति भोग रहा है। भोगने की इस प्रक्रिया को वह नयी कविता के सहयोग से प्राप्त करके नयी कविता दे सका है।

प्रश्न ४. व्यक्तित्व के प्रति आस्थावान चार कवियों के नाम लिखिए।
उत्तर—व्यक्तित्व के प्रति आस्थावान चार कवियों के नाम हैं—(१) नरेश मेहता। (२) गिरिज़ा कुमार। (३) धर्मवीर भारती। (४) अज्ञेयजी।

प्रश्न ५. नगरीय परिवेश के प्रमुख चार नयी कविता के कवियों के नाम लिखिए।
उत्तर—नगरीय परिवेश के चार प्रमुख कवि हैं—(१) अज्ञेय जी, (२) श्रीकान्त वर्मा, (३) कुँवरनारायण। (४) धर्मवीर भारती।,

प्रश्न ६. ऐसे कवियों के नाम लिखिए जिनकी कविता में सामाजिक आग्रह के समक्ष अहं विसर्जित हो गया है।

उत्तर—ऐसे कवियों के नाम जिनकी कविता में सामाजिक आग्रह के समक्ष अहं विसर्जित हो गया है—(१) भारत भूषण अग्रवाल। (२) रघुवीर सहाय। (३) डॉ० धर्मवीर भारती। (४) अज्ञेयजी।

प्रश्न ७. नयी कविता की भाषा के सम्बन्ध में क्या कहा जा सकता है?

उत्तर—नयी कविता की भाषा के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि कविता में प्रयुक्त शब्द जन जीवन के निकट हैं किन्तु जटिल अनुभूतियों के हाथ पड़कर अपना रूप परिवर्तन कर लेते हैं।

प्रश्न ८. नये कवियों ने बिम्ब-विधान के क्षेत्र में किस प्रकार कार्य किया है?

उत्तर—नये कवियों ने बिम्ब विधान के क्षेत्र में सर्वाधिक कौशल से कार्य किया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. नयी कविता के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर—प्रयोगवाद का विकसित रूप ही नयी कविता है जिसका प्रारम्भ सन् १९५१ के पश्चात् माना जाता है।

'दूसरे सप्तक' में प्रयोगवादी कविता में पनपने वाली प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। नयी कविता के प्रयोगवाद का स्वस्थ-सन्तुलित विकास यहाँ से ही माना जा सकता है। गिरिजाकुमार माथुर के विचार से छायावाद के पश्चात् लिखी गई समस्त कविता को नयी कविता माना जा सकता है।

वास्तविकता यह है कि छायावाद के पश्चात् के काव्य को प्रयोगवाद का छद्म नाम कहा जा सकता है क्योंकि नयी कविता तो एक स्वस्थ जीवन दृष्टि है। नयी कविता तो एक ऐसी लता है जिसको काट-छाँटकर सजाया गया है। नयी कविता तो ऐसा व्यवस्थित रूप है जिसको यथार्थ द्वारा हरा-भरा बनाया गया है।

नयी कविता के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यह तो प्रयोगवाद से आगे की स्वस्थ भूमिका पर खड़ी है। इसमें सामाजिकता, वस्तु तथा शिल्प की नवीनता है। एक प्रभाव है। जीवन की विविध परिस्थितियों का रूप है। वैयक्तिकता होते हुए भी अस्तित्व के प्रति आस्था है।

प्रश्न २. नयी कविता की सामान्य विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

उत्तर—अज्ञेयजी के विचार से प्रयोगवाद का विकसित रूप ही नयी कविता है जिसकी सामान्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(१) **घोर वैयक्तिक काव्य**—इस काव्यधारा के कवियों ने अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों को ही रचनाओं में व्यक्त किया है। जन सामान्य उनकी भावनाओं को समझे या न समझे इसकी उन्हें चिन्ता नहीं।

(२) **भाषा का स्वच्छन्द प्रयोग**—जिस प्रकार ये कवि भावों के क्षेत्र में वैयक्तिक हैं इसी प्रकार भाषा का भी घोर वैयक्तिक प्रयोग करते हैं। शब्दों के परम्परागत अर्थों की चिन्ता न करके उन्हें अपने ही अर्थ में प्रयोग करते हैं। इससे इनकी रचनाएँ अस्पष्ट भी हो गयी हैं।

(३) **बौद्धिकता से बोझिल**—नयी कविता में भाव की अपेक्षा बौद्धिकता की प्रधानता है। इसलिए वह मानसिक व्यायाम की वस्तु है उसमें सरसता नहीं है।

(४) **अति यथार्थ अभिव्यक्ति**—'नयी कविता' के कवि घोर यथार्थवादी हैं। वे यथार्थ अभिव्यक्ति के नाम पर जीवन के निकृष्टतम रूप को भी तथावत प्रस्तुत करने में विश्वास करते हैं।

(५) **नवीन प्रतीकों एवं उपमानों का प्रयोग**—नयी कविता के प्रतीक तथा उपमान परम्परागत कविता से सर्वथा भिन्न हैं।

(६) **भदेस प्रयोग**—नयी कविता अशिष्ट और असामाजिक स्थितियों को प्रस्तुत करने में संकोच नहीं करती। भाषा, भाव और विषय सभी में भदेसपन इस कविता की विशेषता है। यह भदेसपन अश्लीलता की सीमा तक पहुँच जाता है।

(७) **गद्यात्मक अभिव्यक्ति**—'नयी कविता' के कवि हर परम्परा को तोड़ने की कसम खाकर चले हैं अतः उन्होंने कविता के पद्यात्मक स्वरूप का भी तिरस्कार किया है। 'नयी कविता' और गद्य में कहीं-कहीं बिल्कुल अन्तर नहीं रह जाता।

(८) **कुण्ठा, त्रास और निराशा से पूर्ण**—'नयी कविता' में मानव मन में व्याप्त तनाव, कुण्ठा, आत्महीनता, संत्रास और निराशा को अत्यधिक स्थान मिला है।

(९) **व्यंग्य प्रधान अभिव्यक्ति**—सामाजिक विषमताओं एवं रूढ़ियों पर अति कटु व्यंग्य करना भी नयी कविता की विशेषता है।

(१०) **यौन भावनाओं की मुक्त अभिव्यक्ति**—इन कवियों ने मन में दबी यौन भावनाओं को खुलकर रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

(११) **छन्द का बहिष्कार**—नयी कविता का छन्दों के बन्धन से भी विरोध है। नये कवि छन्द मुक्त रचनाएँ ही कर रहे हैं।

(१२) **रस, अलंकार से विरक्ति**—रस और अलंकरण को रूढ़िवादिता मानते हुए 'नयी कविता' के कवियों ने इनका अपनी रचनाओं से पूर्ण बहिष्कार किया है।

कहा जा सकता है कि 'नयी कविता' अभी प्रयोग की ही स्थिति से गुजर रही है। उसकी कोई निश्चित दिशा या मान्यताएँ नहीं है। इतना अवश्य मानना होगा कि 'नयी कविता' ने हिन्दी काव्य को अभिव्यक्ति की विचित्रता और नवीनता अवश्य प्रदान की है। 'नयी कविता' के कवियों में अज्ञेय, मुक्तिबोध, भवानीप्रसाद मिश्र, गिरजाकुमार माथुर, नलिन विलोचन शर्मा रामविलास शर्मा, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। □

हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ

हिन्दी उपन्यास

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. उपन्यास देन है—

(अ) भारतेन्दु युग की। (ब) द्विवेदी युग की।
(स) शुक्ल युग की। (द) अपेक्षाकृत आधुनिक युग की।

उत्तर—(द) अपेक्षाकृत आधुनिक युग की।

प्रश्न २. संस्कृत में वृहत् कथाओं के लिए किस शब्द का प्रयोग हुआ है—

(अ) कहानी का। (ब) उपन्यास का।
(स) नावेल का। (द) आख्यायिका का।

उत्तर—(द) आख्यायिका का।

प्रश्न ३. उपन्यास सबसे अधिक—

(अ) लचीला और बन्धनहीन है। (ब) आदर्शवादी है।
(स) यथार्थवादी है। (द) बृहद् कथा है।

उत्तर—(अ) लचीला और बन्धनहीन है।

प्रश्न ४. हिन्दी उपन्यासों का प्रारम्भ माना जा सकता है—

(अ) प्रेमचन्द से। (ब) भारतेन्दु से।
(स) रामचन्द्र शुक्ल से। (द) महावीर प्रसाद से।

उत्तर—(ब) भारतेन्दु युग से।

प्रश्न ५. हिन्दी साहित्य में उपन्यास का प्रारम्भ माना जाता है—

(अ) कल्पना से। (ब) अनुवादों से।
(स) प्रकाशन से। (द) उपदेशों से।

उत्तर—(ब) अनुवादों से।

प्रश्न ६. पहले पहल उपन्यासों के अनुवाद प्रकाशित हुए थे—

(अ) सन् १७८० के आसपास। (ब) सन् १७९५ के आसपास।
(स) सन् १८५० से आसपास। (द) सन् १८५७ के आसपास।

उत्तर—(स) सन् १८५० के आसपास।

प्रश्न ७. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है—

(अ) प्यूमा स्वटन। (ब) धूर्त रसिक लाल।
(स) आदर्श हिन्दु। (द) परीक्षा गुरु।

उत्तर—(द) परीक्षा गुरु।

प्रश्न ८. 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास के लेखक का नाम है—

(अ) देवकीनन्दन खत्री। (ब) किशोरीलाल गोस्वामी।
(स) बालकृष्ण भट्ट। (द) लज्जाराम मेहता।

उत्तर—(अ) देवकीनन्दन खत्री।

प्रश्न ९. गोपालराम गहमरी के उपन्यास हैं—

(अ) सामाजिक। (ब) जासूसी।
(स) राजनीतिक। (द) आर्थिक।

उत्तर—(ब) जासूसी।

प्रश्न १०. द्विवेदी युग के उपन्यासों में अधिकता है—

(अ) राजनीति की। (ब) आदर्श की।
(स) सामाजिक चेतना की। (द) जासूसी की।

उत्तर—(स) सामाजिक चेतना की।

प्रश्न ११. हिन्दी उपन्यास के विकास का तृतीय युग प्रारम्भ होता है—

(अ) पं० बालकृष्ण भट्ट से। (ब) प्रतापनारायण मिश्र से।
(स) जयशंकर प्रसाद से। (द) प्रेमचन्द से।

उत्तर—(द) प्रेमचन्द से।

प्रश्न १२. हिन्दी उपन्यास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण सर्जक हैं—

(अ) प्रेमचन्द (ब) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।
(स) विनोदशंकर व्यास। (द) जी० पी० श्रीवास्तव।

उत्तर—(अ) प्रेमचन्द।

प्रश्न १३. औपन्यासिक सृजन में कवित्व का रंग किस में है—

(अ) रूपनारायण पाण्डेय में। (ब) जयशंकर प्रसाद में।
(स) वृन्दावन लाल वर्मा में। (द) भगवती चरण वर्मा में।

उत्तर—(ब) जयशंकर प्रसाद में।

प्रश्न १४. राजनीतिक विचारधारा प्रधान उपन्यासकार है—

(अ) चतुरसेन शास्त्री। (ब) उषादेवी मिश्रा।
(स) यशपाल। (द) उदयशंकर भट्ट।

उत्तर—(स) यशपाल

प्रश्न १५. ऐतिहासिक तथा सामाजिक विषय के उपन्यासकार हैं—

(अ) जैनेन्द्रकुमार। (ब) अज्ञेय।
(स) भगवतीचरण वर्मा। (द) वृन्दावनलाल वर्मा।

उत्तर—(द) वृन्दावनलाल वर्मा

प्रश्न १६. उद्देश्यहीनता तथा मूल्यों के विघटन की चर्चा करने वाले उपन्यासकार हैं—

(अ) प्रेमचन्द। (ब) वृन्दावन लाल वर्मा।
(स) भगवतीचरण वर्मा। (द) फणीश्वर नाथ रेणु।

उत्तर—(द) फणीश्वर नाथ रेणु

लघूत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. 'उपन्यास' का क्या अर्थ है? अथवा 'उपन्यास' किसे कहते हैं?

उत्तर—साहित्य की वह स्वतन्त्र विधा जिसमें मानव जीवन के विविध रहस्यों का रोचक स्वाभाविक एवम् सजीव ढंग से उद्‌घाटन किया जाता है, उपन्यास कहलाती है।

प्रश्न २. प्रेमचन्द को कथा-सम्राट क्यों कहा जाता है?

उत्तर—प्रेमचन्द ने हिन्दी गद्य साहित्य को कहानियों तथा उपन्यासों की एक विशाल अनुप भेंट दी है। उनकी अनेक रचनाओं का विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। अतः प्रेमच को कथा-सम्राट कहा जाता है।

प्रश्न ३. प्रेमचन्द युग के प्रमुख उपन्यासकारों के नाम लिखिए—

उत्तर—प्रेमचन्द युग के प्रमुख उपन्यासकारों के नाम हैं—

१. जयशंकर प्रसाद। २. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'। ३. पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र'। भगवतीप्रसाद बाजपेयी। ५. रूपनारायण पाण्डेय। ६. विनोदशंकर व्यास आदि।

प्रश्न ४. पाँच ऐतिहासिक उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर—पाँच ऐतिहासिक उपन्यासों के नाम हैं—१. मृगनयनी।२. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई। गढ़कुण्डार। ४. महारानी दुर्गावती। ५. माधवजी सिन्धिया।

प्रश्न ५. जीवन की गुत्थी सुलझाने वाले चार उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

अथवा

यथार्थ और आदर्श का समन्वय प्रस्तुत करने वाले चार उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—यथार्थ और आदर्श का समन्वय प्रस्तुत करने वाले चार उपन्यासकार हैं— भगवतीचरण वर्मा। २. उपेन्द्रनाथ अश्क। ३. यशपाल। ४. फणीश्वरनाथ रेणु।

प्रश्न ६. प्रेमचन्द के चार उपन्यासों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रेमचन्द के चार उपन्यासों के नाम हैं—१. कर्म भूमि। २. सेवा सदन। गोदान। ४. गबन।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास में प्रेमचन्द ने क्या योग दिया?

उत्तर—हिन्दी उपन्यास साहित्य को विकास की दिशा प्रदान करने में प्रेमचन्द का अतुलनीय ग रहा है। हिन्दी उपन्यास जगत की वह ऐसी विभूति हैं जिनके योगदान की जितनी प्रशंसा जाय उतनी ही कम है।

उपन्यास लेखन-कार्य भारतेन्दुयुग में ही हो चुका था किन्तु उस युग के उपन्यासों का श्य विशुद्ध मनोरंजन था। कौतुक प्रधान इन उपन्यासों से किसी प्रकार की भी शिक्षा प्राप्त ीं की जा सकती थी। कोई उचित मार्ग नहीं ग्रहण किया जा सकता था।

प्रेमचन्द ने उपन्यासों का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन से जोड़ने का शुभ कार्य किया। न्यासों के माध्यम से सामाजिक जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण करके उनके समाधान भी सही मार्ग प्रस्तुत किया।

कृषकों के शोषण, अपमानित समाज तथा सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने का स्वर चन्द ने अपने उपन्यासों में दिया। दुःखियों के दर्द और असहाय, अबला नारी के दुःख दर्द उपन्यासों का विषय बनाकर समाज में चेतना लाने का प्रयास किया।

प्रेमचन्द ने आदर्श तथा यथार्थ का सुन्दर समन्वय करके अपने उपन्यासों को अत्यन्त वी बनाने का प्रयास किया। उपन्यास को मनोरंजन के साथ विविध क्षेत्रों का सम्पूर्ण ग्रन्थ कर सर्वसुलभ तथा सर्वप्रिय बनाने में योग दिया इसीलिए आलोचक प्रेमचन्द को उपन्यास ट कहते हैं।

प्रेमचन्द ने मौलिक उपन्यासों को देकर उपन्यास जगत में नवीन चेतना को जन्म दिया। सदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, प्रतिज्ञा, गबन, निर्मला, गोदान, कायाकल्प आदि उनकी सिद्ध अमर रचनाएँ हैं।

प्रश्न २. उपन्यास-साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—कथा साहित्य का यह बड़ा लोकप्रिय अंग है। इसमें जीवन का विस्तार से प्रस्तुतीकरण होता है। उपन्यासकार एक विशाल चित्रफलक का प्रयोग करता है। वह किसी जीवन-आदर्श, किसी प्रमुख समस्या, किसी ऐतिहासिक घटनाक्रम अथवा किसी महापुरुष की जीवन-यात्रा को कलात्मक रूप से चित्रित किया करता है। कहानी की भाँति उपन्यास में लेखक को सीमित क्षेत्र में नहीं बँधना होता है। वह जीवन को अनेकानेक पहलुओं से स्पर्श करता है।

हिन्दी में उपन्यासों का आरम्भ भी भारतेन्दु युग में हो चुका था। परन्तु ये उपन्यास मनोरंजन और कौतुक प्रधान थे। कलात्मकता का अभाव था। उपन्यास का चरम विकास तो प्रसादजी और प्रेमचन्दजी के साथ हुआ। प्रेमचन्द जी ने तो हिन्दी गद्य की इस विधा को विश्व साहित्य में गौरवपूर्ण स्थान दिलाया और उपन्यास सम्राट की पद्वी से आपको हिन्दी संसार ने विभूषित किया। तब से यह विधा निरन्तर विकासमान है। जीवन की गुत्थियों को सुलझाने वाले, मनुष्य का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन प्रस्तुत करने वाले, यथार्थ और कला का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत करने वाले उपन्यासों से आज हिन्दी साहित्य समृद्ध है।

इस विधा को समृद्ध करने वाले प्रमुख नाम इस प्रकार हैं—आचार्य चतुरसेन, विश्वम्भरनाथ कौशिक, जैनेन्द्र, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, यशपाल, रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, शिवानी आदि।

हिन्दी उपन्यास विकास युग

१. प्रथम चरण : भारतेन्दु युग—

'लाला श्रीनिवास दास तथा श्रद्धाराम फिल्लौरी के उपन्यासों को प्रथम मौलिक उपन्यासकार माना जाता है। बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' भारतेन्दु-युग की ही देन है।

किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों ने भारतेन्दु युग को विकास तथा समृद्धि की दिशा प्रदान की। गोपालराम गहमरी तथा देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों ने भी इस विधा को उन्नत किया। बंगला उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद हुये। भारतेन्दु-युग उपन्यास लेखन का तो प्रारम्भिक युग था ही इसे अनुवादित उपन्यासों का भी युग कहा जा सकता है।

२. द्वितीय चरण : द्विवेदी युग—

भारतेन्दु-युग की अपेक्षा द्विवेदी-युग, उपन्यास साहित्य-जगत की अधिक समृद्धि का युग कहा जा सकता है। इस युग में अद्भुत घटना प्रधान उपन्यास लिखे गये विट्ठलदास नागर का 'किस्मत का खेल' तथा निहालचन्द वर्मा का 'मिस जौहरा' घटना प्रधान उपन्यासों के सुन्दर उदाहरण है।

इस युग में ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की प्रवृत्ति भी रही। किशोरीलाल गोस्वामी का 'सुल्ताना रजियाबेगम' तथा गंगाप्रसाद गुप्त का 'नूरजहाँ' प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है।

३. तृतीय चरण : प्रेमचन्द युग—

प्रेमचन्द ने उर्दू के पश्चात् हिन्दी में उपन्यास लेखन कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने अपनी गतिशील लेखनी से आदर्श तथा यथार्थ से पूर्ण निम्नलिखित अमर उपन्यासों की रचना की—कर्मभूमि, रंगभूमि, प्रेमाश्रम, सेवासदन, कायाकल्प, निर्मला, गबन, प्रतिज्ञा, गोदान आदि।

जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल' तथा 'तितली' विशम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' के 'भिखारिनी', 'माँ' तथा 'संघर्ष' ने उपन्यास जगत को महत्त्वपूर्ण समृद्धि प्रदान की। पाण्डेय बैचेन शर्मा 'उग्र', भगवती प्रसाद बाजपेयी, नरोत्तम व्यास, रूपनारायण पाण्डेय, गोविन्दबल्लभ पन्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' आदि ने विविध समस्याओं से पूर्ण उपन्यासों की रचना की।

४. चतुर्थ चरण : प्रेमचन्दोत्तर युग–

प्रेमचन्दोत्तर युग में ऐतिहासिक राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना हुई। डॉ॰ वृन्दावनलाल वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, सच्चिदानन्द "अज्ञेय" आदि इस युग के प्रमुख उपन्यासकार हैं।

इस युग के उपन्यासों में कथानक का विस्तार कम है। पुरातन परम्पराओं के प्रति विद्रोह की प्रबल भावना है। भौतिकवादी दृष्टिकोण की विशेषता है तथा सामाजिक यथार्थ है।

५. पंचम चरण : स्वातंत्र्योत्तर युग–

भारत की स्वाधीनता के साथ ही देश की स्थितियों में भारी परिवर्तन हुआ। परिवर्तित परिस्थितियों ने देश की सामाजिक तथा राजनीतिक दशा के साथ उपन्यासकारों को भी दिशाबोध दिया और यथार्थवादी तथा आंचलिकता से पूर्ण उपन्यास लिखे जाने लगे। इलाचन्द्र जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, अमृतलाल नागर, रांगेय राघव प्रभाकर माचवे, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, विष्णु प्रभाकर, मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, आदि के नाम स्वातंत्र्योत्तर युग के उपन्यासकारों में प्रमुख हैं।

६. षष्ठचरण–

यथार्थ से प्रभावित होकर आम उपन्यासकार सूक्ष्म से सूक्ष्म मानव के चिन्तन का चित्रण करने में लगा है। वह व्यक्ति के यथार्थ को प्रस्तुत करने में सक्रिय है। डॉ॰ देवराज, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रमेश बक्षी, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, आदि इसी प्रकार के उपन्यासकार हैं।

कथा, विचारधारा, युगचेतना, आधुनिक बोध आदि आधुनिक उपन्यासों का उद्देश्य बन गया है और हिन्दी उपन्यास एक नवीन मोड़ पर आ खड़ा हुआ है।

हिन्दी कहानी

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. *कहानी एक रूप है–*

(अ) भावाभिव्यक्ति का। (ब) कथा का।
(स) अकुलाहट का।

उत्तर–(अ) भावाभिव्यक्ति का।

प्रश्न २. *कथा कहने की प्रवृत्ति–*

(अ) सबकी है। (ब) प्राचीन है।
(स) आधुनिक है।

उत्तर–(ब) प्राचीन है।

प्रश्न ३. *कहानी उपन्यास की–*

(अ) समकक्ष है। (ब) जन्मदात्री है।
(स) अनुजा है।

उत्तर–(स) अनुजा है।

प्रश्न ४. *कहानी को कहा जा सकता है–*

(अ) विकासशील। (ब) स्थायी।
(स) अपरिवर्तनीय।

उत्तर–(अ) विकासशील।

प्रश्न ५. *कहानी की पहली और महत्त्वपूर्ण विशेषता है–*

(अ) आकार का विस्तार। (ब) आकार की लघुता।
(स) श्रेष्ठ अभिव्यक्ति।

उत्तर–(ब) आकार की लघुता।

प्रश्न ६. प्राचीन कहानी का उद्देश्य होता था—
(अ) समस्या-सुलझाव। (ब) सत्य का उद्घाटन।
(स) मनोरंजन। **उत्तर**—(स) मनोरंजन।

प्रश्न ७. आधुनिक कहानी का साहित्य से—
(अ) थोड़ा सम्बन्ध है। (ब) घनिष्ठ सम्बन्ध है।
(स) कोई संम्बन्ध नहीं है। **उत्तर**—(ब) घनिष्ठ सम्बन्ध है।

प्रश्न ८. प्राचीन कहानियों में भावना की प्रधानता का स्थान—
(अ) अधिक था। (ब) कम था।
(स) बिल्कुल न था। **उत्तर**—(अ) अधिक था।

प्रश्न ९. आधुनिक कहानी में विशेष महत्त्व है—
(अ) आदर्शवाद का। (ब) बौद्धिकता का।
(स) पात्र विधान का। **उत्तर**—(ब) बौद्धिकता का।

प्रश्न १०. प्रेमाख्यानों का उत्कर्ष हुआ है—
(अ) प्रेमचन्द युग में। (ब) आधुनिक काल में।
(स) चारण काल में। **उत्तर**—(स) चारण काल में।

प्रश्न ११. 'रानी केतकी की कहानी' के कथाकार हैं—
(अ) इंशाअल्ला खाँ। (ब) सदासुख लाल।
(द) किशोरीलाल गोस्वामी। **उत्तर**—(अ) इंशाअल्ला खाँ।

प्रश्न १२. 'राजा भोज का सपना' किसकी कहानी है—
(अ) राजा लक्ष्मणसिंह। (ब) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द।
(स) गिरिजा कुमार घोष। **उत्तर**—(ब) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द।

प्रश्न १३. हिन्दी कथा साहित्य को स्वस्थ विकास की दिशा देने वाले हैं—
(अ) देवकीनन्दन खत्री। (ब) भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द्र।
(स) वृन्दावनलाल वर्मा। **उत्तर**—(ब) वृन्दावनलाल वर्मा।

प्रश्न १४. लघु कहानियों में प्राण प्रतिष्ठा करने वाले हैं—
(अ) बालकृष्ण भट्ट। (ब) जे० पी० श्रीवास्तव।
(स) जयशंकर प्रसाद। **उत्तर**—(स) जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न १५. गुलेरीजी की अमर कहानी का नाम है—
(अ) उसने कहा था। (ब) बुद्धू का कांटा।
(स) सुखमय जीवन। **उत्तर**—(अ) उसने कहा था।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. कहानी का क्या अर्थ है?

उत्तर—कहानी, कथा साहित्य का ऐसा लघु रूप है जिसमें मानव जीवन की ऐसी झलक होती है जिसका आस्वादन कर पाठक का मन स्वयं कहानी बन जाता है।

प्रश्न २. नई कहानी से क्या अभिप्राय है?

उत्तर—नई कहानी का अभिप्राय है नवीन भावबोध, नवीन भाषा-शैली, मानसिक भटकाव तथा कुण्ठा का यथार्थ चित्रण।

प्रश्न ३. भारतेन्दु से पूर्व दो साहित्य प्रसिद्ध राजाओं के नाम उनकी रचना के साथ लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु से पूर्व दो साहित्य प्रसिद्ध राजाओं के नाम हैं—१. राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द का राजा भोज का सपना। २. राजा लक्ष्मणसिंह का शकुन्तला नाटक।

प्रश्न ४. हिन्दी के सुप्रसिद्ध ८ कहानीकारों के नाम बताइये।

उत्तर—हिन्दी के सुप्रसिद्ध ८ कहानीकारों के नाम—१. प्रेमचन्द, २. जयशंकर प्रसाद, ३. अमृतराय, ४. बेचैन शर्मा 'उग्र', ५. भगवती प्रसाद बाजपेयी, ६. जैनेन्द्र, ७. इलाचन्द्र जोशी, ८. भगवतीचरण वर्मा।

प्रश्न ५. चार नये कहानीकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—चार नये कहानीकारों के नाम हैं—१. निर्मल वर्मा, २. नरेश मेहता, ३. राजेन्द्र यादव, ४. कमलेश्वर।

प्रश्न ६. चार आधुनिक कहानी लेखकों के नाम लिखिए।

उत्तर—चार आधुनिक कहानी लेखकों के नाम हैं—१. कृष्णा सोवती, २. मन्नू भण्डारी, ३. रजनी पाणिकर, ४. चन्द्रकिरण सोनरिक्सा।

प्रश्न ७. हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी के लेखक का नाम उनकी कहानी के नाम सहित लिखिए।

उत्तर—हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी के लेखक का नाम है—किशोरीलाल गोस्वामी तथा कहानी का नाम है—इन्दुमती।

प्रश्न ८. भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् के चार प्रमुख कथाकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् के चार प्रमुख कथाकारों के नाम हैं—

१. धर्मवीर भारती २. निर्मल वर्मा ३. कमलेश्वर ४. भीष्म साहनी।

प्रश्न ९. नयी कहानी की एक विशेषता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—नयी कहानी की एक विशेषता है—सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता तथा प्रेषणीयता आदि गुणों का विकास।

प्रश्न १०. जैनेन्द्र की कहानियों की क्या विशेषता है?

उत्तर—जैनेन्द्र की कहानियों की विशेषता है—युग की नवीन सम्भावनाओं और भावनाओं का दर्शन।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. हिन्दी कहानी के विकास का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—कहानी व्यक्ति के भावों की अभिव्यक्ति का रोचक, आकर्षक एवम् प्रभावी रूप है इसका अस्तित्व अत्यन्त प्राचीन है। आकार की लघुता उसका महत्त्वपूर्ण गुण है। कहानी के विकास को इस प्रकार विभक्त किया जा सकता है—

प्रथम चरण—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के आगमन के साथ ही हिन्दी कहानी का विकास आरम्भ हुआ। आधुनिक कहानी के विकास के पूर्व इंशा अल्लाखाँ की 'रानी केतकी की कहानी' तथा शिवप्रसाद सितारे हिन्द का 'राजा भोज का सपना' तथा बंगाल की कहानियों के अनुवाद 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हो चुके थे। इस समय की महत्वपूर्ण कहानी बंग महिला की 'दुलाईवाला' है।

द्वितीय चरण—लघु कहानियों में प्राण प्रतिष्ठा जयशंकर प्रसाद ने की। 'सरस्वती' तथा '...' पत्रिकाओं द्वारा हिन्दी की मौलिक कहानी का प्रारम्भ हुआ। विश्वम्भरनाथ जिज्जा, जे० पी० श्रीवास्तव, विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, चतुरसेन शास्त्री, गुलेरीजी, सुदर्शन, बेचैन शर्मा

'उग्र', भगवतीप्रसाद बाजपेयी आदि कथाकारों ने कहानी को यथोचित विकास की दिशा प्रदान की।

प्रेमचन्द के कहानी साहित्य ने साधारण जनता के शोषण और आक्रोश की वाणी को अपने कथा साहित्य में स्थान देकर प्रसिद्धि प्राप्त की।

तृतीय चरण—जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में युग की भावनाओं को साकार किया। अज्ञेय ने सामाजिक चेतना को नया स्वर प्रदान किया। इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, देवेन्द्र सत्यार्थी आदि ने यथार्थवादी परम्परा को बल प्रदान किया।

चतुर्थ चरण—आजादी के पश्चात् समाज के नए रूप को प्रस्तुत करने में नयी कहानी समर्थ है। धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, निर्मल वर्मा का नाम नयी कहानी लेखकों की श्रेणी में आता है। फणीश्वर नाथ रेणु की 'तीसरी कसम' ने नयी कहानी को नवीन दिशा प्रदान की।

नयी कहानी सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को प्रस्तुत करती हुई विकास के मार्ग पर अग्रसर है। इसमें वैयक्तिक सम्बन्धों का चित्रण तथा आदर्शवादी प्रवृत्ति का भी यथोचित समावेश है।

प्रश्न २. हिन्दी-कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द के योगदान का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रेमचन्द से पूर्व जो कहानियाँ लिखी गयीं वे कहानी-कला की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। अतः स्वस्थ कहानी लेखन की परम्परा का प्रारम्भ प्रेमचन्द से माना जाता है। आपकी कहानियों में मानव जीवन तथा समाज के विविध पहलुओं का मार्मिक चित्रण हुआ। उनमें आदर्श और यथार्थ का विचित्र समन्वय है। आपकी कहानियाँ निम्न वर्ग तथा मध्य वर्ग की पीड़ा को व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। आपने ईदगाह, जुलूस, नमक का दारोगा, शतरंज के खिलाड़ी आदि लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं जो प्रेम-पचीसी, प्रेम-प्रसून, प्रेम-द्वादशी, प्रेम-प्रतिज्ञा आदि संग्रहों में संगृहीत है।

प्रश्न ३. हिन्दी कहानी के विकास में जयशंकर 'प्रसाद' के योगदान पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर—कहानी के क्षेत्र में 'प्रसाद' जी ने वास्तव में एक युगान्तर उपस्थित किया। आपकी कहानियाँ मानव मन का अधिक निकटता से स्पर्श करती हैं। प्रसाद जी कहानीकार होने के साथ-साथ कवि और नाटककार भी थे। इसीलिए आपकी कहानियों में कविता जैसी मार्मिकता है और उनमें प्रयुक्त संवाद अधिक सशक्त है। आपने अपनी कहानियों में शुद्ध साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया है। आपके द्वारा रचित कहानियों में पुरस्कार, आकाशदीप, मधुआ, ममता आदि विशेष लोकप्रिय हैं। प्रतिध्वनि, आकाश-द्वीप, इन्द्रजाल आदि आपके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह हैं।

हिन्दी नाटक

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक नाटक कौन सा है—

(अ) इन्द्रसभा (ब) नहुष
(स) विद्यासुन्दर (द) मुद्रा राक्षस **उत्तर**—(अ) इन्द्रसभा।

प्रश्न २. भारतेन्दु-युग के नाटकों में स्पष्ट प्रभाव है—

(अ) राजनीतिक परम्परा का (ब) लोक नाट्य परम्परा का
(स) तटकालीन समाज का (द) भाषा का

उत्तर—(ब) लोक नाट्य परम्परा का।

न ३. द्विवेदी-युग के नाट्य लेखन के अभाव की पूर्ति हुई—

(अ) उदयशंकर भट्ट द्वारा (ब) चतुरसेन शास्त्री द्वारा

(स) प्रसाद के नाटकों द्वारा (द) बेचैनशर्मा 'उग्र' द्वारा

उत्तर—(स) प्रसाद के नाटकों द्वारा।

न ४. भारतेन्दु-युग के प्रसिद्ध नाटककार हैं—

(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) उदयशंकर भट्ट

(स) सेठ गोविन्ददास (द) बालकृष्ण भट्ट

उत्तर—(द) बालकृष्ण भट्ट।

न ५. साठोत्तर नाट्य-साहित्य में उपेन्द्रनाथ अश्क का 'आदिमार्ग' प्रकाशित हुआ—

(अ) १९६१ में (ब) १९६२ में

(स) १९६३ में (द) १९६४ में उत्तर—(अ) १९६१ में।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. नाटक किसे कहते हैं?

उत्तर—नाटक वह विधा है जिसमें आकृति, अभिनय, नृत्य, संगीत, सम्वाद, तथा रस का तथा श्रवण माध्यम से लोकोत्तर आनन्द प्राप्त किया जाता है।

प्रश्न २. नाटक के भारतीय तत्त्वों को बताइए।

उत्तर—नाटक के भारतीय तत्त्व हैं—१. कथावस्तु, २. नेता, ३. रस, ४. अभिनय, ५. वृत्ति।

प्रश्न ३. नाटक के पाश्चात्य विद्वानों द्वारा बताये गये तत्त्व क्या हैं?

उत्तर—नाटक के पाश्चात्य विद्वानों द्वारा बताए गए तत्त्व—१. कथावस्तु, २. चरित्र चित्रण, कथोपकथन, ४. भाषा-शैली, ५. देशकाल, ६. उद्देश्य।

प्रश्न ४. जयशंकर प्रसाद के नाटकों का क्या विषय है?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद के नाटकों का विषय प्राचीन संस्कृति तथा अतीत गौरव की रक्षा है।

प्रश्न ५. हिन्दी के ८ प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिये।

उत्तर—हिन्दी के ८ प्रमुख नाटककारों के नाम हैं—१. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र २. जयशंकर , ३. उदयशंकर भट्ट, ४. लक्ष्मीनारायण मिश्र, ५. विष्णु प्रभाकर, ६. मोहन राकेश, ७. सेठ न्ददास, ८. रामकुमार वर्मा।

प्रश्न ६. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रमुख नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रमुख नाटकों के नाम हैं—१. भारत दुर्दशा, २. नीलदेवी, न्धेर नगरी, ४. चन्द्रावली, ५. सती प्रताप, ६. वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, ७. विद्यासागर, रत जननी ९. सत्य हरिश्चन्द्र, १०. मुद्रा राक्षस।

प्रश्न ७. हिन्दी के चार ऐतिहासिक नाटकों का नाम उनके नाटककारों के नाम सहित ए—

उत्तर—ऐतिहासिक नाटक	नाटककार का नाम
चन्द्रगुप्त	जयशंकर प्रसाद
राजकुमार	गोविन्द बल्लभ पन्त
हर्ष	सेठ गोविन्ददास
रक्षाबन्धन	हरिकृष्ण प्रेमी

प्रश्न ८. जयशंकर प्रसाद के नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद के नाटकों के नाम—१. स्कन्द गुप्त, २. कल्याणी, ३. सज्ज
४. राज्यश्री, ५. विशाख, ६. अज्ञातशत्रु, ७. जनमेजय का नागयज्ञ ८. एक घूँट, ९. चन्द्रगुप
१०. कामना, ११. ध्रुव स्वामिनी।

प्रश्न ९. प्रमुख रेडियो नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—प्रमुख रेडियो नाटककारों के नाम हैं—

१. उदयशंकर भट्ट २. उपेन्द्रनाथ अश्क ३. विष्णु प्रभाकर ४. अमृतलाल नागर ५. चिरंजी
६. सत्येन्द्र शरद।

प्रश्न १०. हिन्दी के पाँच पौराणिक नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी के पाँच पौराणिक नाटकों के नाम—१. कर्तव्य, २. गंगा का बेटा, ३. क
४. गान्धारी, ५. चक्रव्यूह।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. भारतेन्दु युग के नाटकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—नबाव वाजिद अलीशाह—इन्द्रसभा

राजा लक्ष्मणसिंह—शकुन्तला (अनुवादित)

भारतेन्दु—विद्यासुन्दर (छायानुवाद)

भारतेन्दु—अन्धेरी नगरी, चन्द्रावती, भारत दुर्दशा, सत्य हरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस, प्रेम योगिनी
वेद्रिकी हिंसा न भवति, नील देवी, विषस्य विषमौषधम्, सती प्रताप आदि।

लाला श्री निवास दास—रणधीर प्रेम मोहिनी, संयोगिता स्वयंवर।

बालकृष्ण भट्ट—दमयन्ती स्वयंवर, रेल का विकट खेल, बाल विवाह।

बद्रीनारायण चौधारी प्रेमधन—भारत सौभाग्य, वृद्ध विलाप।

प्रताप नारायण मिश्र—गौ संकट, भारत दुर्दशा, हठी हम्मीर आदि।

राधाचरण गोस्वामी—बूढ़े मुँह मुहासे, अमर राठौड़ आदि।

प्रश्न २. प्रसाद युग के प्रमुख नाटककार तथा नाटकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—नाटककार	नाटक
जयशंकर प्रसाद	कल्याणी परिणय, सज्जन, प्रायश्चित, राज्यश्री अज्ञातशत्रु, विशाख, स्कन्दगुप्त, जनमेजय क नागयज्ञ, एक घूँट, चन्द्रगुप्त, कामना आदि।
सेठ गोविन्ददास	हर्ष।
श्री मिलिन्द	प्रताप प्रतिज्ञा।
उदयशंकर भट्ट	चन्द्रगुप्त मौर्य।
प्रेमचन्द	कर्बला।
बेचैनशर्मा उग्र	महात्मा ईसा।
सुदर्शन	अंजना।
मैथिलीशरण गुप्त	चन्द्रहास।

प्रश्न ३. प्रसादोत्तर नाटककार तथा उनके नाटकों के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर—प्रसादोत्तर नाटककार	नाटकों के नाम
उदयशंकर भट्ट	अम्बा, सागर विजय, विश्वामित्र, राधा आदि।
सेठ गोविन्ददास	कर्ण, कर्तव्य, दलित कुसुम, पतित कुसुम आदि।

लक्ष्मीनारायण मिश्र	नारद की वीणा, चक्रव्यूह, सिन्दूर की होली आदि।
चतुरसेन शास्त्री	मेघनाद, राधाकृष्ण।
पाण्डेय बेचैन शर्मा 'उग्र'	गंगा का बेटा, आवारा आदि।
डॉ० रामकुमार वर्मा	राजरानी सीता।
देवराज दिनेश	रावण।
हरिकृष्ण प्रेमी	पाताल विजय, बन्धन, छाया आदि।
सुदर्शन	भाग्य चक्र।
उपेन्द्रनाथ अश्क	स्वर्ग की झलक, कैद, उड़ान, छटा बेटा आदि।

प्रश्न ४. हिन्दी नाटक के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—हिन्दी में नाटक रचना की परम्परा भारतेन्दु जी से पहले आरम्भ हो चुकी थी। नके पिता गोपालदास 'नहुष' का प्रणयन कर चुके थे। राजा लक्ष्मणसिंह भी 'शकुन्तला' नाटक त सफल अनुवाद कर चुके थे। परन्तु खड़ीबोली के मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दुजी त समय से ही हुआ। नाटक के विकास को हम तीन चरणों में विभाजित कर सकते हैं।

भारतेन्दु युग (१८६८ से १९१०)—भारतेन्दु जी हिन्दी गद्य-साहित्य के प्रथम उन्नायकों में गने जाते हैं। आपने स्वयं अनेक नाटकों का प्रणयन किया और अन्य लेखकों को प्रोत्साहित भी किया। विद्यासुन्दर, सत्य हरिश्चन्द्र, चन्द्रावली, भारत दुर्दशा आपकी उल्लेखनीय नाट्यकृतियाँ हैं। आपके अतिरिक्त प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, किशोरीलाल गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, राधाकृष्ण दास, राधाचरण गोस्वामी आदि ने भी नाटक लिखे। इस युग में अन्य भाषाओं के नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी हुआ। इस युग के नाटकों में कलात्मकता तथा अभिनेयता की दृष्टि से कमियाँ रहीं परन्तु इन रचनाओं ने हिन्दी-नाटक की आधारशिला का कार्य किया।

प्रसाद युग (१९१० से १९३६)—जयशंकर 'प्रसाद' हिन्दी नाटक की अप्रतिम विभूति है। आपके आगमन के साथ ही हिन्दी नाटक अपने शैशव को त्याग कर युवा और प्रौढ़ावस्था पर जा पहुँचा। भारतीय और पाश्चात्य नाट्य शैली के समन्वय से आपने उत्कृष्ट नाटक प्रस्तुत किये। चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, विशाख, ध्रुवस्वामिनी आदि आपके कीर्ति-स्तम्भ हैं। प्रसाद जी के अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास तथा निराला आदि इस युग के प्रमुख नाटककार हैं।

प्रसादोत्तर युग (१९३६ से अब तक)—प्रसाद युग के पश्चात् हिन्दी नाटक में अधिकाधिक प्रौढ़ता और मंचीयता आने लगी। पश्चिमी नाट्य शैली का प्रभाव बढ़ने लगा। नाटकों की भाषा साहित्यकता के बोझ से मुक्त होने लगी। तकनीक और नाटकीयता पर अधिक बल दिया जाने लगा। यथार्थ जीवन की झाँकी और देश-काल का नजदीकी चित्रण प्राप्त होने लगा। एक प्रकार से इस समय को नाटक रचना के क्षेत्र में युगान्तर कहा जा सकता है।

इस युग के प्रधान नाटककारों में सेठ गोविन्ददास, पं० गोविन्दबल्लभ पन्त, लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त रामकुमार वर्मा, जगदीश चन्द्र माथुर, भुवनेश्वर, अश्क, विष्णु प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती, इलाचन्द्र जोशी आदि सफल नाटककार हैं।

वर्तमान हिन्दी नाटक प्रयोगवाद की ओर मुड़ गया है। लाक्षणिक भाषा, प्रतीक विधान तथा जीवन के प्रति मौलिक दृष्टिकोण आज के नाटक में स्पष्ट प्रतिबिम्बित है। मादा कैक्टस, सुखा सरोवर, मास्टरजी, नीली झील, पत्थर और आँसू तथा दुश्मन आदि वर्तमान नाटक की समृद्धता के प्रमाण हैं।

प्रश्न ५. साठोत्तर नाट्य साहित्य के विषय में तुम क्या जानते हो?

उत्तर—नाटककार	नाटक का नाम
उपेन्द्रनाथ अश्क	छटा बेटा, आदि मार्ग, लौटता हुआ दिन।

उदयशंकर भट्ट	सिन्ध पतन, नया समाज, विद्रोहिणी अम्बा।
लक्ष्मीनारायण मिश्र	आधीरात, सिन्दूर की होली।
लक्ष्मीनारायण लाल	रक्तकमल, दर्पण, कर्फ्यू, गुरु, जादू की छड़ी।
मोहन राकेश	लहरों के राजहंस, रात बीतने तक।
चिरंजीत	अभिमन्यु चक्रव्यूह में।
मन्नू भण्डारी	बिना दीवारों के घर।
विष्णु प्रभाकर	कुहासा और किरण, युगे-युगे क्रान्ति, हड़ताल टूटते परिवेश।
रामकुमार वर्मा	सन्त तुलसीदास।
जगदीशचन्द्र माथुर	दशरथनन्दन।
अमृतलाल नागर	बात की बात, चन्दनवन।
विनोद रस्तोगी	नई लहर।
गोविन्द बल्लभ पन्त	अहंकार।
रमेश बक्षी	वामाचार।
भगवतीचरण वर्मा	वसीयत।

हिन्दी निबन्ध

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १. निम्नलिखित में से कौन सा उपन्यास प्रेमचन्द का है–

(माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

(अ) रंगभूमि (ब) कंकाल
(स) अलका (द) प्रेमपथ। उत्तर—(अ) रंगभूमि।

प्रश्न २. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों को किस श्रेणी में रखा जा सकता है–

(माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

(अ) ललित निबन्ध। (ब) व्यक्तिपरक निबन्ध।
(स) विचारात्मक निबन्ध। (द) संस्मरणात्मक निबन्ध।

उत्तर—(अ) ललित निबन्ध।

प्रश्न ३. भारतेन्दु युग के निबन्धों की एक विशेषता है–

(अ) भावात्मकता (ब) हास्य-व्यंग्यात्मकता
(स) मनोवैज्ञानिकता। (द) परिचयात्मकता।

उत्तर—(ब) हास्य-व्यंग्यात्मकता।

प्रश्न ४. द्विवेदी युग की प्रमुख विशेषता है–

(अ) निबन्धात्मकता (ब) मनोरंजकता
(स) भावना तथा चिन्तन का योग (द) समीक्षात्मकता

उत्तर—(स) भावना तथा चिन्तन का योग।

प्रश्न ५. शुक्ल युग को निबन्ध के क्षेत्र में नाम दिया गया है–

(अ) प्रसाद युग। (ब) समीक्षा युग।
(स) नवीन युग। (द) काव्य युग। उत्तर—(स) नवीन युग।

प्रश्न ६. विद्यानिवास मिश्र के किस निबन्ध संग्रह में सरस चिन्तन है—

(अ) मैंने सिल पहुँचाई। (ब) तुम चन्दन हम पानी।
(स) साहित्य की चेतना। (द) रीति विज्ञान।

उत्तर—(अ) मैंने सिल पहुँचाई।

प्रश्न ७. हरिशंकर परसाई प्रसिद्ध लेखक हैं—

(अ) ललित निबन्ध के। (ब) विचारात्मकता निबन्ध के।
(स) व्यंग्यात्मक निबन्ध के। (द) व्यक्तिपरक निबन्ध के।

उत्तर—(स) व्यंग्यात्मक निबन्ध के।

प्रश्न ८. विचारात्मक निबन्धकारों में प्रसिद्ध नाम है—

(अ) बनारसीदास चतुर्वेदी का (ब) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का
(स) शिवपूजन सहाय का। (द) बालकृष्ण भट्ट का।

उत्तर—(ब) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का।

प्रश्न ९. आत्मपरक निबन्ध लिखने वालों में अग्रणी हैं—

(अ) डॉ० नामवरसिंह। (ब) डॉ० रामविलास शर्मा।
(स) डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी। (द) शान्तिप्रिय द्विवेदी।

उत्तर—(ब) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न १०. संस्मरणात्मक निबन्धों का विकास काल है—

(अ) शुक्लयुग (ब) शुक्लोत्तर युग
(स) द्विवेदी युग (द) भारतेन्दु युग

उत्तर—(ब) शुक्लोत्तर युग।

प्रश्न ११. हास्य व्यंग्य प्रधान शैली को प्रौढ़ता प्रदान की—

(अ) प्रतापनारायण मिश्र ने। (ब) रामचन्द्र शुक्ल ने।
(स) हरिशंकर परसाई ने। (द) डॉ० रामविलास शर्मा ने।

उत्तर—(स) हरिशंकर परसाई ने।

सउत्तर अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न १. निबन्ध की एक परिभाषा लिखिए।

उत्तर—निबन्ध की परिभाषा—निबन्ध किसी देश की जन सत्तात्मकता, विचार स्वातन्त्र्य और ...ार सामाजिकता का लेखा है।

प्रश्न २. जानसन ने निबन्ध के विषय में क्या बताया है?

उत्तर—जानसन ने निबन्ध के विषय में बताया है—"मन की आकस्मिक भटकन और ...बद्ध व चिन्तन हीन बुद्धि विलास ही निबन्ध है।

प्रश्न ३. क्रेवेल ने निबन्ध को क्या बताया है?

उत्तर—क्रेवेल ने कहा है—निबन्ध लेखन कला का प्रिय साधन है। जिस लेखक में न तो ...भा है और न ज्ञान बुद्धि की जिज्ञासा, निबन्ध लेखन उसी के अनुकूल पड़ता है।

प्रश्न ४. प्रीस्टले के विचार से निबन्ध क्या है?

उत्तर—प्रीस्टले के विचार से 'निबन्ध मौलिक व्यक्तित्व की निश्छल अभिव्यक्ति और ...क्षिप्त कलात्मक वार्ता है।"

प्रश्न ५. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध के विषय में क्या कहा है?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध के विषय में कहा है—"आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के आधार पर निबन्ध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो।"

प्रश्न ६. डॉ० गुलाबराय ने निबन्ध के विषय में क्या कहा है?

उत्तर—डॉ० गुलाबराय ने निबन्ध के विषय में कहा है—"निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक निर्जीबन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगीत और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।"

प्रश्न ७. डॉ० श्यामसुन्दर दास का निबन्ध के विषय में क्या विचार है?

उत्तर— डॉ० श्यामसुन्दर दास का निबन्ध के विषय में विचार है—"निबन्ध उस लेख को कहना चाहिए जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक और पाण्डित्यपूर्ण विचार किया गया हो।"

प्रश्न ८. निबन्ध के विषय में आचार्य हजारीप्रसाद के विचारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—निबन्ध के विषय में आचार्य हजारीप्रसाद के विचार—'प्रमाणों का निबन्धन ही निबन्ध है।'

प्रश्न ९. डॉ० विजयेन्द्र स्नातक निबन्ध के विषय में क्या कहते हैं?

उत्तर—डॉ० विजयेन्द्र स्नातक निबन्ध के विषय में कहते हैं—विचारों को विश्रृंखलता के भीतर सन्निहित एक सूत्रता के लेखक के व्यक्तित्व और वार्तालाप के ढंग की शैली के समन्वित रूप को निबन्ध कहा जाता है।"

प्रश्न १०. विभिन्न निबन्ध लेखकों के विचार के अनुसार निबन्ध किसे कहा जा सकता है?

उत्तर—विभिन्न निबन्ध लेखकों के विचार के अनुसार निबन्ध के विषय में यह कहा जा सकता है—'किसी विषय पर स्वाधीन चिन्तन और निश्छल अनुभूतियों का सरस, सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन ही निबन्ध है।

प्रश्न ११. निबन्ध की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—निबन्ध की दो विशेषताएँ हैं—

१. निबन्ध में प्रसंग गर्भत्व रहता है।

२. निबन्ध में एक सीमा रहती है जो उसकी शक्ति की परिचायिका होती है।

प्रश्न १२. निबन्ध के किसी एक निर्णायक तत्त्व का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—निबन्ध का एक निर्णायक तत्त्व है—

व्यक्तित्व—निबन्ध में निबन्धकार के व्यक्तित्व का पूर्ण स्थान होना चाहिए। जिस विषय को निबन्धकार ने चुना है वह उसको चारों ओर से अपनी भावना के आवरण में लपेट लेता है। अतः भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति द्वारा विभिन्न रूपों में होना सामान्य बात है।

प्रश्न १३. हिन्दी निबन्ध के विकास को किस प्रकार विभाजित किया जा सकता है?

उत्तर—हिन्दी निबन्ध के विकास का विभाजन—

१. भारतेन्दु युग।

२. द्विवेदी युग।

३. नवीन अथवा शुक्ल युग।

४. शुक्लोत्तर युग।

प्रश्न १४. भारतेन्दु युग के निबन्धों की दशा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के निबन्धों में विचार गम्भीर्य का अभाव था तथापि जो निबन्ध इस युग में लिखे गये उनमें सजीवता थी। गद्य की कोई निश्चित पद्धति नहीं थी। निबन्धों में स्फूर्ति थी।

प्रश्न १५. डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतेन्दु युग के निबन्धों के विषय में क्या कहा है?

उत्तर—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारतेन्दु युग के निबन्धों के विषय में कहा है—"भारतेन्दु युगीन निबन्धों में देशभक्ति की भावना का सबसे अधिक प्रकाशन हुआ है। इन निबन्धों में समाज सुधार, धार्मिक-रूढ़ियों का खण्डन, भारत के प्राचीन गौरव, देश की वर्तमान हीनावस्था और हिन्दी भाषा का समर्थन आदि विषयों की चर्चा हुई।

प्रश्न १६. भारतेन्दु युग के निबन्धों की एक विशेषता का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारतेन्दु युग के निबन्धों की एक विशेषता सामाजिक मंगल का विधान है। लगभग सभी लेखकों ने समाज के मंगल के लिए निश्छल प्रयास किये।

प्रश्न १७. द्विवेदी युग में किस बात पर विशेष ध्यान दिया गया?

उत्तर—द्विवेदी युग में भाषा के परिमार्जन और साहित्य के संस्कार की ओर विशेष ध्यान दिया गया। परिणामस्वरूप, भाषा और भाव दोनों की स्वच्छता पर नियन्त्रण सा हो गया।

प्रश्न १८. सरदार पूर्णसिंह किन निबन्धों के बल पर एक प्रतिष्ठित निबन्धकार मान लिये गये?

उत्तर—सरदार पूर्णसिंह निम्नांकित निबन्धों के बल पर एक प्रतिष्ठित निबन्धकार मान लिये गये—

१. आचरण की सभ्यता।

२. मजदूरी और प्रेम।

प्रश्न १९. द्विवेदी युग की किसी एक प्रमुख प्रवृत्ति का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—द्विवेदी युग की एक प्रमुख प्रवृत्ति है—

स्वतन्त्र चिन्तन—सरदार पूर्णसिंह के निबन्धों में स्वतन्त्र चिन्तन की प्रवृत्ति है। मधुरता तथा भाव प्रवणता भी इस युग के निबन्धों की प्रमुख प्रवृत्ति है।

प्रश्न २०. डॉ० रामविलास शर्मा के निबन्धों का वर्गीकरण कीजिए—

उत्तर—डॉ० रामविलास शर्मा के निबन्धों का वर्गीकरण—

१. **गम्भीर विचारात्मक**—शुष्क तथ्यों को भी सरल तथा आत्मीयतापूर्ण शैली में लिखा गया है।

२. **व्यावहारिक**—व्यंजना प्रधान तथा कलात्मक सौष्ठव के साथ लिखे गये निबन्ध इस वर्गीकरण में आते हैं।

[illegible] लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न १. भारतेन्दु को हिन्दी गद्य का जनक क्यों माना जाता है? अथवा भारतेन्दु को हिन्दी गद्य का प्रतीक क्यों स्वीकार किया गया है?

अथवा

हिन्दी गद्य के भारतेन्दु युग से क्या समझते हो?

अथवा

हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—भारतेन्दु जी को सभी इतिहासकारों ने आधुनिक हिन्दी-गद्य का प्रवर्तक स्वीकार किया है। इसमें सन्देह नहीं कि अपने सर्वतोन्मुखी व्यक्तित्व और अपूर्व प्रतिभा से भारतेन्दु जी ने हिन्दी गद्य-साहित्य को सर्वथा नवीन दिशा प्रदान की। भारतेन्दुजी से लेकर आज तक हिन्दी गद्य के विकास की कथा संक्षेप में इस प्रकार है—

हिन्दी गद्याकाश में भारतेन्दु वास्तव में इन्दु बनकर ही उदित हुए। आपसे पूर्व दो राजा हिन्दी की परस्पर विरोधी शैलियों को अपना रहे थे। राजा शिवप्रसाद हिन्दी को उर्दू बनाये दे रहे थे और राजा लक्ष्मणसिंह उसे संस्कृत के समीप खींच रहे थे। ये दोनों ही स्वरूप हिन्दी के मुक्त-विकास में बाधक थे। भारतेन्दु जी ने मध्य का व्यावहारिक मार्ग ग्रहण किया। लोक प्रचलित शब्दावली, छोटे-छोटे वाक्यों तथा मुहावरों एवं कहावतों के प्रयोग से आपने भाषा को जन-साधारण के निकट लाने का सफल प्रयास किया।

प्रसिद्ध लेखक—भारतेन्दु जी की भाषा के आदर्श को उनके अनेक समकालीन लेखकों ने अपनाया। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' राधाचरण गोस्वामी, किशोरीलाल गोस्वामी, राधाकृष्ण दास आदि अनेक लेखकों ने भारतेन्दु जी से प्रेरणा प्राप्त करके गद्य-रचना आरम्भ की। इस युग के लेखकों ने विविध विषयों पर गद्य रचनाएँ की। हिन्दी नाटक का उत्थान इसी युग में हुआ। पत्रों के माध्यम से भी हिन्दी गद्य का प्रचार, प्रसार एवं निखार हुआ।

योगदान—भारतेन्दु युग को हिन्दी का प्रथमोत्थान माना जा सकता है। यद्यपि इस युग की भाषा पूर्णतया परिमार्जित एवं व्यवस्थित नहीं थी तथापि हिन्दी-गद्य को उत्थान देने की भूमिका से यह युग बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न २. हिन्दी गद्य के विकास में द्विवेदी युग के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—भारतेन्दु काल में हिन्दी-गद्य के उपवन की पौधें रोपी गयी थीं। ये रचना-पादप मनचाहे ढंग से बढ़ रहे थे। मालियों की प्रतीक्षा थी जो इस उपवन को वन बनने से रोक सकें। हिन्दी के सौभाग्य से पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी जैसा माली हमें प्राप्त हुआ जिसने हिन्दी गद्य के उद्यान को व्यवस्थित और परिमार्जित बनाया। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी की अविस्मरणीय सेवा की। आपके भव्य व्यक्तित्व ने हिन्दी गद्य रचना के क्षेत्र को इतनी व्यापकता से प्रभावित किया कि सन् १९०० से १९२२ तक का अन्तराल द्विवेदी-युग के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

प्रसिद्ध लेखक—द्विवेदी युग में अनेक प्रसिद्ध लेखकों ने हिन्दी गद्य को समृद्धि प्रदान की। बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्णसिंह, बाबू श्यामसुन्दर दास, मिश्रबन्धु, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, गणेशशंकर विद्यार्थी आदि गद्यकारों ने निबन्ध, कहानी, नाटक तथा विविध विषयों पर लेख लिखकर हिन्दी गद्य के विकास को महत्त्वपूर्ण गति प्रदान की।

योगदान—द्विवेदी युग हिन्दी गद्य-साहित्य के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से गद्य-लेखकों को प्रशिक्षित किया। व्याकरण की दृष्टि से भाषा को व्यवस्थित किया और उसे एकरूपता प्रदान की। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। 'नागरी प्रचारिणी सभा' जैसी उपयोगी संस्था की स्थापना इसी काल में हुई। इसके अतिरिक्त हिन्दी में विविध गद्य शैलियों के विकास का श्रेय भी द्विवेदी युग को ही

प्राप्त है। द्विवेदी जी की परिमार्जित और संयमित भाषा-शैली, श्यामसुन्दरदास जी की विवेचनात्मक तथा व्याख्यात्मक शैली, बालमुकुन्द गुप्त की व्यंग्य और हास्य प्रधान शैली, सरदार पूर्णसिंह की भावात्मक आवेगमयी शैली तथा रामचन्द्र शुक्ल की गवेषणात्मक एवं चिन्तन प्रधान शैली, इसी युग की देन हैं।

इस प्रकार द्विवेदी युग में हिन्दी गद्य ने पुष्टता, प्रौढ़ता और परिपक्वता की ओर चरण बढ़ाये।

प्रश्न ३. हिन्दी साहित्य के विकास में शुक्ल युग का क्या योगदान है?

अथवा

शुक्ल युग के प्रसिद्ध लेखकों के नाम लिखिए और हिन्दी साहित्य के विकास में इस युग के योगदान का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—सन् १९२१ से १९३६ तक का समय हिन्दी गद्य के इतिहास में शुक्ल युग के नाम से जाना जाता है। शुक्ल जी ने निबन्ध एवं आलोचना साहित्य को प्रौढ़ता के चरम-शिखर पर पहुँचाया। आपकी 'चिन्तामणि' हिन्दी-गद्य की चिन्ताओं को समाप्त करने वाली मणि है। मनोविकारों पर निबन्ध लेखन की पुष्ट परम्परा आपने ही आरम्भ की।

प्रसिद्ध लेखक—शुक्ल-युग हिन्दी गद्य के विकास की अविस्मरणीय मंजिल है। जयशंकर प्रसाद जैसे नाट्य शिल्पी तथा प्रेमचन्द जैसे कथा-सम्राट् हमको शुक्ल युग में ही प्राप्त हुए। राय कृष्णदास, डॉ० रघुवीर सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, निराला, बाबू गुलाबराय, नन्ददुलारे बाजपेयी, वृन्दावनलाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि इसी युग की विभूतियाँ हैं।

योगदान—शुक्ल युग हिन्दी गद्य साहित्य की प्रौढ़ता और चहुँमुखी प्रकाश का युग है। इस युग ने श्रेष्ठतम निबन्धकार, आलोचक, नाटककार, कहानीकार, ललित गद्यकार तथा विविध गद्य-शिल्पी प्रदान किये। अभिव्यंजना और शब्द-सामर्थ्य का प्रशंसनीय विकास हुआ। छायावादी शैली ने गद्य पर भी अपनी मधुर छाया डाली। गद्य-काव्य, रेखाचित्र तथा संस्मरण आदि नवीन विधाओं ने भी इस युग में जन्म लिया। उच्च कक्षाओं में अध्ययन योग्य प्रौढ़ और विद्वत्तापूर्ण सामग्री भी इस युग ने प्रदान की।

प्रश्न २. शुक्लोत्तर निबन्ध साहित्य का उल्लेख कीजिए।

अथवा

वर्तमान युग के गद्य के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—भाषा तथा भाव की दृष्टि से निबन्ध साहित्य की श्रीवृद्धि तथा हिन्दी गद्य साहित्य को नवीन मोड़ प्रदान करने में शुक्लोत्तर युग की प्रमुख भूमिका है। इस युग में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक निबन्धों का प्रणयन हुआ और अब भी हो रहा है। हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में नवीन प्रयोग हो रहे हैं। प्रगति और प्रयोग के इस युग में हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेन्द्र, महादेवी वर्मा, नन्ददुलारे बाजपेयी, बासुदेव शरण अग्रवाल, सद्‌गुरु शरण अवस्थी, डॉ० नगेन्द्र, शान्तिप्रिय द्विवेदी, डॉ० सत्येन्द्र, विनयमोहन शर्मा, अज्ञेय, प्रभाकर माचवे, शिवदानसिंह चौहान, डॉ० सरनामसिंह शर्मा, धर्मवीर भारती, भगीरथ मिश्र, डॉ० रामविलास शर्मा, निर्मल वर्मा आदि लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में अनुपम सहयोग दिया है।

डॉ० विद्यानिवास मिश्र, नये निबन्धकारों में अपना स्थान महत्त्वपूर्ण बनाये हुए हैं। उन्होंने ललित निबन्धों के अतिरिक्त अनेक समीक्षात्मक निबन्ध लिखे हैं। जिनमें अतीत के प्रति आस्था प्रकट होती है। उनके निबन्धों में भारतीय संस्कृति तथा पाश्चात्य साहित्य का चिन्तन भी है।

कुँवरनाथ राय के निबन्धों में साहित्यिकता है। हरिशंकर परसाई व्यंग्य लेखक हैं। ललित निबन्ध के उन्नयन में हजारीप्रसाद द्विवेदी का नाम अग्रणी है। 'कुटज', 'विचार और वितर्क', विचार और प्रवाह द्विवेदी जी के श्रेष्ठ निबन्ध संग्रह हैं।

शुक्लोत्तर युग ने संस्मरणात्मक निबन्धों को विकास की दिशा प्रदान की। रामवृक्ष बेनीपुरी का 'गेहूँ और गुलाब', कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का 'धरती के फूल' तथा परिपूर्णानन्द वर्मा का बीती यादें महत्त्वपूर्ण निबन्ध हैं।

विषय तथा शैली की दृष्टि से निबन्ध का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है तथापि विचारात्मक, भावात्मक एवम् आत्मपरक निबन्धों की संख्या को सन्तोषजनक नहीं माना जा सकता।

निबन्ध

१. साहित्य और समाज

अथवा

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. साहित्य क्या है। ३. साहित्य और मानव जीवन का सम्बन्ध। ४. साहित्य का उद्देश्य। ५. हिन्दी साहित्य और समाज। ६. उपसंहार।

प्रस्तावना—'रसो वै सः' सृष्टि के मूल तत्त्व को रस रूप बताने वाले भारतीय मनीषियों ने मानव तन में प्रतिष्ठित 'मन' की महत्ता का ही उद्घोष किया था। तन और मन के सहज संतुलन में ही जीवन के आनन्द का रहस्य छिपा हुआ है। तन यदि कर्म का साधक है तो मन भावना का आराधक है। तन को भी तृप्ति चाहिए, मन को भी तृप्ति चाहिए। तन और मन की सम्यक् साधना से ही जीवन का आदर्श स्वरूप साकार होता है। क्योंकि—

जीवन केवल संग्राम नहीं, क्रीड़ा भी है भाव भी है।
जीवन न जेठ की दोपहरी, मधु ऋतु भी है, सावन भी है॥

तभी तो आदि मानव ने बाँस से प्राणघाती बाण का भी निर्माण किया और मन मोहनी वंशी का भी। मृदंग और रणभेरी दोनों का जन्म एक ही पशु चर्म से तो हुआ था।

क्या यह सच नहीं कि मानव जीवन की सांस्कृतिक यात्रा साहित्य-शिशु की गोद में लिये आरम्भ हुयी थी?

साहित्य क्या है?—साहित्य को किसी एक सरल और सम्पूर्ण परिभाषा में बाँधना कठिन है। 'साहित्य समाज का दर्पण है' 'साहित्य जीवन की रोगात्मक व्याख्या है', 'हितेन सहितं साहित्यम्', 'साहित्य रस की साधना है' आदि परिभाषाओं द्वारा साहित्य के बहुआयामी स्वरूप का कथन हुआ है। उसके विविध उद्देश्यों का निरूपण हुआ है। वैसे आजकल साहित्य शब्द का प्रयोग दो प्रधान अर्थों में किया जाता है। एक परम्परागत साहित्य सामग्री के लिए और दूसरा अधिक व्यापक अर्थ में। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना आदि साहित्य का परम्परागत स्वरूप है और वैज्ञानिक साहित्य, व्यापारिक साहित्य, जासूसी साहित्य पुरातत्वीय साहित्य आदि रूपों में भी साहित्य शब्द का प्रयोग होता है। इस निबन्ध में हमारे विचार का लक्ष्य परम्परागत साहित्य ही है। बाल्मीकि, व्यास, कालिदास, कबीर, सूर और तुलसीदास की अमर कृतियाँ, केशव, घनानन्द, बिहारी, मतिराम के कल्पना विलास, विन्यास, भारतेन्दु, द्विवेदी, प्रेमचन्द, प्रसाद, पन्त और निराला के शब्द यही हैं वह हिन्दी समाज की "ज्ञान राशि का संचित कोष" जो साहित्य के नाम से इसके आराधकों का इष्ट देवता बना हुआ है।

साहित्य और मानव जीवन का सम्बन्ध—साहित्य मनुष्य की सृष्टि है और मनुष्य बड़ा स्वार्थी जीव है। अपने हर निर्माण को वह उपयोगिता की कसौटी पर कसता है। जो उपयोग की परिधि से बाहर हुआ उसे ही मनुष्य निर्ममता से ठुकरा कर आगे बढ़ जाता है। साहित्य

सहस्रों वर्षों के पश्चात् भी मानव मन का कण्ठहार बना हुआ है। आखिर क्यों? निश्चय ही अपनी अनुपम उपयोगिता के बल पर ही। वह मानव की पहचान और अस्मिता से जुड़ गया है। तभी तो भारतीय मानस ने घोषणा की थी—

साहित्य संगीत कला विहीनः
साक्षात् पशुः पुच्छ-विषाण-हीनः।

साहित्य ही मनुष्य और पशु की विभेदक रेखा है। आज तो साहित्य और समाज एक दूसरे के अनुपूरक और पर्याप्य बन चुके हैं। 'साहित्य समाज का दर्पण हैं' यह उक्ति स्वयं इस बात का प्रमाण है कि साहित्य और समाज एक दूसरे से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। समाज की हर क्रिया, हर मनोदशा, हर अभियान और हर भंगिमा उसके साहित्य-दर्पण में प्रतिबिम्बित होती रहती है। विश्व के किसी भी समाज के साहित्य को उठाकर देखें, हमें उसमें उस समाज के सुख-दुःख, उत्थान-पतन, आकांक्षा और प्रगति-यात्रा का भावात्मक चलचित्र देखने को मिल जायेगा।

किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि साहित्य समाज की एक तटस्थ तस्वीर होता है। समाज और साहित्य का संवाद एक पक्षीय नहीं होता। जहाँ साहित्य समाज से प्रभावित और परिवर्तित होता है वहीं साहित्य में भी समाज को प्रभावित करने की अपार क्षमता होती है। साहित्य मुर्दा समाज में प्राण फूँक सकता है, क्रान्ति करा सकता है और चाहे तो उसें मानसिक विलासिता के पंक में भी डुबो सकता है।

साहित्य का उद्देश्य—'साहित्य का उद्देश्य क्या होना चाहिए' यह एक पुरानी बहस है। कुछ लोग कला (साहित्य) का कोई अलग उद्देश्य नहीं मानते। साहित्य रचना का उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' अर्थात् अपने अन्तःकरण की सन्तुष्टि के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। किन्तु दूसरे लोग साहित्य का उद्देश्य लोक-हित मानते हैं। 'हितेन सहिंतं साहित्यम्' जो 'हित' को लेकर चले वही साहित्य है। यह 'हित' यदि रचयिता का माना जाय तब तो यह बड़ी ओछी बात होगी। कला का सौदा होगा। अतः साहित्य में जो हित जुड़ा है वह सम्पूर्ण लोक का ही हित है। संस्कृत के साहित्य शास्त्रियों ने भी साहित्य को शिवत्व (लोक-कल्याण) की साधना माना है।

लेकिन साहित्य एक कलात्मक रचना है। जब यह किसी खास विचारधारा या प्रचार तन्त्र की वकालत करने लगेगा तो वह साधारण उपदेश या नीरस चर्चा बन जायेगा। उसकी निष्पक्षता, नित्य नवीनता और सार्वभौमिकता समाप्त हो जायेगी। अतः साहित्य के द्वारा जो कुछ कहा जाना है वह सीधे सपाट ढंग से नहीं, कलात्मक ढंग से कहा जाना चाहिए। संक्षेप में साहित्य का उद्देश्य मनुष्य जीवन को पूर्णता की ओर ले जाना है। उसे आत्म कल्याण का मार्ग दिखाना है।

हिन्दी-साहित्य और समाज—साहित्य के स्वरूप, लक्ष्य और समाज के साथ उसके सम्बन्ध को लेकर जो भी बातें ऊपर कही गयी हैं क्या वे हिन्दी साहित्य पर भी लागू होती हैं? अवश्य होती हैं। यदि हम हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होगा कि समाज की हर मुद्रा हिन्दी साहित्य के दर्पण में प्रतिबिम्बित हुई हैं।

वीरगाथा कालीन तलवारों की झनकार, भक्तिकालीन निराशा के ईश्वर परक उद्‌गार, रीतिकालीन विलास और ऐश्वर्य का शृंगार और आधुनिक समाज की विविध समस्याओं और दृष्टिकोणों का प्रबुद्ध विस्तार, सभी कुछ तो हिन्दी-साहित्य में चित्रित हुआ है। इसके साथ ही हिन्दी साहित्य ने समय-समय पर निराशा और तिरस्कार के समुद्र में डूबते समाज के लिए आशा और संघर्ष का भी संदेश दिया है। कबीर, तुलसी, भूषण, भारतेन्दु, मैथिलीशरण तथा दिनकर आदि की प्रेरक वाणियों ने हिन्दी-समाज को नया रूप, नया चिन्तन और नया मार्ग प्रदान किया है।

उपसंहार—साहित्य और जीवन का अटूट सम्बन्ध है। दोनों ही अपने स्वरूप और संदेश के लिए एक दूसरे पर आश्रित हैं। एक बिम्ब है तो दूसरा दर्पण है। एक स्रष्टा है तो दूसरा रचना है। दोनों को एक दूसरे का प्रेरक और पूरक बन कर रहना है। साहित्य के माध्यम से ही समाज 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की भव्य साधना कर सकता है और समाज को लक्ष्य बनाकर चलने पर ही साहित्य अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकता है।

२. साहित्य और उसकी उपयोगिता

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना, (२) साहित्य तथा जीवन, (३) साहित्य की उपयोगिता—(अ) शान्ति एवम् सन्तोष दाता (ब) भरणपोषण से मुक्ति (स) सामाजिक कल्याण, (द) आनन्द का मूल, (४) उपसंहार।

प्रस्तावना—आधुनिक संघर्ष के युग में प्रत्येक वस्तु का मूल्यांकन उसकी उपयोगिता के आधार पर किया जाता है। साहित्य हमारी हृदय-तन्त्री को झंकृत करने वाला तथा हमारी मानसिक क्षुधा दूर करने वाला है। ऐसी शीतल छाया है जिसके नीचे बैठकर हमारा संघर्ष जनित सन्ताप, पारस्परिक द्रोह आदि की समाप्ति होती है। सच्चे सुख का अनुभव होता है।

साहित्य तथा जीवन—मानव समाज की ज्ञान-राशि के संचित भण्डार को साहित्य कहा जाता है। वास्तव में साहित्य तथा जीवन का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। जीवन रूपी डाल पर प्रस्फुटित, सम्पूर्ण साधना-सुरभि को समेटे एक सुकोमल सुमन के समान है यह साहित्य। विभिन्न विद्वानों के विचार में मानसिक तृप्ति की धरती से ही साहित्य का फूल विकसित होना माना है। साहित्य को जीवन के नश्वर क्षणों को अमर बनाने का प्रयास मानते हुए कुछ विद्वानों ने मानव की अनुकरण प्रकृति को साहित्य का मूल उद्‌गम माना है और साहित्य को जीवन की नैसर्गिक विभूति माना है। प्राणिमात्र की हित-भावना से प्रेरित होकर ही तो वाल्मीकि के मुख से यह छन्द बरबस निकल पड़ा—

माँ निषाद प्रतिष्ठां त्वमगः शाश्वती समाः।
यत्क्रौंचमिथुनाद्रमेकं बधीः काम गोहितम्॥

साहित्य की उपयोगिता—(अ) शान्ति एवम् सन्तोष—साहित्य ऐसी सम्पदा है जिसे पाकर व्यक्ति धन्य हो जाता है। अपने प्राणों में आह्लाद का अनुभव करता है। आत्मा में एक आलोक का अनुभव करता है। साहित्य व्यक्ति को शान्ति देता है। सन्तोष प्रदान करता है। व्यक्ति हृदय में इस नैसर्गिक विभूति से सौन्दर्य का अनुभव करता है। तुलसीदास ने रामचरित मानस में लिखा है—'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।" वास्तव में रामचरित लिखकर उन्हें परम शान्ति एवं सन्तोष प्राप्त हुआ।

(ब) भरण-पोषण से मुक्ति—साहित्य व्यक्ति को आत्मिक तृप्ति प्रदान करता है। भारत में तो अभी सम्भव नहीं हो सका है किन्तु विदेशों में साहित्यकार तथा कलाकार की रोटी तथा उसके परिवार का भरण-पोषण साहित्य द्वारा ही होता है। वहाँ साहित्यकार को रोटी की चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

(स) सामाजिक कल्याण—साहित्यकार भी एक सामाजिक प्राणी है। उसकी साधना का उद्देश्य व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक होता है। वह कभी भी समाज की उपेक्षा नहीं कर पाता। "सुरसरि सम सब कहँ हितु होई" की भावना उसके साहित्य के मूल में होती है। इसीलिए तो साहित्य का मूल्यांकन करते हुए कहा गया है—

अन्धकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
अन्धा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है॥

(द) **आनन्द का मूल**—उपयोगी साहित्य द्वारा यदि हमारी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है तो ललित साहित्य हमारी आध्यात्मिक सन्तुष्टि में सहायक होता है। हमारे प्राणों को संजीवनी प्रदान करता है। चित्त को आनन्दित कर देता है।

४. **उपसंहार**—टॉल्सटॉय ने साहित्य के विषय में कहा है—"साहित्य कला की भाव-भूमि पर मानव-एकता का सर्वश्रेष्ठ साधन है।"

साहित्य के बिना मनुष्य पूर्णतः पशु के समान ही है। केवल एक बात का अन्तर रह जाता है। पशु के पूछ होती है। सींग होते हैं किन्तु मनुष्य के न पूछ होती है और न सींग। इसलिए साहित्य प्रेमी बनो। उसमें विशेष रुचि लो।

"साहित्य संगीत कला विहीनः। साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः॥"

३. हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. राष्ट्रीय भावना का तात्पर्य। ३. हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना। ४. राष्ट्रीय भावना के कवि। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना—हिन्दी काव्य में वीर रस की प्रत्येक काल में प्रधानता रही है। शृंगार, वीर तथा शान्त रस महाकाव्यों में छाये रहे हैं। किन्तु सर्वाधिक प्रधान वीर रस ही रहा। वाल्मीकि ने रामायण में राम-रावण युद्ध का वर्णन वीर रस में ही किया। स्पेंशर ने "ट्रौजन युद्ध" में वीर रस को ही महत्त्व दिया। देश के गौरव गान को अपने काव्य का उद्देश्य बनाकर व्यक्ति का मन राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत बनाने में पूर्ण सहयोग किया।

राष्ट्रीय भावना का तात्पर्य—राष्ट्रीय भावना मात्र वीर भावना ही नहीं है अपितु वह काव्य जो राष्ट्र में सामाजिक तथा सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न कर सके, सच्ची राष्ट्रीय भावना का काव्य है। किसी भी कवि द्वारा नागरिकों का ध्यान देश के अतीत और उसके गौरव की ओर आकर्षित करना भी राष्ट्रीय भावना है। यदि कोई कवि देश के सांस्कृतिक तथा राजनीतिक सुधार से सम्बद्ध काव्य रचना करता है तो यह भी उस कवि की राष्ट्रीय भावना का द्योतक है। इसलिए देशप्रेमी कवि का यह कर्त्तव्य है कि वह देश की वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रण करे।

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना—भारत की सांस्कृतिक एकता के गीत सदा गाये गये हैं। हिन्दी काव्य का वीरगाथा काल आश्रयदाता की प्रशंसा का काव्य है। युद्ध के क्षेत्र में वीरों को उत्साहित करना ही वीरगाथा काल की विशेषता रही। भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप विभिन्न रूपों में हमारे सम्मुख आया है।

राष्ट्रीय भावना के कवि—भक्तिकाल में वीरता का वर्णन व्यक्तिगत नहीं रहा। यह वर्णन इस काल में सार्वजनिक हो गया। 'राम के गौरव मान से भारतीयों के भग्न हृदय को एक सहारा प्राप्त हुआ।

भूषण कवि ने 'छत्रसाल दशक', 'शिवा बावनी' तथा 'शिवराज भूषण' की रचना करके राष्ट्रीय भावना का उत्तम स्वरूप हमारे सम्मुख रखा। हिन्दुत्व से परिपूर्ण उनके काव्य को बहुत से आलोचकों ने भूषण को जातीय कवि कहा है। किन्तु उनकी यह आलोचना एक पक्षीय है। सभी पक्षों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भूषण का काव्य राष्ट्रीय-भावना से ओत-प्रोत था।

भारतेन्दु युग में राष्ट्रीयता का सूत्रपात माना जा सकता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने युग की आशाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप राष्ट्रीय भावनाओं को देशवासियों के समक्ष रखा। 'हरिऔधजी' ने अपने महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' में राष्ट्रीय भावना को हीं प्रमुखता दी।

मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य 'साकेत' तथा राष्ट्रीय कृति 'भारत-भारती' राष्ट्रीय भावना के काव्य हैं जिनकी अतीत की कथाएँ हृदय में वीरता का संचार करती हैं। प्राचीन स्वर्णिम गौरव के प्रति ललक उत्पन्न करने वाली हैं। पतन से उन्नत बनाने को प्रेरित करती हैं।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों के गीत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के विद्रोही स्वर, रामधारी सिंह 'दिनकर' की "पुकार" तथा "कुरुक्षेत्र" साहसिक जीवन का राष्ट्रीय सन्देश है।

सुभद्राकुमारी चौहान की "झाँसी की रानी" राष्ट्रीय जागरण का सन्देश है। माखनलाल चतुर्वेदी, श्यामनारायण पाण्डेय आदि के काव्यों में राष्ट्रीय भावना कूट-कूटकर भरी हुई है।

उपसंहार—साहित्यकार अपने राष्ट्र को कदापि नहीं भूल सकता। कवियों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्रान्ति की भावना सदा से रही है। काव्य में जन-जागरण का सन्देश उनके काव्य की प्रमुखता रही हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक राष्ट्रीय भावना किसी न किसी रूप में उनके काव्य में देखी जा सकती हैं।

४. साम्प्रदायिक एकता
या राष्ट्रीय एकता
या सर्वधर्म सद्‌भाव

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना, (२) साम्प्रदायिकता क्या है, (३) साम्प्रदायिकता का परिणाम, (४) साम्प्रदायिक एकता की आवश्यकता, (५) उपसंहार।

प्रस्तावना—विश्व का विशालतम् प्रजातन्त्र भारत अपनी गौरवशाली परम्पराओं और अपने सार्वभौम मानदण्डों के कारण विशाल है। मात्र भौगोलिक विस्तार अथवा विराट जनसंख्या के कारण नहीं। उदारता, सहिष्णुता, चिन्तन और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता यही वे गुण हैं जिन्होंने उसे 'अनेकता में एकता' के सूत्र की साधना के योग्य बनाया है। आचार, विचार, भाषा, भूषा और धर्म की विविधता को राष्ट्रीयता के एक सूत्र में पिरोकर चलाना सहज कार्य नहीं है, किन्तु भारत ने युगों से इसे अपनाया है और व्यवहार में उतारा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कामाख्या से द्वारका तक का यह विस्तार कहीं न कहीं भावना के सूक्ष्म धागों से ऐसा बँधा हुआ है कि एक भी तार को छेड़ने से सारा का सारा तन्त्र स्पंदित हो जाता है। करोड़ों दिल एक साथ धड़कने लगते है और एक ही ध्वनि गूँजती है भारत, भारत और सिर्फ भारत।

साम्प्रदायिकता क्या है?—आज एक शब्द चारों ओर सुनाई दे रहा है। घर, बाहर, सड़क, अखबार सभी जगह 'साम्प्रदायिकता' की बड़ी चर्चा है। बहुधा सम्प्रदाय और धर्म को एक समझने की भूल की जाती है। भारत ने जिस धर्म का संकेत चार पुरुषार्थों के प्रसंग में किया है उसका साम्प्रदायिकता से कुछ लेना देना नहीं। वह तो सार्वभौम मानव-धर्म है। धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्॥

धैर्य, क्षमा, आत्मसंयम, चोरी न करना, पवित्र भावना, इन्द्रियों पर नियन्त्रण, बुद्धिमत्ता, विद्या, सत्य और क्रोध न करना। तनिक सोचा जाय कि संसार का कोई भी ऐसा धर्म है जिसमें इन गुणों को स्थान न मिला हो? सभी धर्म इनको अपना आदर्श और अभिन्न अंग मानते हैं। तब तो धर्म सारे संसार में केवल एक है। हाँ उस धर्म की अपने-अपने ढंग से व्याख्या करने वाले सम्प्रदाय अनेक हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि। किसी भी सम्प्रदाय का सदस्य होना कोई बुरी बात नहीं किन्तु सिर्फ अपने सम्प्रदाय को ही श्रेष्ठ मानकर अन्य मतावलम्बियों को हेय दृष्टि से दखना या एक सम्प्रदाय को दूसरे से द्वेष की शिक्षा देना नास्तिकता है। इसी को आज साम्प्रदायिकता कहा जा रहा है। धर्म के नाम पर मनुष्य को मनुष्य का गला काटने की दुष्प्रेरणा, सम्प्रदाय के नाम पर दूसरों का घर जलाने और नारियों के अपमान की कुशिक्षा दिया जाना शैतानियत है, दानवता है। इसे धर्म कहना धर्म का और ईश्वर का घोर अपमान है।

साम्प्रदायिकता का परिणाम—साम्प्रदायिक द्वेष के जहर को इस देश ने शताब्दियों से झेला है। दुःख का विषय तो यह है कि स्वतन्त्रता के चालीस वर्षों के उपरान्त भी हम इस लज्जा जनक पहलू से मुक्त नहीं हो पाये। १९४७ में देश के विभाजन के समय खून की जो होली खेली गयी थी वह आज भी कोढ़ के रूप में चाहे जब फूट निकलती है। कभी अहमदाबाद, कभी महाराष्ट्र, कभी बिहार तो कभी मुरादाबाद और मेरठ या अयोध्या से यह नासूर बहने लगता है। इसका परिणाम होता है हत्या, आगजनी, लूट, बलात्कार और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में देश की बदनामी। करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति का विनाश होता है। द्वेष की खाइयाँ और गहरी हो जाती है। संदेह की लक्ष्मण रेखाएँ आत्मीयों को भी बेगाना बना देती हैं।

जब-जब होता है दंगा,
आदमी हो जाता है और भी नंगा।
धर्म और मजहब का नाम,
व्यर्थ में होता है बदनाम,
आँखों से बरसने लगती घृणा की धारा,
विवेक को बंदी कर लेती है उन्माद की धारा,
पड़ौसीपन सड़कों पर सिसकता है
आदमी पर आदमी का विश्वास—
चोरों की तरह खिसकता है।

इस साम्प्रदायिक दुराग्रह ने ही तो सुकरात को जहर परोसा है, ईसा को सूली पर चढ़ाया है, गाँधी के जिगर में गोली उतारी है और इस धरती माता के वात्सल्य को निर्दोष लहू से लथपथ बनाया है।

साम्प्रदायिक एकता की आवश्यकता—आज देश को साम्प्रदायिक सद्भाव की जबरदस्त आवश्यकता है। अपनी चारों तरफ दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि हम अप्रसन्न और ईर्ष्यालु पड़ौसियों से घिरे हुए हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक कुचक्र हमको नीचा दिखाने की निरन्तर चेष्टा में लगे हैं। सीमाओं पर छेड़-छाड़ आतंकवाद को आश्रय और उकसाना और सबसे बढ़कर देश के साम्प्रदायिक वातावरण को दूषित करना, ये वे करतूतें हैं जिनमें कि भारत की स्थिरता और अखंडता को ध्वस्त करने का प्रयास किया जा रहा है। हाल ही में हुये साम्प्रदायिक दंगों की शैली और विदेशी तत्त्वों का उसके पीछे होना, एक बड़े खतरे की सूचना है। अगर हमने साम्प्रदायिक एकता को नष्ट होने से न बचाया तो, देश को, हमारी स्वतन्त्रता को, हमारे अस्तित्व को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। साम्प्रदायिक दंगों से देश का प्रशासन और अर्थतन्त्र बुरी तरह प्रभावित होता है। एक दूसरे के प्रति अविश्वास और द्वेष से देश की आन्तरिक शान्ति और बाह्य सुरक्षा संकट में पड़ जाती है। अतः यह आवश्यक है कि हर कीमत पर साम्प्रदायिक सद्भाव की रक्षा की जाय।

उपसंहार—आज देश में साम्प्रदायिक वैमनस्य एक संक्रामक रोग की तरह व्याप्त होता जा रहा है। सैकड़ों वर्षों से पास-पास रहने वाले लोग तनिक देर में एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर हमारा सर शर्म से झुक जाता है। 'घर में अँधेरा और मस्जिद में चिराग जलाने' की कहावत हम पर चरितार्थ होने लगती है। यह रोग कैसे दूर हो? इस समस्या का उपचार क्या है? राजनीतिक लोग तो हर समस्या को एक अलग ही चश्मे से देखते हैं। उनके ध्यान में जनता नहीं जनता के वोट होते हैं। यह उनके बस का रोग नहीं और न धर्म के स्वंयभू ठेकेदार ही इसका हल निकाल सकते हैं। यदि साम्प्रदायिक दंगे बंद हो जायेंगे तो इनका 'चून और चौधराहट' कैसे चल पायेगी। ये भला साम्प्रदायिक सद्भाव

क्यों चाहेंगे? इसके लिए तो जनता को स्वयं आगे आना होगा। इन दलालों और ठेकेदारों की छुट्टी करनी होगी, एक दूसरे को समझना और झेलना सीखना पड़ेगा। दंगों की सबसे क्रूर मार तो साधारण जनता को सहनी पड़ती है। ये नेता और धर्म के विक्रेता कभी घाटे में नहीं जाते। अतः हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध सभी को इन धूर्तों के जाल से मुक्त होना है और एक दृढ़ प्रगतिशील और बन्धुत्व भरे भारत का निर्माण करना है।

५. भारतीय समाज और भावात्मक एकता

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. भावात्मक एकता। ३. एकता में बाधक तत्व। ४. भावात्मक एकता के उपाय। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना—भावात्मक एकता आज देश की राष्ट्रीय समस्या बनकर प्रत्येक देशवासी के सम्मुख उपस्थित है। देश के हितैषी देश के उत्तम भविष्य के लिए चिन्तित है। उन्हें सभी योजनाओं की सफलता तथा भावी युवकों की सुख समृद्धि देश के निवासियों की भावात्मक एकता पर निर्भर दिखाई दे रही है। जीवन के सभी उद्देश्यों की एकता, भावों और विचारों में एकता ही भावात्मक एकता है जिसके लिए हर देशवासी प्रयत्नशील है।

भावात्मक एकता—भारत में भौगोलिक एकता तो है किन्तु राजनीतिक एकता का अभाव है। अशोक, अकबर जैसे महान् सम्राटों ने एकता के प्रयत्न किये लेकिन किसी को भी पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई। अंग्रेजों ने राजनीतिक एकता स्थापित करने में बहुत कुछ सफलता प्राप्त की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भावात्मक एकता के अभाव को दूर करने का प्रयत्न निरन्तर किया जा रहा है। भावात्मक एकता बिना देश की राजनीतिक तथा आर्थिक एकता सम्भव नहीं हो पा रही है।

एकता में बाधक तत्त्व—जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा भाषावाद भावात्मक एकता के मार्ग की ऐसी बाधाएँ हैं जिनके रहते भावात्मक एकता तो सम्भव है ही नहीं, देश का विकास भी असम्भव है। 'वादों' का ऐसा जाल देश में फैलता जा रहा है जिसमें फँसा भारतीय समाज कुछ भी सोचने और करने की स्थिति में नहीं है। उसकी गति साँप छिछूंदर जैसी बन गयी है। एक ओर मद्रास हिन्दी-विरोधी आन्दोलन है तो दूसरी ओर पंजाबी प्रान्त की माँग बार-बार की जा रही है। हिन्दुओं के हित की बात हिन्दु महासभा कर रही है तो मुसलमान अपने आपको अल्पसंख्यक बताते हुए अधिकाधिक संरक्षण और सुरक्षा के लिए आन्दोलित है।

भाव सूत्र के बन्धन से मुक्त, प्रेम, विश्वास, एकता आदि के सद्गुणों से दूर हम भारतवासी नैतिकता से दूर होते जा रहे हैं। ईमानदारी से हमारा नाता टूट गया है। जन्मभूमि के प्रति आदर का भाव कूच कर गया है।

भावात्मक एकता के उपाय—भावात्मक एकता के लिए विद्यार्थियों में एकता का भाव आना आवश्यक है। डॉ० सम्पूर्णानन्द समिति ने विद्यालयों में राष्ट्रीय गान को अनिवार्य कराया।

विद्यालय की समान वेश-भूषा की संस्तुति की ताकि विद्यार्थियों में ऊँच-नीच, अमीर गरीब की भावना उत्पन्न न हो। पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण किया। त्रि-भाषायी-सूत्र भी भावात्मक एकता के लिए एक उत्तम पग है।

उपसंहार—सभी राजनीतिक दल भावात्मक एकता की आवश्यकता अनुभव करते हैं। चीनी आक्रमण ने इस एकता को बनाये रखने में और भी अधिक सहायता पहुँचाई है। हम यह जान चुके हैं कि एकता ही वह शक्ति है जिसके बल पर शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

६. दूरदर्शन

अथवा **दूरदर्शन और सामाजिक जीवन**

अथवा **दूरदर्शन का सामाजिक जीवन पर प्रभाव**

(माध्य० शिक्षा बोर्ड, १९९३)

रूपरेखा—१. प्रस्तावना, २. सामाजिक जीवन और दूरदर्शन, ३. दूरदर्शन का समाज पर दुष्प्रभाव, ४. आधुनिक प्रसार, ५. उपसंहार।

प्रस्तावना—दूर स्थित वस्तुओं को ध्वनि के साथ देखना ही दूरदर्शन है। विज्ञान के इस प्रगतिगामी युग में हमें वह सब कुछ प्राप्त हो गया है जो कल्पना मात्र समझा जाता था। दूर की वस्तु को देखना विज्ञान की ही आश्चर्यजनक देन है। चित्रपट से भी अधिक ज्ञानवर्धन और मनोरंजक 'दूरदर्शन' ऐसा साधन है जिसकी लोकप्रियता का लोहा सब एक मत से स्वीकार करते हैं।

सामाजिक जीवन और दूरदर्शन—दूरदर्शन मनोरंजन का तो अद्वितीय साधन है ही, ज्ञानवर्धन का भी अनूठा साधन है। समाचार परिक्रमा विश्वविद्यालय-शिक्षा-प्रसारण, सामयिक सूचनाएँ, कृषि सम्बन्धी-ज्ञान नाटक तथा संगीत, कवि-गोष्ठियाँ, विभिन्न उत्सवों, धारावाहिक तथा खेलों का सीधा प्रसारण दर्शकों को आह्लादित करने वाला है। उदासी को दूर करने वाला है।

दुर्गापूजा, होली, दीपावली, ईद, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, पन्द्रह अगस्त, गणतन्त्र दिवस आदि पर प्रसारित विशेष कार्यक्रमों से दर्शकों को अपने उत्सवों का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है।

मनोरंजन के क्षेत्र में दूरदर्शन ने बहुत कुछ दिया है। नाटक, रंगोली, चित्रहार, चित्रमाला के अतिरिक्त नवीन तथा प्राचीन कलात्मक फिल्मों को 'दूरदर्शन' पर देखकर भरपूर मनोरंजन हमें प्राप्त होता है।

शिक्षण कार्यक्रम का नियमित प्रसारण, बाजार तथा मौसम की जानकारी प्रतिदिन देकर दूरदर्शन ने सभी कमियों को दूर करने का प्रयास किया है।

गृह सज्जा, अचार तथा स्वादिष्ट भोजन बनाना, कढ़ाई सिलाई का यथोचित ज्ञान कराना नारी-जगत के लिए दूरदर्शन की अनूठी देन है।

जन-जागरण के लिए भी दूरदर्शन अत्यन्त उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण है।

दूरदर्शन का समाज पर दुष्प्रभाव—दूरदर्शन का युवकों पर उत्तम प्रभाव नहीं पड़ रहा है। मनोरंजक कार्यक्रम—चित्रहार, फिल्मादि देखने में वे अपनी शिक्षा को भी भूल जाते हैं। अध्ययन के समय को दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने में व्यतीत करते हैं।

खेलों के सीधे प्रसारण में भी वे अपना बहुमूल्य समय नष्ट करते हैं। क्रिकेट मैच के प्रसारण के समय तो आजकल दूरदर्शन के सम्मुख बैठे रहना आज के युवकों की आदत सी बन गयी है। कार्यालय के बाबू, बैंक के अधिकारी, विद्यालय के शिक्षक और शिक्षार्थी भी क्रिकेट मैच के प्रसारण के समय दूरदर्शन की ओर अपनी दृष्टि जमा देते हैं और दैनिक कार्यों की ओर भी ध्यान नहीं देते।

मारधाड़ से पूर्ण चित्रों के दृश्यों को देखकर बच्चे मारधाड़ तथा चोरी आदि की बुरी आदतों में पड़ जाते हैं। अश्लील चित्रों का भी चरित्र पर उत्तम प्रभाव नहीं पड़ता।

नेत्र ज्योति पर दुष्प्रभाव भी दूरदर्शन के ही कारण है।

आधुनिक प्रसार—दूरदर्शन का आधुनिक काल में विशेष प्रसार और प्रचार हो रहा है। २५ जनवरी १९२६ को जॉन बेयर्ड ने दूरदर्शन का आविष्कार किया जिसकी प्रसार गति प्रतिदिन

वृद्धि को प्राप्त हो रही है। भारत में दूरदर्शन को सन् १९५९ में प्रसार योग मिला। आज यह दशा है कि मनोरंजन तथा ज्ञान के क्षेत्र में दूरदर्शन से बढ़कर अन्य कोई उत्तम साधन नहीं है।

कितना आश्चर्यजनक आविष्कार है यह जिसमें न केवल दूर स्थित चित्र देखे जाते हैं अपितु ध्वनि भी सुनी जाती है जो दर्शकों के भरपूर मनोरंजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उपसंहार—विज्ञान के चरण प्रत्येक दिशा में बढ़ रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में वृद्धि होती जा रही है। दूरदर्शन देश-विदेश की हर प्रकार की जानकारी देने में जितना सक्षम है, विज्ञान का अन्य कोई साधन अभी इतना उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ है। आर्थिक, सामाजिक तथा ज्ञान के क्षेत्र में दूरदर्शन का महत्व सभी स्वीकार करते हैं। तथा इसे मनोरंजन का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते हैं।

७. पर्यावरण प्रदूषण

अथवा

पर्यावरण और बच्चे

रूपरेखा—१. प्रस्तावना, २. पर्यावरण की समस्याएँ, ३. पर्यावरण प्रदूषण, ४. प्रदूषण सुधार के उपाय, ५. पर्यावरण और बच्चे, ६. उपसंहार।

प्रस्तावना—पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व रंगमंच पर एक ऐसी समस्या के रूप में उपस्थित हुआ है जिसका समाधान किसी भी रूप में सम्भव दिखाई नहीं दे रहा। वन तथा मिट्टी विकृत होती जा रही है वायुमण्डल का विषैलापन सब पर अपना दुष्प्रभाव प्रकट कर रहा है। यदि पर्यावरण प्रदूषण को आज की सबसे बड़ी चुनौती कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ने ८२ देशों के प्रतिनिधियों के सम्मुख पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को पृथ्वी का भविष्य बताया और कहा कि मानव जैसे ही इस पृथ्वी पर जन्म लेता है, अपने को चारों ओर से एक विशेष परिस्थिति में घिरा पाता है।

पर्यावरण की समस्याएँ—देश के प्रबुद्ध नागरिक तथा सुयोग्य नेता पर्यावरण की विकट समस्याओं के प्रति सावधान हैं और समस्याओं के समाधान के लिए प्रयत्नशील भी हैं किन्तु सीमित ऊर्जा तथा लक्ष्य प्राप्ति हेतु पर्यावरण की विभिन्न समस्याएँ सुलझ नहीं पा रही है। देश के शिक्षाविद् इस प्रयास में है कि बालकों में श्रेष्ठ संस्कार उत्पन्न किये जायें। पर्यावरण समस्या से उन्हें परिचित किया जाय। जलवायु में विकृति, गैसों द्वारा वातावरण का प्रदूषित होना, तापमान में वृद्धि, वनों का विनाश, अल्प वर्षा आदि समस्याएँ हमारे चारों ओर सुरसा के समान अपना मुख फैलाये खड़ी हैं।

पर्यावरण प्रदूषण—उद्योगों से वायु तथा जल दोनों ही दूषित होकर मनुष्य तथा पशु-पक्षियों को अस्वस्थ बना रहे हैं। भारत में कागज मिलों का कचरा नदियों के जल को दूषित बना रहा है एवम् नाना प्रकार के रोगों को जन्म दे रहा है। नगरों की सीवर लाइन पवित्र गंगा को भी अपवित्र बना रही है। जर्मन की राइन नदी भी अब एक नाला बनकर रह गयी हैं। वायु का प्रदूषण एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचकर उसे दूषित बना रहा है। विभिन्न रोगों को जन्म दे रहा है।

प्रदूषण सुधार के उपाय—प्रदूषण सुधार के लिए आज सर्वाधिक आवश्यकता भारतीय संस्कृति की विकृति से रक्षा है। भारतीय संस्कृति में मानवता अब भी शेष है। सभी प्रकार के विरोधों का सामना करते हुए भी वह विनिष्ट नहीं हुई है। अमर है। भारतीय संस्कृति सबको सुखी देखना चाहती है। किसी को दुःखी नहीं देखना चाहती। पश्चिमी भोगवादी सभ्यता ने मनुष्य की भोगलिप्सा में तीव्रता ला दी है। उसने अपनी लिप्सा की तृप्ति के लिए धरती-माँ

के साथ भी अन्यथा किया है। मनुष्य की यह भोगलिप्सा कम होनी चाहिए ताकि पर्यावरण की समस्याओं का बोझ कम हो सके।

पर्यावरण और बच्चे—उत्तराखण्ड का 'चिपको आन्दोलन' एक जीवन्त विचार है जिसके विषय में श्री सुन्दरलाल बहुगुणा का कहना है—"छोटे-छोटे बालकों में जो चिपको आन्दोलन में महिलाओं के साथी रहे हैं, धरती माता की रक्षा के लिए अभूर्तपूर्व त्याग की भावनाओं का विकास हो रहा है।"

बच्चा अपने माता-पिता से ही प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करता है जो उसके उत्तम भविष्य की आधारशिला बनती है। पशु-पक्षियों या पेड़-पौधों के प्रति अगाध प्रेम-भावना का बीजारोपण भी बच्चे के माता-पिता पर निर्भर है। बच्चों की दृष्टि भी अत्यन्त तीक्ष्ण होती है। तथापि आयु के साथ ही उसकी तर्क-शक्ति तथा ज्ञान-शक्ति का विकास होता है जिसको उसके माता-पिता के पश्चात् शिक्षक ही पूर्णतया विकसित कर सकता है।

विकसित देशों में तो प्रारम्भिक कक्षाओं में ही पर्यावरण की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। एन० सी० ई० आर० टी० के पाठ्यक्रम में भी पर्यावरण शिक्षा पर ध्यान दिया गया है। बच्चों को बाल-गीतों द्वारा पर्यावरण की शुद्धता का महत्त्व भली भाँति समझा देना चाहिए। कहानियों द्वारा भी पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान कराया जा सकता है। वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा एकांकी नाटक भी बच्चों में पर्यावरण ज्ञान में सहायक हो सकते हैं।

उपसंहार—बच्चों में कुछ कर दिखाने की लालसा होती है। वह कल का नागरिक कहा जाता है। ये बच्चे पर्यावरण के विषय में ज्ञान प्रदान करके उसे शुद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण योग दे सकते हैं। वातावरण को सुखद बना सकते हैं और रोगों से मुक्ति दिला सकते हैं।

८. वैज्ञानिक आविष्कार

अथवा भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

अथवा विज्ञान के बढ़ते चरण

अथवा आधुनिक युग में विज्ञान की महत्ता

अथवा मानव कल्याण में विज्ञान का योगदान

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना, (२) विज्ञान की प्रगति, (३) विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक आविष्कार। (क) कृषि एवं भोज्य पदार्थों के क्षेत्र में। (ख) वस्त्रों के क्षेत्र में। (ग) भवन निर्माण और वास्तुकला के क्षेत्र में। (घ) यातायात के क्षेत्र में। (ङ) चिकित्सा के क्षेत्र में। (च) संवाद एवं संचार के क्षेत्र में। (छ) शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में। (ज) सुरक्षा के क्षेत्र में। (४) अन्य विविध चमत्कार। (५) उपसंहार।

प्रस्तावना—वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के रहस्यों और सृष्टि की अनन्तता से चकित हो उसके अज्ञात नियंता को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था—

'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'

जो आत्मा का, बल का दाता है, सारा विश्व जिसकी प्रशंसा कर रहा है ऐसे किस देव को हम यज्ञ द्वारा प्रसन्न करें। यदि आज यही प्रश्न किया जाय तो एक स्वर से अनेकानेक विद्वान् यही कहेंगे कि वह है 'विज्ञान'। परम व्योम से पाताल तक जिसकी विजय दुन्दुभि का घोष गूँज रहा है, प्रकृति जिसके आदेशों का सर झुका कर पालन कर रही है और जिसने मानव को जीव शिरोमणि बना दिया है। स्वयं परमात्मा भी तो विज्ञान रूप ही है—

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'

हम उसी की कृपा से जी रहे हैं। उसी के संकेत से मर रहे हैं। वह हमारे जीवन के कण-कण में समा गया है।

2. विज्ञान की प्रगति—विज्ञान क्या है? क्रमबद्ध विस्तृत ज्ञान। मानव की जिज्ञासाओं का समाधान। सत्य के स्वरूप का अनुसंधान। सृष्टि से निकटतम पहचान। अनादि काल से मानव विज्ञान की साधना में निरत है। जीवन को सुखी और सुविधामय बनाने के लिए खोजी गयी प्रत्येक युक्ति विज्ञान का ही तो आदिम रूप है। मिट्टी खोदने की खुरपी से लेकर ट्रैक्टर तक, हथठेल से लेकर विद्युत रेल तक, गुलेल से लेकर अणुबम तक और पालकी से लेकर अपोलो तक सब विज्ञान का ही तो इतिहास है। किन्तु बीसवीं सदी ने मानव को विज्ञान की चरम साधना तक पहुँचा दिया है। नित्य नये चमत्कार देखने को मिल रहे हैं। हर क्षेत्र में विज्ञान की विजय पताका लहरा रही है।

3. विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक आविष्कार–

(क) कृषि एवं भोज्य पदार्थों के क्षेत्र में—काठ के हलों से आज हम ट्रैक्टरों तक आ पहुँचे हैं। जोतने से लेकर भण्डारण तक अन्न-उत्पादन का सारा कार्य यन्त्र कर रहे हैं। थ्रेसर हैं, पम्प हैं, कटर हैं, बोरियों में भरने वाले और ठेलों पर लादने वाले यन्त्र भी किसान को प्राप्त हैं। सिंचाई के लिए इन्द्रदेव की आराधना नहीं करनी होगी। ट्यूब-बैल या पम्प से जब चाहिए, पानी लीजिए। फसल को कीटों से बचाने के लिए कीटनाशक औषधियाँ उपस्थित हैं। अन्न के भण्डारण के लिए आधुनिक गोदाम हैं। बीजों की नित्य नयी चमत्कारपूर्ण किस्में निकल रहीं हैं जो कीड़ों एवं मौसम से अप्रभावित रहती हैं।

नये-नये खाद्य पदार्थों की खोजें हो रही हैं। अधिक प्रोटीन, वसा, शर्करा तथा विटामिन-युक्त कृत्रिम खाद्य-पदार्थ तैयार किये गये हैं। मूँगफली से दूध, दही और मिठाई, शाकाहारी अण्डे, शाकाहारी माँस आदि विज्ञान के ही परिणाम हैं।

(ख) वस्त्रों के क्षेत्र में—आज मानव को केवल प्रकृति प्रदत्त सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्रों से सन्तोष नहीं। उसने परम्परागत वस्त्रों से अधिक सुविधाजनक, सुन्दर और टिकाऊ वस्त्रों का आविष्कार किया है। नायलोन, टेरीलीन, टेरीकाट, टैरीबूल, स्ट्रैचलोन, डेकरान न जाने कितने वस्त्रों की कोटियाँ प्राप्त हैं मनमोहक रंगों और अलंकरणों में। इन वस्त्रों से पोशाक बनाने वाली सिलाई मशीनें भी तो विज्ञान की ही देन हैं।

(ग) भवन-निर्माण और वास्तुकला के क्षेत्र में—विशाल बाँध, बहुमंजिली इमारतें, मनोहारी शैल्पिक प्रयोग—भवन-निर्माण के क्षेत्र में विज्ञान की अपूर्व प्रगति के प्रमाण हैं। क्रेन, बुलडोजर, ट्रिलर, मिश्रक, खनन-यन्त्र आदि ने अल्प समय में आश्चर्यजनक निर्माणों को सम्भव बनाया है।

साधारण व्यक्ति के लिए सस्ते और टिकाऊ मकानों के मॉडल, ईंट बनाने के यन्त्र तथा सीमेन्ट भी विज्ञान ने ही प्रस्तुत किये हैं।

(घ) यातायात के क्षेत्र में—साइकिल से लेकर ल्यूखोद (चन्द्रगाड़ी) तक विज्ञान की शानदार परम्परा फैली हुई है। स्कूटर, कारें, लॉरी, ट्रक, रेलें, वायुयान, राकेट और अन्तरिक्षयान आज न केवल भूमण्डल पर ही अपितु अखिल ब्रह्मांड में मानव की प्रगति का साक्ष्य दे रहे हैं। 'चन्द्र विजय' विज्ञान की यातायात क्षमता का आश्चर्यजनक प्रमाण है। शुक्र, मंगल और बृहस्पति के घर में झाँकने वाले मानव के यान, देव-विमानों को भी चुनौती दे रहे हैं। अमेरिका के वीकिंग कार्यक्रम ने मंगल तथा वृहस्पति ग्रह की अलभ्य जानकारी मानव को सुलभ करा दी है। समुद्र के विशाल वक्ष को चीरते हुए विक्रान्त और उसके अन्दर तक के गूढ़ रहस्यों को टटोलने वाली नोटिलस मानव के ज्ञान-विस्तार में निरन्तर क्रियाशील है। अन्तरिक्ष स्टेशन की स्थापना द्वारा अंतरिक्षीय पिंडों की नियमित यात्राएँ शायद अधिक दूर नहीं। आज भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा रूसी सहयोग से अंतरिक्ष विज्ञान के नये आयामों को उद्घाटित कर रहे हैं।

(ङ) चिकित्सा के क्षेत्र में—प्राण-घातक रोगों एवं शारीरिक अक्षमताओं को दूर करने में भी विज्ञान का योगदान आश्चर्यजनक है। क्षय, चेचक, हैजा, प्लेग जैसे संक्रामक रोगों के टीके, पैनसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, क्लोरोमाइसिटिन, औरियोमाइसिन जैसी चमत्कारपूर्ण औषधियों यक्ष्मा, कैंसर, कुष्ठ आदि घृणित रोगों के समाधान तथा शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में नित्य नये अनुसंधान, विज्ञान को श्रद्धा और सम्मान का पात्र बना रहे हैं।

ऐक्स-रे आपके शरीर के अन्दर का हाल बाहर प्रकट् कर देती है। रेडियो आइसोटोप्स से समन्वित औषधियाँ और कैपसूल रोगी अंग की सहज पहचान करा देते हैं। स्वल्पाकार टेलीविजन कैमरे आपके शरीर में जाकर उसका स्पष्ट चित्र बाहर अंकित कर देते हैं। रेडियो सक्रिय कोबाल्ट की रश्मियों से घातक कीटाणु अथवा रोगी सैल्स को समाप्त किया जा सकता है। जीन्स की खोज ने तो मानव जीवन को शायद नयी दिशा ही दे दी है। वंशानुगत रोगों से और शारीरिक त्रुटियों से छुटकारा पाना अब अधिक सरल हो गया है।

शंल्य चिकित्सा के क्षेत्र में अपूर्व चमत्कार हो चुके हैं। साधारण शल्य क्रिया से आगे बढ़कर अब विज्ञान-अंग प्रतिरोपण में कमाल दिखा रहा है। कृत्रिम हाथ, पैर, आँख, नाक का लगाया जाना तो अब साधारण बात है। अब तो हृदय, मस्तिष्क एवं गुर्दे जैसे नाजुक अंगों का भी प्रत्यारोपण हो रहा है। बहरों को यान्त्रिक कान, अन्धों को यान्त्रिक आँख देकर विज्ञान ने मानव-जाति का कितना उपकार किया है। आज प्लास्टिक सर्जरी से बूढ़े भी जवान और कुरूप भी रूपवान हो रहे हैं।

(च) संवाद-संचार के क्षेत्र में—टेलीफोन, टेलीग्राम, टेलीविजन, टेलीप्रिन्टर, संचार उपग्रह और बेतार के तार जैसे चमत्कारों ने सारे संसार को हस्तामलक सा बना दिया है और इसी दिशा में लेसर तो अद्भुत खोज है जिससे एक ही बार में हजारों सन्देश भेजे और ग्रहण किये जा सकते हैं। न केवल धरती से धरती पर, अपितु ब्रह्माण्ड से भी सम्पर्क साधने में आज मानव सफल हो गया है।

(छ) शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में—मानव के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन के लिए भी विज्ञान के चमत्कार सहायक हो रहे हैं। रेडियो, सिनेमा, टैलीविजन आदि जहाँ परिश्रम से क्लान्त, मनुष्य के मन को प्रसन्न करते हैं वहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका महान् योगदान है। छात्रों को प्रत्यक्ष प्रशिक्षण में इनसे अपूर्व सहायता प्राप्त हो रही है। इतिहास, भूगोल, भूगर्भ, चिकित्सा एवं ज्योतिष-विज्ञान के लिए तो टेलीविजन और चलचित्र परम लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं।

(ज) सुरक्षा के क्षेत्र में—जहाँ विज्ञान ने मानव जीवन को सुख-सुविधा प्राप्त कराने में सहायता की है वहाँ सुरक्षा के साधनों का भी अपूर्व विकास किया है। स्वचालित राइफलें, मशीनगन, बम, तोपें, टैंक, लड़ाकू विमान, युद्धपोत, पनडुब्बी, मिसाइलें, अन्तर्महाद्वीपीय अस्त्र, अणुबम, न्यूट्रान बम, कीटाणु बम और न जाने कितने भयंकर संहारक अस्त्र-शस्त्र विज्ञान की कृपा से मनुष्य को प्राप्त हो गये हैं। उपग्रहों के द्वारा आज विश्व के प्रत्येक देश की जासूसी की जा सकती है। एक स्थान पर बैठे-बैठे किसी प्रदेश को विनष्ट किया जा सकता है। सबसे घातक अस्त्र मृत्यु किरण का विकास करने में रूस और अमेरिका जुटे हुए हैं।

अन्य विविध चमत्कार—इसके अतिरिक्त सारे विज्ञान की रीढ़ है बिजली-प्रकाश, वायु और गति की प्रदात्री। हर देश का उद्योग और वैज्ञानिक अनुसन्धान विद्युत पर आश्रित है। परमाणु बिजली घर, परमाणु इंजन, कृत्रिम हीरे, कृत्रिम रत्न, कृत्रिम काष्ठ, कृत्रिम रक्त, कृत्रिम वायु, कृत्रिम प्रकाश, कृत्रिम भोजन और निकट भविष्य में ही कृत्रिम मनुष्य भी विज्ञान के चमत्कार हैं।

उपसंहार—विज्ञान के अनिरुद्ध चरणों की चाल देश और काल के गाल पर पराजय की कहानी लिखती निरन्तर अग्रसर हो रही है। भारत-भूमि भी इस प्रगति धारा में अपनी अमूल्य आहुति दे रही है। भारत का साहसी सपूत राकेश शर्मा अन्तरिक्ष के झरोके से जननी जन्मभूमि की विभिन्न भंगिमाओं को चित्रांकित कर रहा है। विज्ञान की यह विजय यात्रा मानव मस्तिष्क को असंतुलित न कर दे, उसके विनय-विवेक को शक्तिमद का आहार न बना दे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

विज्ञान वरदान या अभिशाप

अथवा विज्ञान के गुण व दोष

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना, (२) विज्ञान की प्रगति, (३) विज्ञान का वरदानी स्वरूप, (४) विज्ञान अभिशाप के रूप में, (५) उपसंहार।

प्रस्तावना— **न होता है अभिशाप, न होता है वरदान,**
ज्ञान तो होता है बस ज्ञान।
मनुज का ही अपलाप,
बना देता वर को अभिशाप।

एक ही वस्तु एक पक्ष से देखने पर वरदान प्रतीत होती है और वही दूसरे पक्ष से अभिशाप लगने लगती है। वस्तु के उपयोग की रीति ही उसके शरीर का निर्धारण करती है। औषधि के रूप में जो विष जीवन-रक्षक है वही विष के रूप में प्राण-घातक है। एक ही लोहे से वधिक की तलवार और शल्य-चिकित्सक की छुरी बनती है। किन्तु इसमें विष या लोहे को दोषी नहीं बताया जा सकता। ज्ञान का उद्देश्य ही उसके परिणाम को निश्चित करता है। विज्ञान भी विशिष्ट और क्रमबद्ध ज्ञान ही है। हम चाहें तो उसे सत्य, शिव और सुन्दर की अर्चना बना दें और चाहें तो उसे महाविनाश, अमंगल और कुरूपता का उपकरण बना दें।

विज्ञान की प्रगति—यों तो सृष्टि के आदि से ही मानव ज्ञान-विस्तार में प्रवृत्ति है किन्तु उन्नीसवीं और बीसवीं सदियाँ तो विज्ञान के चरमोन्नति के काल हैं। जीवन पर विज्ञान के अनन्त उपकार हैं। ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जिसे विज्ञान ने अपने उपहारों से कृतज्ञ न बनाया हो? ऐसा कौन-सा अभागा देश है जो यन्त्रों के घर्घरनाद से न गूँज रहा हो? सुई से लेकर अन्तरिक्ष यान तक विज्ञान की महिमा का गान हो रहा है।

वही रासायनिक खादों, उन्नत बीजों, कृषि यन्त्रों, बांधों, नहरों और कृत्रिम वर्षा से मानव के कृषि भण्डार को भर रहा है। वही नाना प्रकार की गृह-निर्माण सामग्री और शैल्पिक ज्ञान से मानव के विलास-भवनों की रचना कर रहा है। वही मानव-तन को मन मोहक, कृत्रिम और परम्परागत वस्त्रों से अलंकृत कर रहा है।

क्षय, कैंसर, कुष्ठ जैसे घातक और घृणित रोगों पर विजय पाने में यह संघर्षरत है। 'जीन' तक की मंझिल तय करके वह जीवन के रहस्य को ढूँढ रहा है। प्लास्टिक सर्जरी से कुरुपों को सुरूपता दे रहा है। मस्तिष्क, हृदय और गुर्दों की पुनः स्थापना कर रहा है। अमरता की मञ्जिल को प्रशस्त कर रहा है।

भीमकाय यन्त्रों को उसी की विद्युत शक्ति घुमा रही है। वही जल, थल, नभ में नाना प्रकार के वाहनों से दौड़ लगवा रहा है। वही ठेले में सामान ढो रहा है और वही अन्तरिक्ष और ब्रह्माण्ड के कुँआरे पथों को नाप रहा है। रेडियो तार, टेलीफोन, टेलीविजन जैसे उपकरणों से उसने सारे विश्व को सिकोड़ कर छोटा कर डाला है। रेडियो, दूरबीन से ब्रह्माण्ड की छानबीन कर रहा है। वसुन्धरा के गर्भ में झाँक रहा है। सागरों के अतल तल को माप रहा है।

विज्ञान का वरदानी स्वरूप—आज विज्ञान मानव के लिए कल्पवृक्ष बना हुआ है। उसके युग-युग पुराने स्वप्न विज्ञान के माध्यम से साकार हो रहे हैं। जागने से सोने तक, जन्म से मृत्यु तक उसे विज्ञान का प्रश्रय प्राप्त है। उसके जीवन को समस्त भौतिक सुखों का वरदान देने वाला विज्ञान ही तो है।

विज्ञान का वरदान मनुष्य को केवल रोटी, कपड़ा और मकान देने तक ही सीमित नहीं, उसने मनुष्य के लिए ज्ञान के अपार नेत्र खोल दिये हैं।

उसने मानव के चरणों में पड़ी देश और काल की बेड़ियों को काट दिया है। सारे विश्व को 'एक नीड़' बना दिया है। भयंकर रोगों से मुक्ति दिलाकर उसे दीर्घ और स्वस्थ जीवन का वरदान दिया है। उसने मनोरञ्जन के लिए सिनेमा, टेलीविजन, रेडियो आदि अनेक साधन उपस्थित किये हैं। किन्तु..........

विज्ञान अभिशाप के रूप में—हाँ एक 'किन्तु' इन सभी वरदानों के वक्ष पर चन्द्र पर कलंक के समान अंकित हैं। वरदानों की इस विशाल राशि में से अभिशापों का चक्षुपीड़क धूम भी सुलग रहा है। वरदानी! तुमने मानव को लहलहाते खेत और गगन-चुम्बी अट्टालिकाएँ तो दीं किन्तु उन्हें शमशानों में बदल देने वाले भीषण बम भी तुम्हीं न दिये हैं। औषधियों का अमृत तो तुमने बाँटा है परन्तु विषैली गैसों का गरल भी तुम्हीं उसकी साँस में फूँक रहे हो। अपने मनोरंजन के उपायों पर इतना अभिमान मत करो। मानव को क्षण-क्षण रुलाने की सामग्री भी तुमने ही दी है। तुम्हारी अणु शक्ति ने ही हीरोशिमा और नागासाकी को विश्व मानचित्र से मिटाने का पुनीत कार्य किया है। मनुष्य को रोगमुक्त करके उसकी आयु बढ़ाने वाले विज्ञान देवता! घातक अस्त्र-शस्त्र से उसे पानी का बुलबुला सिद्ध करने वाले तुम्हीं हो। विलास-साधनों की अभिनव वृद्धि से मनुष्य-मनुष्य के बीच अस्वस्थ स्पर्धा, ईर्ष्या, और मोह-लालसा की अपार वृद्धि हो रही है। बुद्धिवाद मनुष्य की आत्मा पर हावी है। यन्त्रों के घर्घर में उपेक्षित और पीड़ित मानवता की चीखें सुनाई नहीं दे रही हैं। हम तुम पर आक्षेप लगाते हैं कि—

'तुमने सागर पाटे जल के, पर खोले लिप्सा के सागर।
सन्तोष कटोरी छीन, थमा दी तृष्णा की रीती गागर॥

तुम्हारा गर्व हास्यास्पद है—

'गर्व है ? परमाणु के भी भेद खोले, किन्तु मन की भेद-ग्रन्थि न खोल पाये।
दूर तारों से किया सम्पर्क हमने, पर पड़ौसी से न हम हँस-बोल पाये॥"

उपसंहार—किन्तु.......... । हाँ फिर एक 'किन्तु' इन आरोपों के सीने पर लटक रहा है। क्या वास्तव में विज्ञान वरदान है? नहीं, नहीं। तो क्या वास्तव में वह अभिशाप है? नहीं। तो फिर विज्ञान क्या है? विज्ञान तो विज्ञान-विस्तृत क्रमबद्ध ज्ञान है। वह स्वयं में न वरदान है। न अभिशाप। मनुष्य की उपयोग बुद्धि ही इसकी निर्णायक है।

बारूद के ढेर पर बैठा मानव का शक्ति-विलास न जाने कब समस्त विश्व को महाप्रलय का अतिथि बना दे। ये जगमगाते नगर, ये ब्रह्माण्ड विजय के अभियान, ये शक्ति और वैभव के अभिमान, जरा सी गलती में बन सकते हैं नीरव श्मशान।

इसलिए हम बुद्धि के दावेदार मनुष्य इस दुधारी तलवार से न खेलें। अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को संयमित रखें। विज्ञान को सेवक से स्वामी-पद पर अधिष्ठित न करें। उपकरण को निदेशक न मानें, साधन को साध्य न समझ लें, मार्ग को मंजिल न मान बैठें। विज्ञान को दोष देना व्यर्थ होगा, यदि कुछ हो गया। क्योंकि विज्ञान तो स्पष्ट घोषणा कर रहा है—

ये यथा मां प्रपद्यन्ते, तांस्तथैव भजाम्यहम्।

१०. दहेज प्रथा

अथवा दहेज नव वधुओं की चिता

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) दहेज, अतीत में और वर्तमान में। (३) एक सामाजिक कलंक। (४) नारी जाति का अपमान। (५) उन्मूलन के उपाय। (६) उपसंहार।

प्रस्तावना—कन्या एक रत्न है और वर 'रत्नभुक्' उस रत्न का उपभोग करने वाला। कन्या एक न्यास है, दान की वस्तु है और वर स्वामी है आदाता है। कन्या परिवार का भार है, वर महोदय बड़ी कृपा करके उस गृहस्थ को भार मुक्त करने वाले हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' जैसी बात कहने वाली संस्कृति का कन्या के प्रति यह भार क्या उसकी नारी पूजा की भावना से मेल खाता है। भारतीय संस्कृति का ढोल पीटने वाले घरों में नारी (आज भी) पैर की जूती है। घर की उपभोग सामग्री है। सप्तपदी (भाँवरें) के समय दिये गये सारे वचन वर कन्या द्वारा भुला दिया जाते हैं। आदर केवल उस वधू को मिलता है जो कि वर भवन में प्रवेश का पूरा-पूरा शुल्क चुकाकर आती है। यह प्रवेश शुल्क यानी कि दहेज, कन्या और कन्यापक्ष के लिए जीने या जल कर मर जाने का विकल्प लेकर खड़ा है।

दहेज अतीत में और वर्तमान में—दहेज भारतीय संस्कृति से जुड़ी प्रथा है. किन्तु प्राचीन काल में यह आज की भाँति वीभत्स और अनिवार्य नहीं थी। यौतुक (दहेज) प्राचीन समय में भी दिया जाता था लेकिन वह राजा महाराजाओं की शोभा सामग्री होता था। साधारण गृहस्थ का काम तो दो चार बर्तन और गोदान से ही चल जाता था। ऐसी अनेक प्राचीन कथाएँ प्रमाण हैं, जहाँ दुल्हन दहेज बन गयी थीं।

आज तो दहेज विवाह का एक अनिवार्य अंग और कन्यापक्ष के शोषण का निंदनीय औजार बन चुका है। अच्छा-खासा व्यापार है विवाह। वर की नीलामी होती है जो कन्या का पिता सर्वाधिक मूल्य दे, खरीद लें। कन्या का मूल्य लेना श्रेष्ठ समाजों में निन्दनीय समझा जाता है। परन्तु 'वर-मूल्य' लेते समय उनकी आँखें नहीं झुकतीं। आज कन्या 'डिमी' कहलाती हैं और वर 'हुण्डी' या 'लाटरी'।

बहू रूपवती न हो, शिक्षित न हो, पर साथ में ढेर सारा दहेज लाये तो वह पति और सास-ससुर की आँखों का तारा होती है। सारे घर पर उसका 'रौब' छाया रहता है। लेकिन एक सुन्दर, स्वस्थ, सुशिक्षित और गृहकार्य में दक्ष बहू की कोई कीमत नहीं, यदि वह बाप के घर को खाली करके न आयी हो। वर महोदय चाहे अष्टावक्र के अवतार हों पर बहू उनको सर्वगुण सम्पन्न चाहिए। वर के पिता चाहे जिन्दगी में एक कुर्सी भी न खरीद पायें हों लेकिन कन्या के पिता से आशा रखते हैं कि वह उनके बेटे की पूरी जिन्दगी का हिसाब चुकता करदे।

एक सामाजिक कलंक—आज दहेज का जो स्वरूप हो गया है उससे तो यह भारतीय समाज के मस्तक पर कलंक का घिनौना टीका प्रतीत होता है। कन्या का जन्म होते ही पिता को क्षय रोग लग जाय। वह उचित अनुचित स्रोतों से कन्या के हाथ पीले करने की बात सोचने लगे तो यह स्थिति उस समाज के लिये घोर लज्जा की बात है। आज कन्या की सारी योग्यताएँ जब सिर्फ एक अयोग्यता पर बलिदान हो रही हैं। सौभाग्य-सेन अब उसकी चिन्ता बन जाने को तैयार है।

सौभाग्य रात्रि की सेज बनी है, नव-वधुओं की चिता आज।
किस पूर्वजन्म का पाप भोगता है, कन्या का पिता आज॥
वह पत्नी, वधू नहीं घर की, पत्तल है, जूठी थाली है।
नारी-पूजन की नयी विधा, भारत ने आज निकाली है॥

नारी-जाति का अपमान—दहेज-लोलुपता ने विवाह में से कन्या को लगभग गायब कर दिया है। दृष्टि अब वधू पर नहीं दान दहेज पर है। भारतीय संस्कृति कहती है—

'अर्थो हि कन्या परकीय एवं'।

कन्या पराया धन है। माता-पिता तो केवल उसे वर के हाथों में सुरक्षित सौंप देने के उत्तरदायी हैं। क्या यह भावना नारी को मात्र दान सामग्री सिद्ध नहीं करती। कन्यादान को बड़ा महान् कार्य माना गया है लेकिन 'वर के दान' का कहीं जिक्र नहीं है। अन्न दान हो, वस्त्र दान हो, गोदान हो, सदा दान पाने वाला दाता के प्रति आभारी होता है लेकिन कन्या रत्न को दान करने वाला उल्टा भिखारी के प्रति कृतज्ञ होता है।

चाहे ऋषि मुनियों ने कन्या को पराया धन किसी भी भाव से कहा हो पर आज के कृतघ्न उत्तराधिकारियों ने अपनी धन लोलुपता के कारण नारी के गौरव को मिट्टी में मिला दिया है।

आज का पिता तो घर-घूरा बेचकर दहेज के साथ कन्या को विदा करके भी निश्चिन्त नहीं हो पाता। उसे यही आशंका सताती रहती है कि दहेज की कमी का परवाना लेकर कोई आता होगा या फिर महीने दो महीने बाद उसकी लाड़ली "खाना बनाते समय जल जायेगी।"

दहेज ने नारी के स्वाभिमान पर चोट की है। उसे द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना दिया है। उसे पुरुष की दया का पात्र बना दिया है। यदि संविधान ने उसे हर क्षेत्र में पुरुष की समकक्षता प्रदान की है तो वह पुरुष की खरीद-सामग्री क्यों बनायी जा रही है। इसका एकमात्र कारण यही प्रतीत होता है कि सारे नियम और शास्त्र पुरुषों ने ही बनाये हैं—

नर कृत शास्त्रों के जब बन्धन, हैं नारी ही को लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएँ, पहले ही कर बैठे नर॥

उन्मूलन का उपाय—दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिये बहुमुखी प्रयास करने होंगे। शासन और जनता दोनों से ही अपेक्षा है कि वे इस निन्दनीय स्थिति को समाप्त करें।

शासन ने केवल कानून बनाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली है। कानून की नाक के नीचे दहेज माँगा जा रहा है, दिया जा रहा है और दहेज की बलिवेदी पर हजारों वधुओं का खून किया जा रहा है। सरकार को कड़ाई से दहेज-विरोधी कानूनों का पालन कराना होगा।

नवयुवकों को धन-लोलुपता छोड़कर नारी के सम्मान की रक्षा करनी होगी। दहेज लोलुपों का सामाजिक बहिष्कार करना होगा।

इसके अतिरिक्त लड़कियों को स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना सीखना होगा। माता-पिता को कन्या की शिक्षा-दीक्षा का भी पुत्र की ही भाँति प्रबन्ध करना होगा। आत्मनिर्भर बनने में और अपना पति स्वयं चुनने में उनकी सहायता करनी होगी। अग्नि के फेरे लेने मात्र से विवाह नहीं हो जाता जब तक दोनों एक दूसरे का सम्मान न करें। अतः दिखावे से रहित सादा विवाहों पर बल दिया जाय और ऐसा आदर्श विवाह करने वाले दम्पतियों को जनता और शासन की ओर से सम्मानित किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त दहेज के नाम पर वधुओं को उत्पीड़ित करने वाले व्यक्तियों को कठोर से कठोर दण्ड दिये जाने की व्यवस्था होनी चाहिए।

उपसंहार—दहेज का प्रतीक रूप जो कन्या के प्रति माता-पिता के स्नेह का प्रमाण होता है किसी भी प्रकार बुरा नहीं है किन्तु उसे एक शोषण और व्यवसाय का रूप दिया जाना पाप है। युवक-युवती यदि साहसी और स्वावलम्बी बन जाएँ तो दहेज के अभिशाप से निश्चित ही मुक्ति मिल जाएगी।

११. परिवार नियोजन

अथवा जनसंख्या विस्फोट

अथवा सीमित परिवार सुखी परिवार

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) परिवार नियोजन क्या है? (३) परिवार नियोजन क्यों। (४) परिवार नियोजन के उपाय। (५) उपसंहार।

प्रस्तावना—समय की गति बड़ी विचित्र है। कभी बड़े-बूढ़े स्त्री को आशीर्वाद देते समय कहा करते थे 'पुत्रवती हो' 'दूधो भरों पूतों फलो' पर आज ये आशीष देने और लेने वाले संकोच बरतते हैं सोचते हैं, हम कहीं गलती तो नहीं कर रहें। आशीर्वाद के रूप में कहीं शाप तो नहीं दे रहे। मनुष्यों के भार से दबी जा रही धरती माता पर कहीं और तो बोझ नहीं बढ़ा रहे।

जिधर देखो उधर ही भीड़ है। सड़क पर, बस में, स्कूलों में। हर जगह कतारें लगी हैं। पानी भी राशन से मिल रहा है। हर नवागन्तुक को लोग खा जाने वाली नजरों से देख रहे हैं। एक और आ गया हिस्सा बाँटने वाला। जनसंख्या गुब्बारे की भाँति फूलती जा रही है। विस्फोट में अधिक देर नहीं। इस बेतहाशा बढ़ते बगीचे की नर्सरी यानी परिवार पर निरन्तर भार की मार पड़ रही है।

परिवार नियोजन क्या है?—जनसंख्या ज्यामितीय गति से बढ़ती है और उपभोक्ता सामग्री अंकगणितीय गति से। यानी खाने वाले दस और भोजन पाँच के लायक, पहनने वाले बीस और कपड़ा दस के लिए ही। यह दौड़ निरन्तर जारी है। भूखे, नंगे, बेघर लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही है।

इसी प्रकार हर वर्ष विद्यालयों से लाखों स्नातक, तकनीशियन, शिल्पी, उपाधि और डिप्लोमा-धारी निकल रहे हैं, पर नौकरियाँ सीमित हैं। बेकारों की फौज खड़ी होती जा रही है।

सामाजिक व्यवस्था पर, प्रशासन पर, राष्ट्र के अस्तित्व पर निरन्तर दबाव बढ़ता जा रहा है। जीवनोपयोगी वस्तुएँ सीमित मात्रा में उत्पादित हो रही हैं। एक अनार और लाखों बीमार हैं।

इस विकट रोग का उपचार क्या है? इस समस्या की जड़ कहाँ हैं? परिवार में। यदि परिवार को बिना सोचे समझे न बढ़ने दिया जाय तो निश्चय ही जनसंख्या की समस्या से मुक्ति पायी जा सकती है। परिवार सीमित होगा तो आवश्यकताएं भी सीमित होंगी। बच्चों की अच्छी देख-रेख हो सकेगी। उनकी शिक्षा और परिपालन में अधिक ध्यान दिया जा सकेगा।

अतः परिवार को सोच-समझकर नियमित करना ही परिवार नियोजन है। एक या दो बच्चों का आज के महँगे युग में उचित रीति से लालन-पालन हो पाता है। अतः परिवार की सदस्य संख्या अधिक नहीं बढ़ायी जाय। यदि परिवार नियोजन का मूलभाव है।

परिवार नियोजन क्यों?—ऊपर कही गयी बातों से स्वयं प्रकट हो रहा है कि परिवार नियोजन की आवश्यकता क्यों है? समाज में जनसंख्या अबाध रूप से न बढ़े, हर व्यक्ति को आवश्यकतानुसार जीवनोपयोग वस्तुएँ सरलता से उपलब्ध रहें, भूखों, नगों की फौज परिवार में न खड़ी हो, इसके लिए आवश्यक है कि परिवार का नियोजन किया जाय। यदि हम अपने बच्चों को उचित भोजन, वस्त्र नहीं दे सकते, पूरा प्यार नहीं दे सकते, उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं कर सकते, हमें संतान पैदा करने का अधिकार नहीं, ऐसे बच्चों का भविष्य कभी उज्ज्वल नहीं हो सकता। बिना पालन की क्षमता के संतानें पैदा करना समाज और देश के प्रति अपराध है।

जो समर्थ और समृद्ध हैं उनके लिए भी परिवार नियोजन लाभदायक नहीं है। यदि वे किसान है तो उनकी भूमि छोटे टुकड़ों में बँटती चली जायेगी। यदि व्यापारी है तो एक ही दुकान में कई दीवारें खिंच जायेंगीं।

आज चारों ओर भ्रष्टाचार और उद्दण्डता का जो नग्न नृत्य हो रहा है, उसके पीछे भी संतानों की अनियन्त्रित वृद्धि है। जब सबको आजीविका के सभ्य साधन नहीं मिलेंगे तो वे असामाजिक कार्यों में प्रवृत्त होंगे। अतः परिवार नियोजन से न केवल एक परिवार का भला होगा बल्कि उसके दूरगामी प्रभाव समाज और देश को भी सुखी और समृद्ध बनाएँगे।

परिवार-नियोजन के उपाय—आजकल परिवार-नियोजन के अनेक सुगम उपाय उपलब्ध हैं। पुरानी बात कि मन पर नियन्त्रण रखकर परिवार सीमित हो सकता है अब विश्वसनीय नहीं रह गयी। अब तो सुनिश्चित उपाय ही होना चाहिए। स्त्री-पुरुष दोनों के योग्य उपकरण चिकित्सालयों और स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपलब्ध रहते हैं। निरोध, लूप, कॉपर-टी, नसबन्दी आदि ऐसे ही उपाय हैं। इनके अतिरिक्त ऐसी गोलियाँ और टीके भी निरन्तर खोजे जा रहे हैं जो पूर्णतः निरापद और अचूक हैं।

इन उपायों के अतिरिक्त कुछ सामाजिक परम्पराओं और विचारधाराओं में परिवर्तन लाकर भी परिवार-नियोजन में सहायता पहुँचाई जा सकती है। जैसे लड़के और लड़कियों में भेदभाव न मानना। दो बच्चे, चाहे वे लड़के हों या लड़कियाँ, उनके बाद परिवार-नियोजन अपनाया जाय। विवाह की आयु बढ़ाई जाय। बाल-विवाह को दण्डनीय अपराध घोषित किया जाय।

सीमित परिवार वाले दम्पंतियों को हर क्षेत्र में विशेष सुविधाएँ दी जायँ। दो संतानों के पश्चात् पेशेगत सुविधाएँ न दी जायें।

इस प्रकार परिवार नियोजन को प्रोत्साहन मिलेगा और जनसंख्या के सम्भावी विस्फोट से समाज की रक्षा हो सकेगी।

उपसंहार—आज हर प्रगतिशील समाज परिवार-नियोजन को अपना चुका है। हमारी सरकार ने इस क्षेत्र में बहुत-सी सुविधाएँ उपलब्ध करायी हैं। कानून और जनमत दोनों की सहायता से परिवार-नियोजन को आगे बढ़ाना एक बड़ी देश-सेवा है। लेकिन यह योजना हर धर्म, जाति और सम्प्रदाय के लोगों पर समान रूप से लागू होनी चाहिए। तभी देश को इसका पूरा लाभ मिलेगा।

१२. हमारी राष्ट्रभाषा—हिन्दी

या हमारी भाषा-समस्या

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. भारत में भाषा सम्बन्धी स्थिति। ३. एक राष्ट्रभाषा का महत्त्व। ४. भारतीय भाषाएँ। ५. राष्ट्र-भाषा के गुण और हिन्दी। ६. हिन्दी की लोकप्रियता। ७. उपसंहार।

प्रस्तावना—**"वही पूरब वही पश्चिम वही उत्तर वही दक्षिण।**
टुकड़े-टुकड़े मेरी धरती का जिगर आज भी है॥"

कितनी लज्जा का विषय है कि हम स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष गँवा कर भी समूचे राष्ट्र को एक भाषा के सूत्र में नहीं बाँध सके हैं। सौभाग्य से आज हमारा देश एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। हमारा अपना राष्ट्र-गान और राष्ट्र-ध्वज है। हमारा राष्ट्रीय पशु सिंह, राष्ट्रीय पक्षी मयूर और राष्ट्रीय पुष्प कमल है। किन्तु व्यावहारिक रूप में हमारी कोई एक राष्ट्रीय भाषा नहीं है। लिखित रूप में हिन्दी को हमारी राष्ट्र-भाषा स्वीकार किया गया है। किन्तु वास्तव में तस्वीर अभी उल्टी है। कुछ नेता राजनीतिक स्वार्थों के कारण नागरिकों की प्रान्तीय भावना उभार कर उग्र स्थिति उत्पन्न कर देते है और राष्ट्रभाषा के प्रश्न को हल नहीं होने देते।

भारत में भाषा--सम्बन्धी स्थिति—भारत एक विशाल राष्ट्र है और विविध भाषा-भाषी-जन उसकी सीमाओं में निवास करते हैं। अतः यहाँ एक राष्ट्रीय भाषा का होना बड़ा महत्त्वपूर्ण है। संविधान-निर्माताओं ने भारत की चौदह भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाएँ मानते हुए भी हिन्दी को उसकी व्यापकता और परम्परागत स्थिति के कारण राष्ट्रभाषा का पद प्रदान किया। उस समय अनेक अहिन्दी-भाषी महानुभावों ने इसका प्रबल समर्थन किया। परन्तु राजनीतिक स्वार्थों और संकुचित, प्रादेशिकता ने धीरे-धीरे हिन्दी-साम्राज्यवाद का हौआ दिखाकर हिन्दी-विरोध की ऐसी ज्वाला सुलगायी कि तमिलनाडु में वह पागलपन की सीमा तक जा पहुँची। परिणामस्वरूप केन्द्रीय सरकार ने पूर्व निश्चित 15 वर्षीय प्रावधान का परित्याग करके अनिश्चितकाल तक अहिन्दी भाषी प्रदेशों को अंग्रेज़ी के प्रयोग की छूट दे दी फल यह हुआ कि हिन्दी को सदैव के लिए राष्ट्रभाषा के पद से प्रवंचित कर दिया गया। अब भी हमारे प्रधानमन्त्री अपने चुनाव-भाषण में अहिन्दी भाषी प्रान्तों को यह आश्वासन दे रहे हैं कि जब तक वे चाहेंगे अंग्रेजी अपने पद पर बनी रहेगी।

एक राष्ट्र भाषा का महत्व—हर राष्ट्र को अपने सामान्य काम-काज एवं राष्ट्रव्यापी व्यवहार लिए किसी एक भाषा को अपनाना होता है। राष्ट्र की कोई एक भाषा स्वाभाविक विकास

और विस्तार करती हुई अधिकांश जनसमूह के विचार विनिमय और व्यवहार का माध्यम बन जाती है। इसी भाषा को वह राष्ट्र, राष्ट्रभाषा का दर्जा देकर उस पर शासन की स्वीकृति की मुहर लगा देता है। हर राष्ट्र की प्रशासकीय सुविधा तथा राष्ट्रीय एकता और गौरव के निमित्त एक राष्ट्रभाषा का होना परम आवश्यक होता है। सरकारी कामकाज की केन्द्रीय भाषा के रूप में यदि एक भाषा स्वीकृत न होगी तो प्रशासन में नित्य ही व्यावहारिक कठिनाइयाँ आएँगी। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में भी राष्ट्र की निजी भाषा का होना गौरव की बात होती है।

भारतीय भाषा-समुदाय—भारत विविधता में एकता का साधक रहा है। इस देश में पन्द्रह के लगभग प्रमुख प्रादेशिक एवं व्यवहारगत भाषाएँ हैं, इनमें आदिवासी एवं केन्द्र शासित प्रदेशों की भाषाएँ सम्मिलित नहीं हैं। हिन्दी, तमिल, तेलुगू, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी, बंगला, उड़िया, असमी, मलयालम, कन्नड़, मराठी, सिन्धी, उर्दू, संस्कृति आदि शासन द्वारा स्वीकृत भाषाएँ हैं। प्रादेशिक स्तर पर इनका व्यवहार सर्वथा उचित है। हर प्रदेश के बालक को उसकी प्रादेशिक मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त होनी चाहिए। किन्तु सार्वदेशिक व्यवहार में इतनी भाषाओं से काम नहीं चलता। हिन्दी आज भारत के आधे से भी अधिक जनसमूह की व्यवहार-भाषा है। वह लगभग सारे देश में समझी और बोली जाती है।

राष्ट्रभाषा के गुण और हिंदी—क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद की अधिकारिणी है? इस प्रश्न का उत्तर हम राष्ट्रभाषा के लिए आवश्यक गुणों की कसौटी पर हिन्दी को कसकर प्राप्त कर सकते हैं। ये गुण इस प्रकार हैं—

एक राष्ट्रभाषा के लिए सर्वप्रथम गुण है उसकी व्यापकता। राष्ट्र के अधिकांश जनसमुदाय द्वारा वह बोली तथा समझी जाती हो। दूसरा गुण है उसकी समृद्धता। वह संस्कृति, धर्म, दर्शन, साहित्य, एवं विज्ञान आदि विषयों को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य रखती हो। उसका शब्दकोश व्यापक और विशाल हो। तीसरा गुण है उसकी सरलता। उसे सीखना अन्य भाषा-भाषियों के लिए सरल हो। चौथे, उसकी लिपि सरल और वैज्ञानिक आधार वाली हो। पाँचवे, उसमें समयानुकूल विकास की सामर्थ्य हो।

यदि निष्पक्ष दृष्टि से विचार किया जाय तो भारत की सभी भाषाओं में हिन्दी को ये सभी योग्यताएँ प्राप्त हैं। वह देश की बहुसंख्यक जनता के नित्य व्यवहार की भाषा है। विविध विषयों पर उसमें साहित्य मौजूद है और उसे पारिभाषित शब्दावली के लिए संस्कृत का समृद्ध सहयोग प्राप्त है। हिन्दी के अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के आवश्यक शब्दों को निःसंकोच ग्रहण किया है। उसकी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। उसने अपने विकास और अनुकूलन की महान् सामर्थ्य का सदा परिचय दिया है। अतः हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होने की सभी योग्यताएँ रखती हैं।

हिन्दी की लोकप्रियता—हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद के लिए अहिन्दी-भाषी विद्वानों ने ही संस्तुत किया था। दक्षिण में भी हिन्दी का उत्साह और प्रेम से प्रचार हुआ। परन्तु तुच्छ प्रादेशिक और राजनीतिक स्वार्थों तथा हिंदी प्रेमियों के अति उत्साह ने, दक्षिण को हिन्दी विरोधी बना दिया। संविधान के अन्तर्गत हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त है और वर्तमान शासन ने उसे अन्तर्राष्ट्रीय मंच तक सफलता से पहुँचा दिया है। भारत से बाहर फिजी, ट्रिनोडाड तथा मारीशस आदि देशों में हिन्दी भाषी भारतवंशी उसकी व्यापकता को प्रमाणित कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी-सम्मेलन की लोकप्रियता और निरन्तर विकास का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

उपसंहार—साठ करोड़ से भी अधिक जनसंख्या को एक भाषा स्वीकारने में समय तो लग ही सकता है। कानून के बल पर नहीं अपितु सच्ची राष्ट्र भावना को जगाकर और एक मिशनरी भावना से हिन्दी का अहिन्दी प्रदेशों में प्रचार करके ही हम देश को एक सूत्र में बाँध सकते हैं **हर्ष की बात है कि हमारी सरकार ने राष्ट्रभाषा के नाजुक विषय को अब अधिक व्यावहारिक**

और दृढ़ कार्यक्रम का अंग बना लिया है। हिन्दी-विरोध के गढ़ तमिलनाडु में भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार पुनः आरम्भ हो गया है। परन्तु फिर भी यह स्मरणीय है कि सरकारी प्रयत्न तथा जन-सहयोग दोनों मिलकर ही इस समस्या को हल कर सकते हैं।

१३. भारतीय नारी की समस्या
या भारतीय समाज में नारी का स्थान
या आधुनिक भारतीय नारी

रूपरेखा—१. प्रस्तावना—नारी की आदर्श मूर्ति। २. भारतीय नारी का तिरस्कृत स्वरूप। ३. पुरुष का अबाध शासन। ४. अशिक्षा और वैधव्य का अभिशाप। ५. आधुनिक नारी। ६. उपसंहार।

प्रस्तावना—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"—यह है भारतीय मानस की आदि-शक्ति, अर्धांगिनी, गृह-लक्ष्मी नारी के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन। नारायण के साथ लक्ष्मी, शिव के साथ भवानी, राम के साथ सीता और कृष्ण के साथ राधा की आराधना नारी शक्ति की ही अर्चना है। अपोलो, गार्गी, मैत्रेयी, विदुला की गौरवमयी परम्परा को भारतीय नारी ने आज तक निभाया है। पुरुष और समाज के प्रति अपने दायित्व का पूरी ईमानदारी से निर्वाह किया है। किन्तु फिर भी उसे अबला, रमणी, दारा जैसी संज्ञाओं से संबोधित होकर पुरुष की दासी—उपेक्षा और अनादर की पात्रा बनना पड़ा। यह भी भारतीय इतिहास का एक कटु व्यंग्य है। दुर्गा और काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में उसे पूजने वाले भारतीय "नर" ने नारी पर कम अत्याचार नहीं किये हैं।

भारतीय नारी का तिरस्कृत रूप—भारतीय संस्कृति के पुजारी कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आँखों में पानी।

इन पंक्तियों में अनायास ही भारतीय नारी का सच्चा चित्र अंकित हो गया है। पुरुष के वात्सल्य को अपने आँचल के दूध से जीवनदान देने वाली नारी ने बदले में आँसू ही पाये हैं। लगता है भारतीय संस्कृति के शिल्पियों ने उसे सोने की बेड़ियों में बाँधने की पूरी चेष्टा की है। वह 'पवित्रता' है, 'सती' है यानी उसे आजन्म एक पुरुष के कठोर शासन की कठपुतली बने रहना है। वह 'गृहलक्ष्मी' है अर्थात् उसे घर रूपी बाड़े की सीमाओं में ही अन्तिम साँस लेनी है। वह 'देवी' है अर्थात् वह पुरुष की कामुक दृष्टियों से पूजित और उससे चाटुकारिता भरे स्तोत्रों से सन्तुष्ट होती रहे। स्वतन्त्रता उसके लिए महापातक है। समानता उसका दुस्साहस है। उसका कोई व्यक्तित्व नहीं, उसका कोई अपना परिचय नहीं और यदि सच कहा जाय तो उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं क्योंकि वह महान् है, क्योंकि वह क्षमामयी है, क्योंकि उसने पुरुष के विश्वासघात और अहंकार को अपनी ममता के धागों से बार-बार बाँधने का प्रयत्न किया है। यही है आज भारतीय नारी का रूप। उसे शास्त्रों, स्मृतियों, पुराणों और संस्कृति के अध्यायों में मत ढूँढों, उसे पहचानना है तो भारतीय समाज के विडम्बना भरे वर्तमान में खोजो।

पुरुष का अबाध शासन—शास्त्रों की दुहाई देने वाले महामानव तनिक विचार तो करें कि क्या उन्होंने नारी की आचार-संहिता बनाते समय किसी नारी से भी विचार विमर्श किया था। सच तो यह है कि—

नर कृत शास्त्रों के बन्धन, सब हैं नारी ही को लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएँ, पहले ही कर बैठे नर॥

पतिव्रताओं के आख्यानों से पुराण भरे पड़े हैं। पर पत्नी-व्रत पुरुषों की एक-आध कथा भूले-भटके ही मिलेगी। नारी पर पुरुष का सबसे बड़ा अत्याचार उसकी 'अविश्वासभावना है।

नारी पर आजीवन पुरुष का पहरा हमारे संस्कृतिकारों ने बड़े कलात्मक ढंग से बिठा दिया है। "बचपन में पिता उसकी चौकसी करे, युवावस्था में पति का पहरा रहे और वृद्धावस्था में पुत्र उस पर नजर रखे" मानो वह जन्मजात अपराधिनी हो। उसकी चंचलता और चरित्र की शिथिलता पर सरस कल्पना-कथा सुनाने वाले महापुरुषो ! अपना पाप उसके सिर मत मढ़ो। उसे अप्सरा किसने बनाया है? उसे नगर-वधू का अखण्ड सौभाग्य सौंपने वाला कौन है? उसे सरे बाजार जिस्म के व्यापार के लिए मजबूर करने वाला कौन है?उसे रमणी, कामिनी, भोग्या, दारा, कलत्र और वीरांगना की पदवी से विभूषित करने वाला कौन है ? पुरुष ही न !

अशिक्षा, वैधव्य और पर्दे से पीड़ित—न जाने किस अपराध में स्त्री को वेद-अध्ययन से प्राचीन शास्त्रकारों ने वंचित कर दिया। आज मुट्ठीभर नगर निवासिनी बालिकाएँ भले ही विद्यालयों से लाभ उठाती हों, किन्तु भारत जहाँ निवास करता है वे गांव आज भी नारी शिक्षा की कल्पना करने में असमर्थ हैं। भारतीय नारी का दूसरा अभिशाप उसका वैधव्य है। विशेषकर हिन्दू विधवा तो कवि प्रसाद के शब्दों में 'जगत्' का सबसे निराश्रित प्राणी है, बाल-विधवाओं के आजीवन बहने वाले आँसुओं ने इस देश के समाज को सदा से अभिशप्त किया है। पुरुष चाहे तो अनेक धर्मपत्नियों और उपपत्नियों का वरण कर सकता है, परन्तु नारी एक पति-व्रत की अधिकारिणी है। पुरुष विधुर होने पर मन-चाहे विवाह कर सकता है परन्तु नारी विधवा होने पर किसी पुरुष की ओर देख भी नहीं सकती। वह अशुभदर्शना, अमंगलकारिणी मानी जाती है। इस दोहरी आचार-संहिता ने ही समाज में अनैतिक व्यभिचार को जन्म दिया है।

भारतीय नारी का तीसरा दुर्भाग्य 'पर्दा' है। नारी के मुख पर पर्दा डालकर निश्चिन्त होने वाले पुरुष ने वस्तुतः अपनी अक्ल पर पर्दा डाल दिया है। वह 'बड़ों' और 'अन्यों' की उपस्थिति में न बोल सकती है, न बैठ सकती है। चोरी के धन की भाँति उसे घर की चहारदीवारी में बन्द रहना है। अपनी भावना, अपनी पीड़ा, अपनी आकुलता को अपने में ही घोटकर मारते रहना है।

आधुनिक नारी की भूमिका—किन्तु कोई भी अस्वाभाविक बन्धन चिरस्थायी नहीं होता। शताब्दियों का कारावास भोगने वाली भारतीय नारी भी आज करवट बदल रही है। वह पुरुष की दासी, पैरों की जूती, उसके मनोरंजन की पुतली, उसकी वासनामयी आँखों की मदिरा बनकर रहना नहीं चाहती। कानून ने उसे समान माना है और वह स्वयं भी पुरुष के समान स्तर पर मिलना चाहती है। वह सच्चे अर्थों में सहधर्मिणी बनना चाहती है। इसे इसका दुस्साहस, उसकी उद्दण्डता अथवा उसकी स्वच्छन्दता कहकर तिरस्कृत और उपेक्षित करने से काम नहीं चलेगा। उसका उचित भाग उसे मिलना ही चाहिए।

यह ठीक है कि वह पश्चिम की नारी का अनुसरण न करे। उसकी अपनी संस्कृति ही उसे स्वतन्त्रता और समानता का पर्याप्त अवसर दे सकती है। वह मानव सृष्टि के विकास की सर्वोत्तम सीढ़ी है। उसे अपनी शालीनता और अपने स्वरूप की रक्षा करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। पुरुष बनने की चेष्टा न करके पुरुष को अपने गौरवमय स्वरूप से प्रभावित और प्रेरित करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह कार्य मात्र कालेजों में अध्ययन करने से या फैशन परेडों में भाग लेने से सम्पन्न नहीं होगा। भारतीय नारी को आगे बढ़ने के साथ-साथ पीछे भी मुड़कर देखते चलना है। उसे गाँवों के उपेक्षित अंचल में अत्याचार भोगती अपनी करोड़ों बहिनों के भाग्य को भी जगाना है।

आज नारी महत्त्वपूर्ण कार्य-भारों को पुरुष के समान ही योग्यता और गौरव के साथ सम्हाल रही है। शासन उसकी दशा सुधारने को प्रयत्नशील है। बहु-विवाह, दहेज-प्रथा, सती-प्रथा एवं बाल-विवाह जैसी नारी को उत्पीड़ित करने वाली कुरीतियाँ कानूनतम समाप्त की जा रही हैं।

रतीय नारी में आत्मविश्वास और साहस का संचार हो रहा है। वह सैनिक, सचिव, चालक, ास्ता, अध्यापक आदि सभी पदों पर सफलता से कार्य कर रही है।

उपसंहार– भारतीय नारी का उत्थान भारतीय संस्कृति की सीमाओं में ही हो। वह पश्चिम ी नारी की नकल न करके अपनी मौलिकता और स्वतन्त्र व्यक्तित्व का परिचय दे। पुरुष से र्धा करने के स्थान पर उसका सबल सहयोग करे। प्रकृति को पुरुष की भी आवश्यकता है ौर नारी की भी। अतः पुरुष, पुरुष रहे और नारी, नारी। भारतीय ललनाओं की गौरवमयी रम्परा किसी भी देश के लिए ईर्ष्या का कारण हो सकती है। अतः भारतीय नारी उसी परम्परा दीक्षित हो। वह तितली और कामिनी बनने का लोभ त्याग कर महिला और गृहलक्ष्मी का रव अर्जित करे।

१४. हमारी नयी शिक्षा नीति

रूपरेखा–(१) प्रस्तावना। (२) वर्तमान शिक्षा प्रणाली अंग्रेजों की देन। (३) शिक्षा में सुधार प्रयत्न। (४) नयी शिक्षा नीति के निर्देशक तत्व। (५) प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च तथा प्रौढ़ ाक्षा। (६) शिक्षा के अन्य क्षेत्र। (७) उपसंहार।

प्रस्तावना– भारतीय संस्कृति में सुशिक्षा का महत्त्व अति प्राचीनकाल में ही स्वीकार किया या था। इसी कारण मानव जीवन के प्रथम पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य अर्थात् विद्यार्थी-जीवन को ंप दिये गये थे। विद्या के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाले अनेक कथन भारतीय संस्कृति ज्ञानार्जन को सर्वोपरि सिद्ध करते आ रहे हैं–

"सा विद्या या विमुक्तये", "विद्ययामृतमश्नुते"
"सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः।"
"माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।"

विद्या मुक्ति का साधन है। विद्या अमृत-रूप भोजन है। ज्ञान या विद्या सभी का नेत्र है। ्याहीन व्यक्ति अन्धे के समान है तथा जो माता-पिता बालक को नहीं पढ़ते वे उसके शत्रु ये सभी कथन हमारी संस्कृति में शिक्षा का स्थान प्रदर्शित कर रहे हैं। नालन्दा, तक्षशिला, ल्लभी जैसे विश्वविद्यालय हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली की श्रेष्ठता, विविधता और लोक न्यता के प्रमाण थे। सारे संसार से ज्ञान के प्यासे लोग यहाँ आकर तृप्त हुआ करते थे।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अँग्रेजों की देन– शिक्षा की वह महान् परम्परा जिसके कारण भारत विश्वगुरु का सम्मान्नीय पद प्राप्त हुआ था, समय के प्रभाव से नष्ट हो गयी। बर्बर विदेशी ाक्रमणकारियों ने हमारे विश्वविद्यालयों को नष्ट कर दिया। ज्ञान का यह स्वदेशी स्रोत ऐसा खा कि आज तक इसे प्रवाहपूर्ण बनाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। अँग्रेजों के शासन काल फिर एक शिक्षा-प्रणाली की नींव डाली गयी। लार्ड मैकाले ने अँग्रेजी सरकार ने लिये बू-क्लर्क तैयार करने और भारतीयों तथा अंग्रेजों के बीच सेतु का काम करने वाला एक वर्ग ार करने की नीयत से वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का आरम्भ किया था। वह वर्ग **"रक्त और से तो भारतीय था परन्तु प्रकृति, विचारधारा, नैतिकता और बुद्धिमत्ता में अँग्रेज था।"** र्भाग्यवश स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी हमारी शिक्षा प्रणाली इसी परम्परा पर चलती रही।

शिक्षा में सुधार के प्रयत्न– कुछ समय देश के कर्णधारों को अनुभव हुआ कि राष्ट्रीय ाभिमान और समय की आवश्यकता का तकाजा है कि शिक्षा प्रणाली को स्वदेशी रूप में ला जाय। परिणाम-स्वरूप समय-समय पर कई आयोग और समितियाँ गठित की गयीं। 49 में राधाकृष्णन् आयोग, 1953 में माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1962 में सम्पूर्णानन्द समिति र 1968 में कोठारी आयोग के द्वारा शिक्षा प्रणाली में विविध सुधारों की सिफारिशें की ीं। लेकिन ये सारे प्रयत्न पुरानी चादर में नये पैबन्द लगाने के समान थे जिससे शिक्षा-पद्धति

लक्ष्य हीनता का विचित्र नमूना बनकर रह गयी। वस्तुतः शिक्षाप्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता थी। सुविचारित उद्देश्यों को सामने रखकर एक समयानुकूल शिक्षा-पद्धति की आवश्यकता से आँखें बन्द किये रखना अब सम्भव नहीं था। इसी कारण भारत सरकार ने शिक्षा के अप्रतिम महत्त्व को स्वीकारते हुए एक 'नयी शिक्षा नीति' प्रस्तावित की। देश के विद्वानों, शिक्षाविदों, शिक्षकों को जन सामान्य को इस पर विचार विमर्श का अवसर दिया गया।

नयी शिक्षा नीति के निर्देशक तत्त्व—किसी भी शिक्षा-प्रणाली का ढाँचा सम्बन्धित समाज के जीवन मूल्यों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही बनाया जा सकता है। इसी आधार पर नयी शिक्षा नीति के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तावित किया गया है। ये इस प्रकार है—

(1) व्यक्ति का शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास करना।

(2) व्यक्ति में आत्म-विश्वास और आत्म-निर्भरता की भावना विकसित करना।

(3) व्यवहार में नैतिक मूल्यों को स्थान तथा विवेकशीलता का विकास।

(4) शिष्टाचार, सज्जनता, सम्मान-भावना, समानता, सहयोग, सहिष्णुता, श्रमशीलता, संयम आदि गुणों का विकास।

(5) राष्ट्रीय एकता, सर्वधर्म समभाव, प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति चेतना, ललित कलाओं के प्रति लगाव का विकास।

(6) प्राचीन भारतीय संस्कृति के महान् गुणों के साथ-साथ, इक्कीसवीं सदी की योग्यताओं को धारण करने वाले नागरिकों का निर्माण करना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सरकार ने एक राष्ट्रीय नयी शिक्षा नीति की आवश्यकता अनुभष की और 'शिक्षा की चुनौती' नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की। इसमें शिक्षा के प्रत्येक सोपान और स्वरूप पर विचार किया गया है।

प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च तथा प्रौढ़ शिक्षा—शासन ने स्वीकार किया है कि प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। चौदह वर्ष तक के प्रत्येक बालक को प्राथमिक स्तर की निःशुल्क शिक्षा देना शासन का उत्तरदायित्व माना गया है। इस स्तर पर बालक में वैज्ञानिक सोच का विकास करना, अच्छे संस्कार डालना तथा कृषि, गृह-उद्योग, सफाई स्वास्थ्य, शिष्टाचार, प्रकृति प्रेम आदि की शिक्षा दिया जाना सम्मिलित है।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में रोजगार परक कार्यक्रमों के समावेश तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ-साथ देश की संस्कृति के परिचय, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, कलाकौशल, उद्योग आदि से परिचय कराया जाना निश्चित किया गया है। एन. सी. सी., रैड क्रास तथा स्काउटिंग आदि अनुशासन सेवा तथा सहयोग की शिक्षा देने वाले कार्यक्रमों को स्थान दिया गया है।

उच्च शिक्षा में सीमित प्रवेश की नीति स्वीकार की गयी है। केवल प्रतिभावाशाली छात्रों को ही उच्च शिक्षा में प्रवेश दिया जाय। नौकरी और डिग्री के अनिवार्य सम्बन्ध को समाप्त कर दिया गया है। राष्ट्रीयता, विश्व-बन्धुत्व, धर्म-निरपेक्षता आदि भावनाओं का विकास भी आवश्यक माना गया है।

देश में साक्षरता को बढ़ाने के उद्देश्य से प्रौढ़ शिक्षा को भी महत्त्व दिया गया है। 15 से 35 वर्ष की आयु के व्यक्तियों को शिक्षित करने के लिये आधुनिक उपकरणों के प्रयोग का सुझाव दियां गया है।

शिक्षा के अन्य क्षेत्र—अध्यापकों के प्रशिक्षण, की आवश्यकता पर बल दिया गया है। जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण की समस्या, अल्प बचत, वृक्षारोपण आदि से परिचित कराया जाना आवश्यक माना गया है। इसके लिये सेमिनार, कार्यशाला आदि की व्यवस्था की गयी है।

परीक्षा पद्धति में सुधार आवश्यक माना गया है। इसके लिए 'सतत् मूल्यांकन' की प्रक्रिया स्वीकारी गयी है। प्रश्न बैंकों से प्रश्न-पत्रों का निर्माण, रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना तथा नकल को समाप्त करने के लिये उसे दण्डनीय अपराध माना गया है। सपुस्तक परीक्षा की व्यवस्था भी की गयी है।

तकनीकि शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कृषि, प्रबन्धन विधि आदि की शिक्षा पर भी पूरा ध्यान दिया गया है।

उपसंहार–इस प्रकार भारतीय शिक्षा-प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने तथा एक राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति को विकसित करने का पूरा प्रयास 'नयी शिक्षा नीति' मे किया गया है। नीति के अनुसार कार्य प्रारम्भ हो गया है और आशा है कि शीघ्र ही इसके सुफल सामने आने लगेंगे। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक, छात्र और शिक्षा तन्त्र में उचित समन्वय स्थापित किया जाय।

१५. महँगाई समस्या

रूपरेखा–(१) प्रस्तावना। (२) महँगाई का ताण्डव। (३) मँहगाई के कुपरिणाम। (४) महँगाई का कारण। (५) महँगाई रोकने के उपाय। (६) उपसंहार।

प्रस्तावना–इकतालीस वर्ष की हो गयी हमारी राजनीतिक स्वतन्त्रता लेकिन हमारी आर्थिक स्वतन्त्रता अभी घुटनों चलना सीख रही है। इतने चुनाव-वायदों के बाद भी खुशहाली की मंजिल मृग-मरीचिका की भाँति आगे ही आगे दौड़ लगा रही है। भारत का आम आदमी जी तो रहा है मगर यह जीना मरने से ज्यादा बुरा है। दिन-रात रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता से ग्रस्त भारत का नागरिक प्रशासन-तन्त्र में अपनी आस्था खोता चला जा रहा है। महँगाई की स्थिति इतनी विकराल हो चुकी है कि 'जीने' से भी अधिक महँगा राजनेता बेहयाई की हद को पहुँच चुके हैं। इससे भी बुरी स्थिति यह है कि समाज के विभिन्न वर्ग एक-दूसरे का निर्दय शोषण करने पर उतारू है।

महँगाई का ताण्डव–आज बाजार में कदम रखते हुए हर स्वच्छ वेतन भोगी का दिल काँपता है। भाव प्रतिदिन सुरसा की भाँति अपने मुख को फैलाते जा रहे हैं और आम जनता को विवश होकर हनुमान् की भूमिका निभानी पड़ रही है। अनाज, चीनी, घी, तेल, ईधन, कपड़ा ऐसी कौन-सी चीज है जिनके भाव आकाश को नहीं चूम रहे हैं। पारिवारिक बजट का सारा निर्माण कौशल भावों के निर्मम प्रहार से ढह जाता है। मेढकों को तोलने के समान ही आज आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाना असम्भव हो गया है। हर परिवारी के मस्तिष्क में सम्मान के साथ जीवन बिताने की चिन्ता घुमड़ती रहती है। चलिए पैसे भी जुटाइए तो बाजार से वस्तुएँ ही गायब है। आम बाजार में अँधेरा है और काला बाजार जगमगा रहा है। अपनी गर्ज है तो मुहँ माँगे दाम दीजिए और चीज लेकर अपना रास्ता लीजिए।

महँगाई के कुपरिणाम–महँगाई ने न केवल भारतीय समाज को आर्थिक रूप से त्रस्त किया बल्कि मानसिक और नैतिक रूप से भी उसे खोखला कर डाला है। पेट तो भरना ही होगा, कपड़े मोटे-झोटे पहनने ही होंगे। सर पर एक छत का इन्तजाम करना ही होगा। मगर साफ और सर्वविदित आमदनी से तो यह सम्भव नहीं है। परिणामस्वरूप अनैतिकता और भ्रष्टाचार के चरणों में समर्पण कीजिए। संक्षेप में कहें तो–

जिन्दगी को जरा आसान करिए, खुद पीजिए और पीने दीजिए।
ईमान को जरा खूँटी पर टाँगकर, चैन से जीओ और जीने दीजिए॥

लगता है जिओ और जीने दो का अहिंसात्मक आदर्श आज देश में समाज द्वारा
अपना लिया गया है। हर आदमी का हाथ दूसरे की जेब में है। फिर बताइए कि
है? कोई व्यवसाय हो, कोई पेशा हो, हर आदमी हाथ में उस्तरा लिए तैयार है। अगर
है तो चन्द सिर फिरे या क्षमा करें तो कहूँ 'बेवकूफ' लोगों की, जो सत्य और ईमान
रस्सी गले में डाले जीते-जी फाँसी खा रहे हैं। ये बहती गंगा में हाथ न धोने या न
वाले इन्सान, महंगाई की मार से दोहरे होकर ज़ी रहे हैं। हर रिश्वत, हर घूँस, हर प्रवच
हर एक चोरी को सही साबित करने का हक महंगाई ने दे दिया है। 'क्या करें सा
महँगाई है' बस इस एक नारे के सामने आपकी सारी चीख पुकार बेकार है।

महँगाई के कारण—आखिर ये बेपनाह मँहगाई है क्यों? क्या यह भी विधवा का
नियति दण्ड है? नहीं। इसके पीछे मानव की ही लिप्सा और स्वार्थ-कारण है। अ
कहते हैं कि माँग और उत्पादन का सन्तुलन ही भावों को स्थिर रखता है। अगर कि
की माँग अधिक है और उपलब्धि कम है तो वह वस्तु महँगी हो जाएगी। देखने सुनने
सिद्धान्त बड़ा भोला-भाला और विश्वसनीय प्रतीत होता है। परन्तु व्यवहार में हम
व्यवसाइयों ने इसके दोनों कान कुतर लिये हैं। अगर वस्तु का उत्पादन वास्तव में क
उसे किसी कीमत पर बाजार में उपलब्ध न रहना चाहिए। मगर सीमेन्ट का अभाव
परमिट वालों के लिए है, पैसे वालों के लिए नहीं। अधिक दाम दीजिए और ममचा
लीजिए। मिट्टी का तेल, केवल राशन की लाइन लगाने वालों के लिए अप्राप्य है लेवि
मार्केट में वह बराबर उजाला करता रहता है।

अतः महँगाई का कारण केवल उत्पादन क़ी कमी नहीं है। बल्कि समाजद्रोही त
उत्पादन की जमाखोरी इसका प्रमुख कारण है।

सरकारी नीतियाँ और राजनीतिक स्वार्थ भी महँगाई के जन्मदाता हैं। व्याप
साँठ-गाँठ रखने वाले सरकारी अधिकारी कोटा, परमिट और पूर्व-बजट सूचनाओं द्वा
मनमाना लाभ कमाने का स्वर्ण अवसर प्रदान करते हैं। चुनाव-कार्यों में व्यापारियों
करोड़ों रुपयों की धनराशि का मुआवजा नेता लोग पूरी तरह चुकाते हैं। अतः जनता
का लाइसेंस देने वाले ये राजनीतिज्ञ महँगाई के लिए उतने ही जिम्मेदार हैं।

कुछ हद तक जनता की संग्रह प्रवृत्ति भी महँगाई में सहायक होती है। किन्तु
वेतन-भोगी को तो मासिक आपूर्ति ही आकाश-कुसुम प्रतीत होती है। वह भला साल
इन्तजाम क्या करेगा? यहाँ पर भी ब्लैकमनी वाले लाभ में रहते हैं। वे संग्रह में स
हैं और साल भर के लिए भावों के परिवर्तन से निश्चिन्त हो जाते हैं।

सामाजिक रूढ़ियाँ और अंधविश्वास भी महंगाई में साधक है। अमुक-अमुक
अथवा विवाह आदि में शक्ति से बाहर व्यय करना। कोरी मूर्खतापूर्ण शान के प्रदर्शन
कर्ज लेकर भी बाजार में जेब काटना आदि व्यवहार महंगाई में सहायक हो रहे हैं।

सादा जीवन का आदर्श आज उपहास और असाध्यता का प्रतीक बन गया है
का परिणाम समाज को महंगाई के रूप में भोगना पड़ रहा है।

महँगाई रोकने के उपाय—प्रश्न यह नहीं है कि सरकारी प्रयत्न से महँगाई कित
प्रश्न तो यह है कि कितनी सदाशयता और ईमानदारी से महँगाई रोकने का प्रयत्न कि
लकड़ी से थन छूने की प्रवृत्ति से सारा प्रशासन दूषित हो रहा है। कोई महंगाई के
चोट करना नहीं चाहता क्योंकि राजनीतिक स्वार्थों की डोरियों ने हर हाथ को कस
अन्धों के द्वारा रेवड़ी बँट रही है और घर-घर के ही लाभान्वित हो रहे हैं। अतः ब

माखोरों और सरकार की आँखों में धूल झोंकने वाले व्यापारियों और उत्पादकों पर कुश ही महँगाई को नियन्त्रित कर सकता है।

द्वारा व्यापारियों को उधार दिया जाना उनकी जमाखोरी की क्षमता को बढ़ाता है पर भी अंकुश होना चाहिए।

समानान्तर वितरण और आपूर्ति व्यवस्था की स्थापना सरकार द्वारा होनी चाहिए ताकि रूप से भाव-वृद्धि और कृत्रिम महँगाई रोकी जा सके।

ा का आत्म-नियन्त्रण भी महँगाई को रोकने में काफी समर्थ है। सामान्य जीवन की तुएँ ऐसी हैं जिनका उपयोग कुछ समय के लिए पूर्ण या आंशिक रूप से रोका जा । कोरी शान-शौकत, मिथ्या-प्रदर्शन और रूढ़िवादी परम्पराओं से मुक्त होकर भी जन महँगाई से जूझ सकता है।

न-स्तर को ऊँचा रखने का मिथ्याभिमान हमसे अनेक कुकर्म कराता रहता है। सादा रतीय संस्कृति का महान् आदर्श है। जितना अधिक धन हम बाजार में झोंकेंगे उतनी ई की आग भड़केगी।

ारी वर्ग को भी सामाजिक उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहिए। केवल पैसा कमाने पर आत्म-नियन्त्रण करना चाहिए।

सबसे अन्तिम उपाय जनता द्वारा महँगाई के विरुद्ध सीधी कार्यवाही है—जमाखोरों वाना, ब्लैक मार्किट को समाप्त करना। घूँसखोर अधिकारियों एवं भ्रष्ट व्यापारियों का ना, सामाजिक बहिष्कार करना आदि उपायों द्वारा महँगाई के विरुद्ध जेहाद छेड़ना आज बनता जा रहा है।

हार—महँगाई पर नियन्त्रण अनन्तः जनता ही को करना पड़ता है। अगर जनता जमाखोरी और काला-बाजारी की प्रवृत्ति को सहन करती रहेगी तो असमाजिक तत्त्वों निरन्तर बढ़ते रहेंगे। ऐसे लोग तो चोर-डाकुओं से भी ज्यादा पापी और खतरनाक को आत्म-नियन्त्रण के साथ-साथ प्रशासन पर भी दबाव डालना चाहिए कि बाजार ण करे और उसे व्यवस्थित करे। ऐसे व्यक्तियों को कदापि नहीं चुनना चाहिए जो पर पहुँचते ही जनहित को भूल जाते हैं।

१६. भारत में बेरोजगारी की समस्या का समाधान

खा—(१) प्रस्तावना। (२) भारत में बेरोजगारी का स्वरूप। (३) बेरोजगारी के कारण। ान। (५) उपसंहार।

वना—हमारे देश के सामाजिक एवं राजनीतिक नेता अनेक समस्याओं का राग अलापते हैं। कोई अनुशासन-हीनता की समस्यां पर आँसू बहाता है तो कोई भ्रष्टाचार का है। अशिक्षा और निर्धनता की समस्याएं भी इसी क्रम में गिनायी जा सकती हैं। ब समस्याओं की जननी एक और समस्या है—बेरोजगारी अथवा बेकार की समस्या। से निर्धनता पनपती है और निर्धनता भ्रष्टाचार को जन्म देती है। अतः यदि ध्यान ाय तो यह ऐसी समस्या है कि यदि इसका समाधान हो जाय तो भारत की कायापलट है।

में बेरोजगारी का स्वरूप—यों तो बेरोजगारी की समस्या विश्वव्यापी है किन्तु भारत स्थिति सबसे अधिक भयानक है। बेकारी के अनेक रूप दिखायी देते हैं। आज ामि अथवा अशिक्षित व्यक्ति ही बेकार नहीं है, शिक्षित और सुशिक्षित व्यक्ति भी संख्या बढ़ा रहे हैं। यदि यह कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी कि शिक्षित का प्रतिशत अशिक्षित बेरोजगारों से कहीं अधिक है ग्रामों के युवक रोजगार की

खोज में नगरों की ओर जाते हैं। सब ओर से आने वाली यह भीड़ वहाँ के उद्योगों में न खप पाती। निराश बेरोजगार युवक या तो भिक्षा-वृत्ति का सहारा लेते हैं अथवा कुसंगति पड़कर अपराधों को अपना व्यवसाय बना लेते हैं। हमारे देश में एक ऐसा वर्ग भी है ज प्रतिवर्ष कुछ मास बेकार रहता है। कृषकों को खेतों में प्रायः आठ महीने कार्य करना होता है शेष चार महीने बेकार रहते हैं। कृषि पर आश्रित श्रमिकों की भी यही दशा है। इस बेकार को हम आंशिक बेकारी कह सकते हैं।

बेकारी के परिणामों पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि यह समस्या ही आज देश को खोखला बना रही है। आज प्रत्येक परिवार में कुछ व्यक्ति बेरोजगार होते हैं। इन बेरोजगारों का भार परिवार के उन एक-दो सदस्यों पर पड़ता है जो कुछ कमाते हैं। इस प्रकार निर्धन व्यक्ति निर्धनतर बन जाता है और धनी-निर्धन के बीच की खाई बढ़ती जाती है। निराश बेरोजगार व्यक्ति के सामने तीन मार्ग रह जाते हैं–1. वह भीख माँग कर अपनी उदरपूर्ति करे 2. अपराधियों के गिरोह की शरण ले, अथवा 3. आत्म-हत्या कर ले। इस प्रकार की दिल दहला देने वाली घटनाएँ आये दिन समाचार-पत्रों में छपती रहती हैं। "बुभुक्षितः किं न करोति पापम्" भूखा व्यक्ति घोरतम अपराध कर सकता है। तभी तो किसी कवि ने कहा है–

तन की हविस मन को गुनहगार बना देती है, बाग के बाग को बीमार बना देती है।
भूखे पेटों को देश-भक्ति सिखाने वाली, भूख इन्सान को गद्दार बना देती है।।

बेरोजगारी के कारण–भारत में दिन-दिन बढ़ती बेरोजगारी के भी कुछ कारण है। इन कारणों का निम्नवत् वर्गीकरण किया जा सकता है :

(क) जनसंख्या–यह हमारी प्रस्तुत समस्या का मुख्य कारण है। जनसंख्या के घनत्व की दृष्टि से चीन के बाद हमारे देश का नाम आता है। संख्या तो बढ़ती है किन्तु रोजगार के स्रोत नहीं बढ़ते। अतः ज्यों-ज्यों जनसंख्या बढ़ती है त्यों-त्यों बेरोजगारों की संख्या में भी वृद्धि होती जाती है।

(ख) अँग्रेज शासकों की देन–बेकारी की समस्या हमें अँग्रेज-शासकों से विरासत में मिली है। उन्होंने शासन करने से पहले ही हमारी मण्डियों पर अधिकार किया। उनकी यन्त्र-निर्मित वस्त्रादि सामग्री की तुलना में हमारे यहाँ की हस्तानिर्मित वस्तुएँ पिछड़ गयीं। इससे हमारे कुटीर-उद्योग ठप्प हो गये। इस प्रकार कुशल शिल्पकारों की आने वाली पीढ़ियाँ बेरोजगारों की सूची में अंकित हो गयीं।

(ग) दूषित शिक्षा प्रणाली–अंग्रेजों ने जो शिक्षा-पद्धति क्लर्क उत्पन्न करने के लिए चलायी थी वह अब भी उसी दिशा में कार्यरत है आज का शिक्षित युवक नौकरी के अभाव में स्वयं किसी व्यवसाय से अपनी जीविका नहीं चला सकता है। आज की शिक्षा-प्रणाली में व्यावसायिक परामर्श की कोई व्यवस्था नहीं है। आज का बालक जो शिक्षा पाता है वह उद्देश्य रहित होती है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा-प्रणाली भी बेकारी की समस्या का प्रमुख कारण हैं।

(घ) उद्योग-नीति–हमारी सरकार की उद्योग-नीति भी इस समस्या को हल करने में असफल रही है। हमारे यहाँ औद्योगीकरण के रूप में बड़े उद्योगों को बढ़ावा दिया गया। आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की दृष्टि से यह एक अच्छा कदम था। किन्तु मशीनीकरण के कारण बेकारी की समस्या और बढ़ गयी। लघु अथवा कुटीर उद्योगों के विकास के लिए जो प्रयास किये जा रहे हैं वे भी अपर्याप्त हैं।

(ङ) रूढ़िवादी विचारधारा–हम इस प्रगतिशील युग में भी रूढ़िवादी बने हुए हैं। किसी समय की तर्कपूर्ण वर्ण-व्यवस्था आज जातिवाद के रूप में विकसित हो चुकी है। वर्तमान समय में यदि व्यवसाय के कुछ नये मार्ग खुले हैं तो लोग उन्हें यह सोचकर नहीं अपनाते कि अमुक

कार्य उनकी जाति के करने का नहीं है। चर्म-कला, काष्ठ-कला, दर्जीगिरी आदि पर आधारित उद्योग आज अच्छी दशा में है। इनमें निर्मित वस्तुओं का अन्य देशों को निर्यात भी हो रहा है। परन्तु ये घृणित कार्य कोई ब्राह्मण अथवा वैश्य कैसे कर सकता है?

(च) श्रम की अवज्ञा—हमारे यहाँ सामाजिक स्थिति ही कुछ ऐसी है कि श्रम अथवा श्रमिक को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। घाट पर यजमान से दक्षिणा लेकर जीवन निर्वाह करने वाले ब्राह्मण को तो लोग प्रणाम करेंगे। यदि वही किसी मिल या कारखाने में नौकरी करने लगे तो वह उस सम्मान का पात्र नहीं रहेगा। इस कारण भी उच्च माने जाने वाले लोग श्रमिक बनने से कतराते हैं और आजीवन बेकार रहते हैं।

समाधान—किसी समस्या का कारण जान लेने के बाद समाधान का मार्ग स्वयं खुल जाता है। आज सबसे अधिक आवश्यकता सामाजिक क्रान्ति लाने की है। प्राचीन व्यवस्थाओं और मान्यताओं को नये युग के अनुकूल ढालें, श्रम का सम्मान करें, यह परमावश्यक है। जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण भी आज के-युग की माँग है। किन्तु यह कार्य केवल प्रशासनिक स्तर से सम्भव नहीं है। सरकार को मुख्य रूप से दो बातों पर ध्यान देना चाहिए। 1. शिक्षा व्यवसाय केन्द्रित हो। शिक्षार्थियों को शिक्षा के साथ उचित परामर्श भी दिया जाये। 2. लघु एवं कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाये और इस प्रकार की योजनाएँ व्यावहारिक हों।

उपसंहार—आज प्रत्येक राजनीतिक दल अपने चुनाव घोषणा-पत्र में बेकारी की समस्या के समाधान का आश्वासन देता है। कोई-कोई दल यह भी कहता है कि हम प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार देंगे। यदि यह सम्भव न हुआ तो प्रत्येक बेरोजगार व्यक्ति को बेरोजगारी भत्ता देंगे। किन्तु बेरोजगारी भत्ता देने से ही समस्या का समाधान नहीं होगा। इस समस्या का हल तब तक नहीं होगा जब तक कि कोई ठोस और सुनियोजित कार्यक्रम लागू नहीं होता।

१६. एक सामाजिक कलंक : आतंकवाद

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. आतंकवाद का प्रसार। ३. आतंकवाद का प्रभाव। ४. दूर करने के उपाय। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना—परमाणु-युद्ध से भी भयावह, समाज के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चुनौती के रूप में अत्यन्त रोमांचकारी आतंकवाद हमारे सम्मुख उपस्थित है। मार-पीट, लूट-पाट, विद्रोह, अशान्ति तथा असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। युवक मनमानी पर उतर आये है। लूट-पाट के अतिरिक्त मनमाने ढंग से हत्याएँ करके समाज में आतंक फैलाना ही उनका उद्देश्य बन गया है। वे आतंकवादी के नाम से कुख्यात हो रहे हैं और उनके कुत्सित कार्य आतंकवाद के नाम से जाने जाते हैं।

आतंकवाद का प्रसार—आतंकवाद मानवता के लिए अभिशाप तथा समाज के लिए कलंक है। स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्यवाही के पश्चात् आतंकवाद अधिक बलशाली हुआ है। आतंकवाद के प्रसार के प्रमुख कारणों में क्षेत्रवाद तथा धर्मान्धता प्रमुख है खालिस्तान की माँग क्षेत्रवाद तथा धर्मान्धता का स्पष्ट प्रमाण है। हत्या, लूट, डकैती सिख आतंकवाद के जीते जागते उदाहरण हैं जिन्होंने भारतीय सुरक्षा व्यवस्था को नष्ट कर दिया है। राजनीतिक स्वार्थ, आर्थिक विषमता तथा समन्वय के अभाव ने आतंकवाद के प्रसार में अग्नि में घृत का कार्य किया है।

आतंकवाद का प्रभाव—आतंकवाद से राजनीति, अर्थ तथा समाज सभी प्रभावित हुए हैं। राजनीति में भय तथा कुण्ठा बढ़ती जा रही है। व्यवसायी अपना धन उद्योग-धन्धों में लगाने में संकोच कदा अनुभव करने लगे हैं। व्यापार नष्ट हुए जा रहे हैं। उद्योगों की उन्नति में बाधा पहुँच रही है। समाज में अविश्वास तथा अनैतिकता का वातावरण पनपता जा रहा है। सामाजिक भावना, का गुण समाप्त प्रायः हो चुका है।

आतंकवाद दूर करने के उपाय– आतंकवाद निश्चित रूप से दूर होना चाहिए ताकि ए भय मुक्त समाज की स्थापना हो सके। आतंकवाद को दूर करने के लिए दो प्रकार के मा का अनुसरण करना होगा। क्या ही अच्छा हो यदि सेना को यह कार्य सौंप दिया जाय। य कार्य भले ही तत्कालीन प्रभाव डालने वाला है किन्तु सैनिक बल के सम्मुख आतंकवादी व किसी प्रकार का दुस्साहस करना कठिन ही होगा। इस रूप में आतंकवाद अवश्य ही निष्प्रभा होगा।

दूसरे प्रकार का मार्ग समाज पर स्थायी छाप छोड़ने वाला है। इस प्रकार के उपाय बल पर समाज के मन को बदला जा सकता है। आतंकवाद से घृणा हो सकती है। दूसरों व डराने, हत्या करने तथा अशान्ति उत्पन्न करने की बात मन से दूर हो सकती है। इसके लि हमें पारस्परिक प्रेम, भ्रातृत्व भावना तथा संकुचित साम्प्रदायिकता का भाव परित्याग करके आतंकवाद का अन्त किया जा सकता है। इससे मन को शान्ति मिलेगी तथा आतंकवाद व स्थायी हल भी सम्भव होगा।

उपसंहार– आतंकवाद भारत की ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गयी है। जीव की सुरक्षा सन्देहास्पद हो गयी है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज भयमुक्त बने चारों ओर शान्ति स्थापित हो। लूट-पाट और हत्याओं की समाप्ति हो। मन की अशान्ति द हो सुख का वातावरण बने। पारस्परिक प्रेम की भावना का अंकुरण हो आतंकवाद की समाप्ति हो जिसके लिए हम सबको एक जुट होकर उसे समूल नष्ट करने का प्रयास करना होगा।

१८. भ्रष्टाचार

या

भारत में भ्रष्टाचार

रूपरेखा–१. प्रस्तावना। २. भ्रष्टाचार क्यो? ३. भ्रष्टाचार कैसे दूर हो? ४. भ्रष्टाचार व दुष्प्रभाव। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना– भारत विभिन्न समस्याओं के घेरे में है। साम्प्रदायिकता, भाषा, जाति, बेरोजगा की तो समस्याएँ हैं ही, भ्रष्टाचार की समस्या अपने विकराल मुख को फाड़े प्रत्येक क्षेत्र तथ प्रत्येक वर्ग को निगल जाने के लिए हर स्थान पर खड़ी दिखायी दे रही हैं सम्पूर्ण राजनीति तथा राजनेता इस मुख में समाते जा रहे हैं। शासन का प्रत्येक तन्त्र इस भ्रष्टाचार के जाल ऐसा फँसा है कि भ्रष्टाचार का निराकरण सम्भव नहीं दिखायी दे रहा। राष्ट्रीयता की भावन समाप्त होती जा रही है। देश पतन के गर्त में गिरता जा रहा है जिसे गिरने से रोकना प्रत्ये देशवासी का कर्तव्य है।

भ्रष्टाचार क्यों?– पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर इस सीमा तक ब गया है कि भारतीयों को भौतिक सुख सुविधाएँ प्राप्त करना ही उनके जीवन का उद्देश्य ब गया है। यह सभी को स्वीकार करना पड़ेगा कि आज महँगाई के इस समय में जब जीवनोपयोगी सामग्री जुटाना ही कठिन हो रहा है, भोग-विलास की सामग्री क्रय करना कि प्रकार सम्भव हो सकता है। ऐसा लगता है कि भारतवासी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति लिए ऐसा लालायित है कि उनकी पूर्ति के लिए अनुचित मार्ग अपनाने में भी उसे किसी प्रक की हिचक नहीं हो रही है। करोड़पति बनने की धुन में हर राजनेता, प्रत्येक अधिकारी भ्रष्टाच अपनाए हुए हैं।

राजनेता तथा उच्चाधिकारियों की मनोवृत्ति का दुष्प्रभाव अधिनस्थ कर्मचारियों पर भी प रहा है। वे भी अपनी जेबें भरने में लगे हैं। सम्पूर्ण शासन तन्त्र भ्रष्टाचार की पंक में धँस

ा रहा है। सभी कार्य उपेक्षित पड़े हैं। किसी को अपने उत्तरदायित्व का ध्यान नहीं रहा है। सब ध्यान अपनी तिजोरियाँ भरने में केन्द्रित हो गया है।

पदोन्नति की दौड़ तथा अधिकाधिक रिश्वत की प्राप्ति में कोई पीछे नहीं रहना चाहता। सभी ऐसा स्थान पाने की होड़ में सम्मिलित है जो रिश्वत की दृष्टि से किसी की दशा में कम न हो। स्थानान्तरण कराने तथा रुकवाने के लिए रिश्वत में भारी धन राशि दे रहे हैं।

मँहगाई सुरसा के समान अपना मुँह फैला रही है। भ्रष्टाचार की गति भी उसके साथ बढ़ती जा रही है। सामान्य जीवन कठिनतर होता जा रहा है। व्यापारी हो या नौकरीवाला, राजनेता हो अथवा अधिकारी सबको सुख-सुविधाओं की चाह है! सबको अपना घर भरने की इच्छा है। अधिकाधिक लाभ की कामना है। सब काले धन्धों में फँसे हैं। अपना उल्लू सीधा करने में प्रवृत्त हैं। भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में लगे हैं।

भ्रष्टाचार कैसे दूर हो?– भ्रष्टाचार दूर करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता जन-चेतना की है। भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग की स्थापना से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो सकता। ऐसा कोई उदाहरण हमारे सम्मुख नहीं आया है जिससे भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग के अधिकारी तथा कर्मचारी एक सुन्दर आदर्श उपस्थित कर सके हों। वे स्वयं दुःखी हैं और भ्रष्टाचार का रोना रोते हैं। ठीक है बड़े-बड़े अधिकारी भी अपने स्थानान्तरण के लिए जब रिश्वत देते हैं तो वे रिश्वत लेने में ही चूक क्यों करेंगे। राजनेता तक रिश्वत के लोभ से विरक्त नहीं है तो साधारण व्यक्ति का तो कुछ कहना सुनना ही नहीं है। क्या ही अच्छा हो कि उत्तम आचारण के लिए एक आचार संहिता हो जो आदर्श आचरण उपस्थित करने में सहायक हो।

योग्यतानुसार सबको पद प्राप्त हों तथा रोजगार का अवसर प्रदान किया जाय तो भ्रष्टाचार को कम स्थान मिलेगा।

कर्मचारियों की पदोन्नति तथा स्थानान्तरण की निश्चित नीति हो ताकि कोई रिश्वत के बल पर इनको अपने लिए सहज बनाने का अवसर प्राप्त न कर सके।

भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव– चरित्र किसी भी देश की आत्मा होती है। देशोन्नति की आधार-शिला होती है। मेरूदण्ड के समान है यह चरित्र जिस पर देश टिका हुआ है। सामाजिक जीवन में लोभ तथा मोह के जाल में पड़कर इसे बिगाड़ना किसी को भी शोभा नहीं देता। कहा भी है कि यदि चरित्र नष्ट हो जाता है तो सब कुछ नष्ट हो जाता है।

नैतिकता के विलुप्त हो जाने से देश का चरित्र तथा सांस्कृतिक विरासत नष्ट होती जा रही है। भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। रिश्वत तथा भाई भतीजावाद सीमा लाँघ चुका है। अपराधी प्रवृत्तियों का बोलबाला है। अनाचार और दुराचार अपना पैर फैला रहे हैं। चोरी और सीनाजोरी साधारण बात हो गयी है। मानवीय आदर्शों को हमने अपनी ताक पर रख दिया है। रिश्वत देना और लेना अब सुनिश्चित नहीं रहा है। साधारण लेन-देन जैसी बात रह गयी है। भारत भ्रष्टाचार के अन्धकार में भटक रहा है। प्रकाश की एक किरण की प्रतीक्षा में है जो जन-जागरण से ही प्राप्त हो सकती है।

उपसंहार– भारतीय संस्कृति ही उसकी ऐसी धरोहर है जिस पर भारत को सदा गर्व रहा है। विकासशील देशों में अग्रगण्य माना जाता रहा है लेकिन खेद का विषय है कि भारतीय संस्कृति, भारतीय चरित्र जिसकी विश्व में प्रशंसा होती थी, आज भ्रष्टाचार के दलदल में ऐसा फँसा है, ऐसा धँसता जा रहा है कि उबरने की आशा ही कम रह गयी है। स्वार्थी देशवासी, हमारे बड़े-बड़े नेता और अधिकारी जानते हुए भी अनजान बने हुए हैं। एक दूसरे को दोष देते हैं लेकिन स्वयं दोषमुक्त नहीं होना चाहते। भ्रष्टाचार की कीचड़ से नहीं निकलना चाहते।

एक दूसरे को दोष देने से काम नहीं बन सकता। हम सबको यह कर्तव्य निश्चित करना चाहिए कि भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए हम सब एक जुट होकर कार्य करेंगे। भ्रष्टाचार का विरोध करेंगे।

१९. सह-शिक्षा

अथवा सह-शिक्षा की आवश्यकता

अथवा सह-शिक्षा का महत्त्व

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. सह-शिक्षा विषयक धारणा। ३. सह-शिक्षा के लाभ ४. सह-शिक्षा के दोष। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना—समय परिवर्तनशील है। वह एक जैसा नहीं रहता। बदलता रहता है। कभ ऐसा भी समय था जब स्त्री-शिक्षा भारतीय समाज में उचित नहीं मानी जाती थी। स्त्री शिक्ष के नाम पर नाक-भौंह सिकोड़ी जाती थी। आश्चर्य प्रकट किया जाता था। अब ऐसा समय आया है कि स्त्री-शिक्षा को महत्त्व दिया जाता है। उसकी शिक्षा को उचित माना जाता है प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के समान पद की अधिकारिणी माना जाता है। बालक बालिकाओं को ए ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया जाता है। सह-शिक्षा को वांछनी माना जाता है।

सह-शिक्षा विषयक धारणा—सह-शिक्षा को फ्रायड बालक-बालिकाओं के लिए वरदा स्वरूप मानता है। उसके विचार से सह-शिक्षा बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व के विकास क अवसर प्रदान करती है। एक दूसरे के स्वभाव को समझाने का अवसर देती है। प्रतियोगित का भाव उत्पन्न करके सर्वतोमुखी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है।

सहशिक्षा के लाभ—सह-शिक्षा में बालक-बालिकाओं की एक साथ रहने का अवसर प्राप्त होता है। फलतः बालक स्त्री-सुलभ गुणों से परिचित हो जाता है। स्त्रियों के प्रति (२) जिज्ञास समाप्त हो जाती है। (३) बालक का सम्पूर्ण समय और शक्ति विद्याध्ययन में लगती है। उसक शक्ति का अपव्यय नहीं होता। भावनाओं का दमन नहीं होता। समानता का भाव रहता शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है। बालिकाओं के समक्ष किया गया सभ्य आचरण उनके स्वभा का अंग बन जाता है।

बालिकाओं को सहशिक्षा में जीवन-युद्ध की तैयारी का अवसर मिलता है। वह बालक के स्वभाव से पूर्णतः परिचित होकर अपने भविष्य को उज्जवल बनाने में समर्थ होती है।

सह-शिक्षा के दोष—बालकों की प्रवृत्ति बालिकाओं से भिन्न होती है। दोनों का स्वभा शारीरिक गठन, रुचि तथा कार्य एक दूसरे से मेल नहीं खाते। बालिका घर की स्वामिनी बन है। उसका कार्य क्षेत्र घर है। उसे इस रूप में गृहविज्ञान, पाक-कला, शिशु संरक्षण, संगीता विषयों का अध्ययन करके अपने भविष्य को उज्जवल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

बालकों को बाहर का स्वामी होने के कारण स्त्रियों से पृथक् शिक्षा की आवश्यकता है दोनों का समान पाठ्यक्रम कभी भी एक दूसरे के लाभ के लिए नहीं हो सकता। दोनों लिए उपयोगी पाठ्यक्रम का प्रबन्ध एक ही विद्यालय में सम्भव नहीं है।

सहशिक्षा अनुशासनहीनता को भी जन्म देने वाली है। अनाचार और दुराचार को स्थ देती है जो भारतीय संस्कृति के सर्वथा प्रतिकूल है। बालक-बालिकाओं में स्वेच्छाचारिता व वृद्धि होती है बालिकाएं अपने आपको 'मर्दों' से कम नहीं समझती। लज्जाशीलता त संकोचशीलता उनसे दूर हो जाती है। बेढंगे वस्त्र पहनना उनका स्वभाव बन जाता है। अधि खर्चीली उनकी आदत बन जाती है। श्रृंगार प्रियता तथा दिखावा उनकी प्रवृत्ति हो जाती है सर्वथा हानिकारक है।

उपसंहार—प्रारम्भिक कक्षाओं तक सहशिक्षा में कोई आपत्ति नहीं हो सकती क्योंकि कक्षाओं में पाठ्यक्रम समान होता है तथा बाल्यावस्था के कारण उनमें किसी प्रकार का विक

ीं होता किन्तु माध्यमिक कक्षाओं से प्रत्येक अन्तर प्रारम्भ हो जाता है। अतः सह-शिक्षा वित नहीं मानी जा सकती। महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की शिक्षा तो एक साथ देना री भूल को निमन्त्रण देना है किन्तु उच्च कक्षाओं में उनकी शिक्षा की पृथक् व्यवस्था करना धिक व्यय-साध्य है अतः सह-शिक्षा की व्यवस्था ही श्रेयस्कर है किन्तु सावधानी की भी त्यावश्यकता है।

२०. विद्यार्थी और सक्रिय राजनीति

या विद्यार्थी और राजनीति

रूपरेखा–१. प्रस्तावना। २. शिक्षा और राजनीति। ३. आज की स्थिति में विद्यार्थियों के र्व्य। ४. दुष्परिणाम। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना–यह भारत तथा भारतवासियों का सौभाग्य है कि देश स्वतन्त्रता प्राप्त करके च्चे लोकतन्त्र के वातावरण में श्वासं लेने का सुअवसर प्राप्त कर सका है। नागरिकों को लिक अधिकार प्राप्त हुए हैं और हर नागरिक अपनी योग्यतानुसार पद प्राप्त करने तथा सदस्य र्वाचित होने का अधिकार प्राप्त कर सका है।

देशवासियों को अब राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुआ है। वे राजनीतिक समुदाय का निर्माण सकते हैं। राजनीतिक में अपनी योग्यतानुसार भाग ले सकते हैं। विद्यार्थी, विद्यालयों में द्याध्यन तो करता ही है, विद्यार्थी परिषद् तथा अन्य छात्र संगठनों के द्वारा वह अध्ययन काल ही राजनीति का व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर लेता है जो प्रजातन्त्र में उत्तम नागरिक बनने सीढ़ी तो है ही राजनेता बनने में भी सहायक सिद्ध होता है।

शिक्षा और राजनीति–शिक्षा का राजनीति से गहरा सम्बन्ध है। प्राचीनकाल में गुरुकुल क्षा प्रणाली थी। इस काल में भी राजनीति की शिक्षा दी जाती थी। उत्तम शासन व्यवस्था गुणों से परिचय कराया जाता था। सेवा के उत्तम संचालन की शिक्षा प्रदान की जाती थी। ्भक्तिं तथा कर्तव्य परायणता का पाठ पढ़ाया जाता थां।

आज तो समय ने ऐसी करवट ली है कि सामान्य मतदाता भी भविष्य में अपनी ग्यतानुसार प्रधानमन्त्री बन सकता है। सक्रिय राजनीति में भाग लेकर शासन सूत्र अपने हाथों लिया जा सकता है।

विद्यार्थियों के कर्तव्य–अब तक भारतीय शिक्षा और यहाँ की राजनीति विदेशी सत्ता के ुल में थी। अब विदेशी शासनकाल का अन्त हो चुका है। भारत एक गणतन्त्रात्मक शासन ाली का विकासशील देश है। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन, सरदार भगतसिंह, द्रशेखर आजाद आदि ने ऐसे मार्ग को प्रशस्त किया है जो छात्रशक्ति तथा राजनीतिक शक्ति दाता तथा विद्यार्थियों का भाग्य विधाता है।

आज की स्थिति में विद्यार्थियों का प्रमुख कर्तव्य शिक्षा ग्रहण करना है। उन्हें 'सब तजं, भज' के अनुसार पूर्ण मनयोग से विद्याध्ययन को प्राथमिकता देनी चाहिए। विद्या मन्दिरा- ी पवित्रता बनाये रखने के लिए दल तथा स्वार्थ से परे रहकर शैक्षणिक काल का सदुपयोग ना चाहिए।

जीवन में उच्चादर्शों तथा लक्ष्यों का निर्धारण करके उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील ा विद्यार्थियों का कर्तव्य है। उन्हें अशिक्षितों को शिक्षित बनाने का प्रयास करना चाहिए क ज्ञान के प्रसार में उनका भी नाम हो सके।

विद्यार्थियों का कर्तव्य है कि छात्र संगठनों का उचित प्रयोग करें। इन संगठनों के माध्यम से देश में व्याप्त कुरीतियों की समाप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करें। देश तथा समाज के सुधार के लिए योजनाबद्ध कार्य सम्पन्न करके उसकी उन्नति का विशेष ध्यान रखें।

दुष्परिणाम—विद्यार्थी सक्रिय राजनीति में भाग लेने के लिए लालायित रहते हैं। उनका किसी राजनीतिक दल से सम्बन्ध भी स्थापित हो जाता है। सत्तापक्ष के दल किसी भी विषय में उसके साथ रहते हैं और हर दशा में उसका समर्थन करते हैं। विरोधी दल उसके विपरीत आचरण करते हैं। हड़ताल, जुलूस तथा विभिन्न ध्वंसात्मक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। छात्रों को गुमराह करते हैं। देशहित भूलकर राजकीय भवनों, वाहनों तथा कर्मचारियों को अपने असन्तोष का निशाना बनाते हैं। तोड़-फोड़ करके देश को क्षति पहुँचाते हैं। देश के विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

उपसंहार—विद्यार्थियों का सक्रिय राजनीति में भाग लेना उनकी जागरुकता का उत्तम उदाहरण तो कहा जा सकता है किन्तु उज्ज्वल भविष्य का द्योतक नहीं। विद्यार्थियों के अध्ययन में सहायक नहीं। अनुशासन और कर्मठता का साधन नहीं। विद्यार्थियों के लिए तो यही उचित है कि वे राजनीतिक चर्चाओं के घेरे में न आवें। सक्रिय राजनीति से दूर रहकर अपने अध्ययन को प्रमुखता दें।

२१. अनुशासन और विद्यार्थी

या विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता

या छात्र असन्तोष

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) अनुशासन का अर्थ। (३) अनुशासन के विविध रूप। (४) अनुशासन का व्यापक महत्त्व। (५) अनुशासन के उपाय। (६) उपसंहार।

प्रस्तावना—'छात्रों और पुलिस में जमकर संघर्ष।' 'छात्रों ने एक्सप्रेस गाड़ी को फूँक दिया।' 'छात्रों द्वारा परीक्षाओं का बहिष्कार।' 'नकल करते पकड़े जाने पर छात्रों द्वारा अध्यापक की हत्या।' शायद ये समाचार अब हमारे लिए दैनिक जीवन की सामान्य घटनाएँ बन चुकी हैं। अखबार में इन्हें पढ़कर हम चौंकते नहीं, चिन्तित नहीं होते। सिर्फ एक रटे रटाये वाक्य में अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करके निश्चिन्त हो जाते हैं—'छात्रों में अनुशासनहीनता बहुत बढ़ रही है।' पर हमारी उदासीनता का परिणाम कितना भयंकर और दूरगामी होने जा रहा है, इस पर विचार आज नहीं तो कल हमें अवश्य करना पड़ेगा। वरना वही कहावत चरितार्थ हो जायेगी कि—'इस घर को आग लग गयी घर के चिराग से'।

अनुशासन का अर्थ—'अनु' का अर्थ है पीछे, अर्थात् शासन के पीछे चलना। जीवन के विविध क्षेत्रों में व्यवस्था और सुख-शान्ति बनाये रखने के लिए जो नियम-उपनियम बनाये गये हैं, उनका स्वेच्छा से पालन ही अनुशासन है। शासन के पीछे दण्ड को भय होता है, इसलिए, लोग उसे मानते हैं, परन्तु अनुशासन का पालन नैतिकता या अन्तरात्मा की प्रेरणा से होता है। छात्र जीवन, भावी मानव-जीवन की तैयारी है, अभ्यास भूमि है। इसलिए छात्रों को तो अनुशासन को स्वीकारना परम् आवश्यक है।

अनुशासन के विविध रूप—अनुशासन के रूप अनेक हैं। वह विविध रूपों में समाज के विविध अंगों में देखा जा सकता है। धार्मिक अनुशासन, नैतिक अनुशासन, सामाजिक अनुशासन, आदि-आदि इसके रूप हैं। किन्तु इसे दो प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है। सैनिक व स्वतन्त्र अनुशासन। इन्हें ही क्रमशः बाह्य व आन्तरिक अनुशासन भी कहा जाता है। जब मानव को सैनिक के समान अनुशासन में रहने को बाध्य किया जाय और उसे उसी ढंग से

आदेश व विधान-पालन के हेतु प्रशिक्षित किया जाय तो इस प्रकार का अनुशासन सैनिक अनुशासन कहलाता है, किन्तु जब इसका पालन स्वेच्छा से हो तो यह स्वाभाविक या आन्तरिक कहलाता है। इसमें सन्देह नहीं है कि इन दोनों की ही समय-समय पर आवश्यकता बनी रहती है किन्तु श्रेष्ठ स्वाभाविक अनुशासन ही है। इसमें स्थायित्व होता है और सैनिक-अनुशासन अस्थायी रह जाता है।

विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्त्व—विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का जो महत्त्व है, वह सर्वविदित ही है। पुराकाल में जब शिक्षा आश्रमों में दी जाती थी, विद्यार्थियों को कठोर से कठोर नियमों का पालन करना पड़ता था। ऋषि धौम्य के आश्रम का अनुशासन विद्यार्थियों को स्मरण रखना चाहिए। विद्यार्थी-जीवन वह समय है जब जीवन के विशाल भवन की नींव रखी जाती है। यदि नींव कच्ची हुई तो सारा जीवन ही ढुल-मुल हो जाएगा और परिणामतः केवल असफलता ही हाथ लगेगी। यह अति खेद का विषय है कि आज का विद्यार्थी अनुशासनहीनता की ओर जा रहा है गुरुजनों का अपमान, माता-पिता का उपहास पढ़ाई से जी चुराना, अवज्ञा करना आदि सभी अनुशासनहीनता के ही लक्षण है। परीक्षा में नकल करने व अनुचित साधनों का प्रयोग करने की प्रवृत्ति भी इसी का परिणाम है और निश्चय ही यह घातक है, इसे दूर करना ही होगा।

(क) अनुशासन के उपाय—किन्तु इस अनुशासनहीनता को किस प्रकार दूर किया जाए? ऐसा करने के लिए हमें उन कारकों पर विचार करना पड़ेगा जो उसके लिए उत्तरदायी है। प्रजातन्त्र का हमने सही अर्थ नहीं समझा है और इसका दुरुपयोग किया है। इसकी आड़ में गुटबन्दी, स्वार्थपरता आदि को हमने बहुत प्रश्रय दिया है। फलतः आज के तथाकथित नेता शासन में बाधा डालने के निमित्त विद्यार्थियों को उकसाते हैं। विद्यार्थी तो परिपक्व व अनुभवी होते नहीं वे सोचते हैं कि नेतागण उनको व उनकी शक्ति को महत्त्व दे रहे हैं। अतः वे बिना सोचे समझे तोड़-फोड़, हड़ताल, प्रदर्शन आदि के चक्कर में पड़ जाते हैं। यह उनके अध्ययन मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है, इससे बचना ही चाहिए।

(ख) विद्यालयों में पारस्परिक द्वेष-भाव, गुटबन्दी आदि का बोलबाला भी पाया जाता है। इससे विद्यार्थियों में असन्तोष, अश्रद्धा आदि का विकास होता है जो अनुशासनहीनता को बढ़ावा देने वाले तत्त्व हैं। परीक्षा-प्रणाली का दोषपूर्ण होना व सामाजिक संगठन की शिथिलता भी इस विचार से हानिप्रद है। उनसे भी विद्यार्थी जीवन अनियन्त्रित व असंयमित हो जाता है। अध्यापकों का अपर्याप्त वेतन, उनका ट्यूशन कार्य और साथ ही साथ छात्रों से सम्पर्क-अवधि की कमी भी अनुशासनहीनता के ठोस कारण हैं। जब तक इन सबका निराकरण नहीं होता अनुशासन हीनता के रोगों को रोक सकना सम्भव नहीं। विद्यालयों में खेल-कूद आदि की ओर ध्यान न देने से इस वृत्ति को प्रोत्साहन व विकास के लिए अवकाश मिल जाता है।

(ग) राजनैतिक दलों को अपना उत्तरदायित्व समझना है। उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रजातन्त्र शासन में एक ही दल सदैव सत्ताधारी नहीं बना रह सकता। अतः सत्ताधारी दल के विरुद्ध विद्यार्थियों को भड़काना व उनसे हिंसात्मक या तोड़-फोड़ की कार्यवाही कराना सर्वथा निंदनीय कृत्य है। यदि आज विरोधी या कोई भी अन्य दल विद्यार्थियों को तोड़-फोड़ आदि सिखाता है तो जलती लकड़ी के समान उसकी आँच उनकी ओर ही आयेगी और उन्हें भी जला डालेगी। अतः इस प्रकार की गुटबन्दी का स्वार्थपरता आदि को रोकना आवश्यक है। सरकार को इसके लिए नियम बनाने चाहिए।

(घ) शिक्षा, शिक्षण व परीक्षा-प्रणाली में भी आमूल परिवर्तन होना आवश्यक है। विद्यार्थी व अध्यापकों के मध्य अधिक से अधिक सम्पर्क का समय होना अनिवार्य है।

विद्यालयों की स्थापना के लिए भी एकान्त व शान्त स्थलों का चुनाव होना चाहिए। नगरों के कोलाहलपूर्ण दूषित वातावरण से दूर हों तो अति उत्तम है। छात्रों के प्रति गुरुजनों का व्यवहार पक्षपात-रहित हो, उनका वेतन-स्तर ठीक हो। यदि इनमें सैनिक-शिक्षण, खेल आदि की उचित व्यवस्था हो जाए तो अनुशासन की कमी को दूर करने में पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

उपसंहार—विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के लिए आज की सामाजिक स्वार्थपरता व राजनैतिक व्यवस्था उत्तरदायी है। आज की शिक्षा-पद्धति भी इसके लिए दोषी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि विद्यार्थी अनुशासन की उपेक्षा कर कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। न तो वह सफल नागरिक बन सकता है और न मानव ही। वह तल (पेंदी) रहित पात्र के समान विश्व-सागर की लहरों के थपेड़े खाता रहेगा और अन्त में डूब जाएगा। अतः अब भी चेतने का समय है। अनुशासनहीनता हमारे लिए अभिशाप है, मानवता के लिए कलंक है, उसे मिटाना ही होगा।

२२. राष्ट्र के विकास में युवकों की भूमिका

या युवा शक्ति और भारत

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) युवा वर्ग की क्षमता। (३) युवा वर्ग का देश के प्रति दायित्व। (४) युवा वर्ग के प्रति देश और समाज का दायित्व। (५) उपसंहार।

(१) प्रस्तावना—**वह देखो इतिहास के शुभ्र पृष्ठ पर।**

किस लोहू ने लिखी है अमर गाथाएँ सारी?
किस रक्त ने स्वतन्त्रता को अर्घ्य दिया है,
और किसी पीढ़ी ने सींची है राष्ट्र-फुलवारी?

इन सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर है—युवा रक्त ने, युवा पीढ़ी ने। किसी देश और किसी काल की गवाही ले लो युवावर्ग ने ही मानवीय मूल्यों को सम्मान की मालाएँ पहनाई हैं, युवा शक्ति ने ही बर्बर साम्राज्यवादी लिप्सा की आँधियों से सीना अड़ाया है। अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के खण्डहरों पर युवा हाथों ने ही आजादी का परचम लहराया है। हर चुनौती के जवाब में युवा वाणी ने यही दोहराया है—

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना, बाजुए कातिल में है॥

(२) युवावर्ग की क्षमता—विधाता के किसी निर्माण को देखो। जवानी उसकी आयु का चरम क्षण होती है जवानी की उमंगें सागर को मात करती हैं। जवानी की कल्पनाएँ आकाश को भी छोटा साबित कर देती हैं। धरती को फोड़कर जल धारा निकाल सकती हैं, पहाड़ों के सिर पर से रास्ता बना लेती हैं।

हर देश को, हर समाज को जवानी चाहे उन्नति के चरम शिखर पर पहुँचा दे और जवानी चाहे तो पतन के अतल गर्त में गिरा दे। युवावर्ग की क्षमताओं का दोहन करने वालों के ईमान पर-निर्भर है कि वे इस छुरी से निरपराध का गला काटते हैं या इसे एक शल्य चिकित्सक के हाथ में थमा कर किसी मरणोन्मुख के प्राण बचाते हैं। युवा व्यक्ति की कार्य क्षमता, उसका उत्साह, उसकी कल्पनाएँ और उसकी अभिलाषाएँ, उच्च स्तर की होती हैं। उनको सही दिशा मिल जाय तो वे राष्ट्र तो क्या सारे संसार को बदल सकते हैं।

यदि पुरुष राष्ट्र का मस्तिष्क होते हैं तो युवक उसकी माँस पेशियाँ, उसके हाथ, उसके पाँव होते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में युवावर्ग की आवश्यकता होती है। साधना का क्षेत्र, युद्ध का क्षेत्र, उद्यम और उत्पादन का क्षेत्र, निर्माण का क्षेत्र, ध्वंस का क्षेत्र, कला और साहित्य का क्षेत्र। अतः युवा-वर्ग की क्षमताएँ अनन्त हैं। उनका सही उपयोग ही महत्त्वपूर्ण है।

(३) **युवावर्ग का देश के प्रति दायित्व**—देश एक विशाल परिवार होता है। अतः जो भूमिका युवावर्ग की परिवार में होती है उसी का विराट रूप देश के प्रति भी देखने को मिलना चाहिए। हर देश का भविष्य उसके युवा वर्ग पर निर्भर होता है अतः युवा वर्ग को इस उत्तरदायित्व की योग्यता प्राप्त करनी चाहिये। वह जहाँ भी जिस भी देश में है वहीं रहते हुए वह देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है।

विद्यार्थी के रूप में उसे अध्ययनशील, अनुशासित, स्वस्थ और चरित्रवान् बनना चाहिये। व्यापारी के रूप में उसे उचित मुनाफा लेते हुए उपभोक्ताओं की सुविधा पर ध्यान देना चाहिये। प्रशासक के रूप में उसे भ्रष्ट और समाज विरोधी लोगों पर नियन्त्रण करना चाहिये। राजनीतिज्ञ के रूप में उसे बूड़े शिकारियों की कठपुतली न बनकर देश हित के अनुकूल आचरण करना चाहिये। सेना में रहकर देश पर आने वाल हर संकट के मुकाबले को तैयार रहना चाहिये।

स्वस्थ तन और स्वस्थ मन, यही युवा वर्ग की सच्ची पूँजी है। आज की सिनेमाई संस्कृति ने युवा वर्ग को अपने माया जाल में इस प्रकार उलझा दिया है कि वह अपने कर्तव्यों से भटक रहा है। वह झूठी कल्पनाओं और निराधार महत्त्वाकांक्षाओं के हाथों बिकता जा रहा है। इसी का दुष्परिणाम सामाजिक अशान्ति और अव्यवस्था के रूप में सामने आ रहा है। आज के युवक को देश और समाज के हित पर चर्चा करना, समय नष्ट करना प्रतीत होता है। यह शुभ संकेत नहीं है।

युवा वर्ग की शक्ति को हथियाने का प्रयास जारी है। साम्प्रदायिक तत्व उनको अपना मुहरा बनाना चाहते हैं। वे युवा लाशों के ऊपर से अपने घिनौने स्वार्थों की सड़क निकालना चाहते हैं। राजनीतिक लोग युवा वर्ग को अपनी कुर्सी के पाये बनाने की तिकड़म में लगे हैं। उनके जुलूसों को अपने सिंहासन की सीढ़ी बनाना ही उनका तुच्छ उद्देश्य है। व्यापारी उसे अपनी तिजोरियों का गार्ड या अपने माल का कमीशन ऐजेण्ट बनाने की फिक्र में हैं और विदेशी कुचक्र उस राष्ट्रीय एकता और अखण्डता से टकराने वाली बारुद बनाना चाह रहा है। अतः युवा वर्ग को अत्यन्त प्रधान होकर देशं की सुरक्षा में सन्नद्ध होना है।

(४) **युवा वर्ग के प्रति देश और समाज का दायित्व**—युवा वर्ग से लाभ सभी उठाना चाहते हैं। सब उसकी क्षमता और गुणों को अपने पक्ष में खरीद लेना चाहते हैं पर उसकी आकांक्षाओं, उसके सपनों, उसकी सुविधाओं, समस्याओं और अभावों पर दृष्टि डालने वाले और उनका समाधान करने वाले कितने हैं। युवा को ही सारे कर्तव्यों का निर्वाह करना है या उसके प्रति भी किसी का कोई कर्तव्य है। देश उसे क्या दे रहा है? समाज उसे क्या बना रहा है?

जैसा बोओगे वैसा काटोगे। युवा पीढ़ी में हम जैसे संस्कार बोएँगे वैसी ही फसल हमको मिलेगी। उनकी शिक्षा, उनके स्वास्थ्य, उनके मनोरंजन, उनके जीवन-यापन के साधन, उनकी अभिलाभाषाओं के प्रति सचेत रहना, उनका सही मार्ग-दर्शन करना और उनका निजी स्वार्थों के लिये शोषण न करना, समाज और राष्ट्र का परम कर्तव्य है।

आज युवा वर्ग में असन्तोष है, आक्रोश है, भटकाव है। इसका कारण पता लगाना होगा और उसे दूर करना होगा। तभी राष्ट्रोपयोगी युवा-शक्ति का निर्माण होगा और राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित हो सकेगा।

(५) **उपसंहार**—युवा वर्ग और अणुशक्ति की प्रकृति एक जैसी है। यह दुधारी तलवार है। इसका उचित और सुरक्षित उपयोग ही राष्ट्र के नवोदय का आधार है। आज युवा वर्ग पर दोषारोपण करने से पूर्व वयोवृद्धों को भी सोचना चाहिये कि उन्होंने ही उसे पथ भ्रष्ट होने, गैर जिम्मेदार होने, अनुशासनहीन होने का मार्ग प्रशस्त किया है। अतः उचित मार्गदर्शन के उत्तरदायित्व से बचने का प्रयास मत करो। उसके सामने आचरण का प्रमाण पेश करो। अपनी कुर्सी या तिजोरी की सुरक्षा में उसका दुरुपयोग करना बंद कर दो। उसे गहराई से समझो और राष्ट्रीय संकल्प की धारा में खींच लाओ। सारी समस्याओं से राष्ट्र की मुक्ति हो जायेगी।

२३. सच्चरित्रता

या सच्चा बल-चरित्रबल

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. सच्चरित्रता की आवश्यकता। ३. सच्चरित्रता आभूषण है। ४. सच्चरित्र महापुरुषों के नाम। ५. चरित्र रक्षा के उपाय। ६. उपसंहार।

प्रस्तावना—चरित्र की रक्षा अवश्य होनी चाहिए। धन तो जीवन में बार-बार आता और चला जाता है किन्तु चरित्र एक बार नष्ट होकर पुनः नहीं बनाया जा सकता। जिसका चरित्र नष्ट हो गया हो उसे मृतक समान ही समझना चाहिए। अस्तित्वहीन जानना चाहिए।

अनुभवी व्यक्तियों की मान्यता है कि 'चर' धातु से 'चरित्र' शब्द का निर्माण हुआ है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति जो आचरण करता है वही 'चरित्र' है। चरित्र में उन सभी गुणों की गणना की जाती है, जिनके बल पर व्यक्ति आदर और श्रद्धा का पात्र बनता है। धैर्य, क्षमा, दमन, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, सुबुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध, ये सभी सच्चारित्रता के घटक हैं। इन सद्‌गुणों को अपनाकर ही चरित्रबल में वृद्धि हो सकती है।

सच्चरित्रता की आवश्यकता—विश्व का कोई ऐसा धर्म या सम्प्रदाय नहीं जिसने सच्चरित्रता की महिमा न गायी हो। प्रत्येक देश और काल में चरित्रवान महापुरुषों का कीर्तिमान सुनायी देता है। जो अपने क्षुद्र स्वार्थों की सिद्धि के लिए प्रत्येक दुष्कर्म करने को प्रस्तुत रहते हैं, उनके अलावा और कोई सच्चरित्रता की आवश्यकता से इन्कार नहीं कर सकता। जिस समाज में हम रहते हैं उसका आधार परस्पर विश्वास और सत्याचरण है। यदि समाज के सारे सदस्य बेईमानी, धोखाधड़ी और असत्यपरता पर उतर आएँ तो समाज का एक क्षण को जीना कठिन हो जाय, अतः जो लोग निर्लज्जता से कहा करते हैं कि 'दुनियाँ में ईमानदारी से काम नहीं चलता' वे वास्तव में पराजित और कायर लोग हैं, जो अपने पतन को सही सिद्ध करने के लिए ऐसे प्रलाप किया करते हैं।

सच्चरित्रता आभूषण है—जिसे धारण करके मनुष्य की शोभा अवर्णनीय हो जाती है। चरित्रवान् व्यक्ति चाहे पीताम्बर पहने और चाहे लंगोटी लगाए, समाज उसका आदर करता है। वह केवल अपनी ही उन्नति नहीं करता बल्कि देश और समाज के सम्मुख एक महान् आदर्श भी प्रस्तुत करता है। सच्चरित्रता राष्ट्र को वह शक्ति देती है जो विशाल सेनाएँ और अपार धन सम्पत्ति नहीं दे सकते। चरित्र-भ्रष्ट लोगों से पूर्ण शासन-तन्त्र, प्रजा को घोर कष्टदायक होकर सारे देश को ही पतन और परतन्त्रता के पंक में डुबो देता है। आम्भीक, मीर जाफर आदि का राष्ट्रद्रोह उनकी चरित्रहीनता का ही तो परिणाम था।

चरित्रवान् महापुरुष—हमारे देश में सच्चरित्र महापुरुषों की एक गौरवशाली परम्परा रही है। धर्मनिष्ठा, कर्तव्यपालन, वचन-रक्षा, दानशीलता, सत्यपरता आदि को जीवन का व्रत बनाकर जीने वाले पुरुष-रत्नों की विशाल एकावली (माला) से भारत जननी का कण्ठ सुशोभित है। महाराज बलि, रन्तिदेव, दधीचि, हरिश्चन्द्र, राम, भीष्म पितामह, कर्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर, गाँधी,

राजेन्द्र प्रसाद आदि इसी माला की मणियाँ हैं। न केवल भारत में अपितु विश्व के अन्य देशों में भी ऐसे ही चरित्रनिष्ठ महापुरुष हुए हैं, जैसे—ईसा, सुकरात, अरस्तू, मार्टिन लूथर, नेलसन, कैसाबियांका आदि। इन चारू-चरित्रों की छाया में ही राष्ट्र की महानता और सुरक्षा पलती चली आ रही है।

चरित्र की रक्षा कैसे हो—इस चरित्र रूपी निधि को चुराने के लिए मनुष्य को चारों ओर से चोरों ने घेर रखा है। लोभ, मोह, काम, क्रोध, दैन्य, लोलुपता, कृपणता, आदि दस्यु इस चरित्र रूपी बंजारे को लूट लेने को विभिन्न प्रलोभनों की आड़ में छिपे रहते हैं, जरा भी मनुष्य चूका और इनका शिकार हुआ। बड़े-बड़े संयमी भी इनके छल से नहीं बच पाते। परन्तु यह ला-इलाज बीमारी नहीं है। निरन्तर अभ्यास से इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

चरित्र-रक्षा के लिए सबसे आवश्यक महान् गुण हैं 'मन की दृढ़ता' 'प्रान जाहिं पर वचन न जाई' जैसा अटूट भाव। मन, वचन, कर्म तीनों में एकता इसकी दूसरी सीढी है। निर्भीकता यह तीसरा गुण है जो व्यक्ति को चरित्रनिष्ठ बनने में परम सहायक होता है। जो व्यक्ति प्राणों की चिन्ता किये बिना अपनी आत्मा के आदेश का पालन करता है उसका चरित्र शाण पर चढ़े हीरे के समान दम-दम दमकता है। गुप्तजी का कथन इस विषय में कितना सार्थक है—

जितने कष्ट कण्टकों में हैं, जिनका जीवन सुमन खिला।
गौरव गन्ध उन्हें उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला॥

चरित्र की रक्षा के लिए कुसंग से बचना भी परम आवश्यक है। कुसंग काजल की कोठरी है। इसमें कितनी ही चतुराई से प्रवेश करो, कहीं न कहीं कालिमा की कलंक-रेखा अवश्य चिह्नित हो जाती है। रहीम को तभी तो कहना पड़ा—

बसि कुसंग चाहत कुसल, यहि रहीम बड़ सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यौ परोस ॥

इसी तथ्य को पलट कर यों भी कह सकते हैं कि सत्संग का सेवन भी चरित्र-रक्षा में सहायक है। चन्दन अपने सम्पर्क में आने वाले सामान्य काष्ठ को भी चन्दन बना देता है।

लोभ से बचे रहना भी सच्चरित्रता के लिए परम आवश्यक है। 'लोभः पापस्य कारणम्'। वास्तव में पाप का कारण लोभ ही है। यह सब पापों की जड़ है। लोभ से विरत रहकर ही व्यक्ति उत्तम चरित्र बन सकता है।

उपसंहार—सच्चरित्रता व्यक्ति को महान् बनाती है। यह ऐसा अस्त्र है जो समाज तथा राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। पराधीनता की पीड़ा से मुक्त रख सकता है। अतः समाज तथा देश की श्रेष्ठता लिये स्वयं को सच्चरित्र बनाना श्रेयस्कर है। हमारे सच्चरित्र होने से देश सुखी होगा। समृद्धशाली बनेगा। भ्रष्टाचारी का निवारण होगा। निर्धनता का निराकरण होगा और विपक्तियों का अन्त होगा।

काल कसौटी स्यामता, छुअत न जिन तन देख।
खेंचत सुजन सदा रहें, सुचरित सुवरन रेख ॥

२४. परहित सरिस धर्म नहिं भाई

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. परोपकार का स्वरूप। ३. परोपकारी महापुरुष। ४. परपीड़क दुष्टजन। ५. वर्तमानयुग और परोपकार। ६. उपसंहार।

प्रस्तावना—**वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर।**
परमारथ के कारनैं, साधुन धरा शरीर॥

परमार्थ, परहित, परोपकार किसी नाम से पुकारो इस महान् भावना की शिक्षा प्रकृति पल-पल मनुष्य को दे रही है। वृक्ष दूसरों के लिए फूल रहे हैं, नदियाँ दूसरों के लिए जल ला रही हैं, बादल परहित के लिए ही बरस रहे हैं। यदि परमार्थ की भावना सृष्टि के मूल रही होती तो मनुष्य का संसार में जीवित रहना असम्भव हो जाता। तनिक से स्वार्थ के पीछे दूसरों के हित को नष्ट करने वाले इस मनुष्य को सन्मार्ग पर चलाते रहने के लिए संत जनों ने परोपकार के महान् आदर्श प्रस्तुत किये है। ये आदर्श आज भी मानव समाज का मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

परोपकार का स्वरूप—पर+उपकार, अर्थात् दूसरों की भलाई। अपने सुख के लिए कष्ट सहन करना तो स्वाभाविक है। सारे जीव अपने सुख के लिए जी रहे हैं। किन्तु दूसरों के कष्ट दूर करने के लिए स्वयं कष्ट सहना बड़ी बात है। परोपकार के लिए उच्च कोटि का सहन और असहनशीलता चाहिए। यह भी वीरता का एक प्रकार है। व्यासजी ने परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य ही नहीं माना है—

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्यायः पापाय परपीडनम्॥

महाकवि तुलसी का मत भी यही है—

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥

परोपकार के लिए त्याग करना पड़ता है, अपने स्वार्थ का बलिदान करना पड़ता है। किन्तु इससे भी बढ़कर परोपकारी का गुण होता है विनम्रता। जो अपने किये उपकार का विज्ञापन करता फिरता है, या उपकृत व्यकति को अहसान से दबा-दबा कर मारता है। या किसी स्वार्थवश उपकार का ढोंग रचता है वह परापकारी नहीं है। वह दम्भी है। वह पाखण्डी है। परापकार तो दैवी गुण है। परोपकारी व्यक्ति तो विनम्रता की मूर्ति होता है। वह अपने को निमित्त मात्र समझता है।

परोपकारी महापुरुष—हर देश और हर काल में परोपकारी महापुरुषों ने संसार का मार्ग-दर्शन किया है। भारतीय इतिहास तो ऐसे संतपुरुषों की कीर्ति कौमुदी से सदा ही आलोकित रहा है। महाराज शिव ने परोपकार के लिए अपना माँस काट-काटकर समर्पित किया था।

परार्थ रंति देव ने दिया करस्थ थाल भी।
तथा दधीचि न दिया परार्थ अस्थिजाल भी॥

परोपकारी का हृदय बड़ा कोमल और संवेदनशील होता है। वह किसी को कष्ट में नहीं देख सकता। ऐसे संत पुरुष अपने दुख से नहीं, सदा पराये दुःख से ही दुःखी रहते हैं। परोपकारी संत के हृदय का परिचय संत तुलसी के शब्दों में देखिये—

संत हृदय नवनीत समाना। कहा कविन पर कहा न जाना।
निज परिताप दुवहि नवनीता। पर दुःख द्रवहि संत सुपुनीता।

परोपकार कर पाना ही संतपुरुषों के लिये सबसे बड़ा सुख होता है। परोपकार के सामने स्वर्ग और मुक्ति भी उनको तुच्छ प्रतीत होती है। परोपकारी की भावना देखिये—

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्ग नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामर्त्तिनाशनम्॥

परपीड़क दुष्टजन—जहाँ संसार में परोपकारी महानुभाव स्वयं कष्ट सहन करके दूसरों के दुःख दूर करने में लगे रहते हैं वहीं ऐसी दुष्ट प्रकृति के जीव भी होते हैं जिनको परपीड़न में ही आनन्द आता है। कुछ अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरों का अहित करते हैं। कुछ

ऐसे भी होते हैं जो दूसरों का हित अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किया करते हैं। परन्तु कुछ ऐसे भी विचित्र और निन्दनीय लोग होते हैं जो अकारण ही दूसरों के हित को नष्ट करने में लगे रहते हैं। ऐसे क्रूर स्वभाव वाले ही समाज को संकट में डालते हैं। हिंसा और परपीड़न के प्रचार द्वारा युवावर्ग को पथभ्रष्ट करते हैं।

वर्तमान युग और परोपकार—आज भौतिकवादी सभ्यता का बोलबाला है। व्यक्ति के सामने न कोई आदर्श है न कोई जीवन-मूल्य। वह केवल वर्तमान को ही सब कुछ समझ रहा है। चारों ओर ईर्ष्या, द्वेष, स्पर्धा और अर्थ लोलुपता का ताण्डव हो रहा है। सारे नाते धन और स्वार्थ के मानदण्ड से नापे जा रहे हैं। ऐसे वातावरण में परोपकार मूर्खों का प्रलाप समझा जा रहा है। चाहे व्यक्ति-व्यक्ति का व्यवहार हो, चाहे देश-देश का, सब से सब कूटनीति और छल को आधार बना कर हो रहे हैं।

धनी और धनी बनना चाहता है। समर्थ और समर्थ बनना चाहता है। इसका परिणाम वर्ग-संघर्ष और असामाजिक कार्यों के रूप में सामने आ रहा है। लूट, हत्या, डकैती आदि के वृतान्तों से समाचार पत्र भरे रहते हैं। चारों ओर अशांन्ति और असन्तोष छाया हुआ है। विकसित राष्ट्र दुर्बल और निर्धन राष्ट्रों का शोषण करने में लगे हैं। यदि सहायता करते भी हैं तो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए। सब शंकित हैं, असन्तुष्ट हैं, सुख और सन्तोष के लिए तरस रहे हैं।

इसका एकमात्र कारण है परोपकार की भावना का अभाव और स्वार्थ की प्रबलता।

उपसंहार—विज्ञान और तकनीक को ही मानव-सुख की कुंजी समझने वाले आज अच्छी तरह समझ चुके हैं कि वे चाहे जितनी भौतिक प्रगति कर लें, चाहे जितनी आर्थिक समृद्धि प्राप्त करलें, लेकिन जब तक वे मनुष्य की संद्वृत्तियों को जगाने में सफल न होंगे तब तक समाज असंतोष और स्पर्धा की आग से जलता रहेगा। परोपकार समाज के मानसिक तनाव को शिथिल करता है, वह एक सुरक्षा कपाट (सेफ्टी बाल्व) है। वह समाज में बढ़ने वाले ईर्ष्या-द्वेष और अस्वस्थ स्पर्धा पर सरस नियन्त्रण करने वाला है। बेकारी, भूख, भ्रष्टाचार आदि समाज को झकझोरने वाली समस्याएँ परोपकार की भावना को प्रोत्साहन देने से सहज ही हल की जा सकती हैं।

अतः आज जो भी परोपकारी संस्थाएँ कार्यरत हैं उनका सम्मान और सहायता देना ही सबसे बड़ा धर्म है। यह आत्म-रक्षा और स्थायी सुख का मार्ग है।

२५. जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) सुमति और कुमति का स्वरूप। (३) सुमति का सत्परिणाम। (४) कुमति के दुष्परिणाम। (५) सुमति के भागी कैसे बनें? (६) उपसंहार।

प्रस्तावना—मनुष्य के मनोजगत में सदैव देवासुर संघर्ष चला करता है। कभी देवभाव विजयी होकर उसे सद्‌गुण और सद्‌बुद्धि से मण्डित करते हैं और कभी आसुरी भावनाएँ उस कुमति से आवृत करके व्यवहार-विमूढ़ बना देती हैं। सुमति से शासित मनुष्य के पास सुख-सम्पत्ति स्वयं निवास के लिए आते हैं और कुमति से पथ-भ्रष्ट व्यक्ति निरन्तर अपयश और संकटों के वन में भटकता रहता है। सुमति मनुष्य को ऊर्ध्वगामी और उदारचित्त बनाती है, कुमति उसे संकुचित मनोवृत्ति वाला और ईर्ष्यालु बनाती है। सुमति-कुमति के इस द्वन्द्व में फँसा हुआ मानव कभी सम्पत्ति और कभी विपत्ति की कृपा पात्र बना रहता है।

सुमति और कुमति का स्वरूप—सुमति का सामान्य अर्थ है अच्छे विचार या सद्‌बुद्धि और कुमति का अर्थ है कुविचार या दुर्बुद्धि। सुमति का प्रचलित एक अर्थ मेल-भाव भी है।

जब तक परिवार में सुमति रहती है सभी सुखी और सम्पन्न रहते हैं। जब कुमति का प्रवेश हो जाता है तो परिवार बिखर जाता है। अतः प्रेम-भाव, उदार-भावना, स्वार्थ, त्याग और मर्यादा का पालन ही सुमति का स्वरूप है और ईर्ष्या करना, केवल अपना ही हित-चिन्तन करना, लोभ-लाभ के वशीभूत होकर निकृष्ट उपायों को अपनाना अनीति का आचरण करना यही कुमति का स्वरूप है।

सुमति के सत्परिणाम—सुमति के आचरण से व्यक्ति और समाज दोनों का जीवन सुखी और सम्पन्न होता है। भारतीय इतिहास को देखें तो सुमति और कुमति के परिणाम प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। जब तक देश में सुमति का शासन रहा, समाज में मर्यादाओं और व्यापक हितों को प्रधानता मिली, तब तक देश सुखी और उन्नतिशील रहा। सारे विश्व में भारत के ज्ञान, बल और वैभव की प्रशंसा होती रही। प्रजा सब प्रकार से फलती-फूलती रही। ऋषी, महर्षि, चक्रवर्ती, तपोनिष्ठ और विद्वान् भारत-भूमि को अलंकृत करते रहे। पृथ्वी तो क्या स्वर्ग तक में इस देश की महान् विभूतियों को आमन्त्रित किया जाता रहा। संक्षेप में भारत-भूमि का गौरवशाली अतीत उसके सुमतिपूर्ण आचरण का ही इतिहास है।

कुमति के दुष्परिणाम—कुमति ने किसे धराशायी नहीं किया? बड़े-बड़े यशस्वी व्यक्तित्व भी कुमति की कुचेष्टाओं का शिकार बनकर कलंक के भागी बन गये। महाभारत कुमति का ही तो कुपरिणाम था जिसने भारत को वीर-शून्य कर डाला। आम्भीक, जयचन्द और मीरजाफर कुमति के ही तो कुपुत्र थे जिन्होंने देश की परतन्त्रता का राजमार्ग खोल दिया। देश का विभाजन और भीषण रक्तपात कुमति के ही तो परिणाम थे। मानसकार तुलसी की इस उक्ति को मानस में ही परख लीजिए। महाराज दशरथ को वृद्धावस्था में पुत्र सुख मिला है। सारा राजपरिवार और प्रजावर्ग आनन्दमग्न है चारों राजकुमार बड़े होते हैं। राम तो महाराज दशरथ की आशाओं के केन्द्र हैं। सीता जैसी पुत्र-वधू और राम जैसे आज्ञानुवर्ती, सद्गुण-शील पुत्र को पाकर राजा स्वयं को धन्य समझ रहे हैं। राम के राज्याभिषेक का आयोजन बड़े उत्साह से चल रहा है। इसी समय कैकयी के मन में मन्थरा की कुमन्त्रणा, कुमति का प्रवेशख करा देती है। तनिक देर में सारा आनन्दोल्लास, विषाद के सागर में मग्न हो जाता है। कुमति के कलंकित मन वाली कैकयी पति, पुत्र और राज्य-सुख से हाथ धो बैठती है। सत्य है—

"जाकौ प्रभु दारून सुख देहीं। ताकी मति पहिले हरि लेंहीं ॥"

सुमति के भागी कैसे बनें—कुमति से बचने और सुमति से सम्पन्न होने के लिए आवश्यक है कि हम अपने आचरण के प्रति सतर्क रहें। कुमति को सबसे अधिक बल देने वाला 'स्वार्थ' है। स्वार्थ लोभ और ईर्ष्या को जन्म देता है। लोभ और ईर्ष्या मनुष्य के विवेक को मलिन कर देते हैं और विवेक-भ्रष्ट व्यक्ति निम्न से निम्न कोटि का व्यवहार करते भी लज्जित नहीं होता। अतः सुमति सम्पन्न बने रहने के लिए सर्वप्रथम हमें स्वार्थ और तुच्छ लाभों के चक्र से बचना चाहिए। विवेक को सदैव जागृत और स्वच्छ रखना चाहिए। चाहे हम परिवार के सदस्य के रूप में व्यवहार करें, चाहे राष्ट्र के नागरिक के रूप में, हमारा दृष्टिकोण व्यापक और उदार होना चाहिए। इससे हम दूसरों के प्रिय बनते हैं और सुख सम्पत्ति के भागी बनते हैं। सुमति-सम्पन्न व्यक्ति एक कुशल नाविक के समान होता है जो न केवल स्वयं समस्या सागर से पार होता है अपितु अनेक आश्रित प्रियजनों को भी पार उतार देता है।

उपसंहार—आज समाज में क्षुद्र स्वार्थों से पीड़ित मनुष्य अशान्ति और अव्यवस्था को प्रोत्साहित कर रहे हैं। क्या राजनीतिज्ञ और क्या सामान्य नागरिक सभी कुमति के षड्यन्त्र से पीड़ित हैं? भौतिक सुखों की लालसा इतनी प्रबल है कि विवेक का शासन समाप्त सा हो चुका है। ऐसे समय में दूरदर्शी और सदाचारी व्यक्ति की यही कामना है कि देश के शासकों

और देश की जनता में सुमति का संचार हो। लोक कल्याण के साधक संत तुलसी दास की मर्मोक्ति का मर्म समझते हुए भारतीय जन आचरण का निर्धारण करें-

'जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना। जहाँ कुमति तहँ विपत्ति निदाना।'

२६. करके अपना कर्तव्य रहो संतोषी

रूपरेखा-(१) प्रस्तावना। (२) कर्तव्य पालन क्यों? (३) विविध वर्गों के कर्तव्य। (४) कर्तव्य विमुखता के परिणाम। (५) उपसंहार।

प्रस्तावना-जो करने योग्य कार्य है और जिनके न करने पर समाज में प्रशंसा नहीं मिलती वे ही कर्तव्य श्रेणी में आते हैं। सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति को अनेक कर्तव्यों का पालन करना पड़ता है। अपने प्रति, परिवार के प्रति, मित्र और परिचित के प्रति, समाज और देश के प्रति, नाना प्रकार के कर्तव्य सदैव मनुष्य की प्रतीक्षा में रहते हैं। कर्तव्य ही धर्म का आधार है और धर्म को मनुष्य का प्रधान लक्षण माना गया है।

आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥

भोजन, भय, निद्रा और कामभाव तो मनुष्य और पशुओं में समान होते हैं केवल धर्म ही ऐसा लक्षण है जो मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ सिद्ध करता है अतः जो धर्म से रहित है वे पशु ही हैं। कर्तव्य पालन से ही मनुष्य की मनुष्यता प्रमाणित होती है।

कर्तव्य पालन क्यों?-मनुष्य जाति का इतिहास बहुत प्राचीन है। अपने हजारों वर्षों के अनुभवों के आधार पर मानव समाज ने अनेक ऐसे कार्य और आचरण निश्चित किये हैं जिनके करने और अपनाने से समाज में सुख-शान्ति रह सकती है। इस कर्तव्य परम्परा का त्याग करने से समाज और व्यक्ति का जीवित रहना भी कठिन हो जायेगा।

माता-पिता का कर्तव्य है संतान का स्नेह-पूर्वक पालन-पोषण तथा उसकी सुरक्षा करना, उसे योग्य बनाना। संतान का कर्तव्य है माता-पिता और समाज के वृद्ध पुरुषों का आज्ञा-पालन करना, उनकी सेवा-सुश्रूषा करना। यदि ये दोनों वर्ग अपना-अपना कर्तव्य पालन न करें तो क्या होगा? समाज समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार कर्तव्य पालन आत्मरक्षा और लोकहित दोनों दृष्टियों से आवश्यक है।

विविध वर्गों के कर्तव्य-विविध प्रकार के पारस्परिक सम्बन्धों का ही दूसरा नाम समाज है। मनुष्य की स्थिति समाज के बिना नहीं हो सकती, अतः समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करते रहने में ही समाज और व्यक्ति दोनों का कल्याण है। परिवार समाज की प्रथम इकाई है। सामाजिकता की शिक्षा परिवार में ही प्राप्त होती है। आज्ञा पालन, अनुशासन, प्रेम, सेवा, सहानुभूति और सहयोग आदि गुण जिन पर सारी सामाजिक व्यवस्था टिकी है परिवार से व्यक्ति अर्जित करता है। अतः परिवार के प्रति उसके अनेक कर्तव्य हैं। इसी प्रकार परिवार के समाज के प्रति और समाज के परिवार के प्रति कर्तव्य हैं।

परिवार से बाहर आने पर व्यक्ति अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़ता है और उसके कर्तव्यों का वृत्त बढ़ता जाता है। छात्र का शिक्षक के प्रति और शिक्षक का छात्रों के प्रति कर्तव्य होता है। यदि छात्र अनुशासन-हीन हो, गुरु का आदर न करे तो वह शिक्षा से वंचित हो जाएगा। इस प्रकार शिक्षक यदि छात्रों को मनोयोग से शिक्षा नहीं देगा, उनका उचित मार्ग-दर्शन न करेगा तो समाज में उसकी निन्दा होगी।

इसी प्रकार शासन के प्रजा के प्रति और प्रजा के शासन के प्रति अनेक कर्तव्य होते हैं। इनका पालन करने पर ही सुख, शान्ति और सुरक्षा रह सकती है। इसी तरह से नागरिकों का देश के प्रति और देश का नागरिकों के प्रति कुछ कर्तव्य होता है। देश के प्रति कर्तव्य का पालन करने वाला देशद्रोही कहलाता हैं। वह बहिष्कृत और दण्डित होता है। उसी प्रकार नागरिकों के सुख-दुःख की चिन्ता न करने वाले देश को पराधीनता, दरिद्रता आदि कष्ट भोगने पड़ते हैं।

कर्तव्यों से ही अधिकार-प्राप्ति– कर्तव्य और अधिकार एक ही सिक्के के दो पहलू बताये गये हैं। एक ओर से देखने पर वे कर्तव्य हैं और दूसरी ओर से देखे जानें पर अधिकार। हमको अधिकार है कि हम मत दें तो हमारा कर्तव्य भी है कि दूसरों को मत देने दें। हमकों यदि भाषण की स्वतन्त्रता का अधिकार है तो हमारा यह कर्तव्य भी है कि हम दूसरों को भी भाषण देने दें। जो हमारा अधिकार है वही दूसरा कर्तव्य है और जो हमारा कर्तव्य है वही दूसरे का अधिकार बनता है। अतः कर्तव्य पालन के बिना अधिकार की बात करना अशिष्टता है। यदि सब लोग अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करना आरम्भ कर दें, तो सभी के अधिकार स्वयं सुरक्षित हो जायेंगे।

कर्तव्य विमुखता के परिणाम– अधिकारों की माँग करना बड़ा अच्छा लगता है किन्तु उनसे जुड़े कर्तव्यों का पालन करना बहुत कम लोगों को रुचता है। कर्तव्यों से विमुख रहने का कुपरिणाम समाज और व्यक्ति को सदा भोगना पड़ता है। आम्भीक की कर्तव्य विमुखता ने सिकन्दर की भारत-विजय का द्वार खोल दिया था। मीरजाफर और जयचंद की कर्तव्यहीनता ने ही भारत के इतिहास में गुलामी का अध्याय जोड़ा था। जनता कर्तव्यहीन है इसलिए वह उपेक्षा, अत्याचार और शोषण का शिकार है, प्रशासन कर्तव्य विमुख है इसलिए उसके आदेश और नियमों की धूर्त लोग खिल्ली उड़ाते हैं। भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, साम्प्रदायिकता, प्रादेशिकता, हिंसा, आतंकवाद ये सभी कर्तव्यों की उपेक्षा के परिणाम हैं। हमारा सोच उल्टा हो गया है। हम कर्तव्यों का पालन किये बिना ही अधिकार पाना चाह रहे हैं।

कर्तव्यों पर आरूढ़ रहो: अधिकार स्वयं मिल जायेंगे।
मूलों को जल से सींचोगे, तो फूल स्वयं खिल जायेंगे॥

उपसंहार– अधिकार पाने का सुख बड़ा मादक होता है। अधिकार पाने के लिए व्यक्ति उचित अनुचित का भी ध्यान नहीं रखता। लेकिन वह भूल जाता है कि उसका अधिकार तभी तक अधिकार है, जब तक कि कोई अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है। भ्रष्टाचार, काला बाजारी, तस्करी और नाना भाँति के धन्धों से प्राप्त धन के नशे में चूर लोग बड़े भोले हैं, वे समझ तो यह रहे हैं कि उन्होंने जनता और प्रशासन को कैसा मूर्ख बनाया है, किन्तु समाज का अधिकांश व्यक्ति कहीं न कहीं अपने कर्तव्य पर आरूढ़ है तभी इन भ्रष्ट लोगों के अधिकार सुरक्षित है। जिस दिन सारा समाज कर्तव्य पालन त्याग देगा केवल केवल अधिकार चाहने लगेगा उसी दिन से सारे विलास-भवन धराशायी हो जायेंगे, ऊँची-ऊँची कुर्सियाँ औंधे मुंह पड़ी दिखाई देंगी। अधिकारों के उपभोग को जन्मसिद्ध अधिकार समझने वाले सारे दर्प काल चक्र के नीचे पिस जायेंगे।

समाज में सुख-शान्ति लाने का एकमात्र उपाय है कर्तव्य पालन और अपनी उपलब्धि पर सन्तोष। कर्तव्य का पालन करके भी यदि सुख नहीं मिलता तो इसमें मनुष्य का कोई दोष नहीं, यह दोष व्यवस्था का है। इस व्यवस्था से छुटकारा भी तभी मिलेगा जबकि लोग कर्तव्य पालन के लिए कमर कस लेंगे।

२७. स्वावलम्ब की एक झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोष
या आत्मनिर्भरता में अपार शक्ति है।

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) स्वावलम्बी जीवन के लाभ। (३) परावलम्बन से हानि। (४) स्वावलम्बी कैसे बनें?(५) उपसंहार।

प्रस्तावना—इस सारी सृष्टि में एक परमात्मा क अतिरिक्त अन्य कोई भी स्वावलम्बी नहीं कहा जा सकता। सृष्टि के सारे निर्माण एक-दूसरे पर आश्रित है। पर्वत, नदी, वृक्ष, भवन सभी धरती का सहारा लिए है। स्वयं धरती सूर्य भगवान् के कराधार पर टिकी है और सूर्य भी किसी अन्य गुरुत्वाकर्षण का अवलम्ब लिये स्थित है। परावलम्बन में बुरा क्या है? क्या वृक्ष के सहारे चढ़ती बल्लरी सुन्दर नहीं लगती? क्या पुरुष का आश्रय लिये नारी की शोभा नहीं। फिर भी आत्म-निर्भरता का गुण-गान करते कवि नहीं थकते। पुरुषार्थ को ही वे पुरुष का सच्चा अर्थ मानते हैं। हर समय दूसरों के सहारे लिए आँखें बिछाये रहना, हाथ फैलाये रहना बड़ा दयनीय है। वैसे भी आज की स्वार्थ-प्रधान संस्कृति में कोई किसी को सहारा नहीं देना चाहता। गिरे में दो लात लगाना सभी अपना धर्म समझते हैं।

स्वावलम्बी जीवन के लाभ—अपने सहारे, अपने भुजबल पर जीना स्वाभिमानी जीवन का प्रतीक है। मनुष्य के चरित्र में जितने भी श्रेष्ट गुण होते हैं उन सभी का समुचित विकास केवल स्वावलम्बी होने पर ही हो सकता है। आत्म-विश्वास, उत्साह, सहयोग, निर्णय-शक्ति, निर्भीकता, न्याय-प्रियता आदि को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम मनुष्य को स्वावलम्बी बनना पड़ता है। जो दूसरो से सहायता पाने की आशा में खड़े रहते हैं, समय उनके साथ बड़ा क्रूर व्यवहार करता है। वह उनको छोड़कर आगे बढ़ जाता है और वे अपनी निर्बलता पर पछताते रह जाते हैं। आशा, प्रतीक्षा, सहारा ये जिसके जीवन के अवलम्ब हैं वह सदा दूसरों की कृपा पर जीवित रहते हैं। कहा है कि—

आशाया ये दासा, ते दासाः सर्वलोकस्य।
आशा येषा दासी, तेषा दासयते लोकः॥

आशा, अनुकम्पा, दया की दासता में जकड़े लोग सारे संसार की दासता में जीते हैं और जो आशा का सहारा छोड़ अपने बल-बूते पर जीवन-संग्राम में कूद पड़ते हैं सारा संसार उनकी दासता स्वीकार करता है।

आत्मनिर्भरता की झाँकी लेनी है तो विश्व के किसी भी महापुरुष के जीवन में झाँककर देख लो। राम ने रावरण पर विजय कैसे पायी? कृष्ण ने अत्याचारी शासकों का विनाश कैसे किया? सिकन्दर ने विश्व विजय का अभियान कैसे आरम्भ किया? चन्द्रुगप्त ने मगध का शासन कैसे प्राप्त किया? आत्म-निर्भरता ही मनुष्य की छिपी हुई विशेषताओं को बाहर लाती है, उसे अपने आप से परिचित कराती है।

परावलम्बन से हानि—जब दूसरे लोग हमारी सहायता को उपस्थित है तब अपनी काया को क्यों कष्ट दिया जाय। अरे—

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मूलका कहि गये, सब के दाता राम॥

राम सहारे रहो। कोई न कोई हाथ पकड़ने वाला, रास्ता दिखाने वाला, हमारे मुर्दा व्यक्तित्व को ढोने वाला मिल ही जायेगा। लेकिन याद रखो कि जो तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हें सहारा देगा, मार्ग-दर्शन करेगा, वह अपनी कीमत भी वसूल लेगा। आज तो सारा समाज चल नहीं

रहा दौड़ रहा है। किसी को फुर्सत नहीं कि गिरे को उठाने के लिए रुके। यदि बढ़ना है, मंजिल पानी है तो उठो और अपने आप दौड़ो।

परावलम्बन मनुष्य के मौलिक गुणों का शत्रु होता है। इसकी प्रतिभा का दुश्मन होता है। दूसरों का सहारा तकने से आत्मविश्वास क्षीण हो जाता है। साधारण से साधारण कार्य में भी मनुष्य सफल नहीं हो पाता। हर परीक्षा की घड़ी में वह डगमगा जाता है। जीवन के श्रेष्ठ क्षणों में उन्नति और असफलता के शुभ अवसरों पर वह हताश खड़ा रह जाता है और उससे भी कम योग्यता वाले व्यक्ति आगे निकल जाते हैं। दूसरों की क्षमता और दया पर जीवित रहने वाले व्यक्ति को सफलता कभी वर-माला नहीं पहनाती।

इस जल-तट पर हुई न पूरी, कभी प्रतीक्षा केवट की।
पार अगर जाना चाहो, तैयार स्वयं जलयान करो॥

स्वावलम्बी कैसे बने–स्वावलम्बी बनने के लिए सबसे पहली शर्त है अपने अन्दर विश्वास पैदा करना। आवश्यकता होने पर दूसरों का सहयोग लेने में कोई बुराई नहीं लेकिन हर कार्य में दूसरों की सहायता की राह देखना अच्छा नहीं। असफलता से निराश न होना दूसरी आवश्यकता है। भावना यह होनी चाहिये "आज मैं असफल हो गया तो क्या हुआ, कल में फिर प्रयत्न करूँगा और अवश्य सफलता पाऊँगा। यदि दूसरे लोग सहयोग करते हैं तो बहुत अच्छा है यदि नहीं करते तो भी मैं निराश नहीं होऊँगा।" गाँधी जी का जीवन तो स्वावलम्बन का आदर्श रूप था। उन्होंने महाकवि रवीन्द्र के गीत को अपना साथी बनाया था–

'यदि तोर डाक शुने केउ न आसे
तबे ऐकला चलो रे!'

यदि तेरी पुकार सुनकर कोई नहीं आता, तो तू अकेला ही चल दे। स्वावलम्बी बनने के लिए अकेला चलने का साहस जुटाना होगा।

परिश्रम कठोर श्रम की स्वावलम्बन के लिए आवश्यक गुण हैं। साधारण से साधारण कार्य भी बिना उद्यम के सिद्ध नहीं हो पाता।

'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।'

उपसंहार–स्वावलम्बन मानव जीवन का महान गुण है। स्वावलम्बी बनने के लिए मनुष्य को जो प्रयास करना पड़ता है वह उसके व्यक्तित्व को निखारता है उसके भीतर छिपे मैलिक गुणों को व्यक्त कराता है। उसे समस्याओं और संकटों से जूझने की शक्ति प्रदान करता है। स्वावलम्बी भाग्य और आशा के क्षीण आगे से अपने भविष्य को नहीं बाँधता। लाटरी को हृदय से लगा कर सुनहले सपने नहीं बुनता। उसे तो अपने दो हाथों पर विश्वास होता है। स्वावलम्बी कहता है–

कर बहियाँ बल आपनी, छाँड़ि बिरानी आस।
जाके आँगन है नदी, सो कत मरत पियास॥

इस स्वावलम्बन की गंगा से प्यास बुझाने वाले पुरुषार्थी धन्य हैं।

२८. 'नहिं दरिद्र सम दुःख जग माँही'

रूपरेखा–(१) प्रस्तावना। (२) धन की महिमा। (३) दरिद्रता एक अभिशाप। (४) भारतीय संस्कृति और धन। (५) वर्तमान युग में धन का स्थान। (६) उपसंहार।

प्रस्तावना– धन, सम्पत्ति, पैसा, लक्ष्मी चाहे जिस नाम से पुकारो, हर समाज में इसकी पूजा है। आदर है, सम्मान है। जन्म लेने के लिये धन चाहिये। जीवित रहने के लिये धन चाहिये

और मरने पर भी धन के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। धन के अनेक रूप बदले हैं अनेक नाम बदले हैं पर समाज में उसका एक छत्र शासन सदा रहा है। दरिद्रता बेचारी ने लाजवन्ती बहू के समान फटे कपड़ों में तन छिपाते हुए दिन काटे हैं। मन समझाने के लिये वह कभी संतोषी बनी और कभी त्यागी, कभी तपस्वी, कभी विरागी पर धन की अहंकार भरी नजरें उसे सदा शल्य की तरह चुभती रही हैं। लक्ष्मी के व्यंग्य वाणों से सदा उसका कलेजा छलनी होता आया है।

धन की महिमा—धन की महिमा अपार है। सहस्र मुख शेष और सर्वज्ञ ब्रह्मा के लिए भी इसका वर्णन कर पाना कठिन कार्य होगा। इस सारे मनुष्य समाज के सभी कार्य धन के लिए और धन के द्वारा हो रहे हैं। धन से क्या नहीं मिल सकता? यह मूर्ख को परम विद्वान्, दुष्ट को सदाचारी, बेईमानी और भ्रष्ट को परम चरित्रवान् अज्ञात-कुल शील को परम कुलीन और कायर को वीर बना सकता है। किसी दिल-जले कवि ने कह ही दिया—

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतिमान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता, स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति॥

यह समाज पग-पग धनवान के साथ पक्षपात करता है। किसी विवाह में जाइए अपनी गाड़ी में लकदक सूट में, बढ़िया से उपहार ले जाइये, फिर देखिये क्या लपक कर आपको 'रिसीव' किया जाएगा। तहजीब और शिष्टाचार का सारा कोष आपके स्वागत में खर्च कर दिया जाएगा। सारे विशिष्टों से आपका परिचय कराया जायागा और कहीं सादा जीवन उच्च विचार का जामा पहिने आपने ऐसे समारोह में जाने की हिमाकत कर डाली तो आपका भगवान् ही मालिक है। नाते, रिश्ते, मित्रता सभी कुछ धन की तराजू में तोले जाते हैं।

जीवन-संग्राम का ऐसा कौन-सा मोर्चा है जहाँ गुणों की गोलाबारी से विजय मिल सके, सभी जगह चाँदी का जूता ही सफलता के द्वार खोलता है। पैसे का कमाल देखिए कि इसकी कृपा होते ही आदमी का नाम बदल जाता है।

'पैसे तेरे तीन नाम, परसा, परसी, परशुराम'

लोग 'जी' लगाकर बुलाते हैं, अपरिचित भी सलाम झुकाते हैं, बड़े-बड़े दूर के रिश्ते निकल आते हैं।

दरिद्रता एक अभिशाप—समाज के बीच दरिद्र होकर जीना, सचमुच एक बहुत बड़ी सजा है। दरिद्रता मनुष्य में आत्महीनता पैदा करती है। उसके आत्मविश्वास को निचोड़ लेती है और सारे गुणों का उपहास का पत्र बना देती है। आज समाज में जहाँ व्यक्ति को धन की शक्ति पर जरूरत से ज्यादा विश्वास है, जहाँ धन प्राप्ति के लिए हर पाप और दुष्कर्म क्षम्य हो जाता है, जहाँ हर आदर्श को, हर जीवन मूल्य को, धन नीलामी पर चढ़ा सकता है, वहाँ व्यक्ति का धन-हीन होना, जीवन भर के लिए सुनाये गये प्राण-दण्ड से कम नहीं है। 'मृच्छकटिक' का नायक चारुदत्त कैसी मार्मिक बात कहता है—

'मृत्यु और निर्धनता में मुझे मृत्यु अधिक सुखकर प्रतीत होती है, क्योंकि मृत्यु एक बारकष्ट देती है पर दरिद्रता तो जीवन भर का कष्ट है।'

दरिद्रता न केवल व्यक्ति के लिए बल्कि समाज और राष्ट्र के लिये भी घातक होती है। निर्धनता के कारण समाज और देश प्रतिभाशाली, योग्य और कर्तव्यनिष्ठ लोगों की सेवा से

वंचित रह जाता है। धन के बल पर धूर्त और निकम्मे व्यक्ति समाज और शासन के पदों पर अधिकार कर लेते हैं। दरिद्रता मानवीय गुणों का विनाश करती है। मनुष्य को बिकने के लिये मजबूर कर देती है।

धनहीन होता अपने आप में कोई पाप नहीं होता। किन्तु जब समाज धन का पुजारी हो जाता है तब दरिद्रता वास्तव में अभिशाप बन जाती है।

'तन बिकता है, मन बिकता है, मानव-जीवन भी बिकता है,
जब धन की पूजा होती है तब यार वतन भी बिकता है।'

भारतीय संस्कृति और धन– धन मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धन के लिए। भारतीय संस्कृति ने धन का सम्मान किया, लेकिन मनुष्य से बढ़कर नहीं। लँगोटी लगाने वाले संत को राजा ने भी सर झुकाया। दरिद्रता को कण्ठहार तो नहीं बनाया गया परन्तु दरिद्र होना कोई अयोग्यता कभी नहीं मानी गयी। हमारी संस्कृति त्याग-मूलक है। वह धन को ठुकराने वाले गुणवान् को धनवान से सदा श्रेष्ठ मानती है। दरिद्र विद्वान् एक राजा से अधिक पूज्य हैं। क्योंकि–

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैवं तुल्येकदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान्, सर्वत्र् पूज्यते॥

विद्या, त्याग, शील, सदाचार, अक्रोध, अस्तेय, सत्यनिष्ठता आदि ऐसे मूल्यांकन रत्न हैं कि इनके सामने सोना, चाँदी और पत्थर के टुकड़ों को हमारी संस्कृति ने कभी वरीयता नहीं दी। कौरव राजकुमारों की शिक्षा के लिये दरिद्र द्रोणाचार्य से प्रार्थना की जाती है, सम्राट् बनने का इच्छुक चन्द्रगुप्त कुटी-स्वामी चाणक्य की चरण वंदना करता है, दरिद्र सुदामा के कंटक-विरुद्ध पगों को त्रैलोक्य का स्वामी अपने "नैनन के जल" से धोता है।

भारतीय संस्कृति दरिद्रता की उपासना का उपदेश तो नहीं करती किन्तु दरिद्र को दुतकारने की आज्ञा भी नहीं देती।

वर्तमान युग में धन का अभाव–वर्तमान युग केवल 'वर्तमान का पुजारी' है। न उसका कोई अतीत है और न भविष्य। केवल भौतिक वैभव ही उसका आदर्श है। धन ही उसकी संस्कृति है। सम्पत्ति ही उसका जीवन है। चाहे व्यक्तिगत जीवन में देखें, चाहे सार्वजनिक जीवन में, धन को आदमी ने सर्वोपरि, सर्वशक्तिनमान बना डाला है। जीवन-मूल्य किसी सुनसान सड़क पर सिर धुन रहे हैं। आदर्श किसी अतीत की कंदरा में मूर्छित पड़े हैं। केवल धन, भौतिक सुख-सुविधा ही आज सबसे महान् जीवन-मूल्य है सबसे बड़ा आदर्श है।

आज सब कुछ मनुष्य जाति का सर्वोत्तम, बाजार में सजा दिया गया है। ज्ञान, कला, काव्य, न्याय, सत्य, सदाचार, धर्म सबके मस्तकों पर हमने कीमतें चिपका दीं हैं। बोलो क्या चाहिये? तुम्हारी जेब में पैसे हों हर चीज मिलेगी। देशी कहावत थी कि 'लक्ष्मी और सरस्वती में बैर है' यानी कि विद्वान् कलाकार, शिल्पी, कवि कभी धनवान नहीं हो सकते। भला क्या बकवास है। अरे तुम्हारे पास क्या है निकाल कर जिन्दगी के काउण्टर पर रखो हर चीज की कीमत मिलेगी, खूब मिलेगी।

उपसंहार–इसका परिणाम सामने है। असन्तोष, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, अस्वस्थ होड़, डाके, चोरी, लूट, आतंक ये सभी के सभी, धन की पूजा के ही वरदान हैं। धनी व्यक्ति निर्धन का शोषण कर रहा है। धनी राष्ट्र निर्धन राष्ट्र का शोषण कर रहा है। आज बाजार की तलाश है, आदमी की नहीं।

सचमुच आज के इस भयावह दृश्य को देखकर तो मानना पड़ता है कि 'दरिद्रता अभिशाप है, नरक का दण्ड है, पापों का भोग है।'

"नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं"

२१. पर उपदेश कुशल बहुतेरे

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) उपदेश और आचरण का सम्बन्ध। (३) कथनी और करनी का अन्तर। (४) आजकल उपदेश की प्रवृत्ति। (५) उपसंहार।

प्रस्तावना—आज के समाज में सबसे सस्ती वस्तु है उपदेश। आजकल यह थोक में पैदा हो रही है और बड़ी उदारता से बाँटी जा रही है। गुरु, शिष्य के कानों में उपदेशामृत उँडेल रहे हैं, पिता पुत्र को उपदेश की घुटी पिला रहे हैं और नेतागण जनता को उपदेश आसव देकर तृप्त कर रहे हैं। सबको लगता है कि यदि उन्होंने उपदेश नहीं किया तो गजब हो जाएगा। संसार रुक जायेगा। बेचारे आदमी अपने रास्ते से भटक जायेंगे। जहाँ जिसको अवसर मिला, शुरू हो गया। वेदों, पुराणों, उपनिषदों, स्मृतियों, शास्त्रों और काव्य तक में उपदेशों की भरमार है। फिर भी उपदेश दिये जाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। बहुत से महापुरुषों की तो रोटी ही उपदेशों से चल रही है। उपदेश और आशीर्वाद इन दो जिन्सों का थोक व्यापर चलाने वाले ये लोग बड़े मजे में है। मूर्ख वे बनते हैं जो इन उपदेशों पर चलने की चेष्टा करते हैं।

उपदेश और आचरण का सम्बन्ध—उपदेश और आचरण एक दूसरे के पूरक हैं। उपदेश मार्गदर्शन है और आचरण उसकी उपयोगिता का प्रमाण। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं—

'यद्-यद् आचरति श्रेष्ठः लोकस्तदनवर्त्तते ॥'

महापुरुष जैसा-जैसा आचरण करते हैं समाज उसका अनुकरण किया करता है। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि उपदेश के पीछे आचरण का बल होता है । यदि उपदेश केवल मौखिक व्यायाम है, शब्दों की कलाबाजी है तो उसका प्रभाव श्रोताओं पर नहीं पड़ता। आचरण को किसी वकील की आवश्यकता नहीं होती। वह तो अपनी मौन भाषा में सब कुछ कहने की सामर्थ्य रखता है। सच पूछा जाय तो आचरण को उपदेश की सहायता नहीं चाहिए। दधीचि ने, रंतिदेव ने, कर्ण ने, हरिशचन्द्र ने, परोपकार, त्याग, दान और सत्यनिष्ठा पर कभी कोई प्रेम कान्फ्रेंस सम्बोधित नहीं की। महाराणा प्रताप, शिवा, लक्ष्मीबाई, भगतसिंह या आजाद ने देशभक्ति का उपदेश देने के लिये कभी कोई रैली या विशाल सभा आयोजित नहीं की। लेकिन उनका संदेश क्या उपदेश का मोहताज रहा। उनके महान् आचरणों ने विश्व के जन-जन तक अपने आप उनकी भावनाओं को पहुँचा दिया। सच्चे उपदेशक पहले स्वयं अपने कथन पर आचरण करके देखते हैं तभी दूसरों को उसका उपदेश किया करते हैं। सच तो यह है कि आचरण में विश्वास रखने वाले को शब्दों की आवश्यकता नहीं रहती—

'न पूर्णकुम्भः करोति शब्दम्।'
'अधजल गगरी छलकत जाय ॥'

कथनी और करनी का अन्तर—उपदेश देने में क्या खर्च होता है? केवल जिह्वा का व्यायम होता है। दूसरों को राह दिखाओ मगर स्वयं उस पर भूल कर भी मत चलो। सत्य-भाषण पर घण्टों भाषण दो, स्वयं सत्य पर अड़े रहने की मूर्खता मत करो। आज की स्थिति यही है। दफ्तों ड्यूटी से गायब रहने वाले कर्तव्य निष्ठा पर उपदेश देते हैं भ्रष्टाचार में आयाद मस्तक लीन रहने वाले भ्रष्टाचार उन्मूलन पर सेमिनार आयोजित करते हैं। देशभक्ति पर धाराप्रवाह

बोलने वाले, देश को बेचने में सबसे आगे रहते हैं। कथनी और करनी के इस अन्तर ने समाज में धूर्तता की होड़ आरम्भ कर दी है। मनुष्य ने यह मान लिया है कि जो कुछ शिक्षा और उपदेश वह दूसरों को दे रहा है उसका शतांश भी उसे आचरण में उतारना आवश्यक नहीं। राजनीतिक नेताओं ने तो इस दिशा में सबको पीछे छोड़ दिया है। आसान नहीं है कथनी पर आचरण करना–

"कथनी मीठी खाँड सी, करनी दुख की लोय।
कथनी तजि करनी करै, संत क़हावै सोय॥

आजकल उपदेश की प्रवृत्ति– आजकल तो उपदेश देना एक लाभदयाक आजीविका बन चुका है। अनेक जगदगुरू, आचार्य, बाबा और भगवान् इस पवित्र पेशे की बदौलत त्यागी-विरागी महलों में रह रहे हैं, कारों में घूम रहे हैं और अपने इस आचरण के समर्थन में भी उपदेश देने को सदा तैयार रहते हैं। किसी विषय पर इनसे भाषण दिला लीजिए, कैसा भी उपदेश देने को कहिए वे सदा तैयार मिलेंगे। जिन विषयों और परिस्थितियों से इनका जीवन में कभी सम्पर्क न हुआ होगा, उन पर ये बड़ी सहजता से लाभदायक उपदेश देने को प्रस्तुत रहते हैं।

इन उपदेष्टाओं के व्यक्तिगत जीवन में झाँक कर मत देखिए अन्यथा आपको बड़ी निराशा होगी, आश्चर्य होगा, आपकी सारी श्रद्धा और निष्ठा लड़खड़ा जायेगी। सादा जीवन उच्च विचार का उपदेश करने वालों की संतानें आलीशान भवनों में अद्यतन विलासामग्रियों का उपभोग करती दिखायी देंगी। मायामोह के त्याग पर प्रवचन करने वाले, गुरु गद्दियों पर मुकदमे बाजी करते दिखायी देंगे। उदारता और दानशीलता के उपदेशक ही पैसे को दाँतों से पकड़ते दिखायी देंगे। थोथा उपदेश, बाग्जाल शबदों की बाजीगरी, बस यही आज चारों ओर दीख पड़ रहा है।

उपसंहार– आचरण के अभाव में आजकल सब के सब उपदेशक बने हुए हैं। यदि उपदेश का दसवां भाग भी आचरण करना अनिवार्य कर दिया जाय तो एक दिन में सारे उपदेशक अदृश्य हो जायेंगे। आचरण के बिना उपदेश निरर्थक हैं। आज देश को, आचरणशील पुरुषों की आवश्यकता है। मूर्ख पर उपदेश का प्रभाव उल्टा होता है, 'उपदेशों हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये', परन्तु आचरण से वह भी प्रभावित होता है। एक आचरण का प्रभाव सौ उपदेशों से बढ़कर होता है।

वही श्रेष्ठ उपदेश, लिये जो साथ साथ आचरण-बल है।
केवल वचन-विलास, अन्यथा शब्द-ज्ञान है, छल है॥

३०. भारत में मूल्य वृद्धि की समस्या

रूपरेखा–१. प्रस्तावना। २. मूल्य वृद्धि का प्रभाव। ३. मूल्यवृद्धि का कारण। ४. मूल्यवृद्धि पर नियन्त्रण। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना– बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा के लिए देश में शक्तिशाली सेवा का गठन किया गया है। सेना के जवान, देश के सजग प्रहरी, सीमाओं की हर प्रकार से रक्षा में जुटे हैं किन्तु आन्तरिक समस्याएँ देश को उन्नति के पथ का पथिक बनाने में बाधक हो रही हैं। देश के कर्णधार आन्तरिक समस्याओं के समाधान में सनाद्ध हैं। राष्ट्रीय जीवन की अस्त-व्यस्तता को सँवारने में लगे हुए हैं लेकिन मूल्य वृद्धि की समस्या अंगद का पाँव हो रही है। उसे सुलझाना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव सा प्रतीत हो रहा है।

मूल्य वृद्धि का प्रभाव—जीवन रक्षक तथा आवश्यक वस्तुओं के मूल्य में दिन प्रतिदिन द्धि होती जा रही है। जनता का जीवन-निर्वाह कठिन से कठिनतर होता जा रहा है। जिस पये से गर्व तथा आत्मविश्वास जगता था। जब जो वस्तु अपेक्षित होती थी, क्रय की जा कती थी, वही रुपया आज क्रयशक्ति हीन हो गया है। ऐसा लगता है कि रुपये की जितनी हुलता है, वस्तुओं का उतना ही अभाव होता जा रहा है। वस्तुओं की उपलब्धि कठिन होती । रही है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् एक बार तो अवश्य ही भावमन्दी का समय आया था ? षि तथा मिलों के उत्पादन से बाजार पट गये थे। किन्तु द्वितीय महायुद्ध में वस्तुओं का ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् भी वह सुख समृद्धि की कामना स्वप्न नकर रह गयी।

योजनाओं में वृद्धि अवश्य हो रही है। कागजी कार्यवाही में कोई कमी दृष्टिगोचर नहीं रही है। उत्पादन क्षमता कागजों में बढ़ती जा रही है किन्तु जन साधारण का जीवन अभावों ग्रस्त बनता जा रहा है। असन्तोष सीमा पार करता जा रहा है। जन मानस क्षोम से आन्दोलित रहा है।

मूल्य वृद्धि का कारण—मूल्यवृद्धि का विशेष कारण, चोरबाजारियों का वस्तुओं की उपलब्ता को कठिन बना देना है। कई गुणा वस्तुओं की वृद्धि को भी अभावमय बना देना है।जीवन ी सभी आवश्यक वस्तुओं को मूल्य-वृद्धि से प्रभावित बना देना है।

ऐसी वस्तुएँ, जिनका नाम एक ग्रामीण नहीं जानते थे, अब उनका उपभोग उनके दैनिक जीवन की आवश्यकता बन गया है। वे अब आधुनिक जीवन के सुखों का तात्पर्य समझने लगे हैं। जिन वस्तुओं को सीमित उपभोक्ता वर्ग के निमित्त सुरक्षित समझा जाता था, वे एक विशाल जन-समुदाय की वस्तु बन गयी हैं। परिणामस्वरूप उनके मूल्य में वृद्धि होती जा रही है। चाय का ही उदाहरण प्रस्तुत है कि कोई गाँव ऐसा अब नहीं मिलेगा जहाँ चाय-पान प्रतिदिन न होता हो। चीनी के मूल्य में वृद्धि चाय-पान की अधिकता ही है। एक समय तथा जब कि शक्कर (चीनी नहीं) और गुड़ का उपयोग, कम से कम, गाँवों में तो होता ही था। लेकिन अब गुड़ का उपयोग कोई करना नहीं चाहता। शक्कर का सर्वथा अभाव है।

मुनाफाखोरी, जमाखोरी तथा चोर बाजारी मूल्य वृद्धि के विशिष्ट कारण हैं अनियन्त्रित गति से मूल्य वृद्धि हो रही है और सरकार के सभी प्रयास निष्फल सिद्ध हो रहे हैं। मूल्य वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं कर पा रहे हैं। स्वार्थरत वर्गों को सही मार्ग पर लाना कठिन होता है। वस्तुओं का चोर-बाजार में संग्रह हो रहा है। काले धन की बाढ़ सी आ रही है। फलतः राष्ट्रीय जीवन दोष युक्त बनता जा रहा है। भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुँच गया है।

मूल्य वृद्धि पर नियन्त्रण—साधारण परिवार अत्यन्त दुःखी है। असन्तुष्ट है सम्पन्न परिवारों पर मूल्य वृद्धि का विशेष प्रभाव नहीं है। वे सभी वस्तु सहज में ही प्राप्त कर लेते हैं। उनका कोई काम नहीं रुकता। उन्हें कोई अभाव नहीं खटकता। रोना तो उन परिवारों का है जो अधिक मूल्य के कारण किसी वस्तु को क्रय करने में समर्थ नहीं है। काले बाजार में वस्तु खरीदना जिनके लिए सम्भव नहीं है। सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले सरकार को इन स्वार्थी जमाखोरों तथा मुनाफाखोरों को अपने नियन्त्रण में लेना होगा। इसके लिए सरकार को साहसिक पग उठाने की आवश्यकता है। लोभ तथा भय की स्थिति से दूर रहने की अपेक्षा है।

उपसंहार—सरकार बदलती है। बदलना इस सब व्यवस्था को भी है जिसके लिए साहसपूर्ण कदम की आवश्यकता है। समस्या कितनी भी जटिल हो, वह सुलझ सकती है। लेकिन सुलझाने

के लिए जिस स्वार्थ रहित तथा साहसिक कार्य की आवश्यकता है उसके बिना सरकार क किसी भी कार्य में सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। मूल्य वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं पाया ज सकता।

३१. भारत की तटस्थत की नीति

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. तटस्थता नीति का तात्पर्य। ३. तटस्थता नीति के सिद्धान्त ४. तटस्थता नीति के परिणाम। ५. उपसंहार।

प्रस्तावना—पं० जवाहरलाल नेहरू ने एकबार भारत की विदेश नीति सुस्पष्ट करते हुए कह था—'अपनी विदेशी नीति में हम जो कुछ कहते हैं—उसका सार शान्ति है, शान्ति देश में औ शान्ति विदेश में।'

प्रत्येक देश राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए अपनी विदेशनीति निर्धारित करता है देश की ऐतिहासिक परम्परां का विचार करते हुए परिवर्तित परिस्थितियों में विदेश नीति निश्चित करना ही सर्वोत्तम होता है। विकास का साधन होता है। फलतः बौद्ध और गाँधी दर्शन, देश का विभाजन, रक्तपात आदि तत्वों और घटनाओं का ही प्रभाव है कि भारत ने तटस्थता की नीति को अपनी विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त निश्चित किया है।

तटस्थता नीति का तात्पर्य—तटस्थता की नीति के विषय में यह कदापि नहीं समझन चाहिए कि हमारी विश्व के अन्य देशों के पारस्परिक संघर्षों या विग्रहों से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारे देश का इतिहास साक्षी है कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों के समाधान में भारत का विशेष योग रहा है। कोरिया के गृह युद्ध में भारत के परामर्श से शाति स्थापित हुई। वियतनाम समस्या का समाधान भी भारत के हस्तक्षेप से सम्भव हो सका। इजराइल तथा मिस्र में शान्ति स्थापना भारत के ही प्रयास से ही हो सकी।

देश की तटस्थता नीति उसकी निष्क्रियता नीति नहीं है। भारत तो विभिन्न राष्ट्रों की उलझनें अपने सत्परामर्श तथा शान्तिपूर्ण उपयोगों से किसी सरलमार्ग द्वारा सुलझाता रहा है वह किसी राष्ट्र की समस्या को उदासीन दृष्टि से देखना उचित नहीं समझता। वह राजनीतिक गुटों का मित्र है, शत्रु नहीं।

तटस्थता नीति के सिद्धान्त—तटस्थता नीति में किसी एक गुट के विरुद्ध दूसरे की सहायता करना कभी उसका सिद्धान्त नहीं रहा। तटस्थता नीति में तो पारस्परिक संघर्ष से भारत तटस्थ है किन्तु उनके मध्य मित्रता सम्बन्ध स्थापना में वह सदा क्रियाशील है। अतः भारत की तटस्थता नीति निष्क्रियता या उदासीनता की नीति नहीं है।

तटस्थता नीति के परिणाम—भारत ने तटस्थता नीति के कारण विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। सर्वत्र उसे सम्मान प्राप्त हुआ है। राष्ट्रों के पारस्परिक वैमनस्य का निपटारा शान्तिपूर्ण उपायों से सम्भव हो सका है तथा सह अस्तित्व की भावना में अभिवृद्धि हुई है। भारत की तटस्थता नीति का मूल्य केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु विश्व शान्ति स्थापना में भी है। दो गुटों को आलोचना द्वारा सचेत रखना तथा सत्यामर्श द्वारा उचित मार्ग प्रशस्त करना भी तटस्थता नीति का ही सद्परिणाम है।

उपसंहार—नेहरूजी की बुद्धिमत्ता पूर्ण तटस्थता तकनीति का विश्वव्यापी प्रभाव हुआ है। एशिया तथा अफ्रीका के प्रायः सभी राष्ट्रों ने तटस्थता की नीति को अपनाकर भारत का साथ दिया है। अमेरिका तथा रूस की हमें पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। चीन के विश्वासघाती सीमा अतिक्रमण के समय साम्यवादी रूस ने चीन की कार्यवाही का विरोध भी भारत की तटस्थता नीति के कारण ही सम्भव हो सका। निष्पक्ष रूप से कहा जा सकता है कि भारत को तटस्थता नीति से लाभ ही लाभ हुआ है।

३२. शराब सर्वनाश का मूल है

या नशा, एक राष्ट्रीय समस्या

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) नशे के विविध प्रकार। (३) नशीली दवाओं का अवैध ायात। (४) एक अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र। (५) मुक्ति का उपाय। (६) उपसंहार।

प्रस्तावना—'दम मारो दम, मिट जाये गम'

कैसी आत्म प्रवंचना है कैसा खूबसूरत धोखा है। शराब के एक पैग में गाँजे की एक में, भाँग के घूँट में, स्मैक के एक कश में, जीवन के सारे दुःखों को डुबो दो, सारे अभावों भूल जाओ। कुछ घड़ी को सारे गरमों से परे एक अपूर्व सुख निद्रा में रहस्यमय सपनों खो जाओ। समाधि का सुख, ब्रह्मानन्द जिसके लिये योगी और तपस्वी सारा जीवन खपाते सिर्फ चंद रुपयों में जब चाहो उपलब्ध है। यह पलायनवादी मानसिकता, अपने में खो जाने मजबूरी, आखिर समाज में क्यों पनप रही है। युवा पीढ़ी के दिलों में यह घुन क्यों लगा रहा है? इसे सिर्फ एक आदत या शौक कहकर छुटकारा नहीं पाया जा सकता। हालत होती जा रही है कि इससे युद्धस्तर पर निपटने की आवश्यकता है।

नशे के विविध प्रकार—मनुष्य ने नशे के क्षेत्र में अपनी आविष्कार क्षमता का अच्छा रिचय दिया है। तम्बाकू, चरस, गाँजा, भाँग, अफीम, शराब, हेरोइन, स्मैक यहाँ तक कि ाँ से स्वयं को डसवा कर नशा करने तक का ढंग खोज निकाला गया है। तम्बाकू का ्रोग हुक्के में, बीड़ी में, सिगरेट में, पान में, चूने के साथ, बुरादे के रूप में किया जाता है। ह नशा हल्का और बड़ा व्यापक है। लाखों रुपये की तम्बाकू प्रतिदिन भारत में सेवन की ती है। चरस और गाँजे का प्रयोग अधिकतर चिलम के द्वारा होता है, कुछ उत्साही लोग गरेट में भी प्रयोग कर लेते हैं। भाँग अधिकतर ठंडाई के साथ प्रयुक्त होती है। चूर्ण, कुलफी था अन्य खाद्य पदार्थ के साथ भी सेवन की जाती है। अफीम का इतना प्रचलन नहीं है, न्तु उससे बनाये जाने वाले अधिक नशीले पदार्थों का प्रचलन बहुत हो रहा है। हेरोइन और ैक आजकल सबसे कीमती और सबसे अधिक हानिकारक पदार्थ है। स्मैक को ही 'ब्राउन ुगर' भी कहा जाता है।

शराब नशों की रानी है, इससे मनुष्य की मित्रता बड़ी पुरानी है। राजा हो या रंक, गृहस्थ या पुजारी सभी ने शराब से यारी की है। कोई खुल आम तो कोई लुक छिपकर इसे गले गाता रहता है। चतुर लोग इसे दवा कहकर चढ़ाते हैं और भक्त लोग देवी माँ का प्रसाद ान कर स्वीकार कर लेते हैं। इस शराब ने न जाने कितने दीवानों को अपनी धारा में डुबो लया। न जाने कितने घरों की सुख-शान्ति बरबाद कर दी। राजाओं को भिखारी बना दिया, लाकारों की कला को आत्महत्या पर मजबूर कर दिया, कवियों की कविता को भ्रष्ट कर दिया, जदूर के हाथों से औजार छीन लिये। भ्रष्टाचार, दुराचार, अत्याचार, बलात्कार की आग में ामाज को जलाने वाली यही शराब है। इसके ओठों से लगते ही ईमान, निष्ठा, स्वामिभक्ति श-प्रेम सबके सब बिक जाते हैं।

नशीली दवाओं का अवैध यातायात—नशीली दवाओं की तस्करी आज एक व्यवस्थित यवसाय बन चुका है। एक से एक विचित्र तरीके इनको भेजने के लिये प्रयोग में लाये जा हे हैं। विशेष कर हेरोइन और स्मैक का काला व्यापार जोरों पर है। सोना, चाँदी, जवाहरात ब के सब इनके सामने तेजहीन हो चुके हैं। पचास ग्राम सोने और पचास ग्राम मादक द्रव्य ी कीमतों में आकाश पाताल का अन्तर है। वजन में बहुत हल्की, धातु खोजी यन्त्रों की पकड़

से बाहर और मूल्य में करोड़ो रुपयों की होने से हर स्मगलर इन्हीं का व्यापार करने की सोचता है।

देश में प्रवेश से लेकर 'ग्राहक' तक पहुँचने का मार्ग इतना सुगठित और गुप्त है कि इसके वितरकों तक पहुँच पाना बहुत कठिन होता है। इनके ग्राहक विशेष, कर युवक और किशोर होते हैं। छात्रों के बीच भी इनका प्रचार तेजी से हो रहा है।

एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र—नशीले पदार्थों का अवैध व्यापार केवल एक सामाजिक अपराध मात्र नहीं रह गया है। इसकी जड़ें अब बहुत गहरी पहुँच चुकी है। अब यह केवल धन लोलुप अर्थ-पिशाचों का व्यापार नहीं रह गया है बल्कि अब सरकारें भी इसमें रुचि लेने लगी हैं। बिना हथियार के ही पूरे देश को पंगु बनाने, उत्साह और शक्ति से खोखला कर देने का इससे बढ़ कर साधन और क्या हो सकता है?

अपने ही देश में पड़ौसी देशों से मादक पदार्थों की निरन्तर बड़े पैमाने पर तस्करी हो रही है। ये पदार्थ देश के युवकों को 'अंधी गलियों में' धकेल रहे हैं। इस भयावह समस्या के प्रति संसार के अधिकांश देश सतर्क हो चुके हैं। अनेक देशों ने मादक पदार्थों की तस्करी के लिये प्राण-दण्ड की व्यवस्था कर दी है। इतनी चौकसी और कठोर नियन्त्रण के बाबजूद यह समस्या दिनों-दिन भयंकर होती जा रही है।

मुक्ति का उपाय—इस समस्या से मुक्ति का उपाय सोचने से पहले यह सोचना आवश्यक होगा कि इसके मूल में क्या कारण है? युवा वर्ग में यह प्रवृत्ति क्यों जन्म लेती है? व्यक्ति नशा क्यों करता है? इसके अनेक कारण हैं। तम्बाकू, भाँग तथा शराब आदि का आरम्भ बहुधा शौक के रूप में किया जाता है और धीरे-धीरे व्यक्ति इनका आदी हो जाता है। शौक के अतिरिक्त मानसिक तनाव और परिश्रम से मुक्ति पाने के लिये भी नशे का सहारा लोग लेते हैं। एक प्रमुख कारण वही 'गम गलत' करने का है। मानसिक आघात और जीवन के अभाव को भूलने के लिये तथा निराशा को डुबोने के लिये भी शराब के प्याले का प्रयोग किया जाता है।

अतः इस व्यसन से मुक्ति पाने के लिये, समाज की इस भयंकर समस्या से रक्षा करने के लिये, व्यक्ति के जीवन को भय, तनाव और पलायन से मुक्त कराना होगा। आज की सभ्यता और अति व्यावसायिकता ने मनुष्य में पहले से कहीं अधिक असुरक्षा की भावना उत्पन्न कर दी है। फलस्वरूप वह नशे का सहारा लेकर उससे बचना चाहता है। अतः नशे की अपेक्षा एक स्वास्थ्यकर और सुरक्षित विकल्प खोजना होगा जो मनुष्य को आश्वस्त कर सके।

किशोर और युवा वर्ग माता-पिता की उपेक्षा के कारण अपने को असुरक्षित और निराश अनुभव करने लगता है। निरीक्षण के अभाव की वजह से वह ऐसे मित्रों या सहपाठियों के चक्कर में पड़ जाता है जो पहले से ही मादव पदार्थों के सेवन के आदी होते हैं। एकबार स्मैक का धुआँ भीतर जाते ही युवक और युवती उसके दास बन जाते हैं। उसके न मिलने पर मछली की तरह तड़पते हैं और इस जहर के खाने पर ही उनकी पीड़ा शान्त हो पाती है।

अतः किशोरों और युवकों के प्रति माता-पिता को सचेत होना पड़ेगा उनके प्रति गहरी रुचि प्रदर्शित करनी होगी। वह अपने को अकेला अनुभव न करे, ऐसा प्रयास करना होगा।

उपसंहार—नशा समाज का, व्यक्ति का, पूरे राष्ट्र का शत्रु है। यह मनुष्य के जीवन को नारकीय बना देता है। उसकी सारी प्रतिभा, शक्ति, उत्साह और स्फूर्ति नष्ट हो जाती है। वह जीते हुए भी मुर्दे के समान होता है। यह समस्या निरन्तर विकट होती जा रही है। आज यह हर राष्ट्र के लिये खतरे की घण्टी है। अतः इसका इलाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिये।

बिना सभी राष्ट्रों के सहयोग के यह हल नहीं हो सकती। यदि मानवता के भविष्य को बचाना है तो इस राक्षस को पालने में हीं कुचल देना होगा। सरकारों को आबकारी से होने वाली आय के लोभ को त्यागना होगा। सीमाओं पर चौकसी और भी सतर्क करनी होगी। सारे दृश्य-श्रव्य साधनों से नशे के विरुद्ध युद्ध छेड़ना होगा। तभी, ईश्वर ने चाहा तो इस अदृश्य दानव से मुक्ति मिल पायेगी।

३३. मेरे जीवन का उद्देश्य

रूपरेखा—(१) प्रस्तावना। (२) उद्देश्यपूर्ण जीवन। (३) मेरा उद्देश्य। (४) उपसंहार।

प्रस्तावना—पर्वत से लुड़कता हुआ पत्थर जाने कहा रुकेगा? यह मस्त पवन का झोंका न जाने किधर निकल जायेगा? यह इठलाती हुई जलधारा न जाने कहाँ विश्राम लेगी? ऐसा ही मानव जीवन भी है—निरुद्देश्य, निष्प्रयोजन। 'आहर, निद्रा, भय' में भटकते हुए मृत्यु के मुख में प्रवेश कर जाना। क्या यही मनुष्य जीवन है। यदि ऐसा होता है तो विश्वविद्याता इस मानव नामक जीव को बुद्धि और विवेक की विशेष विभूति क्यों सौंपता? जीवन का उद्देश्य महत् है। वह सिर्फ एक रैन-बसेरा या खानाबदोश का डेरा नहीं है। वह एक सार्थक, लक्ष्यवती यात्रा है जिसके पड़ाव तो अनेक हैं किन्तु मंजिल एक है।

सोद्देश्य जीवन—हर व्यक्ति जीवन में कोई न कोई उद्देश्य लेकर चल रहा है। कुछ न कुछ बनने की अभिलाषा का दीप हर हृदय में जल रहा है। एक ललक-भरा सपना हर दिल में पल रहा है। सच तो यह है कि बिना उद्देश्य के जीना मनुष्य के लिए कठिन है। यह बात अलग है कि कुछ उंद्देश्य दूरगामी होते हैं और कुछ तात्कालिक। ये विज्ञान के विद्यार्थी हैं इनमें से कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, कोई वैज्ञानिक और कोई अन्वेषक बनेगा। ये वाणिज्य के अध्येता हैं। इनमें व्यापारी, लेखाकार और उत्पादक बन रहे हैं। कला संकाय के साधन भी नव-नव लक्ष्यों को लेकर चल रहे हैं।

मेरा उद्देश्य—स्वाभाविक है कि मेरे जीवन में भी एक उद्देश्य, एक सपना पल रहा है। मैं एक सफल चिकित्सक बनना चाहता हूँ। जब-जब में डॉक्टरों की दुकान को मरीजों से भरा देखता हूँ तो मुझे एक ही प्रश्न कचोटता रहता है कि चिकित्सा सेवा है या विशुद्ध व्यवसाय। ये एक मरीज को कठनाई से तीन मिनट दे पाने वाले डॉक्टर भला समाज का क्या भला पर पायेंगे? हालत आज यह है कि 'मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की हमने'। आज की प्रयोग-परक और तात्कालिक आराम पर बल देने वाली चिकित्सा प्रद्धति, एक रोग को विराम देती है और चार को आरम्भ कर देती है। मेरी इच्छा है कि रोगियों को दो केवल दवा ही नहीं दूँ अपितु बचाव और आत्म-चिकित्सा का भी परामर्श दूँ।

एक चिकित्सक के रूप में मेरा कर्तव्य समाज की बहुमूल्य सेवा करना होगा। मैं रोगी का शोषण नहीं करूँगा केवल उचित शुल्क लेकर उसे शीघ्रताशीघ्र स्वस्थ करने का प्रयत्न करूँगा। निर्धन और असहाय रोगियों के साथ पूर्ण सहानुभूति से पेश आऊँगा और उसकी यथासम्भव सहायता करूँगा।

मैं नगर में एक सुविधा-सम्पन्न चिकित्सालय का विकास करूँगा और उसमें केवल सेवा-भावी और कुशल चिकित्सकों तथा परिचारकों की नियुक्ति करूँगा। धन लोलुप व्यक्तियों को कोई स्थान न होगा।

मैं नगर में एक सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा संगठन की स्थापना में पूर्ण योग प्रदान करुँगा। यह संस्था नागरिकों को घर पर ही स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श तथा प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण प्रदान करेगी।

किसी भी संक्रामक या व्यापक रोग के फैलने के समय में अपने संसाधनों से तथा सेवाभावी समर्थ नागरिकों का सहयोग लेकर स्थान-स्थान पर शिविर लगाऊँगा तथा औषधि वितरण करूँगा।

उपसंहार—मैं यह जानता हूँ कि आज समाज नैतिकता तथा उत्कृष्ट जीवन-मूल्यों से निरन्तर दूर होता जा रहा है। केवल भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए आदमी पागल बना हुआ है। लेकिन इस अंधी दौड़ में शामिल होकर मैं अपने आपको बुद्धि विवेकहीन क्यों सिद्ध करूँ? मैं यह सिद्ध क्यों न करूँ कि धन साधन है साध्य नहीं। धन सोपान है, लक्ष्य नहीं। केवल स्वाभिमान को गिरवी रख कर दौलत की गुलामी करने वालों की भीड़ में शामिल होने के बजाय में अपनी प्रतिभा और प्रयत्न को उसी समाज को क्यों न समर्पित करूँ जिसके सहयोग के बिना मैं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता था। अस्तु मैं अपनी महान् संस्कृति के इस दिव्य घोष को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा व्यवसाय के कलंक को धोना चाहता हूँ—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखःभाग् भवेत्॥

३४. वृक्षारोपण की उपयोगिता
या वन संरक्षण

रूपरेखा—१. प्रस्तावना। २. वृक्षारोपण की सांस्कृति परम्परा। ३. वृक्षों या वनों से लाभ। ४. आधुनिक वनों की दशा। ५. वन उजड़ने के कारण। ६. वृक्षारोपण का महत्त्व। ७. उपसंहार।

प्रस्तावना—कितना सत्य है पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी का यह कथन—'**ये वन धरती की सन्तान हैं, क्योंकि इनका जन्म उसी के गर्भ से होता है।**' वास्तव में वृक्ष तथा वन प्रकृति के सुन्दर उपहार हैं। स्वयं धूप सहन करते हैं किन्तु हमें छाया प्रदान करते हैं। आत्मा के समान महत्त्वपूर्ण स्थान बनाये हुए ये वन धरती की शोभा है।

वृक्षारोपण की सांस्कृतिक परम्परा—वनों से मानव का जन्म जन्मान्तर का सम्बन्ध है। अनादिकाल से प्रकृति मानव की धात्री रही है। वनों की वृद्धि करना मानव का परम पवित्र कर्तव्य रहा है। चार आश्रमं की व्यवस्था हमारे समाज में रही है। १. ब्रह्मचर्य। २. गृहस्थ। ३. वानप्रस्थ। ४. सन्यास। वानप्रस्थ का अर्थ वन को प्रस्थान करना है। इस प्रकार वनों से मानव एक शाश्वत सम्बन्ध बनाये हुए हैं। हिन्दुओं में पीपल वृक्ष की पूजा करना यह संकेत देता है कि वृक्षों में देवताओं का वास माना गया है। पीपल ही नहीं तुलसी पूजा, आँवला पूजा तथा बरगद की भी पूजा की जाती है। ये वृक्ष हमारे मित्र, रक्षक तथा शिक्षक हैं। वृक्षों की परोपकार की मन्त प्रवृत्ति की प्रशंसा करते हुए कबीरदास ने कहा है—

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचरै नीर।

संस्कृत में उक्ति प्रचलित है—

पिबन्ति नद्यः स्वयंमेव नाम्भः।
स्वयम् न खादन्ति फलानि वृक्षाः॥

नदी अपने जल को स्वयं नहीं पीती। वृक्ष अपने फलों के स्वयं नहीं खाते।

वृक्षों या वनों से लाभ—वृक्षों का महत्त्व मनुस्मृति में वृक्ष काटने वाले के लिए की गयी दण्ड व्यवस्था से ही सिद्ध हो जाता है। वृक्षों को ही मानव का जीवन कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वर्षा को आमन्त्रित करना वृक्षों का ही कार्य है। इसीलिए वृक्षों को वर्षा का प्रमुख स्रोत माना गया है।

बहुमूल्य इमारती तथा ईंधन की लकड़ी वृक्षों से ही प्राप्त होती है। विभिन्न रोगों का निवारण करने हेतु अनेक प्रकार की जड़ी-बूटी वृक्षों से प्राप्त होती हैं जिनसे दवाओं का निर्माण होता है। हरियाली तथा छाया इन वृक्षों से ही प्राप्त होती है। अर्थशास्त्रियों के विचार में देश की आर्थिक उन्नति की रीढ़ ये वृक्ष ही हैं।

आधुनिक वनों की दशा—प्राचीन वनों का काटना तथा नये वृक्षों का आरोपण न करना वनों की दयनीय दशा का द्योतक है। मनुष्य की दृष्टि में वन महत्त्वहीन हो गये हैं। फलतः देश संकट की घड़ी में फँस गया है। स्थान-स्थान पर नदियों में बाढ़ आना, वर्षा का न होना अथवा निश्चित समय पर न होना वनों के अभाव के कारण हैं।

वन उजड़ने के कारण—वनों के उजड़ने में प्रमुख हाथ वनों के ठेकेदारों का है जो वृक्षों को तो निरन्तर काटते जा रहे हैं किन्तु उनके विकास की ओर उनका कोई ध्यान नहीं है। वृक्षारोपण में उनकी कोई रुचि नहीं है।

जंगली जातियों की भी वनों के उजाड़ने में प्रमुख भूमिका रहती है। वनों में रहने वाली ये जातियाँ अपने पशुओं को चरने के लिए छोड़ देती हैं। पशु स्वतन्त्रतापूर्वक चरते और वृक्षों को उजाड़ते हैं। वनों का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

वन अधिकारियों तथा कर्मचारियों का भी वनों के विनाश में प्रमुख हाथ है। धन के लोभ में वन उजाड़ने में सहायक ही होते हैं उनके विकास के लिए न तो विचार करते हैं और न प्रयास।

महत्त्व—वनों की दयनीय स्थिति को देखते हुए, उनके विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। वृक्षारोपण वनों के विनाश को रोकेगा तथा उनके विकास में पूर्णरूपेण सहायक होगा।

उपसंहार—मानव जीवन को समृद्ध बनाने के लिए वनों का विकास परमावश्यक है। सरकार का ध्यान भी वनों के विकास की दिशा में गया है और वनों के विकास के लिए नवीन योजनाएँ बनायी गयी हैं। ऐसा लगता है कि राजकीय सहायता से भारतीय वनों का भविष्य उज्ज्वल बन गया है और प्राचीन गौरव की पुनः स्थापना की सम्भावनाओं में वृद्धि हुई है।

□

विशेष हिन्दी
द्वितीय प्रश्न-पत्र

पद्य भाग - 2

1 चन्दबरदाई

● गागर में सागर

चन्दबरदाई—पृथ्वीराज रासो के रचयिता • पृथ्वीराज के साथ जन्म तथा मृत्यु • जन्म सम्वत् 1205 • पृथ्वीराज उनके आश्रयदाता • 'रासो' चन्दबरदाई की प्रमुख काव्य रचना • राजस्थानी और डिंगल का प्रभाव • संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पिंगल, अरबी-फारसी आदि भाषाओं का समावेश • दूहा, तोमर, छप्पय, त्रोटक, साटक, कुण्डलियाँ, आर्या, अरल्ल आदि का प्रयोग • वीर रस की प्रधानता • शृंगार रस का भी यत्र-तत्र प्रयोग • पद्मावती समय, पृथ्वीराज रासो का बीसवाँ समय।

काव्य-सार-पद्मावती समय—पद्मावती के रूप का वर्णन • पृथ्वीराज चौहान की वीरता का चित्रण • चौहान को हिन्दू राजाओं में श्रेष्ठ बताना • पृथ्वीराज चौहान तथा मुहम्मद गौरी के युद्ध-पराक्रम का प्रदर्शन • गौरी की पराजय • पृथ्वीराज तथा पद्मावती का विवाह सम्पन्न होना • विजयोत्सव का आयोजन होना।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. ''पकरिये साहि जिम कुलिंग बाज।'' इस पंक्ति में अलंकार है—

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक

(च) अनुप्रास।

उत्तर—[क] उपमा।

प्रश्न 2. ''बर गौरी पद्मावती, गहि गौरी सुल्तान।'' उक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

(क) अनुप्रास (ख) यमक

(ग) श्लेष (घ) उपमा।

उत्तर—[ख] यमक।

प्रश्न 3. 'पृथ्वीराज रासो' की प्रमुख भाषा है—

(क) डिंगल (ख) पिंगल

(ग) राजस्थानी (घ) राजस्थानी-डिंगल मिश्रित।

उत्तर—[घ] राजस्थानी-डिंगल मिश्रित।

प्रश्न 4. 'पृथ्वीराज रासो' का वर्ण्य विषय है—

(क) गौरी का युद्ध (ख) पद्मावती विवाह

(ग) पृथ्वीराज का शौर्य (घ) युद्ध की भयंकरता।

उत्तर—[घ] युद्ध की भयंकरता।

प्रश्न 5. 'पद्मावती समय' संकेत करता है—

(क) हिन्दू विवाह नियम की ओर (ख) पृथ्वीराज की महानता की ओर

(ग) पद्मावती के प्रेम की ओर (घ) गौरी की वीरता की ओर।

उत्तर—[क] हिन्दू विवाह नियम की ओर।
प्रश्न 6. युद्ध स्थल से हाथियों के भागने का कारण था—
(क) गौरी की सेना में भगदड़ होने के कारण
(ख) सूर्यास्त के कारण (ग) सूँड कटने की पीड़ा के कारण
(घ) वर्षा प्रारम्भ होने के कारण।
उत्तर—[ग] सूँड कटने की पीड़ा के कारण।
प्रश्न 7. ''पृथ्वीराज रासो'' में कौन-सा रस प्रधान है—
(क) करुण रस (ख) वीर रस
(ग) श्रृंगार रस (घ) वीभत्स रस।
उत्तर—[ख] वीर रस।
प्रश्न 8. ''गही तेग चहुवांन हिन्दुवांन रानं।'' उक्त पंक्ति में वर्णन है—
(क) पद्मावती विवाह का (ख) गौरी की शक्ति का
(ग) भयंकर युद्ध का (घ) पृथ्वीराज के पराक्रम का।
उत्तर—[ग] भयंकर युद्ध का।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पद्मावती समय में किस रस की प्रधानता है ?
उत्तर—पद्मावती समय में **वीर रस** की प्रधानता है।
प्रश्न 2. पद्मावती को किस भाषा की काव्य रचना कहा जा सकता है ?
उत्तर—पद्मावती को **राजस्थानी-डिंगल मिश्रित** काव्य रचना कहा जा सकता है।
प्रश्न 3. चन्दबरदाई ने 'पद्मावती समय' में किसके युद्ध का वर्णन किया है ?
उत्तर—चन्दंबरदाई ने पद्मावती समय में **पृथ्वीराज चौहान तथा मुहम्मद गौरी के युद्ध** का वर्णन किया है।
प्रश्न 4. मुहम्मद गौरी को पृथ्वीराज चौहान ने क्या देने का आदेश दिया ?
उत्तर—पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को **आठ हजार घोड़े** देने का आदेश दिया।
प्रश्न 5. जुद्ध, मंजिझ, लगन्न, त्रिपत शब्दों के संस्कृतनिष्ठ रूप लिखिए।

उत्तर— शब्द	संस्कृतनिष्ठ रूप
जुद्ध	युद्ध
मंजिझ	मध्य
लगन्न	लगन
त्रिपत	तृप्त

प्रश्न 6. प्रस्तुत पाठ (चन्दबरदाई) में प्रयुक्त फारसी भाषा के शब्दों को छाँटिये।
उत्तर—प्रस्तुत पाठ (चन्दबरदाई) में प्रयुक्त फारसी भाषा के शब्द हैं—
1. गिरछ (धूल, मिट्टी) 2. सिताबी (शीघ्रता से)।
प्रश्न 7. शहाबुद्दीन गौरी की तुलना किस पक्षी से की गयी है ?
उत्तर—शहाबुद्दीन गौरी की तुलना **गौरैया पक्षी** से की गयी है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. इस (पद्मावती समय) रचना के आधार पर चन्दबरदाई की भाषागत विशेषताओं का उल्लेख करिये।
अथवा
रचना कौशल पर प्रकाश डालिए। **(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)**
उत्तर—चन्दबरदाई रचित रासो के पद्मावती समय का अध्ययन करने पर उनकी भाषागत विशेषताओं का भली-भाँति ज्ञान हो जाता है। चन्दबरदाई के काव्य जगत में प्रवेश करते समय

हाराष्ट्री, संस्कृत, प्राकृत, मागधी आदि का विशेष प्रचार था। इन सभी भाषाओं का चन्दबरदाई की रचनाओं पर भी प्रभाव पड़ा।

पृथ्वीराज रासो में भाषा के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट लिखा है—

''संस्कृतम् प्राकृतम् चैव, अपभ्रंशा प्रिशाचिका।
मागधी शूरसेनत्र, षट भाषाश्चैव जायते॥''

प्रस्तुत उदाहरण से चन्दबरदाई की भाषा सम्बन्धी नीति तथा उनके काव्य की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है। उन्होंने पद्मावती समय में संस्कृत, प्राकृत, मागधी, पिंगल, डिंगल, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि भाषाओं का प्रयोग किया है। तथापि डिंगल मिश्रित राजस्थानी भाषा की प्रधानता है।

प्रश्न 2. सामन्तवादी साहित्य महान् चरित्रों के यशोगान से परिपूर्ण है। पृथ्वीराज रासो भी इसी कोटि का एक साहित्यिक ग्रन्थ है। अन्य ग्रन्थों के बारे में जानकारी कर अपने विचारों को प्रकट करिये।

उत्तर—चन्दबरदाई हिन्दी परम्परा के आदि कवि हैं। उन्होंने रासो काव्य परम्परा का प्रारम्भ किया। अतिशयोक्ति प्रधान पृथ्वीराज चौहान की यश गाथा लिखी।

चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान के साथ उसके सामन्तों का भी यशोगान किया। रासो काव्य परम्परा में ही हमीर रासो, खुमाण रासो, वीसलदेव रासो, रमन रासो, परमाण रासो, राणा रासो आदि की भी गणना होती है।

रासो काव्यों में सामन्तों को चरित्र नायक माना गया है और उन्हीं सामन्तों के नाम पर नामकरण भी किया गया है। इन रासो काव्यों को सामन्तवादी साहित्य भी कहा जा सकता है। कवियों ने इनमें चरित्र-नायकों का यशोगान किया है।

पृथ्वीराज रासो के समान ही इन रासो काव्यों में सामन्तों के पराक्रम, उनके युद्ध कौशल, उनके आतंक आदि का चित्रण किया गया है। इस प्रकार सामन्तवादी साहित्य महान् चरित्रों के यशोगान से परिपूर्ण है।

प्रश्न 3. ''रासो'' शब्द की व्युत्पत्ति किस प्रकार हुई ? रासो काव्य के दो उदाहरण लिखिये।

उत्तर—''रासो'' शब्द की व्युत्पत्ति—वीरगाथा काल में जिन चरित्र-काव्यों की रचना हुई उनका नाम ''रासो'' रखा गया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल वीरगाथा कालीन वीर गाथाओं को ''रासो'' नाम से प्रचलित मानते हैं। उनके विचार से रासो की व्युत्पत्ति ''रसायण'' शब्द से हुई है। शुक्ल जी कहते हैं कि बीसलदेव रासो में काव्य के अर्थ में रसायण शब्द आया है जो धीरे-धीरे परिवर्तित होकर 'रासो' हो गया है।

कविराज श्यामलदास और डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल के मतानुसार ''रासो'' शब्द की व्युत्पत्ति रहस्य शब्द से हुई है।

चन्द्रबली पाण्डेय तथा डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार से ''रासो'' की व्युत्पत्ति ''रासक'' शब्द से हुई है।

डॉ० दशरथ शर्मा रासलीला से सम्बन्ध जोड़ते हुए ''रास'' से रासो की व्युत्पत्ति मानते हैं। अनेक विद्वान् रस धातु से 'रास' की व्युत्पत्ति मानते हैं।

पं० हरप्रसाद शास्त्री ''राजवंश'' से ''रासो'' की व्युत्पत्ति बताते हैं। विद्वानों के विभिन्न मतों के कारण यह निश्चित करना सर्वथा असम्भव है कि ''रासो'' शब्द की व्युत्पत्ति किस शब्द से हुई ? तथापि यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि ''रासो'' शब्द के समानार्थी शब्द रास, रासु,

रायसो, रायसा, रासा से ही इसकी व्युत्पत्ति हुई है। "पृथ्वीराज रासो" तथा "वीसलदेव रासो" रासो काव्य के दो उदाहरण हैं।

प्रश्न 4. हिन्दी साहित्य के इतिहास में चन्दबरदाई का स्थान निर्धारित कीजिए।

उत्तर—हिन्दी साहित्य के इतिहास में अद्‌भुत कल्पना शक्ति, रचना कुशलता, अपभ्रंश परम्परा के अन्तिम कवि के रूप में चन्दबरदाई का नाम सुप्रसिद्ध है। कथा की गति के अनुकूल छन्दों का चयन, प्रभावोत्पादकता, पृथ्वीराज चौहान का उनके सामन्तों के साथ यशोगान, वीर रस प्रधान काव्य की रचना चन्दबरदाई की ऐसी विशेषताएँ हैं जिससे उनका स्थान हिन्दी साहित्य के इतिहास में महत्त्वपूर्ण बना हुआ है।

चन्दबरदाई को हिन्दी काव्य परम्परा का आदि कवि माना जाता है। उनके समय से ही रासो काव्य परम्परा का प्रारम्भ हुआ है। अपने भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण के विषय में उनका कहना था—

"पट भाषा पुरानं च कुरानं कथितं मया।"

चन्दबरदाई ने अपनी रचनाओं में संस्कृत, प्राकृत, मगधी, अरबी-फारसी, डिंगल, पिंगल, राजस्थानी आदि भाषाओं का प्रयोग किया है। भाषा का सुन्दर एवं चित्रात्मक प्रयोग उनके काव्य की ऐसी विशेषता है जो सदा हिन्दी साहित्य के इतिहास की शोभावृद्धि करती रहेगी।

• रानियों के सौन्दर्य का वर्णन, वीर रस का अनुपम समावेश, युद्धों के भयानक वर्णन चन्दबरदाई के काव्य की विशेषताएँ हैं जो उन्हें हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रमुख स्थान प्रदान करती हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—**पृष्ठ 10–11**—**धर** = धरती। **भर** = भट्ट, योद्धा। **मथ्य** = माथा। **रूरि** = लुढ़कती हुई। **भ्रसुंडह** = सूँड। **रूंड** = धड़। **हूँकि** = हुंकार, गरजन। **तंजिय** = त्यागकर। **गिरछ** = गर्द, मिट्टी। **सुधि** = चेतना। **कुलिंग** = गौरया पक्षी। **सिताबी** = शीघ्रता से। **अमोर** = न मुड़ने वाले। **गिरगंग** = पहाड़ों की गंगा। **डंडयो** = दण्डित किया। **दुग्गह** = दुर्ग, किला। **त्रिपति** = तृप्त। **किंकर** = सेवक।

(1)

न को हार नइ जित्त, रहेई न रहहि सूरबर,
धर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर।
कहीँ कमध कहीँ मथ्थ, कहौ कर चरन अंतरूरि,
कहीँ कंध बहि तेग कहीँ सिर जुट्टि फुटिट उर।
कहीँ दंत मंत हय षुर षुपरि, कुंभ्रसुण्डह रूंड सब,
हिंदवान रान भयेभानु मुष, गहिय तेग चहुँआन जब॥ [पृष्ठ 10

सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्यांश चन्दबरदाई रचित पृथ्वीराज रासो के पद्मावती समय से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि पृथ्वीराज तथा गौरी के युद्ध का वर्णन करते हुए कहता है—

व्याख्या—पृथ्वीराज चौहान तथा गौरी के युद्ध में विजय का कोई निर्णय नहीं हो सका। पद्मावती को लेकर दिल्ली लौटते समय पृथ्वीराज चौहान तथा शहाबुद्दीन गौरी के मध्य होने वाले युद्ध में न कोई विजयी हुआ और न ही कोई पराजित हुआ। दोनों पक्ष के शूरवीरों में युद्ध का उन्माद ऐसा छाया हुआ था कि उनको रोकना भी सम्भव नहीं हो रहा था। सेनापति युद्ध को रोकना चाहते थे किन्तु योद्धाओं पर उनके आदेश का कोई प्रभाव नहीं हो रहा था। वे निरन्तर युद्ध में संलग्न थे।

युद्ध स्थल की वीभत्सता का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वहाँ युद्ध क्षेत्र में कहीं धड़ हुए थे तो कहीं मस्तक बिखरे पड़े थे। कहीं कटे हुए हाथ दिखायी दे रहे थे तो कहीं कटे पैर हुए थे। योद्धाओं की अँतड़ियाँ चारों ओर बिखरी पड़ी थीं।

युद्ध स्थल के भयंकर दृश्य का वर्णन करते हुए चन्दबरदाई कहते हैं कि वीरों की तलवारें ाओं के कन्धों को काट रही थीं। वक्षस्थल कट रहे थे। वीरों के सिर टकरा रहे थे।

हाथियों के दाँत, उनकी सूँड़ तथा विशाल मस्तक कटे हुए पड़े थे। घोड़ों की खोपड़ी तथा चारों ओर कटे हुए इधर-उधर बिखरे पड़े थे। हिन्दुओं के सजा पृथ्वीराज चौहान के ओजपूर्ण का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि उन्होंने जब अपने हाथ में तलवार को उठाया तो क्रोध उत्साह के कारण उनका मुख सूर्य के समान तेजस्वी हो उठा था।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—राजस्थानी तथा डिंगल का मिश्रण। (ii) **छन्द**—कवित्त।
(iii) **रस**—वीर रस। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उपमा अलंकार।
(v) **विशेष**—युद्ध का सजीव चित्रण।

(2)

गही तेग चहुँआँन हिदवान रानं।
गजं जूथ परि कोप केहरि समानं॥
करे रूंड मुंडं करी कुंभ फारे।
बरं सूर सामंत हूँ कि गजै मारै॥
करी चीह चिक्कार करि कलप भग्गे।
मदं तज्जियं लाज ऊमंग मग्गे॥ [पृष्ठ 10-11]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **चन्दबरदाई** रचित **पृथ्वीराज रासो** के **भुजुंगी** शीर्षक से अवतरित

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर पृथ्वीराज चौहान तथा शहाबुद्दीन के युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ा है—

व्याख्या—पृथ्वीराज चौहान हिन्दू राजाओं के सिरमौर थे। उनमें वीरता कूट-कूटकर भरी थी। में तलवार लिए वह शत्रु के हाथियों के झुण्ड पर वार करने लगे। कवि पृथ्वीराज के मण की तुलना शेर से करते हैं और कहते हैं कि जिस प्रकार आवेश पूर्ण मुद्रा में सिंह हाथियों हार करता है उसी प्रकार पृथ्वीराज का आक्रमण भी गौरी के हाथियों पर हुआ।

पृथ्वीराज चौहान ने तलवार की चोट से हाथियों के सिर काट-काटकर धड़ से पृथक् कर मस्तकों को इस प्रकार फोड़ दिया जिस प्रकार घड़ों को फोड़ दिया जाता है। राजा के शौर्य खकर अन्य वीर एवं सामन्त बार-बार गर्जना करने लगे।

प्रहारों से घबड़ाकर हाथियों की सेना में चीत्कार होने लगा। हाथी व्याकुल हो उठे। चारों ओर रक्षार्थ भागने लगे। धीरे-धीरे शत्रु पक्ष में भी कायरतापूर्ण पलायन प्रारम्भ हो गया। वे अपनी के लिए युद्ध-स्थल से भागने लगे।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—राजस्थानी-डिंगल का मिश्रण। (ii) **छन्द**—भुजुंगी।
(iii) **रस**—वीर रस। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उपमा अलंकार।
(v) **विशेष**—युद्ध-क्षेत्र का वर्णन।

(3)

जीति भइ प्रथिराज की, पकरि साह ले संग,
दिल्ली दिति मारगि लगौ, उतरि घाट गिर गंग॥
वर गोरी पद्मावती, गहि गोरी सुलतान,
निकट नगर दिल्ली गये, प्रथिराज चहुँआँन॥ [पृष्ठ 11]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **चन्दबरदाई** रचित **पृथ्वीराज रासो** के **दूहा** भाग से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर पृथ्वीराज के दिल्ली लौटने का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

व्याख्या—शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज चौहान ने पराजित कर दिया। वह गौरी को पकड़कर अपने साथ दिल्ली ले गये। मार्ग में पहाड़ी नदी को पार किया और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। राजा ने अपने साथ गौर वर्ण वाली अनुपम सौन्दर्यशाली पद्मावती को भी ले रखा था। वह शहाबुद्दीन गौरी तथा पद्मावती को लेकर दिल्ली के निकट पहुँच गये।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—राजस्थानी-डिंगल मिश्रित भाषा। (ii) **छन्द**—दूहा।

(iii) **रस**—वीर रस। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास अलंकार।

(v) **विशेष**—सरल, सरस दिल्ली लौटने का वर्णन।

(4)

चढिय राज प्रथिराज, छांडि साहा बदीन सुर,
त्रिपत सूर सामंत, बजत निसांन गजत धुर।
चंद्रबदनि मृगनैनि, कलस ले सिर सममुष्ष जुष।
कनक थार अति बनाय, मोतिन बँधाय सुष॥
मंडल मयंक बरनार सब आनंद कंठह गाइयव।
ढोरत चँवर किक्कर करहि मुकुट सीस तिलक जु दियव॥ [पृष्ठ 11]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश चन्दबरदाई रचित **पृथ्वीराज रासो** के **कवित्त** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान के दिल्ली पहुँचने पर उनके स्वागत तथा मंगल गान का वर्णन किया है।

व्याख्या—पृथ्वीराज चौहान ने शहाबुद्दीन योद्धा को बन्धन-मुक्त कर दिया। वह दुर्ग में चले गये। राजा के इस कार्य से सभी योद्धा तथा सामन्त प्रसन्न और सन्तुष्ट हो गये।

पृथ्वीराज के आगमन से चारों ओर हर्ष का वातावरण छा गया। नगाड़े बजने लगे। सुन्दरियाँ अपने सिरों पर कलश रखकर राजा के सम्मुख आने लगीं। स्वर्ण थालों में मोती भरकर पृथ्वीराज चौहान की आरती होने लगी।

कवि कहता है कि श्रेष्ठ सुन्दरियाँ राजा के चारों ओर एकत्र हो गयीं। आनन्दित होकर उन सुन्दरियों ने विवाह के मंगल गीत प्रारम्भ कर दिये। सिर पर मुकुट धारण कराया गया। ललाट पर तिलक किया गया। सेवकों ने राजा पर चँवर डुलाना प्रारम्भ कर दिया।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—राजस्थानी-डिंगल मिश्रित भाषा। (ii) **छन्द**—कवित्त।

(iii) **रस**—श्रृंगार। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उपमा अलंकार।

(v) **अन्य**—वैवाहिक परम्परा का चित्रण।

2 कबीर

● गागर में सागर

कबीर—ज्ञानाश्रयी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि • सन् 1398 के लगभग काशी में जन्म • सन्तानहीन जुलाहा दम्पत्ति नीरु नीमा द्वारा पालन-पोषण • हिन्दू-मुसलमान धर्मों का प्रभाव • पूर्णत: अशिक्षित • सन 1495 में मृत्यु • 57 रचनाएँ • साखी, सबद तथा रमैनी के नाम से साहित्य परिचय।

रचनाएँ—(1) बीजक, (2) कबीर ग्रन्थावली, (3) कबीर वचनावली।

काव्य सार-कबीर-साखी-पद—'गुरुदेव को अंग' में गुरु की महिमा का वर्णन • "सुमिरण कौ अंग" में परमात्मा स्मरण, उसके दर्शन की दुर्लभता, आत्मा-परमात्मा का अभेद • परब्रह्म के तेज का वर्णन • "रस कौ अंग" में ब्रह्मा को सर्वश्रेष्ठ रसायन बताना • पदों के द्वारा आत्म ज्ञान की श्रेष्ठता का वर्णन।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "हरि-रस" शब्द में अलंकार है—

(क) रूपक (ख) उपमा

(ग) यमक (घ) रूपकातिशयोक्ति।

उत्तर—[क] रूपक।

प्रश्न 2. "आगे थे सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि" में कौन-सा अलंकार है ?

(क) यमक (ख) पुनरुक्तवदाभास

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास।

उत्तर—[ख] पुनरुक्तवदाभास।

प्रश्न 3. "मृग की नाभि बसै कस्तूरी, वन-वन फिरत उदासी" में अलंकार का नाम बताइये—

(क) अनुप्रास (ख) यमक

(ग) दृष्टान्त (घ) श्लेष।

उत्तर—[ग] दृष्टान्त।

प्रश्न 4. "करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निसान॥"
दोहे में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त है ? **(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)**

(क) दृष्टान्त (ख) प्रतीप

(ग) अनन्वय (घ) उदाहरण।

उत्तर—[घ] उदाहरण।

प्रश्न 5. राम नाम के पटतेंरे, दैवे को कछु नाँहि।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माँहि॥
उक्त साखी के अन्तिम चरण में कबीर की कौन-सी भावना प्रकट होती है ?
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(क) विकलता (ख) अतृप्ति

(ग) लालसा (घ) असन्तोष।

उत्तर—[ग] लालसा।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के मन में गुरु के प्रति कौन-सी अभिलाषा अधूरी रह गयी ?

उत्तर—कबीर के मन में गुरु के प्रति यह अभिलाषा अधूरी रह गयी कि **रामनाम रूपी उपदेश के बदले वह गुरु को कुछ भी नहीं दे सके।**

प्रश्न 2. कबीर ने गुरु को सर्वाधिक महत्त्वशाली क्यों स्वीकार किया है ?

उत्तर—कबीर ने गुरु को सर्वाधिक महत्त्वशाली इसलिए स्वीकार किया है कि **वह गुरु ही मनुष्य को दैवी गुणों से सुशोभित करता है तथा परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित कराता है।**

प्रश्न 3. सच्चे गुरु के प्राप्त न होने पर मनुष्य की किस प्रकार की दशा होगी ?

उत्तर—सच्चे गुरु के प्राप्त न होने पर मनुष्य की दशा **पत्थरों से पूर्ण नाव के समान धार में डूबने वाली होगी।**

प्रश्न 4. ''आतम ज्ञान बिना सब सूना, क्या मथुरा क्या कासी।
घर में धरी वस्तु नहिं सूझे, बाहर खोजन जासी॥''

उपर्युक्त पंक्तियों में निहित कबीर की प्रेरणा को स्पष्ट कीजिए।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—उपर्युक्त पंक्तियों में कबीर ने यह प्रेरणा दी है कि **आत्मिक ज्ञान का होना आवश्यक है।**

प्रश्न 5. कबीर के विचार से ब्रह्म का साक्षात्कार कहाँ होता है ?

उत्तर—कबीर के विचार से ब्रह्म का साक्षात्कार **आत्मा में ही होता है।**

प्रश्न 6. कबीर ने ईश्वर-स्मरण पर क्यों बल दिया है ?

उत्तर—कबीर ने ईश्वर-स्मरण पर इसलिए बल दिया है क्योंकि **वह परमात्मा के अतिरिक्त सम्पूर्ण विश्व को मिथ्या एवं नाशवान् मानते हैं।**

प्रश्न 7. कबीर ने इन्द्रियों को वश में रखने का उपदेश क्यों दिया है ?

उत्तर—कबीर ने इन्द्रियों को वश में रखने का उपदेश यह सोचकर दिया है कि **इन्द्रियों के वश में रहने से जीवन-रूपी खेत को उजड़ने से बचाया जा सकता है।**

प्रश्न 8. कबीर के विचार से सभी तत्त्वों का सार क्या है ?

उत्तर—कबीर के विचार से सभी तत्त्वों का सार ईश्वर नाम-स्मरण है जिससे उद्धार हो सकता है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''सीस नवावों काहि'' में कबीर ने साधक के किस रूप का वर्णन किया है और साधक ऐसा क्यों अनुभव करता है ? समझाओ।

उत्तर—कबीरदास की यह मान्यता थी कि व्यक्ति की आत्मा में ही परमात्मा का वास है इसीलिए उन्होंने बताया है कि आत्मा और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। वह द्वैत नहीं है। जब आत्मा ही परमात्मा है तब अन्य किसी को शीश झुकाने की क्या आवश्यकता है।

प्रश्न 2. ''सुमिरण कौ अंग'' से उदाहरण देते हुए स्पष्ट करिये कि कबीर ने इस अंग में किस बात पर अधिक जोर दिया है ?

उत्तर—''सुमिरण कौ अंग'' में कबीर ने राम-नाम-स्मरण पर अधिक जोर दिया है। उन्होंने अन्य समस्त मार्गों को जंजाल बताया है जिनमें उलझ कर व्यक्ति सन्मार्ग से विचलित ही जाता है। कबीर ने हरि-दर्शन को दुर्लभ बताया है और उसका नाम-स्मरण रात-दिन करने को कहा है। कबीर लिखते हैं—

कबीर सुमिरण सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंति सब सोधिया, दूजा देखौं काल॥

गुण गायें गुण नाम कटै, रटै न नाम विवोग।
अह निसि हरि ध्यावे नहीं, क्यूँ पावै, दुर्लभ जोग॥

प्रश्न 3. "सब तन कंचन" बनाने के लिए कबीर ने किस रसायन के प्रयोग की बात कही है ?

उत्तर—तन को कंचन बनाने के लिए कबीरदास ने कहा है कि हरि ही एक ऐसी रसायन है जिनके द्वारा यह शरीर जो निरर्थक है, महत्त्वहीन है, कंचन के समान मूल्यवान बन सकता है। अत: अपने इस मन में राम-नाम की रसायन का प्रयोग करके इस शरीर को शुद्ध स्वर्ण के समान मूल्यवान बनाने का प्रयत्न करना चाहिए और दुष्कर्मों से बचना चाहिए।

प्रश्न 4. साखी और पदों के आधार पर कबीर के रहस्यवाद का विवेचन करिये।

उत्तर—रहस्यवाद को विभिन्न श्रेणियों में विभक्त करते हुए विद्वानों का कहना है कि रहस्यवाद को सामान्यत: दो रूपों में विभक्त किया जा सकता है—

(i) साधनात्मक रहस्यवाद, (ii) भावनात्मक रहस्यवाद।

(i) साधनात्मक रहस्यवाद—साधना के क्षेत्र में कबीर का रहस्यवाद साधक के अनिवर्चनीय अनुभवों को वाणी देने का प्रयत्न करता हुआ प्रतीत होता है। उन्होंने लिखा है—

हेरत-हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
बूँद समाती समद में, सो कत हेरी जाइ॥

बाह्य शरीर में तो उनकी रचनाएँ और भी अधिक अटपटी तथा रहस्यमयी बन गयी हैं। कबीर लिखते हैं—

सायर नाहीं सीप बिन, स्वाति बूँद भी नाहिं।
कबिरा मोती नीपजै, सुन्नि सिषर गढ़ माँहि॥

(ii) भावनात्मक रहस्यवाद—भावनापरक रहस्यवाद में कबीर ने अज्ञात प्रियतम से अपनी विरहिणी आत्मा का सरस सम्बन्ध स्थापित किया है। उन्होंने उदासीन प्रियतम से दर्शन की याचना करते हुए लिखा है—

कै बिरहिन कूँ मीचु दै, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणा, मो पै सह्या न जाइ॥

रहस्य सम्बन्ध की अराधना का पता उनके इस करुण निर्णय से होता है—

यह तन जारों मसि करौं, लिखौं राम का नाउँ।
लेखनि करौं करंक की, लिखि-लिखि राम पठाउँ॥

आत्मा, परमात्मा के मिलन के लिए व्याकुल रहती है। जब आत्मा-परमात्मा का मिलन होता है तो अद्वैत रूप में मिलन को व्यक्त करते हुए कबीर ने लिखा है—

"मेरा मन सुमिरै रामकूं, मेरा मन रामहि आहि।
अब मन रामहि है रह्या सीस नवाबौ काहि॥

आत्मा-परमात्मा का मिलन मानो विरह एवं मिलन का भावनात्मक रहस्यवादी चित्रण किया गया है। दार्शनिक रहस्यवाद से पूर्ण उनके काव्य की निम्नांकित पंक्तियाँ विचारणीय हैं—

"चल सखि विलम्ब न कीजिए जब लग सांस शरीर।
मिलि रहिये जगननाथ सूँ यूँ कहे दास कबीर॥"

प्रश्न 5. "कबीर के काव्य की सधुक्कड़ी-खिचड़ी भाषा है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

उत्तर—कबीर ने स्वयं लिखा है— मसि कागद छुऔ नहीं, कलम गही नहिं हाथ।" यह कोई अतिश्योक्ति नहीं अपितु सच्चाई है कि कबीर किसी पाठशाला में शिक्षा ग्रहण करने नहीं गये। स्याही, कलम अथवा कागज से उनका कोई प्रयोजन नहीं रहा। उनकी दृष्टि से पाठशाला अथवा

विद्यालय की शिक्षा भी अनावश्यक थी। वह तो यह मानते थे कि प्रेम के महत्व को जिसने समझ लिया, जीवन में ढाल दिया, वह सबसे बड़ा पण्डित है, सबसे बड़ा विद्वान् है। पोथी पढ़कर पण्डित बनना उनकी दृष्टि में महत्त्वहीन था। वे लिखते हैं—

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय॥

कबीरदास ने भाषा की ओर कभी कोई ध्यान नहीं दिया। ज्ञान जैसे नीरस तथा गम्भीर विषय को उन्होंने बड़े ही सरस एवं सरल ढंग से जनता के सम्मुख रखा। भाषा विशेष का उन्होंने कोई अध्ययन नहीं किया था। वह तो जहाँ-तहाँ जाने पर जिस भाषा के शब्दों को अपना सके उससे ही अपने साहित्य का श्रृंगार किया। यही कारण है कि उनकी भाषा में विभिन्न बोलियों का अधिकार है।

बाबू श्यामसुन्दर दास कबीर की भाषा के सम्बन्ध में कहते हैं—

"वह कई भाषाओं की खिचड़ी सी प्रतीत होती है। पंजाबी, अरबी-फारसी आदि अनेक भाषाओं का पुट उनकी उक्तियों पर चढ़ा हुआ है।"

कबीर ने अपने मन की बात को स्थान-स्थान पर जाकर बिना किसी शब्दाडम्बर के कह दिया जिससे भाषा में सरलता तो है ही प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों की अधिकता भी है। इसीलिए कबीर के काव्य की भाषा को सधुक्कड़ी-खिचड़ी भाषा माना जाता है।

प्रश्न 6. "कबीर ज्ञानाश्रयी निर्गुण भक्ति काव्य धारा के श्रेष्ठ कवि हैं।" इस कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर—निर्गुण भक्ति काव्य धारा की दो शाखायें मुख्य हैं—

1. प्रेमाश्रयी निर्गुण भक्ति काव्य धारा।
2. ज्ञानाश्रयी निर्गुण भक्ति काव्य धारा।

प्रेमाश्रयी निर्गुण भक्ति के कवियों में जायसी, कुतुबन, मंझन आदि प्रमुख हैं जिन्होंने पद्मावत, मृगावती, मधु-मालती जैसी सुप्रसिद्ध रचनाएँ प्रदान कर काव्य साहित्य की श्रीवृद्धि की।

ज्ञानाश्रयी निर्गुण भक्ति काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास हैं। उन्होंने ईश्वर को निराकार रूप में स्वीकार किया है। जाति-पाँति का विरोध, पवित्र आचरण पर बल, गुरु महिमा का वर्णन कबीर की कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

साधना का महत्त्व प्रकट करते हुए उन्होंने कहा है कि विकारों से सदा बचाव होना चाहिए। वासनाओं से दूर रहकर कुपथगामी कभी नहीं बनना चाहिए। जीवन रूपी खेत में यदि इन विकार-मृगों को आने से नहीं रोका गया तो ये विकार मृग जीवन कृषि को उजाड़ देंगे। वे लिखते हैं—

जतन बिन मृगनि खेत उजारे।
टारे टरत नहीं निस बासुरि, बिडरत नहीं बिडारे॥

× × × × ×

"बुधि मेरी किरषी, गुरु मेरा बिझुका, आखिर दोउ रखवारे।
कहैं कबीर अब खान न देहूँ, वरियां भली संभारे॥"

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ 14-15 हाडी = हाँडी के मुख के समान। **पंट तैर** = बराबर। **हौस** = इच्छा। **मेल्हया** = फैंक दिया। **अघट्ट** = कभी न घटने वाला, कभी समाप्त न होने वाला। **हट्ट** = हाट, बाजार, संसार। **बिसाहुणा** = खरीदना। **बणजिया** = खरीदा। **सोधिया** = खोज लिया। **आभ** = पानी। **लाई** = आग। **उनमान** = अनुमान। **सुरति** = स्मृति। **थाकि** = थकना।

(1)

राम नाम के पट तेरे, दैवे को कुछ नाँहि।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माँहि॥ [पृष्ठ 14]

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी कबीर रचित **साखी के गुरुदेव कौ अंग** भाग से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत साखी में कबीर गुरु के सन्तोषी स्वभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं—

व्याख्या—राम-नाम इतना ठोस तथा बहुमूल्य है कि उसकी समता किसी भी वस्तु से नहीं हो सकती। यदि कोई व्यक्ति राम-नाम के बदले कुछ देना चाहे तो देना सम्भव नहीं है। गुरुजी ने हमें राम-नाम का महत्त्व समझाया है। नाम का ज्ञान प्रदान किया है। उसके बदले हमने गुरुजी को कुछ भी नहीं दिया है। उनका अत्यन्त सन्तोषी स्वभाव है। उन्होंने हमसे कुछ भी नहीं लिया है। अत: हमारी यह इच्छा है कि हम उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान के बदले कुछ अवश्य दें।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरस, सरल सधुक्कड़ी भाषा। (ii) **छन्द**—दोहा।
(iii) **रस**—शान्त। (iv) **अलंकार**—उदाहरण।
(v) **अन्य**—गुरु महिमा का वर्णन किया है।

(2)

कबीर हरि रस यौं पिया, बाकि रही न थाकि।
पाका कलस कुँभार का, बहुरि न चढ़ाई चाकि॥ [पृष्ठ 15]

सन्दर्भ—प्रस्तुत साखी कबीर रचित **कबीर ग्रन्थावली के रस कौ अंग** भाग से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कबीरदास भक्ति भाव का वर्णन करते हुए कहते हैं—

व्याख्या—मैंने हरि-रस पिया है। इस रसपान से अब सांसारिक श्रम का मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं रहा है। मेरी सभी सांसारिक बाधाओं का अन्त हो गया है। मेरी सांसारिक यातनाओं का अन्त उसी प्रकार हो गया है जिस प्रकार कुम्हार का घड़ा एक बार पक जाने पर दूसरी बार चाक पर नहीं चढ़ाया जाता। सांसारिक आपदाओं की भी यही दशा हुई है। ईश्वर की ऐसी कृपा हुई है कि कुम्हार के पके घड़े के समान मुझे पुनः सांसारिक कष्ट नहीं भोगने पड़ रहे।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल, सरस भाषा। (ii) **छन्द**—दोहा।
(iii) **रस**—शान्त रस। (iv) **अलंकार**—दृष्टान्त
(v) **अन्य**—कुम्हार के पके घड़े के समान पुनः सांसारिक कष्टों को भोगने से मुक्ति भगवान् की कृपा से ही सम्भव है।

(3)

जतन बिन मृगनि खेत उजारे।
टारे टरत नहीं निस बासुरि, बिडरत नहीं बिडारे॥
अपनें-अपनें रस के लोभी, करतब न्यारे-न्यारे।
अति अभिमान बदत नहीं काहू, बहुत लोग पचि हारे॥
बुधि मेरी किरषी, गुर मेरौ बिझुका, आखिर दोउ रखवारे।
कहै कबीर अब खान न देहूँ, वारियां भली संभारे॥ [पृष्ठ 16]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद कबीर रचित **कबीर ग्रन्थावली के पद** भाग से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में जीवन को खेत मानते हुए कबीर ने इसकी रक्षा के लिए प्रयासरत रहने र बल देते हुए कहा है—

व्याख्या—यह जीवन खेत सदृश है। विकारों का इस जीवन में ऐसा प्रभाव पड़ा है कि यह जीवन नष्ट हुआ जा रहा है। कुछ व्यक्ति इन विकारों से दूर रहने का प्रयत्न करते भी हैं किन्तु उन्हें सफलता नहीं प्राप्त हो पाती। इसका एक मात्र कारण यह है कि ये विकार इतने प्रभावशाली बन गए हैं कि उनका भगाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। ये विकार रूपी मृग जीवन रूपी खेत को उजाड़े जा रहे हैं। इन्हें भगाने के मनुष्य के सभी प्रयत्न विफल हो रहे हैं।

विकारों के परिणाम स्वरूप मनुष्य अभिमानी बन गया है। विभिन्न रसों में निमग्न उनकी पूर्ति के ताने-बाने बुनने में मस्त है। ज्ञानी व्यक्ति भी समझा-समझाकर हार मान चुके हैं।

व्यक्ति विषय वासनाओं में ऐसा फँसा हुआ है कि वह अपने आपको इस कुमार्ग पर चलने से नहीं रोक पा रहा है। ऐसी विकट स्थिति में इस जीवन की रक्षा के केवल दो ही उपाय हैं—बुद्धि और गुरु, ये दोनों ही मेरे जीवन रक्षक हैं। कष्ट पूर्ण परिस्थितियों में राम नाम का ही एक मात्र सहारा है।

कबीर का कहना है कि मैंने अपने जीवन-क्षेत्र की रक्षा का भार भली-भाँति संभाल लिया है। मैं अब इसमें विकार रूपी मृगों को प्रविष्ट नहीं होने दूँगा।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल सुबोध हिन्दी। (ii) **छन्द**—गेय।
(iii) **रस**—शान्त रस। (iv) **अलंकार**—रुपक अलंकार। (v) **अन्य**—साधना पर बल।

(4)

पानी बिच मीन पियासी।
मोहि सुनि सुनि आवत हाँसी॥
आतम ज्ञान बिना सब सूना, क्या मथुरा क्या कासी।
घर में धरी वस्तु नहिं सूझे, बाहर खोजन जासी॥
मृग की नाभि बसै कसतूरी, वन वन फिरत उदासी।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सहज मिलै अविनासी॥ **[पृष्ठ 17]**

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद **कबीर** रचित **कबीर ग्रन्थावली** के **पद** भाग से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में कबीर ने आत्म ज्ञान का महत्त्व समझाया है और उसे ईश्वर प्राप्ति की प्रथम सोपान बताते हुए कहा है—

व्याख्या—कबीर को यह सुनकर हँसी आती है कि पानी में रहते हुए भी मछली तृषा से व्याकुल है। यह किस प्रकार विश्वास योग्य कहा जा सकता है कि आत्मा रूपी मछली जल रूपी परमात्मा के मध्य रहती है फिर भी तृप्त नहीं है। मछली के जल में रहते हुए भी प्यासी रहने की बात से हँसी आती है।

कबीरदास का कहना है कि परमात्मा मनुष्य की आत्मा में निवास करता है। किन्तु माया के बन्धन में बँधकर यह आत्मा परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाती।

कवि के विचार से आत्मिक ज्ञान परमावश्यक है जिसके बिना व्यक्ति परमात्मा की खोज में इधर-उधर भटकता है। कोई मथुरा जाता है तो कोई काशी में अपने परमात्मा को खोजने का प्रयास करता है। आत्म ज्ञान के अभाव का ही यह परिणाम है कि अपने ही हृदय-घर में परमात्मा रूपी वस्तु देखना सम्भव नहीं हो रहा है और अज्ञानी पुरुष उस परमात्मा की खोज में इधर-उधर भटक रहा है।

कबीरदास ने अज्ञानी पुरुष को कस्तूरी मृग के समान बताते हुए कहा है कि कस्तूरी मृग की नाभि में ही होती है किन्तु वह मृग अज्ञानतावश उस कस्तूरी की खोज में वन-वन भटकता है। उसी प्रकार ईश्वर का निवास प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में है किन्तु इस वास्तविक सत्य को तब तक नहीं जाना जा सकता जब तक कि व्यक्ति को आत्मिक ज्ञान न हुआ हो।

अन्त में अपना निष्कर्ष देते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि हे साधुओ! यदि तुम परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हो तो आत्म-ज्ञान प्राप्त करो। आत्म ज्ञान होने पर भगवान् की प्राप्ति में कोई कठिनाई नहीं होगी। वह सहज में ही प्राप्त हो जायेगा।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल हिन्दी। (ii) **छन्द**—पद।
(iii) **रस**—शान्त रस। (iv) **अलंकार**—दृष्टान्त अलंकार।
(v) **विशेष**—ज्ञान-साधना पर बल।

3 मलिक मुहम्मद जायसी

● गागर में सागर

जायसी—जीवन परिचय—पूरा नाम मलिक मोहम्मद जायसी • मलिक सम्मान सूचक उपाधि • जन्म सन् 1492 • शेख मेंहदी और मुबारकशाह दीक्षा गुरु • चेचक से एक कान और एक नेत्र व्यर्थ • मृत्यु सन् 1542 •

साहित्यिक परिचय—प्रेम मार्गी भक्ति के अग्रदूत • हिन्दू आख्यानों पर रचनाएँ • अवधी में काव्य रचना • प्रेम और अध्यात्म समन्वय • रहस्य भावना।

रचनाएँ—पद्मावत, अखरावट, चित्ररेखा, महरी वाईसी, आखिरी कलाम, मसलानामा आदि।

काव्य सार—राजा रत्नसेन का पद्मावती के रूप सौन्दर्य की कथा सुनना • योगी के वेश में सिंहल द्वीप जाना • अन्य राजकुमार तथा सामन्तों का साथ देना • नागमती का भी साथ चलने का आग्रह • रत्नसेन का रानी को साथ न ले जाना • नागमती का विरह-रोदन • सिंहल द्वीप जाने पर तोता द्वारा पथ-प्रदर्शन।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. जायसी की रचनाओं की भाषा है—

(क) खड़ी बोली (ख) अवधी

(ग) राजस्थानी (घ) शुद्ध हिन्दी।

उत्तर—[ख] अवधी।

प्रश्न 2. 'पद्मावत' में प्रधानता है—

(क) शान्त रस की (ख) वीर रस की

(ग) श्रृंगार रस की (घ) वीभत्स रस की।

उत्तर—[ग] श्रृंगार रस की।

प्रश्न 3. 'पद्मावत' में छन्द अपनाया गया है—

(क) दोहा-चौपाई (ख) चौपाई-सोरठा

(ग) चौपाई-सवैया (घ) चौपाई-रोला।

उत्तर—[क] दोहा-चौपाई।

प्रश्न 4. ''भलेहि पदुमिनी रूप अनूपा। हमते कोइ न आगरि रूपा।'' नागमती का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है—

(क) हीन भावना (ख) वियोग व्यथा

(ग) सौतिया डाह (घ) रूप-दर्प।

उत्तर—[घ] रूप-दर्प।

प्रश्न 5. ''तजा राज, राजा भा जोगी'' में राजा की मानसिक स्थिति का क्या कारण है ?

(क) पद्मावती पर आसक्ति (ख) पद्मावती का निमन्त्रण

(ग) राज्य की अशान्ति (घ) जीवन से वैराग्य।

उत्तर—[क] पद्मावती पर आसक्ति।

प्रश्न 6. ''काकर घर काकर मढ़ माया। ताकर सब जाकर जिउ काया।।'' में अलंकार बताइये—

(क) यमक (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) श्लेष।

उत्तर—[क] यमक अलंकार।

प्रश्न 7. "निति चन्दन लागै जेहि देहा। सा तन देखु भरब अब गेहा॥
में राजा रत्नसेन को क्या उपदेश दिया गया है—
(क) सुख-भोगी की योग-साधना में असफलता
(ख) सब दिन होत न एक समान (ग) माया के प्रपंच में न पड़ना
(घ) कभी न व्याकुल होना।
उत्तर—[क] सुख-भोगी की योग-साधना में असफलता।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नांकित शब्दों के तत्सम रूप लिखिये—
पेम, भसम, भेस, सरग, दिस्टि।
उत्तर—तत्सम रूप—प्रेम, भस्म, भेष, स्वर्ग, दृष्टि।

प्रश्न 2. राजा रत्नसेन ने प्रेमपूर्ण शरीर के विषय में क्या कहा है ?
उत्तर—राजा रत्नसेन ने प्रेमपूर्ण शरीर के विषय में कहा है कि वह तो अशरीरी हो जाता है।

प्रश्न 3. राजा रत्नसेन के जोगी होने का क्या कारण था ?
उत्तर—राजा रत्नसेन के जोगी होने का कारण पद्मावती से मिलन की आतुरता थी।

प्रश्न 4. रत्नसेन के जोगी बनकर जाने की बात पर माता ने क्या कहा ?
उत्तर—रत्नसेन के जोगी बनकर जाने की बात पर माता ने घर सूना करके न जाने का आग्रह किया और कहा कि राजभोग से ही सब सिद्धि हो जायेगी।

प्रश्न 5. रत्नसेन की माँ ने उसे जोगी बनकर जाने से क्यों रोका ?
उत्तर—रत्नसेन की माँ ने उसे जोगी बनकर जाने से इसलिये रोका कि उसके जाने पर सर्वत्र अन्धकार छा जायेगा।

प्रश्न 6. राजा के सिंहल द्वीप जाने की बात पर नागमती रानी ने क्या कहा ?
उत्तर—राजा के सिंहल द्वीप जाने की बात पर नागमती रानी ने उनके साथ सिंहल द्वीप जाने को कहा।

प्रश्न 7. "जायसी ने इन पंक्तियों में जीव की किस विशेषता की बात कही है—
"काकर घर, काकर मढ़ माया। ताकर सब जाकर जिउ काया।"
उत्तर—जायसी ने इन पंक्तियों में जीव की माया के प्रति आसक्ति की बात कही है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. राजा रत्नसेन के जाने के पश्चात् प्रतिक्रिया रूप में रनिवास में घटित दृश्य का वर्णन करिये।

उत्तर—राजा रत्नसेन के जाने के पश्चात् रनिवास में हाहाकार मच गया। चारों ओर अन्धकार का साम्राज्य छा गया। रानियाँ विलाप करने लगीं। अपने बालों को नौंच-नौंचकर एक स्थान पर डालने लगीं। ऐसा लगता था कि यह बालों का नहीं खलिहान का ढेर है।

रानियों ने गले के आभूषणों को उतार दिया। मोती के हारों को चूर्ण कर दिया। विरह में शृंगार करना उनके लिए उचित नहीं मालूम पड़ रहा था। वे अपने प्राणों का परित्याग करने को उद्यत थीं। पति की अनुपस्थिति में जीवन धारण उन्हें अनुचित प्रतीत हो रहा था।

प्रश्न 2. राजा ने संसार की असारंता को जताने के लिए कौन-कौन से तर्क प्रस्तुत किये हैं ?

उत्तर—राजा ने संसार की असारता को जताने के लिए तर्क दिया है कि संसार मिथ्या है। कोई किसी का नहीं है। सब झूठे नाते हैं। माया जाल है यह संसार। इसमें उलझकर व्यक्ति अपना जीवन खो देता है।

संसार से मुक्ति के लिए ईश्वराधना ही एकमात्र उपाय है। जीव का मुख्य लक्ष्य मुक्ति प्राप्त करना होना चाहिए।

प्रश्न 3. नागमती ने राम और सीता का उदाहरण देकर किस प्रकार नारी की उज्ज्वलता को स्पष्ट किया है ? विस्तार से समझाइये।

उत्तर—नागमती ने राम और सीता का उदाहरण देकर नारी चरित्र की उज्ज्वलता को स्पष्ट किया है। नागमती ने कहा है कि भारतीय नारी के चरित्र की उज्ज्वलता, उसकी शोभा, उसका शृंगार तभी तक शोभनीय है जब तक कि उसके पति का साथ है।

सीता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए नागमती ने कहा कि पति के साथ रहकर उसे अपने पति-धर्म का पालन करना चाहिए। नारी के लिए पति ही परमेश्वर होता है। सीताजी ने पति धर्म का पालन करने के लिए ही उनके साथ वन जाने को श्रेष्ठ समझा। आग्रहपूर्वक सीताजी राम के साथ वन गयीं और स्त्री धर्म का पालन किया।

प्रश्न 4. जायसी रचित 'पद्मावत' के आधार पर नागमती के वियोग का वर्णन कीजिए।

उत्तर—एक विरहिणी और वह भी एक भारतीय पतिव्रता नारी अपने प्रियतम के वियोग में जिन भावनाओं से अभिभूत हो सकती है वे सब इस वर्णन में प्राप्त हैं। इन सभी विरहोद्‌गारों में अनुभूति की सच्चाई और भावना की गहराई है। रीतिकालीन कवियों की भाँति वह उक्ति-चमत्कार का साधन मात्र नहीं है।

आषाढ़ में घिरने वाली घटाएँ, बाण के समान बरसने वाली बूँदें और सौभाग्यवती स्त्रियों के विहार सुख को देखकर नागमती के हृदय में दुःखद प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। वह कह उठती है—

जिन घर कन्ता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्व।
कन्त पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्व॥

प्रत्येक मास में प्रकृति का परिवर्तित रूप, उसे प्रियतम की स्मृति में अधिकाधिक डुबोता हुआ और विकल बनाता हुआ आता है। वर्षा हो, शरद हो, शीत हो, बसन्त हो या ग्रीष्म उसका विरह कम होना ही नहीं जानता और कोई उपाय न देखकर वह भौंरे और कौए को अपनी व्यथा का सन्देश-वाहक बनाती है—

पिउसों कहेउ सन्देशड़ा, हे भौंरा ! हे काग।
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहि क धुवाँ हम्ह लाग।

प्रेम की पराकाष्ठा और विरह की विकलता के दर्शन उस समय होते हैं जबकि नागमती अपने शरीर को भस्म करके उसकी राख अपने पति के मार्ग पर बिछा देना चाहती है—

यह तन जारौं छार कै, कहौ कि पवन उड़ाव।
मकु तिहि मारग उड़ि परै, कन्त धरै जहँ पाँव॥

प्रश्न 5. जायसी कृत "पद्मावत" की भाषा-शैली की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—पद्मावत जायसी की प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रमाण है। जायसी एक स्वाभिमानी तथा उदार हृदय सन्त थे। प्रेम मार्गी भक्ति के प्रचारार्थ उन्होंने हिन्दू-आख्यानों को अपने ग्रन्थों का आधार बनाया। वह फारसी के विद्वान् थे किन्तु उन्होंने अपने काव्य के लिए अवधी भाषा को ग्रहण किया यद्यपि उनकी अभिव्यक्ति में फारसी का प्रभाव है। सूफी सन्त में विश्वास होने के कारण जायसी ने अपने महाकाव्य में मसनवी शैली को अपनाया। प्रसाद और माधुर्य गुण के कारण उन्हें तुलसी के समान माना जाता है। तुलसीदास के ही समान जायसी ने भी दोहा और चौपाई को छन्द के रूप में प्रयोग किया है।

प्रश्न 6. जायसी के काव्य की भावगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—पद्मावत जायसी की काव्य प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रतिनिधि है। चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेम कथा का भाव तथा कला पक्ष की दृष्टि से सुन्दर वर्णन किया गया है। भाव पक्ष की प्रबलता अत्यन्त प्रभावशाली है।

भाव पक्ष की विशेषताएँ

(1) प्रेम और अध्यात्म का समन्वय—जायसी की रचनाएँ प्रेमाख्यानों के अन्तर्गत आती हैं। इन प्रेमाख्यानक काव्यों में आत्मा और परमात्मा के प्रेम का रूपक बाँधा गया है। पद्मावत में यह प्रवृत्ति स्पष्ट देखने को मिलती है। पद्मावत के अन्त में जायसी लिखते हैं—

तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि पदमिनि चीन्हा।
गुरु सुआ जेइ पन्थ दिखावा। बिन गुरु जगत को निरगुन पावा॥

(2) सौन्दर्य वर्णन की पारस्परिक पद्धति—नारी सौन्दर्य के चित्रण में जायसी ने परम्परागत नख-शिख वर्णन की शैली का प्रयोग किया है। समग्र रूप वर्णन की अपेक्षा अंग-प्रत्यंग के वर्णन का अवकाश वहाँ अधिक है। केश-वर्णन का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

भँवर केस वह मालति रानी, बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी।
बैनी छोरि झारु जौं बारा, सरग पतार होइ अँधियारा॥

(3) उद्दीपन प्रधान प्रकृति चित्रण—प्रकृति वर्णन की जायसी के काव्य में कमी नहीं है किन्तु वह श्रृंगार का सहायक होकर आया है। स्वतन्त्र प्रकृति-चित्रण न होकर वह रस के उद्दीपन हेतु ही प्रयुक्त हुआ है।

कार्तिक सरद चन्द उजियारी। जय सीतल हौं बिरहै जारी।

× × ×

भा बैसाख तपनि अति लागी। चोआ चीर चँदन भा आगी॥

आलंकारिक एवं नामपरिगणनात्मक प्रकार का प्रकृति वर्णन भी पद्मावत में विद्यमान है।

(4) विरह-वर्णन—जायसी का रहस्यवाद हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। आंचलिक संस्पर्श एवं मानव मनोविज्ञान के सहयोग से जायसी ने भारतीय बिरहिणी नारी का भव्य चित्र उभारा है।

बरसै मेघ चुवहिं नैनाहा। छपर-छपर होइ रहि बिनु नाहा।
कोरौं कहाँ ठाट नव साजा। तुम बिनु कन्त न छाजनि छाजा॥

(5) रहस्य भावना—जायसी सूफी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं जिसमें साधक प्रेम की साधना से ही साध्य को पा सकता है। यह पारलौकिक प्रेम जायसी के ग्रन्थों में लौकिक प्रेम बन कर अवतरित हुआ है। जीवात्मा के ईश्वर से मिलन का यह रूपक, रहस्य भावना के साथ कवि ने प्रस्तुत किया है। आचार्य शुक्ल के मत में तो शुद्ध रहस्यवाद केवल जायसी में ही प्राप्त है।

(6) विविध रसों की योजना—जायसी की रचनाओं में विविध रसों का समावेश बड़ी ही सफलता के साथ किया गया है। श्रृंगार के अतिरिक्त वीर, रौद्र, वीभत्स रसों का भी मार्मिक चित्रण जायसी की कविता में उपलब्ध है।

प्रश्न 7. जायसी के कला पक्ष की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—जायसी सूफी धर्मावलम्बी थे। उनका काव्य लौकिक आधार को समेटते हुए भी अलौकिक है। जीवन और जगत की एक विस्तृत झाँकी है। प्रेम तत्व की व्यापकता है। भावनाओं का कलात्मक प्रकाशन है।

कला पक्ष की विशेषताएँ

(1) भाषा—जायसी की भाषा ठेठ अवधी है। उन्होंने उसके व्याकरण सम्मत स्वरूप पर विचार न करके उसमें माधुर्य और मृदुलता के संवर्धन पर ही अधिक ध्यान दिया है। यही कारण है कि उसमें व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ हैं, परन्तु श्रुति-माधुर्य और हृदय को छूने की अद्भुत शक्ति है।

(2) शैली—जायसी ने प्रबन्ध शैली को ही अपने उद्देश्य के अधिक अनुरूप समझा। भारतीय मकथा को लेकर भी उन्होंने मसनवी शैली का प्रयोग किया और भारतीय महाकाव्य शैली को भी पनाया। प्रतीकात्मक शैली का भी पद्मावत श्रेष्ठ उदाहरण है। चित्रात्मक शैली के भी उदाहरण ायसी की रचनाओं में प्राप्त होते हैं।

(3) छन्द—जायसी ने दोहा, चौपाई को ही अपने काव्य का छन्द चुना है। महाकवि तुलसी ो भी रामकथा वर्णन के लिए यही छन्द-पद्धति उचित लगी।

(4) अलंकार—जायसी के काव्य में अलंकारों का प्रयोग मुक्त हस्त से हुआ है। उद्दीपन धान प्रकृति वर्णन, रूप-वर्णन तथा रहस्यात्मक स्थलों पर उन्होंने काव्य का पूर्ण सहयोग लिया । कुछ प्रयोग दर्शनीय हैं—

हिय हिंडोल अस डोलै मोरा। (उपमा)
खड़ग बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरसहिं घन घोरा। (रूपक)
चाँद कलंकी वह निकलंकू। (व्यतिरेक)

(5) साहित्य में स्थान—महाकवि जायसी हिन्दी साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। आपका द्मावत भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से अमर साहित्यक निधि है। भारतीय एवं विदेशी वर्णन-लियों के सुन्दर समन्वय के रूप में मानव-समाज को सौमनस्य का सन्देश-वाहक यह ग्रन्थ दैव से साहित्य-प्रेमियों का हृदय-हार रहा है।

प्रश्न 8. ''जायसी ने 'पद्मावत' के कथानक में लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक म को अभिव्यंजित किया है।'' इस कथन को लगभग 150 शब्दों में सोदाहरण स्पष्ट ीजिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—जायसी की काव्य प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करने वाला उनका 'पद्मावत' महाकाव्य । पद्मावत में जायसी ने राजा रत्नसेन और राजकुमारी पद्मावती की प्रेम कथा को अपने ाकाव्य का विषय बनाकर आत्मा और परमात्मा के प्रेम की अभिव्यक्ति की है।

मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम के अनन्य साधक थे। वह सूफी सन्त होने के कारण सूफी द्धान्तों में विश्वास करते थे। यही कारण है कि पद्मावत में लौकिक प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है। प्रेम तथा सौन्दर्य की सुवास को अलौकिकता से जोड़ा है। वन और जगत की एक विस्तृत झाँकी प्रस्तुत की है।

जायसी का मुख्य भाव स्पष्ट करने के लिए कहा जा सकता है—

तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि पद्मिनि चीन्हा।
गुरु सुआ जेइ पन्थ दिखावा। बिन गुरु जगत को निरगुन पावा॥

ब्रह्म से मिलन के लिए आत्मा छटपटाती है। एक क्षण भी चैन प्राप्त नहीं होता। ब्रह्म के ोग में पद्मावती की विरह व्यथा का वर्णन करते हुए जायसी लिखते हैं—

बरसै मेघ चवहिं नैनाहा। छपर छपर होइ रहि बिनु नाहा॥
कोरौं कहाँ ठाट नव साजा। तुम बिन कन्त न छाजनि छाजा॥

सुप्रसिद्ध समालोचक और निबन्धकार रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी की प्रशंसा में स्पष्ट लिखा है जीवात्मा के ईश्वर से मिलन का रहस्यात्मक शैली में जो वर्णन जायसी ने किया है वह अन्य से व नहीं है।

जायसी ने राजा रत्नसेन के मुख से इस बात पर विशेष बल दिया है कि प्रेम का पन्थ ही ऐसा जसमें पग बढ़ाते समय शुभ या अशुभ दिन के विषय में विचार नहीं किया जाता। किसी शुभ की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। प्रेम का वास हो जाने पर किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं । यहाँ तक कि प्रेम पथिक को अपने शरीर का भी कोई ध्यान नहीं होता। जायसी ने रत्नसेन तर की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा है—

पंडित मुखान, न जाने चालू। जीड लेत दिन पूंछ न कालू॥
सती कि बौरी पूछे पांडे। औ घर पैहि समेटैं भाँडे॥

भारतीय प्रेम कथा को जायसी ने मसनवी शैली द्वारा प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त करके अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है इसमें कोई सन्देह नहीं।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— पृष्ठ 19 – 20 **विसंभर** = बेसुध, बेहोश। **धंधारी** = गोरखधन्धा। **उद्पान** = कमण्डल। **पाँवरि** = खड़ाऊ। **गनक** = गणक, ज्योतिषी। **कथा** = शरीर। **आन** = घोषणा। **फेरी** = चक्कर। **कटमाई** = सेना के साथ चलने की तैयारी। **जावत** = जितना। **सांबर** = मार्ग के लिए खाद्य सामग्री। **सांठी** = पूँजी। **माया** = माता। **बेरसहु** = विलास करों। **कंथा** = गुदड़ी। **कुरकुटा** = मोटा कुटा अन्न। **दर** = दल। **निआन** = निदान रूप में। **धारा** = मिट्टी, धूल। **रोवां** = रोम। **सरवन** = श्रवण. कान। **कजरी वन** = कदली वन। **अदेश** = आदेश।

पृष्ठ 21 – 22 **पीउ** = प्रियतम। **माया** = शरीर। **परवरि हौं** = धोऊँगी। **मते** = सलाह लेकर। **तरवा** = पैर का तलवा। **तात भात** = गर्म चावल। **बहुरै** = लौटना। **रता** = मग्न। **वलय** = चूड़ी। **अन्दोरा** = शोर। **अभरन** = आभूषण। **निनार** = न्यारे। **ताका** = देखा। **गोहराई** = पुकारा। **मोर** = फूलों से बना विवाह का मुकुट। **गादर** = चमगादड़। **कुरारी** = टिटिहिरी। **कूचा** = क्रौंच पक्षी। **भुगुति** = भोजन। **मेलान** = पडाव। **ओ नाहिं** = झुके हुए। **पंवरी** = खड़ाऊँ। **वींझ** = चना। **झांखड़** = झाड़ी। **ततखन** = उसी समय, तुरन्त। **सहलंगी** = साथी। **खटंगा** = कटंग प्रदेश। **सौर** = चादर। **सेती** = से। **मलीजा** = मलना।

(1)

पंडित भुलान, न जाने चालू। जीउ लेत दिन पूंछ न कालू॥
सती कि बौरी पूंछे पांडे। औ घर पैठि समेटै भांडे॥
मरि जो चले गांग गति लेई। तेहि दिन घरी कहां को देई॥
मैं घर बार कहां कर पावा। घर काया पुनि अन्त परावा॥
हौं रे पखेरू पखी, जेहि बन मोर निबाहु।
खेलि चला तेहि बन कहँ, तुम्ह आपन घर जाहु॥ [पृष्ठ 20]

सन्दर्भ—प्रस्तुत अवतरण मलिक मुहम्मद जायसी रचित पद्मावत के जोगी खण्ड से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर ज्योतिषियों को उत्तर देते हुए राजा रत्नसेन कहता है—

व्याख्या—प्रेम पन्थ का पथिक प्रस्थान के समय शुभ दिन और शुभ मुहूर्त पर विचार नहीं करता। मुझे न तो शुभ घड़ी का ध्यान है और न शुभ मुहूर्त की आवश्यकता। मुझे तो अपना ही ध्यान नहीं है। विचार के लिए होश नहीं है। मेरे शरीर में प्रेम का निवास हो चुका है। अतः मुझे अपने शरीर की कोई चिन्ता नहीं है।

राजा ज्योतिषियों को समझाते हुए कहता है कि जब काल आता है और प्राणों का हरण करता है तो वह कोई मुहूर्त देखकर नहीं आता है। वह जब आता है तो आता ही है। राजा उन ज्योतिषियों से प्रश्न करता है—क्या कोई सती अथवा पागल स्त्री मुहूर्त के लिए उनसे पूछती है ? पति के साथ सती होने वाली स्त्री क्या चिता पर बैठने के लिए पंडितों से सलाह लेती है ? वह स्वेच्छा से पति के साथ चिता में जल जाती है।

पागल स्त्री का उदाहरण देते हुए राजा उन ज्योतिषियों से कहता है कि उस स्त्री के मन में जब आता है तभी अपना घर त्यागकर चल देती हैं। उसे किसी गणक से पूछने की आवश्यकता नहीं होती।

सती तथा पागल स्त्री के समान ही सच्चा प्रेमी अपने प्रिय के पथ का पथिक बन जाता है। वह मुहूर्त की प्रतीक्षा नहीं करता।

जो व्यक्ति अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में गंगा के तट पर पहुँच जाता है उसे अन्य किसी शुभ घड़ी-पल की आवश्यकता नहीं होती। राजा कहता है कि मुझे यह संसार नश्वर दिखायी देने लगा है। मुझे अपना घर भी अपना दिखायी नहीं देता। यहाँ कुछ क्षणों का डेरा है। अन्त में यह दूसरों का ही हो जाना है। अतः मुझे किसी ज्योतिषी से प्रस्थान करने की शुभ घड़ी की कोई आवश्यकता नहीं है।

राजा ने अपने आपको पक्षी के समान बताते हुए कहा कि जिस प्रकार पक्षी उड़कर उसी वन में पहुँचता है, जहाँ उसका निर्वाह सम्भव है, उसी प्रकार मैं भी उसी वन की ओर प्रस्थान करूँगा जहाँ मुझे मेरे उद्देश्य में सफलता प्राप्त होगी। राजा रत्नसेन ने वहाँ आये हुए सभी सभ्य सज्जनों से अपने घर लौट जाने का निवेदन किया।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—अवधी भाषा। (ii) **छन्द**—चौपाई-दोहा।
(iii) **रस**—वियोग श्रृंगार तथा शान्त रस।
(iv) **अन्य**—प्रेम के पथिक को किसी मुहूर्त की अपेक्षा नहीं होती।

(2)

यहु संसार सपन कर लेखा। बिछुरि गए जानहु नहिं देखा॥
राजा भरथरि सुनि रे अयानी। जेहि के घर सोरह सै रानी॥
सो निस दिन तरबा सहराई। भा जोगी, कोइ साथ न लाइ॥
जोगिन्ह काह भोग सों काजू। चहै न मेहरी, चहै न राजू॥
जूड कुरकुटा पै भखु चाहा। जोगिहि तात भात दहुँ काहा॥
कहा न मानै राजा, तजी सवाई भीर।
चला छाडि सब रोवत, फिरि कै देइ न धीर॥ [पृष्ठ 21]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **जायसी** रचित **पद्मावत के जोगी खण्ड** से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर जायसी कहते हैं कि रानी नागमती के विचार सुनकर राजा उससे कहता है—

व्याख्या—यह संसार एक सपना है। यहाँ का हिसाब भी विचित्र है। जब व्यक्ति का बिछोह होता है तो पारस्परिक सम्बन्धों का भी विच्छेद हो जाता है। दोनों परस्पर ऐसे बन जाते हैं जैसे कि कभी एक-दूसरे को देखा तक नहीं है।

राजा रत्नसेन भर्तृहरि का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि वह बहुत ज्ञानी थे। उनके राजमहल में सोलह सौ रानियाँ थीं। बहुत ही विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे राजा भर्तृहरि। लेकिन जब उन्होंने राजमहल का परित्याग किया और वैराग्य धारण किया तो किसी भी रानी को अपने साथ नहीं लिया। ठीक भी है। जब योगी बन गये तो भोग से क्या नाता ? एक योगी को न धन की इच्छा होती है न धरती की। न उसे विलासपूर्ण जीवन की अपेक्षा होती है न राज्य भोग की। उसकी सभी इच्छाओं और आकांक्षाओं की समाप्ति हो जाती है। मात्र पेट के लिए रूखा-सूखा अन्न मिल जाना चाहिए। ठण्डा हो या गर्म उस पर कोई अन्तर नहीं आता।

राजा भर्तृहरि का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए राजा रत्नसेन ने योगी बनने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उसने किसी की बात को महत्त्व नहीं दिया। सम्पूर्ण रानियाँ, सामन्तों तथा प्रजाजन को रोता छोड़कर राजा वन को चला गया। उसने किसी को धैर्य प्रदान करने की भी आवश्यकता का अनुभव नहीं किया।

काव्य सौन्दर्य— (i) **भाषा**—सरल अवधी भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस।
(iii) **छन्द**—चौपाई तथा दोहा छन्द। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास अलंकार।
(v) **विशेष**—वैराग्य का उपदेश।

(3)

ततखन बोला सुआ सरेखा। अगुआ सोइ पंथ जेइं देखा॥
सो का उडैन जेहि तन पाँखू। लै सो परासहिं बूडै साखू॥
जस अंधा अंधे कर संगी। पंथ न पाव होइ सहलंगी॥
सुनु मति, काज चहसि जौं साजा। बीजानगर बिजैगिरि राजा॥
पँछु न जहां कुंड और गोला। तजु बाएं अंधियार, खटोला॥
दक्खिन दाहिने रहै तिलंगा। उत्तर मांझे गढा खटंगा॥
मांझ रतनपुर सौंह दुअरा। झारखंड दै बाउं पहारा॥
आगें पाउं आडैसा, बाएं देहु सो बाट।
दहिनावर्त लाइकै, उतरू समुन्द्र के घाट॥ [पृष्ठ 22]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यावतरण मलिक मुहम्मद जायसी रचित पद्मावत के जोगी खण्ड से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर ज़ायसी ने हीरामन तोता की बातों का वर्णन किया है।

व्याख्या—राजा की बातों में स्पष्टता का अभाव था। उसकी बातों में दुविधा थी। अतः हीरामन तोता राजा रत्नसेन को समझाने लगा कि मार्ग में आगे वही चलने योग्य है जिसका मार्ग से परिचय हो। जिसने मार्ग देखा ही न हो वह अगुआ कैसे बन सकता है ? ऐसा अगुआ तो अपने अनुयायियों को भी मृत्यु के मार्ग पर ले जा सकता है।

हीरामन राजा को समझा रहा था कि शाखा से पृथक् होने पर पत्तों की जो गति होती है वही उन अनुयायियों की भी होती है जो अज्ञानी, अपरिचित अगुआ का अनुसरण करते हैं।

अन्धे का उदाहरण देते हुए हीरामन तोता कहता है कि उसका साथी भी यदि अन्धा हो तो कभी उचित मार्ग नहीं मिल सकता। अतः मैं तुम्हें जो मार्ग सुझाता हूँ उसका अनुगमन करो। हीरामन कहता है कि वीजागढ़ के राज्यों को पार करने के पश्चात् तुम्हारा गौंड और कोल जातियों के नगर विजयानगर में पहुँचना ही श्रेयष्कर है। वहाँ अंजरी तथा खटोला प्रदेश से तुम्हें गुजरना पड़ेगा। आगे जाने पर दक्षिण का तैलंगाना प्रदेश आयेगा तथा उत्तर दिशा में गढ़ कांटगा होगा।

हीरामनं तोता राजा को बताता है कि बाएँ मार्ग पर बढ़ने से तुम्हारा प्रवेश उड़ीसा प्रान्त में हो जायेगा। जब वहाँ तुम दक्षिण दिशा की ओर उतरोगे तो वहाँ समुद्रतट होगा। यही सिंहलद्वीप स्थित है।

काव्य सौन्दर्य—(i) भाषा—सरल, सुबोध अवधी भाषा। (ii) छन्द—चौपाई तथा दोहा।
(iii) रस—शान्त रस। (iv) अलंकार—अनुप्रास।
(v) अन्य—सिंहल द्वीप पहुँचने का मार्ग हीरामन ने बताया है।

4 तुलसीदास

● **गागर में सागर**

तुलसीदास—जीवन परिचय—जन्म सन् 1532 ● स्थान—राजापुर ग्राम ● एटा जनपद में सोरों भी मानने लगे हैं ● पिता—आत्माराम दुबे ● माता—हुलसी ● नरहरिदास पालन-पोषण ● रत्नावली से विवाह ● पत्नी की फटकार पर विरक्ति ● अयोध्या में 'रामचरित मानस' की रचना प्रारम्भ ● सन् 1623 में शरीर त्याग।

मृत्यु के सम्बन्ध में—"संवत् सोलह सौ अस्सी, असी गंग के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर॥"

रचनाएँ—(1) रामचरित मानस (2) गीतावली (3) कवितावली (4) कृपण गीतावली (5) विनय पत्रिका (6) दोहावली (7) बरवै रामायण (8) जानकी मंगल (9) वैराग्य संदीपनी (10) रामाज्ञा प्रश्न (11) रामलला नहछू (12) पार्वती मंगल।

काव्य-सार-विनय-पत्रिका—ईश्वर की कृपा का वर्णन ● संसार की असारता ● अपने दुःखों का आर्तभाव से निवेदन ● नाम रूपी चिन्तामणी प्राप्ति से दुःखों का अन्त ● मन-वचन-कर्म से परोपकार करने तथा हरि भजन से ही कल्याण।

कवितावली—राम वन गमन-गंगा पार जाने के लिए केवट से बातें ● आराध्य से विनय।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों" पद में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?

(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) अनुप्रास (घ) स्वभावोक्ति।

उत्तर—[ख] रूपक अलंकार।

प्रश्न 2. "विनय पत्रिका" में किससे प्रार्थना की गयी है—

(क) श्री राम से (ख) श्री कृष्ण से
(ग) श्री हनुमान से (घ) श्री गणेश से।

उत्तर—[क] श्री राम से।

प्रश्न 3. तुलसीदास ने माया को माना है—

(क) मुक्तिदायिनी (ख) ठगिनी
(ग) आनन्ददायिनी (घ) घाण घतिनी।

उत्तर—[ख] ठगिनी।

प्रश्न 4. माया से मुक्ति के लिए तुलसीदास ने उपाय बताया है—

(क) तपस्या (ख) परोपकार
(ग) ईश कृपा (घ) दान।

उत्तर—[ग] ईश-कृपा।

प्रश्न 5. विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की भक्ति है—

(क) सेवा भावना की (ख) सखा भावना की
(ग) प्रेम भावना की (घ) दास-भावना की।

उत्तर—[घ] दास भावना की।

प्रश्न 6. "विषय-वारि मन-मीन भिन्न नहि होत कबहुँ पल एक।"
में कौन-सा अलंकार है—

(क) रूपक (ख) उपमा
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास।

उत्तर—[क] रूपक।

प्रश्न 7. "तेरे लिए जनम अनेक मैं फिरत न पायो पार।
महामोह-मृग-जल-सीता मँह बोरयों हौं बारहि बार॥" में कौन-सा अलंकार है—

(क) यमक (ख) रूपक
(ग) उदाहरण (घ) अन्योक्ति।

उत्तर—[ख] रूपक अलंकार।

प्रश्न 8. "पुरते निकसी रघुवीर वधू, धरि-धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुरा घर वै॥" में सीता जी की दशा का क्या कारण है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

(क) निर्बलता (ख) व्याधि
(ग) अधीरता (घ) कोमलता (च) आशका।

उत्तर—[घ] कोमलता।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. तुलसीदास ने मनुष्य देह प्राप्त करने पर जीवात्मा को किस सुकर्म को कर लेने का सन्देश दिया है ?

उत्तर—तुलसीदास ने मनुष्य देह प्राप्त करने पर जीवात्मा को माया के बन्धन से दूर रहकर ईश्वराराधन का सन्देश दिया है।

प्रश्न 2. तुलसीदास ने संसार में जीवन के किस फल का वर्णन किया है ?

उत्तर—तुलसीदास ने संसार में जीवन के लिए राम की भक्ति का वर्णन किया है।

प्रश्न 3. संसार के असली रूप का वर्णन करिये। उसकी वास्तविकता पर अपने विचार प्रकट करिये।

उत्तर—संसार का असली रूप नश्वरता है। अत: कूकर के समान इधर-उधर घूमने की अपेक्षा राम का नाम लेना ही श्रेयष्कर है।

प्रश्न 4. भगवान की ऐसी कौन-सी विशेषता है जिसके कारण तुलसीदास भगवान से विनय नहीं कर पा रहे हैं ?

उत्तर—तुलसीदास भगवान से इसलिए विनय नहीं कर पा रहे हैं कि वह राम को सर्वथा भूल चुके हैं और माया-मोह के जाल में पड़े हुए हैं।

प्रश्न 5. तुलसीदास के अनुसार जीव को वास्तविक सुख की उपलब्धि किस स्थिति में हो सकती है ?

उत्तर—तुलसीदास के अनुसार जीव को वास्तविक सुख की उपलब्धि हरिकृपा से ही हो सकती है।

प्रश्न 6. तुलसीदास सांसारिक कपट-जाल में क्यों नहीं बँध सके ?

उत्तर—तुलसीदास सांसारिक कपट-जाल में राम के बल पर नहीं बँध सके।

प्रश्न 7. तुलसीदास के विचार से मन की मूढ़ता क्या है ?

उत्तर—तुलसीदास के विचार से राम भक्ति रूपी सरिता छोड़कर ओस कणों से अपनी प्यास बुझाने की बात मन की मूढ़ता है।

प्रश्न 8. श्रीराम की आँखों से अश्रुधार क्यों बहने लगी ?

उत्तर—श्रीराम की आँखों से अश्रुधार सीताजी की दशा देखकर बहने लगी कि वन मार्ग पर छ ही दूर जाने पर सीताजी आतुर होकर पूछने लगीं कि अभी कितनी दूर आगे चलना है।

प्रश्न 9. तुलसीदास को काल से डर क्यों नहीं था ?

उत्तर—तुलसीदास को काल से डर इसलिए नहीं था क्योंकि वह श्रीराम के अनन्य भक्त थे ार यह जानते थे कि जब तक राम की कृपा-दृष्टि रहेगी, काल कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा।

प्रश्न 10. केवट ने श्रीराम को बिना पैर धोए नाव में बिठाने से क्यों मना कर दिया ?

उत्तर—केवट ने राम को बिना पैर धोए नाव में बिठाने से मना कर दिया। क्योंकि वह राम के रण धोकर अपना उद्धार चाहता था।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. तुलसीदास की दृष्टि में माया से मुक्ति प्राप्त करने के लिए एकमात्र साधन है हरिकृपा'' ज्ञान और भक्ति साधन नहीं। ''माधाव अति तुम्हारि यह माया'' पद के आधार र विवेचन करिये।

उत्तर—तुलसीदास की भक्ति में दास भाव था। वह श्रीराम के ऐसे दास थे जो किसी भी कार्य ी सफलता में 'हरिकृपा' को ही महत्व देते थे। वह मानते थे कि ज्ञान और भक्ति अपने स्थान र हैं किन्तु सर्वोच्च स्थान भगवद् कृपा को ही है। जिसके बिना न माया से मुक्ति मिल सकती है, सांसारिक कष्टों का निवारण हो सकता है।

हरिकृपा अमृत के समान शीतल तथा मधुर है। इस रस को जो भी पीता है वह आनन्दित हो ठता है। सांसारिक ताप से छुटकारा मिलता है। विषय-वासनाओं में लिप्त व्यक्ति दिन-रात अपनी यास बुझाने के लिए इधर-उधर दौड़ता है।

तुलसीदास के विचार से ज्ञान और भक्ति भी प्रमुख हैं किन्तु हरिकृपा के बिना भ्रम का निवारण नहीं हो सकता है। विनय पत्रिका में उन्होंने हरि-कृपा को महत्त्व देते हुए कहा है—

''ग्यान-भगति साधन अनेक, सब सत्य झूँठ कछु नाहीं।
तुलसीदास हरि-कृपा मिटै भ्रम, यह भरोस मन माहीं॥''

प्रश्न 2. विनय पत्रिका में तुलसीदास कवि से अधिक भक्त अधिक प्रतीत होते हैं। सोदाहरण अपने विचार प्रस्तुत करिये।

उत्तर—तुलसीकृत विनय-पत्रिका का अध्ययन करने पर यह भली-भाँति स्पष्ट होता है कि तुलसीदास की पत्रिका में उनका कवि रूप इतना अधिक नहीं झलकता जितना कि उनका भक्त रूप व्यक्त होता है।

विनय पत्रिका में तुलसीदास ने श्रीराम की सेवा में अपनी प्रार्थना रखी है। स्तुतिं तो उन्होंने लगभग सभी देवी-देवताओं की भी है तथापि उन्होंने श्रीराम के अतिरिक्त किसी अन्य की शरण में जाना श्रेयष्कर नहीं समझा है। तुलसीदास ने राम भक्ति को पवित्र गंगा के समान मानते हुए लिखा है—

'राम भगति भागीरथी, विषय-भोग विषवारि।'

तुलसीदास की भक्ति का उदाहरण दृष्टव्य है जिसमें वह अपने उद्धार के लिए जानकी जी से स्तुति करते हैं कि माँ जानकी जी तुलसी के उद्धार के लिए श्रीराम जी से कहें। विनय पत्रिका में तुलसीदास लिखते हैं—

''कबहुँक अम्ब अवसर पाइ।
मेरियो सुधि घाइवो, कुछु करुन कथा चलाइ॥
× × × ×
जानकी जग जननि जनकी किये वचन सहाइ।
तरै तुलसी दास भय तब नाथ-गुन-गाइ॥

तुलसीकृत विनय पत्रिका में उनका कवि रूप कहीं भी इतना व्यक्त नहीं हुआ है जितना उनका भक्त रूप। उनकी दृष्टि में तो शरीर भी भगवान की कृपा का फल है। वह लिखते हैं—

हरि ! तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों।
साधन-धाम बिबुध दुरलभ तनु मोहि कृपा करि दीन्हों॥

प्रश्न 3. तुलसीदास का संक्षेप में साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर—महाकवि तुलसी साहित्य और समाज दोनों को ही अपनी प्रतिभा से सुशोभित करने वाले ज्योति पुंज थे। उनकी कृति रामचरित मानस आज भी जन-मानस को तरंगित कर रही है।

साहित्यिक परिचय—अनाथ तुलसी को गुरु श्री नरहरिदास ने रामभक्ति का अवलम्ब दिया। सांसारिक मोह के बन्धन में बँधे ही थे कि पत्नी के उद्‌बोधन ने पुन: वैराग्य के नेत्र खोल दिये। घर-बार त्याग कर तुलसी फिर श्रीराम की शरणागति में आ गये। अब वे काव्य के माध्यम से अपने इष्ट का गुणगान करने लगे।

तुलसी में काव्य-प्रतिभा का क्रमश: विकास हुआ। उन्होंने अपने गुरु से विधिवत् शिक्षा प्राप्त की थी। उनका ब्रज, अवधी तथा संस्कृत भाषाओं पर समान अधिकार था। तुलसी राम के अनन्य भक्त थे और वे ही उनके काव्य के प्रमुख नायक रहे हैं। किन्तु उन्होंने श्रीकृष्ण से सम्बन्धित पद भी रचे हैं जो 'कृष्णगीतावली' में संगृहीत हैं। अन्य देवी-देवताओं पर भी उन्हें श्रद्धा थी। 'विनय-पत्रिका' में उन्होंने अनेक देवी देवताओं की स्तुति की है।

रचनाएँ—महाकवि तुलसी महान् कृतिकार हैं। राम उनके आराध्य हैं। उनका कीर्तिगान करना ही तुलसी का काव्य-लक्ष्य है। वे दरबारी कवि नहीं हैं। उनका कथन है—

'स्वान्त: सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा, भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति।' परन्तु उनका 'स्वान्त: सुखाय' (अपने अन्त:करण के सुख के लिए) 'परान्त: सुखाय' भी है। वह सारे समाज के योगक्षेम को लेकर चले हैं। आपकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

रामचरितमानस—यह अवधी भाषा में रचा गया महाकाव्य है। इसमें दोहा, चौपाई, छप्पय, कवित्त आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। सात काण्डों में राम की सम्पूर्ण कथा इस ग्रन्थ में वर्णित है। राम को तुलसी ने पूर्ण ब्रह्म का रूप माना है। काव्य-सौष्ठव, भक्ति-भावना, आध्यात्म, संस्कृति एवं हिन्दू-दर्शन की दृष्टि से यह विश्वकोष है।

विनय-पत्रिका—इसकी रचना पदों में हुई है। परिमार्जित ब्रज-भाषा रचित यह स्तुति परक तथा दार्शनिक विचारों से युक्त रचना है। काव्य सौष्ठव की दृष्टि से यह रामचरित मानस से किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। यह मुक्तक काव्य परम्परा का अनूठा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ है।

कवितावली—इसे कवित्त-रामायण भी कहते हैं। यह खण्ड-काव्य है तथा काण्डों में विभक्त है। कवित्त, सवैया और छप्पय इसके प्रमुख छन्द हैं।

बरवै रामायण—इसकी रचना बरवै छन्द में हुई है। यह भी काण्डों में विभक्त है तथा काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से तुलसीकृत ग्रन्थों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

गीतावली—यह गेय पदों में रचित रामकाव्य है। इसकी भाषा भी ब्रज है, तथा अभिव्यक्ति एवं काव्यगत सौन्दर्य की दृष्टि से भी यह प्रशंसनीय है।

इसके अतिरिक्त रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा-प्रश्न, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल आदि इनके कुछ अन्य ग्रन्थ हैं। किन्तु इनमें तुलसी के काव्य-वैभव का विशेष परिचय नहीं मिलता। सम्भवत: ये उनकी पारम्भिक कृतियाँ हैं।

प्रश्न 4. तुलसीदास के कला पक्ष की विशेषताएँ बताइये।

अथवा

तुलसीदास की भाषा तथा काव्य सौन्दर्य का निरूपण कीजिए।

यद्यपि तुलसी का उद्देश्य काव्य-कला का प्रदर्शन नहीं था तथापि उनकी सहज प्रतिभा और समर्थ अनुभूति ने उनके काव्य को कला की दृष्टि से भी उत्कृष्ट बना दिया है। आपके काव्य की **कलापक्षीय विशेषताएँ इस प्रकार हैं—**

(1) **भाषा पर अधिकार**—तुलसी के काव्य की भाषाएँ अवधी और ब्रजी हैं। दोनों ही षाओं पर उनका पूर्ण अधिकार है। रामचरित मानस उनके अवधी पर अधिकार की घोषणा कर । है और विनय पत्रिका, दोहावली, गीतवाली आदि ब्रज भाषा के साधिकार प्रयोग को प्रमाणित र रहे हैं। अत्यन्त प्रचलित विदेशी शब्द भी तुलसी की भाषा में प्रयुक्त हुए हैं।

यथा—"राम को गुलाम; मसीत कौ साइबौ; परे पाइमाल जात" इत्यादि। मुहावरों एवं कोक्तियों का भी सटीक प्रयोग तुलसी की भाषा में सर्वत्र प्राप्त होता है। यथा—बलि जाना; त्रलिखित सी होना; मुख की कालिमा धोना; छाती भर आना; गात सूखना; ग्लानि से गलना; र गहि न जात रसना काहू की; तुलसी पावस के समै धर्‌यौ कोकलन मौन; आपु आपु कहँ सब लौ आदि। भाषा उनके भावों की विनम्र अनुगामिनी है। पात्र और परिस्थिति के अनुकूल ब्दावली के चयन में तुलसी बहुतों को पीछे छोड़ जाते हैं।

(2) **शैली की विविधता**—तुलसी ने अपने समय की लगभग सभी प्रचलित काव्य शैलियों रचना की। प्रबन्ध शैली में रामचरित मानस तथा मुक्तक शैली में विनय पत्रिका, दोहावली आदि ी रचना हुई है। आपने गीतावली में गीति-शैली और रामलला नहछू आदि में लोकगीत-शैली । भी सफल प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल उपदेशात्मक, शब्द चित्रात्मक, र्णनात्मक, आलंकारिक और भावात्मक रचना-शैलियों का भी प्रभावशाली उपयोग हुआ है।

(3) **अलंकार योजना**—तुलसी की अलंकार-योजना भी बड़ी आकर्षक और सटीक होती है। न्होंने आग्रह-पूर्वक अलंकारों की भरमार नहीं की है परन्तु सहज रीति से प्रयुक्त अलंकारों ने नके काव्य को कलापक्ष की दृष्टि से पूर्ण समर्थ सिद्ध किया है। यथा—

'सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल।' (रूपक)

'लोचन जल रह लोचन कोना। मानहुँ परम कृपन कर सोना॥' (उत्प्रेक्षा)

'सिय मुख समता करहि किमि, चंद बापुरौ रंक।' (व्यतिरेक)

'कैधों व्योम बीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु
वीररस वीर तरवारि सी उघारी है।' (सन्देह)

(4) **छन्द-विधान**—तुलसी छन्दों के शासक हैं। कोई अभागा छन्द ही उनकी लेखनी के सााद से वंचित रहा होगा। दोहा, चौपाई, सोरठा, बरवै, सवैया, कवित्त, छप्पय तथा पद के साथ-ााथ कुंडलिया तथा सोहर जैसे लोक-छंदों को भी सफलता के साथ आपने प्रयुक्त किया। ामचरित मानस तो उनके संस्कृत छन्दों पर भी अबाध अधिकार की घोषणा कर रहा है। यहाँ तक के 'जय राम रमा रमनम्' तथा 'रुद्राष्टक' आदि में गेय संस्कृत छंदों का भी सृजन किया।

निष्कर्ष—सिद्ध है कि तुलसी का काव्य-कानन मधुर रसालों से रसवान है, प्रफुल्लित सुमन समूह से सु-अलंकृत है, विविध पादप-वृन्दों से छंदायित है और खग-मण्डल के कलित कलरव से सुभाषित हो रहा है। वह 'कला कला के लिए' के क्षुद्र आदर्श से विमुग्ध न होकर लोक-मंगल के महनीय प्रयास से प्रेरित है। वह एक डूबते समाज का सुदृढ़ सहारा बन कर आया था और आज भी असंख्य काव्य-अनुरागियों का कंठहार है। एक संत और सफल कवि की संगमस्थली है कवि तुलसी का काव्य। आज तुलसी किसी भाषा विशेष के कवि न होकर विश्व के सम्मानित कवि हैं जिनके 'रामचरित मानस' की तरंगें विश्व-मानस को तरंगित किये जा रही हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— **पृष्ठ 26-27** **अघाइ** = सन्तुष्ट, पूर्ण। **बिगरियो** = बिगड़ी बात। **गच** = दीवार। **छत** = हानि, नुकसान, क्षति। **सार** = तत्व। **भार** = कामदेव। **रजु** = रस्सी। **छार** = क्षार, मिट्टी, धूल, राख। **खिनु** = क्षण। **तायौ** = जाँच लिया।

पृष्ठ 28-29 **कठौता** = काठ की पात, बर्तन। **पर्नकुटी** = विश्राम कुटिया। **उघरै** = नष्ट करना। **उपवियो** = फलीभूत होना।

(1)

ऐसी मूढ़ता या मनकी।
परिहरि राम-भगति-सुर-सरिता, आस करत ओस कन की॥
धूम-समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की॥
जयो गच-काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की॥
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि। जानत हो गति जनकी।
तुलसीदास प्रभु हरहु, दुसह दुख, करहु लाज निज पनकी॥ [पृष्ठ 26]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद तुलसीदास रचित **विनय पत्रिका** से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में तुलसीदास जी मन की मूढ़ता का वर्णन करते हुए दुःखों से रक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं।

व्याख्या—तुलसी कहते हैं—यह मन भी कैसा मूर्ख है जो रामभक्ति रूपिणी गंगा को त्यागकर ओस कणों (सांसारिक सुखों) की आशा में लगा रहता है। इस अभागे का आचरण वैसा ही है जैसे कोई पपीहा धुएँ के समूह को प्यास से व्याकुल होकर बादल समझ बैठता है और उसकी ओर उड़कर जाता है। परन्तु उसे उस धूम-समूह में न तो शीतलता मिलती है न जल ही प्राप्त होता है उल्टे उसके नेत्रों की हानि होती है (धुएँ से नेत्र व्याकुल हो जाते हैं) अथवा इस मन की गति उस मूर्ख बाज पक्षी के समान है जो किसी काँच के फर्श पर अपनी ही छाया को दूसरा पक्षी समझ बैठता है और उसे अपना शिकार समझकर उस पर आतुरता से टूट पड़ता है। वह मूढ़ यह भूल जाता है कि इस काँच से टकराकर उसकी चोंच टूट जायेगी। यह मन भी अपने विकल्पों की छाया को जो कि सांसारिक सुखों के रूप में दिखाई देती है—सच्ची समझ बैठा है और अपनी दुर्गति को भूलकर इन विषयों की ओर लपकता रहता है। तुलसी कहते हैं—हे प्रभु ! मैं अपने मन के बुरे आचरण का कहाँ तक वर्णन करूँ। आपसे क्या छिपा है। हे भगवान् ! अब आप ही अपने प्रण की लज्जा रखिए (आप पतितपावन हैं) और इस मन की मूढ़ता से मिलने वाले घोर कष्ट से मेरी रक्षा कीजिए।

काव्य सौन्दर्य—**(i) भाषा**—ब्रज भाषा। **(ii) रस**—शान्त रस।
(iii) छन्द—गेय पद। **(iv) अलंकार**—रूपक, उदाहरण।
(v) भाव—सांसारिक सुख ओस कणों के समान अस्थायी हैं।

(2)

एहि घाट तें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जल-थाह देखाइहौं जू।
परसे पगधूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समझाइहौं जू ?
"तुलसी" अवलंब न और कछू, लरिका केहि भाँति जिवाइहौं जू ?
बरू मारिए मोहि, बिना पग धोए हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू॥ [पृष्ठ 27]

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

सन्दर्भ—प्रस्तुत सवैया तुलसीदास रचित **कवितावली** के **अयोध्या काण्ड** से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत सवैया में तुलसीदास केवट की भक्ति-भावना का रोचक वर्णन करते हुए कहते हैं—

व्याख्या—वन गमन के समय गंगा तट पर खड़े श्रीराम केवट से नाव द्वारा गंगा पार जाने की बात कहते हैं। केवट बहुत चतुर है। वह श्रीराम से निवेदन करता है कि नाव की कोई आवश्यकता नहीं है। इस घाट से थोड़ी दूर तक तो कमर तक ही जल है। यदि मेरी बात का विश्वास नहीं है तो मैं स्वयं नदी के जल में चलकर दिखा सकता हूँ। आप स्वयं ही नदी को पार कर सकते हैं।

केवट को यह ज्ञात था कि श्रीराम के चरणों की धूल का स्पर्श करने पर पत्थर की शिला भी अहिल्या नारी का रूप बन गयी थी। उसे भय है कि नाव भी चरणों की रज से नारी का रूप बन गयी तो मैं घर जाकर अपनी पत्नी को कैसे समझाऊँगा ? केवट कहने लगा कि आपके चरण स्पर्श से मेरी नाव भी नहीं रहेगी। यदि यह उड़ गयी अथवा नारी रूप हो गयी तो बाल-बच्चों के भरण-पोषण के लिए मेरे पास क्या साधन होगा ? मेरे पास जीविका का अन्य कोई साधन भी नहीं है। अतः हे प्रभु ! आप मुझे मारें या छोड़ें। मैं तो जब तक आपके चरणों को नहीं धो लूँगा तब तक अपनी नाव में कदापि नहीं चढ़ाऊँगा।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल, सरस, ब्रज भाषा।
(ii) **भाव**—केवट की भक्ति भावना का वर्णन। (iii) **छन्द**—मत्तगयंद सवैया।
(iv) **रस**—शान्त रस। (v) **अलंकार**—अनुप्रास।

(3)

पुरतें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।
फिरि बूझति हैं चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारू चलीं जल च्वै ॥ [पृष्ठ 28]

सन्दर्भ—प्रस्तुत सवैया **तुलसीदास** रचित **कवितावली** के **अयोध्या काण्ड** से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत सवैया में जानकी जी की कोमलता का चित्रण करते हुए तुलसीदासजी कह रहें हैं—

व्याख्या—वन गमन के लिए जानकी जी अपने पति के साथ नगर से बाहर ही निकली थीं कि अत्यधिक कोमलता के कारण उनके मुख पर स्वेद के कण झलकने लगे। ताप तथा थकान का प्रभाव उनके ओठों पर पड़ा। उनके मधुर ओठ सूख गये। जानकी जी ने यद्यपि बहुत ही धैर्य धारण किया किन्तु कोमलता के कारण दो पग बढ़ने पर ही थकान के चिन्ह स्पष्ट झलकने लगे। अत्यधिक थकान का अनुभव होने पर वह व्याकुल हो उठीं और श्रीराम से इस प्रकार की जानकारी के लिए प्रश्न किया कि अभी कितनी दूर और चलना है ? कहाँ पहुँचकर पर्णकुटी बनायी जायेगी?

तुलसीदास जी कहते हैं कि वन की कठिनाइयों से प्रभावित जानकी जी की आकुलता को देख और समझकर श्रीराम के नेत्रों से अश्रुधार प्रवाहित होने लगी।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—ब्रज भाषा। (ii) **भाव**—जानकी जी की कोमलता का वर्णन।
(iii) **रस**—करुण रस। (iv) **छन्द**—दुर्मिल सवैया। (v) **अलंकार**—अनुप्रास।

(4)

लोग कहैं अरू हौं हूँ कहौं ''जन खोटो खरो रघुनायक ही को''।
रावरी राम बड़ी लघुता, जस मेरो भयो सुखदायक ही को॥
कै यह हानि सहौ बलि जाऊँ कि मौहूँ करौ निज लायक ही को।
आनि हिए हित जानि करौ ज्यों हौं ध्यान धरौं धनुसायक ही को॥ [पृष्ठ 29]

सन्दर्भ—प्रस्तुत सवैया **तुलसीदास** रचित **कवितावली** के **उत्तरकाण्ड** से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करते हुए निवेदन कर रहा है—

व्याख्या—हे राम ! मैं अच्छा हूँ या बुरा, पुण्यात्मा हूँ या पापात्मा आपका ही हूँ। मुझे लोग खोटा कहते हैं। मैं भी अपने आपको खोटा ही मानता हूँ। अतः मुझ जैसे पापी पर कृपा करके आपको कोई यश प्राप्त होने वाला नहीं है। मैं तो दुष्ट तथा पापात्मा हूँ। अतः मेरे कष्टों का निवारण करने से आपको अपयश ही प्राप्त होगा। अच्छा तो यह होगा कि आप मुझ पर कृपा करके अपने योग्य बना लीजिए।

हे प्रभो ! मैं आपको अपना हितैषी मानता हूँ। आपका सदा स्मरण तथा चिन्तन करता हूँ। आपके धनुष-बाणधारी रूप का ध्यान करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सदा मेरे लिए हित-चिन्तक रहेंगे। मेरे सांसारिक कष्टों तथा पापों का हरण करेंगे। मैं आपका सेवक हूँ। आप मुझ पर अवश्य ही कृपा करेंगे।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल, सुबोध, ब्रज भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस।

(iii) **छन्द**— सवैया। (iv) **अलंकार**—उल्लेख।

(v) **अन्य**—तुलसीदास की भक्ति भावना प्रकट हुई है।

●●

5 सूरदास

● गागर में सागर

सूरदास—जीवन परिचय—जन्म सन् 1478 ● स्थान रुनकता, कुछ विद्वानों द्वारा ''सीहि'' ● पिता का नाम—रामदास ● जन्म से अन्धे ● वैराग्य की प्रवृत्ति ● बल्लभाचार्य का शिष्यत्व ● श्रीकृष्ण लीला गान ● अष्ट छाप के प्रमुख कवि ● मृत्यु—सन् 1583।

रचनाएँ—(1) सूर सारावली (2) सूर सागर (3) साहित्य लहरी (4) व्याहली (5) नागलीला (6) नल दमयन्ती (7) पद संग्रह।

काव्य-सार—आराध्य की विनय ● शरणागत के उद्धार का विश्वास ● भक्ति भावना से विमुख होने का कारण विषय-वासनाओं को महत्व ● अतः वासनाओं से विरक्ति आवश्यक ● गोपिका विरह—मधुवन को उपालम्भ ● उद्धव को स्वार्थी तथा निर्दयी बताना ● भ्रमरगीत—बिना कृष्ण के कुँजें भी गोपियों की शत्रु ● निर्गुण ब्रह्म में गोपियों का अविश्वास।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. पदों की निम्नांकित पंक्तियों में सही अलंकार है—

(अ) 'सुक सेंमर, तूल तांवरों

(क) अनुप्रास (ख) रूपक

(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा (च) यमक।

उत्तर—[ख] रूपक।

(ब) 'बिन पावस ऋतु आई।

(क) विभावना (ख) अनुप्रास

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) वक्रोक्ति।

उत्तर—[क] विभावना।

प्रश्न 2. सूरदास की भक्ति का रूप था—

(क) वात्सल्य का (ख) सेवा भाव का

(ग) दास-भाव का (घ) सखा-भाव का।

उत्तर—[घ] सखा भाव का।

प्रश्न 3. सूरदास के काव्य का रूप है—

(क) निर्गुण काव्य (ख) सगुण काव्य

(ग) ज्ञान मार्गी काव्य (घ) प्रेम मार्गी काव्य।

उत्तर—[ख] सगुण काव्य।

प्रश्न 4. सूरदास का हरि रूप हीरा कहाँ खो गया है ?

(क) सांसारिक माया-जाल में (ख) कुकर्मों के गर्त में

(ग) तन-घर में (घ) पापों में।

उत्तर—[ग] तन-घर में।

प्रश्न 5. ''मधुवन तुम क्यौं रहत हरे।'' पंक्ति में गोपियों के किस मन की अभिव्यक्ति हुई है—

(क) निन्दा (ख) हास्य

(ग) खीझ (घ) द्वेष।

उत्तर—[ग] खीझ।

प्रश्न 6. "सूर सबै मति मली स्याम की जमुंना-जल सों प्रीति।" में गोपियों के किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है—

(क) ग्लानि (ख) उपालम्भ

(ग) प्रेम (घ) व्यंग्य।

उत्तर—[घ] व्यंग्य।

प्रश्न 7. "आये जोग सिखावन पांडे" में गोपियों के किस भाव की अभिव्यक्ति है—

(क) शिक्षा (ख) व्यंग्य

(ग) जोग (घ) प्रेम।

उत्तर—[ख] व्यंग्य।

प्रश्न 8. सूरदास का उद्देश्य भ्रमर गीत रचना में है—

(क) सगुण उपासना (ख) निर्गुण उमासना

(ग) कृष्ण-उपासना (घ) गोपियों का वियोग।

उत्तर—[क] सगुण-उपासना।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "सरन गये को को न उबारयौ।" विनय के पद में जिन अन्तर्कथाओं की ओर संकेत है, उनके नाम लिखिए।

उत्तर—अन्तर्कथाओं के नाम हैं—

1. दुर्वासा क्रोध का निवारण, अंवरीष पर कृपा। 2. इन्द्र का गर्व घटाना, ग्वालों की रक्षा। 3. हिरणकश्यप का वध; प्रहलाद पर कृपा। 4. गज की ग्राह से रक्षा। 5. कंस के अत्याचारों से मुक्ति।

प्रश्न 2. सूरदास अपने आराध्य देव को उनके 'विरद की लाज' की याद दिलाकर क्या याचना कर रहे हैं ?

उत्तर—सूरदास 'विरद की लाज' की याद दिलाकर उन्हें संसार से पार उतारने की याचना कर रहे हैं।

प्रश्न 3. सूरदास ने भक्त के प्रति भगवान का कैसा स्वभाव बताया है ?

उत्तर—सूरदास ने भक्त के प्रति भगवान का उद्धारक स्वभाव बताया है।

प्रश्न 4. कृष्ण और उद्धव को गोपियों ने किस रूप में समान माना है ?

उत्तर—कृष्ण और उद्धव को गोपियों ने स्वार्थपरता तथा अनीति में समान माना है।

प्रश्न 5. गोपियों ने अपने नेत्रों को मीन किस आधार पर कहा है ?

उत्तर—गोपियों ने अपने नेत्रों को मीन इस आधार पर कहा है कि वह भी तो मीन की तरह प्रत्येक क्षण अश्रु जल में डूबी रहती हैं।

प्रश्न 6. "हमारे हरि हारिल की लकरी"
सूर के उक्त पद में गोपियों ने योग के लिए क्या उद्‌गार प्रकट किये हैं ?

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994

उत्तर—"हमारे हरि हारिल की लकरी" द्वारा गोपियों ने उद्धव जी के योग को कड़वी ककड़ी बताते हुए नकार दिया और कहा कि श्रीकृष्ण हमारे लिए हारिल की लकड़ी के समान हैं जिन्हें हम एक क्षण के लिए भी अपने आप से अलग नहीं कर सकतीं।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गोपिका विरह पदों में सूरदास ने कृष्ण के प्रति गोपियों के अपने हृदयगत मनोभावों को जिस रूप में अभिव्यंजित किया है उसे सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपना आराध्य मानती थीं। वे तन-मन से कृष्ण के प्रति समर्पित थीं। उनके तन-मन में श्रीकृष्ण रमे हुए थे।

उद्धव से गोपियाँ स्पष्ट कहती हैं—

ऊधो मन नहिं हाथ हमारे।
रथ चढ़ाइ हरि संग गए लै, मथुरा जबहिं सिधारे॥

निर्गुण ब्रह्म का उपदेश सुनकर गोपियाँ कहती हैं—

ऊधो मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईसै॥

कृष्ण के बिना सबकी दशा दयनीय हो गयी है। यहाँ तक कि गायें भी शोचनीय अवस्था में हैं। गोपियाँ कहती हैं—

अति कृस गात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय।
जल समूह बरसत अंखियन ते, हूंकत लीने नाँव॥

कृष्ण के बिना कुँजों को भी अपना शत्रु बताते हुए कहती हैं—

बिन गुपाल बैरिन भई कुंजें।
तब ये लता लगति अति शीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजें॥

उद्धव से गोपियों का निवेदन है कि वह कृष्ण को गोकुल भेज दें। यह निवेदन भी गोपियों के हृदयगत भावों को व्यक्त करता है—

हरि सों कहियो हो, गोकुल आवैं।
दिन दस रहे सो भली कीन्हीं, अब जनि गहरू लगावैं॥
नाहिंन कछू सुहात तुमहिं बिनु कानन भवन न भावै।
देखे जात आपनी आंखिन्ह हम कहि कहा जनावैं॥

प्रश्न 2. ''वे तो बड़े सखा तुम उनके, तुमको सुगम अनीति।'' गोपियों के इस कथन में निहित व्यंग्यार्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सूरदास ने नारी हृदय के भावों का सूक्ष्म निरीक्षण किया होगा इसमें सन्देह नहीं। तभी तो नारी के संयोग-वियोग भावों का चित्रण करने में उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

गोपियों के मन में निर्गुण ब्रह्म को जानने के लिए कृष्ण ने उद्धव को गोपियों के पास भेजा। उद्धव को पाकर गोपियों को प्रसन्नता हुई। होता ही यह है कि जब अपने प्रिय व्यक्ति का मित्र या प्रिय व्यक्ति मिल जाता है तब भी मन को प्रसन्नता ही होती है। वेदना भुला दी जाती है। उद्धव को देखकर गोपियाँ अपनी पीड़ा भूल गयीं। हर्षित हो उठीं। सूरदास जी वर्णन करते हैं—

ऊधो। भली करी तुम आए।
ये बातें कहि कहि या दुःख में ब्रज के लोग हँसाए।

उद्धव जी कृष्ण का सन्देश लेकर आये थे और गोपियों से कृष्ण का ध्यान भूल जाने का निवेदन करते हुए, योगिनी बनकर रहने की कह रहे थे। गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का यह उपदेश कदापि उचित प्रतीत नहीं हो रहा था। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया—

''ऊधो मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस॥

× × × × ×

तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारे नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस॥

उद्धवजी पर अनीति का दोष लगाते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से गोपियाँ कहती हैं—

बै तो बड़े सखा तुम उनके, तुमको सुगम अनीति।
सूर सबै मति भली स्याम की, जमुना-जल सो प्रीति॥

प्रश्न 3. "ऊधो इतनी कहियो जाय" पद का सन्देश उद्धव द्वारा सुनने पर कृष्ण ने उसके उत्तर में क्या कहा होगा ? कल्पना के आधार पर उत्तर दीजिए।

(उत्तर सीमा 125 शब्द) (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—कृष्ण ने उद्धव द्वारा गोपियों के पास यह सन्देश भेजा कि वे कृष्ण को भूल जायँ और योग रमा लें।

गोपियों ने अपनी विरह व्यथा उद्धव को सुनाते हुए उनसे यह सन्देश कृष्ण के पास भेजा–

ऊधो इतनी कहियो जाय।
अति कृसगात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय।
× × × × ×
परति पछार खाय तेहि तेहि थल अति व्याकुल है दीन।
मानहुं सूर काढ़ि डारी हैं वारि-मध्य तें मीन॥

उद्धवजी ने गोपियों के साथ वहाँ की गायों की व्याकुलता को सुनाया होगा और गोकुल आने के लिए गोपियों का आमन्त्रण दिया होगा कि—

हरि सों कहियो हो, गोकुल आवैं।
दिन दस रहे सो भली कीन्हीं, अब जनि गहरू लगावैं॥
नाहिंन कछू सुहात तुमहिं बिनु कानन भवन न भावै।
देखे जात आपनी आँखिन्ह, हम कहि कहा जनावै ?

गोपियों की यह विरह दशा भी जब कृष्ण ने उद्धव के मुख से सुनी होगी कि गोपियों को अब विरह के कारण कुँजें भी शत्रु बन गई हैं। कृष्ण के बिना शीतल पदार्थ भी अब सूर्य की किरणों के समान गर्म बन गये हैं। सब कुछ व्यर्थ सा लगने लगा है जो कि सूरदास ने गोपियों की विरह व्यथा में लिखा है—

बिन गोपाल बैरिन भइँ कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुँजैं।

कृष्ण को अवश्य ही गोपियों की दशा सुनकर करुणा का भाव उत्पन्न हुआ होगा। गोपियों के प्रति सहानुभूति का भाव उदय हुआ होगा। उनका मन पुनः ब्रज जाने को हुआ होगा। गोपियों की, वहाँ की गायों की याद करके उनके नेत्रों से अश्रुधार प्रवाहित हुई होगी। उद्धव से सत्य ही कहा होगा—

ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
वृन्दावन गोकुल वन उपवन, सघन कुंज की छाहीं॥

प्रश्न 4. 'भ्रमर गीत' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सूरसागर में 'भ्रमर गीत' एक विशेष प्रसंग है। जब उद्धव गोपियों को समझाने ब्रज पहुँचे तो गोपियाँ उनके ज्ञानोपदेश को सुनकर बहुत निराश हुईं। उनका मन क्षोभ और दुःख से भर गया। परन्तु अतिथि रूप में आये अपने परम प्रिय के मित्र से कठोर वचन कहना अशिष्टता होगी अतः वे मन ही मन विकल हो रही थीं। इसी समय एक भौंरा कहीं से उड़ता हुआ आया और ब्रज युवतियों के समूह पर आकर मँडराने लगा। गोपियों ने कृष्ण और भौंरे में रूप और स्वभाव-साम्य देखकर उसके माध्यम से ही अपने उपालम्भ (उलाहनों) की वर्षा आरम्भ कर दी। इसी कारण यह प्रसंग 'भ्रमर गीत' कहलाता है।

संगृहीत पदों में गोपियों की विरह-विकलता, अडिग प्रेम-भावना तथा उपालम्भ के दर्शन हो रहे हैं। गोपियों को कृष्ण-वियोग में प्रकृति की सारी वस्तुएँ कष्टदायक हो गयी हैं। पवन, पानी, चन्दन, मेघ सभी सूर्य बनकर जला रहे हैं। गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं कि कृष्ण हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। आपके सौ उपदेश भी हमें उनसे विमुख नहीं कर सकते।

उनका यह भी कहना है कि हमारे लिए योग विधि की साधना करना अत्यन्त कठिन है। हम तो गिरधरलाल के छबीले मुख की उपासिका हैं आपके आधे-अधूरे ब्रह्म की उपासना से हमें संतुष्टि कैसे मिल सकती है ?

गोपियाँ योग साधना में अपनी असमर्थता भी प्रकट करती हैं—"ऊधौ जोग-जोग हम नाहीं।" साथ ही अपनी विवशता को भी व्यंजित करती हैं—'लरिकाई कौ प्रेम कहौ अलि, कैसे छूटै ?' उनके नेत्रों से निरन्तर आँसू बहते रहते हैं। उनके कपोल और हृदय, आँसुओं के साथ काजल के बहने से काले हो गये हैं।

कभी वे उद्धव पर व्यंग्य करती हैं कि उन्होंने ब्रज में आकर बड़ी कृपा की जो अपने ज्ञान और योग के उपदेश दिये। यद्यपि उनके उपदेश अग्नि के समान जलाने वाले हैं फिर भी उन्होंने गोपियों के कच्चे घड़े सृदश हृदयों को पका दिया। कभी वे अपने नेत्रों को ही धिक्कारती हैं कि उनको दी जाने वाली सारी उपमाएँ झूठी हैं। अन्त में वे उद्धव से अनुरोध करती हैं कि वे उनकी 'हरिदर्शन' की भूखी आँखों को एक बार उसी मुख के दर्शन करा दें जो पत्तों में दूध दुह कर पिया करता था। इस प्रकार भ्रमरगीत प्रसंग के अन्तर्गत इस संग्रह में गोपियों के विरह-विदग्ध हृदयों की विविध भावनाएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

प्रश्न 5. सूरदास के विरह वर्णन की श्रेष्ठता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—'सूर ने गोपी हृदय पाया था' भक्तजनों का यह विश्वास निराधार नहीं है। नारी मनोविज्ञान की ऐसी गहरी परख अन्यथा उनको कैसे हो सकती थी। संयोग और वियोग दोनों ही स्थितियों में एक नारी के हृदय-जगत का भावांकन जैसा सूर ने किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

सूर का वियोग शृंगार, संयोग शृंगार से भी अधिक मार्मिक बन पड़ा है। ठीक भी है प्रेम की सच्ची परीक्षा वियोग में ही होती है। विरह-विधुरा गोपियाँ, रूप-राशि-राधा, गाय, गोपी, ग्वाले, नन्द और यशोदा के साथ पिक, चातक, मयूर, द्रुमावली और यहाँ तक कि काली कालिन्दी भी कृष्ण के वियोग में सन्तप्त है। कृष्ण के जाने पर जो वियोग का सागर उमड़ा उसका ओर-छोर न रहा।

उभय-पक्षीय विरह वेदना—ऐसा नहीं कि कृष्ण के वियोग में गोपियाँ ही व्याकुल हों, श्रीकृष्ण को भी ब्रजवासियों के वियोग में सूर ने उतना ही विकल दिखाया है—

ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंस-सुता की सुन्दर कगरी अरु कुंजन की छाँहीं।

गोपियों को आज सारी सुखदायक वस्तुएँ दुःखदायक हो गयी हैं। इसलिए वे मधुवन की हरी-भरी द्रुमावली को कोसती हैं—

मधुवन तुम कत रहत हरे ?
विरह-वियोग श्याम-सुन्दर के ठाड़े क्यों न जरे ?
तुम हौ निलज, लाज नहिं तुमको, फिरि-फिरि पुहुप धरे।

जो कुंजें श्रीकृष्ण के साथ बिहार करते समय अत्यन्त शीतल और सुखद प्रतीत होती थीं आज वे ही ज्वाल की पुंजें बन गयी हैं। इतना ही नहीं समस्त शीतलदायक पदार्थ अग्नि-तुल्य दाहक हो गये हैं।

बिनु गुपाल बैरिन भई कुंजें।
तब वे लता लगति तन सीतल अब भई बिसम ज्वाल की पुंजें।

कृष्ण-वियोग की व्यापकता—कृष्ण के वियोग में केवल गोपी-ग्वाल ही दुःखी नहीं अपितु गायें, पक्षी तथा जड़ यमुना तक कातर हो रही हैं—

'परत पछार खाइ छिन ही छिन, हूँकति लीने नाँव।
जहाँ-जहाँ गो-दोहन कीनों, सूँघति सोई ठाँव।'

यह तो गायों की दशा है और कालिन्दी तो विरह ज्वर से जलकर काली ही पड़ गयी है—

देखियत कालिन्दी अति कारी।
अहो पथिक कहियो उन हरि सों भई बिरह जुर जारी।

वियोग की दशाओं का चित्रण—विरह की चिन्ता, स्मरण, अभिलाषा, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मूर्छा और मरण आदि दशाओं में सूर ने एक भी नहीं छोड़ी है। अभिलाषा का एक चित्र देखिये—

नैन सलोने श्याम बहुरि कब आयेंगे ?
लाल पियारे प्रान हमारे, रहे अधर पर छाय।
सूरदास प्रभु कुंज बिहारी, कबहिं मिलोगे धाय॥

सूरदास का भ्रमरगीत तो विरह का अनन्त चित्रकोष है। कृष्ण पर गोपियों के उपालम्भ की जो बाण वर्षा हुई है उसकी चोट भक्तों के हृदय में कसकने वाली है।

महत्त्वपूर्ण व्यांख्याएँ

शब्दार्थ–**पृष्ठ 32-33-34** भखि = खाकर। डांडे = दण्ड देना। **कुम्हड़ा** = काशीफल। **बोऊ** = वह भी। **परिखा** = दुःख। **हारिल की लकरी** = एक पक्षी जो सदा पंजों में लकड़ी पकड़े रहता है। **सोंतुख** = प्रयत्न। **करई** = कड़वी। **अचे** = आचमन कर लेना। **धारिकर** = हाथ में लेकर। **पुंजेह** = समूह। **घनसार** = कपूर। **गुंजे** = चौंटनी। **लुंजे** = अपाहिज, प्राणहीन।

पृष्ठ 35-36—**छाक** = कलेवा। **राँचे** = प्रसन्न होना। **कृसगात** = कमजोर शरीर। **गहरु** = देर। **अताई** = आततायी। **गरीब निवाज** = गरीबों के स्वामी। **डहकायो** = भटकता रहा। **ताँबरो** = मूर्छा। **चौहट** = चारों ओर। **ठाले** = बेकार। **सतरात** = क्रोधित होना। **समर** = कामदेव। **पलाय** = भागना।

(1)

मधुबन तुम क्यौं रहत हरे।
बिरह बियोग स्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यौं न जरे।
मोहन बेनु बजावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे।
वह चित्तवनि तू मन न धरत है, फिरि-फिरि पुहुप धरे।
''सूरदास'' प्रभु बिरह दवानल, नख सिख लौं न जरे॥ **[पृष्ठ 33]**

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद सूरदास रचित **गोपिका-विरह** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में विरह सन्तप्त गोपियों का वर्णन करते हुए सूरदास कह रहे हैं।

व्याख्या—वियोग के कारण गोपियों को मधुवन का हरा-भरापन भी अखर रहा है। वे जानना चाहती हैं कि मधुवन का हरा-भरापन किस कारण है ? विरह-वियोग का कोई दुष्प्रभाव मधुवन पर क्यों नहीं है ?

गोपियाँ अत्यन्त दुःखी हैं। वे मधुवन से कहती हैं कि श्रीकृष्ण के अत्यन्त प्रिय होने पर भी उनके वियोग में तुम क्यों नहीं जल रहे हो ? जब श्रीकृष्ण यहाँ थे, वह एक पाँव पर खड़े रहकर तुम्हारे पास ही मधुर मुरली ध्वनि करते थे। मुरली की ध्वनि इतनी सुरीली होती थी कि उसकी मधुर ध्वनि पर सम्पूर्ण स्थावर और जंगल जीव मुग्ध हो जाते थे। मुनिजन अपनी ध्यानावस्था त्याग देते थे।

प्रिय कृष्ण के चले जाने से ब्रजवासी अत्यन्त दुःखी हैं। हे मधुवन ! तुम्हें गत मधुर स्मृतियों का कुछ भी ध्यान नहीं है। श्रीकृष्ण का विछोह तुम्हें लेशमात्र भी व्यथित नहीं करता। तुम तो बार-बार पुष्पों को धारण करते हो जो तुम्हारी प्रसन्नता का सूचक है। तुम्हारी यह प्रसन्नता उचित नहीं है।

सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों को मधुवन का हरा-भरापन अनुचित लग रहा है। वे हती हैं कि तुम श्रीकृष्ण के विरह रूपी दावानल से नख-शिख तक क्यों नहीं जल रहे ? तुम्हें पूर्णरूपेण जलना चाहिए।

काव्य सौन्दर्य—(i) भाषा—सरल ब्रज भाषा। (ii) भाव—वियोग व्यथा का सुन्दर चित्रण। (iii) रस—वियोग श्रृंगार रस। (iv) छन्द—गेय पद।
(v) अलंकार—रूपक तथा अनुप्रास अलंकार।

(2)

हमारे हरि हारिल की लकरी।

मन बच क्रम नंदनंदन सो उरि यह दृढ़ करि पकरी।
जागत, सोवत, सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जकरी।
सुनतहि जोग लगत ऐसो अलि ! ज्यों करूई ककरी।
साई व्याधि हमैं लै आए देखो सुनी न करी।
यह तौ सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी॥ [पृष्ठ 33]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद सूरदास रचित गोपिका विरह शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में गोपियों के अनन्य प्रेम का वर्णन करते हुए कवि कहता है।

व्याख्या—हे उद्धव ! श्रीकृष्ण तो हमारे लिए हारिल की लकड़ी के समान हैं। जिस प्रकार रिल पक्षी एक लकड़ी पकड़े रहता है और उस लकड़ी को एक क्षण के लिए भी अपने से लग नहीं करता उसी प्रकार हमारे हृदय से भी श्रीकृष्ण एक पल के लिए भी दूर नहीं होते। मने मन, वचन और कर्म से इस श्रीकृष्ण रूपी लकड़ी को दृढ़तापूर्वक पकड़ रखा है। हमें तो गते, सोते, स्वप्न में, दिन और रात में बस एक कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगी रहती है। आपका ग-उपदेश तो हमें सुनने में कड़वी ककड़ी जैसा प्रतीत होता है। आप तो हमारे लिए ऐसी व्याधि झंझट या रोग) लेकर आये हैं जिसे हमने न कभी देखा है, न सुना है और न किया है। उद्धव ी! योग और ज्ञान तो ले जाकर उन्हें दीजिए जिनके मन चकई के समान अ. .र हैं। हम तो कमात्र श्रीकृष्ण की ही आराधिका हैं।

काव्य सौन्दर्य—(i) भाषा—सरस, सरल ब्रज भाषा। (ii) रस—वियोग, श्रृंगार रस।
(iii) छन्द—गेय पद। (iv) अलंकार—अनुप्रास, उपमा अलंकार।
(v) अन्य—गोपियों का श्रीकृष्ण प्रेम।

(3)

बिन गोपाल बैरिन भईं कुंजैं।

तब ये लता लगतिं अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजै।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजै।
पवन पानि धनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भईं भुंजै।
पथिक जाइ कहियो माधव सों मदन मारि कीन्हीं हम लुंजै।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भईं बरन ज्यौं गुंजै॥ [पृष्ठ 34]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद सूरदास रचित गोपिका विरह शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में सूरदास जी संयोग में सुखद लगने वाली वस्तुओं को वियोग के क्षणों में त्यन्त कष्टदायक बताते हुए कहते हैं—

व्याख्या—गोपियाँ कहती हैं—आज श्रीकृष्ण की अनुपस्थिति में ये शीतल ब्रज-कुँजें भी रिन-सी प्रतीत हो रही हैं। ये लताएँ श्रीकृष्ण के साथ होने पर शरीर को शीतलता देती थीं पर ब ये ही भयंकर अग्नि-समूह के समान जलाने वाली हो गयी हैं। यह यमुना व्यर्थ ही बह रही , पक्षी व्यर्थ ही कलरव करते हैं, कमल के पुष्पों पर ये भौंरे व्यर्थ ही गुँजार कर रहे हैं। (ये सारे

दृश्य हमारे लिए अब किस काम के हैं, इन्हें देखकर तो हृदय और दुःखी होता है) पवन, पानी चन्दन, शीतल सुगन्धित लेप चन्द्रमा की किरणें आदि जितने भी शीतलतादायक पदार्थ हैं वे सभी हमको सूर्य की किरणों के समान होकर जलाये डाल रहे हैं। हे उद्धव ! आप श्रीकृष्ण से जाकर यही कहना कि कामदेव ने हमें अपने प्रहार से लुँज (अपंग) सा बना दिया है। हे प्रभो ! आपके दर्शन के लिए एकटक मार्ग देखते-देखते हमारे नेत्र अत्यन्त पीड़ित हो उठे हैं।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरस, सरल ब्रज भाषा। (ii) **रस**—वियोग शृंगार रस।

(iii) **छन्द**—गेय पद। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास, रूपक तथा उपमा।

(v) **अन्य**—प्रकृति का उद्दीपक रूप प्रस्तुत किया गया है।

(4)

ऊधो इतनी कहियो जाय।

अति कृसगात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय।
जल समूह बरसत अँखियनतें, हूंकत लीनें नाँव।
जहाँ जहाँ गोदोहन करते ढूँढ़त सोई सोई ठावँ।
परति पछार खाय तेहि तेहि थल अति व्याकुल है दीन।
मानहुं सूर काढ़ि डारी है बारि मध्य तै मीन॥ [पृष्ठ 35]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद सूरदास रचित गोपिका विरह शीर्षक से उदधृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में कवि सूरदास जी ने गायों की दुर्दशा का वर्णन किया है। अपनी स्थिति को भूलकर गोपियाँ उद्धव जी से गायों के दुःख को बताते हुए कहती हैं—

व्याख्या—हे ऊधौ ! तुम कृष्ण से इतना अवश्य कहना कि ब्रज की गायें उनके वियोग में अत्यन्त दुःखी हैं। वे कृष्ण के विरह में दुर्बल हो गयी है। नेत्रों से निरन्तर अश्रुधार बह रही है कृष्ण का नाम किसी के भी मुँह से निकलने पर हुंकार मारने लगी हैं।

गोपियाँ उद्धव जी से कह रही हैं कि कृष्ण ने जहाँ जहाँ गायों का दूध दुहा था, वहाँ जाकर ये गायें उन कृष्ण को ढूँढ़ती हैं। कृष्ण को वहाँ न पाकर दुःखी होती हैं और पछाड़ खाकर गिर पड़ती हैं। कवि कहता है कि ये गाएँ कृष्ण के वियोग में ऐसी बन गयी हैं जैसी जल से पृथक कर देने पर मछलियाँ बन जाती हैं। वे मृतप्रायः दिखाई देने लगी हैं।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरस, सरल ब्रज भाषा। (ii) **रस**—वियोग शृंगार रस।

(iii) **छन्द**—गेय पद। (iv) **अलंकार**—पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

(v) **अन्य**—गायों की व्यथा का वर्णन।

6 मीराबाई

गागर में सागर

मीराबाई—**जन्म**—सन् 1949 • **स्थान**—चोकड़ी (राजस्थान) • **पिता**—रत्नसिंह • युु—सन् 1546 • कृष्ण भक्ति • कृष्ण ही पति • सन्त-महात्माओं के मध्य रहना • उदयपुर की जमर्यादा के प्रतिकूल मन्दिरों में नृत्य • संगीत-पूर्ण रचनाएँ • ब्रजभाषा में राजस्थानी, गुजराती, ाबी का प्रभाव।

रचनाएँ—(1) नरसीजी का मायरा (2) राग गोविन्द (3) राग सोरठ (4) गीत गोविन्द की का।

काव्य-सार—आत्म निवेदन तथा सर्वस्व-समर्पण • कृष्ण-प्रेम की दीवानी मीरा की विरह-ना तथा संयोग-सुख • बाधाओं का वर्णन • आराध्य के प्रति प्रेम तथा विश्वास।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. ''हम चितवत, तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर।''
कृष्ण के प्रति मीरा के उपर्युक्त कथन में प्रकट है—

(क) उपालम्भ (ख) खीझ
(ग) व्यंग्य (घ) प्रेम (च) वेदना।

उत्तर—[क] उपालम्भ।

प्रश्न 2. मीरा को लोक-परलोक कुछ भी अच्छा नहीं लगता, क्योंकि—

(क) मीरा राजरानी थी। (ख) मीरा ने वैराग्य धारण कर लिया था।
(ग) वह कुल मर्यादा से आबद्ध थी। (ग) वह कृष्ण से प्रेम करती थी।

उत्तर—[घ] वह कृष्ण से प्रेम करती थी।

प्रश्न 3. ''हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर।'' मीराबाई की यह उक्ति के किस प्रकार के भक्ति-भाव को प्रकट करती है ? **(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)**

(क) सख्य भाव (ख) माधुर्य भाव
(ग) दास्य भाव (घ) वात्सल्य भाव (च) प्रपत्ति भाव

उत्तर—[क] सख्य भाव।

प्रश्न 4. ''साधु सन्त महन्त ज्ञानी चलत करत पुकार'' मीरा के मतानुसार साधु सन्तों ने ार से विदा होते समय क्या कहा—

(क) आनन्द-सागर (ख) मांया-जंजाल
(ग) अनश्वर (घ) राम नाम की नाव द्वारा पार किया जानें वाला।

उत्तर—[घ] राम नाम की नाव द्वारा पार किया जाने वाला।

प्रश्न 5. ''पाँख नहीं उड़ जावन को।'' में मीरा का मनोभाव प्रकट हुआ है—

(क) वेदना का (ख) निराशा का
(ग) विश्वसनीयता का (घ) विवशता का।

उत्तर—[घ] विवशता का।

प्रश्न 6. ''प्रभु बिनि ना सरै माई।'' में मीरा की कौन-सी भावना प्रकट हुई है—

(क) वेदना (ख) विश्वास
(ग) वियोग (घ) आसक्ति।

उत्तर—[क] वेदना।

प्रश्न 7. ''नहिं ऐसो जनम बारं बार।'' पंक्ति में कौन-सा सन्देश है—

(क) माया-मोह में पड़ना (ख) माया-मोह से दूर रहना
(ग) क्षणिक सुख भोग का ज्ञान (घ) ईश्वर-भक्ति।

उत्तर—[घ] ईश्वर-भक्ति।

प्रश्न 8. ''खोली भरम किवारी हो।'' मीरा भ्रम दूर करने में किसे सहायक मानती हैं ?

(क) गुरू को (ख) सन्तों को
(ग) पिता को (घ) आत्म ज्ञान को।

उत्तर—[क] गुरू को।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. मीरा प्रभु को प्राप्त करने के लिए कहाँ तक त्याग करने को तत्पर है ?

उत्तर—मीरा प्रभु को प्राप्त करने के लिए लोक लाज तथा अपने प्राणों का त्याग करने को तत्पर है।

प्रश्न 2. मीरा ने अपनी पीड़ा दूर करने के लिए भगवान को उनके कौन-कौन से पीड़ा-हरण उदाहरण याद दिलाये हैं, ठनका उल्लेख करते हुए किन्हीं दो अन्तर कथाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—पीड़ा-हरण उदाहरण—1. द्रोपदी-लाज बचाना। 2. हिरणाकुश मारना। 3. प्रहलाद पर कृपा। 4. गज की ग्राह से रक्षा। 5. रंग भूमि में कंस संहार।

प्रश्न 3. भक्त की वह कौन-सी स्थिति है जिसमें उसको सुख की प्राप्ति हो सकती है, 'प्रभु बिना ना सरे माई', पद के आधार पर बताइये।

उत्तर—भक्त के सुख प्राप्ति की स्थिति भगवान् के एक बार दर्शन से हो सकती है।

प्रश्न 4. जीवन के व्यतीत क्षणों की तुलना में मीरा का क्या कहना है ?

उत्तर—मीरा का कहना है कि जीवन के व्यतीत क्षण वृक्ष से टूटे पत्तों के समान हैं जो पुनः नहीं लौट सकते।

प्रश्न 5. मीरा का प्रेम न करने की बात का आधार क्या था ?

उत्तर—प्रेम करना कष्टप्रद ही रहता है मीरा ने ऐसा अनुभव किया था। उसे कृष्ण प्रेम में रात-दिन व्यथित रहना पड़ा था फिर भी उसकी आशा और आकांक्षाएँ अपूर्ण रही थीं।

प्रश्न 6. मीरा ने उस क्षण क्या कहा था जिस क्षण राणा ने उसे मारने का प्रयत्न किया था ?

उत्तर—राणा के मीरा को मारने के प्रयत्न पर मीरा ने कहा था कि मैं दोनों वंशों के उद्धार के प्रयत्न में हूँ।

प्रश्न 7. मीरा ने अपने आराध्य को 'दिल का कठोर' क्यों कहा है ?

उत्तर—मीरा ने अपने आराध्य को 'दिल का कठोर' इसलिए कहा है कि उन्होंने उस पर अभी तक कृपा नहीं की है।

प्रश्न 8. मीरा ने 'जीवणा दिन चार' कहकर क्या सन्देश दिया है ? अथवा कौन-सा सत्कर्म करने की बात कही है ?

उत्तर—मीरा ने 'जीवणा दिन चार' कहकर भगवान् की भक्ति तथा चिन्तन द्वारा जीवन को सफल बनाने का सन्देश दिया है।

प्रश्न 9. 'मेरा दरद न जाणै कोय'' कहकर मीरा ने किस भावना को व्यक्त किया है ?

उत्तर—'मेरा दरद न जाणै कोय' कहकर मीरा ने अपनी अनन्य भक्ति भावना को व्यक्त किया है।

प्रश्न 10. मीरा को मारने के लिए राणा द्वारा क्या उपाय किये गये ?

उत्तर—मीरा को मारने के लिए राणा द्वारा विष भेजा गया तथा हार के बहाने विषधारी सर्प भेजा।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. राम नाम का रसपान करने के लिए मीरा ने किन-किन वस्तुओं को छोड़ने का सुझाव दिया है ?

उत्तर—राम नाम का रसपान करने के लिए मीरा ने कुसंग का त्याग करके सत्संगति में बैठने को कहा है।

मीरा कहती हैं कि व्यक्ति को अपना समय व्यर्थ ही न गवाँ कर हरि चर्चा में व्यतीत करना चाहिए।

मीरा ने कहा है कि काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह को अपने मन से दूर कर देना चाहिए और सदा भगवान् की भक्ति में लीन रहना चाहिए।

प्रश्न 2. "मीरा के काव्य में नारी-हृदय की तीव्र वेदना की अभिव्यक्ति हुई है।" इस कथन की सार्थकता उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिए। (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—मीरा का कृष्ण के प्रति अपार प्रेम था। व्याकुल हृदय से मीरा ने कृष्ण के लिए जो करुण पुकार की है वह दर्द का गीत बनकर व्यक्त हुई है।

मीरा ने कृष्ण को अपना पति स्वीकार किया था। उनकी याद में वह सदा विरह में आँसू बहाती रहीं। उन्होंने अपने दर्द को व्यक्त करते हुए लिखा है—

"दरस बिनु दूखण लागे नैन।
जब से तुम बिछुरे प्रभु मोरे, कबहुँ न पायो चैन।"

मीरा ने कृष्ण को अपना प्रियतम मानकर उनसे मिलाप के लिए तड़पते मन की व्यथा को व्यक्त करते हुए लिखा है—

"ऐ दोइ नैण कह्यो नहिं माने, नदिया बहै जैसे सावन की।"

प्रियतम बिना मीरा को अपना जीवन सूना-सूना लगता है। उन्हें प्रियतम बिना पपीहे की आवाज भी नहीं भाती। पीउ-पीउ शब्द भी मीरा को पीड़ादायक लगता है। वह मात्र एक बार उनका दर्शन चाहती हैं। कहती है—

"एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटिजाई।"

विरह निवेदन करती हुई मीरा कहती हैं—

"घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राणजी, कासूँ जीवण होय॥

× × × ×

"पंथ निहारूँ डगर बुहाऊँ, ऊभी मारग जोइ।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होइ॥

प्रश्न 3. पृथ्वी ने अपने प्रियतम के मिलन की प्रतीक्षा में नये-नये रूप धारण किये हैं। कल्पना के आधार पर आप भी प्रकृति के मनमोहक रूप का वर्णन करिये।

उत्तर—आकाश में घुमड़ते काले बादल, मोर, पपीहा, कोयल की मधु वर्षाती आवाज वर्षा-आगमन की सूचना देते हैं। काले-काले बादलों से प्रकृति नव-वधू के काले बालों का आभास होता है। प्रकृति वधू के शृंगार को देखकर कोयल की पीउ-पीउ मधुर स्वर में उसकी बोलचाल जैसी प्रतीत होती है।

प्रकृति के मुख को, चमकती बिजली बार-बार प्रकाश से भर देती है। आकाश में चमकने वाला इन्द्रधनुष उस प्रकृति वधू की रंगीन पुष्पों की विजयमाल हो।

गरजते बादल ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे-इन्द्र प्रसन्नता में ढोल पीट रहा है। चारों ओर फैली हरियाली मन मुग्धकारी है। इस प्रकार प्रकृति अत्यन्त मनमोहक रूप में सामने आती है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ 38-39-40—कबर = कब। **अकोर** = भैंट। **भीर** =विपत्ति, संकट। **पै** = पर। **सरे** = काम चलना। **कमठ** = कछुआ। **आवड़े** = अच्छा लगना। **बांण** = स्वभाव, आदत। **जोरूँ** = देखना। **ऊंमग्यो** = उमड़ आया। **धारिया** = धारण करना। **मेहड़ा** = प्रेम की वर्षा। **इमरित** = अमृत। **अनंत** = जिसका अन्त न हो। **चौहटे** = चौराहे के रास्ते। **मनुआं** = मन। **बहाय दीजे** = दूर कर दीजिए।

(1)

हरि तुम हरो जन की भीर॥ टेक॥
द्रोपदी की लाज राखी, तुरत बढ़ायौ चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि, धरयो, आप सरीर।
हिरणाकुश मारि लीन्ह, धरयो नाहिं न धीर।
बूड़तो गजराज राख्यौ, कियो बाहर नीर।
दासी मीरा लाल गिरधर, चरण कँवल पै सीर॥ [पृष्ठ 38]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद **मीराबाई** रचित **स्तुति प्रार्थना** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में मीराबाई अपनी पीड़ा का निवारण करने के लिए अपने आराध्य से निवेदन करती है।

व्याख्या—हे भगवान ! आप सांसारिक आपत्तियों में फँसे तथा व्यथित अपने भक्तों की पीड़ा निवारण करने वाले हैं। इस समय आपके भक्त अत्यन्त कष्ट में हैं। आप उनके कष्टों का निवारण करने की कृपा करें। आपकी भक्त द्रोपदी पर जब संकट आया, उसकी लाज की रक्षा जब सम्भव नहीं रही तो आपसे की गयी द्रोपदी की पुकार सुनकर उसकी लज्जा का गुरुतर भार आपने अपने ऊपर ले लिया और तुरन्त ही द्रोपदी की लज्जा रखने के लिए उसके चीर को बढ़ाकर उसकी लाज-रक्षा की।

भक्त प्रहलाद पर आयी विपत्ति के निवारणार्थ आपने नरसिंह रूप धारण किया और हिरण्यकश्यप का संहार करने में लेशमात्र भी विलम्ब नहीं किया।

हाथी की रक्षा में भी आपने किसी प्रकार का विलम्ब नहीं किया। जल में डूबते हुए गज की आपने रक्षा की। मीरा का कहना है कि आप सदा विपत्तियों का अन्त करने वाले हो। मैं आपकी दासी हूँ। आप मेरे स्वामी हैं। इन्द्र के कोप से ब्रज की रक्षा करने वाले गिरधारी हो।

मैं आपके चरण कमल पर अपना सिर झुकाती हूँ। मेरी भी आप रक्षा करें।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—राजस्थानी तथा ब्रज का मिश्रण। (ii) **रस**—शान्त रस।
(iii) **छन्द**—गेय पद। (iv) **अलंकार**—रूपक अलंकार।
(v) **अन्य**—भक्तिपूर्ण उद्गार।

(2)

नहिं ऐसो जनम बारं बार।
का जानूं कछु पुण्य प्रगटे,. मानुसा अवतार॥
बढ़त छिन छिन घटत पल पल, जात लगे न बार।
बिरछ के ज्यूँ पात, टूटे, बहुरि न लागे डार।
भौसागर अति ज़ोर कहिये, अनंत ऊंडी धार।
राम नाम का बांध बेड़ा, उतर परले पार।
ज्ञान चौसर मंडी चोहटे, सुरत पासा सार।
या दुनिया में रची बाजी जीत भायै हार॥
साध संत महंत ज्ञानी, चलत करत पुकार।
दासी मीरा लाल गिरधर, जीवणा दिन च्यार॥ [पृष्ठ 40]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद मीराबाई रचित उपदेश शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में मीराबाई संसार की नश्वरता तथा ज्ञान भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए कह रही हैं—

व्याख्या—मनुष्य जन्म पुण्य कर्मों का फल होता है। यह योनि बार-बार नहीं मिला करती। जीवन का एक-एक क्षण महत्वपूर्ण है किन्तु क्षण-प्रतिक्षण मनुष्य की आयु घटती रहती है। उसकी आयु की वृद्धि जीवन के कम होने का लक्षण है। इस प्रकार जीवन की समाप्ति में अधिक समय नहीं लगता।

वृक्ष से पृथक हुए पत्ते जिस प्रकार पुनः उस डाल पर नहीं लग सकते उसी प्रकार एक बार मनुष्य जीवन नष्ट हुआ तो पुनः प्राप्त नहीं हो सकता। यह संसार तो एक गम्भीर सागर है, इसकी असीम सीमा का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। सागर की धारायें भी विस्तृत हैं इसे पार करना बिना बेड़े के सम्भव नहीं है। यह बेड़ा राम-नाम रूपी है जो इस अथाह सागर से पार लगा सकता है।

संसार में बाजी ही बाजी है। प्रत्येक चौराहे पर ज्ञान की चौपड़ का खेल चल रहा है। जो ज्ञान का सहारा लेते हैं वे इस चौपड़ के खेल में सफल हो सकते हैं। ध्यानरूपी पासों के बल पर जीवन बाजी से संघर्ष किया जा सकता है।

सभी साधु, सन्तों, महन्तों, ज्ञानी पुरूषों ने संसार सागर से पार होते समय उस परमात्मा का स्मरण किया है और नाम को संसार सागर से पार होने का एकमात्र सहारा बताया है।

मीराबाई कहती हैं कि गिरधारी प्रभु ! मैं आपकी सेविका हूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा जीवन भी थोड़े दिन का है। अतः मेरा निवेदन है कि मेरी भक्ति को स्वीकार करो और मेरा उद्धार करो।

काव्य सौन्दर्य—**(i) भाषा**—राजस्थानी तथा ब्रज का सम्मिश्रण। **(ii) रस**—शान्त रस।

(iii) छन्द—गेय पद। **(iv) अलंकार**—रूपक अलंकार।

(v) **अन्य**—ज्ञान तथा भक्ति की महिमा का वर्णन।

●●

7 रहीम

● गागर में सागर

रहीम—जीवन—जन्म सन् 1556 • स्थान—लाहौर (अब पाकिस्तान) • पिता—बैरमखाँ • मृत्यु—सन् 1627 • अकबर के प्रधान सेनापति • वीर योद्धा • अरबी, फारसी तथा संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित • कवियों को सम्मान देने वाले हिन्दी काव्य के मर्मज्ञ • तुलसीदास से स्नेह सम्बन्ध।

रचनाएँ— (1) रहीम सतसई (2) शृंगार सतसई (3) मदनाष्टक (4) रहीम रत्नावली (5) रास पंचाध्यायी (6) बरवै नायिका भेद।

काव्य-सार—दोहावली द्वारा नीति, भक्ति तथा प्रेम का चित्रण • सच्चे मित्र के लक्षण • असाधुओं की कुसंगति का दुष्परिणाम • मन की पवित्रता, उदारता तथा समय की गतिशीलता का वर्णन • बरवै द्वारा गोपियों की विरह-व्यथा • प्रियतम कृष्ण का चिन्तन • प्रिय मिलाप की व्याकुलता।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "जान कहते हो ऊधौ, अवधि बताइ।
अवधि अवधि लों दुस्तर परत लखाइ।" में अलंकार है—

(क) रूपक (ख) यमक
(ग) अनुप्रास (घ) उपमा।

उत्तर—[ख] यमक अलंकार।

प्रश्न 2. तुलसीदास की बरवै रामायण के प्रेरणा स्त्रोत थे—

(क) रसखान (ख) रहीम
(ग) बाल्मीकि (घ) सूरदास।

उत्तर—[ख] रहीम।

प्रश्न 3. रहीम ने किसे दुर्लभ बताया है ?

(क) परोपकार को (ख) भक्ति को
(ग) स्नेह को (घ) सम्मान को।

उत्तर—[ग] स्नेह को।

प्रश्न 4. रहीम के काव्य का आधार है—

(क) मुक्तक काव्य (ख) महाकाव्य
(ग) प्रबन्ध काव्य (घ) गीति काव्य।

उत्तर—[क] मुक्तक काव्य।

प्रश्न 5. रहीम के विचार से इस संसार में सफलता का क्या रहस्य है ?

(क) ज्ञान (ख) एक की साधना
(ग) सेवा (घ) स्वाबलम्बन।

उत्तर—[ख] एक की साधना।

प्रश्न 6. रहीम के काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है ? (मा. शि. बोर्ड 1990)

(क) सामासिकता (ख) शृंगारिकता
(ग) नीति-प्रवणता (ष) अनुभव संकुलता (च) सूत्रात्मकता।

उत्तर—[ग] नीति प्रवणता।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. श्रीकृष्ण के रूप की ऐसी कौन-सी बानि है जिसे रहीम अपने चित्त से नहीं टालना चाहते हैं ?

उत्तर—श्रीकृष्ण के रूप की वह बानि जिसे रहीम अपने चित्त से नहीं टालना चाहते गोपीजन-मन-रंजन बानि है।

प्रश्न 2. "रहिमन भंवरी के भये, नदी सिरावत मौर।" भंवरी बौर-मौर का परस्पर सम्बन्ध बताइये।

उत्तर—भंवरी बौर-मौर का परस्पर सम्बन्ध आवश्यक बताया है। क्योंकि भाँवर के समय मौर का बँधना अनिवार्य है। यह नहीं देखा जाता है कि मौर मूल्यवान है अथवा मूल्यहीन किसी पत्ते की तरह।

प्रश्न 3. रहीम ने थोड़े दिन की विपत्ति को भी भला क्यों कहा है ?

उत्तर—रहीम ने थोड़े दिन की विपत्ति को भी इसलिए भला कहा है कि इन दिनों भले-बुरे, हितैषी तथा अहितकारी व्यक्ति की परख हो जाती है।

प्रश्न 4. रहीम ने पेट को पीठ कब माना है ?

उत्तर—रहीम ने पेट को पीठ तब माना है जब वह पूर्ण हो जाने पर व्यक्ति की दृष्टि ही बिगड़ जाये।

प्रश्न 5. रहीमदास के विचार से छोटा आदमी उचित-अनुचित का विचार कब नहीं करता ?

उत्तर—रहीमदास के विचार से छोटा आदमी उचित-अनुचित का विचार बड़े व्यक्ति का सहारा प्राप्त हो जाने पर नहीं करता।

प्रश्न 6. रहीम के विचार से बड़ा व्यक्ति कौन है ?

उत्तर—रहीम के विचार से बड़ा व्यक्ति वह है जो किसी के दुःख सुनकर उस पर दया-भाव ले आता है।

प्रश्न 7. रहीम के मत से किस प्रकार का प्रेम सराहना योग्य है ?

उत्तर—रहीम के मत से वह प्रेम सराहना योग्य है जो उसकी रक्षा के लिए प्राणों को भी न्यौछावर किया जा सके।

प्रश्न 8. रहीम ने "काज परे कछु और है, काज सरै कछु और" द्वारा क्या बताया है ?

उत्तर—रहीम ने इन पंक्तियों द्वारा यह बताया है कि व्यक्ति की प्रवृत्ति स्वार्थपूर्ण है। वह कार्य पड़ने पर जो दृष्टिकोण रखता है, उसके पूर्ण होने पर उसमें परिवर्तन आ जाता है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बरवै खण्ड में रहीम ने भक्ति के जिस समन्वित रूप का वर्णन किया है उसका विश्लेषण उदाहरण देकर करिये।

उत्तर—बरवै खण्ड में रहीम ने अपनी भक्ति का समन्वित रूप प्रस्तुत किया है। इस खण्ड में रहीम ने श्री गणेश, श्रीकृष्ण, सूर्यादि की स्तुति की है। श्री गणेश को उन्होंने विघ्न विनाशक तथा निर्मल बुद्धिदाता के रूप में देखा है।

श्रीकृष्ण को परम उदार, राधा के प्राणों का आधार तथा कष्टों से मुक्ति देने वाला बताया है।

सूर्य को सम्पूर्ण विश्व का स्वामी, भक्तों को सुख देने वाला तथा दीनों का सुखदाता बताया है।

हनुमान जी को रघुवर भक्त मानते हुए रहीम ने स्तुति की है—

"ध्यावहुँ विपत्ति-विदारन सुवन समीर।
खल-दानव-वन जारन, प्रिय रघुवीर॥"

शंकर जी को चिन्ता-हरण करने वाला, त्रिनेत्रधारी बताते हुए स्तुति में लिखा है—

"ध्यावहुँ सोच-विमोचन, गिरिजा-ईस।
नागर भान त्रिलोचन, सुरसरि सीस॥"

रहीम ने गुरू को मन का अज्ञानान्धकार दूर करने के लिए स्तुति की है—

"पुन पुन वन्दहुँ गुरु के, पद-जल जात।
जिहि प्रताप तैं मनके, तिमिर बिलात॥"

प्रश्न 2. मूल के खिंचन से सब कुछ की प्राप्ति होती है, उदाहरण देकर प्राकृतिक सत्य को स्पष्ट करिये।

उत्तर—रहीमदास ने "रहीम-रत्नावली" में लिखा है—

"एकहि साधै सब सधैं, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलहि, फलहि अघाय॥"

वृक्ष के मूल का सिंचन करने से सम्पूर्ण वृक्ष को मूल के माध्यम से रस की प्राप्ति हो जाती है। जो व्यक्ति वृक्ष को जीवित रखने के लिए वनों, उसकी शाखाओं, पत्तों अथवा फलों की सींचने का प्रयास करते हैं, वे बृद्धिहीनता का परिचय देते हैं। पत्तों, शाखाओं अथवा फूलों के सींचने से वृक्ष को कुछ भी प्राप्त नहीं होता। धीरे-धीरे वह सूख जायेगा। अत: रहीमदास बलपूर्वक यह कहते हैं कि हमें मूल की अधिक चिन्ता रहनी चाहिए। मूल साधने से सब सध जाता है। यदि व्यक्ति सभी को साधने का प्रयास करता है तो उसका सब कुछ समाप्त हो जाता है। उसे कुछ भी तो प्राप्त नहीं हो पाता। अत: व्यक्ति को मूल की ही साधना करनी चाहिए।

प्रश्न 3. रहीम के नीति के दोहे जगत प्रसिद्ध हैं। उदाहरण देते हुए कुछ नीति के शाश्वत सिद्धान्तों का वर्णन करिये।

उत्तर—रहीमदास ने नीति के दोहों की रचना करके संसार को नीति-वाक्य तथा नीति सम्बन्धी शिक्षा प्रदान कर हमारा मार्ग प्रशस्त करने में सहयोग प्रदान किया है। नीति के शाश्वत सिद्धान्त देकर व्यक्ति को सन्मार्ग का अनुगमन करने का विचार दिया है।

1. दुष्ट के साथ व्यवहार—दुष्ट व्यक्ति के साथ किस प्रकार का व्यवहार होना चाहिए, रहीमदास इस सम्बन्ध में कहते हैं—

"खीरा सिर तें काटिए, मलियत लोन लगाय।
रहिमन करुए मुखन को, चहिअत इहै सजाय॥"

2. मन पर नियन्त्रण—मन पर नियन्त्रण आवश्यक बताते हुए उन्होंने कहा है—

"जो रहीम मन हाथ है, तो तन कहुँ किन जाहि।
जल में जो छाया परे, काया भीजति नाहिं॥"

3. मित्र-शत्रु—शत्रु तथा मित्र की पहचान आवश्यक है। सच्चाई प्रकट करते हुए रहीम का कहना है कि मित्र भी बुरा वक्त आने पर शत्रु बन जाते हैं। उनका कहना है—

"रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु हैं जात॥"

4. बिगड़ी बात—व्यक्ति को सदा सत्कर्म की ओर प्रवृत्त रहना चाहिए। कभी दुष्कर्म का विचार तक नहीं करना चाहिए। एक बार भी बात बिगड़ गई तो लाखों प्रयत्न करने पर भी नहीं बन सकती। रहीमदास कहते हैं—

"बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥"

5. मूल-सींचना—साधना एक की ही उचित है। हमारा चित्त सबकी साधना का रहा तो कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। वृक्ष की मूल को सींचना ही फलदायक हो सकता है। उसकी शाखा, फूल, पत्ती सिंचन से कोई लाभ नहीं। ऐसा करने से तो सम्पूर्ण वृक्ष के सूखने का भय है। रहीमदास कहते हैं—

"एक हि साधै सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहि सींचिवो, फूलहिं फलहि अघाय।

6. सज्जनों की अनुकूलता—सज्जनों का सहारा लेना सदा सुखकारी और लाभकारी होता है। उनके महत्व को समझना चाहिए और उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयास उसी प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार मुक्ताओं का हार टूटने और मुक्ताओं के बिखर जाने पर उन्हें पुनः पिरोने का प्रयास किया जाता है। रहीम का कहना है–

"टूटे सुजन मनाइए, जो टूटै सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिये, टूटे मुक्ताहार।"

इस प्रकार नीति के शाश्वत सिद्धान्तों की रचना करके रहीमदास ने नीति के जगत प्रसिद्ध दोहे साहित्य जगत को प्रदान किये हैं।

प्रश्न 4. "काज परै कछु और हैं, काज सरै कछु और।"
रहीम की इस उक्ति से सम्बन्धित अपने जीवन का कोई अनुभव लिखिये।
(उत्तर सीमा 125 शब्द) (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—व्यक्ति अपने जीवन में न जाने कब किसको अपना ले और किसको त्याग दे, कुछ पता नहीं। अधिकांशतः देखने को मिलता है कि व्यक्ति उपयोगिता के आधार पर जिसे महत्वपूर्ण स्थान देता है, उसे ही उपयोगिता की समाप्ति पर ठुकरा देता है।

मैं इस सम्बन्ध में अपने अनुभव का वर्णन करता हूँ। बात दस वर्ष पूर्व की है जब मैं प्रारम्भिक कक्षा का छात्र था। बुद्धि की कमी कहिये या समझदारी की, मैं कुछ अड़ियल स्वभाव का था। जिसके लिए हठ कर लिया उसे लेकर ही हटा। ऐसा मेरे स्वभाव में बैठ गया था।

एक दिन की बात है कि पाठशाला का समय हो चला था किन्तु वर्षा बन्द होने का नाम नहीं ले रही थी। माँ आज स्कूल न जाने पर बल दे रही थी। पिताजी भी ऐसी वर्षा में न जाने का आदेश दे रहे थे। लेकिन मैंने वर्षा की तरह आज घर पर न रुकने का निर्णय सुना दिया था। जिस प्रकार वर्षा नहीं थम रही थी उसी प्रकार मैं भी घर पर नहीं थम रहा था।

मैंने अपने लिए पिताजी जैसा रेन कोट मँगाने का निर्णय दे दिया था। रेन कोट पहनकर ही इस वर्षा में जाने के मेरे निर्णय पर माता-पिता दोनों ही आश्चर्यचकित थे। उनकी दशा साँप-छछूंदर जैसी हो रही थी।

अन्त में मेरे हठ के समक्ष उन्हें झुकना पड़ा। मेरे लिए रेन कोट (वर्षा-कोट) आया जिसे पहनकर मैं पाठशाला गया। किन्तु जैसा कि लापरवाही बालकों का स्वभाव होता है, मैंने घर आकर उस कोट को उपेक्षा भाव से यों ही डाल दिया। अब मुझे उसकी आवश्यकता ही क्या थी ? वर्षा बन्द जो हो चुकी थी और कल क्या होगा इसका किसी को क्या पता और क्या चिन्ता।

पाँच दिन पश्चात् जब पिताजी ने उपेक्षा भाव से पड़े मेरे उस रेन कोट को देखा तो आग बबूला हो उठे और बोले—

"काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।"

वर्षा में जिस कोट के लिए हठ कर रहे थे, बड़े चाव से पहनकर गये थे, बड़ा अच्छा समझ रहे थे उसी को अब वर्षा न रहने पर ऐसी लापरवाही से डाल दिया है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ 42-43-44—अघाय = पूर्णरूपेण, सन्तुष्ट। **केतिक** = कितनी। **बिहाय** = व्यतीत होना। **थोथे** = ख़ाली, बिना भरे। **गाढ़े दिन** = बुरे दिन। **गंडही** = छोटा गढ़ा। **सर** = वाण, तीर। **रीते** = खाली, भूखे। **अनरीते** = अनीति। **दीठि** = दृष्टि। **त्यारन** = तारने वाला। **सुवन** = पुत्र। **विलत** = विलीन होना। **छितव** = पृथ्वी। **सुआस** = जैसी इच्छा। **मयंक** = चन्द्रमा। **दुरुतर** = कठिन। **अवधि** = समय सीमा।

(1)

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भंवरी के भए, नदी सिरावत मौर॥
कैसे निबहै निबल जन, करि सबलन सों गैर।
रहिमन बसि सागर बिछे, करत मगर सों बैर॥ [पृष्ठ 42]

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहे रहीम रचित रहीम-रत्नावली के दोहावली शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर रहीम ने स्वार्थपूर्ति के पश्चात् की महत्वहीनता तथा सशक्त से शत्रुता के दुष्परिणाम पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—संसार की गति विचित्र है। उसका व्यवहार आश्चर्यजनक है। स्वार्थ प्रेरित मनुष्य अपने कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील है। किन्तु विडम्बना यह है कि स्वार्थ सिद्धि के पश्चात् जिसको उसने स्वार्थ साधन बनाया था और जिसके समान सम्माननीय, महत्वपूर्ण तथा प्रशंसा-पात्र कोई था ही नहीं, उसके प्रति स्वार्थपूर्ति के पश्चात् व्यवहार में जमीन-आसमान का अन्तर आ जाता है।

कवि रहीम ने शादी के समय भाँवरों का उदाहरण देकर अपनी बात की पुष्टि की है कि भाँवरों के समय जो मौहर अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। जिस मौहर तथा मौहरी को दूल्हा-दुल्हिन के सिर पर बड़े शकुन तथा सम्माननीय स्थान प्रदान किया जाता है उसी मौहर तथा मौहरी को विवाह के पश्चात् नदी के जल में सिरा दिया जाता है।

रहीमदास ने बताया है कि निर्बलों को कभी भी शक्तिशाली से शत्रुभाव नहीं रखना चाहिए। शक्तिशाली से शत्रुता करके निःशक्तिवान् का जीवन-निर्वाह सरल नहीं है। जीवन-निर्वाह भी उनके लिए अत्यन्त कठिन है। कवि उदाहरण देता है शक्तिशाली मगरमच्छों का, जिनसे शत्रुता करके जल में निर्वाह करना कठिन है। वह सरलतापूर्वक निगलकर व्यक्ति का जीवन ही समाप्त कर सकता है।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल, सरस हिन्दी भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस।
(iii) **छन्द**—दोहा छन्द। (iv) **अलंकार**—उदाहरण अलंकार।
(v) **अन्य**—संसार की विचित्र दशा तथा शक्तिशाली से शत्रुता का भाव न रखने का सन्देश।

(2)

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥
विपत्ति भए धन ना रहे, होय जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भय भोर॥ [पृष्ठ 43]

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहे रहीम रचित रहीम-रत्नावली के दोहावली शीर्षक से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर रहीम ने बिगड़ी के सुधार को असम्भव तथा विपत्ति में धन न रहने का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि बात के बिगड़ जाने पर उसका सुधार सम्भव नहीं मानता। वह कहता है कि जब कोई बात बिगड़ जाती है तो उसके सुधार के लाखों उपाय भी व्यर्थ सिद्ध होते हैं। उनका यह उदाहरण अकाट्य है कि दूध के फट जाने पर उसको ठीक स्थिति में लाकर मक्खन निकाल पाना जिस प्रकार असम्भव है, उसी प्रकार बात के बिगड़ जाने पर उसको पुनः बनाना सम्भव नहीं है।

रहीमदास के विचार से विपत्ति के आने पर लाखों-करोड़ों की संचित सम्पत्ति भी नष्ट हो जाती है। वह आकाश के चमकते असंख्य सितारों का उदाहरण दे रहे हैं और बता रहे हैं कि जिस प्रकार प्रातःकाल होते ही आसमान के तारे विलय हो जाते हैं, प्रकाश-हीन हो जाते हैं, उसी प्रकार विपत्ति आने पर व्यक्ति का धन भी नष्ट हो जाता है।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—हिन्दी पर फारसी प्रभाव। (ii) **रस**—शान्त रस।
(iii) **छन्द**—दोहा छन्द। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उदाहरण अलंकार।
(v) **अन्य**—बिगड़ी का सुधार सम्भव नहीं है तथा विपत्ति आने पर धन नष्ट हो जाता है। ●●

8 बिहारीलाल

● **गागर में सागर**

बिहारीलाल—जीवन—जन्म—सन् 1603 ● स्थान—बसुआ गोविन्दपुर (ग्वालियर) अब अलवर जिला ● पिता—केशवराय ● मथुरा ससुराल में रहना ● जयपुर राजा जयसिंह के आश्रित कवि ● सतसई की रचना ● प्रत्येक दोहे पर जयसिंह राजा द्वारा एक स्वर्ण-मुद्रा से पुरस्कृत ● मृत्यु—सन् 1663 ●

साहित्य—राजा जयसिंह पर प्रभावकारी दोहा जिसने उसकी विलासिता समाप्त की—

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बँध्यौ, आगे कौन हवाल॥

बिहारी की रसिकता ● श्रृंगार रस की प्रधानता ● रीतिकाल के प्रमुख कवि ● भक्ति वैराग्य, दर्शन, नीति, ज्योतिष सम्बन्धी दोहे ●

रचना—बिहारी सतसई में 719 दोहा तथा सोरठों का संग्रह*

काव्य-सार—भक्ति-भावना से पूर्ण दोहों में भक्तों के उद्धार के लिए उपाय ● श्रीकृष्ण की मधुर छवि का वर्णन ● राधा की कृष्ण के लिए व्याकुलता ● नाम स्मरण से संसार-सागर से पार उतरना सम्भव ● वियोग तथा श्रृंगार रस का वर्णन ● नीति सम्बन्धी दोहों में मन की निर्मलता पर बल, अहंकार का त्याग, अन्ध विश्वास का खण्डन, दुष्ट व्यक्तियों के स्वभाव का वर्णन।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. लगत सुगण सीतल किरन, निसि सुख दिन अवगाहि।
माह ससी-भ्रम सूर-त्यों, रहित चकोरी चाहि॥ दोहे में अलंकार है—

(क) हेतूत्प्रेक्षा (ख) भ्रान्ति
(ग) दृष्टान्त (घ) व्यतिरेक।

उत्तर—[ख] भ्रान्ति।

प्रश्न 2. बिहारी ने संसार-सागर के पार होने का उपाय बताया है—

(क) हरि नाम (ख) माला जपना
(ग) योग (घ) उपकार।

उत्तर—[क] हरि नाम।

प्रश्न 3. बिहारी के दोहों की प्रमुख विशेषता है—

(क) भाषा एवं कल्पना (ख) श्रृंगार वर्णन
(ग) अलंकारों की अधिकता (घ) भावाभिव्यक्ति।

उत्तर—[क] भाषा एवं कल्पना।

प्रश्न 4. मित्रता में दरार पड़ने का कारण है—

(क) धोखा (ख) अभिमान
(ग) स्वार्थ (घ) मतभेद।

उत्तर—[ख] अभिमान।

प्रश्न 5. 'सुन्यौ कहूँ तरु अरक ते अरक-समानु उदोतु' में अलंकार है—

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष
(ग) यमक (घ) उपमा।

उत्तर—[ग] यमक।

प्रश्न 6. 'स्याम-सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा-तीरु।
अँसुवन करति तरौंस को, खिनकु खरौं हों नीरु॥'
उक्त दोहे में किस रस की व्यंजना है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)
(क) शान्त रस (ख) शृंगार रस
(ग) करुण रस (घ) अद्‌भुत रस।
उत्तर—[ख] शृंगार रस।

प्रश्न 7. ''दुसह दुराजु प्रजानु कौं क्यों न बढ़े दुख-दंदु।
अधिक अन्धेरौ जग करत, मिलि मावस रवि-चंदु॥''
इस दोहे में कौन-सा अलंकार है ?
(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) अन्योक्ति (घ) स्वभावोक्ति।
उत्तर—[ग] अन्योक्ति।

प्रश्न 8. ''दुसह दुराजु प्रजानु कौ, क्यों न बढ़े दुख-दंदु।'' में कवि सन्देश दे रहे हैं—
(क) प्रजातन्त्र का (ख) राजतन्त्र का
(ग) कुलीन तन्त्र का (घ) द्वैत शासन का।
उत्तर—[घ] द्वैत शासन का।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''श्याम'' को द्रवित करने के लिए भक्त ने किस साधन को अपनाया है ?
उत्तर—''श्याम'' को द्रवित करने के लिए भक्त ने हरि नाम को अपनाया है।

प्रश्न 2. ''पौष मास'' और 'घर जवां' की तुलना बिहारी के दोहों के आधार पर करिये।
उत्तर—पौष मास में सूर्य का आना-जाना और तेज मालूम ही नहीं पड़ता। उसी प्रकार घर जँवाई का आना-जाना और प्रभाव कुछ नहीं रहता। सूर्य के दिनमान के समान उसका सम्मान घटता जाता है।

प्रश्न 3. गुनी गुनी सबके कहै, निगुनी गुनी न होत। दोहे का मुख्य सन्देश क्या है ?
उत्तर—दोहे का मुख्य सन्देश यह है कि प्रशंसा मात्र से कोई गुणहीन व्यक्ति गुणवान् नहीं हो सकता

**प्रश्न 4. ''को कहि सकै बड़ेन सों लखै बड़ी यो भूल।
दीने दई गुलाब की इन डारनु वे फूल॥''
द्वारा कवि बिहारी क्या बताना चाहते हैं ?**
उत्तर—कवि बिहारी बताना चाहते हैं कि ''समरथ को नहिं दोष गुसाई।'' छोटे व्यक्ति की भूल पर तो सभी की दृष्टि और अँगुली उठती है किन्तु बड़े लोगों की भूल पर नहीं।

प्रश्न 5. ''गयौ गरबु गुन को सरबु गये गवारैं गाँव।'' का मूल भाव समझाइये।
उत्तर—दोहे का मूल भाव यह है कि गुणी व्यक्ति को गुणहीनों में बसने पर हँसी का पात्र बनना पड़ता है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. नायिका के गौर वर्ण और पायंदाज में परस्पर क्या तालमेल है, सन्दर्भित दोहे का अर्थ स्पष्ट करते हुये बताइये।
उत्तर—बिहारी ने लिखा है–*''मानहु विधि तन अच्छ छवि स्वच्छ राखिवे काज।
दृग-पग पौंछन कौं करे भूषन पायन्दाज॥''*

पायन्दाज का कमरे की स्वच्छता से विशेष सम्बन्ध है। पायन्दाज के होने से कमरे में स्वच्छता बनी रहती है। व्यक्ति के पैरों की मिट्टी पायन्दाज से स्वच्छ हो जाने के कारण कमरे में नहीं जा पाती। उसी प्रकार नायिका के गौरे वर्ण की शोभा उसके आभूषणों के पहनने से बनी हुई है। कुदृष्टि का दुष्प्रभाव नायिका पर नहीं पड़ता। आभूषण कुदृष्टि रूपी गन्दगी को रोककर उस नायिका के सौन्दर्य में कोई कमी नहीं आने देते।

प्रश्न 2. प्रस्तुत दोहों के आधार पर बिहारी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—(i) **वर्णन**—काव्य-सौन्दर्य की दृष्टि से बिहारी ने जो लोकप्रियता अर्जित की है वह दोहे जैसे छोटे छन्द के आधार पर कम ही कवियों को प्राप्त हो सकी है। उन्होंने भक्ति, नीति तथा शृंगार प्रधान दोहे लिखकर अपनी कवित्व शक्ति का जो परिचय दिया है वह अनुपम है। भक्ति-पूर्ण उनकी रचना में दीनबन्धु को प्रभावित करने का क्या ही सुन्दर ढंग है—

''नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यो मनो तारन-बिरदु बारक बारनु तारि॥''

कवि बिहारी अपने उद्धार के लिए विचित्र ढंग से कहते हैं—

''कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जग-नाइक, जग-बाइ॥''
''कौन भाँति रहिहै बिरदु अब देखिबी, मुरारि।
बीधे मोसौं आई के गीधे गीधहिं तारि॥''

(ii) **रस**—संयोग तथा वियोग शृंगार का हृदयस्पर्शी स्वरूप रचनाओं में प्राप्त है।

संयोग शृंगार—*''मानहु विधि तन-अच्छ छवि स्वच्छ राखिबै काज।*
दृग-पग पोछैन कौं करे, भूषन पायंदाज॥''

वियोग शृंगार—*''स्याम-सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा-तीरु।*
असुंवन करति तरौंस को खिनकु खरौं हौं नीरु॥''

(iii) **भाषा**—भाषा की सरसता तथा प्रवाह बिहारी की विशेषता थी। ब्रज के साथ आंचलिक शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। मुहावरों का प्रयोग दर्शनीय है–

मूड़ चढ़ाए हूँ रहै, पर्यौ पीठि कच भारु।
रहै गरे परि राखिबौ, तऊ हिए पै हारु॥

(iv) **अलंकार**—शब्दालंकार तथा अर्थालंकार के प्रयोग की पटुता बिहारी को प्राप्त थी। रूपक, दृष्टान्त, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का विशेष रूप से प्रयोग हुआ है।

यमक अलंकार का उदाहरण देखने योग्य है—

गुनी गुनी सबकै कहैं, निगुनी गुनी न होतु।
सुन्यौ कहूँ तरु अरक तें अरक-समानु उदोतु॥

(v) **छन्द**—बिहारी ने अपनी सम्पूर्ण काव्य रचना दोहा तथा सोरठों में की है। चार चरणों के छोटे से छन्द में भावों की गम्भीरता प्रकट करना बिहारी के काव्य में सम्भव हुआ है।

(vi) **श्रेष्ठ मुक्तक**—मुक्तक काव्य का श्रेष्ठ रूप बिहारी के काव्य में प्राप्त है। प्रत्येक दोहे में पूर्ण भाव-वैभव के दर्शन होते हैं। उक्ति में विचित्रता भी दृष्टव्य है—

''कौन भाँति रहिहै बिरदु अब देखिबी मुरारि।
बीधे मोसौं आइ के गीधे गीधहिं तारि॥''

प्रश्न 3. ''बिहारी के दोहों में मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ प्राप्त हैं।'' सिद्ध कीजिए।

उत्तर—काव्य जगत् में बिहारी की प्रसिद्धि उनकी सामासिक शैली के ही कारण है। केवल दो पंक्ति के छन्द में बिहारी ने जितना भाव-समुद्र भरा है, उसे महाकवि आठ-आठ सुन्दर पंक्तियों

में भी सफलता से नहीं समेट पाये हैं। बिहारी के दोहों में कल्पना एवं भाव का सुन्दर और सन्तुलित सम्मिश्रण सहृदय के हृदय को गहराई तक छू जाता है। उनमें ऐसी कसावट और गढ़ावट है कि एक-एक दोहा स्वयं में तस्वीर है।

रस का स्वरूप भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पूर्ण हुआ करता है। किसी सरल रचना की उत्कृष्टता का प्रमाण उसमें इन सभी अंगों का सन्तुलित समावेश रहना है। बिहारी का प्रमुख रस श्रृंगार है। संयोग एवं वियोग दोनों ही पक्षों को परिपक्वता के साथ उन्होंने दोहों में प्रस्तुत किया है। विभाव में आलम्बन एवं उद्दीपन पक्ष आते हैं। जिसे आधार बनाकर रस आश्रय में जागता है वह व्यक्ति या वस्तु आलम्बन होती है। बिहारी ने नारी को ही आलम्बन एवं उद्दीपन रूप से ग्रहण किया है। एक नायिका का आलम्बन चित्र देखिए जो नायक के हृदय को उद्दीपित और आन्दोलित किये दे रहा है—

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय॥

इसी प्रकार अनुभावों के वर्णन में बिहारी के दोहों की सामर्थ्य दर्शनीय है। नायिका को अपने प्रिय की पत्रिका प्राप्त हुई है। इस पाती को पाकर प्रकटित होने वाले उसके अनुभावों को बिहारीलाल जी ने किस खूबसूरती से अपने दोहे के 'कैमरे' में बन्दी बना लिया है—

कर लै, चूमि, चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेटि।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति, धरति समेटि॥

एक पूर्ण अनुभाव चित्र दो पंक्तियों में प्रस्तुत है।

इसी प्रकार संचारियों के भी पूर्ण चित्र दोहों में अंकित हैं। चिन्ता, हर्ष, शंका आदि क्षण-क्षण संचरित भावों को संचारी कहा गया है। एक संचारी का अंकन दर्शनीय है। नायक अपनी प्रियतमा की वेणी गूँथ रहा है, परन्तु स्पर्श मात्र से उसे रोमांच और स्वेद हो उठा है अतः नायिका उसे वर्जित कर रही है कि कहीं कष्ट से सुखाए उसके बाल भीग न जाएँ—

रहौ, गुही बैनी, लखै गुहिबे के त्यौनार।
लागे नीर चुचान, जे नीठि सुखाए बार॥

मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ हमें बिहारी के दोहों में प्राप्त होती हैं। इन दोहों में कोई पूर्वापर (आगे-पीछे का) कथा सूत्र नहीं है। प्रत्येक दोहा स्वयं में स्वतन्त्र, पूर्ण तथा अर्थ गर्भित है। 'गागर में सागर' जैसे भावों को सँजोने वाले इन दोहों के विषय में प्रचलित यह उक्ति सर्वथा उचित है—

सतसय्या के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर॥

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— पृष्ठ 46 – 47 अनाकनी = अनसुनी। **गुहारि** = पुकार। **गीधे** = ललचाने। **बारनु** = हाथी। **जरितु** = जडाऊ, काम का। **तरनिजा** = यमुना। **उदोत** = प्रकाश। **अवगाहि** = डूबकर। **तरु अरक** = मदार का पेड़। **आधु** = आदर। **चटक** = स्फूर्ति। **रज** = धूल, मिट्टी। **बरिया** = अवसर। **करिया** = करने वाला। **पायंदाज** = पावदान, पैर साफ करने का। **पति** = लज्जा। **दामु** = पैसे। **परयो पीठि** = बिना सम्मान रहना।

(1)

गुनी गुनी सबकै कहैं निगुनी गुनी न होतु।
सुन्यौ कहूं तरू अरक ते अरक-समानु उदोतु॥

दुसह दुराजु प्रजानु कौं क्यौं न बढ़े दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत मिलि मावस रवि-चंदु॥

प्यासे दुपहर जेठ के फिरे सबै जलु सोधि।
मरूधर पाइ मतीरू ही मारू कहत पयोधि॥ [पृष्ठ 47]

सन्दर्भ—प्रस्तुत दोहे बिहारीलाल रचित **बिहारी सतसई** से अवतरित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहों में गुणों के महत्व, दो राजाओं से दुःखी प्रज़ा तथा मारवाड़ के समुद्र के विषय में कवि कहता है—

व्याख्या—किसी गुणहीन को गुणी कहने मात्र से वह गुणी नहीं हो सकता जब तक कि वास्तव में उसमें गुण न हों। कवि अर्क का उदाहरण देते हुए कहता है कि आक को अर्क भी कहा जाता है लेकिन उससे अर्क (सूर्य) के समान प्रकाश सम्भव नहीं है।

द्वैत शासन की बुराई करते हुए कवि बिहारीलाल कहते हैं कि द्वैत शासन प्रणाली में प्रजा पर असहनीय अत्याचार होते हैं। प्रजा दुःखी रहती है। क्रान्ति अनिवार्य हो जाती है। द्वन्द्वों की कोई सीमा नहीं रहती। कवि अमावस्या का उदाहरण देते हुए अपनी बात की पुष्टि करते हुए कहता है कि सूर्य तथा चन्द्र अमावस्या को एक राशि पर होते हैं। फल यह होता है कि संसार में अमावस्या को सर्वाधिक अन्धकार होता है।

अन्तिम दोहे में बिहारी कहते हैं कि आवश्यकतानुसार प्रत्येक वस्तु अमूल्य है। जो व्यक्ति तृषा से व्याकुल हो, ज्येष्ठ की भीषण गर्मी हो, जल की प्राप्ति मारवाड़ जैसे प्रान्त में अत्यन्त दुष्कर हो रही हो, ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति को संयोग से तरबूज ही मिल जाय तो वह उसके लिए समुद्र से कम नहीं है।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—मुहावरेदार ब्रज भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस।
(iii) **छन्द**—दोहा छन्द। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा अन्योक्ति अलंकार।
(v) **अन्य**—गुणवान ही गुणी कहला सकता है। द्वैत शासन के दोष तथा सभी का अपने-अपने स्थान पर महत्व है।

●●

9 मैथिलीशरण गुप्त

● गागर में सागर

मैथिलीशरण गुप्त—जीवन—जन्म—सन् 1886 ● स्थान—चिरगाँव (झाँसी) ● पिता—सेठ रामचरण ● मृत्यु—सन् 1964 ● पिता के संस्कारों से पूर्ण ● खड़ी बोली के परिष्कृत रूप को रचनाओं में स्थान ● अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग ● प्रबन्ध, खण्ड, गीतिनाट्य तथा छायावादी गीतों को प्रमुखता ● भारतीय संस्कृति के अमर गायक ● राष्ट्र कवि ● बारह वर्ष तक राज्य सभा के सदस्य ●

रचनाएँ—(1) पंचवटी (2) रंग में भंग (3) हिन्दू (4) गुरुकुल (5) जयद्रथ-वध (6) अनघ (7) साकेत (8) यशोधरा (9) नहुष (10) द्वापर (11) कुणाल गीत (12) विष्णु प्रिया (13) मेघनाद वध (14) जय भारत (15) काबा और कर्बला आदि।

काव्य-सार—मातृ मूर्ति तथा अपनी भाषा—भारत-चित्रण ● भारतीय संस्कृति की महानता ● अपनी भाषा पर प्यार ● उसके विस्तार पर जोर ● ज्ञान का प्रसाद देने वाली।

राष्ट्र भारती तथा श्रमजीवी—संस्कृत तथा संस्कृति पर बल ● सहयोग-भावना की आवश्यकता ● हम सब भारत माँ की सन्तान हैं ● श्रमजीवी भी सम्मान के पात्र हैं ● उनका सम्मान फल तथा खाद्यान्न वृद्धि में सहायक।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "तेरा अतल अतीत काल है, आराधन के योग्य-समर्थ।" इस पंक्ति में अलंकार है—

(क) यमक (ख) उपमा
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास।

उत्तर—[घ] अनुप्रास।

प्रश्न 2. श्रम-जल शब्द में कौन-सा अलंकार है—

(क) रूपक (ख) लाटानुप्रास
(ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर—[क] रूपक।

प्रश्न 3. गुप्तजी को 'राष्ट्र कवि' किस रचना से माना जाने लगा—

(क) यशोधरा (ख) भारत भारती
(ग) जयद्रथ-वध (घ) जय भारत।

उत्तर—[ख] भारत-भारती।

प्रश्न 4. मैथिलीशरण गुप्त ने किस भाषा को राष्ट्रीय भावों की भाषा माना है—

(क) संस्कृत (ख) हिन्दी
(ग) उर्दू (घ) फारसी।

उत्तर—[ख] हिन्दी।

प्रश्न 5. भारत भूमि का रूप है—

(क) निराला (ख) साहसिक
(ग) भवानी का (घ) सरस्वती का।

उत्तर—[ग] भवानी का।

प्रश्न 6. "हम रक्त चूसते नहीं"
नहीं खाते जब स्वेद बहाते हैं।" में किसका महत्व बताया गया है—

(क) जमींदार का (ख) समाजवादी का
(ग) उद्योगपति का (घ) श्रमजीवी का।

उत्तर—[घ] श्रमजीवी का।

प्रश्न 7. "तेरा चन्द्र वदन पर विकसित शान्ति-सुधा बरसाता है,
मलयानिल-निश्वास निराला नव जीवन सरसाता है।" में अलंकार बताइये—

(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक।

उत्तर—[ख] रूपक।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. मैथिलीशरण गुप्त की दृष्टि में सबसे बड़ा दान क्या है ?

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त की दृष्टि में सबसे बड़ा दान भाषा का है जो ज्ञानार्जन में सहायक है।

प्रश्न 2. "मौन-मग्न हो रही देखकर सरस्वती-विधि वाणी।" में मैथिलीशरण गुप्त ने कौन-सा भाव प्रकट किया है ?

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त ने यह भाव प्रकट किया है कि मातृभूमि की महिमा अपार और अवर्णनीय है। ब्रह्मा और सरस्वती भी महिमा का वर्णन करने में असमर्थ हैं।

प्रश्न 3. भारत माँ के आभूषण किसके बने हैं ?

उत्तर—भारत माँ के आभूषण फूलों की मालाओं के बने हैं।

प्रश्न 4. हिन्दी भाषा के प्रति कवि ने क्यों प्रेरित किया है ?

उत्तर—हिन्दी भाषा के प्रति कवि ने इसलिए प्रेरित किया है ताकि हम अपने भावों को भली-भाँति व्यक्त कर सकें।

प्रश्न 5. "क्या इस पृथ्वी के पुत्र तुम्हीं, यह भूमि हमारी भी माता।" द्वारा कवि ने कृषक की किस वेदना को प्रकट किया है ?

उत्तर—कवि ने कृषक की यह वेदना प्रकट की है कि अपने श्रम से अन्न उत्पादन करने पर भी वह उचित फल प्राप्त नहीं कर पाता। उसकी दशा अत्यन्त दयनीय बनी हुई है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "गुप्त जी के प्रभुवर किस भाव के भूखे हैं ?" राष्ट्र भारती कविता के परिप्रेक्ष में स्वभाषा के महत्व एवं प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त के प्रभुवर "स्नेह-भाव" के भूखे हैं। उन्होंने एक भाषा के स्नेह का महत्व बताते हुए राष्ट्र-भारती में बताया है कि एक भाषा सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में आबद्ध कर सकने में समर्थ है। शंकराचार्य ने देश की एकता का प्रयास किया। स्वतन्त्रता का प्रयत्न किया। अखण्डता की रक्षा के लिए देश की भाषा से प्रेम करने का सन्देश दिया।

दो भाषाओं का प्रेम, भावों की अभिव्यक्ति में बाधक रहता है। अतः एक से अधिक भाषाओं का प्रचलन हमारी बुद्धिमता का प्रमाण नहीं है।

हमें एक ही भाषा के महत्व को स्वीकार करना चाहिए ताकि हमें एकता के सूत्र में बाँधा जा सके।

प्रश्न 2. कवि ने मातृभूमि के रूप में भवानी रूप के दर्शन किये हैं। भवानी की विशेषताओं के आधार पर मातृभूमि के गुणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—कवि ने मातृ-मूर्ति कविता की रचना की है। उन्होंने मातृभूमि के रूप में भवानी के दर्शन किये हैं। भवानी को विश्व जननी माना गया है। पार्वती और माँ दुर्गा को भवानी नाम से जाना जाता है। देवता भी संसार की इस माँ की महिमा को स्वीकार करते हैं और महिमा का बार-बार वर्णन करते हैं। कवि कहता है—

''तेरा चन्द्र-वदन पर विकसित शान्ति सुधा बरसाता है,
मलयानिल-निश्वास निराला नवजीवन सरसाता है।
हृदय हरा कर देता है यह अंचल तेरा धानी,
जय जय भारत-भूमि भवानी।

संसार की माँ, अपनी सन्तान का पालन-पोषण करने वाली, शान्ति सुधा की वर्षा करने वाली, नवजीवन-संचार करने वाली और पालन-पोषण करने वाली है।

भवानी ही हिमालय की पुत्री, गंगा-यमुना की जन्म-स्थली, धन धान्य की रक्षक, वरदानी, अन्यायी की संहारक है। भूत, भविष्य, वर्तमान की दृष्टा तथा मुक्ति प्रदायिनी है।

प्रश्न 3. 'अपनी भाषा' कविता के आधार पर भाषा के सामर्थ्य को स्वीकारते हुए अपने विचार प्रकट करिये।

उत्तर—कवि मैथिलीशरण गुप्त ''अपनी भाषा'' कविता में कहते हैं—

करो अपनी भाषा पर प्यार।
जिसके बिना मूक रहते तुम, रुकते सब व्यवहार॥
जिसमें पुत्र पिता कहता है, पत्नी प्राणाधार,
और प्रकट करते हो जिसमें तुम निज निखिल विचार।

भाषा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति को बोलने की क्षमता प्रदान करती है। भाषा ही गूंगेपन को दूर करके पिता, पत्नी कहना ही नहीं, अपने विचार प्रकट करने के योग्य बनाती है।

ईश्वर के व्यक्ति पर जितने भी उपकार हैं, उनमें भाषा का ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। भाषा के माध्यम से ही हमें पूर्वजों का ज्ञान प्राप्त हुआ है। हमारे भविष्य की आधारशिला का श्रेय भी भाषा को ही है। अत: भाषा को गले के हार के सदृश प्रिय समझकर अपनाना और सम्मान प्रदान करना चाहिए। कवि मैथिलीशरण गुप्त 'अपनी भाषा' में कहते हैं—

भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का वह दान।
असंख्यक हैं उसके उपकार,
करो अपनी भाषा पर प्यार।

भाषा का महत्व सर्वोपरि बताते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने उससे प्रेम करने तथा उसका प्रसार करने की आवश्यकता पर बल दिया है और बताया है कि भाषा द्वारा हमें सब प्रकार की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

प्रश्न 4. अपनी भाषा के लिए कवि आपसे क्या अपेक्षायें करता है ? आप अपनी मातृभाषा की उन्नति के लिए क्या-क्या कर सकते हो, विस्तारपूर्वक समझाइये।

उत्तर—'करो अपनी भाषा से प्यार' मैथिलीशरण गुप्त के दो शब्द एक सन्देश है भारत के नागरिकों के लिए जिनके द्वारा हमसे अपेक्षा की गई है कि मूकता से मुक्ति, ईश्वरीय ज्ञान, पूर्वजों के ज्ञानादि के लिए हमें अपनी भाषा से प्यार करना चाहिए तथा उसके प्रचार और प्रसार में जुट जाना चाहिए। हमसे कवि ने अपेक्षा की है कि भाषा के उपकारों को ध्यान में रखकर उसे अपने गले का हार बना लेना चाहिए।

मातृभाषा की उन्नति हम सभी देशवासियों का कर्तव्य है। इस कर्तव्य के भली-भाँति निर्वहन के लिए हम सबको मातृभाषा के शब्द भण्डार को अधिक सुसमृद्ध बनाने का प्रयास करना चाहिए। पारिभाषिक शब्दों की तकनीकी शब्दावली का उचित निर्माण भी हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

कार्यालयों में अपनी भाषा के प्रयोग पर बल दिया जाना चाहिए। विदेशी भाषा के ग्रन्थों का अनुवाद होना चाहिए। यह अनुवाद मातृभाषा में करना हमारा कर्तव्य है ताकि मातृभाषा की उन्नति का सुअवसर प्राप्त हो।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति तथा प्रयोग के लिए मातृभाषा को समर्थ बनाकर इसकी उन्नति की जा सकती है। अतः हम सबको नि:स्वार्थ भाव से मातृभाषा की उन्नति के लिये समर्पित हो जाना चाहिए।

प्रश्न 5. भूदान आन्दोलन की भूमिका में श्रमजीवी कविता का महत्व बताइये।

उत्तर—श्रमजीवी सम्मान का भागी है, अपने परिश्रम से वह हम सबको अनाज देता है। कुदाली से भूमि खनन करके मूल्यवान रत्न हमें प्रदान करता है। विकसित पुष्प, फलों से लदी डालियाँ उनके ही परिश्रम का परिणाम हैं। किन्तु आश्चर्य का विषय है कि पसीना बहाकर, हमें ऊँचे-ऊँचे भवनों में स्थापित करके भी वह अपना जीवन कुटिया में व्यतीत करता है।

विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन की भूमिका में श्रमजीवी कविता का अत्यधिक महत्व है। श्रमजीवी ही वास्तविक दाता है किन्तु समय और समाज की समझ ने उसे पूर्णतः आश्रित बना दिया है। दानी भिक्षुक बन गया है। श्रमजीवियों की कृपा पर पलने वाले ऊँचे-ऊँचे भवनों के स्वामी बनकर अपना स्वामित्व जता रहे हैं। मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं—

खिलते हैं कितने फूल नये, कितने नवीन फल फलते हैं।
हम तुम्हें बिठाकर भवनों में, अपने कुटीर को चलते हैं॥

श्रमजीवी कविता भूदान आन्दोलन की प्रेरक है। इस कविता द्वारा यह सन्देश दिया गया है कि यह भूमि सबकी माता है। हम सब उसके सपूत हैं। इस भूमि पर सबका समान अधिकार है। असमानता किसी भी रूप में उचित नहीं है। श्री गुप्त जी कहते हैं—

अप्राप्य नहीं लेते हैं हम कहते हैं यदपि तम्हें दाता।
क्या इस पृथ्वी के पुत्र तुम्हीं यह भूमि हमारी भी माता।
हम रक्त चूसते नहीं, नहीं खाते जब स्वेद बहाते हैं।
निज रोम-रोम भर अपने ही श्रम जल से नित्य नहाते हैं।

इस प्रकार श्रमजीवी कविता का भूदान आन्दोलन की भूमिका में अत्यन्त महत्व है।

प्रश्न 6. 'मातृ-मूर्ति' कविता के भाव सौन्दर्य को उदाहरण सहित अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त ने भारत को भवानी के रूप में अभिव्यक्त किया है। वह भारत भूमि की वन्दना करते हुए कहते हैं—

जय-जय भारत भूमि भवानी।
अमरों ने भी तेरी महिमा बारंबार बखानी।

भारत को भवानी के रूप में मानते हुए, उसकी जय-जयकार करते हुए कवि उसकी महिमा का गान करता है और भारत भवानी के मुख को चन्द्रमुखी बताते हुए शान्ति-सुधा बरसाने वाला तथा नवजीवन का संचार करने वाला मानता है। वन्दना में कवि कहता है—

तेरा चन्द्र-वदन पर विकसित शान्ति-सुधा बरसाता है,
मलयानिल-निश्वास-निराला नवजीवन सरसाता है।

भारत माँ का हरा आंचल हृदय को भी हरा कर देता है। हिमालय भारत का हृदय है जहाँ से गंगा का उद्गम हुआ है। यह गंगा भारत को गौरवान्वित करती है। यमुना देश को पवित्रता का श्रेय देती है। भारत की शोभा का वर्णन करने में सरस्वती भी असमर्थ है। मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—

मौन मग्न हो रही देखकर सरस्वती-विधि वाणी,
जय-जय भारत-भूमि-भवानी।

पुष्पों के हार के आभूषण धारण किये हुए, तारों से जड़ा चँदोवर धारण किये, अलौकिक सौन्दर्य से पूर्ण भारत-भवानी वीर अमृत-सुपुत्रों की शंकाओं का हरण करती है।

समुद्र को भारत-माँ की करधनी मानते हुए कवि ने भारत-भवानी-माँ को विश्वपालिकी और सत्य-सिंहवाहिनी बताते हुए कहा है—

सत्य-सिंह-वाहिनी बनी तू विश्व पालिनी रानी,
जय-जय भारत-भूमि-भवानी।

भारत माता की आन्तरिक विशेषताओं को प्रकट करते हुए कवि भारत-भवानी से कर्तव्य पालन का आशीर्वाद चाहता है और राष्ट्र प्रेम के वरदान की अपेक्षा करता है।

अलंकारों के सुन्दर प्रयोग तथा गीत शैली की सुन्दर रचना भाव सौन्दर्य की वृद्धि में अधिक सहायक सिद्ध हुई है।

प्रश्न 3. इन कविताओं (मातृ-मूर्ति, अपनी भाषा, राष्ट्र-भारती तथा श्रमजीवी) के आधार पर गुप्त जी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—मैथिलीशरण गुप्त को काव्य-जगत का अनुपम रत्न माना जाता है। धार्मिक एवं सामाजिक विषयों को अपनी रचना का आधार बनाकर उन्होंने भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्र प्रेम का सन्देश दिया।

भाषा—साहित्यिक, सरस खड़ी बोली में गुप्त जी ने काव्य की रचना की, जो भाषा का उन्नत रूप प्रस्तुत करने में समर्थ सिद्ध हुई। लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रभावशाली प्रयोग, भाषा की प्रौढ़ता उनको सफल कवि बनाने में समर्थ है।

शैली—मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में प्रबन्ध एवं मुक्तक रचना शैली के दर्शन होते हैं। लाक्षणिकता उनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। प्रबन्ध काव्य में उन्होंने मधुर गीतों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

अलंकार—गुप्तजी के काव्य में अनुप्रास, रूपक तथा मानवीकरण अलंकारों का विशेष रूप से स्थान है।

छन्द—गुप्तजी ने मालिनी, गीतिका, घनाक्षी, पद आदि छन्दों का सफल प्रयोग किया है। अतुकान्त कविता को भी उन्होंने अपने काव्य में स्थान दिया है। 'सिद्धराज' अतुकान्त कविता का प्रमुख उदाहरण है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— **पृष्ठ 50–51-52** — **शुचि** = पवित्र। **अज** = जो नष्ट न हो। **विश्व पालिनी** = संसार का पालन-पोषण करन वाली। **सुकृती** = पुण्य कार्य करने वाला। **सिराने** = सिर की ओर। **शुचितर** = पवित्र, श्रेष्ठतम। **वश्यता** = परतन्त्रता, गुलामी। **क्षेत्राधिप** = क्षेत्र का स्वामी। **आनि** = प्रतिज्ञा।

(1)

जय जय भारत-भूमि-भवानी,
अपरों ने भी तेरी महिमा बारंबार बखानी।
तेरा चन्द्र-वदन पर विकसित शान्ति-सुधा बरसाता है,
मलयानिल-निश्वास निराला नवजीवन सरसाता है।
हृदय हरा कर देता है यह अंचल तेरा धानी,
जय जय भारत-भूमि-भवानी। [पृष्ठ 50]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित मातृ मूर्ति शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि भारत माँ को भवानी के रूप में चित्रित करते हुए कह रहा है—

व्याख्या—हे भारत-भवानी तेरी जय हो। तुम्हारी महिमा का कोई अन्त नहीं है। देवताओं ने तुम्हारी प्रशंसा सदा ही की है।

हे माँ ! तुम्हारा मुख चन्द्रमा के सदृश है। वह सदा शान्ति रूपी अमृत वर्षा करने वाला है।

दक्षिण से बहने वाली मलयानिल ऐसी प्रतीत होती है जैसे तुम्हारी सुगन्धित नि:श्वास हों जो जीवन को सुख से परिपूर्ण करने वाली, नवजीवन दाता हों। हरे-भरे क्षेत्र ही तुम्हारा हरा आंचल है जो हृदय को आनन्द से पूर्ण करने वाला है।

हे भारत भवानी ! तुम्हारी सदा ही विजय हो।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरस तथा सरल खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त रस।
(iii) **छन्द**—गीत। (iv) **अलंकार**—रूपक तथा अनुप्रास अलंकार।
(v) **अन्य**—भारत भूमि को भवानी का रूप दिया है।

(2)

मैं ही क्या, मेरा प्रभुवर भी सदा भाव का भूखा है,
भाव परन्तु एक भाषा के स्नेह बिना सब रूखा है।
संस्कृतिमय संस्कृत से ही निज उत्तर दक्षिण एक रहे,
तभी न शंकर-रामानुज के ज्ञान-भक्ति के स्रोत बहे।
एक देश में द्विभाषिणी की बाधाएँ अब कौन सहे ?
मिलकर भी हम आज परस्पर बने रहे क्या मूक अहे।
आई जब यह स्वतंत्रता की ऊषा स्वर्णमयूखा है,
मैं ही क्या, मेरा प्रभुवर भी सदा भाव का भूखा है। [पृष्ठ 51]

सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित राष्ट्र भारती शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर गुप्तजी राष्ट्र भाषा महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ते हैं—

व्याख्या—मेरा आराध्य देव आत्मिक भावों का भूखा है। हृदय में सुन्दर भावों के समावेश के लिए राष्ट्र भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अत: हमारे हृदय में किसी एक भाषा के प्रति पूर्ण आस्था आवश्यक है। राष्ट्र भाषा के प्रति स्नेह की आवश्यकता है। भावाभिव्यक्ति के लिए एक भाषा की अपेक्षा है।

एक समय था जब सम्पूर्ण देश में संस्कृत भाषा का महत्त्व था। उत्तर तथा दक्षिण के वासियों में कोई भेद-भाव नहीं था। हम सब एकता के सूत्र में आबद्ध थे। दक्षिण में उत्पन्न शंकराचार्य तथा रामानुजाचार्य ने संस्कृत को अपने विचारों को व्यक्त करने में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। संस्कृत द्वारा ज्ञान तथा भक्ति के विचार प्रवाहित किए।

किसी देश की सांस्कृतिक तथा सामाजिक एकता के लिए राष्ट्र भाषा को महत्त्व प्राप्त होना चाहिए। भारत में अँग्रेजी के प्रचलन से विभिन्न बाधाएँ उत्पन्न होने की आशंका है। सबसे बड़ी बाधा तो यह है कि हम परस्पर विचार विनिमय में चुप्पी साधे हुए हैं। मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि अब हम स्वतन्त्र हैं। हमें स्वतन्त्रता की इस नई चेतना का स्वागत करने के लिए देश की राष्ट्र भाषा में वन्दना करनी चाहिए। हमें अपनी भाषा में भावों को व्यक्त करने की ललक होनी चाहिए। राष्ट्र भाषा को गौरव सूचक मानकर उसे प्रतिष्ठित करने का प्रयास करना चाहिए।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय।
(iv) **अलंकार**— अनुप्रास। (v) **अन्य**—राष्ट्र-भाषा-प्रेम।

(3)

लेकर कुदाल खनते हैं हम तब क्या-क्या रत्न निकलते हैं,
खिलते हैं कितने फूल नये, कितने नवीन फल फलते हैं।
हम तुम्हें बिठाकर भवनों में अपने कुटीर को चलते हैं,
पाकर अपूर्ण ही विनिमय में खाकर कदन्न हम पलते हैं।
सूची के अग्रभाग पर भी तुमसे है जहाँ दिया जाता।
क्या इस पृथिवी के पुत्र तुम्हीं, यह भूमि हमारी भी माता। [पृष्ठ 52]

सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित श्रमजीवी शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि श्रमजीवियों के परिश्रम का वर्णन करते हुए उनके शोषण की गाथा कह रहा है।

व्याख्या—श्रमजीवियों के जीवन की गाथा भी आश्चर्यचकित करने वाली है। वह हाथ में कुदाल लेकर इस भूमि का खनन करते हैं। उनके श्रम के फलस्वरूप मूल्यवान रत्न हमें प्राप्त होते हैं। विकसित पुष्पों और प्राप्त फलों में श्रमिकों का श्रम स्पष्ट दर्शनीय है।

श्रमिकों का कहना है कि हमारे परिश्रम से ही अधिकाधिक धन-धान्य का उत्पादन होता है। देश धनाढ्य बनता है। रहने को प्रासाद और उच्च भवन मिलते हैं। लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि ऊँचे-ऊँचे भवन देने वाला यह श्रमजीवी स्वयं कुटिया में अपना जीवन-यापन करता है। श्रम का उचित पुरस्कार प्राप्त नहीं होता। बहुत थोड़ा धन उस श्रम के पारिश्रमिक रूप में प्राप्त होता है। भोजन भी शुद्ध नहीं प्राप्त होता जिससे सुपोषण हो सके। कुपोषण का शिकार श्रमजीवी थोड़े तथा खराब अन्न से भी अपना जीवन व्यतीत करने में कोई संकोच नहीं करते। धनी व्यक्ति सुई की नोंक के तुल्य भी हमारे श्रम के बदले मूल्य नहीं देते।

श्रमजीवी अन्त में एक प्रश्न रखता है—क्या यह पृथ्वी माता केवल तुम्हारी ही है ? क्या यह पृथ्वी माता हमारी नहीं है ? स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए श्रमिकों का कहना है कि यह पृथ्वी तो सबकी माता है। तुम्हारी भी माता है और हमारी भी जननी है। अतः किसी भी प्रकार की असमता या असमान व्यवहार उचित नहीं है।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—सरल खड़ी बोली। (ii) **रस**—वीर रस।

(iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास।

(v) **अन्य**—श्रमिकों की दयनीय दशा का वर्णन।

10 जयशंकर प्रसाद

● गागर में सागर

जयशंकर प्रसाद—जीवन—जन्म—सन् 1889 ● स्थान—वाराणसी ● पिता—देवीप्रसाद ● शिक्षा—सातवीं के पश्चात् घर पर ही अध्ययन ● उन्नीस वर्ष की अवस्था में ही कवि-प्रतिभा-परिचय ● अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी की घर पर ही शिक्षा ● संस्कृत से विशेष प्रेम ● वेद तथा उपनिषदों का अध्ययन ● मृत्यु—1937 ●

साहित्य—अल्पायु में ही बहुमुखी प्रतिभा का परिचय ● मूलत: कवि ● नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध रचना ● कामायनी पर मंगला प्रसाद पुरस्कार ●

रचनाएँ—काव्य—झरना, लहर, करुणालय, प्रेम पथिक, चित्राधार, आँसू, कानन कुसुम तथा कामायनी।

नाटक—विशाख, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, राज्यश्री, ध्रुव स्वामिनी, जनमेजय का नाग यज्ञ आदि।

उपन्यास—तितली तथा कंकाल।

काव्य-सार—'ले चल वहाँ भुलावा देकर' में जीवन को नाव का रूप देकर शान्त वातावरण में जीवन नौका को ले जाना चाहता है ● मधुर माधवी संध्या में प्रकृति का मनोहारी रूप में चित्रण है ● पेशोला की प्रतिध्वनि द्वारा मातृभूमि की रक्षा और स्वतन्त्रता का सन्देश ● राणा प्रताप का मेवाड़ गौरव की रक्षा का आह्वान।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'जहाँ साँझ-सी जीवन छाया' इस पंक्ति में निहित अलंकार है—

(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) यमक (घ) दृष्टान्त।

उत्तर—[क] उपमा।

प्रश्न 2. 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' में प्रसाद की भावना है—

(क) पलायन की (ख) रहस्यवाद की
(ग) छायावाद की (घ) जातीयता की।

उत्तर—[क] पलायन की।

प्रश्न 3. 'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद का भाव व्यक्त हुआ है—

(क) कर्म का (ख) आनन्द का
(ग) व्यवहार का (घ) श्रद्धा का।

उत्तर—[ख] आनन्द का।

प्रश्न 4. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' में प्रसाद जी ने सन्देश दिया है—

(क) आत्माभिमान का (ख) मेवाड़ गौरव का
(ग) देश स्वाधीनता का (घ) मानव रक्षा का।

उत्तर—[ग] देश स्वाधीनता का।

प्रश्न 5. 'मधुर माधवी संध्या' में प्रसाद जी के सूनेपन का कारण है—

(क) स्मृतियाँ (ख) व्यक्तिगत भावना
(ग) अकेलापन (घ) प्रकृति का सूनापन।

उत्तर—[घ] प्रकृति का सूनापन।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'ले चल वहाँ भुलावा देकर' कविता का मुख्य भाव क्या है ?

उत्तर—'ले चल वहाँ भुलावा देकर' कविता का मुख्य भाव यह है कि जीवन के यथार्थ को भूलकर कवि कल्पना लोक में शान्ति एवं प्रेम का साम्राज्य चाहता है।

प्रश्न 2. प्रसाद जी ने क्षितिज के माध्यम से किस रूप का चित्रण किया है ?

उत्तर—प्रसाद जी ने क्षितिज के माध्यम से जीवन के सुख-दुख के मिलन का चित्रण किया है।

प्रश्न 3. कवि के विचार से सन्ध्या की उदासी का क्या कारण है ?

उत्तर—कवि के विचार से सन्ध्या की उदासी का कारण कमल-पुष्पों का मुरझा जाना है।

प्रश्न 4. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' में प्रसाद जी ने किस ध्वनि का स्मरण किया है ?

उत्तर—'पेशोला की प्रतिध्वनि' में प्रसाद जी ने राणा की शौर्यमयी वाणी का स्मरण किया है।

प्रश्न 5. 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता की कोई दो काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—पेशोला की प्रतिध्वनि कविता की दो काव्यगत विशेषताएँ हैं—

(1) भावनात्मक सन्देश (2) ओजपूर्णता।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'अमर जागरण उषा नयन से बिखराती हो ज्योति घनी रे।' इस पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए। **(उत्तर सीमा 60 शब्द)**

उत्तर—जयशंकर प्रसाद का अनुभव था कि जींवन में सत् भी है और असत् भी। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर दोनों को ही महत्वपूर्ण भी बताया था। अतः सफलता प्राप्त न होने पर दुःख, चिन्ता अथवा कुण्ठां का कोई कारण नहीं। अपनी जीवन-नौका को ऐसे स्थान पर ले चलने को कवि कहता है जहाँ अन्धकार न हो। जहाँ उजाला हो। अमर जागरण की ज्योति से जहाँ का वातावरण प्रकाशित हो रहा हो। ऐसे ज्योति-स्थान को चलने के लिए जयशंकर प्रसाद जी अपने जीवन-नैया-खेवन हार से निवेदन कर रहे हैं।

प्रश्न 2. 'मधुर माधवी सन्ध्या' में कवि इतना सूना क्यों होना चाहता है ?

उत्तर—'मधुर माधवी सन्ध्या' में प्रकृति की मनोरम छटा का वर्णन करते हुए जयशंकर प्रसाद कहना चाहते हैं कि सूर्यास्त के समय अपनी लालिमा को समेटते हुए सूर्य पश्चिम में लुप्त होने लगता है। हवा का प्रकोप कम होने लगता है। कोकिल की कूक भी सुनना कठिन हो जाता है। ऐसे उदासी के वातावरण में मन और भी अधिक उदास हो जाता है।

कवि और भी अधिक, प्रकृति के साथ उदास होने लगता है और सूनापन को प्रमुखता देने लगता है। जब वह तारों की जगमगाहट देखता है। जब वह चन्द्रमा की किरणों को देखता है और देखता है उन कमलों को जो सन्ध्या से पूर्व विकसित थे, अब मुरझा गये हैं, उदास हो गये हैं तो कवि भी उनकी उदासी के साथ उदास हो जाता है और प्रकृति की इस उदासी के साथ स्वयं भी सूनापन को महत्व देने लगता है।

प्रश्न 3. प्रसादजी ने क्षितिज के माध्यम से किस प्रतीकात्मक रूप को चित्रित किया है?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद ने क्षितिज के माध्यम से पृथ्वी और आकाश के मिलन को चित्रित करते हुए यह बताया है कि जीवन भी एक ऐसा क्षितिज है जहाँ सुख-दुःख का मिलन होता है। सभी के जीवन में सुख आते हैं तो कभी दुःख। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख-दुःख का मिलना अनिवार्य रूप से होता है।

प्रश्न 4. प्रसाद ने सन्ध्या का वर्णन किस रूप में किया है और संध्या के उदास होने का क्या कारण है ?

उत्तर—प्रसाद ने सन्ध्या का वर्णन सौन्दर्य वेदना तथा निराशा के रूप में किया है। उन्होंने सन्ध्या की उदासी को देखा है। उन्होंने देखा है और समझा है कि जब सूर्यास्त होता है तब भूमण्डल पर उदासी की कालिमा छा जाती है। सम्पूर्ण वातावरण सूना-सूना बन जाता है।

कवि ने अनुमान लगाया है कि सूर्य विश्राम के लिए चला गया है। इसलिए वातावरण उदास हो गया है। कमल के पुष्प मुरझा गये हैं। अन्धकार बढ़ता जा रहा है। प्रकृति की इस उदासी का प्रभाव चारों ओर हुआ है। उदासी ही उदासी चारों ओर दिखाई दे रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि कमल-दल मुरझा जाने के कारण सन्ध्या भी उदास हो गयी है।

प्रश्न 5. महाकवि आज के मेवाड़ में उस साहसी प्रतिध्वनि की कमी का एहसास क्यों कर रहा है ? पेशोला की प्रतिध्वनि कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मेवाड़ के निराशाजनक तथा अवसादपूर्ण वातावरण को देखते हुए कवि अत्यन्त चिन्तित है। उसे मेवाड़ वीरविहीन दिखाई दे रहा है। शौर्य रहित व्यक्तियों का जमाव लग रहा है। महाराणा प्रताप जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ, देश-प्रेमी, स्वाधीनता-पुजारी उसे वहाँ दिखाई नहीं दे रहे। मेवाड़ की आन-मान और शान की रक्षार्थ बलि देने वाला दिखाई नहीं दे रहा।

कवि की चिन्ता का प्रमुख कारण, महाराणा प्रताप जैसे स्वदेशाभिमानी, प्राणोत्सर्ग करने वाले बलिदानियों का अभाव है। कवि वीरों की खोज में है। उनको जागरण का सन्देश दे रहा है—

सांस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ
मैं हूँ, मेवाड़ में।
अरावली शृंग-सा समुन्नत सिर किसका ?
बोलो, कोई बोलो-अरे क्या तुम सब मृत हो ?

अतीत की गौरवगाथा के लिए कवि महाराणा प्रताप के समान, सभी देशवासियों से अपने दायित्व को निभाने एवं भारत की स्वाधीनता की सुरक्षा के लिए सनद्ध रहने का सन्देश दे रहे हैं।

प्रश्न 6. प्रसादजी की इन रचनाओं के आधार पर उनकी काव्य कला पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—छायावाद के प्रवर्त्तक, नवीन युग के निर्माता, इतिहास, दर्शन एवं कला की गरिमा से युक्त जयशंकर प्रसाद को युग प्रवर्त्तक साहित्य सृष्टा के रूप में जाना और पहचाना जाता है। उनके काव्य-कला की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) **भाषा**—प्रसाद की भाषा के कई रूप उसकी विकास-यात्रा में दिखाई पड़ते हैं। आपने आरम्भ ब्रज भाषा से किया और फिर खड़ी बोली को अपना कर उसे परिष्कृत, प्रवाहमयी, संस्कृतनिष्ठ भाषा के रूप में अपनी काव्य-भाषा बना लिया।

(2) **शैली**—प्रसाद जी की शैली प्रसाद, ओज एवं माधुर्य तीनों गुणों का सतुलन लेकर चली है। उनकी शैली में चित्रात्मक, प्रतीकात्मकता एवं स्वाभाविकता है।

(3) **अलंकार**—प्रसाद जी ने अधिकाशतः साम्य-मूलक अलंकारों को ही स्थान दिया है। उनकी उपमाएँ, रूपक, उत्प्रेक्षाएँ, प्रतीप तथा संदेह आदि परम्परागत होते हुए भी नवीनता से परिपूर्ण हैं। आपने मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय आदि नवीन अलंकारों का भी सफलता से प्रयोग किया है।

(4) **छन्द**—प्रसाद जी ने विविध छंदों का सफल प्रयोग अपने काव्य में किया। आपके गीत भी बहुत मनोहर हैं। भाषा तत्समता की ओर झुकी होने पर भी छन्दों की लय, प्रवाह और गति सर्वत्र आकर्षक है।

(5) राष्ट्रीय प्रेम से परिपूर्ण—प्रसाद जी ने राष्ट्रीय गौरव और स्वाभिमान को अपने साहित्य में सर्वत्र स्थान दिया है। आपकी अनेक रचनाएँ राष्ट्र-प्रेम की उत्कृष्ट भावना जगाने वाली हैं।

मेवाड़ गौरव की रक्षा के लिए अतीत का स्मरण करते हुए इस प्रकार वीर भावना जाग्रत करते हुए वे 'पेशोला की प्रतिध्वनि' में कहते हैं–

"किन्तु वह ध्वनि कहाँ ?
गौरव की काया पड़ी माया है प्रताप की
वह मेवाड़।
किन्तु आज-प्रति ध्वनि कहाँ ?

(6) **सजीव प्रकृति-चित्रण**—प्रसाद जी ने प्रकृति के विविध पक्षों को बड़ी सजीवता से चित्रित किया है। प्रकृति के सौम्य-सुन्दर और विकृत-भयानक दोनों स्वरूप उनकी रचनाओं में प्राप्त होते हैं।

मधुर माधवी संध्या में प्रसाद कहते हैं —

"नक्षत्रों से जब प्रकाश की रश्मि खेलने आती है
तब कमलों की सी संध्या क्यों उदास हो जाती है ?"

प्रसाद जी का काव्य प्रत्येक दृष्टि से हिन्दी के लिए गौरव देने वाला है। आपका कामायनी महाकाव्य विश्वस्तरीय कृति है। केवल इसी एक रचना के बल पर प्रसाद जी को श्रेष्ठ साहित्यकारों में स्थान दिया जा सकता है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ 55-56 **नाविक** = मल्लाह। **कोलाहल** = शोरगुल । **अवनी** = धरती, भूमि । **निर्धूम** = धुआँ रहित । **अजस्त्र** = निरन्तर।

पृष्ठ 57-58 **निकष** = कसौटी। **समुन्नत** = ऊँचा । **खेवा** = खेवनहार, नाविक । **प्रतिध्वनि** = गूँज।

(1)

ले चल वहाँ भुलावा देकर,
मेरे नाविक ! धीरे धीरे।
जिस निर्जन में सागर लहरी,
अम्बर के कानों में गहरी।
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो,
तज कोलाहल की अवनी रे।
जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,
ढोले अपनी कोमल काया,
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पाँति घनी रे। [पृष्ठ 55-56]

सन्दर्भ—प्रस्तुत गीत जयशंकर प्रसाद रचित ले चल वहाँ भुलावा देकर शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि इस जगत से पलायन करने की इच्छा व्यक्त करता हुआ कह रहा है।

व्याख्या—हे नाविक ! तुम मेरी जीवन नौका को ऐसे स्थान की ओर ले चलो जो जन शून्य हो। हे नाविक ! तुम मुझे तथा अन्य सबको भुलावा देकर ऐसे एकान्त स्थान को ले चलो जो निर्जन हो। जहाँ आकाश के कानों में, समुद्र की लहरें निष्कपट प्रेम-प्रसंग की कथायें कह रही हों जहाँ पूर्णतया शान्ति का साम्राज्य हो। जहाँ सांसारिक वेदना न हो। प्रसाद जी कहते हैं कि हे नाविक ! तुम मुझे ऐसे शान्त एवं एकान्त स्थल पर ले चलो जहाँ थके हुए इस शरीर को विश्राम का सुअवसर प्राप्त हो सके। तुम मुझे ऐसे स्थान पर ले चलो जहाँ सितारों की पंक्ति के रूप में रात्रि आँसुओं की वर्षा कर रही हो।

काव्य सौन्दर्य—(i) भाषा—शुद्ध सरल, सरस अलंकृत भाषा। (ii) रस—शान्त रस।
(iii) छन्द—गेय। (iv) अलंकार—रूपक, उपमा अलंकार।
(v) अन्य—पलायनवादी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

(2)

ठोक कर लोहे से, परख कर वज्र से,
प्रलयोल्का-खंड के निकष पर कस कर
चूर्ण अस्थि पुंज सा हँसेगा अट्टहास कौन ?
साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके
धूलि सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से ?
कौन लेगा भार यह ?
जीवित है कौन ?
सांस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ—
—मैं हूँ मेवाड़ मैं। [पृष्ठ 57]

प्रस्तुत—प्रस्तुत पद्यांश **जयशंकर प्रसाद** रचित **पेशोला की प्रतिध्वनि** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत गीत में पेशोला की प्रतिध्वनि का वर्णन करते हुए कवि कह रहा है।

व्याख्या—कवि पेशोला से उठती ध्वनि के विषय में बता रहा है कि उस पुकार में एक प्रश्न उठ रहा है। प्रश्न पूछती है पेशोला कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो अपने शरीर की दुर्बलता को लोहे से ठोंके और प्रलयंकारी वज्र की कसौटी पर परख करते हुए अपनी हड्डियों के चूर्ण पर हँसने लगे। वीर पुरूष तो मृत्यु का कोई भय नहीं करेगा। आपत्तियों की उसे कोई चिन्ता नहीं होगी।

कवि प्रश्न करता है कि महाराणा के समान ऐसा कौन वीर पुरूष हो सकता है जिसकी फुंकार के समक्ष राक्षसों की साधना व्यर्थ सिद्ध हो सके। आज कोई भी तो ऐसा नहीं दिखाई देता जो मातृभूमि की रक्षार्थ अपने जीवन का उत्सर्ग कर सके।

अन्त में कवि प्रश्न करता है कि इस पुकार को सुनकर कितने हैं जिनकी नसों में वीरता का संचार हो गया हो ? ऐसे कितने हो सकते हैं जो अपना सीना तानकर निर्भीकतापूर्वक कह सके कि मैं मेवाड़ हूँ ।

काव्य सौन्दर्य—(i) भाषा—ओजस्वी, प्रभावपूर्ण भाषा । (ii) रस—वीर रस।
(iii) छन्द—अतुकान्त। (iv) अलंकार—उपमा अंलकार।
(v) अन्य—मातृभूमि की रक्षा का महत्व।

●●

11 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

● गागर में सागर

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला—जीवन—जन्म सन् 1897• स्थान—मेदिनीपुर (बंगाल)• पिता की छाया में पालन• संस्कृत, बंगला तथा अंग्रेजी का अध्ययन• श्रृंगार तथा वीर रस प्रधान गीतों की रचना• उपन्यास, कहानी, आलोचना तथा संस्मरणतमक निबन्धों पर अधिकार• मृत्यु-सन् 1961•

रचनाएँ—काव्य—(1) अनामिका (2) गीतिका (3) परिमल (4) कुकुरमुत्ता (4) अणिमा (6) तुलसीदास (7) अपरा (8) नये पत्ते (9) आराधना (10) अर्चना।

गद्य—(1) सुकुल की बीबी (2) निरूपमा (3) अप्सरा (4) लिली (5) अलका (6) चोटी की पकड़ (7) कुल्ली भाट (8) चाबुक (9) चतुरी चमार (10) प्रबन्ध प्रतिमा (11) प्रबन्ध पद्म आदि।

काव्य सार—संध्या सुन्दरी—संध्या को एक सुन्दर परी के समान चित्रित किया है जिसके आकाश से उतरने पर पृथ्वी का रूप भी सुन्दर बन जाता है।

भिक्षुक—धनी व्यक्ति कुत्ते पाल सकते हैं। उन्हें दूध पिला सकते हैं। किन्तु याचना करने वाला अपनी क्षुधा शान्त के लिए अनाज नहीं पा सकता। फटी-पुरानी झोली फैलाये घूमता है वह किन्तु सब व्यर्थ । कोई उसे भिक्षा भी नहीं देता।

बादल राग—कवि की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रहती जब वह आकाश में बादलों को गरजते देखता है। बरसते देखकर तो वह अत्यधिक प्रसन्न हो उठता है।

गहन है यह अन्धकारा—संसार में स्वार्थ और विद्वेष है। कवि चाहता है कि स्वार्थ तथा विभेद का जीवन समाप्त हो। सरसता का संचार हो।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'संध्या-सुन्दरी' में कौन-सा अंलकार है—

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) श्लेष।

उत्तर—[ख] रूपक।

प्रश्न 2. संध्या-सुन्दरी को उपमा दी गई है—

(क) मानवी की (ख) नागिन की

(ग) परी की (घ) चन्द्रकला की

(ङ) राक्षसी की।

उत्तर—[ग] परी की।

प्रश्न 3. ''और दाहिनी दया दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।'' में भिक्षुक के बच्चों की कौन-सी भावना अभिव्यक्त होती है—

(क) दीनता (ख) विवशता

(ग) अकर्मण्यता (घ) पश्चाताप।

उत्तर—[ख] विवशता।

प्रश्न 4. निराला जी की भाषा का रूप है—

(क) तत्सम (ख) सरल

(ग) संस्कृतनिष्ठ (घ) उर्दू मिश्रित।

उत्तर—[ग] संस्कृतनिष्ठ।

प्रश्न 5. ''पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक'', भिक्षुक की इस दशा का मुख्य कारण है—

(क) उसकी फटी झोली (ख) उसकी वेदना
(ग) भिक्षा न मिलना (घ) हेय दृष्टि से देखा जाना।

उत्तर—[ख] उसकी वेदना।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''ठहरो अहो, मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा।'' भिखारी के प्रति कवि के कथन का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—भिखारी के प्रति कवि के कथन का तात्पर्य यह है कि उसकी करुणा से द्रवित होकर हम भी उसको सहयोग प्रदान करने के इच्छुक हैं।

प्रश्न 2. ''सौन्दर्य गर्विता सरिता सरिता······'' कवि ने सरिता को सौन्दर्य गर्विता क्यों कहा है ?

उत्तर—कवि ने सरिता को सौन्दर्य गर्विता इसलिए कहा है कि वह सन्ध्या काल में शान्त जल के कारण द्विगुणित शोभा से पूर्ण हो जाती है।

प्रश्न 3. ''धीर वीर गम्भीर शिखर पर, हिम गिरि अटल अचल में'' पंक्ति के आलंकारिक सौन्दर्य पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—'धीर वीर गम्भीर शिखर पर पंक्ति में अनुप्रास अलंकार का सौन्दर्य है।

प्रश्न 4. 'झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु, तरु, मर्मर सागर में'' इन पंक्तियों में कवि जड़ चेतन सभी तत्वों में बादलों के किस रूप को देखना चाहता है ?

उत्तर—कवि सभी तत्वों में बादलों के परोपकारी रूप को देखना चाहता है।

प्रश्न 5. ''गहन है यह अन्धकार'' कविता में कवि चेतना की प्राप्ति की कामना कर रहा है, क्यों ?

उत्तर—कवि चेतना की प्राप्ति कामना इसलिए कर रहा है ताकि संसार से स्वार्थ का गहन अन्धकार दूर हो सके।

प्रश्न 6. ''बादल राग'' कविता में बादल को पागल की संज्ञा से क्यों विभूषित किया गया है ?

उत्तर—बादल को पागल की संज्ञा से इसलिए विभूषित किया गया है क्योंकि वह पवन से सम्पर्क बढ़ाये हुए आगे चलता और बरसता है।

प्रश्न 7. ''बादल राग'' कविता में निहित कवि के सन्देश को स्पष्ट कीजिए।
(मा. शि. बो. 1993)

उत्तर—''बादल राग'' में कवि का सन्देश यह है कि हमें किसी भी दशा में निरुत्साही नहीं होना चाहिए अपितु द्विगुणित जोश के साथ कार्य सम्पादन करना चाहिए।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''भिक्षुक'' कविता में निराला ने यथार्थ का चित्रण किया है, इस सत्य को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—भिक्षुक की दीन-दशा का वर्णन करते हुए ''भिक्षुक'' कविता में निराला जी लिखते हैं—

''पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को············भूख मिटाने को
मुँह फटी-पुरानी झोली को फैलाता············
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।

लाठी टेक कर, उसके सहारे बढ़ते भिक्षुक को सब ने देखा है। पतला-दुबला शरीर, निर्जीव सा अस्थि पंजर मात्र भिक्षुक प्रतिदिन ही हम देखते हैं जो मुट्ठी भर दाने के लिए, हाथ में फटी-पुरानी झोली लिये, दर-दर घूमता है ताकि भूख मिटाने को अनाज के कुछ दाने प्राप्त कर सके।

दाता की दया दृष्टि पाने के लिए कभी-कभी, किन्हीं-किन्हीं भिक्षुकों के साथ बच्चे भी हाथ फैलाये चलते हैं।

ऐसी दुर्गति के शिकार हैं वे भिक्षुक कि उनके बच्चे कभी-कभी तो झूठी पत्तलें भी चाटने को विवश हो जाते हैं। उन्हीं पत्तलों को चाटने के लिए कुत्ते भी अड़े हुए दिखाई देते हैं। कवि ने भिक्षुक की यथार्थ दशा का चित्रण करते हुए लिखा है—

''चाट रहे झूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।''

प्रश्न 2. निराला की 'सन्ध्या सुन्दरी' का वर्णन कीजिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द)

उत्तर—सन्ध्या को एक परी के समान चित्रित करते हुए कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कहते हैं—

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या सुन्दरी परी-सी।

निरालाजी ने सन्ध्या को एक नायिका के रूप में वर्णन करके प्रकृति का मानवीकरण किया है और एक परी के रूप में आकाश मार्ग से धीरे-धीरे इस धरा पर उतारा है।

प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण करते हुए उसे मानव-मन के भावों को उद्दीप्त करने वाला बताते हुए कवि कहता है—

मदिरा की वह नदी बहाती आती
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती।

कहीं-कहीं निरालाजी दार्शनिक बन गये हैं। प्रकृति वर्णन में यह प्रभाव दर्शनीय है—

नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग राग-अलाप,
नूपुरों में भी रुन झुन नहीं।
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप, चुप, चुप'
है गूंज रहा सब कहीं
व्योम मण्डल में जगतीतल में।

प्रश्न 3. 'निरालाजी' की काव्य-कला की विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—निरालाजी की काव्य कला हर प्रकार से समृद्ध है, उसकी विशेषताओं के विषय में हम कह सकते हैं—

(1) भाषा—निराला जी ने खड़ी बोली को अपने काव्य की भाषा बनाया। उसे अपने व्यक्तित्व का निरालापन सौंपकर असाधारण आकर्षण प्रदान किया। आपकी भाषा में भावानुकूल कोमलता, ओज और संगीतात्मकता के दर्शन होते हैं। प्रधानत: आपकी भाषा में दो रूप दिखाई देते हैं। एक सरल शब्दावली युक्त भाषा और दूसरी संस्कृतनिष्ठ दीर्घ समासमयी भाषा।

(अ) संस्कृतनिष्ठ भाषा—

उत्ताल तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि प्रबल में।
क्षिति-में जल-में नभ-में अनिल-अनल में। **(संध्या-सुन्दरी)**

'राम की शक्तिपूजा' की भाषा भी ऐसी ही दीर्घ समासों से पूर्ण भाषा है।

(ब) **सरल शब्दमयी भाषा**—इस भाषा में कवि ने साधारण शब्दों का प्रयोग किया है। 'कुकुरमुत्ता' नामक आपके संग्रह से एक रचना इस भाषा के उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है—

'अबे सुन बे गुलाब !
भूल मत पाई खुशबू रंगो आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट।
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।'

ऐसी रचनाओं की शब्दावली मिश्रित है। साधारण बोलचाल के शब्दों के साथ 'अशिष्ट' जैसे तत्सम शब्द और 'कैपिटलिस्ट' जैसे अंग्रेजी शब्दों का एक साथ प्रयोग हुआ है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निराला जी का भाषा पर असाधारण अधिकार था। विषय और भाव के अनुसार शब्दावली का चयन करने में आप पूर्ण सिद्धहस्त थे।

(2) **नाद-सौन्दर्य**—निराला जी की भाषा का एक और गुण उसकी संगीतात्मकता है। कहीं-कहीं उसमें अद्‌भुत ध्वन्यात्मकता उपस्थित है। 'बादल-राग' आपकी ऐसी ही रचना है—

"धँसता दल दल, हँसता है नद खल-खल,
बहता, कहता कुल-कुल, कलकल, कलकल।"

(3) **शैली**—निरालाजी की शैली उनके व्यक्तित्व का सच्चा प्रतिनिधित्व करती है। उनके कथन में एक अजीब फक्कड़ानापन है, एक मर्मस्पर्शी कोमलता है, एक गहरी आत्मलीनता है। व्यंग और चोट करते समय आपकी शैली में तीखापन और सहजता आ जाती है। छायावादी और रहस्यवादी प्रकृति की रचनाओं में शैली भी गुरु-गम्भीर और सामान्य पाठक के लिए दुरूह हो जाती है।

(4) **छंद-विधान**—निराला जी ने छंद के बंधन तोड़ने का संकल्प लिया था और उसे अपने काव्य में निभाया भी। आपने अपनी अधिकांश रचनाओं में मुक्त छंद अपनाया है। छंद से मुक्त रहने पर भी आपकी रचना लय और संगीत की मधुरता से युक्त रही है। एक ही रचना में कवि ने 'तुकान्त' तथा 'अतुकान्त' दोनों प्रकार का शब्द-विधान किया है।

(5) **अलंकार**—निराला जी की अलंकार-योजना सुन्दर है। यद्यपि अलंकारों का उपयोग सहज सौन्दर्य के प्रकाश के लिए हुआ है तथापि अनेक स्थानों पर कवि ने अलंकारों का उपयोग चमत्कार प्रदर्शन के हेतु भी किया है। नये और पुराने सभी प्रकार के अलंकार आपके काव्य में प्रयुक्त हुए हैं। मानवीकरण और सांगरूपक आपके विशेष प्रिय अलंकार हैं। 'संध्या-सुन्दरी' में इन दोनों का चरम सौन्दर्य उपस्थित है।

साहित्य में स्थान—निरालाजी का काव्य अनेक दृष्टियों से असाधारण है। भाषा, छंद, भाव और शैली का निरालापन आपको कवियों में विशिष्ट स्थान का अधिकारी बनाता है। भावुकता, विद्रोह, दार्शनिकता तथा देश-प्रेम की संगमस्थली के रूप में आपका काव्य सदा स्मरणीय रहेगा।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—**पृष्ठ 60-61** **दिवसावसान** = दिवस का अवसान, सन्ध्याकाल। **तिमिर** = अन्धकार। **अम्बर** = आकाश। **अमल** = स्वच्छ। **उत्ताल** = ऊँचा। **अनिल** = पवन। **अनल** = आग। **नद** = नदी। **शतदल** = सौ पंखुड़ियों के समान। **अस्फुट** = बिन खिला। **तरु मर्मर** = वृक्ष की मर्मर ध्वनि। **तड़ित** = बिजली। **बेकल** = बेचैन। **अवगुंठन** = घूंघट। **लुण्ठन** = लुढ़कना।

[1]

अलसता की सी लता,
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बांह,

छाँह सी अम्बर-पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग राग अलाप,
नूपुरों में भी रुनझुन नहीं।
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप, चुप, चुप'
है गूंज रहा सब कहीं। [पृष्ठ 60]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला** रचित **सन्ध्या सुन्दरी** शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर निरालाजी सन्ध्या सुन्दरी को परी के समान मानते हुए उसके रूप सौन्दर्य का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या—सन्ध्या-परी आकाश से धीरे-धीरे उतरने पर आलस्य की एक लता के सदृश दिखाई दे रही थी। साथ ही वह सन्ध्या परी कोमलता की कली के समान भी लग रही थी। ऐसा लग रहा था कि यौवन भार से दबी उन्माद में मग्न कोई सुन्दरी धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतर रही है।

कवि कल्पना में मग्न कह रहा है कि वह सुन्दरी ऐसी लग रही थी जैसे नीरव-सखी के कन्धे पर बाँह रखकर आकाश मार्ग से नीचे आ रही है। निस्तब्धता मानो उसकी कोई ऐसी सखी है जो छाया के समान उसके साथ चल रही है। तभी उसके आगमन से चारों ओर शान्ति का वातावरण व्याप्त हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि चारों ओर एक ही शब्द 'चुप-चुप' का साम्राज्य स्थापित हो गया है। सन्ध्या-परी के विश्राम हेतु गमन करने पर सृष्टि यकायक चुप-सी हो गयी है।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान सरल भाषा। (ii) **रस**—शृंगार रस। (iii) **छन्द**—मुक्त छन्द। (iv) **अलंकार**—रूपक अलंकार। (v) **अन्य**—सन्ध्या को सुन्दर परी के समान चित्रित किया गया है।

[2]

गहन है यह अन्धकारा,
स्वार्थ के अवगुण्ठनों से
हुआ है लुण्ठन हमारा
खड़ी है दीवार जड़ की घेरकर,
बोलते हैं लोग ज्यों मुँह फेरकर,
इस गगन में नहीं दिनकर,
नहीं शशिधर, नहीं तारा। [पृष्ठ 62]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **महाकवि निराला** रचित **गहन है यह अन्धकारा** शीर्षक गीत से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि ने व्यक्ति की स्वार्थ भावना का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि व्यक्ति अज्ञानता के कूप में पड़ा हुआ है। उसका जीवन घोर निराशा के अन्धकार में भटक रहा है। स्वार्थ का चश्मा उसकी आँखों पर ऐसा चढ़ा हुआ है कि वह दूसरों के विषय में कुछ सोचता ही नहीं है। मानवता धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। पारस्परिक भेद-भाव में वृद्धि हो रही है। घृणा का वातावरण इस सीमा तक बढ़ गया है कि सीधे मुँह कोई बात तक नहीं करता। ऐसे स्वार्थी तथा अज्ञानी समाज के लिए सूर्य, चन्द्र-तारों के समान प्रकाश देने की आवश्यकता है किन्तु ऐसा आलोक सम्भव नहीं दिखाई दे रहा।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—शान्त। (iii) **छन्द**—मुक्त छन्द। (iv) **अलंकार**—रूपक अलंकार। (v) **अन्य**—समाज की प्रवृत्ति का वर्णन। ●●

12 सुमित्रानन्दन पन्त

● गागर में सागर

सुमित्रानन्दन पन्त—जीवन—जन्म सन् 1900 • स्थान—कौसानी (अल्मोड़ा) • पिता—पं. गंगादत्त पन्त • माताजी का जन्म के 6 घण्टे पश्चात् विछोह • काशी के जयनारायण स्कूल से हाईस्कूल उत्तीर्ण • गाँधीजी की पुकार पर इलाहाबाद का म्योर सेन्ट्रल कालिज छोड़कर साहित्य-साधना में संलग्न • उदयशंकर भट्ट से सम्पर्क • अरविन्द का प्रभाव • भारत सरकार से पद्म-विभूषण की उपाधि • "चिदम्बरा" पर ज्ञानपीठ पुरस्कार* मृत्यु—1977 •

रचनाएँ—काव्य संग्रह—(1) वीणा (2) पल्लव (3) उच्छ्वास (4) गुंजन (5) उत्तरा (6) युगपथ (7) युगान्त (8) युगवाणी (9) ग्राम्या (10) स्वर्ण किरण (11) स्वर्ण धूलि (12) अतिमा (13) कला और बूढ़ा चाँद (14) तारापथ (15) रश्मिबंध (16) लोकायतन (17) पल्लविनी (18) चिदम्बरा।

रुपक—(1) शिल्पी (2) ज्योत्स्ना (3) रजत शिखर (4) उत्तर शती।

उपन्यास—हार।

अन्य—पाँच कहानियाँ, कला और संस्कृति, शिल्प और दर्शन, मैं और मेरा जीवन।

काव्य-सार—जय हिमाद्रि—हिमालय को पुण्य का सेतु, मुक्ति द्वार तथा भारतीय संस्कृति का रक्षक मानते हुए उसे श्रद्धा का पात्र बताया गया है।

युग प्रभाव—भारत की स्वाधीनता की कामना और अभिनन्दन के साथ भावात्मक एकता के लिए प्रार्थना की गयी है।

सृजन प्रक्रिया—अन्धविश्वासों की समाप्ति का बोध।

युग बोध—मानव सम्मान प्राप्त होना चाहिए। वह भी ईश्वर की मूर्ति है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'जय हिमाद्रि' गीत है—

(क) हिमालय महिमा का
(ख) हिमालय से लाभ का
(ग) हिमालय की पवित्रता का
(घ) हिमालय की पर्वत श्रृंखला का।

उत्तर—[क] हिमालय महिमा का।

प्रश्न 2. कवि पन्त के शब्दों में 'जय हिमाद्रि' का सन्देश है—

(क) महानता का
(ख) शान्ति स्थापना का
(ग) आर्थिक लाभ का
(घ) पावनता का

उत्तर—[ख] शान्ति स्थापना का।

प्रश्न 3. 'जय हिमाद्रि' में हिमालय के लिए विशेषण प्रयुक्त हुआ है—

(क) शिव-शिखर
(ख) स्वर्ग-शिखर
(ग) विश्व-हृदय शिखर
(घ) हिम-शिखर

उत्तर—[ग] विश्व-हृदय शिखर।

प्रश्न 4. 'युग प्रभात' कविता में पन्तजी किसका अभिनन्दन चाहते हैं—

(क) श्रमिक का
(ख) धनिक का
(ग) राजनीतिक का
(घ) सामान्य व्यक्ति का।

उत्तर—[घ] सामान्य व्यक्ति का।

प्रश्न 5. 'पन्त जी' ने अपनी ''सृजन-प्रक्रिया'' का हेतु किसे माना है ?

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

(क) प्रकृति-सौन्दर्य (ख) विरह-वेदना

(ग) प्रेमानुभूति (घ) एकाकीपन

(ङ) आत्माभिव्यक्ति।

उत्तर—[क] प्रकृति-सौन्दर्य।

प्रश्न 6. 'युगबोध' में ईश्वर का रूप किसे माना है—

(क) यज्ञों को (ख) जन-सामान्य को

(ग) प्रेम को (घ) धार्मिक भावनाओं को।

उत्तर—[ख] जन-सामान्य को।

प्रश्न 7. ईश्वर प्राप्ति का श्रेष्ठ मार्ग है—

(क) दया (ख) उपकार

(ग) तप (घ) दान

उत्तर—[ग] तप।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पंत मानव जीवन में ही परमेश्वर के दर्शन करने के लिये कौन-सा मार्ग दिखा रहे हैं ?

उत्तर—मानव जीवन में परमेश्वर के दर्शन के लिए प्रेम एवं सहयोग का मार्ग दिखा रहे हैं।

प्रश्न 2. 'युग बोध' कविता में पंत ने मनुष्य को किन पाटों के बीच पिसता हुआ बताया है ?

उत्तर—'युग बोध' कविता में पंत ने मनुष्य को पाप-पुण्य के दो पाटों के बीच पिसता हुआ बताया है।

प्रश्न 3. पंत को किस प्रकार का ईश्वरीय रूप अभीष्ट नहीं है ?

उत्तर—पंत को प्रेम एवं सहयोग, समाज-सुख-कल्याण-भावना रहित ईश्वरीय रूप अभीष्ट नहीं है।

प्रश्न 4. पंत जी 'हिमाद्रि' को पुण्य सेतु देव निलय क्यों कहते हैं ?

उत्तर—पंतजी 'हिमाद्रि' को पुण्य सेतु देव निलय इसलिए कहते हैं क्योंकि हिमालय में देवताओं का निवास है और यह भारतीय संस्कृति का आश्रय है।

प्रश्न 5. 'युग प्रभात' कविता में 'युग बसन्त नव' का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—'युग-प्रभात' कविता में युग बसन्त नव का अभिप्राय भारतीयों के मन में आने वाला वह उत्साह है जो देश की स्वाधीनता के पश्चात् उनको प्राप्त हुआ है।

प्रश्न 6. ''पीला पतझर मन को भाता है।'' इन पंक्तियों में कवि ने पतझर को क्यों पसन्द किया है ?

उत्तर—कवि ने पतझर को नव सृजन का द्योतक मानकर पसन्द किया है।

प्रश्न 7. कवि का मन मधुर स्मृतियों से बार-बार क्यों भर आता है ?

उत्तर—कवि का मन मधुर स्मृतियों से बार-बार इसलिए भर आता है क्योंकि वियोग से दु:खी मन समर्पण की भावना से पूर्ण हो जाता है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पन्तजी 'हिमाद्रि' को पुण्य सेतु देव निलय क्यों कहते हैं ? उक्त कविता के आधार पर हिमाद्रि की गौरव गरिमा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—'जय हिमाद्रि' में सुमित्रानन्दन पंत ने हिमालय को स्वर्ग का भाल बताते हुए उसे सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का रूप देते हुए लिखा है—

जयति, स्वर्ग भाल अमर,
जयति, विश्व हृदय शिखर,
जयति, सत्य शिव सुन्दर,
शाश्वत अक्षय हे!

हिमालय को पुण्य-सेतु और देवों की निवास स्थली मानते हुए कवि ने हिमालय को श्रद्धा तथा शान्ति का रूप दिया है। कवि पंत कहते हैं—

पुण्य सेतु, देव निलय,
संस्कृति के शुचि संचय,
श्रद्धा सोपान अभय,
शुभ्र शान्तिमय हे!

हिमालय का वातावरण संस्कृति को विकसित करने वाला और मुक्ति का साधन है। अनेकों आपदाओं के उत्पन्न होने पर भी भारतीय संस्कृति नष्ट नहीं हुई है। यहाँ के पवित्र वातावरण में कोई कलुष नहीं आ सका है।

हिमालय के शुद्ध वातावरण ने जन-मानस को सदा आल्हादित किया है। जल से यहाँ की भूमि को उपजाऊ बनाकर समृद्धशाली बनाया है। पंत जी लिखते हैं—

पावन सुर वारि निखर,
उर में स्वर्णिम रव भर,
भू रज रखते उर्वर,
जड़ चित्त परिणय हे।

भारत भूमि को हरा-भरा बनाकर भारतवासियों को भुखमरी आदि असमय की मृत्यु से रक्षा करने वाला हिमालय ही यहाँ व्यक्तियों के मन को सभी आशंकाओं को निर्मूल करने में सहायक है। कवि कहता है—

हरित अवनि भरित अंक,
रहस कलामय मयंक,
काल व्याल से निशंक,
मृत्युंजय, जय हे!

प्रश्न 2. 'पंत' प्रकृति के प्रेमी हैं। इनकी कविताओं के उदाहरण देकर विवेचना करिये।

उत्तर—पन्त प्रकृति के निपुण चितेरे हैं। बाल्यकाल से ही उन्होंने प्रकृति की गोद में क्रीड़ा की है। प्रकृति-निरीक्षण के सहज अनुराग ने उनकी प्रतिभा का वरदान पाकर मनोरम शब्द चित्रों से हिन्दी काव्य-बीथि को मण्डित किया है। प्रकृति-चित्रण के अनेक रूप उनके काव्य में उपलब्ध हैं। पन्त को प्रकृति के मनोहारी रूप पर ही विशेष अनुरक्ति रही है परन्तु उसके भीषण पक्ष की भी कुछ झाँकियाँ उन्होंने प्रस्तुत की हैं।

आलम्बन रूप—पन्त के प्रकृति वर्णन का प्रधान रूप यही है। कवि प्रकृति के विविध दृश्यों से आकृष्ट और मुग्ध होकर उनको शब्दों में उतारता है तो यह प्रकृति का आलम्बन-प्रधान वर्णन होता है। पन्त जी का सूक्ष्म निरीक्षण और सजीव चित्रण दोनों इस रूप में पूर्णता से प्रकट हुए हैं—

बालू के साँपों से अंकित, गंगा की सतरंगी रेती।
सुन्दर लगती सरपत-छाई, तट पर तरबूजों की खेती ॥

उद्दीपन रूप—जब प्रकृति मानव भावनाओं को उत्तेजित करती हुई चित्रित होती है तो उसे उद्दीपन रूप में प्रकृति वर्णन कहा जाता है। पन्त जी में यह स्वरूप भी बड़ा आकर्षक है—

काली कोकिल सुलगा उर में, स्वरमयी वेदना का अंगार।
आया बसन्त घोषित दिगन्त, करती भर पावक की पुकार॥

आलंकारिक रूप—प्रकृति के चित्रों को अलंकारों से सुसज्जित करके प्रस्तुत करना भी कवियों में लोकप्रिय रहा है। कवि पन्त इसमें परम प्रवीण है।

(1) *सिकता की सस्मित-सीपी पर मोती की ज्योत्सना रही विचर।*
(अनुप्रास और रूपक)

(2) *सामने शुक्र की छवि झलमल,*
पैरती परी-सी जल में कल। (उपमा)

उपदेशिका रूप—कवियों ने प्रकृति को मौन सन्देश-दायिका के रूप में भी देखा है। कवि पन्त का भावुक और चिन्तक हृदय तो प्रकृति की भाषा को सहज ही पढ़ लेता है।

सिखा दो ना हे मधुप कुमारि ! मुझे भी अपना मीठा गान।

मानवीकृत रूप—मानवीकरण के माध्यम से प्रकृति का प्रभावशाली चित्रण कवि पन्त के वर्णन कौशल का प्रमाण है। एक चित्र प्रस्तुत है—

तन्वंगी गंगा ग्रीष्म-विरल लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त, निश्चल !

मनोहारी स्वरूप—प्रकृति के शोभन पक्ष के चित्रण में पन्त अद्वितीय हैं। आपकी लेखनी ने प्रकृति के अगणित मनोरम चित्र अंकित किये हैं। कुछ संकेत दर्शनीय हैं—

माँ के उर पर शिशु सा समीप, सोया धारा में एक द्वीप।

भैरव रूप—प्रकृति के विरूप पक्ष का चित्रण भी पन्त की लेखनी से सजीव और प्रभावशाली हुआ है। परिवर्तन के भयप्रद स्वरूप की एक झाँकी देखिये—

अहे वासुकि सहस्रफन !
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षःस्थल पर !
शत-शत फेनोच्छ्वसित स्फीत फूत्कार भयंकर !

रहस्यवादी स्वरूप—पन्त जी के प्रकृति-वर्णन में किसी रहस्यमयी चेतन सत्ता से भावनात्मक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति भी प्राप्त होती है—

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार, चकित रहता शिशु सा नादान।
विश्व के पलकों पर सुकुमार, विचरते हैं जब स्वप्न अजान॥
न जाने नक्षत्रों से कौन, निमन्त्रण देता मुझको मौन ?

प्रश्न 3. स्वतन्त्रता-प्राप्ति को किस प्रकार युग प्रभाव के रूप में चित्रित किया गया है? 'जन-गण-मन' की महत्ता पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—स्वतन्त्रता-प्राप्ति को सुमित्रानन्दन पंत ने एक नवीन युग के प्रभाव के रूप में देखा और उसका वर्णन किया है। ''युग प्रभात'' में व्यथित प्राणों की उच्छ्वास के लिए कवि लिखता है—

आकुल उच्छ्वासों की सौरभ
उत्सुक अपलक नयनों के नभ
इन नीरव मुकुलों में मूर्तित,
स्मृतियों की माला पहनायें।

स्वाधीनता को नवीन आशाओं और आकांक्षाओं की प्राप्ति बताते हुए कवि पंत कहते हैं कि इस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए हमने त्याग किये हैं। प्राणों की बाजी लगायी है। अपने भाइयों को खोया है। ललनाओं का बलिदान देखा है। अब स्वतन्त्रता के रूप में भारत में नव प्रभात हुआ है। हम सबका कर्तव्य है कि मिलकर इसका स्वागत करें। भारत की राष्ट्रीय एकता के प्रतीक इस राष्ट्रीय गान का सम्मान करें। जन-गण-मन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए पंतजी लिखते हैं—

ये प्रतीक जन हृदय मिलन के,
जन पूजन, जन आराधन के,
भाव युगों के इनमें विकसित,
इन फूलों को शीश चढ़ायें।

प्रश्न 4. पंतजी की भाव पक्ष सम्बन्धी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—महाकवि पंत की काव्य-यात्रा ने अनेक पड़ाव पार किये हैं। सौन्दर्य के कवि से दर्शन के कवि तक का भाव-प्रवाह अनेक मोड़ों से गुजरा है। प्रकृति की मनोहारिणी भूमिकाओं से जीवन के कटु यथार्थ में उतर कर उनका मन अरविंद के संतुलित जीवन-दर्शन को अपना चुका है। भाव पक्ष सम्बन्धी उनके काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) प्रकृति-वर्णन—पंतजी प्रकृति के श्रेष्ठ कवि हैं। जन्मभूमि कौसानी की मनोरम प्रकृति-छटा ने उनके कोमल हृदय को आरम्भ से ही आकृष्ट किया था। आपका प्रकृति वर्णन विविध रूपों में सामने आया है। उद्दीपन-रूप, आलम्बन-रूप, मानवीकरण, उपदेशिका-रूप, आलंकारिक रूप सभी कुछ उनके प्रकृति-चित्रण में विद्यमान है। कुछ उदाहरण दर्शनीय हैं—

लहरों के घूँघट से झुकझुक, दशमी का शशि निज तिर्यक्-मुख
दिखलाता मुग्धा सा रुक-रुक। (आलम्बन रूप)

\+ + +

सुरपति के हमहीं हैं अनुचर, जगत्प्राण के भी सहचर,
मेघदूत की सजल कल्पना, चातक के चिर जीवनधर। (मानवीकरण)

पंत के प्रकृति वर्णन की एक और विशेषता उनकी बिम्ब रचना है। प्रकृति के सजल, सरस, मनोरम चित्र उपस्थित करने में आप अति दक्ष हैं—

बाँसों का झुरमुट, सन्ध्या का झुटपुट।
हैं चहक रही चिड़ियाँ टी-वी-टी-टुट-टुट्।

(2) दार्शनिकता—पंत जी पर मार्क्सवाद का और पीछे अरविन्द के दार्शनिक विचारों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। एक नवीन दिव्य चेतना-संयुक्त भावी मानव-समाज को धरती पर उतार लाने की इच्छा 'अरविन्द-दर्शन' का ही संदेश है।

चिंतन का प्रभाव उनकी प्रकृति वर्णन सम्बन्धी रचनाओं को भी यत्र-तत्र छू गया है। उनकी 'नौका-विहार' रचना का उपसंहार दार्शनिकता के साथ ही होता है—

हे जग-जीवन के कर्णधार ! चिर जन्म मरण के आरपार !
शाश्वत जीवन नौका विहार।।

(3) मानवतावादी दृष्टिकोण—पंतजी का मानव-समाज के चिर कल्याण में, भावी विकास में पूर्ण विश्वास रहा है। प्रकृति के एकांग्र चितेरे होते हुए भी उन्होंने मानव को स्रष्टा की श्रेष्ठ कृति स्वीकार किया है—

सुन्दर हैं विहग सुमन सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतम।

उनकी यही आकांक्षा है कि मानव देश, जाति संस्कृति की सीमाओं से ऊपर उठकर विश्व मानवता के आँगन में क्रीड़ा करे।

प्रश्न 5. सुमित्रानन्दन पंत के काव्य का कला पक्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—प्रसाद और निराला की भाँति पंतजी भी छायावाद के स्तम्भ माने जाते हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाने वाले पंतजी का कला पक्ष अत्यन्त समृद्ध और प्रभावशाली है। काव्य कला के प्रति वह सदा सचेष्ट रहे।

पंत का कला पक्ष

(1) सरल-समर्थ भाषा—पंतजी का शब्दकोष अक्षय और अतुलनीय है। भाव की अभिव्यक्ति के लिए सटीक शब्द का चयन, आपकी भाषा की विशेषता रही है। आपकी भाषा में

भावानुकूल सुकुमारता, लालित्य और ओज भी है। उनकी भाषा का एक स्तर है ज़िस पर पहुँच कर उनके काव्य का सच्चा आनन्द लिया जा सकता है। आपने विषयानुसार भाषा में परिवर्तन भी किया है।

सरल-ललित भाषा—*''गोरे अंगों पर सिहर सिहर, लहराता तार तरल सुन्दर*
चंचल अंचल सा नीलाम्बर।''

कठोर अभिव्यक्ति की भाषा—**''शतशत फेनोच्छ्वसित, स्फीत फूत्कार भंयकर''।**

नये शब्दों का निर्माण भी पंतजी की विशेषता है। यथा—'टलमल', 'रलमल'। दार्शनिक और गम्भीर चिन्तन से बोझिल रचनाओं में भाषा क्लिष्ट है।

(2) शैली की विविधता—पंतजी की रचना शैली में लाक्षणिकता, प्रासादिकता और छायावादी संस्पर्श है। प्रतीकों का प्रयोग, सजीव बिम्ब विधान तथा ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति आपकी रचना-शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(3) अलंकार—पंतजी का अलंकरण भी बड़ा भव्य है। आपने नवीनतम अलंकारों का सफल और सटीक प्रय़ोग किया है। ध्वन्यर्थ-व्यंजना, विशेषण-विपर्यय, मानवीकरण आदि सभी का कवि नें साधिकार उपयोग किया है। मानवीकरण का एक उदाहरण—

''सैकत शैया पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल।
लेटी हैं श्रान्त, क्लान्त निश्चल ।''

परम्परागत अलंकारों का भी कवि ने सफलता से प्रयोग किया है। एक सांगरूपक देखिए—

साम्राज्यवाद था कंस, वन्दिनी मानवता पशु-बलाक्रान्त,
शृंखला दासता, प्रहरी बहु निर्मम शासन-पद-शक्ति-भ्रान्त।

छंद—पंतजी ने छन्दों में भी विविधता को प्रश्रय दिया है। नये छन्दों की रचना भी आपने की है। छन्द में वर्णन और मात्रा पर बल न देकर आपने गेयता और लय पर विशेष ध्यान दिया है।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—**पृष्ठ 65-67** हिमाद्रि = हिम से ढँका हिमालय। **निलय** = घर, आवास। **दुस्तर** = कठिन। **दिगन्तर** = दिशाएँ। **अमित** = अधिक, असीम। **शुचि** = पवित्र। **बिछोह** = बिछुड़ना, अलग होना।

[1]

हरित अवनि भरित अंक,
रहस कलामय मयंक,
काल व्याल से निशंक,
मृत्युंजय, जय हे!
उदित कौन परम लक्ष्य
मन्त्रचक्षु के समक्ष ?
ऊर्ध्व प्राण मौन वक्ष,
सुर नर विस्मय हे ! [पृष्ठ 66]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश सुमित्रानन्दन पंत रचित जय हिमाद्रि शीर्षक गीत से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि हिमालय की महिमा का वर्णन करते हुए कह रहा है—

व्याख्या—हे हिमालय! हरी-भरी धरती तुम्हारी गोद है। तुम्हारा रूप सोलह कलाओं से युक्त चन्द्रमा के समान है। तुम चन्द्रमा के सदृश अकेले ही सुदृढ़ता के साथ स्थित हो। मृत्यु रूपी व्याल

से तुम्हें कोई भय नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर ली है। कवि पंत हिमालय को मृत्युंजय मानते हुए उसकी विजय के गीत गाता है।

हिमालय के चमत्कारिक नेत्रों से किसी महान् उद्देश्य की झलक आती है। हिमालय के मौन को देखकर उसके समाधि स्थल रूप की कल्पना सहज ही की जा सकती है। ऐसा आभास होता है कि यह हिमालय नहीं अपितु कोई समाधिस्थ योगी है जो प्राणायाम साधे हुए है। स्वयं देवता भी हिमालय के इस रूप पर आश्चर्यचकित हैं। मनुष्य का तो कहना ही क्या है! वह भी हिमालय की इस अवस्था से आश्चर्य में पड़े हुए हैं।

काव्य सौन्दर्य—(i) भाषा—चित्रमयी खड़ी बोली। (ii) रस—शान्त। (iii) छन्द—गेय। (iv) अलंकार—रूपक, उपमा। (v) अन्य—हिमालय-महिमा-वर्णन।

[2]

प्राणों के वैभव से वंचित
मुझे न स्वीकृत ईश्वर किंचित
इंद्र मरूतगण से ही रक्षित
जयी हुआ असुरों पर !
भू जीवन इच्छा से गर्भित
प्रभु की महिमा ही दिग-विकसित,
जन भू जीवन में हो मूर्तित
जग से पृथक् न ईश्वर! [पृष्ठ 68]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश सुमित्रानन्दन पन्त रचित **युग बोध** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कविं पारलौकिकं सुखों को कल्पना मात्र बताते हुए वास्तविक युग का बोध करा रहा है।

व्याख्या—पंतजी कहते हैं कि ईश्वरीय रूप को ही सब कुछ नहीं मान लेना चाहिए। ईश्वरीय रूप में सुख-वैभव की कल्पना अथवा विश्वास एक धोखा है। ईश्वरीय सुख में जींवन की यथार्थता कदापि नहीं है।

कवि पन्त इन्द्र की विजय का उदाहरण देते हुए मानव-महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि जिस प्रकार राजा इन्द्र की विजय तभी सम्भव हो सकी जब उसने मरुत-गणों की सहायता ली। असुरों पर विजय प्राप्त करने में मरुत गणों का उल्लेखनीय योग रहा। उसी प्रकार ईश्वरीय स्वरूप को साकार बनाने में व्यक्ति का ही महत्त्वपूर्ण योग है। मनुष्य उस ईश्वरीय तेज का ही रूप है। अत: मनुष्य से भिन्न ईश्वर की कल्पना करना निरर्थक है। वर्तमान जीवन का सुख ही यथार्थ है। उसका चिन्तन ही ईश्वर प्राप्ति तथा मोक्ष का साधन है।

काव्य-सौन्दर्य—(i) भाषा— अलंकृत भाषा। (ii) रस— शान्त। (iii) छन्द—गेय। (iv) अलंकार—अनुप्रास। (v) अन्य—सच्चा युग बोध।

●●

13 रामधारी सिंह 'दिनकर'

● गागर में सागर

रामधारी सिंह 'दिनकर'—जीवन—जन्म—सन् 1908 ● स्थान—सिमरिया (मुंगेर) ● पिता की इनकी अल्पायु में मृत्यु ● विधवा माता द्वारा शिक्षा का प्रबन्ध ● पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. की उपाधि ● बिहार सरकार में प्रचार विभाग के उपनिदेशक ● मुजफ्फरपुर विद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष ● भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति ● राज्य सभा के सदस्य ● ज्ञानपीठ पुरस्कार ● भारत सरकार द्वारा "पद्म विभूषण" ● मृत्यु—1974 ●

रचनाएँ—काव्य—(1) रसवन्ती (2) सामधेनी (3) कुरुक्षेत्र (4) रेणुका (5) हुंकार (6) उर्वशी (7) नीम के पत्ते (8) परशुराम की प्रतीक्षा (9) रश्मिरथी (10) धूप और धुआँ (11) आत्मा की आँखें (12) उजली आग (13) इतिहास के आँसू (14) बापू (15) दिनकर की सूक्तियाँ।

संस्मरण—(1) देश विदेश (2) लोक देव नेहरू आदि।

निबन्ध—(1) रेती के फूल (2) वेणुवन (3) अर्द्धनारीश्वर आदि।

कहानी—उजली आग।

काव्य-सार—चतुर्थ सर्ग—पापी वह है जिसने अनीति का मार्ग ग्रहण कर लिया है। न्याय का विरोध होने से युद्ध की सम्भावना में वृद्धि होती है। ईर्ष्या का वातावरण बनता है* महाभारत जैसी स्थिति उत्पन्न होती है जो महाविनाश का लक्षण है।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है—

(क) किसी से भिड़ना (ख) किसी को मारना

(ग) किसी के द्वारा मरना (घ) शान्ति से निर्वाह करना।

उत्तर—[घ] शान्ति से निर्वाह करना।

प्रश्न 2. दुर्योधन पाण्डवों से ईर्ष्या करता था—

(क) गुरू द्वारा अर्जुन की धर्नुविद्या की प्रशंसा के कारण

(ख) पाण्डवों का द्रोणाचार्य से शिक्षा ग्रहण करने के कारण

(ग) द्रोपदी से विवाह करने के कारण

(घ) अर्जुन द्वारा पक्षी को भेद देने के कारण।

उत्तर—[घ] अर्जुन द्वारा पक्षी को भेद देने के कारण।

प्रश्न 3. भीष्म पितामह की दृष्टि में वह व्यक्ति नरक का अधिकारी है—

(क) जो पाप के कार्यों में लगा है (ख) जो पापों को सहन करने वाला है

(ग) जो नैतिक अपराध में लिप्त है (घ) जो न्याय-अन्याय में भेद नहीं करता है।

उत्तर—[ख] जो पापों को सहन करने वाला है।

प्रश्न 4. भीष्म पितामह महाभारत के युद्ध का क्या कारण मानते थे—

(क) दुर्योधन की अनीति (ख) वैर-प्रतिशोध की भावना

(ग) कौरवों की धन-लिप्सा (घ) कौरवों की सिंहासन प्राप्ति।

उत्तर—[ख] वैर-प्रतिशोध की भावना।

प्रश्न 5. "दिनकर" को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था—

(क) रश्मिरथी पर (ख) कुरुक्षेत्र पर

(ग) उर्वशी पर (ग) रसवन्ती पर।

उत्तर—[ग] उर्वशी पर।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. नरक की अवधारणा किस प्रकार के मनुष्यों के लिए की गयी है ?

उत्तर—नरक की आवधारण पाप कार्यों में लिप्त मनुष्यों के लिए की गयी है।

प्रश्न 2. दुराचारी व्यक्ति विनीत व्यक्ति को किस दृष्टि से देखते हैं ?

उत्तर—दुराचारी व्यक्ति विनीत व्यक्ति को कायर की दृष्टि से देखते हैं।

प्रश्न 3. भीष्म ने महाभारत को किसका कुफल माना है ?

उत्तर—भीष्म ने महाभारत को वैर-प्रतिशोध की भावना का कुफल माना है।

प्रश्न 4. महाभारत युगीन व्यक्तियों में किस प्रकार के भाव भरे हुए थे ?

उत्तर—महाभारत युगीन व्यक्तियों में ईर्ष्यात्मक भाव भरे हुए थे।

प्रश्न 5. युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ क्यों किया था ?

उत्तर—युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ देश की एकता के लिए किया था।

प्रश्न 6. राजसूय यज्ञ में व्यास मुनि की क्या भविष्यवाणी थी ?

उत्तर—राजसूय यज्ञ में व्यास मुनि ने भयंकर युद्ध की भविष्यवाणी की थी।

प्रश्न 7. भीष्म पितामह ने मनुष्य का अहंकार तथा भ्रम किसे कहा है ?

उत्तर—भीष्म पितामह ने व्यक्ति को पूज्यनीय स्वीकार न करना ही व्यक्ति का अहंकार तथा भ्रम कहा है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. भगवान कृष्ण से अन्य नृपतियों की चिढ़ का क्या कारण था ? उन व्यक्तियों के अभिमान ने उनके मानस पर क्या प्रभाव डाल रखा था ?

उत्तर—भगवान कृष्ण से अन्य नृपति चिढ़ते थे। चिढ़ने का प्रमुख कारण श्रीकृष्ण का राजसूय यज्ञ था। इस यज्ञ का आयोजन युधिष्ठिर को सम्राट बनाने के लिए किया गया था। पराजित नृप इस यज्ञ का विरोध कर रहे थे। उनके मन में ईर्ष्या का प्रबल भाव था। वे युद्ध द्वारा ईर्ष्या के भाव को शान्त करना चाहते थे। अत: ऐसे अवसर को खोज रहे थे जो युद्ध का कारण बन सके।

प्रश्न 2. 'नर और नियति' के परस्पर सम्बन्ध को बताते हुए अपने जीवन में किसी अनुभव से उदाहरण देकर समझाइये ।

उत्तर—तुलसीदास ने ठीक ही कहा है—"है है वही, जो राम रचि राखा।"

व्यक्ति न जाने इस जीवन में क्या-क्या चाहता है, किन्तु उसे इच्छित फल प्राप्त नहीं हो पाता। व्यक्ति को वही मिलता है जो विधाता ने उसके भाग्य में लिख दिया है। दिनकर जी ने लिखा है—

"इच्छा नर की और, और फल देती उसे नियति है,
फलता विष पीयूष-वृक्ष में अकथ प्रकृति की गति है।"

मैं स्वयं जीवन में आई. ए. एस. अधिकारी बनना चाहता था। ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहता था, किन्तु नियति ने मुझे ऐसा जीवन नहीं दिया। मैं एक शिक्षक बनकर, विद्यार्थियों का भाग्य विधाता ही बन सका।

प्रश्न 3. अहंकार और भ्रम मनुष्य की प्रगति में किस प्रकार बाधक सिद्ध होते हैं ?

उत्तर—दुर्योधन एक अहंकारी राजा था। उसने पाण्डवों के विनाश के लिए हर सम्भव प्रयास किया। युद्ध का आह्वान किया जो उसके पतन का कारण सिद्ध हुआ। उसे अपनी शक्ति का भ्रम हुआ जिसने उसको युद्ध प्रांगण में नीचा दिखाया। सत्य और न्याय के पथ से विचलित होकर उसने राज्य की प्रगति में बाधा उत्पन्न की और उसका अहंकार तथा भ्रम महाविनाश का कारण बना।

प्रश्न 4. विश्व अशान्ति और हाहाकार के आगमन की सूचना किसने और कब दे दी थी ?

उत्तर—विश्व अशान्ति और हाहाकर के आगमन की सूचना देने वाले थे व्यास मुनि। राजसूय यज्ञ के पश्चात् व्यास जी ने महासंग्राम की सूचना दी थी। उन्होंने 13 वर्ष पश्चात् विश्व अशान्ति की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने कहा था—

''तेरह वर्ष रहेगी जगत में शान्ति किसी विधि छाई,
तब होगा विस्फोट, छिड़ेगी कोई कठिन लड़ाई।
होगा ध्वंस कराल, काल विंप्लव का खेल रचेगा,
प्रलय प्रकट होगा धरणी पर हा-हा कार मचेगा।''

काल के विकट खेल और हाहाकार के आगमन की सूचना व्यास जी ने दी थी। उनका हृदय विकल था, इसलिए उन्होंने भरी सभा के मध्य सबको सजग किया था। उन्होंने संयम रखने का आग्रह किया था। किन्तु वर्ष के समाप्त होते-होते इन्द्रप्रस्थ पर विपत्ति की घटाएँ घिर आयीं। कवि लिखता है—

''भरी सभा के बीच उन्होंने सजग किया था सबको,
पग-पग पर संयम का शुभ उपदेश दिया था सबको।''

× × ×

''बीत न पाया वर्ष, काल का गर्जन पड़ा सुनाई,
इन्द्रप्रस्थ पर घुमड़ विपद की घटा अतकित छाई।''

किसी को यह पता नहीं था कि इस प्रकार की विनाशलीला होगी और भारत को दुर्भाग्य देश को नष्ट करके ही रहेगा।

प्रश्न 5. युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से एकमात्र अप्रसन्न होने वाले महापुरुष कौन थे ? उनके विषय में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—श्रीकृष्ण ने यह विचार किया था कि राजसूय यज्ञ का आयोजन करके धर्मराज युधिष्ठिर को सम्राट बना दिया जाय ताकि देश में एकता स्थापित हो सके। उनका यह विचार देश-हित में था। एकता के लिए इससे श्रेष्ठ उपाय अन्य कोई हो ही नहीं सकता था। किन्तु इस राजसूय यज्ञ का विपरीत प्रभाव पड़ा। पराजित राजाओं ने अहंकार और भ्रमवश श्रीकृष्ण के इस उद्देश्य को भलीभाँति नहीं समझा। दूसरों के वैभव तथा प्रताप की वृद्धि का उन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि वे युधिष्ठिर तथा कृष्ण के शत्रु बन गये। उनसे अप्रसन्न हुए। दिनकरजी लिखते हैं—

''सो परिणाम और कुछ निकला, भड़की आग भुवन में,
द्वेष अंकुरित हुआ, पराजित राजाओं के मन में।

× × ×

इस पूजन में पड़ी दिखायी उन्हें विवशता अपनी,
पर के विभव, प्रताप, समुन्नति में परवशता अपनी।

प्रश्न 6. दुर्योधन ने किस घटना के पश्चात् अर्जुन से बैर साध लिया था ? क्या वह स्वभावोचित था ? (उत्तर सीमा 50 शब्द)

उत्तर—दुर्योधन अभिमानी राजा था। वह ईर्ष्या और द्वेष के विकारों में जकड़ा हुआ था। अर्जुन उसका विशेष प्रतिद्वन्द्वी था। एक बार अर्जुन ने अपनी तथा अन्य राजकुमारों की बाण-विद्या की परीक्षा में नकली पक्षी का बाण से भेदन करके सफलता का श्रेय प्राप्त किया था। अर्जुन की इस सफलता और प्रशंसा से दुर्योधन के क्रोध तथा ईर्ष्या की अग्नि भड़क उठी। वह अर्जुन को अपना शत्रु मानने लगा जो स्वभावोचित था।

प्रश्न 7. दुर्योधन की द्वेष भावना ने विनाश के कौन-कौन से रूप धारण किये ? उनका उल्लेख करिये।

उत्तर—दुर्योधन ईर्ष्यालु राजा था। दम्भ उसकी रग-रग में समाया हुआ था। किसी भी राजा की समृद्धि से उसको ईर्ष्या होती थी। वह नहीं चाहता था कि कोई राजा उससे अधिक उन्नत हो।

पाण्डवों ने अपनी सच्चाई तथा लगन से राज्य की अभिवृद्धि में कोई कसर नहीं रखी थी। उनकी समृद्धि को देखकर दुर्योधन का मन पाण्डवों के प्रति ईर्ष्या से जल उठा।

दुर्योधन ने पग-पग पर पाण्डवों के सम्मुख समस्याएँ उत्पन्न कीं। उनके उन्नति के मार्ग में अवरोध खड़े किये। उनको नाना प्रकार के कष्ट दिये। मारने की योजनाएँ तैयार कीं। उनको अस्तित्व विहीन करने का प्रयास किया। महाभारत का युद्ध भी दुर्योधन की द्वेष भावना का ही परिणाम था।

प्रश्न 8. 'दिनकरजी' के कला पक्ष पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—रामधारीसिंह 'दिनकर' हिन्दी काव्य के सफल रचयिता तथा राष्ट्र-चेतना के सुप्त तारों में झनझानाहट उत्पन्न करने वाले ऐसे राष्ट्र-कवि हैं जिन्होंने सदा पीड़ितों और वंचितों की वकालत की। उनके युग सापेक्ष काव्य ने हर दृष्टि से समृद्धि प्रदान की।

कलापक्ष

भाषा—भाषा के विषय में दिनकर जी ने उदारता से काम लिया है। विषयानुकूल और पात्रानुकूल भाषा आपकी विशेषता है। यही कारण है कि आपकी भाषा में एकाधिक स्वरूप उपलब्ध होते हैं—

संस्कृतनिष्ठ भाषा—भाषा का यह स्वरूप प्रमुखतः उनके प्रबन्ध-काव्यों में रहा है। यद्यपि रश्मिरथी इसका अपवाद माना जा सकता है। इस भाषा के कतिपय उदाहरण दर्शनीय हैं—

> ***विषधर के फण पर अमृतवर्त्ति,***
> ***उद्धत, अदम्य, बर्बर बल पर***
> ***रूपांकुश, क्षीण मृणाल तार।*** **(उर्वशी)**

सरल भाषा—इस भाषा की शब्दावली तद्भव शब्द-प्रधान और व्यावहारिक है—

> ***सच है विपत्ति जब आती है,***
> ***कायर को ही दहलाती है।*** **(रश्मिरथी)**

मिश्रित भाषा—दिनकर जी ने आवश्यकतानुसार विदेशी भाषा के शब्दों को भी मुक्त भाव से प्रयुक्त किया है—

> ***किस्मत के फेरे में पड़ कर***
> ***पा प्रेम बसा दुश्मन के घर।*** **(रश्मिरथी)**

भाषा को प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने के लिए कवि ने मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी यथास्थान प्रयोग किया है—मन्त्र मुग्ध होना, जय जयकार होना, खड्ग की भाषा समझना, मुष्टि में सिमटना, तलवार से खेलना आदि।

शैली—दिनकर जी की काव्य-शैली प्रबन्ध और मुक्तक दोनों ही शिल्पों में सफलता से प्रस्तुत हुई है। उन्होंने उदात्त चरित्रों को एवं युगानुकूल विषयों को भाव और विवेक के समन्वय के साथ समुपस्थित किया है। दिनकर जी को नाटकीयता विशेष प्रिय है। आपके काव्य अपरम्परागत रीति से नाटकीय शैली में आरम्भ हुए हैं—

> *''वह कौन रोता है वहाँ इतिहास के अध्याय में''* **(कुरुक्षेत्र)**

यथा-स्थान वर्णनात्मक, भावात्मक एवं संवादात्मक शैलियों का भी आपने सफलता से प्रयोग किया है।

अलंकार—कवि दिनकर अलंकारों के प्रेमी नहीं हैं। स्वतः स्वाभाविक रचना-प्रवाह में जो अलंकार आ गये हैं वही कवि को ग्राह्य हैं। **उपमा, रूपक एवं मानवीकरण आपके प्रिय अलंकार हैं। यथा—**

''यह शिला सा वक्ष, ये चट्टान सी मेरी भुजाएँ'' (उपमा)
''विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत'' (रूपक)
''मेरे नगपति मेरे विशाल।'' (मानवीकरण)

छन्द—दिनकर जी ने अनेक छन्दों को अपनी लेखनी की कसौटी बनाया है। इनमें परम्परागत, नवीन एवं मुक्त छन्दमयी रचनाएँ भी हैं। परन्तु रस एवं भाव के अनुसार छन्द चयन की विशेषता आप में सर्वत्र विद्यमान है। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी तथा अन्य रचनाओं में इनका कौशल दर्शनीय है।

निष्कर्ष—एक ओजस्वी और क्रान्तिदर्शी काव्य के रचयिता के रूप में कवि दिनकर सदैव स्मरणीय रहेंगे। आपने राष्ट्र को नयी चेतना, नयी दिशा और नया स्वर देने में सदा पहल की। भूषण की परम्परा का पुनर्जीवन, एक बड़े अन्तराल के पश्चात् दिनकर में प्रकट हुआ था, पर समय से पहले ही बुझ गया।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—**पृष्ठ 72-75** **विसर्जित** = त्यागना, छोड़ना। **कौन्तेय** = कुन्ती-पुत्र युधिष्ठिर। **धूमाकुल** = धुँये से पूर्ण। **अकथ** = न वर्णन योग्य। **निस्तार** = छुटकारा। **प्रशमित** = शान्त। **संगर** = अशान्त। **विप्लव** = हाहाकार युक्त उपद्रव। **अहम्मय** = गर्व में चूर। **धृति** = धैर्य। **दुरग्नि** = द्वेष भावना।

[1]

''युगों से विश्व में विष-वायु बहती आ रही थी,
धरित्री मौन हो दावाग्नि सहती आ रही थी;
परस्पर वैर-शोधन के लिए तैयार थे सब,
समर का खोजते कोई बड़ा आधार थे सब।

''कहीं था जल रहा कोई किसी की शूरता से,
कहीं था क्षोभ में कोई किसी की क्रूरता से।
कहीं उत्कर्ष ही नृप का नृपों को सालता था,
कहीं प्रतिशोध का कोई भुजंगम पालता था।'' (पृष्ठ 74)

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **रामधारीसिंह 'दिनकर'** रचित **कुरुक्षेत्र के चतुर्थ सर्ग** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर 'दिनकर' ने महाभारत के कुछ कारणों को स्पष्ट करते हुए बताया है—

व्याख्या—यह संसार ईर्ष्या-द्वेष से पूर्ण है। अतः यह कहना पर्याप्त नहीं है कि महाभारत का कारण कौरव तथा पाण्डवों की पारस्परिक शत्रु भावना थी। दो घरों की आपसी लड़ाई थी।

भीष्म पितामह कह रहे हैं कि ईर्ष्या-द्वेष की विष वायु तो युग-युगों से बहती आ रही है। दो विरोधियों के अत्याचारों को, इस धरती माँ ने पहले ही सहन किया है।

परस्पर शत्रुता का भाव तो था ही, वे अपने शत्रु भाव को शान्त करने के लिए उचित अवसर की खोज में थे। वे महायुद्ध तो चाहते थे किन्तु उसके आधार की प्रतीक्षा में थे। परिणामतः कोई शत्रुता की अग्नि में जल रहा था। कोई शान्त भाव से दूसरों की दुष्टता को देख रहा था।

किसी की शूरवीरता से राजा जल रहे थे। प्रतिशोध का सर्प हृदय में पाले राजाओं की वेदना बढ़ती जा रही थी। महाभारत का युद्ध इन्हीं भावनाओं का परिणाम था।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ सरल भाषा। (ii) **रस**—वीर रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—रूपक अलंकार। (v) **अन्य**—महाभारत का नवीन पद्धति से अध्ययन-मनन।

14 सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्सायन 'अज्ञेय'

● गागर में सागर

अज्ञेय जी—जीवन—जन्म—सन् 1911 ● पिता के साथ विभिन्न स्थानों का भ्रमण ● लाहौर से बी. एस. सी. ● एम. ए. ● (अंग्रेजी) पूर्ण होने से पूर्व क्रान्तिकारियों के साथ गिरफ्तार ● पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन ● आकाशवाणी में कार्य ● मृत्यु 1987.

रचनाएँ—काव्य (1) असाध्य वीणा (2) हरी घास पर क्षण भर (3) प्रभामय (4)बावरा अहेरी (5) अरी ओ करुणा (6) आँगन के पार द्वार (7) सुनहरे सैवाल (8) कितनी नावों में कितनी बार (9) सागर मुद्रा (10) भग्न दूत (11) चिन्ता आदि।

निबन्ध—(1) आत्मने वद (2) त्रिशुंक आदि।

नाटक—उत्तर प्रियदर्शी।

कहानी—(1) परम्परा (2) कोठरी की जात (3) त्रिपथगा (4) शरणार्थी (5) अज्ञेय की कहानियाँ भाग 1-4.

उपन्यास—(1) उत्थान (2) शेखर एक जीवनी (3) नदी के द्वीप (4) संघर्ष आदि।

काव्य-सार—हिरोशिमा—द्वितीय विश्व युद्ध का विनाशकारी रूप ● हिरोशिमा पर गिराये गये बम की भीषण-लीला। ●

सत्य तो बहुत मिले—सामाजिक जीवन का सत्य-सामाजिक समस्यायें। ●

साँप—शहरी जीवन की स्वार्थी मनोवृत्ति ● जीवन की क्रूरता तथा कृतघ्नता का व्यंग चित्र।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. खानाबदोश से तात्पर्य है—

(क) खाना बनाने वाला (ख) खाना परोसने वाला
(ग) खाने के लिए आमन्त्रित (घ) घुमक्कड़ जीवन जीने वाला

उत्तर—[घ] घुमक्कड़ जीवन जीने वाला।

प्रश्न 2. नगर के बीचोंबीच सूरज के बरसने का तात्पर्य है—

(क) ज्वालामुखी विस्फोट (ख) ग्रीष्म काल की तेज धूप
(ग) भीषण अग्नि काण्ड (घ) परमाणु बम-विस्फोट।

उत्तर—[घ] परमाणु बम-विस्फोट।

प्रश्न 3. 'हिरोशिमा' कविता का उद्देश्य है—

(क) अणुबम की विभीषिका का वर्णन (ख) हिरोशिमा की विनाशलीला का वर्णन
(ग) अणु युद्ध का वर्णन (घ) युद्ध से घृणा।

उत्तर—[क] अणुबम की विभीषिका का वर्णन।

प्रश्न 4. 'सत्य तो बहुत मिले' का प्रमुख उद्देश्य है—

(क) सत्य का स्वरूप प्रस्तुत करना (ख) सत्य को महान सिद्ध करना
(ग) असत्य के प्रति घृणा (घ) सत्य का परिचय।

उत्तर—[क] सत्य का स्वरूप प्रस्तुत करना।

प्रश्न 5. 'साँप' कविता का मुख्य उद्देश्य है—

(क) सभ्यता का विकास बताना (ख) साँप का जीवन दर्शन
(ग) आधुनिक शहरी सभ्यता का दर्शन (घ) नगरीकरण की प्रवृत्ति जताना।

उत्तर—[ग] आधुनिक शहरी सभ्यता का दर्शन।

प्रश्न 6. 'साँप' कविता में साँप को प्रतीक बनाया गया है—

(क) स्वार्थी मनुष्य का (ख) लोभी व्यक्ति का

(ग) शहरी मनुष्य का (घ) सभ्य मनुष्य का।

उत्तर—[क] स्वार्थी मनुष्य का।

प्रश्न 7. 'हिरोशिमा' कविता की मूल संवेदना है—

(क) वैज्ञानिक युग का विरोध (ख) युद्ध को भीषणता

(ग) प्राकृतिक प्रदूषण (घ) मानव सभ्यता का विध्वंस होना।

उत्तर—[घ] मानव सभ्यता का विध्वंस होना।

प्रश्न 8. 'अज्ञेय' रचित साँप कविता का मूल स्वर क्या है ?

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(क) घृणा (ख) पीड़ा

(ग) वितृष्णा (घ) व्यंग्य।

उत्तर—[घ] व्यंग्य।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. मानव का रचा हुआ सूरज किसे कहा गया है ?

उत्तर—मानव का रचा हुआ सूरज अणु विस्फोट को कहा गया है ।

प्रश्न 2. हिरोशिमा के अणु विस्फोट को काल सूर्य क्यों कहा गया है ?

उत्तर—हिरोशिमा के अणु विस्फोट को काल सूर्य कहने का कारण अणु बम की भंयकरता है जिसने वहाँ के जन-जीवन को अस्त-व्यस्त ही नहीं किया अपितु नष्ट कर दिया।

प्रश्न 3. 'हिरोशिमा' कविता की मूल संवेदना क्या है ?

उत्तर—'हिरोशिमा' कविता की मूल संवेदना मानव सभ्यता के होने वाले विध्वंस पर व्यंग्य करना है।

प्रश्न 4. 'हिरोशिमा' कविता में अज्ञेय जी ने काल सूर्य किसे माना है ?

उत्तर—'हिरोशिमा' कविता में अज्ञेय जी ने काल सूर्य परमाणु-बम को माना है जिसने प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दिया था।

प्रश्न 5. "कुछ घुटे मंजे सफेदपोश मिले" का प्रतीक रूप में क्या अर्थ है जिसका उल्लेख अज्ञेय जी ने "सत्य तो बहुत मिले" कविता में किया है।

उत्तर—'सत्य तो बहुत मिले' कविता में "कुछ घुटे मंजे सफेदपोश मिले" का प्रतीकार्थ स्वार्थी एवं भ्रष्ट व्यक्तियों से है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'परमाणु शक्ति एवं मानव जाति का भविष्य' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (उत्तर सीमा 50 शब्द)

उत्तर—आज परमाणु शक्ति का युग है। प्रस्तर युग से प्रगति के पथ पर बढ़ता मानव आज परमाणु युग में प्रवेश कर चुका है। इस शक्ति ने हमारे भौतिक जीवन तथा विचार जगत को प्रभावित किया है।

युद्ध के स्वरूप में तो परिवर्तन आया ही है विचारों में भी परिवर्तन की लहर दौड़ी है। नागरिक के मन में यह विचार जाग चुका है कि अब मानव जीवन चिन्ता मुक्त नहीं रह सकता।

सच्ची मानवता को गहरा आघात पहुँचा है और मानव रक्षा का संयुक्त प्रयास आवश्यक हो गया है।

प्रश्न 2. 'कहे अनकहे' सत्य से कवि का क्या तात्पर्य है ? (उत्तर सीमा 50 शब्द)।

उत्तर—सत्य दो रूपों में प्राप्त है। एक सत्य वह है जिसका कहना ही पर्याप्त नहीं है। उसका समझाना भी आवश्यक है। धर्म तथा नीति के सत्य को केवल कहने से ही कार्य नहीं बन सकता। उसे हमें उचित विधि से समझाना भी परमावश्यक है।

साहित्य का उदाहरण इस सम्बन्ध में दिया जा सकता है जो सत्य-दर्शन का ही एक रूप है। इसको कहा सत्य कहा जाता है।

'अनकहा सत्य' वह है जिसका स्वरूप किसी संकेत द्वारा प्रकट नहीं किया जाता अपितु अनुभव के आधार पर स्पष्ट होता है।

प्रश्न 3. समाज की किन-किन विभीषिकाओं का वर्णन अज्ञेय ने अपनी कविता 'सत्य तो बहुत मिले' में किया है ?

उत्तर—'सत्य तो बहुत मिले' कविता में एक स्थल पर अज्ञेय जी ने लिखा है—

'कुछ नये कुछ पुराने मिले
कुछ अपने कुछ विराने मिले
कुछ दिखावे कुछ बहाने मिले
कुछ अकड़ू कुछ मुँह-चुराने मिले
कुछ घुटे-मंजे सफेद पोश मिले
कुछ दई मारे खानाबदोश मिले।

समाज में नये-पुराने मिलते हैं। ऐसे भी मिलते हैं जो अपनत्व लिए हुये हैं और ऐसे व्यक्तियों का भी अभाव नहीं है जो पराये होते हैं। अकड़ू भी मिलते हैं। स्वार्थी और खानाबदोशों से भी भेंट होती है। बिखरे और बिखरों की भी कोई कमी नहीं है।

सामाजिक विकृतियों ने मानव को दानव बना दिया है। मनुष्य जीवन की सुख एवं शान्ति समाप्त हो गई है। जीवन में दुःख ही दुःख शेष रहे हैं। पारिवारिक कलेश, प्रादेशिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं ने व्यक्ति के जीवन को नरक तुल्य बना दिया है।

प्रश्न 4. अज्ञेय ने 'साँप' कविता में किस व्यंग्य की ओर संकेत किया है ? कविता में व्यंजित अर्थ के आधार पर लिखिये ।

उत्तर—''साँप'' कविता में मानव सभ्यता पर व्यंग्य करते हुए 'अज्ञेय' लिखते हैं—

'तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।

आज का मानव सभ्य बनने का आडम्बर मात्र करता है। न उसमें प्रेम है न पवित्रता का भाव। सद्भावना का उसमें पूर्णरूपेण अभाव है। वह स्वार्थी है। दूसरों पर चोट करता है। साँप जैसी उसकी प्रवृत्ति बन गयी है। अवसर प्राप्त होते ही वह दूसरों को 'डसने' में भी संकोच नहीं करता।

साँप सदृश उसकी प्रवृत्ति ने व्यक्ति की ही नहीं अपितु राष्ट्र को भी अपने विष से मूर्छित किया हुआ है।

अज्ञेय जी ने व्यक्ति की कुप्रवृत्तियों को काल के कराल गाल में पहुँचाने वाला 'साँप' बताया है। मानव सभ्यता पर करारा व्यंग्य है।

प्रश्न 5. ''सत्य तो बहुत मिले'' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिये।

उत्तर—अज्ञेय ने सत्य के विभिन्न रूपों एवं उसके प्रभावों का वर्णन करते हुए 'सत्य तो बहुत मिले' कविता में लिखा है—

कुछ ने लुभाया कुछ ने डराया
कुछ ने परचाया कुछ ने भरमाया

सत्य के स्वरूप का वर्णन करते हुए इसी कविता में अज्ञेय जी लिखते हैं—

तुम मेरे ही साथ जले।
तुम
तुम्हें तो
भस्म हो
मैंने फिर अपनी भभूत में पाया।

सत्य का वास्तविक स्वरूप हमारे आँसुओं तथा रक्त से प्रकट होता है। जीवन-पर्यन्त यह सत्य व्यक्ति से सम्बन्धित रहता है। मानव जीवन स्वयं एक सत्य है। खोज करने पर सत्य के विभिन्न रूप और उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रश्न 6. 'हिरोशिमा' में अणु विस्फोट को काल सूर्य की संज्ञा से क्यों सम्बोधित किया गया है?

उत्तर—'हिरोशिमा' कविता में अज्ञेयजी अणु विस्फोट को काल सूर्य की संज्ञा देते हुए लिखते हैं—

बरसा सहसा
बीचों-बीच नगर के
काल-सूर्य के रथ के
पहियों के ज्यों आरे टूट कर
बिखर गये हों
दसों दिशा में।

काल सूर्य महाविनाश का द्योतक है। हिरोशिमा का अणु बम भी इसी प्रकार का महाविनाश का रूप प्रस्तुत करने में सहायक हुआ था। उस अणु बम ने अपनी महाविनाश लीला के जो चिह्न छोड़े हैं वे अब भी प्राप्त हैं। इस बम ने ऊँचे-ऊँचे प्रासाद 'हरी-भरी बस्तियाँ, वन-बाग उजाड़ कर रख दिये। भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट कर दी। विनाश की यह लीला आज भी अपना संकेत देते हुए बम की वीभत्सता की कहानी कह रही है। प्रलय काल के सूर्य के समान, अणु विस्फोट ने हिरोशिमा का जन-जीवन सर्वथा विनष्ट कर दिया।

प्रश्न 7. अज्ञेयजी के कला पक्ष की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अज्ञेयजी की छवि एक कवि, निबन्धकार, समीक्षक, पत्रकार तथा कथाकार के रूप में प्रकट होती है। 'तार सप्तक' के प्रवर्त्तक के रूप में उनका योग, काव्य जगत में महत्वपूर्ण है। भाव तथा कला पक्ष दोनों ही दृष्टि से उनका काव्य उच्च कोटि का है।

कला पक्ष

(1) भाषा—अज्ञेयजी ने भाषा के साथ निरन्तर प्रयोग किए हैं। यही कारण है कि उनकी शब्दावली भी विविध-रूपा है। उसमें शुद्ध संस्कृत शब्द भी विद्यमान हैं और विदेशी तथा लोक व्यवहार के शब्द भी। उसका सहज रूप देखिए—

'हे महाबुद्ध ! मैं मन्दिर में आयी हूँ,
रीते हाथ : फूल मैं ला न सकी।'

और संस्कृतनिष्ठ भाषा की बानगी भी दर्शनीय है—

'मैं उसे वहीं पर अक्षत, अनाघ्रात, अस्पृष्ट, अनाविल,
हे महाबुद्ध ! अर्पित करती हूँ तुझे।'

(2) शैली—अज्ञेयजी एक मुक्तककार हैं। आपने अपनी रचनाओं में विविध काव्य शैलियों को स्थान दिया है—छायावादी लाक्षणिक शैली, भावात्मक शैली, प्रयोगवादी सपाट शैली तथा व्यंग्यात्मक शैली आदि। आपके व्यंग्य बड़े तीखे होते हैं। एक उदाहरण पर्याप्त होगा—

'साँप ! तुम सभ्य तो हुए नहीं,
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया। एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे)!
तब कैसे सीखा डसना ! विष कहाँ पाया ?

(3) बिम्ब-विधान—अज्ञेयजी ने अपनी सहज कल्पना से बड़े सजीव और हृदयग्राही बिम्ब प्रस्तुत किये हैं। इसके लिए आपने सार्थक प्रतीकों का भी उपयोग किया है।

अलंकार—परम्परागत तथा नवीन, दोनों ही प्रकार के अलंकारों का अज्ञेय ने उपयोग किया है, किन्तु पुरानों को भी कुछ नयी भंगिमा के साथ काम में लिया है। मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय तथा ध्वन्यर्थ-व्यंजना आदि नये अलंकरण आपने अधिक अपनाये हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(1) ……**काल-सूर्य के रथ के पहियों के ज्यों अरे टूट कर बिखर गये हों।** (उत्प्रेक्षा)

(2) **मैं कब कहता हूँ जीवन मरु नंदन कानन का फूल बने।** (रूपक)

(3) **भाले की अनी सी बनी बगुलों की डार।** (उपमा)

छंद—अज्ञेय जी ने परम्परागत छंदों यथा रोला, हरगीतिका, मंदाक्रान्ता आदि का प्रयोग किया है और छंदमुक्त रचनाएँ भी की हैं। लोक गीतों की लयों पर भी लिखा है।

साहित्य में स्थान—आपकी बहुमुखी प्रतिभा से हिन्दी-काव्य को नयी दिशा तथा गौरव प्राप्त हुआ है। परम्परागत छायावादी काव्य से नयी कविता तक की यात्रा आपने सहजता से पूरी की है। एक युग-प्रवर्तक साहित्यकार के रूप में आपका नाम सदैव समादृत रहेगा।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— **पृष्ठ 78-80** **बिराने** = दूसरों के। **दईमारे** = दैव द्वारा प्रताड़ित। **खानाबदोश** = जिनका स्थायी निवास न हो, घुमक्कड़। **परचाया** = परीक्षा ली। **भरमाया** = भ्रमित किया। **गह्वर** = गहरे गड्ढे। **गुहा** = गुफा। **अशमित** = बिन बुझी। **भभूत** = भस्म, राख।

[1]

छायाएं तो अभी लिखी हैं
झुलसे हुए पत्थरों पर
उजड़ी सड़कों की गच पर।
मानव का रचा हुआ सूरज
मानव को भाप बनाकर सोख गया।
पत्थर पर लिखी हुई यह
जली हुई छाया
मानव की साखी है। **[पृष्ठ 79]**

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'** रचित **अरी ओ करुणा प्रभामय** के **हिरोशिमा** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर अमेरिका द्वारा हिरोशिमा पर गिराये गये अणु बम के घातक दुष्परिणाम का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

व्याख्या—परमाणु बम की ऊष्मा से हिरोशिमा नगर पूर्णरूपेण ध्वस्त हो गया। निवासी अकाल मृत्य को प्राप्त हुए । हिरोशिमा के पत्थरों पर मृत-आत्मा की छाया आज तक अंकित है। वहाँ की उजड़ी हुई सड़कों तथा वहाँ के गड्ढों में आज भी उस विनाश के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं।

परमाणु बम को मनुष्य द्वारा निर्मित प्रलयंकारी सूर्य के रूप में चित्रित करते हुए अज्ञेय जी कहते हैं कि इस बम से मानव जाति का भी विनाश हुआ। उसने प्राणि-मात्र को भाप बनाकर सोख लिया ।

अज्ञेयजी हिरोशिमा और परमाणु बम के माध्यम से संसार को उपदेश करते हुए कहते हैं कि इस दुर्घटना से मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा हिंसा वृत्ति का पता लगता है।

हिरोशिमा के पत्थरों पर मानव की जली छायाएँ आज तक अंकित हैं। ये छायाएँ आज भी मानवता विरोधी कार्यों की साक्षी दे रही हैं। ये छायाएँ आज भी हमें मानव-जाति-विरोधी आविष्कारों के अनौचित्य को प्रकट कर रही हैं।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**— संस्कृत प्रभावपूर्ण भाषा।

(ii) **रस**— भयानक, विस्मय रस। (iii) **छन्द**—अगेय। (iv) **अलंकार**—रूपक, उपमा। (v) **अन्य**—हिरोशिमा के भयानक दृश्य का वर्णन ।

[2]

साँप !
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ—(उत्तर दोगे ?)
तब कैसे सीखा डसना—
विष कहाँ पाया ?

[पृष्ठ 80]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्सायन 'अज्ञेय' रचित साँप शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि स्वार्थी मानव को साँप बताते हुए कहता है—

व्याख्या—यह युग विकासशील है। किन्तु मनुष्य की स्थितिं वही ढाक के तीन पात है। कहने को तो व्यक्ति बड़े-बड़े नगरों में निवास करता है लेकिन सभ्य अभी तक नहीं हो पाया है। उसकी दशा में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है। वह स्वार्थान्ध बना हुआ है। कृतज्ञता का भाव उसमें उत्पन्न नहीं हुआ हैं। उसकी समता विषधर से करते हुए अज्ञेय जी कहते हैं कि जिस प्रकार साँप को दूध पिलाने का कोई उत्तम फल नहीं होता। वह सर्प दूध पीकर भी विष ही उगलता है। अपने बच्चों को भी डस लेता है ठीक सर्प के समान नगर के नागरिकों की भी दशा है। उसके आचरण में भी सर्प जैसी धूर्तता है।

एक प्रश्न करता है कवि—अरे सर्प! तुम नगर में वास करना तक नहीं सीख सके। फिर तुमने यह डसना किस प्रकार सीख लिया ? यह विष तुमने कहाँ से प्राप्त किया ? इसका तुम्हारे पास क्या उत्तर है ?

सर्प को माध्यम बनाकर कवि उन स्वार्थी व्यक्तियों से प्रश्न कर रहा है जो दुराचरण में फँसे हुए हैं। स्वार्थ भावना में फँसे हैं।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—संस्कृत मिश्रित भाषा। (ii) **रस**—विस्मय। (iii) **छन्द**—अगेय। (iv) **अलंकार**—रूपक। (v) **अन्य**—नगर सभ्यता पर व्यंग्य।

15 नागार्जुन

● **गागर में सागर**

नागार्जुन—जन्म—सन् 1911 • स्थान—सतलख (दरभंगा) • अभावग्रस्त जीवन • संघर्षशील कवि बने • दलितों के प्रति सहानुभूति • अन्याय के विरोधी • वर्तमान में प्रमुख व्यंग्यकार।

रचनाएँ—काव्य—(1) युगधारा (2) सतरंग पंखों वाली (3) भस्मांकुर (4) प्रेम का बयान (5) पत्र-हीनता नग्न गाछ (6) हजार-हजार बाहों वाली।

उपन्यास—(1) बाबा बटेश्वरनाथ (2) नई पौध (3) रविनाथ की चाची (4) उग्रतारा (5) इमरतियाँ।

काव्य सार—अकाल—अकाल की स्थिति में निर्धन परिवार की दुर्दशा का सुन्दर वर्णन।

बादल को घिरते देखा है—पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था के दोष तथा समाजवादी व्यवस्था के प्रचलन पर प्रकाश।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'शैवालों की हरी दरी' में निहित अलंकार है—

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) यमक।

उत्तर—[ख] रूपक।

प्रश्न 2. 'बालारुण' का सन्धि विच्छेद होगा—

(क) बाल + अरुण (ख) बाला + रुण

(ग) बाला + अरुण (ग) बाल + आरुण।

उत्तर—[क] बाल + अरुण।

प्रश्न 3. 'अकाल' कविता में प्रकट किया गया है—

(क) अकाल का अनुभव (ख) अकाल और उसके बाद का प्रभाव

(ग) अकाल में दुर्दशा (घ) अकाल में चूहों का स्थान।

उत्तर—[ख] अकाल और उसके बाद का प्रभाव।

प्रश्न 4. 'अकाल' कविता में ''आँखें चमक उठने'' का क्या अर्थ है—

(क) अकाल का अन्त होने की आशा (ख) जीवन में निराशा आना

(ग) अकाल पीड़ितों से सद्भाव (घ) अकाल पीड़ितों से आँख मिलना।

उत्तर—[क] अकाल का अन्त होने की आशा।

प्रश्न 5. 'उनके श्यामल नील सलिल में' अलंकार है—

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) रूपक (घ) अनुप्रास

उत्तर—[घ] अनुप्रास।

प्रश्न 6. 'बादल को घिरते देखा' कविता में धनपत कौन है?

(क) कुबेर (ख) मेघदूत

(ग) हिमराज (घ) इन्द्रराज।

उत्तर—[क] कुबेर।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कवि का क्या भाव है ?
"दाने आये घर के अन्दर कई दिनों के बाद।"

उत्तर—कवि का भाव यह है कि अकाल के कारण निर्धन परिवार की दयनीय स्थिति में अनाज के आने पर जीवन के प्रति आशा का संचार हुआ।

प्रश्न 2. कस्तूरी मृग को अपने पर चिढ़न क्यों होती है ?

उत्तर—कस्तूरी मृग को अपने पर चिढ़न इसलिए होती है कि वह कस्तूरी की सुगन्ध के भ्रम में पड़कर इधर-उधर भटकने लगता है।

प्रश्न 3. कई दिन पश्चात् निर्धन परिवार की आँखें क्यों चमक उठीं ?

उत्तर—कई दिन के पश्चात् निर्धन परिवार की आँखे घर पर अनाज की प्राप्ति के कारण चमक उठीं।

प्रश्न 4. पृथक् रहकर किसको रात्रि व्यतीत करनी होती है ?

उत्तर—पृथक् रहकर चकवा-चकवी को रात्रि व्यतीत करनी होती है।

प्रश्न 5. घर में अनाज के दाने न होने पर कानी कुतिया कई दिनों तक कहाँ सोई ?

उत्तर—घर में अनाज के दाने न हाने पर कानी कुतिया कई दिनों तक चूल्हे और चक्की के पास सोई ।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता का मूल कथ्य लिखिये।

उत्तर—**'अमल-धवल गिरि के शिखरों पर,**
बादल को घिरते देखा हैं।'

नागार्जुन ने बर्फ से अच्छादित धवल हिमालय को और उसके शिखरों पर बादलों को घिरते देखकर कहा है कि बर्फ के कण मानसरोवर में विकसित कमलों पर गिरते हुए चित्ताकर्षक प्रतीत होते हैं। समतल देशों से आए हँसों और चकवा-चकवी को देखा है, जो वहाँ के नील सलिल में विचरण करते हुए सुहावने लगते हैं।

कस्तूरी के भ्रम में इधर-उधर दौड़ते हिरनों को वहाँ सहज ही में देखा जा सकता है। किन्नरियों का नृत्य और वंशीवादन की ध्वनि से वहाँ का संगीतमय वातावरण हिमालय की घाटी को सौन्दर्य और संगीत मय बनाने में सहायक है।

प्रश्न 2. क्या नवीन सृजन का संकेत पाकर भी मानव आलस्य धारण किये रह सकता है?

उत्तर—व्यक्ति की सृजनात्मक प्रवृत्ति है। वह सृजन में रुचि रखता है। उसे नवीन सृजन में किसी प्रकार का आलस्य शोभा नहीं देता। अपनी सद्प्रवृत्ति के कारण वह सृजन कार्य के लिए विवश है। वह शान्त और अकर्मण्य नहीं रह सकता। सृजन का संकेत ही उसके लिए पर्याप्त है। कवि नागार्जुन इस भाव को अभिव्यक्त करते हुए यह सन्देश दे रहे हैं कि व्यक्ति को नवीन सृजन के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

प्रश्न 3. 'अकाल और उसके बाद' कविता में अनाज का क्या प्रभाव बताया है? होने अथवा नहीं होने, दोनों ही स्थितियों का तुलनात्मक वर्णन करिये।

उत्तर—कवि नागार्जुन ने अकाल की स्थिति में खाद्यान्न का अभाव और उसके दुष्प्रभाव का वर्णन करते हुए अत्यन्त मार्मिक शब्दों में लिखा है कि अनाज की दुर्लभता के कारण चक्की चलना बन्द प्राय: हो जाता है। चूल्हे जलना सम्भव नहीं रहता। व्यक्ति को भोजन मिलना कठिन हो जाता है। कुत्ते भूखे रह जाते हैं। चूहों को अनाज के दाने मिलना असम्भव हो जाता है। छिपकलियों को

तुच्छ कीड़े भी खाने को नहीं मिल पाते। घर के प्रांगण में कोई धुआँ उठता नहीं दिखाई देता। सम्पूर्ण घर उदास-उदास सा दिखाई देता है।

अनाज प्राप्ति की दशा में चक्कियाँ चलती हैं। चूल्हे जलते हैं। कुत्ते तथा चूहे भी भोजन का कुछ अंश प्राप्त करके प्रसन्न दिखाई देते हैं। छिपकलियों को तुच्छ जीव अपने आहार के लिए प्राप्त हो जाते हैं। कौआ मंडराने लगते हैं। उन्हें भी कुछ भोजन प्राप्ति की आशा होती है। इस प्रकार अनाज होने तथा न होने की दशा में बड़ा अन्तर रहता है।

प्रश्न 4. क्या नागार्जुन को प्रगतिवादी काव्यधारा का कवि कहा जा सकता है ? अपने विचार प्रस्तुत करिये।

उत्तर—प्रगतिवादी काव्य धारा—राजनीति में जो स्थान साम्यवाद का है, वही स्थान छायावादी काव्य में प्रगतिवाद का है। छायावाद में पलायन है जो जन-मानस को रुचिकर प्रतीत नहीं हुआ। प्रगतिवाद को छायावाद की प्रतिक्रिया भी कह सकते हैं।

सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण, क्रान्ति का सन्देश तथा नारी-स्वतन्त्रता प्रगतिवाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

रामधारीसिंह 'दिनकर', 'सुमित्रानन्दन पन्त, शिवमंगलसिंह 'सुमन', डा. रांगेय राघव, मुक्तिबोध, भारतभूषण अग्रवाल का नाम प्रगतिवाद के प्रमुख कवियों में लिया जाता है।

नागार्जुन भी प्रगतिवादी कवियों में अग्रगण्य हैं, जिन्होंने कृषक, श्रमिक तथा दलित वर्ग को अपनी कविता का विषय बनाया। धार्मिक अन्धविश्वासों और राजनीतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करके एक स्वस्थ समाज की कल्पना की। जनता में समता का भाव जाग्रत करने का सन्देश देकर अमानवीय व्यवहार को बाधित किया । अतः नागार्जुन को प्रगतिवादी कवि कहा जा सकता है।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—**पृष्ठ 83-84** **अमल** = जो मैली न हो, स्वच्छ। **धवल** = श्वेत। **गश्त** = पहरेदारी, इधर-उधर घूमना। **शिकस्त** = हार, पराजय। **बालारुण** = बाल सूर्य, प्रातः कालीन सूर्य। **झंझा** = तूफान। **त्रिपदी** = तीन पाँव वाली, तिपाई।

[1]

कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखे कई दिनों के बाद।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश नागार्जुन रचित सतरंगे पंखों वाली से के अकाल शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि अकाल की दशा का वर्णन करते हुए कह रहा है—

व्याख्या—अकाल की स्थिति अत्यन्त भयावह होती है। जब अकाल की स्थित बन जाती है तब न चूल्हा जल पाता है और न चक्की चल पाती है। चूल्हे और चक्की पर उदासी का वातावरण छा जाता है।

कवि उस कानी कुतिया के विषय में लिखता है कि अकाल के कारण उसे भी भूखा ही रहना पड़ा और वह भूखी उनके पास ही सोई। छिपकलियाँ दीवार पर चक्कर लगाती रहीं किन्तु उन्हें

कीड़े-मकोड़ों की खुराक न मिल सकी। चूहों की दशा भी शोचनीय बन गयी। उन्हें अनाज के दाने खाने को नहीं मिल सके। सम्पूर्ण घर की दशा दयनीय बन गयी।

नागार्जुन जी ऐसे अकाल के वातावरण से मुक्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उस घर में कहीं से थोड़ा सा खाद्यान्न आ गया। परिणामत: उस घर में प्रसन्नता की झलक दिखाई देने लगी।

कई दिनों पश्चात् घर में चूल्हा जलने से सब के मुख मण्डल पर आशा और हर्ष की जो लहर दिखाई दी उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। भूख, शान्ति का विचार करके प्राणियों की आँखें चमक उठीं। कौए भी दाने प्राप्ति की आशा से पंखों को खुजलाने लगे। घर भर में प्रसन्नता का वातावरण छा गया। जीवन की आशा ने सबके मन में प्रसन्नता का संचार कर दिया।

काव्य सौन्दर्य—**(i) भाषा**— सरल, सरस भाषा। **(ii) रस**—करुण रस। **(iii) छन्द**—गेय। **(iv) अलंकार**—अनुप्रास। **(v) अन्य**—अकाल का मर्मस्पर्शी चित्रण।

16 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

● गागर में सागर

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना—जीवन तथा साहित्य—नयी कविता के रचयिता ● तार सप्तक के अन्तिम कवि ● जीवन के व्यापक अनुभवों का वर्णन सामाजिक संवेदनशीलता रहित राजनीतिक पृष्ठ भूमि को महत्व ● स्पष्टता पर विशेष बल ● छन्द साहित्य के नियम से परे ● जीवन के यथार्थ का चित्रण ● अनुभव पर आधारित यथार्थ चित्रण ● शोषित और दलित वर्ग का पक्ष ● 'खूंटियों पर टंगे लोग' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

रचनाएँ—**काव्य**—(1) बांस का पुल (2) काठ की घण्टियाँ (3) एक सूनी नाव (4) कुआनी नदी (5) जंगल का दर्द।

कहानी—(1) कुछ रंग कुछ गंध (2) कच्ची सड़क (3) अंधेरे पर अंधेरा।

उपन्यास—(1) सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा (2) कुछ रंग कुछ गंध।

नाटक—(1) लड़ाई (2) बकरी (3) अब गरीबी हटाओ।

काव्य-सार—सब कुछ कह लेने के बाद—मानव-वेदना का यथार्थ चित्रण तथा कल्याणकारी भविष्य की आशा का स्वर।

पोस्टर और आदमी—व्यक्ति का घटता मूल्य ● दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ना।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "वह पीड़ा है जो हमको, तुमको सबको अपनाती है।" में कवि का संकेत है—

(क) परोपकार की ओर (ख) पर पीड़ा की ओर

(ग) दयालुता की ओर (घ) अनकहे की ओर।

उत्तर—[घ] अनकहे की ओर।

प्रश्न 2. 'पोस्टर' कविता में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का व्यंग्य है—

(क) चमत्कार पूर्ण दृष्टि पर (ख) रचनात्मकता पर

(ग) शिक्षा पर (घ) संवेदनहीनता पर।

उत्तर—[घ] संवेदनहीनता पर।

प्रश्न 3. "पोस्टरों को पहचानते हैं,
वे आदमी से बड़े सत्य हैं।" पंक्तियों में कवि का भाव है—

(क) विवशता (ख) उपालम्भ

(ग) ग्लानि (घ) व्यंग्य।

उत्तर—[घ] व्यंग्य।

प्रश्न 4. 'वह मेरी कृति है' कहकर कवि ने क्या संकेत दिया है—

(क) लोकमंगल का (ख) सामाजिक यथार्थ का

(ग) प्रगतिवादी चिन्तन का (घ) आत्मिक आस्था का।

उत्तर—[घ] आत्मिक आस्था का।

प्रश्न 5. तीसरे सप्तक के अन्तिम कवि हैं—

(क) अज्ञेय जी (ख) डॉ० रांगेय राघव

(ग) मुक्तिबोध (घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

उत्तर—[घ] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "सब कुछ कह लेने के बाद
कुछ ऐसा है जो रह जाता है।" में सब कुछ कह लेने के पश्चात् कवि क्या इच्छा करता है ?

उत्तर--सब कुछ कह लेने के पश्चात् कवि उस सबको कहने की इंच्छा करता है जो कहने से अब भी शेष रहा है।

प्रश्न 2. पोस्टरों की सबसे बड़ी विशेषता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की दृष्टि में क्या है?

उत्तर—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की दृष्टि में पोस्टरों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी अपरिवर्तनशीलता तथा आकर्षण की क्षमता है।

प्रश्न 3. "और मैं उनके सामने
नन्हा-सा दबा हुआ खड़ा हूँ।" लिखकर कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर—कवि यह कहना चाहता है कि आज के इस पोस्टर युग में मानव का महत्व कम हो गया है। चकाचौंध का युग सम्मुख आया है।

प्रश्न 4. 'जिनमें दिल, दिमाग, आत्मा, कुछ भी नहीं है,
महज रंग गहरा भड़कीला रंग है,
जिनके हृदय नहीं है, पर प्यार का सन्देश देते हैं।
प्रस्तुत पंक्तियों में पोस्टर की कौन-सी दो विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं ?
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—पोस्टर की दो विशेषताएँ—
1. आकर्षण। 2. हृदय हीनता।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'पोस्टर और आदमी' कविता में निहित व्यंग्यार्थ को स्पष्ट करिये।

उत्तर—'पोस्टर और आदमी' कविता लिखकर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने पोस्टर युग को प्रभावपूर्ण बताते हुए मानव-प्रदर्शन-प्रियता पर गहरा व्यंग्य किया है। उन्होंने लिखा है—

लेकिन मैं देखता हूँ
कि आज के जमाने में
आदमी से ज्यादा लोग
पोस्टरों को पहचानते हैं
वे आदमी से बड़े सत्य हैं ?

आज का मनुष्य प्रदर्शन-प्रिय बन गया है। उसे निर्जीव पोस्टरों में रुचि है, उनकी पहचान है उनकी ओर दृष्टि है। एक की नहीं अनेक की। इन विशालकाय पोस्टरों को देखकर लोग हँसते हैं स्त्रियाँ मुस्कराती हैं। बच्चे अपनी तोतली बोली में हर्षित होते हैं। सर्वेश्वर दयाल जी लिखते हैं—

पोस्टर-विशालकाय पोस्टर
लोग उन्हें देखकर हँसते हैं,
मुँह बनाते हैं, सीटियाँ बजाते हैं
उदास हो जाते हैं,
औरतें देखकर मुस्कराती हैं
× × ×
बच्चे टो-टो करते हैं,
खुश होकर चिल्लाते हैं,
तोतली बोली में बुलाते हैं।

कितनी विचित्र बात है कि निर्जीव पोस्टर आज आकर्षण का केन्द्र हैं एवम् महत्वपूर्ण स्थान नाते जा रहे हैं। किन्तु सजीव मनुष्य की किसी को चिन्ता नहीं है। उसके प्रति संवेदना का भाव हीं है। इन पोस्टरों को ही व्यक्ति सत्य समझ रहा है। महत्वपूर्ण समझ रहा है।

कवि भौतिक सभ्यता पर व्यंग्य करते हुए उसे संवेदनहीन तथा प्रभावहीन बता रहा है।

प्रश्न 2. सब कुछ कह लेने के बाद भी क्या कुछ कहने के लिये शेष बच रहता है? क्त कविता के आधार पर कवि के मनोभाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अपने विचारों तथा अनुभूतियों को पूर्णतः प्रकट करना सम्भव नहीं है। भले ही हम ब कुछ कह लें। कवि सब कुछ वर्णन करदे और उसके पश्चात् कहने के लिए कुछ भी शेष न ह जाय, यह कदापि सम्भव नहीं है। मन में विचारों की तरंग सदा ही उठती रहती है। अनुभव आधार पर सदा अभिव्यक्ति होती रहे, यह भी सम्भव नहीं है।

कवि सक्सेना जी की मान्यता है कि अभिव्यक्ति में मन के भाव व्यक्त तो होते हैं किन्तु कुछ कुछ ऐसा अवश्य ही शेष रह जाता है जिसकी अभिव्यक्ति में नई रचना की जाती है। उन्होंने लखा है—

सब कुछ कह लेने के बाद
कुछ ऐसा है जो रह जाता है,
तुम उसको मत वाणी देना।

× × ×

वह मेरी कृति है,
पर मैं उसकी अनुकृति हूँ
तुम उसको मत वाणी देना।

कवि ने अभिव्यक्ति की असमर्थता को व्यक्त करते हुए उसी का शब्द चित्र ''सब कुछ कह नेने के बाद'' में व्यक्त किया है। उसने अभिव्यक्ति को जीवन का संचित श्रम बताया है। अभ्यासों की पूँजी कहा है। सबको अपनाने वाली पीड़ा स्वीकारा है। गति को नया रूप देने वाली माना है। न्होंने लिखा है—

वह छाया है मेरे पावन विश्वासों की,
वह पूँजी है मेरे गूँगे अभ्यासों की,
वह सारी रचना का क्रम है,
वह जीवन का संचित श्रम है।

प्रश्न 3. पोस्टर को देखकर लोगों के मन में किस प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं ? नके मुख पर आने वाली विभिन्न भाव-भंगिमाओं का वर्णन करिये।

उत्तर—कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना पोस्टर को देखकर लोगों के मन में आने वाले भावों का र्णन करते हुए 'पोस्टर और आदमी' कविता में कहते हैं—

लोग उन्हें देखकर हँसते हैं
मुँह बनाते हैं, सीटियाँ बजाते हैं
उदास हो जाते हैं।

पोस्टर को देखने समूह में व्यक्ति जाते हैं। धक्का मुक्की करते हैं। कोई हँसता है। विभिन्न कार की मुद्राएँ बनाते हैं। कोई-कोई तो पोस्टर को देखकर सीटी भी बजाने लगता है।

ऐसे भी व्यक्ति हैं जो पोस्टर को देखकर उदास हो जाते हैं । मुँह लटका लेते हैं।

पोस्टर की ओर आकृष्ट होते हुए स्त्रियों को देखा गया है। वे पोस्टर को देखकर मुस्कुराती हैं। ठों को चबाती हैं। नेत्रों के संकेत से बातें भी कर लेती हैं।

बच्चों को भी देखा है, जो अपनी तोतली बोली में उस पोस्टर के सम्बन्ध में कुछ कहते हैं सक्सेना जी लिखते हैं—

बच्चे टो-टो करते हैं,
खुश होकर चिल्लाते हैं,
तोतली बोली में बुलाते हैं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आज के इस युग को पोस्टर का युग बताते हुए पोस्टरों को आदमी से भी बड़ा सत्य मानते हैं और कहते हैं—

लेकिन मैं देखता हूँ
कि आज के जमाने में
आदमी से ज्यादा लोग
पोस्टरों को पहचानते हैं
वे आदमी से बड़े सत्य हैं।

प्रश्न 4. आज के युग में मनुष्य से बढ़कर पोस्टर को क्यों अधिक महत्व दिया गया है?

उत्तर—कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना पोस्टरों को व्यक्ति से अधिक सत्य बताते हुए अपनी कविता 'पोस्टर और आदमी' में कहते हैं—

मैं उनके सामने
नन्हा-सा दबा हुआ खड़ा हूँ,
बेजाना; बेपहचाना ......
इस प्रतीक्षा में कि शायद
कभी कोई भूली हुई दृष्टि
मुझ पर टिक जाय।

पोस्टरों के रंग व्यक्ति के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। विशालकाय पोस्टरों को देखकर लोग हँसते हैं, मुँह बनाते हैं। कोई सीटी बजाता है। कोई मुँह लटकाए चला जाता है।

औरतें भी उन पोस्टरों के आकर्षण से मुक्त नहीं रह पातीं। चटकीले और भड़कीले पोस्टरों को देखकर मुस्कराती हैं। आँखों ही आँखों में बाते करती हैं। सक्सेना जी लिखते हैं—

औरतें देखकर मुस्कराती हैं,
होंठ दबाती हैं,
आँखों-आँखों में बात करती हैं।

पोस्टर में किसी प्रकार का कोई भाव नहीं होता जो कुछ भी रंगों में छिपा है सब कुछ चित्रकार के भाव हैं, जो पोस्टर के रूप में व्यक्त हुए हैं। ऐसा लगता है कि व्यक्ति पोस्टरों के चटकीले रंगों की ओर तो आकृष्ट होता है किन्तु उस पोस्टर के मूल व्यक्ति की ओर किसी का भी ध्यान नहीं है उसकी ओर कोई आत्मीयता का भाव नहीं है। ऐसे विचित्र युग की ओर संकेत करते हुए कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना कहते हैं कि आज पोस्टरों ने व्यक्ति को पीछे छोड़ दिया है। वे आदमी से भी बड़ा सत्य बन गए हैं। कवि कहता है—

आज के जमाने में
आदमी से ज्यादा लोग
पोस्टरों को पहचानते हैं
वे आदमी से बड़े सत्य हैं।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ 87-89 कृति = रचना। अनुकृति = प्रतिरूप, नकल। **विशालकाय** = बहुत बड़ा। **निगाह** = दृष्टि, नजर। **शोख** = चंचल। **थाती** = सम्पत्ति, धरोहर। **महज** = मात्र।

वह मुझ से मेरे युग से भी ऊपर है,
वह भावी मानव की थाती है, भू पर है,
बर्बरता में भी देवत्व की कड़ी है वह,
इसीलिए ध्वंस और नाश से बड़ी है वह,
अन्तराल है वह नया सूर्य उगा लेती है,
नये लोक, नयी सृष्टि, नये स्वप्न देती है, [पृष्ठ 87-88]
वह मेरी कृति है
पर मैं उसकी अनुकृति हूँ,
तुम उसको मत वाणी देना।

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचित सब कुछ कह लेने के बाद शीर्षक गीत से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि कहना चाहता है कि सब कुछ कह लेने के पश्चात् शेष मन की वेदना को वाणी द्वारा व्यक्त करना ही यथार्थ है और व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

व्याख्या—कवि कहता है कि सब कुछ कह लेने के पश्चात् ही श्रेष्टता का समय आता है, जो कुछ मन में रह जाता है। वह युग से ऊपर की बात होती है। वह विचार ही व्यक्ति की ऐसी सम्पत्ति है, जो भावी पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण है। मानव समाज में देवत्व को प्रतिष्ठित करने वाली है। उसमें विध्वंसकारी तत्वों का अभाव रहता है। वह कभी विनष्ट नहीं होती। उसमें नये सूर्य जैसा प्रकाश है। नवीन आकांक्षाओं को जाग्रत करने की अद्‌भुत शक्ति है। वह एक नये समाज और नवीन सृष्टि के नवीन स्वप्नों को जन्म देने वाली है। वह ही जीवन की आस्था है। जीवन की शक्ति है। यही कवि की रचना है।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—साहित्यिक सरस भाषा। (ii) **छन्द**—अगेय (iii) **अलंकार**—अनुप्रास। (iv) **अन्य**—यथार्थ से भटकना नहीं।

●●

17 डॉ॰नन्द किशोर आचार्य

● गागर में सागर

नन्द किशोर आचार्य—जीवन—जन्म स्थान-बीकानेर (राजस्थान) • रेगिस्तान प सर्वाधिक कविताएँ • रेगिस्तान का यथार्थ एवम् पीड़ा व्यक्त • अज्ञेय ने कहा—"आचार्य नन्द किशोर ने मरुस्थल के सौन्दर्य को वहाँ के एक निवासी की दृष्टि से पकड़ा और बहुत सुन्द रचनाएँ की हैं।" राजस्थान साहित्य अकादमी के "मीरा" पुरस्कार से सम्मानित।

रचनाएँ—काव्य—(1) आती है जैसे मृत्यु (2) वह एक समुद्र था।

नाटक—(1) पागल घर (2) देहान्तर।

आलोचना—(1) रचना का सच (2) सर्जक का मन (3) अज्ञेय की काव्य-तितीर्षा।

अन्य—(1) आधुनिक विचार और चित्रण।

काव्य-सार—बाँसुरी : मोर पाँख—मोर पाँख को श्रेष्ठता प्रदान करना क्योंकि वह स्वतन्त्रत का प्रतीक है। बाँसुरी को पराधीनता का प्रतीक माना गया है।

समतल नहीं है शहर—विषम सामाजिक स्थिति का चित्रण।

घरौंदा—रेतीले [illegible]न का घरौंदा स्थायी नहीं होता। शीघ्र नष्ट हो जाता है।

बस एक रेतीला सपाट है—रेतीले सपाट का तप्त रहना। धरती का प्यासा रहना।

कहीं जल है माँ—जल के अभाव का चित्रण।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. नन्द किशोर आचार्य ने 'बाँसुरी' का प्रतीक रूप में अर्थ लिया है—

(क) स्वतन्त्रता का (ख) परतन्त्रता का

(ग) मानवता का (घ) सुन्दरता का।

उत्तर—[ख] परतन्त्रता का।

प्रश्न 2. नन्द किशोर आचार्य की कविताओं में चित्रण है—

(क) रेगिस्तान का (ख) मैदानों का

(ग) नदी तट का (घ) नगरों का।

उत्तर—[क] रेगिस्तान का।

प्रश्न 3. 'समतल नहीं है शहर' कविता का मुख्य भाव है—

(क) शहरी जीवन की झलक (ख) ग्रामीण जीवन की झाँकी

(ग) जीवन की बाधाओं का (घ) आधुनिक जीवन का।

उत्तर—[ग] जीवन की बाधाओं का।

प्रश्न 4. नन्द किशोर आचार्य ने मरुस्थल को बताया है—

(क) जल युक्त (ख) तटपूर्ण

(ग) कठोर (घ) भीषण।

उत्तर—[घ] भीषण।

प्रश्न 5. 'घरौंदा' कविता में घरौंदा कहा गया है—

(क) काव्य रचना को (ख) रेगिस्तान को

(ग) सूखे रेत को (घ) जल रहित मैदान को।

उत्तर—[क] काव्य रचना को।

प्रश्न 6. 'कहाँ जल है माँ' कविता में मुख्य भाव है—
(क) मरुस्थल और निवासियों का सम्बन्ध बताना
(ख) मरुस्थल की महिमा बताना
(ग) मरुस्थल की भीषणता बताना
(घ) मरुस्थल के निवासियों का जीवन बताना।
उत्तर—[क] मरुस्थल और निवासियों का सम्बन्ध बताना।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बाँसुरी और मोर पाँख किसके प्रतीक हैं ?
उत्तर—बाँसुरी पराधीनता तथा मोर पाँख स्वतंत्रता का प्रतीक है।
प्रश्न 2. सोनलिया धरती से क्या आशय है ?
उत्तर—सोनलिया धरती से आशय है हरी-भरी धरती।
प्रश्न 3. 'भटक रही है आज यहाँ बेकल खामोशी' पंक्ति में किस स्थिति का चित्रण है ?
उत्तर—भटक रही है आज यहाँ बेकल खामोशी पंक्ति में वहाँ की अपूर्व शान्ति का चित्रण है।
प्रश्न 4. कवि ऐसा क्यों कहता है कि कहीं भी समतल नहीं है शहर।
उत्तर—कवि ने कहीं भी समतल नहीं है शहर इसलिए कहा है कि वहाँ के निवासियों में न प्रेम है न एकता। सहयोग और सहानुभूति की भावना का भी अभाव है।
प्रश्न 5. "एक घरौंदा तो बना लूँ" कविता में कवि का क्या मनोभाव है ?
उत्तर—"एक घरौंदा तो बना लूँ" कविता में कवि का मनोभाव यह है कि वह एक अमर कविता का सृजन कर ले।
प्रश्न 6. 'कहीं जल है माँ' इस पंक्ति में माँ शब्द का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है ?
उत्तर—कवि ने 'कहीं जल है माँ' में माँ शब्द का प्रयोग मरुस्थल के लिए किया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "घरौंदा" कविता में कवि की मूल चिन्ता क्या है ?
उत्तर—घरौंदा कविता में कवि की मूल चिन्ता यह है कि रेतीले मैदान में मिट्टी का घरौंदा बनाना किस प्रकार सम्भव होगा ? किस प्रकार इस संसार में वह कोई अमर रचना करने में समर्थ हो सकेगा ? विचारों का उठना भी जहाँ सम्भव न हो वहाँ नवीन सृजन की कल्पना भी असम्भव प्रतीत हो रही है। हर कृति नष्ट होती जा रही है। वह लिखते हैं—

रेत के इस विशाल मैदान में
जहाँ मेरा हर रचाव
ढह जाता है।

इस प्रकार की विषम स्थिति में कवि की मूल चिन्ता यह है कि वह ऐसे वातावरण में अपने मनोनुकूल परिस्थितियाँ किस प्रकार बना सकेगा ? किस प्रकार वह ऐसी रचना करने में सफलता प्राप्त कर सकेगा जो उसकी अमर कृति सिद्ध हो सके। वह लिखता है—

सचमुच कुछ सरजूँगा भी
या कि ऐसे ही
पाँव पर सूखी रेत जमा कर
बस थपथपाते जाना है।

प्रश्न 2. "ढूँढ़ता छाया अपनी ही परछाईं में" इस पंक्ति से कवि क्या चित्रित करना चाहता है ?

उत्तर—मानव जीवन कष्टों से पूर्ण है। विभिन्न प्रकार के कष्टों में उलझा है जीवन। इन कष्टों को भी वह सहज करता है। मात्र इस आशा में कि एक दिन अवश्य ऐसा आयेगा, जब इन कष्टों का अन्त होगा। कवि बिहारी के कथन में उसे विश्वास है—

''ऐहैं फैरि बसन्त ऋतु, इन डारनि वे फूल।''

डॉ. नन्द किशोर आचार्य ने एक पक्षी का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि गर्मी से आकुल वह पक्षी जल की तलाश में चारों ओर मँड़राता है। शान्ति की खोज में स्थान-स्थान पर भटकता है। उसी प्रकार नाना प्रकार के कष्टों से पीड़ित मानव शान्ति एवम् सहानुभूति की आशा से इधर-उधर जाता है किन्तु कष्टों को सहन करते हुए उस पक्षी के समान ही अपने प्राणों का परित्याग कर देता है।

प्रश्न 3. आचार्य की रचनाओं के आधार पर प्रमाणित कीजिए कि वे मरुस्थल के अद्वितीय कवि हैं। आचार्य जी की भाषा शैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—नन्द किशोर आचार्य जी के जीवन तथा रचनाओं में मरुस्थल की धूल और वहाँ का जल-अभाव तथा ऋतु प्रभाव पूर्णरूपेण बसा हुआ था। उनके मन में आधुनिक नगरों का विस्तार खटकता था। उन्हें वहाँ की ऊँचाइयाँ एवम् गहराइयाँ, तंग या चौड़ी सड़कें इसलिए अच्छी नहीं लगती थीं क्योंकि वहाँ भूमि समतल नहीं थी। वे ''समतल नहीं हैं शहर'' में लिखते हैं—

''कदम-कदम पर
चढ़ाइयाँ हैं या ढलानें
तंग गलियाँ हैं या चौड़ी सड़कें
कहीं भी समतल नहीं है शहर।''

घरौंदा कविता में कवि कर्म की निष्फलता का चित्रण करते हुए उन्होंने लिखा है—

''एक घरौंदा तो बना लूँ
रेत के इस विशाल मैदान में
जहाँ मेरा हर रचाव
ढह जाता है—
सचमुच कुछ सरजूँगा भी
या कि ऐसे ही
पाँव पर सूखी रेत जमा कर
बस थपथपाते ले जाना है।''

तृषित पक्षी की छटपटाहट और मरुप्रदेश में मानवीय पीड़ा का चित्रण करते हुए वह लिखते हैं—

''कहाँ तक उड़ता अबाध मरुस्थल में
ढूँढ़ता छाया अपनी ही परछाईं में
आ गिरता जलती रेत में बेबस,
तड़पता, झुलस जाता है।''

जन्म भूमि को आदर देते हुए ''कहीं जल है माँ'' कविता में वह लिखते हैं—

''नहीं, तपती रेत ही तू नहीं है केवल
तुझमें कहीं जल है, माँ।
कहीं गहरे जल
सिर्फ मेरे लिए संचित।

मरुस्थल के वातावरण एवम् वहाँ के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति में जो सफलता नन्द किशोर आचार्य को प्राप्त है वह अन्य किसी को नहीं। उन्हें मरुस्थल का अद्वितीय कवि माना जाय तो

अनुचित नहीं होगा। 'बस एक रेतीला सपाट है' में उन्होंने मरुस्थल का चित्रण करते हुए लिखा है—

"न ऊँचाइयाँ हैं, न गहराइयाँ
बस एक रेतीला सपाट है
दूर तक पसरा हुआ, निश्छाप तपता ·· ।"

भाषा-शैली—भाषा राजस्थानी का मिश्रण है। पाँख, घरौंदा, सपाट, रचाव, पसरा आदि प्रान्तीय भाषा के शब्दों का प्रयोग उनके मरुस्थल-प्रेम को प्रकट करता है।

शैली में प्रतीक तथा बिम्बों की प्रधानता है जो आचार्य जी का हिन्दी काव्य साहित्य में स्थान निश्चित करती है।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— पृष्ठ 92 – 93 **सज्जित** = सुशोभित, सजा रहा। **रन्ध्र** = सुराख। **विवशता** = लाचारी। **समतल** = एक जैसा तल। **थमकर** = रुककर, ठहरकर। **भुरभरा जाना** = बिखर जाना। **निस्संग** = एकान्त। **तृष्णा** = प्यास। **रोहड़ा** = मरुस्थलीय वृक्ष। **पूत** = पुत्र।

[1]

कहीं भी समतल नहीं है शहर
जहाँ वैसा दीखता भी है
वहाँ वह पुल है
ढलान और चढ़ाई के बीच का पुल
थम कर जहाँ दो पल
लगाता है शहर जर्दा;
आराम से रख कर होठों के बीच
फिर पकड़ लेता रास्ता अपना
बेफ्रिक, ठावस भरा
हर कदम जब
या तो चढ़ाई है या उतराई।
कहीं भी समतल नहीं है शहर। [पृष्ठ 92]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **डॉ. नन्द किशोर आचार्य** रचित **समतल नहीं है शहर** शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर आचार्य जी शहरी वातावरण का चित्रण करते हुए वहाँ के जीवन पर कटाक्ष करते हैं—

व्याख्या—नगर जीवन भी विषमताओं से पूर्ण है। कहीं ऊँचाई है तो कहीं ढलान। तंग गलियाँ हैं तो कहीं चौड़ी सड़कें। इन ऊँचाइयों, ढलानों, तंग गलियों तथा चौड़ी सड़कों के कारण शहर एक समान नहीं है। वहाँ समान विचारधारा का अभाव है। संकुचित विचारधारा का बोलबाला है। स्वार्थ भावना का कोई ओर छोर नहीं है।

नगरों में असमता के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता। नगरों में समता मात्र पुल पर है। वह पुल ही ढलान और चढ़ाई के मध्य समता स्थापना का साधन है। इस पुल पर दो क्षण भी ठहर कर देखा जाय तो नगर एक जर्दे के समान प्रतीत होता है। जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने ओष्ठों के मध्य जर्दा रखकर अपना आगे का मार्ग शान्ति तथा निश्चिन्तता पूर्वक तय करता है। घड़ी भर विश्राम करने के पश्चात् व्यक्ति अपनी जीवन-यात्रा पर भी इसी प्रकार निकल पड़ता है। पग-पग पर उसे संघर्ष करने पड़ते हैं किन्तु उनसे टक्कर लेता हुआ वह अपने जीवन-पथ पर बढ़ता ही रहता है। मन में शान्ति तथा सन्तोष लिए वह कर्तव्य पथ पर बढ़ता ही रहता है।

काव्यगत सौन्दर्य—(i) **भाषा**—'—व्यंग्यपूर्ण राजस्थानी मिश्रित भाषा।
(ii) **अलंकार**—प्रतीक अलकार। (iii) **अन्य**—सामाजिक विषमताओं का चित्रण।

[2]

न ऊँचाइयाँ हैं, न गहराइयाँ
बस एक रेतीला सपाट है
दूर तक पसरा हुआ, निश्छाप तपता ···
जपता नाम कोई
कहाँ तक उड़ता अबाध मरुस्थल में
प्यासा कलपता पाखी
ढूँढ़ता छाया अपनी ही परछाईं में
आ गिरता जलती रेत पर बेबस
तड़पता, झुलस जाता है। [पृष्ठ – 93]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **डॉ. नन्द किशोर आचार्य** रचित **बस एक रेतीला सपाट है** शीर्षक कविता से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि मरुस्थल के विषय में अपने विचार व्यक्त कर रहा है—

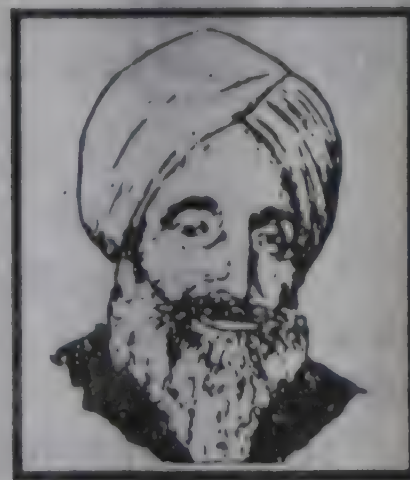
व्याख्या—मरुस्थल में चारों ओर रेत ही रेत दृष्टिगोचर होता है। वहाँ न ऊँचाई दिखाई देती है और न गहराई। दिखाई देता है फैला हुआ सपाट रेत, जो प्रतिक्षण सूर्य की किरणों से तपता रहता है।

आचार्यजी एक तृषित पक्षी का उदाहरण देकर मरुस्थल में जल के अभाव का इस प्रकार वर्णन करते हैं—तृषाकुल पक्षी आकाश में उड़ता हुआ जल की आशा त्याग कर छाया की खोज में उड़ता ही जाता है किन्तु छायादार वृक्ष न मिलने पर बेचारा वह पक्षी अपनी परछाईं में ही छाया खोजता है जो सम्भव नहीं है। बेचारा वह पक्षी न जल प्राप्त कर पाता है और न छाया। निराश्रित वह पक्षी अन्त में उस गर्म रेत पर ही आकर गिर पड़ता है तथा तृषा से व्याकुल तड़पता हुआ अपने प्राण गँवा देता है। इसी प्रकार व्यक्ति भी सुख-शान्ति की खोज में भटकता हुआ अपने प्राण त्याग देता है। उसका जीवन अत्यन्त कष्टों तथा संघर्षों में व्यतीत होता है।

काव्य-सौन्दर्य—**(i) भाषा**—सरल राजस्थानी मिश्रित भाषा। **(ii) छन्द**—मुक्त छन्द। **(iii) अन्य**—मरुस्थल के जीवन का यथार्थ चित्रण।

●●

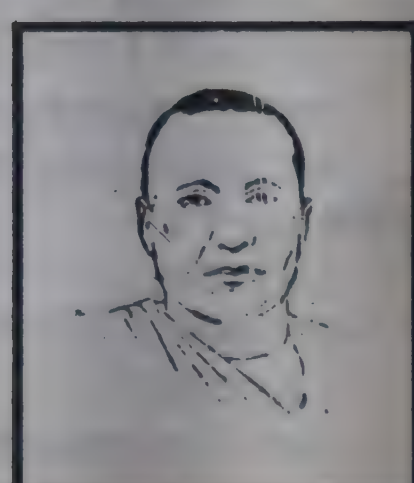

गोस्वामी तुलसीदास


अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"

विशेष हिन्दी महाकाव्य संग्रह

महाकाव्य	रचयिता
1. रामचरित मानस	गोस्वामी तुलसीदास
2. प्रिय प्रवास	अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"
3. साकेत	मैथिलीशरण गुप्त
4. कामायनी	जयशंकर प्रसाद


मैथिलीशरण गुप्त


जयशंकर प्रसाद

1 रामचरितमानस | धनुष-यज्ञ

गोस्वामी तुलसीदास

● **गागर में सागर**

गोस्वामी तुलसीदास—जन्म-सन् 1532—स्थान—राजापुर (बाँदा) • पिता—आत्माराम दुबे • माता—हुलसी • रत्नावली से विवाह • काशी, चित्रकूट तथा अयोध्या में रहे • गुरु—नरहर्यानन्द।

रचनाएँ—(1) रामचरितमानस (2) पार्वती मंगल (3) जानकी मंगल (4) दोहावली (5) कवितावली (6) रामलला नहछू (7) रामाज्ञा प्रश्न (8) गीतावली (9) बरवै रामायण (10) विनय-पत्रिका।

काव्य-सार—धनुष-यज्ञ—सीता स्वयंवर • जनक की उद्घोषणा • राजाओं द्वारा धनुष उठाने का प्रयास • राजाओं की असफलता पर जनक के कठोर वचन* लक्ष्मण जी का क्रोध • विश्वामित्र की आज्ञा से राम का धनुष भंग करना • सीताजी द्वारा राम को जयमाला पहनाना • परशुराम का आगमन क्रोध • लक्ष्मण से वाद-विवाद • श्रीराम का परशुराम को शान्त करना • प्रतिज्ञापूर्ण होने पर जनक की प्रसन्नता • परशुराम का तपोवन को लौट जाना।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "श्रीहत भये हारि हिय राजा"—राजाओं के श्रीहत होने का क्या कारण था ?

(क) जनक ने उन्हें कटु वचन कहे थे।
(ख) वे शिव धनुष नहीं उठा सके थे।
(ग) परशुरामजी वहाँ आ गये थे।
(घ) वे सीता का वरण नहीं कर पाए थे।
(ङ) किशोर राम ने शिव धनुष का भंजन कर दिया था।

उत्तर—[ख] वे शिव धनुष नहीं उठा सके थे।

प्रश्न 2. "माखे लखन कुटिल भई भौंहें"—लक्ष्मण किस बात पर क्रोधित हो उठे थे ?

(क) राजाओं द्वारा धनुष न तोड़ पाने पर।
(ख) परशुराम जी की उग्रवाणी पर।
(ग) जनक द्वारा क्षत्रिय विहीनता के आरोप पर।
(घ) शिव धनुष की गुरुता पर।
(ङ) स्वयं को धनुष उठाने का अवसर न मिलने पर।

उत्तर—[ग] जनक द्वारा क्षत्रिय विहीनता के आरोप पर।

**प्रश्न 3. "शान्त वेषु करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनि तनु जनु, वीर रस, आयहु जहँ सब भूप"॥ इस दोहे में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?**

(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) श्लेष (घ) उत्प्रेक्षा
(ङ) यमक।

उत्तर—[घ] उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 4. "धनुष यज्ञ" तुलसीदास के किस महाकाव्य से उद्धृत है—

(क) विनय पत्रिका से (ख) दोहावली से
(ग) कवितावली से (घ) रामचरितमानस से।

उत्तर—[घ] रामचरितमानस से।

प्रश्न 5. ''भाल विसाल त्रिपुण्ड विराजा, सीस जटा ससि बदनु सुहावा''। में किसके गुणों का वर्णन है ?

(क) श्रीराम के (ख) श्री लक्ष्मण के

(ग) श्री विश्वामित्र के (घ) परशुराम के।

उत्तर—[घ] परशुराम के।

प्रश्न 6. शिव-धनुष के संरक्षक का नाम था—

(क) लंकेश्वर (ख) वाणासुर

(ग) राजा जनक (घ) परशुराम।

उत्तर—[घ] परशुराम।

प्रश्न 7. ''राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तिहारा॥'' इस पंक्ति में राम का कौन-सा मनोभाव व्यक्त हुआ है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

(क) दृढ़ता (ख) भीरुता

(ग) विनम्रता (घ) लघुता

(ङ) धीरता।

उत्तर—[ग] विनम्रता।

प्रश्न 8. ''सब नृप भये जोग उपहासी।
जैसे बिनु विराग संन्यासी।'' किस अभाव के कारण राजा उपहास के पात्र बने— (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(क) धीरता (ख) वीरता

(ग) उदारता (घ) विनंयशीलता।

उत्तर—[ख] वीरता।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. सीता की माँ को राम की शक्ति का ज्ञान किसके द्वारा हुआ ?

उत्तर—सीता की माँ को राम की शक्ति का ज्ञान चतुर सखी द्वारा राम-महिमा का वर्णन करने तथा राम का पराक्रम देखने पर हुआ।

प्रश्न 2. सीता स्वयंवर में राजा जनक की क्या प्रतिज्ञा थी ?

उत्तर—सीता स्वयंवर में राजा जनक की यह प्रतिज्ञा थी कि जो राजा शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर, उसे उठाने में सफल होगा, उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

प्रश्न 3. धनुष-यज्ञ के समय लक्ष्मण जी क्यों क्रोधित हुए ?

उत्तर—धनुष-यज्ञ के समय लक्ष्मण जी राजा जनक के वचनों को सुनकर क्रोधित हुए। जनक जी ने कहा था—''वीर विहीन मही मैं जानी।''

प्रश्न 4. राम को देखकर सभी व्यक्ति चित्र लिखे के समान क्यों हो गए ?

उत्तर—राम को देखकर सभी व्यक्ति चित्र लिखे के समाम उनकी अलौकिक शक्ति को देखकर हो गए।

प्रश्न 5. परशुराम के क्रोध को श्री राम ने किस प्रकार शान्त किया ?

उत्तर—परशुराम के क्रोध को श्रीराम ने अपने आपको इनका दास बताते हुए विनम्र शब्दों से शान्त किया।

प्रश्न 6. श्रीराम के यथार्थ रूप का ज्ञान होने पर परशुराम ने क्या कहा ?

उत्तर—श्रीराम के यथार्थ रूप का ज्ञान होने पर परशुराम ने उनकी ज़य-...कार करते हुए उन्हें ब्राह्मण तथा गो-वंश का हित करने वाला कहा।

प्रश्न 7. श्रीराम के किन गुणों की ओर तुलसीदास ने ध्यान आकृष्ट किया है।

उत्तर—तुलसीदास ने श्रीराम के वाक् पटु, शालीन तथा विनम्र स्वभाव की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. सकल लोक सब भूप डराने। सिय हिय हरषु जनक सकुचाने॥''—सीता के प्रसन्न होने, राजाओं के भयभीत होने और जनक के संकोच में पड़ने का कारण बताइये।

उत्तर—विभिन्न देशों से आए हुए राजा, राजा जनक के वचनों को सुनकर भयभीत हो उठे। राजा जनक ने कहा था—''वीर विहीन मही मैं जानी।'' लक्ष्मण जी राजा जनक के इन वचनों को अनुचित मानते हुए राम से कहने लगे—''*जो तुम्हारि अनुशासन पावौं।*

कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं।
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं।
जोजन सत प्रमान लै धावौं।।

लक्ष्मण जी के इन शब्दों को सुनकर जानकी जी का हृदय आशा के कारण हर्षित हो उठा, किन्तु राजा जनक को अपने वचनों पर कुछ संकोच हुआ कि ऐसे वीरों के होते हुए मैंने इस पृथ्वी को वीर विहीन कह दिया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में प्रयुक्त छन्द तथा अलंकार की व्याख्या कीजिए—

''उदित उदय गिरि मंच पर, रघुवर बाल-पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन भृंग॥''

उत्तर—**प्रयुक्त छन्द—दोहा**—प्रस्तुत उदाहरण में प्रथम तथा तृतीय चरणों में 13-13 मात्राएँ हैं। द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में 11-11 मात्राएँ हैं। अन्त में गुरु-लघु हैं।

अलंकार—रूपक अलंकार—जब एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में मंच को उदय गिरि बताया गया है। राम को बाल सूर्य तथा सन्तों को कमल रूप में चित्रित किया गया है। लोचन यह भ्रमर के रूप में है। अतः रूपक अलंकार है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित के कला पक्ष (भाषा, छन्द, अलंकार, अभिव्यंजना) की व्याख्या कीजिए—

''संकर चाप जहाजु, सागर रघुवर बाहुबल।
बूड़ सो सकल समाजु, चढ़ा जो प्रथमहि मोहवस।''

उत्तर— **(i) भाषा**—अवधी भाषा। **(ii) छन्द**—सोरठा। **(iii) अलंकार**—रूपक।

अभिव्यंजना—राम की भुजाओं के बल को सागर का रूप देते हुए कवि ने बताया है कि उन्होंने निराशा के सागर में डूबने से सम्पूर्ण समाज को बचा लिया।

प्रश्न 4. शिव धनुष के टूटने पर विभिन्न जनों पर जिन प्रभावों का चित्रण तुलसी ने किया है, उन्हें अपने शब्दों में लगभग एक पृष्ठ में लिखिए।

उत्तर—**धनुष टूटने का प्रभाव**—श्रीराम ने उस धनुष को तोड़ दिया, जिसे बड़े-बड़े राजा उठाने में भी असमर्थ रहे थे। धनुष को तोड़ देने पर वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों को महान् सुख का अनुभव हुआ। विश्वामित्र जी तो प्रेम से विह्वल हो गये। प्रेम के सुन्दर सागर में डुबकियाँ लगाने लगे। तुलसीदास जी लिखते हैं—

प्रभु दोउ चाप खण्ड महि डारे। देखि लोग सब भए सुखारे।
कौसिक रूप पयोनिधि पावन। प्रेमवारि अवगाहु सुहावन॥

धनुष टूटने पर आकाश में वाद्य यन्त्र बजने लगे। देवांगनाएँ नृत्य करने लगीं। ब्रह्मा आदि देवता, सिद्ध पुरुष, मुनि सभी श्रीराम की प्रशंसा करने लगे तथा उन्हें शुभाशीर्वाद प्रदान करने लगे। पुष्प वर्षा होने लगी। किन्नरियाँ मधुर गीत गाने लगीं।

स्थान-स्थान पर केवल एक ही चर्चा थी। यह चर्चा थी शम्भु धनु टूटने की। बन्दीजन यश-गान करने लगे, अपनी सामर्थ्य के अनुसार जनकपुरवासी न्यौछावर करने लगे। कोई घोड़ा न्यौछावर कर रहा था। कोई हाथी का दान कर रहा था। कोई धन तो कोई मणि न्यौछावर करके अपना हर्ष प्रकट कर रहा था। कोई वस्त्र न्यौछावर करके सन्तुष्ट हो रहा था। तुलसीदासजी लिखते हैं—

बंदी मागध सूत गन, विरुद बदहिं मति धीर।
करहिं निछावरि लोग सब, हय, गय, धन, मुनि, चीर॥

रानी, उसकी सखियाँ, राजा जनक सभी प्रसन्न हो उठे। आये हुए राजा श्री विहीन हो गए। जानकी जी अत्यन्त सुखी हुईं। तुलसीदास जी कहते हैं—

श्रीहत भए भूप धनु टूटे। जैसे दिवस दीप छबि छूटे।।
सीय सुखहिं बरनिअ केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती॥

इस प्रकार शिव धनुष टूटने का प्रभाव विभिन्न जनों पर विभिन्न प्रकार से हुआ।

प्रश्न 5. ''सखियाँ सीता से कहती हैं कि राम के चरण स्पर्श करो। सीता भयभीत और शंकित है। वह वैसा नहीं करती।'' (1) इस आशय की चौपाई खोजकर बताइये। (2) उसका पूर्व प्रसंग क्या है ? (3) सखियाँ सीता से ऐसा क्यों कहती हैं ? (4) उनका कथन आज के संदर्भों में आपको कैसा लगता है ? (5) चरण स्पर्श न करने में सीता की कौन-सी भावना कार्यशील रही होगी ? (6) उसके भयभीत होने का क्या कारण समझ में आता है ?

उत्तर—**आशय की चौपाई**—सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता। करति न चरन परस अति भीता।

पूर्व प्रसंग—जानकी जी द्वारा राम को जयमाला पहनाने के पश्चात् चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा गया। जनकपुर के नर-नारी उनकी आरती उतारने लगे तथा अपनी सामर्थ्य के बाहर न्यौछावर करने लगे। सखियाँ सीताजी से उनके चरण स्पर्श के लिए कहने लगी।

सखियाँ सीताजी से श्रीराम के पद स्पर्श के लिए कहती हैं। किन्तु सीताजी श्रीराम के चरण स्पर्श में भयभीत होती हैं। उन्हें भय है कि अहिल्या के समान मेरे स्वरूप में भी कोई परिवर्तन न आ जाय। अतः अपने हाथ का उनके चरणों से स्पर्श नहीं करना चाहतीं।

प्रश्न 6. राम के बारम्बार विनय करने पर भी परशुरामजी का क्रोध शान्त नहीं हो रहा था। ऐसी परिस्थिति में सीता के मन में क्या-क्या भाव उठ रहे होंगे ? कल्पना के आधार पर लगभग पचास शब्दों में लिखिए—

उत्तर—श्रीराम ने परशुराम से धनुष तोड़ने वाले को उनका दास कहते हुए उनके क्रोध को शान्त करने का प्रयास किया— *''नाथ संभु धनु भंजनिहारा।*
होइहिं कोउ एक दास तुम्हारा॥''

परशुराम का क्रोध शान्त न होने की स्थिति में सीताजी के मन में विभिन्न प्रकार के भाव आ और जा रहे होंगे।

स्वभावतः सीताजी के मन में यह भाव उठा होगा कि परशुराम का क्रोध शान्त न हुआ तो मेरा विवाह श्रीराम से नहीं होगा। यह भाव भी उठा होगा कि परशुराम के क्रोध का शिकार यदि श्रीराम हुए तो उनके प्राणों की सुरक्षा भी असम्भव हो जायेगी। मेरे वैवाहिक जीवन की समाप्ति हो जायेगी।

सीताजी के मन में अपने परिवार की कुशलता की बात आयी होगी। उन्होंने अवश्य ही विचार किया होगा कि दोनों परिवार कुशलता पूर्वक रहें।

सीताजी के मन में अवश्य ही यह भाव आया होगा कि श्रीराम के परिवार पर कोई आँच न आवे। अवश्य ही उन्होंने श्रीरामचन्द्र जी की दीर्घायु की कामना की होगी। अपने इष्ट देव से सबकी कुशलता के लिए प्रार्थना की होगी।

प्रश्न 7. ''देत चाप आपुहिं चलि गयऊ। परशुराम मन बिसमय भयऊ॥''—इस कथन का पूर्व प्रसंग बताकर प्रसंगाधीन चाप और परशुराम के विस्मय का कारण बताइये। इस घटना के बाद क्या घटित हुआ होगा ?

उत्तर—धनुष भंग पर परशुरामजी अत्यन्त क्रोधित रूप में जनक के दरबार में आये। लक्ष्मण और राम से वाद-विवाद हुआ। श्रीराम के नम्र तथा गम्भीर वचनों का परशुराम पर प्रभाव पड़ा और उनकी मति में परिवर्तन आया। उन्होंने अपने सन्देह-निवारणार्थ श्रीराम को एक धनुष दिया और उसे खींचने के लिए कहा। तुलसीदास ने लिखा है—

''सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के''
राम रमापति कर धनु लेहू। खेंचहु चाप मिटै संदेहू॥

श्रीराम को परशुराम ने धनुष जब दिया तो वह बिना प्रयास किए ही चल गया। यह देखकर परशुराम को आश्चर्य हुआ। तुलसीदास ने लिखा है कि श्रीराम का प्रभाव अब परशुरामजी पर भी पड़ा और वह पुलकित हो गये। प्रेमाधिक्य तथा श्रीराम से प्रभावित इस प्रकार स्तुति करने लगे—

''जय रघुवंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू''।
जय सुर विप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी॥

परशुराम ने श्रीराम को विनय, शील, कृपा आदि गुणों का समुद्र तथा वचनों में अत्यधिक चतुर बताते हुए उनका जय-जयकार किया।

श्रीराम को सभी अंगों से सुन्दर तथा सेवकों को सुख प्रदान करने वाला बताते हुए उनको करोड़ों कामदेवों की छबि धारण करने वाला तथा महादेव के मान सरोवर का हंस मानते हुए जय-जयकार बोला। उनसे क्षमा याचना करते हुए कहा—

''अनुचित बहुत कहेउ अग्याता। छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता।''

श्रीराम की जय बोलते हुए परशुरामजी तपस्या हेतु वन को चले गए। देवतागण नगाड़े बजाने तथा पुष्प वर्षा करने लगे। जनकपुर के नर-नारी प्रसन्न हो उठे।

निःसन्देह दुष्ट राजाओं को यह विचार करके भय होने लगा होगा कि जिन राम के लिए हम विभिन्न दुर्भावना ला रहे थे, उनके सम्मुख तो परशुरामजी भी नत मस्तक हुए। जिस राम का हमने अपमान किया उन्होंने तो अत्यन्त क्रोधी परशुराम को भी अति विनम्र बना दिया। अब यह हमसे बदला लेनें की बात न सोचें। ऐसे दुष्ट राजा भी भयभीत होकर अवसर मिलने पर चुपचाप वहाँ से चल दिए।

प्रश्न 8. तुलसीकृत रामचरित मानस के धनुष यज्ञ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'धनुष यज्ञ' की अपने शब्दों में समीक्षा कीजिए।

उत्तर—राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर आयोजित किया था। इस स्वयंवर में उन्होंने सीताजी के विवाह के लिए यह शर्त रखी थी कि जो भी राजा शिव धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने में सफल होगा उसी के साथ सीता का विवाह सम्पन्न होगा।

राजा विभिन्न क्षेत्रों से जनकपुर आये। राम और लक्ष्मण भी विश्वामित्र मुनि के साथ स्वयंवर में भाग लेने के लिए पधारे। राजाओं द्वारा किए गए प्रयास विफल हुए। कोई भी राजा प्रत्यंचा चढ़ाने में सफल नहीं हुआ।

राजा जनक ने निराश होकर कहा—*''वीर विहीन मही मैं जानी।''*

यह भी कहा—''जौ जनतेऊ विनु भट भूमि भाई। तौ पनु करि होतेऊं न हँसाई।''

राजा जनक के इस आभास और वीर रहित पृथ्वी की बात सुनकर लक्ष्मण जी से नहीं रहा गया। राम को मस्तक झुकाकर वह क्रोधित होकर कहने लगे—''रघुवंशियों की उपस्थिति में ऐसा कहना उचित नहीं है। धनुष की तो बात ही क्या है, मैं स्वभावतः ही कह रहा हूँ कि भाई की

आज्ञा प्राप्त हो जाय तो मैं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को गेंद के समान उठा सकता हूँ। उसे कच्चे घड़े के समान फोड़ सकता हूँ। उन्होंने कहा—

"तोरौं छत्रक दण्ड जिमि, तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ, कर न धरौं धनु माथ॥

लक्ष्मण जी के कठोर वचनों को सुनकर पृथ्वी डगमगा गयी। राजा भयभीत हो उठे। सीताजी को प्रसन्नता हुई और राजा जनक अपने शब्दों पर संकुचित हुए।

विश्वामित्र मुनि ने राम को प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए भेजा। श्रीराम के खड़े होने मात्र से सब पर पृथक् प्रभाव हुआ। यहाँ तक कि जनक की रानी को भी राम के स्वरूप को देखकर धनुष उठाने में शंका हुई।

श्रीराम ने प्रत्यंचा चढ़ाई और धनुष के टुकड़े कर दिए। टूटने के भयंकर शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया। चारों ओर भयंकर शब्द गूँज उठा। देवता प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा करने लगे। जनकपुरी में प्रसन्नता का वातावरण छा गया। सीताजी ने सखियों के साथ जाकर श्रीराम के गले में जयमाला डाल दी। मंगल गीत गाये जाने लगे।

शिव धनुष के संरक्षक परशुराम जी धनुष के टूटने का भयंकर शब्द सुनकर जनकपुर आये। राजा तो परशुरामजी के क्रोधी स्वरूप को देखकर भयभीत हो उठे। सभी अपना परिचय देते हैं। विश्वामित्रजी राम-लक्ष्मण का परिचय देते हैं।

राजा जनक इस स्वयंवर की बात बताते हैं। शिव धनुष के टूटने का वृतान्त सुनाते हैं। शिव धनुष टूटने की बात सुनकर परशुरामजी भड़क उठते हैं। धनुष तोड़ने वाले को अपना दुश्मन बताते हुए उसे सभा से पृथक् होने का आदेश करते हैं।

परशुरामजी के क्रोध के सम्मुख लक्ष्मण जी उनसे वाद-विवाद करते हैं। राजाओं में घबराहट व्याप्त हो जाती है। श्रीराम के विनम्र वचनों से कुछ शान्ति का वातावरण बनता है। श्रीराम-लक्ष्मण जी को गुरुजी के पास भेजकर परशुरामजी के सम्मुख अपना अपराध स्वीकार करते हुए दण्ड के लिए कहते हैं। परशुरामजी को उनके असाधारण व्यक्तित्व का आभास होता है। ईश्वरीय शक्ति का अनुमान करते हुए श्रीराम की परीक्षा लेते हैं। उनसे क्षमा याचना करते हुए वन चले जाते हैं।

जनकपुरी में विवाह का मंगल कार्य होता है। सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। तुलसीदास जी लिखते हैं—

"टूटत ही धनु भयउ विवाहू। सुर नर नाग विदित सब काहू॥"

प्रश्न 9. तुलसीदास के काव्य की कला पक्ष सम्बन्धी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—तुलसी का उद्देश्य काव्य-कला का प्रदर्शन नहीं था तथापि उनकी सहज प्रतिभा और समर्थ अनुभूति ने उनके काव्य को कला की दृष्टि से भी उत्कृष्ट बना दिया है। आपके काव्य की कलापक्षीय विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) **भाषा पर अधिकार**—तुलसी के काव्य की भाषाएँ अवधी और ब्रज हैं। दोनों ही भाषाओं पर उनका पूर्ण अधिकार है। रामचरितमानस उनके अवधी पर अधिकार की घोषणा कर रहा है और विनयपत्रिका, दोहावली, गीतावली आदि ब्रजभाषा के साधिकार प्रयोग को प्रमाणित कर रहे हैं। अत्यन्त प्रचलित विदेशी शब्द भी तुलसी की भाषा में प्रयुक्त हुए हैं।

यथा—"राम को **गुलाम**; **मसीत** कौ सोइबौ; परे **पाइमाल** जात" इत्यादि मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी सटीक प्रयोग तुलसी की भाषा में सर्वत्र प्राप्त होता है। **यथा**—बलि जाना; चित्रलिखित सी होना; मुख की कालिमा धोना; छाती भर आना; गात सूखना; ग्लानि से गलना; और गहि न जात रसना काहू की; तुलसी पावस के समै धर्‌यौ कोकिलन मौन; आपु-आपु कहँ सब भलौ आदि। भाषा उनके भावों की विनम्र अनुगामिनी है। पात्र और परिस्थिति के अनुकूल शब्दावली के चयन में तुलसी बहुतों को पीछे छोड़ जाते हैं।

(2) **शैली की विविधता**—तुलसी ने अपने समय की लगभग सभी प्रचलित काव्य शैलियों में रचना की। प्रबन्ध शैली में रामचरितमानस तथा मुक्तक शैली में विनयपत्रिका, दोहावली आदि की रचना हुई है। आपने गीतावली में गीति-शैली और रामलला नहछू आदि में लोकगीत-शैली का

भी सफल प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल उपदेशात्मक शब्द चित्रात्मक, वर्णनात्मक, आलंकारिक और भावात्मक रचना-शैलियों का भी प्रभावशाली उपयोग हुआ है।

(3) **अलंकार-योजना**—तुलसी की अलंकार-योजना भी बड़ी आकर्षक और सटीक होती है। उन्होंने आग्रह-पूर्वक अलंकारों की भरमार नहीं की है परन्तु सहज रीति से प्रयुक्त अलंकारों ने उनके काव्य को कलापक्ष की दृष्टि से पूर्ण समर्थ सिद्ध किया है। यथा—

'सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल।' *(रूपक)*
'लोचन जल रह लोचन कोना। मानहुँ परम कृपन कर सोना॥' *(उत्प्रेक्षा)*
'सिय मुख समता करहि किमि, चंद बापुरौ रंक।' *(व्यतिरेक)*
'कैधों व्योम वीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु
वीररस वीर तरवारि सी उघारी है।' *(सन्देह)*

(4) **छन्द-विधान**—तुलसी छन्दों के शासक हैं। कोई अभागा छन्द ही उनकी लेखनी के प्रसाद से वंचित रहा होगा। दोहा, चौपाई, सोरठा, वरवै, सवैया, कवित्त, छप्पय तथा पद के साथ-साथ कुंडलिया तथा सोहर जैसे लोक-छन्दों को भी सफलता के साथ आपने प्रयुक्त किया। रामचरितमानस तो उनके संस्कृत छन्दों पर भी अबाध अधिकार की घोषणा कर रहा है। यहाँ तक कि 'जय राम रमा रमन' तथा 'रुद्राष्टक' आदि में गेय संस्कृत छंदों का भी सृजन किया।

निष्कर्ष—सिद्ध है कि तुलसी का काव्य-कानन मधुर रसालों से रसवान है, प्रफुल्लित सुमन समूह से सु-अलंकृत है, विविध पादप-वृन्दों से छंदायित है और खग-मण्डल के कलित कलरव से सुभाषित हो रहा है। वह 'कला, कला के लिए' के क्षुद्र आदर्श से विमुग्ध न होकर लोक-मंगल के महनीय प्रयास से प्रेरित है। वह एक डूबते समाज का सुदृढ़ सहारा बनकर आया था और आज भी असंख्य काव्य-अनुरागियों का कंठहार है। एक संत और सफल कवि की संगमस्थली है कवि तुलसी का काव्य। आज तुलसी किसी भाषा विशेष के कवि न होकर विश्व के सम्मानित कवि हैं जिनके 'रामचरितमानस' की तरंगें विश्व-मानस को तरंगित किये जा रही हैं।

प्रश्न 10. तुलसी को लोक नायक कहना कहाँ तक उचित है ?

अथवा

''तुलसीदास ने काव्य में राम के शक्ति-शील-सौन्दर्य-समन्वित रूप की अवधारणा की है।'' सिद्ध कीजिए।

अथवा

तुलसीदास ने अपने काव्य में समन्वय की भावना का प्रतिपादन किया है।'' सिद्ध कीजिए।

उत्तर—तुलसीदास की समन्वय भावना—तुलसी का समन्वयवाद उनकी विराट कल्पना की उपज है। शील और शक्ति, राजनीति और धर्म, ज्ञान और कर्म, वैष्णव और शैव, वर्णाश्रम धर्म और प्रजातान्त्रिक आदर्श के साथ ही उन्होंने अभिव्यक्ति-पक्ष का भी समन्वय किया। यहाँ प्रत्येक पर संक्षेप में विचार किया जाता है।

शक्ति और शील का समन्वय—राम के शक्ति, शील और सौन्दर्य के समुचित रूप की स्थापना कर उन्होंने यवन अत्याचारी शासकों से संत्रस्त हिन्दू जनता को धैर्य बँधाया, उसे सम्बल प्रदान किया। तुलसी के राम सर्वशक्ति-सम्पन्न, दीन-प्रतिपालक और दुष्ट-दलनकारी हैं। तुलसी ने विश्वास के साथ घोषणा भी कर दी—

जब-जब होइ धर्म कै हानी। बाढ़हिं अधम असुर अभिमानी॥
तब-तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

फलतः नैराश्यांधकार में आकण्ठ डूबी जनता को आश्वासन मिला और वह आदर्शात्मक उद्घोष करने वाले राम के भक्त तुलसी के साथ हो ली। तुलसी ने प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले शोषण के विरुद्ध विद्रोह कर दिया—

तुलसी जग जीवन अहित, कतहुँ कोउ हित जानि।
सोषक भानु कृषानु महि, भवन एक धन दानि॥

राजनीति के क्षेत्र में समन्वय—राजनीति के क्षेत्र में आदर्श की स्थापना करने के लिए उन्होंने 'राम-राज्य' की परिकल्पना की। तुलसी ने 'राम-राज्य' का आदर्श बतलाते हुए कहा—

'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी॥'

राम-राज्य का चित्र उपस्थित करते हुए उन्होंने लिखा—

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहू व्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरति श्रुति नीति॥
नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

सांस्कृतिक समन्वय—तुलसी आर्य संस्कृति के परम भक्त थे। मनुष्य-मनुष्य का ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं जिसका आदर्श तुलसी ने उपस्थित न किया हो। व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य, तुलसी ने सबका सामंजस्य-विधान हिन्दू संस्कृति के अनुरूप किया। तुलसी का प्रत्येक पात्र समाज के सम्मुख कोई न कोई आदर्श उपस्थित करता है। दशरथ सत्य प्रतिज्ञा का, राम पितृ-भक्ति का, भरत भ्रातृ-भक्ति का, लक्ष्मण अपूर्व सहनशीलता का, कौशल्या प्रेममयी माँ का तथा सीता पतिव्रता नारी का आदर्श उपस्थित करती है।

लोक और शास्त्र का समन्वय—लोक और शास्त्र का समन्वय करके तुलसी ने धर्म और जनता को निकट लाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने पुराण, वेद, उपनिषद् के गहन विचारों को जनोपयोगी बनाया। तुलसी ने तत्कालीन सभी विरोधी मत-मतान्तरों को निष्प्राण कर भक्ति को सर्वश्रेष्ठ ठहराते हुए भी ज्ञान और कर्म की निन्दा नहीं की। **डा. इन्द्रनाथ मदान** ने लिखा है—"तुलसी ने निर्गुण और सगुण एवं द्वैत और अद्वैत का विरोध शान्त करने के लिए राम को निर्गुण-सगुण रूप में माना है।" ठीक भी है, क्योंकि तुलसी कहते हैं—

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा॥

वर्णाश्रम समन्वय—तुलसी आदर्शवादी थे। वे वर्णाश्रम धर्म के प्रबल समर्थक थे। उनके यहाँ निषादराज, शबरी, कोल-किरात, निम्नवर्गीय होते हुए भी वन्दनीय हैं तथा रावण ब्राह्मण होते हुए भी निन्दनीय है। **डा. मदान** के शब्दों में—"इस समस्या का उन्होंने यही समन्वय किया है कि अगर छोटी जाति का आदमी भक्त हो जाय तो वह मुहूर्त भर में ऊँची जाति से ऊँचा उठ जाता है, 'भरत सम भाई' हो जाता है।"

अभिव्यक्ति पक्ष का समन्वय—इस युग-पुरुष ने भाषा और काव्य-शैली का भी समन्वय किया। इन्होंने अपने समय की प्रचलित दोनों काव्य-भाषाओं—ब्रज और अवधी में रचना की है। इसी प्रकार उस समय प्रचलित सभी काव्य-शैलियों को अपनाया है—चन्द के छप्पय, कबीर के दोहे, सूर और विद्यापति की गीति-पद्धति, जायसी की दोहा-चौपाई पद्धति, रहीम की बरवै-पद्धति, गंग आदि की सवैया पद्धति सभी एक साथ उनके यहाँ पायी जाती हैं।

सारांश यह है कि तुलसी ने विविध आदर्शों की स्थापना कर और समन्वयवाद की प्रतिष्ठा कर सच्चे लोक-नायक का कार्य किया।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— पृष्ठ 12 – 13 **सहस** = हजार। **श्रीहत** = अपमानित। **दमनीय** = दमन करने वाला। **भाखे** = कहे। **परिहरऊँ** = त्याग दूँ। **कंदुक** = गेंद। **जिमि** = तरह। **जोजन** = योजन। लगभग एक कोस। **सयनहिं** = संकेत द्वारा। **मृनाल** = कमल नाल।

पृष्ठ 14 – 15 **असिहठ** = इस प्रकार का हठ। **कुंभज** = अगस्त्य मुनि। **खर्व** = नष्ट करना। **प्रतीती** = विश्वास। **गुरुता** = भारीपन। **कुलिस** = वज्र। **सिरस** = सेंमर। **हरुऊ** = हलका।

चांपि = दबाना। कमठ = कछुआ। अहि = शेष नाग। कोल = वराह, सुअर। भृगुपति = परशुराम। कदराई = कायरता। बोहित = नाव। कड़हारु = खेने वाला। बिसेषी = विशेष। उचारहिं = बोलते हैं। बीचि = लहरें। चीर = वस्त्र।

पृष्ठ 16 – 17 **गवनी** = गमन किया। **चित्र अवरेखी** = चकित, स्तब्ध। **नाक** = स्वर्ग लोक। **सुरति** = स्मरण। **मन माखे** = दुष्टबुद्धि। **गाल बजाना** = डींग हांकना।

पृष्ठ 18 – 19 **बैनतेय** = गरुड़। **नाग-अरि** = सिंह, हाथी के शत्रु। **नरवाहा** = राजा। **चोप** = उत्साह। **खरभरु** = खलबली। **लवा** = एक छोटा पक्षी। **तून** = तरकस। **धनुसर** = धनुप-बाण। **भार** = कामदेव। **अनत** = अन्यत्र।

पृष्ठ 20 – 21 **भोरे** = भरोसे। **महिदेव** = ब्राह्मण। **अर्भक** = बालक। **सुराई** = शूरवीरता। **काल-कवलु** = मृत्यु का ग्रास। **हटकहु** = मना करो। **जनि** = नहीं। **परसु** = फरसा। **गुरु द्रोही** = शिव अपराधी। **हरिअरइसूझ** = हरा-सूझना। **अयमय खांड** = लोहे का खड्ग। **घरहि के बाढ़े** = घर में शेर। **अचगरि** = दुष्टता।

पृष्ठ 22 – 23 – 24 **काल कूट** = विष। **बानी बाम** = कटु वचन। **चितव अनैसे** = कुटिल दृष्टि से देखना। **संमत** = सहमति से। **न चीन्हा** = पहचाना नहीं। **घनेरी** = अधिक घनी **निपट** = निरा, केवल। **संमर** = युद्ध। **दापु** = घमण्ड। **पचारै** = चुनौती दी। **पाँवर** = नीच। **अग्याता** = अनजाने में। **कृतकृत्य** = सफल कार्य, कार्य में सफल।

[1]

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे॥
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुष राम सुनु रानी॥
सखी बचन सुनि भइ परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती॥
तब रामहिं बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही॥
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई॥
गननायक बर दायक देवा। आजु लगे कीन्हिउं तुअ सेवा॥
बार-बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी॥ पृष्ठ 16

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** रचित **रामचरितमानस** के **धनुष यज्ञ** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर रामचन्द्रजी के शिव-धनुष चढ़ाने हेतु आगे बढ़ने और जनक की रानी को सखियों द्वारा समझाने का वर्णन करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं—

व्याख्या—सखियाँ रानी को समझाने लगीं—हे देवि ! कामदेव ने पुष्पों के धनुष-बाण को लेकर सबको अपने वशीभूत कर रखा है। अतः आप श्रीराम को केवल सुकुमार समझकर हर प्रकार का संशय त्याग दें। वह सुकुमार भले ही दिखाई दे रहे हों किन्तु शिव धनुष को तोड़ने में अवश्य ही वह सफल होंगे।

सखी के इन उत्साहवर्द्धक वचनों का रानी पर प्रभाव पड़ा। उनके मन में आशा और विश्वास की तरंगें उठने लगीं। मन की उदासी दूर हो गयी। श्रीराम के प्रति स्नेह भावना में वृद्धि हुई।

सीताजी के मन में भी भय था। वह भी श्रीराम की वीरता को सन्देह की दृष्टि से देख रही थीं। अतः देवी-देवताओं से विनती करने लगीं कि श्रीराम में ऐसी शक्ति आ जाय कि वह धनुष तोड़ने में सफल हों। शिव-पार्वती को मनाती हुई सीताजी कहने लगीं—हे शिव ! हे पार्वती देवी ! आप मुझ पर प्रसन्न हो जायँ। मैंने आपकी जो सेवा की है उसके बदले में मुझ पर इस प्रकार की दया करो कि धनुष का भारीपन, हल्केपन में बदल जाय ताकि धनुष का तोड़ना श्रीराम को भारी न पड़े।

सीताजी के नेत्रों से प्रेम के अश्रु बिन्दु छलकने लगे। धैर्य धारण करते हुए वह गणेशजी से प्रार्थना करने लगीं कि वह धनुष के भारीपन को कम कर दें। आज तक की गयी मेरी सेवा-पूजा का इतना ही फल दे दो कि श्रीराम को धनुष उठाना कठिन न हो। वह धनुष को सरलतापूर्वक उठा सकें।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—अवधी भाषा। (ii) **रस**—शान्त तथा करुण रस। (iii) **छन्द**—चौपाई। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास। (v) **अन्य**—देवताओं से सीताजी की विनती।

[2]

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे। छबि गन मध्य महाछबि जैसे॥
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व विजय सोभा जेहि छाई॥
तन संकोचु मन परम उछाहू। गूढ़ प्रेम लखि परइ न काहू॥
जाई समीप राम छबि देखी। रहि जनु कुंअरि चित्र अवरेखी॥
चतुर सखी लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई॥
सुनत जुगल कर कमल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली॥ **[पृष्ठ-17]**

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** रचित **रामचरितमानस महाकाव्य** के **धनुष यज्ञ** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर जनक नन्दिनी द्वारा श्रीराम के गले में जयमाला डालने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—तुलसीदासजी जयमाला पहनाने का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जब श्रीराम ने धनुष को भंग कर दिया तो राजा जनक की घोषणानुसार सीताजी जयमाला लेकर स्वयंवर-मण्डप में आयीं। उनके साथ सखियाँ भी थीं। इन सखियों के मध्य जानकीजी इस प्रकार शोभा दे रही थीं जैसे छबि के मध्य महाछबि शोभायमान हो। सीताजी के कर कमल में जयमाला शोभायमान हो रही थी। ऐंस लग रहा था जैसे वह विश्व विजय की शोभा से पूर्ण हों। शरीर से संकोच किन्तु मन में उत्साह लिए सीताजी जयमाला धारण कराने के लिए श्रीराम की ओर बढ़ीं। श्रीराम के प्रति उनका प्रेम और उसकी गूढ़ता किसी प्रकार प्रकट नहीं हुई।

सीताजी जब श्रीराम के समीप पहुँची तो उनकी शोभा देखकर उनकी स्थिति निश्चलता की बन गयी। वह चित्रवत हो गयीं। उनकी इस दशा पर चतुर सखी ने उन्हें समझाते हुए जयमाला पहनाने को कहा।

सीताजी ने सखी की बात को सुना और जयमाला को पहनाने के लिए अपने हाथों को उठाया। किन्तु प्रेम की विह्वलता में वह माला को नहीं पहना सकीं। सीताजी जयमाला हाथ में लिये इस प्रकार सुशोभित हो रही थीं मानो मृणाल सहित दो कमल संकुचित होकर चन्द्र को जयमाला पहना रहे हों। इस सुन्दर छबि को देखकर सखियों ने मंगल गीत प्रारम्भ कर दिए। सीताजी ने श्रीराम के गले में जयमाला पहना दी।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा** —अवधी भाषा। (ii) **रस**—श्रृंगार रस। (iii) **छन्द**—चौपाई। (iv) **अलंकार**—उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार। (v) **अन्य**—सीताजी के संकोच का स्वाभाविक वर्णन है।

[3]

अति विनीत मृदु सीतल बानी। बोले राम जोरि जुग पानी॥
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना। बालक बचनु करिअ नहिं काना॥
बररै बालकु एकु सुभाऊ। इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ॥
तेहि नाहीं कछु काज बिगारा। अपराधी मैं नाथ तुम्हारा॥
कृपा कोपु बधु बंध गोसांई। मो पर करिअ दास की नाईं॥
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई। मुनिनायक सोइ करौं उपाई॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे। अजहुं अनुज तब चितव अनैसे॥
एहि कै कंठ कुठारु न दीन्हा। तो मैं काह कोपु करि कीन्हा॥ [पृष्ठ 22]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस महाकाव्य के धनुष यज्ञ शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर क्रोध पूर्ण मुद्रा में आए परशुराम का लक्ष्मण तथा रामचन्द्रजी से हुए वार्तालाप का वर्णन है।

व्याख्या—श्रीराम ने परशुराम के हाथ जोड़े और अत्यन्त विनम्रता के साथ शीतल वचन कहने लगे—"हे नाथ ! आप तो स्वभावतः चतुर हैं। बालकों के वचन पर कोई ध्यान मत दीजिए। बर्र तथा बालकों के स्वभाव में समता होती है। अतः सन्तों की दृष्टि उनके दोषों की ओर नहीं जाती।

श्रीराम लक्ष्मण जी का पक्ष लेते हुए कहते हैं—मेरे छोटे भाई लक्ष्मण ने तो आपका कोई कार्य नहीं बिगाड़ा है। जो कुछ भी कार्य बिगाड़ा गया है, उसका दोषी तो मैं हूँ। हे नाथ ! अपराध तो मुझसे हुआ है। अपराधी मैं हूँ। लक्ष्मण नहीं। अतः हे स्वामी ! जो कोई भी दण्ड देना है, मुझे दीजिए। आपकी कृपा, क्रोध, वध या बन्धन का दोषी मैं हूँ। मुझे अपना दास समझकर जो कुछ देना है, मैं सहर्ष स्वीकार करने को तैयार हूँ।

श्रीराम कहते हैं कि हे मुनिनायक ! आपका क्रोध जिस प्रकार भी शान्त हो, आप वही उपाय करें।

श्रीराम के इस विनम्र स्वर को सुनकर परशुराम कुछ शान्त हुए और कहने लगे—हे राम ! तुम्हारा अनुज लक्ष्मण तो अब भी मेरी ओर वक्र दृष्टि से देख रहा है। कुछ क्रोधित होकर परशुरामजी बोले—इसकी गर्दन पर यदि मैंने फरसा नहीं मारा तो मैंने क्रोध करके क्या कर लिया ? लक्ष्मण जी की अशिष्टता का दण्ड दिए बिना कैसे शान्त हुआ जा सकता है ?

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा** —अवधी भाषा। (ii) **छन्द**—चौपाई। (iii) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उपमा अलंकार। (iv) **रस**—शान्त तथा रौद्र रस। (v) **अन्य**—श्रीराम की विनम्रता तथा परशुराम का क्रोध व्यक्त हुआ है।

●●

2 प्रिय प्रवास | गोवर्धन-धारण

अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"

● गागर में सागर

अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"—जन्म— सन् 1865 ● स्थान-निजामाबाद (आजमगढ़) ● पिता का नाम-पंडित भोलासिंह ● साहित्य के विविध अंगों में लेखन ● खड़ी बोली तथा ब्रज भाषा पर अधिकार ● खड़ी बोली को नवीन रूप ● राधा-कृष्ण की लोकनायक के रूप में प्रस्तुति ● संस्कृत वर्ण वृत्तों का प्रयोग ● मुहावरेदार भाषा ● सन् 1924 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान ● प्रिय प्रवास पर मंगला प्रसाद पारितोषिक ● मृत्यु—सन् 1495।

रचनाएँ—(1) प्रिय प्रवास (2) वैदेही वनवास (3) रस कलश (4) चुभते चौपदे (5) चोखे-चौपदे।

काव्य-सार—(गोवर्धन-धारण)—ब्रज में तूफान आये एक दिन व्यतीत हो गया ● आकाश में घंटाएँ घिर आयीं ● ब्रज को घुमड़ते बादलों ने घेर लिया ऐसा प्रतीत होता था कि प्रलय के बादल छाये हुए हैं ● वर्षा की भयंकरता देखकर प्रलय का अनुमान होने लगा ● गाँव जल में डूब गए खेत जल मग्न हो गए। राजा-प्रजा सभी चिन्तित हो उठे ● पर्वत की कन्दाराओं में शरण ली जाने लगी ● कृष्ण उन्हें प्रत्येक सहायता देते रहे ● डूबतों की रक्षा करते रहे।

श्रीकृष्ण ने गोवर्धन-पर्वत की कन्दराओं में सभी के रहने की उचित व्यवस्था की ● गायों को भी कन्दराओं में पहुँचाया ● ऐसा भान होता था कि गोवर्धन पर्वत ही श्रीकृष्ण ने अपनी अंगुली पर उठा लिया है ● सात दिन की निरन्तर वर्षा के पश्चात् बादलों का प्रलयकारी रूप समाप्त हुआ ब्रजवासियों का अपने घरों में लौटना संभव हो सका।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "प्रिय प्रवास" के इस अंश की भाषागत विशेषता कौन-सी है ?

(क) तत्सम शब्द प्रधानता (ख) तद्भव शब्द प्रधानता (ग) आंचलिक शब्द प्रधानता (घ) क्लिष्ट शब्द प्रधानता (ङ) अप्रचलित शब्द प्रधानता।

उत्तर—[क] तत्सम शब्द प्रधानता।

प्रश्न 2. *"पर सु-साहस से, सु-प्रबंध से।*
ब्रज-विभूषण के जन-एक भी।
तम न त्याग सका, जल-मग्न हो।
मक सका गिर के न गिरीन्द्र से॥"

इन पंक्तियों से श्रीकृष्ण के किस गुण का पता लगता है ?

(क) वाक् पटुता (ख) ब्रज-विभूषणत्व
(ग) धीर-वीरता (घ) पर दुःख कातरता
(ङ) साहसिक प्रबन्ध पटुता।

उत्तर—[ङ] साहसिक प्रबन्ध पटुता।

प्रश्न 3. *"लख अलौकिक-स्फूर्ति-सुदक्षता।*
चकित-स्तम्भित गोप-समूह था।
अधिकृत बंधता यह ध्यान था।
ब्रज-विभूषण हैं शतशः बने॥"

ब्रजवासियों को श्रीकृष्ण अनेक रूपों में क्यों लग रहे थे ?

(क) उनकी विविध क्रियाओं के कारण (ख) स्वामी की तरह रक्षा करने के कारण
(ग) सबको सांत्वना देने के कारण (घ) ईश्वर का अवतार होने के कारण।
(ङ) विपत्ति में हर स्थान पर उपस्थित होने के कारण।

उत्तर—[ङ] विपत्ति में हर स्थान पर उपस्थित होने के कारण।

प्रश्न 4. *"तरल तोयधि-तुंग तरंग से।*
निविड़-नीरद थे घिर घूमते।
प्रबल हो जिनकी बढ़ती रही।
असितता धनता-स्वकारिता।"

इसमें प्रयुक्त अलंकार कौन-सा है ?

(क) उपमा (ख) रूपक
(ग) अन्योक्ति (घ) श्लेष
(ङ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर—[क] उपमा।

प्रश्न 5. "हरिऔधजी" का "गोवर्धन धारण" किस महाकाव्य में है ?

(क) वैदेही वनवास (ख) प्रिय प्रवास
(ग) रस कलश (घ) अधखिला फूल।

उत्तर—[ख] प्रिय प्रवास।

प्रश्न 6. इन्द्र के प्रकोप से ब्रज की रक्षा की—

(क) बसुदेव ने (ख) नन्द ने
(ग) श्रीकृष्ण ने (घ) ग्वालों ने।

उत्तर—[ग] श्रीकृष्ण ने।

प्रश्न 7. गोवर्द्धन पूजा से कौन क्रोधित हुआ ?

(क) शंकरजी (ख) गणेशजी
(ग) इन्द्रदेव (घ) श्रीकृष्ण।

उत्तर—[ग] इन्द्रदेव।

प्रश्न 8. "हरिऔध जी" को किस काल का कवि माना जाता है ?

(क) आदिकाल का (ख) भक्तिकाल का
(ग) रीतिकाल का (घ) आधुनिक काल का।

उत्तर—[घ] आधुनिक काल का।

प्रश्न 9. "हरिऔधजी" के अत्यधिक प्रसिद्ध महाकाव्य का नाम है—

(क) प्रिय प्रवास (ख) प्रेम-प्रपंच
(ग) पद्य-प्रसून (घ) रस कलश।

उत्तर—[क] प्रिय प्रवास।

प्रश्न 10. "हरिऔधजी" के 'प्रिय प्रवास' की भाषा है—

(क) ब्रज (ख) खड़ी बोली हिन्दी
(ग) अवधी (घ) संस्कृत मिश्रित हिन्दी।

उत्तर—[ख] खड़ी बोली हिन्दी।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. महाकाव्य संग्रह में प्रिय प्रवास के किस अंश का वर्णन है ?

उत्तर—महाकाव्य संग्रह में प्रिय प्रवास के गोवर्धन धारण का वर्णन है।

प्रश्न 2. ब्रज को कौन-सी गर्जना भयभीत कर रही थी ?

उत्तर—ब्रज को घनघोर बादलों की गर्जना भयभीत कर रही थी।

प्रश्न 3. सम्पूर्ण ब्रज प्रदेश जल में मग्न क्यों हो रहा था ?

उत्तर—सम्पूर्ण ब्रज प्रदेश इन्द्र द्वारा निरन्तर वर्षा से जल में मग्न हो रहा था।

प्रश्न 4. गोवर्धन धारण में श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को क्या प्रेरणा दी ?

उत्तर—गोवर्धनं धारण में श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को स्वावलम्बन की प्रेरणा दी।

प्रश्न 5. निरन्तर वर्षा से आतंकित ब्रजवासियों की किसने रक्षा की ?

उत्तर—निरन्तर वर्षा से आतंकित ब्रजवासियों की श्रीकृष्ण ने रक्षा की।

प्रश्न 6. राजा इन्द्र के प्रकोप से बचने के लिए श्रीकृष्ण ने क्या उपाय किया ?

उत्तर—राजा इन्द्र के प्रकोप से बचने के लिए श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को गोवर्धन पर्वत की शरण में जाने का उपाय किया।

प्रश्न 7. ब्रज के राजा तथा प्रजा की व्यग्रता का क्या कारण था ?

उत्तर—ब्रज के राजा तथा प्रजा की व्यग्रता का कारण इन्द्रदेव द्वारा निरन्तर वर्षा करना था।

प्रश्न 8. राजा इन्द्र की मूसलाधार वर्षा का ब्रज पर कोई प्रभाव क्यों नहीं पड़ा ?

उत्तर—राजा इन्द्र की मूसलाधार वर्षा का ब्रज पर कोई प्रभाव 'श्रीकृष्ण' के प्रयास के कारण नहीं पड़ा।

प्रश्न 9. ब्रज पर राजा इन्द्र की कुदृष्टि कितने दिन रही ?

उत्तर—ब्रज पर राजा इन्द्र की कुदृष्टि छः-सात दिन रही।

प्रश्न 10. सम्पूर्ण ब्रज किस व्यथा से दुःखी हो उठा ?

उत्तर—सम्पूर्ण ब्रज श्रीकृष्ण की विरह-व्यथा से दुःखी हो उठा।

प्रश्न 11. ''प्रिय प्रवास के गोवर्धन-धारण प्रसंग में ब्रजवासियों के श्रीकृष्ण के उद्बोधन को स्पष्ट कीजिए। (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—'प्रिय प्रवास' के गोवर्धन-धारण प्रसंग में ब्रजवासियों को श्रीकृष्ण ने आलस्य का परित्याग करके, स्वावलम्वी, कर्मवीर बनने का उद्बोधन दिया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. अनुप्रास अलंकार का आशय समझाइए। पाठ में से उपयुक्त उदाहरण देकर अपने आशय को पुष्ट कीजिए।

उत्तर—**अनुप्रास अलंकार**—काव्य में जहाँ व्यंजनों की आवृत्ति होने से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

यथा—***कर प्रकंम्पित पीवर-प्राण को***
भर गया ब्रज-भूतल मध्य था।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में 'प' व्यंजन की आवृत्ति हुइ ह।

उपयुक्त उदाहरण— (1) प्रलय-कालिक-सर्व-समा दिखा। ('स' की आवृत्ति)
(2) पतन होकर पादप-पुंज को। ('प' की आवृत्ति)
(3) स-बल विज्जु प्रकाप-प्रमाद से। ('प' व्यंजन की आवृत्ति)
बहु-विचूर्णित पर्वत-श्रृंग थे।। ('ब' व्यंजन की आवृत्ति)
(4) उचित यत्न विपत्ति-विनाश का। ('व' की आवृत्ति)
(5) तड़ित-सी कछनी कटि में कसे। ('क' व्यंजन की आवृत्ति)
(6) वन विशेष विनीत मुकु द ने। ('व' व्यंजन की आवृत्ति)
(7) पर विपत्ति विलोक स-शंक हो। ('व' तथा 'स' की आवृत्ति)
(8) सुन स-ओज सु-भाषण श्याम का। ('स' व्यंजन की आवृत्ति)
(9) पर सु-साहस से सु-प्रबन्ध से। ('स' की आवृत्ति)
(10) परम-प्राण-स्वरूप सु-साहसी। ('प' तथा 'स' की आवृत्ति)

प्रश्न 2. प्रलयंकारी वर्षा से आतंकित ब्रजवासियों को कृष्ण ने जो प्रबोधन दिया उसे अपनी भाषा में लिखिये।

उत्तर—वर्षा को प्रलयंकारी रूप में देखकर ब्रजवासी आतंकित हो उठे। चारों ओर चमकती चपला, वेग से बहती वायु, घुमड़ते हुए बादलों ने प्रलय जैसा दृश्य उपस्थित कर दिया। हृदय-

विदारक बिजली, ब्रज के कानों को भी फाड़ने वाली उनकी गर्जना, मूसलाधार वर्षा, गिरते हुए वृक्ष, खण्डित होते हुए भवन, चूर्ण होती पर्वत श्रेणी, जल मग्न होते नगर तथा ग्रामों ने ब्रजवासियों को भयभीत कर दिया।

विनाशकारी विपत्ति का उचित उपाय सोचना भी कठिन हो रहा था। ऐसे समय में ब्रज-विभूषण को देखकर समस्त जन-समूह हर्षित हो गया। श्रीकृष्ण ने इस विपत्ति से उबरने का एक ही उपाय सुझाया। उन्होंने गोवर्धन की शरण में चलने का विचार किया और सचेष्ट हो जाने को कहा—

''रह अचेष्टित जीवन त्याग से
मरण है अति-चारु सचेष्ट हो।''

श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को समझाते हुए ठीक ही कहा कि बिना प्रयास किए जीवन त्याग देने की अपेक्षा, प्रयत्न करते हुए अपने जीवन का परित्याग करना श्रेयष्कर है। बिना हाथ-पैर चलाए, अकर्मण्य बने रहकर जीवन-त्याग निन्दनीय है। अतः प्रयत्नशील रहो। कार्य की सफलता के लिए हर सम्भव प्रयास करो। ऐसे में यदि मृत्यु भी हो जाय तो उत्तम है।

श्रीकृष्ण ने कहा कि भविष्य तो सदा रहस्य ही रहता है। अत: प्राणों का भय करके कार्य में शिथिलता लाना श्रेयष्कर नहीं है। जो वीर, विपत्ति की चिन्ता त्याग करके युद्ध-स्थल में जाने के लिए तैयार हो जाता है, उसे ही विजय श्री प्राप्त होती है। जो विपत्तियों का ध्यान करके, शिथिलता से युद्ध-स्थल में जाता है, उसे अपमानित होना पड़ता है। क़ाल का ग्रास भी ऐसा ही वीर बनता है।

अत: संकट काल में, धैर्यपूर्वक उचित प्रयत्न करना ही हम सब का धर्म है। उन्होंने अन्त में कहा—

इसलिए तज निंद्य-विमूढ़ता।
उठ पड़ो सब लोग स-यत्न हो।
इस महा-भय-संकुल काल में।
बहु-सहायक जान ब्रजेश को॥''

प्रश्न 3. ''प्रिय प्रवास'' के इस अंक में श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का कौन-सा रूप प्रकट हुआ है ? उनके गुणों का उल्लेख करते हुए, अपने उत्तर की पुष्टि में, उपयुक्त उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर—''प्रिय प्रवास'' के 'गोवर्धन-धारण' में श्रीकृष्ण एक साहसी प्रबन्धक, धीर-वीर महापुरुष के रूप में प्रकट हुए हैं। वह ब्रजवासियों की विपत्ति में हर क्षण उनके संकट निवारण के लिए तो उपस्थित हैं ही, अपने साहस से ब्रजवासियों में भी नव-चेतना का मन्त्र फूँककर अपनी सुप्रबन्ध प्रियता का तो परिचय देते ही हैं, लोकोपकारी रूप को भी प्रकट करते हैं। राजा इन्द्र के प्रकोप के कारण जब ब्रज में प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी तब श्रीकृष्ण ने ही गिरि-राज की शरण में जाने का परामर्श दिया। पहले तो इस परामर्श पर वाद-विवाद हुआ अन्त में यही निश्चित हुआ कि गिरिराज की शरण लेना ही उचित है।

अन्धकार की वृद्धि, वज्रपात, जल-प्लावन, वर्षा की भीषणता देखकर श्रीकृष्ण ने कर्मवीर बनकर अपने प्राणों का परित्याग श्रेष्ठ बताते हुए ब्रजवासियों का उद्बोधन किया—

''रह अचेष्टित जीवन त्याग से।
मरण है अति-चारु सचेष्ट हो॥''

श्रीकृष्ण ने कर्म से प्राप्त फल का महत्व बताते हुए विपत्ति का संगठित होकर सामना करने का उपदेश दिया। ब्रजवासियों पर कृष्ण के उद्बोधन का प्रभाव हुआ। समुचित स्थान पर जाने और उचित सहायता करना ब्रजवासियों ने अपना धर्म स्वीकार किया। सभी सतर्कतापूर्वक सुरक्षित स्थान की ओर प्रस्थान करने लगे। वृद्ध, असहाय, अनाथ, दु:खी व्यक्तियों की सहायतार्थ श्रीकृष्ण वहाँ तैयार थे।

श्रीकृष्ण के साहस तथा सुप्रबन्ध की प्रशंसा करते हुए हरिऔधजी ने बताया है कि ब्रज का एक भी व्यक्ति इस महा संकट में अपने जीवन से निराश नहीं हुआ। कोई भी व्यक्ति जल में डूबकर अपने प्राण नहीं गवाँ सका—

"पर सु-साहस से सु-प्रबन्ध से।
ब्रज-विभूषण के जन एक भी।
तन न त्याग सका जल-मग्न हो।
मर सका गिर के न गिरीन्द्र से॥"

प्रश्न 4. वर्षा के प्रकोप का जो चित्रण इस पाठ में हुआ है, उसका उल्लेख कीजिए।

उत्तर—हरिऔधजी ने 'प्रिय प्रवास' के 'गोवर्धन-धारण' में वर्षा के प्रकोप का जो चित्रण किया है, वह आतंकित करने वाला है। प्रलय जैसा दृश्य उपस्थित करने वाला है।

हरिऔधजी ने लिखा है कि इन्द्रदेव वर्षा के देवता हैं। उन्होंने ब्रजवासियों पर कुपित होकर तेज स्वर में जल की बूँदें बरसाना प्रारम्भ कर दिया। निरन्तर वर्षा के कारण प्रलय जैसी स्थिति बन गयी। बादलों की गर्जना, हृदय-विदारक वज्राघात, अन्धकार-वृद्धि, मूसलाधार वर्षा ने ब्रजवासियों के मन को कंपा दिया।

ब्रज-प्रदेश जल में मग्न होने लगा। वृक्षों की डालियाँ ही नहीं अपितु वृक्ष भी गिरने लगे। घर खण्डित होने लगे। पर्वत की चोटियाँ चूर्ण होने लगीं। जन-जीवन के प्राणों का संकट उत्पन्न हो गया।

रात-दिन वर्षा होती रही। हवा चलती रही। तालाब जल से भरते रहे। सम्पूर्ण ब्रज-भूमि जल-मग्न होती गयी। रुकने की सम्भावना थी ही नहीं। नगर, गाँव, ताल, तलैया सागर के समान दिखाई दे रहे थे। हरिऔधजी लिखते हैं—

"जल-मयी ब्रज की वसुधा बनी।
सलिल-मग्न हुए पुर-ग्राम भी॥
सर-बने बहु विस्तृत ताल से।
बन गया सर था लघु-गर्त भी॥"

प्रश्न 5. "हरिऔधजी की काव्य कला पर प्रकाश डालिए।

अथवा

अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" के भाव तथा कला पक्ष की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" हिन्दी खड़ी बोली को प्रथम महाकाव्य की भेंट प्रदान करने वाले कवि थे, जिन्होंने हिन्दी की गौरव वृद्धि में अकथनीय वृद्धि की। भाव तथा कला की दृष्टि से एक नए युग का सूत्रपात किया।

भाव पक्ष की विशेषताएँ

(1) **वर्ण्य-विषय**—अयोध्यासिंह जी ने अपने प्रबन्ध काव्यों का विषय, परम्परागत चरित्रों को ही बनाया। किन्तु कृष्ण चरित्र और रामचरित्र को नितान्त मौलिक रूप में प्रस्तुत करना आपकी प्रतिभा का परिचायक है। आपने फुटकर रचनाएँ एवं मुक्तक काव्य का भी प्रणयन किया है।

(2) **रस-योजना**—हरिऔध जी के काव्य के प्रमुख रस करुण, वात्सल्य, शृंगार, भयानक आदि हैं। सबसे अधिक रुचि आपकी करुण और वात्सल्य में ही दिखाई देती है। यशोदा का करुण-विलाप आपकी सफल रस-योजना का प्रमाण है—

प्रिय पति ! वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है ?
दुःख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है ?

वियोग शृंगार का चित्रण भी मर्मस्पर्शी है। विरहिणी राधा का एक कथन दर्शनीय है—

प्यारी प्रातः पवन इतना क्यों मुझे तू सताती।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से।

मैं री रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुःख कथा श्याम को तू सुना दे॥

(3) प्रकृति-वर्णन—प्रकृति-वर्णन में भी अयोध्यासिंह जी ने पर्याप्त रुचि ली है। आपने प्रकृति के मनोरम और भयंकर दोनों स्वरूप प्रस्तुत किये हैं। प्रातः काल का एक चित्र दर्शनीय है—

तारे डूबे तम टल गया, छा गयी व्योम लाली।
पंछी बोले, तमचुर जगे ज्योति फैली दिगों में॥ **(मनोरम पक्ष)**

इसी प्रकार मध्याह्न का यह दृश्य—

निदाघ का काल महा दुरंत था,
तवा समा थी तपती वसुन्धरा। **(भयंकर पक्ष)**

(4) मौलिक उद्भावनाएँ—कृष्ण के लीला प्रधान चरित्र को युगानुकूल व्यक्तित्व देना और राधा को मात्र एक विकल विरहिणी के स्तर से उठाकर सच्ची प्रेमिका और मानव लेखिका के रूप में प्रस्तुत करना आपकी मौलिक परिकल्पनाएँ हैं।

कलापक्ष सम्बन्धी विशेषताएँ

(1) भाव—उपाध्याय जी का खड़ी बोली तथा ब्रज-भाषा दोनों ही पर समानाधिकार था। वे संस्कृत-निष्ठ भाषा में भी पद्य-रचना कर सकते थे और सरल से सरल बोलचाल की भाषा में भी। कोई-कोई पद्य तो संस्कृत शब्दों के भरपूर प्रयोग से पूरा श्लोक बन गया है—

रूपोद्यान-प्रफुल्ल-प्राय-कलिका, राकेन्दु-बिम्बानना।
तन्वंगी कलहासिनी, सुरसिका, क्रीडा-कला-पुत्तली॥ **(प्रिय प्रवास)**

सरल भाषा का प्रयोग निम्नलिखित पद्य में दृष्टव्य है—

प्यारे आवें सुवयन कहें, प्यार से गोद लेवें।
ठंडे होवें नयन, दुःख हों दूर, मैं मोद पाऊँ॥

ब्रजभाषा का सफल प्रयोग 'रसकलश' में किया गया है—

डार दियौ रंग, तौ उनंग कहाँ ऊनौ भयौ, बिगर्‌यौ कहा मुख माँहि मली रोरी है।
कुंकुम चलाये कौन हानि भई अंगन की, मारि पिचकारी कौन कीनी बर-जोरी है॥

आपकी भाषा का एक और रूप भी है जो कि उर्दू मिश्रित और बोलचाल की भाषा कही जा सकती हैं।

आँखे का मोती ढुलकता देखकर, दिल किसी का यूँ तड़पकर रह गया।

(2) छन्द—हरिऔधजी ने संस्कृत वर्ण-वृत्तों का आधुनिक हिन्दी में सबसे पहले प्रयोग किया है। द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित और मालिनी आदि छन्दों का 'प्रिय प्रवास' तथा 'वैदेही-वनवास' में प्रयोग किया है। 'रसकलश' में कवित्त, सवैया व दोहों के सुष्ठु प्रयोग हैं। चौपदों की भी आपने सुन्दर रचना की है।

(3) अलंकार—उपाध्यायजी ने शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों को अपने काव्य में स्था[न] दिया है। प्रयुक्त अलंकार अधिकांशतः सादृश्य-मूलक हैं। अलंकार-योजना का सप्रयास प्रयोग [त]'रसकलश' में किया गया है जबकि अन्य ग्रन्थों में वे अनायास ही काव्य-सुषमा को बढ़ा सके हैं।

गगन-सान्ध्य समान सु-ओष्ठ थे, दसन थे युग तारक से लसे। (उपमा
विमल चंद विनिंदक माधुरी विकच वारिज की कमनीयता। (अनुप्रास
जननि-मानस पुण्य पयोधि में, लहर एक उठी सुख मूल थी। (रूपक

साहित्य में स्थान—हरिऔधजी द्विवेदी युग के प्रथम कवि हैं। अतुकान्त काव्य सृजन कर[ने] की दृष्टि से तो वे इस दिशा के प्रथम कवि हैं। इस युग के कवियों में अकेले मैथिलीशरण गुप्त [ही] उनकी कोटि में गिने जा सकते हैं। 'प्रियप्रवास' उपाध्याय जी का खड़ी बोली में प्रणीत प्रथ[म] महाकाव्य है। अनुमान किया जाता है कि आधुनिक हिन्दी कवियों में किसी का भी इतना ब[ड़ा] शब्द-भंडार नहीं जितना कि उपाध्याय जी का था।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ— पृष्ठ 34 – 35 **प्रभंजन** = तूफान-आँधी। **प्रकंपित कारिणी** = कँपा देने वाली। **अशनि पात** = बिजली गिरना। **तुंग** = ऊँची। **असितता** = श्यामता। **रव** = शब्द। **कोटिशः** = करोड़ों। **उरदारक** = हृदय-विदारक। **पवि कर्ण** = वज्रकर्णी। **खनि** = खान। **भाद्र कुहूनिशा** = भादों जैसी अमावस की रात्रि।

पृष्ठ 36 – 37 – 38 **समां** = वातावरण। **पीवर** = स्वस्थ। **गुरु** = भारी। **विचूर्णित** = खण्ड-खण्ड टूटना। **प्रगाढ़ता** = गहनता। **रवि नंदिनी** = यमुना नदी। **समागत** = एकत्र। **नवल** = नया। **दरी** = कंदरा। **वारिद** = बादल। **अचेष्टित** = प्रयत्नहीन। **समुद्यत** = तैयार।

पृष्ठ 39 – 42 **विधेय** = उचित। **विमूढ़ता** = कर्त्तव्यहीनता। **प्रबोधित** = आज्ञा पाकर। **उदक** = जल। **अकिंचन** = तुच्छ। **रुज** = रोग। **गिरीन्द्र** = पर्वत श्रेष्ठ। **सम्बल** = सहारा। **ओक** = स्थान। **प्रभेद** = अन्तर। **लखा** = देखा। **प्रसार** = विस्तार।

[1]

दिवस एक प्रभंजन का हुआ।
अति-प्रकोप, घटा नभ में घिरी।
बहु-भयावह-गाढ़- मसी- समा।
सकल-लोक प्रकंपित-कारिणी॥ 1 ॥ [पृष्ठ 34 – 35]

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध''** रचित **प्रिय प्रवास** के **गोवर्धन-धारण** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर ब्रज में आने वाली घटाओं का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

व्याख्या—'हरिऔधजी' कहते हैं कि ब्रज में एक ऐसा भी दिन आया जब आंधी तीव्र गति से चलने लगी। आकाश में घटा-टोप अन्धकार छा गया। घटाएँ घिरने लगीं। उनकी श्यामलता स्याही के समान थी। भयानकता ऐसी थी कि ब्रज के नागरिक भय से थरथरा उठे। घटा थीं ही ऐसी कि सभी लोकों में कँपकपी छा गयी।

काव्य सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम् प्रधान भाषा। (ii) **छन्द**—द्रुत विलम्बित छन्द। (iii) **अन्य**—वातावरण का वर्णन।

[2]

पतित थी ब्रज-भू पर हो रही।
प्रति घटी उर-दारक-दामिनी।
असह थी इतनी गुरु-गर्जना।
सह न था सकता पवि-कर्ण भी॥ 6 ॥

तिमिर की वह थी प्रभुता बढ़ी।
सब तमोमय था दृग देखता।
चमकता वर-वासर था बना।
असितता-खनि-भाद्र-कुहू-निशा॥ 7 ॥ [पृष्ठ – 35]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **अयोध्यासिंह उपाध्याय ''हरिऔध''** रचित **प्रिय प्रवास** के **गोवर्धन-धारण** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि घटाओं के छाने का वर्णन करते हुए वहाँ के वातावरण के सम्बन्ध में कहता है—

व्याख्या—ब्रज में बिजली की कड़कड़ाहट हृदय को विदीर्ण कर रही थी। असह्य गर्जना व सम कठोर कानों को भी भेद रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि बधिर भी उस गर्जन को सहन न कर सकेंगे।

अन्धकार ही अन्धकार फैला हुआ था। यह अन्धकार इतना बढ़ गया था कि नेत्रों से सम वस्तुएँ अन्धकार युक्त ही दिखाई पड़ रही थीं। सूर्य के प्रकाश से चमकने वाला वह दिन भी अ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि के समान बन गया था।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—भयानक रस। (iii) **छन्द**— द्रुत विलम्बित छन्द। (iv) **अलंकार**—सन्देह तथा अनुप्रास अलंकार। (v) **अन्य**—ब्रज पर छा वाले अन्धकार और वहाँ की विपत्ति का वर्णन किया गया है।

[3]

सु-फल जो मिलता इस काल है।
समझना न उसे लघु चाहिये।
बहुत हैं, पड़ संकट-स्रोत में।
सहस में जन जो शत भी बचें॥ 31॥

इसलिये तज निंद्य-विमूढ़ता।
उठ पड़ो सब लोक स-यत्न हो।
इस महा-भय-संकुल काल में।
बहु-सहायक जान ब्रजेश को ॥ ३२ ॥ [पृष्ठ - 39

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** रचित **प्रिय प्रवास** के **गोवर्धन धारण** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर श्रीकृष्ण का उत्साह वर्धन हेतु ब्रजवासियों को दिये गये परामर्श क वर्णन किया गया है।

व्याख्या—श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को समझाया कि विपत्ति में धैर्य नहीं खो देना चाहिए अपितु साहस के साथ अपने प्रयास में जुटे रहना चाहिए। जो व्यक्ति प्रयास करता है, उसे उसके प्रयास का फल अवश्य प्राप्त होता है। व्यक्ति को प्राप्त फल के विषय में यह कभी नहीं सोचन चाहिए कि फल कम प्राप्त हुआ है।

श्रीकृष्ण ब्रजवासियों को समझाने लगे कि यह घड़ी विपत्ति की है। सहस्त्रों व्यक्तियों के प्रा संकट में हैं। सहस्त्रों में से कुछ सौ व्यक्तियों के प्राणों की भी रक्षा हो सके तो हमें उसे भ स्वीकार करना चाहिए।

विवेकहीनता एवम् कर्त्तव्यहीनता का दोष बताते हुए श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों से पुनः यह कहा है कि वे गिरिराज की शरण में जाने के लिए तत्पर हो जायें। ऐसी विषम घड़ी में गिरिराज ह हमारी सहायता कर सकता है। उसकी शरण में जाये बिना हमारा कल्याण नहीं हो सकता।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—द्रु विलम्बित छन्द। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास अलंकार। (v) **अन्य**—श्रीकृष्ण विवेकपूर्ण कार्य क परामर्श दे रहे हैं।

[4]

प्रकृति क्रुद्ध छह-सात दिनों रही।
कुछ प्रभेद हुआ न प्रकोप में।
पर स-यत्न रहे वह सर्वथा।
तनिक-क्लान्ति हुई न ब्रजेन्द्र को ॥ 47 ॥

प्रति-दरी प्रति-पर्वत-कन्दरा।
निवसते जिनमें ब्रज-लोग थे।

बहु-सु-रक्षित थी ब्रज-देव के।
परम-यत्न सु-चारु प्रबन्ध से ॥ 48 ॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचित प्रिय प्रवास के गोवर्धन धारण शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर श्रीकृष्ण के सुप्रबन्ध का चित्रण करते हुए कवि कहता है—

व्याख्या—कवि हरिऔधजी लिखते हैं कि प्रकृति का यह प्रकोप छः-सात दिनों तक रहा। इस अवधि में इन्द्र का प्रकोप रंच मात्र भी कम नहीं हुआ। प्रकृति के इस प्रकोप में कोई अन्तर नहीं आया। श्रीकृष्ण बिना किसी थकान के अपने कार्य में जुटे रहे। श्रीकृष्ण के सप्रयत्न तथा कुशल प्रबन्ध के परिणामस्वरूप गोवर्धन पर्वत की प्रत्येक खोह में ब्रजवासी निवास कर रहे थे और सुरक्षित थे।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **छन्द**—द्रुत विलम्बित छन्द। (iii) **अलंकार**—अनुप्रास अलंकार। (iv) **अन्य**—श्रीकृष्ण के सुप्रबन्ध का वर्णन किया गया है।

●●

3 साकेत | कैकेयी का पश्चात्ताप

मैथिलीशरण गुप्त

● गागर में सागर

मैथिलीशरण गुप्त—जन्म-सन् 1886 • स्थान—चिरगाँव (झाँसी) • पिता—सेठ रामचरण • पिता के कविता प्रेम की झलक • भारतीयता के प्रति प्रेम भावानुकूल भाषा खड़ी बोली का परिष्कृत रूप अपनाना • खड़ी बोली के उन्नायकों में प्रधान • सामाजिक चेतना के कवि • 'साकेत' महाकाव्य पर मंगला प्रसाद पुरस्कार प्राप्त • राष्ट्र कवि का गौरव • बारह वर्ष राज्य सभा के सदस्य • आधुनिक युग की समस्त काव्य धाराओं को अपनाना • मृत्यु-सन् 1964।

रचनाएँ—(1) जयद्रथ-वध (2) पंचवटी (3) रंग में भंग (4) विरहिणी-ब्रजांगना (5) अनघ (6) गुरुकुल (7) हिन्दू (8) साकेत (9) यशोधरा (10) नहुष (11) कुणाल गीत (12) द्वापर (13) मंगल घट (14) झंकार (15) विष्णु प्रिया (16) मेघनाद वध।

काव्य-सार (कैकेयी का पश्चात्ताप)—कैकेयी के वरदानों से राज्य तिलक के स्थान पर राम का वनवास • राम की आज्ञाकारिता • वन गमन • लक्ष्मण का भ्रातृ-भाव राम के साथ वन जाना • दशरथ का राम की याद में प्राण त्याग • कैकेयी को भरत द्वारा प्रताड़ित करना • चित्रकूट में राम से मिलने कैकेयी का जाना और भरत का राम से अयोध्या लौट चलने का निवेदन • कैकेयी का पश्चात्ताप • मन्थरा अथवा भरत को निर्दोष बताना • अपने को दोषी बताना • रघुकुल घालक बताना • श्रीराम का कैकेयी को सान्त्वना देना • ऐसी माता को भरत जैसे भाई को पाकर धन्य होना प्रजाजन का भी धन्य-धन्य कहना।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "सन्देश यहाँ मैं नहीं, स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।"—राम की इस उक्ति में उनका कौन-सा स्वरूप प्रकट होता है ?

(क) वे विष्णु के अवतार थे
(ख) वे समाज सुधारक थे
(ग) वे अलौकिक पुरुष थे
(घ) वे सामान्य मानव थे।

उत्तर—[ग] वे अलौकिक पुरुष थे।

प्रश्न 2. "पट-मंडप चारों ओर तने मन भाये,
जिन पर रसाल मधु निम्ब जम्बु वट छाये।
मानो बहु कटि-पट चित्रकूट ने पाये,
किंवा नूतन धन उसे घेर घिर आये॥"—
इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?

(क) यमक
(ख) उत्प्रेक्षा
(ग) उपमा
(घ) रूपक
(ङ) श्लेष।

उत्तर—[ग] उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 3. भरत की इस उक्ति में उनका कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है ?
"हे आर्य, रहा क्या भरत अभीप्सित अब भी ?
मिल गया अकंटक राज्य उसे जब, तब भी ?

(क) ग्लानि
(ख) कटुता
(ग) दीनता
(घ) व्यथा

(ङ) उपालम्भ।

उत्तर—[क] ग्लानि।

प्रश्न 4. ''छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे,
हे राम, दुहाई करूँ और क्या तुम से ?''—कैकेयी के इन उद्‌गारों में उसका कौन-सा भाव व्यक्त होता है ?

(क) पश्चात्ताप (ख) करुणा
(ग) व्यंग (घ) दीनता
(ङ) आग्रह।

उत्तर—[क] पश्चात्ताप

प्रश्न 5. मैथिलीशरण गुप्त को प्रसिद्धि प्राप्त है—

(क) भक्तिकालीन कवि की (ख) रीतिकालीन कवि की
(ग) आधुनिक कवि की (घ) राष्ट्र कवि की।

उत्तर—[घ] राष्ट्र कवि की।

प्रश्न 6. साकेत की कथा का प्रारम्भ है—

(क) राम जन्म से (ख) राम वनवास से
(ग) कैकेयी पश्चात्ताप से (घ) भरत राज्य तिलक से।

उत्तर—[ग] कैकेयी पश्चात्ताप से।

प्रश्न 7. ऋषियों के लिए कौन-सा देश दुर्गम है ?

(क) चित्रकूट (ख) पंचवटी
(ग) अयोध्या (घ) दक्षिण।

उत्तर—[घ] दक्षिण।

प्रश्न 8. ''मैं दूँगा अब आर्यत्व उन्हें निज कर से।''—आर्यत्व किसको देने की बात राम ने कही है ?

(क) मुनियों को (ख) रीछ-वानरों को
(ग) शाप ग्रस्त लोगों को (घ) दण्डक-वनवासियों को।

उत्तर—[ख] रीछ-वानरों को।

प्रश्न 9. ''उस जड़ जननी का विकृत वचन तो पाला,
तुमने इस जन की ओर न देखा-भाला !''—ऐसा कथन किसका है ?

(क) श्री राम का (ख) श्री लक्ष्मण का
(ग) श्री भरत का (घ) श्री शत्रुघ्न का।

उत्तर—[ग] श्री भरत का।

प्रश्न 10. ''हा ! इसी अयश के हेतु जनन था मेरा।''—भरत के मन का भाव व्यक्त हुआ है—

(क) करुणा (ख) ग्लानि
(ग) चिन्ता (घ) अयश।

उत्तर—[ख] ग्लानि।

प्रश्न 11. ''बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा,
वह सिंही, अब थी हा गोमुखी गंगा।''—सिंही किसको कहा है ?

(क) सुमित्रा को (ख) कौशिल्या को
(ग) कैकेयी को (घ) सीताजी को।

उत्तर—[ग] कैकेयी को।

प्रश्न 12. ''श्रीखण्ड आज अंगार-चण्ड है मेरा,
तो इससे बढ़कर कौन दण्ड है मेरा ?''

उक्त कथन से कैकेयी का कौन-सा भाव प्रकट होता है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(क) हीनता (ख) विषाद

(ग) पश्चात्ताप (घ) क्षोभ।

उत्तर—[ग] पश्चात्ताप।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. चित्रकूट की सभा में कैकेयी के चरित्र के विषय में कवि ने क्या बताया है ?

उत्तर—चित्रकूट की सभा में कैकेयी के चरित्र के विषय में कवि ने बताया है कि उसका चरित्र प्रशंसनीय है।

प्रश्न 2. चित्रकूट में भरत के प्रति लक्ष्मण की शंका के दो कारण लिखिए। (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—भरत के प्रति लक्ष्मण की शंका के दो कारण—

(i) माता के मत में राज्य का लोभ

(ii) माता के समान अनीति अपनाना।

प्रश्न 3. "कैकेयी का पश्चात्ताप" कथानक कहाँ से प्रारम्भ होता है ?

उत्तर—"कैकेयी का पश्चात्ताप" कथानक चित्रकूट में राम के निवास से प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 4. भरत के वनागमन पर राम के मन में क्या विचार उत्पन्न हुआ ?

उत्तर—भरत के वनागमन पर राम के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि भरत जी अयोध्या-वासियों को अनाथ करके यहाँ आए हैं।

प्रश्न 5. भरत के वनागमन पर लक्ष्मणजी ने क्या सोचा ?

उत्तर—भरत के वनागमन पर लक्ष्मणजी ने सोचा कि वह सेना सहित आकर श्रीराम को परास्त करके अखण्ड राज्य चाहते हैं जिसे पूर्ण नहीं होने दिया जायेगा।

प्रश्न 6. भरत-शत्रुघ्न के आने का सीता पर क्या प्रभाव हुआ ?

उत्तर—भरत-शत्रुघ्न के आने का सीताजी पर यह प्रभाव हुआ कि उनके नेत्रों से स्नेह के अश्रु निकल पड़े।

प्रश्न 7. गुरु वशिष्ठ से आज्ञा प्राप्त करके श्रीराम ने क्या किया ?

उत्तर—गुरु वशिष्ठ से आज्ञा प्राप्त करके श्रीराम ने अपने स्वर्गीय पिता के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रश्न 8. कैकेयी के पश्चात्ताप का क्या कारण था ?

उत्तर—कैकेयी के पश्चात्ताप का कारण श्रीराम को वन भेजना था।

प्रश्न 9. कैकेयी की कौन-सी मनोदशा व्यक्त हुई है ?

"हा, जनकर भी मैंने न भरत को जाना।"

उत्तर—कैकेयी की पश्चात्ताप की मनोदशा व्यक्त हुई है।

प्रश्न 10. कैकेयी को धन्य क्यों कहा गया है ?

उत्तर—भरत सदृश भ्रातृ प्रेमी, वैरागी, वीर तथा त्यागी पुत्र के कारण कैकेयी को धन्य कहा गया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. भरत के प्रति लक्ष्मण के किस दृष्टिकोण का आभास उनकी इस उक्ति से होता है ?

"विस्मय क्या है, क्या नहीं स्व मातृ तनय वे ?"—अपना आशय लगभग चालीस शब्दों में लिखिए।

उत्तर—भरत के प्रति लक्ष्मण का यह दृष्टिकोण आभासित होता है कि भरत भी अपनी माता के समान सिंहासन लोभी हैं। उनके मन में भी महत्वाकांक्षा है। राज सुख भोगने की इच्छा है। जब

माँ अपने पुत्र के हित में दूसरे को वन भेज सकती है। कठोरता धारण कर सकती है तो उसके पुत्र में यह सब दुर्भावना क्यों नहीं हो सकती ? अपनी माता के समान उसका पुत्र भी निष्कंटक राज्य-सुख भोगने के लिए वन में राम को परास्त करके अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आये हैं। वह भी तो अपनी माँ के पुत्र हैं। वह भी माँ के समान दुर्भावनाएँ रखते हों तो विस्मय ही क्या है ?

प्रश्न 2. *''माता का चाहा किया राम ने आहा'*
तो भरत करेंगे क्यों न पिता का चाहा।''—इन पंक्तियों का आशय, पूर्व प्रसंग सहित लगभग साठ शब्दों में लिखिए।

उत्तर—**पूर्व प्रसंग**—भरतजी अयोध्यावासियों, अपनी माताओं तथा सेना सहित चित्रकूट पर राम से मिलने आ रहे थे। उन्हें इस प्रकार आता देखकर लक्ष्मणजी ने कहा कि वह युद्ध के लिए आ रहे हैं। मैं किसी भी दशा में आपका विरोध स्वीकार नहीं करूँगा। उनसे युद्ध करूँगा। आपने पिताजी के वचनों का पालन किया। माँ ने भरत को राज सिंहासन चाहा जिसके लिए भरत निष्कंटक राज्य की इच्छा से यहाँ आ रहे हैं। उत्तर में श्रीरामचन्द्रजी कहते हैं—

आशय—श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी को मानव मन की दुर्बलता के विषय में समझाते हैं कि यह मन चंचल है। लोभ भी इस सीमा तक है कि वह देवत्व का परित्याग करके इच्छाओं की पर्ति के लिए दुष्टता धारण करने में विलम्ब नहीं करता।

श्रीराम कहते हैं कि लक्ष्मण तुम्हारा तर्क अकाट्य है। मैंने वही किया जो माताजी का आदेश था। वह जैसा चाहती थीं, मैंने वैसा ही किया। अब भरत वही करने को तैयार हुए होंगे, जो पिताजी ने चाहा है, क्निन्तु हमारा कर्तव्य सन्मार्ग को त्यागकर कुमार्ग पर चलना नहीं है।

प्रश्न 3.''जिस पर पाले का एक पर्त-सा छाया,
हत जिसकी पंकज पंक्ति, अचल-सी काया।
उस सरसी-सी, आभरण रहित, सित वसना,
सिहरे प्रभु माँ को देख, हुई जड़ रसना।''—इस अंश की व्याख्या निम्नलिखित बिन्दुओं के अनुसार कीजिए— (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(1) इसका पूर्व-प्रसंग क्या है ?
(2) किसका वर्णन किया जा रहा है ?
(3) सित वसना का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?
(4) इस शब्द का मन्तव्य क्या है ?
(5) वह मन्तव्य किस कारण से है ?
(6) सरसी का रूपक किसके लिए बाँधा गया है ?
(7) पंकज-पंक्ति का रूपकाशय क्या है ?
(8) वैसा आशय क्यों निकलता है ?
(9) जड़ रसना किसकी हुई है ?
(10) क्यों हुई ?
(11) राम के सिहर उठने का क्या कारण था ?

उत्तर—

(1) **पूर्व प्रसंग**—चित्रकूट पर राम से मिलने भरतजी गुरुजन, पुरजन, सचिव, गज, घोड़ों, रथादि के साथ आए। श्रीराम ने गुरु आदि का समादर किया।
(2) श्रीराम की माताओं का वर्णन किया जा रहा है।
(3) सितवसना का प्रयोग माँ की साड़ी आदि के लिए किया गया है।
(4) सितवसना का मन्तव्य विधवापन से है।
(5) राजा दशरथ के देवलोकवास के कारण माँ विधवा हो गयी थी।

(6) सरसी का रूपक माँ के लिए बाँधा गया है, जिसकी दशा पाला पड़ी तलैया के समान हो गयी थी।
(7) पंकज पंक्ति भी पाला पड़ने पर नष्ट हो जाती है।
(8) माँ के श्वेत वस्त्र और दुःखी अवस्था के कारण।
(9) जड़ रसना श्रीराम की हुई।
(10) माता की विधवा दशा देखकर।
(11) राम के सिहर उठने का कारण—पिताजी की मृत्यु तथा माता की विधवावस्था थी।

प्रश्न 4. चित्रकूट की सभा में कैकेयी ने जो उद्‌गार व्यक्त किए उन्हें मार्मिक ढंग से अपनी भाषा में लिखिए।

उत्तर—चित्रकूट की सभा में कैकेयी ने राम से कहा—हे पुत्र ! मैं तुम्हारे बाद भरत को भी अपना नहीं कह सकती। वह भी मेरा अपना नहीं रहा। मैंने तुम्हें वन भेजकर कुयश ही पाया है।

मैंने भरत के लिए क्या कुछ नहीं किया ? उस पर सभी सुख वार दिए। तुम्हारे अधिकारों का हनन किया। तुम्हें राज सिंहासन से वंचित किया। किन्तु क्या भरत अब प्रसन्न हैं ? नहीं। हे राम ! वह भरत अब दीन हो गया है। रो रहा है। अपनी दशा पर प्रसन्न नहीं है। शीतल स्वभाव भरत जो चन्दन के सदृश था आज जलते हुए अंगारों के समान हो गया है। कैकेयी इस सबका दोष अपने पर लेते हुए कहती हैं कि मैं दण्ड की भागी हूँ—

''पर वही आज यह दीन हुआ रोता है,
शंकित सबसे धृत हरिण-तुल्य होता है।
श्री खण्ड आज अंगार-पिण्ड है मेरा,
तो इससे बढ़कर कौन दण्ड है मेरा ?

मातृत्व भाव से पूर्ण कैकेयी कहती है कि मुझे जो भी दण्ड दिया जाय, कम है। किन्तु इतना अवश्य चाहती हूँ कि मेरे कारण भरत को कोई अपयश प्राप्त न हो और भरत की माँ होने का पद भी मुझसे न ले लिया जाय।

प्रश्न 5. ''कैकेयी का अनुताप'' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'कैकेयी का अनुताप' शीर्षक प्रसंग मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' महाकाव्य से उद्धृत है। इस महाकाव्य में प्रथम बार कैकेयी के चरित्र के उज्ज्वल पक्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। कविता में वर्णित मुख्य भाव निम्नवत् हैं—

(क) संक्षिप्त प्रकृति-चित्रण—कविता के मुख्य विषय से पूर्व कवि ने प्राकृतिक पृष्ठ-भूमि प्रस्तुत की है। इस पृष्ठभूमि में चित्रकूट का प्राकृतिक वैभव साकार हो उठा है। चित्रकूट का शान्त तथा नीरव वातावरण करौंदे के पुष्पों की गन्ध से महक रहा है। स्वच्छ नीला वितान तना हुआ है, जिसमें तारों के रूप में अगणित दीपक जल रहे हैं। ऐसे मनोरम वातावरण में श्रीराम के उटज के सामने सभा आयोजित होती है।

(ख) राम-भरत-सम्वाद—सबसे प्रथम राम-भरत से उनका अभीप्सित पूछते हैं। भरत व्यंग्यात्मक रूप में उत्तर देते हुए कहते हैं कि अब मेरा कोई अभीप्सित शेष नहीं है। आपका बनवास हो गया और आपके वियोग में तड़पते हुए पूज्य पिताजी ने शरीर त्याग दिया। इससे बढ़कर मेरा और क्या अभीप्सित हो सकता है ? रोते हुए राम भरत को गले लगाकर कहते हैं—

''उसके आशय की थाह मिलेगी किसको ?
जनकर जननी ही जान न पायी जिसको।''

(ग) कैकेयी-अनुताप—यह सुनते ही कैकेयी को अपने उद्‌गार व्यक्त करने का अवसर मिल गया। उन्होने अपने मन की समस्त ग्लानि को प्रकट कर दिया। अपने यत्किचित् दोष को स्वीकारते हुए अपनी निर्दोषता की ओर भी सभा का ध्यान आकृष्ट किया।

कैकेयी के चरित्र को निखारने के लिए कवि ने अपने काव्य-कौशल का भरपूर उपयोग किया है। कैकेयी द्वारा कहा गया प्रत्येक वाक्य अत्यन्त मार्मिक है। प्रस्तुत हैं कुछ उद्धरण—

"यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।
× × × × ×
पटके मैंने पद पाणि मोह के नद में,
जन क्या-क्या करते नहीं स्वप्न में, मद में।
अनुशासन ही था मुझे अभी तक आता,
करती है तुमसे विनय आज यह माता।"

(घ) सौष्ठव—यह प्रसंग गुप्त जी की सर्वथा मौलिक सृष्टि है। कैकेयी को बोलने का अवसर देकर उन्होंने उनके चरित्र को नये रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें हमें कैकेयी के सरल, स्वाभिमानी किन्तु विनम्र स्वरूप के दर्शन होते हैं। प्रसंग की भाषा सरल तथा परिमार्जित खड़ी बोली है। कवि ने करुणा के साथ ओज का सहज ढंग से निर्वाह किया है।

प्रश्न 6. 'साकेत' महाकाव्य में मैथिलीशरण गुप्त ने कैकेयी के चरित्र में जो नवीनतायें उत्पन्न की हैं, उन्हें उद्धरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गुप्त जी उपेक्षिताओं के उद्धारक कहे जाते हैं। पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' नामक निबन्ध में उर्मिला के चरित्र को पृष्ठभूमि में डाल देने सम्बन्धी जो विचार प्रकट किये थे, उनसे प्रभावित होकर गुप्त जी ने 'साकेत' में न केवल उर्मिला के चरित्र को प्रधानता दी अपितु कैकेयी के सर्वजन-लांछित और अपवादग्रस्त चरित्र का भी उद्धार किया।

कैकेयी का प्रचलित स्वरूप—इससे पूर्व रचित वाक्यों में कैकेयी का प्रायः घृणित स्वरूप ही प्रस्तुत किया गया था। उसे समाज दूसरे का अधिकार छीनने वाली तथा पति-विरोधिनी एक कर्कशा नारी के रूप में ही जानता था।

कैकेयी से सहानुभूति—कैकेयी का चरित्र जन समाज में घृणा का पात्र बन गया था। राम-विरोधी व्यक्ति के रूप में उसका अपयश निरन्तर चलता रहा। किन्तु मैथिलीशरण जी को कैकयी से भी सहानुभूति हुई। उन्हें लगा कि पूर्ववर्ती रामकथाकारों ने कैकेयी के साथ न्याय नहीं किया। जिस पुत्र के लिए उसने इतना बड़ा पातक और जीवनव्यापी अपयश कमाया, उसी से प्रताड़ित और अपमानित होने पर क्या उसे अपनी करनी पर घोर पश्चात्ताप न हुआ होगा ? मानव मनोविज्ञान की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया गुप्त जी से उपेक्षित न रह सकी। इसी कारण उन्होंने युग-युग से ग्लानि की मौन कारा में घुटती कैकेयी को चित्रकूट की सभा में वाणी देकर कवि-कर्त्तव्य की पूर्ति की।

कैकेयी को अवसर—सभा में भरत से जब राम पूछते हैं "हे भरत भद्र ! अब कहो अभीप्सित अपना" तो सारी सभा के प्राण कानों में आ बसते हैं। भरत इस बारीक व्यंग्य की चोट से तिलमिला जाते हैं और मर्माहत हो राम से ही पूछते हैं "हे आर्य बता दो तुम्हीं अभीप्सित मेरा" मेरे ही कारण आपको तरु तले बसेरा करना पड़ा। पिता ने तड़प-तड़प कर प्राण त्यागे। मेरा सारा कामना-संसार तो नष्ट हो चुका। अब और कौन-सा अभीप्सित शेष है।

राम इसका उत्तर भरत को अपने 'रोदन-जल' से सींचकर देते हैं और घोषणा करते हैं कि "**उसके आशय की थाह मिलेगी किसको ? जनकर जननी भी जान न पाई जिसको**" और इसी समय सभा में एक भावसिक्त किन्तु दृढ़ कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ता है—

'यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।'

यह कैकेयी का स्वर है। सारी सभा चौंक उठती है। उसे विश्वास नहीं होता कि यह कैकेयी का कथन है। आत्मग्लानिमयी कैकेयी को अपने पाप की गुरुता का पूरा ज्ञान है। राम-द्वारा भरत को दोषमुक्त किये जाने पर उसका मन अपने अपराध को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने को व्याकुल हो जाता है। वह कहती है—

करके पहाड़ सा पाप मौन रह जाऊँ । राई भर भी अनुताप न करने पाऊँ।

नहीं, यह नहीं हो सकता। यह भयंकरतम दण्ड है। मुझे पश्चाताप का अवसर तो मिलना ही चाहिए। मैं अपना अपराध किसी पर डालना नहीं चाहती। बिचारी मन्थरा मेरे मन को क्या विकृत

कर सकती थी ? मेरा ही मन अपने आप पर अविश्वास कर बैठा। मैने भंयकर अपराध किया है। मैं पति-घातिनी हूँ। सारा संसार मुझ पर थूकने का अधिकार रखता है परन्तु मैं केवल एक ही भिक्षा माँगती हूँ—

छीने न मातृ पद किन्तु भरत का मुझसे।

इस प्रकार गुप्तजी कैकेयी को अपने मन की बात कहने का अवसर प्रदान करते हैं।

कैकेयी का पश्चात्ताप—आज तक सारा संसार कहता आया है कि पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, परन्तु माता कुमाता नहीं हो सकती। किन्तु मैंने अपने दुष्कृत्य से संसार को यह कहने को बाध्य कर दिया है—

' **"हे पुत्र ! पुत्र ही रहे कुमाता माता।"** कितना सच्चा पश्चात्ताप है इन शब्दों में। मैंने केवल इसे जन्म मात्र दिया है। मैं इसके हृदय को नहीं पहचान सकी। घोर स्वार्थ के मद में मैंने परमार्थ को अनदेखा कर दिया। अब युग-युग तक मेरा जीव इस अपकीर्तिमयी गाथा को सुनेगा कि 'रघुकुल में भी एक अभागिनी रानी थी, जिसने सारे परिवार को अस्त-व्यस्त कर दिया, तुच्छ लाभ के लिए वैधव्य को अंगीकार किया।'

कैकेयी की सर्वोपरि व्यथा—कैकेयी को सबसे बड़ी व्यथा एक ही है कि उसका लाल भी आज पराया हो गया है। जिस पुत्र के लिए सारे कुटिल यत्न किये वही आज सारी सभा के सम्मुख आँसुओं से ग्लानि को धो रहा है। मुझे आज दया और करुणा नहीं, दण्ड ही चाहिए। मैं क्षत्राणी हूँ चिर नरक का दण्ड मुझे स्वीकार है परन्तु दया में मिलने वाला स्वर्ग स्वीकार नहीं। मैंने जिस भरत को राज्य दिलाने के लिए तुमको वन भेजा था, जब वही राज्य को ठुकराकर तुम्हें मनाने यहाँ आया है तो फिर तुमको लौट ही चलना चाहिए।

कैकेयी का हृदय परिवर्तन—कैकेयी की भावुकता और वात्सल्य को भी गुप्तजी ने प्रकाशित होने का पूर्ण अवसर प्रदान किया है। वह मानती है कि उसका पूर्वाचरण किसी मोह या मद का परिणाम था। अब चेतना में आकर वह अपने 'पुत्र' राम को पुनः पहचान गयी है।

"अब कटे सभी वे पाश, नाश के प्रेरे। मैं वही कैकेयी वही राम तुम मेरे।"

राम भी कैकेयी के हृदय को पहचानते हैं। इसी से उन्हें उसके आचरण पर कोई खेद नहीं है।

स्पष्ट है कि गुप्तजी ने कैकेयी के चरित्र को सर्वथा नये रूप में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है। पश्चात्ताप की अग्नि में तपाकर उसे रामकथा प्रेमियों की सम्वेदना और सहानुभूति का पात्र बना दिया है। मनोवैज्ञानिक न्याय प्रदान करके इस पौराणिक, उपेक्षित और आक्षेपित चरित्र को आधुनिकता से अनुरंजित किया है।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—**पृष्ठ- 48 - 49** मदीय = मेरा। **आर्यत्व** = सभ्यता का संस्कार। **भीत** = डरा हुआ। **व्याध** = शिकारी। **नकुल** = नेवला। **चमू** = सेना।

पृष्ठ- 50 - 52 **अनय** = अनीति। **प्रतिषेध** = मनाही। **अक्षुण्य** = अटूट। **विग्रह** = लड़ाई। **चमू** = सेना। **युग्म** = दोनों। **उर्वी** = धरती। राज-पाट। **गृही** = गृहस्थ।

पृष्ठ- 53 - 55 **सरसी-सी** = पाला पड़ी तलैया। **सित** = सफेद। **वसना** = वस्त्र वाली। **सित-वसना** = विधवा वेश। **अशोच्य** = शोक से परे। **साश्रु वदन** = अश्रु पूरित मुख, **प्रपूर्ण** = भरपूर। **परेखा** = पश्चात्ताप। **पटि** = वस्त्र, **आलान** = हाथी बाँधने के खूँटे। **वलय** = कठोर। **मन्दानिल** = मन्द वायु। **उटज** = कुटिया। **भयातुर** = भय से त्रस्त।

पृष्ठ- 56 - 58 **अभीप्सित** = इच्छा। **तुषार** = पाला, कुहरा। **विधु** = चन्द्रमा। **गोमुखी गंगा** = हिमालय से गिरती धारा, शान्त। **अनुताप** = पश्चात्ताप। **नर देही** = मनुष्य शरीर। **धृत** = कैद। पकड़ा गया। **श्रीखण्ड** = चन्दन।

[1]

सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।
अथवा आकर्षण पुण्यभूमि का ऐसा,
अवतरित हुआ मैं, आप उच्च फल जैसा।
जो नाम मात्र ही स्मरण मदीय करेंगे,
वे भी भवसागर बिना प्रयास तरेंगे।
"पर जो मेरा गुण, कर्म स्वभाव धरेंगे,
वे औरों को भी तार, पार उतरेंगे।" [पृष्ठ 48 – 49]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित साकेत महाकाव्य के कैकेयी का पश्चात्ताप शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर श्रीराम के पृथ्वी पर आगमन तथा नाम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कवि कह रहा है—

व्याख्या—श्रीराम सीताजी को समझा रहे हैं कि मेरा इस पृथ्वी पर आगमन स्वर्ग का सन्देश लेकर नहीं हुआ है। मैं इस धरती पर उन व्यक्तियों को आनन्द प्रदान करने हेतु आया हूँ, जिन्हें किसी श्राप के कारण कष्ट प्राप्त हो रहे हैं। मेरा इस पृथ्वी पर आने का उद्देश्य सांसारिक व्यक्तियों को सुख तथा सम्पत्ति प्रदान करना है। मुझे भरत की पुण्य भूमि में विचित्र आकर्षण दिखाई देता है। मैं इस पृथ्वी पर किसी उत्तम फल के रूप में उत्पन्न हुआ हूँ।

नाम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्रीरामचन्द्रजी कहते हैं कि जो भी व्यक्ति उनके नाम का स्मरण करेंगे उनका इस संसार से पार हो जाना अत्यन्त सरल हो जायेगा। जो व्यक्ति राम के गुण तथा कर्म को स्वीकार कर लेंगे उनका इस पृथ्वी से पार होना सम्भव होगा ही, वह दूसरों को भी इस संसार सागर से पार उतार सकेंगे।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—साहित्यिक भाषा जो तत्सम प्रधान है। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेयता। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास। (v) **अन्य**—राम के व्यवहार का वर्णन है।

[2]

तत्वों का चिन्तन करें स्वस्थ हो ज्ञानी,
निर्विघ्न ध्यान में निरत रहें सब ध्यानी।
आहुतियाँ पड़ती रहें अग्नि में क्रम से,
उस तपस्त्याग की विजय-वृद्धि हो हमसे।
मुनियों को दक्षिण देश आज दुर्गम है,
बर्बर कोणप-गण वहां उग्र यम-सम हैं।
वह भौतिक मद से मत्त यथेच्छाचारी,
मेटूँगा उसकी कुगति-कुमति मैं सारी।" [पृष्ठ – 49]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित साकेत के कैकेयी का पश्चात्ताप शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर श्रीराम वनवासियों से कह रहे हैं—

व्याख्या—श्रीराम चाहते हैं कि वन में किसी प्रकार की अशान्ति न रहे। सब प्रकार की विघ्न-बाधाओं का अन्त हो ताकि ज्ञानी व्यक्ति निश्चिन्त होकर ईश्वरीय चिन्तन में ध्यान दें। ऋषि-मुनियों को अपने ध्यान-योग में कोई विघ्न उपस्थित न हो। यज्ञादि का कार्य निर्विघ्न रूप में चले।

श्रीराम अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि ऋषि-मुनि सदा त्याग और तप की मूर्ति बने रहें। मानवीय भावनाओं की समृद्धि तथा दैत्यों की दुष्प्रवृत्ति पर अंकुश लगे।

भारत के दक्षिणी भाग के विषय में श्रीराम कहते हैं कि वहाँ राक्षसों के निवास के कारण मुन्यिों को तपादि में बाधा होती है। मैं ऐसे भौतिक सुख भोगी, दुराचारी, स्वेच्छाचारी, क्रूर स्वभाव, दैत्यों का विनाश करूँगा ताकि सभी अपने यज्ञ-तपादि निर्विघ्न रूप में कर सकें।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय (iv) **अलंकार**—अनुप्रास। (v) **अन्य**—श्रीराम की लोक-मर्यादा की भावना व्यक्त होती है।

[3]

''भद्रे, न भरत भी उसे छोड़ आये हों,
मातुश्री से भी मुंह न मोड़ आये हों।
लक्ष्मण, लगता है यही मुझे हे भाई,
पीछे न प्रजा हो पुरी शून्य कर आई।''
''आशा अन्तःपुर मध्यवासिनी कुलटा,
सीधे हैं आप, परन्तु जगत है उलटा
जब आप पिता के वचन पाल सकते हैं,
तब मां की आज्ञा भरत टाल सकते हैं ?'' [पृष्ठ – 50 – 51]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **मैथिलीशरण** गुप्त रचित **साकेत** के **कैकेयी का पश्चात्ताप** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर भरत के दल-बल सहित चित्रकूट आगमन की सूचना पर जानकी, श्रीराम और लक्ष्मण अपने विचार प्रकट करते हैं—

व्याख्या—श्रीराम अपनी आशंका व्यक्त करते हुए सीताजी से कहते हैं—''हे सीता ! भरत भी मेरे समान अयोध्या का राज्य-सुख त्यागकर वन को चले आये हैं। श्रीराम कहते हैं कि भरत भी अपनी माँ को त्यागकर यहाँ वन में न आ रहे हों।''

लक्ष्मणजी की ओर देखते हुए श्रीराम कहते हैं—हे लक्ष्मण ! मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि भरत भी सम्पूर्ण राज्य-सुखों का परित्याग करके यहाँ वन में आ रहे हैं और अयोध्यावासी भी अयोध्या को सूना करके भरत के पीछे आ रहे हैं।

श्रीराम के इन वचनों को झुठलाते हुए लक्ष्मणजी कहने लगे—हे भाई ! आशा एक छलावा है। वह रनिवास में रहने वाली स्त्री के समान होती है जिसका दुराचार से ही सम्बन्ध रहता है। आपका भरत के विषय में उत्तम सोचना सर्वथा असत्य है, भ्रामक है। आप अत्यन्त सरल हैं। यह संसार वैसा नहीं है। यह अत्यन्त कुटिल है। जरा विचार तो कीजिए, जब आपने पिताजी की आज्ञा का पूर्णतः पालन किया है तो भरत ने माता की आज्ञा का पालन किया है। वह भी माताजी की आज्ञा को नहीं टाल सकते जिस प्रकार आप पिताजी की आज्ञा को नहीं टाल सके हैं।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—अनुप्रांस अलंकार। (v) **अन्य**—मानव स्वभाव का सही चित्रण है।

[4]

''रोकर रज में लोटो न भरत, ओ भाई,
यह छाती ठंडी करो सुमुख सुखदायी।
मानस के मोती यों न बिखेरो, आओ,
उपहार-रूप यह हार मुझे पहनाओ।''
''हा आर्य, भरत का भाग्य रजोमय ही है,
उर रहते उर्वी उसे तुम्हीं ने दी है।
उस जड़ जननी का विकृत वचन तो पाला,
तुमने इस जन की ओर न देखा-भाला।'' [पृष्ठ – 52]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **मैथिलीशरण गुप्त** रचित **साकेत महाकाव्य** के **कैकेयी का पश्चात्ताप** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर श्रीराम भरतजी को समझाते हुए कह रहे हैं—

व्याख्या—श्रीराम भरतजी से कहते हैं—हे भरत ! तुम्हें यदि सन्ताप है तो मेरे हृदय से लगकर अपने सन्ताप को दूर करो। इस प्रकार धूल में लेटना तथा रोना बन्द कर दो। रो-रोकर अपनी करुणा के अश्रु कण जो तुम्हारे हृदय के मूल्यवान मोती हैं, गिराना बन्द करो। मेरे निकट आकर अपने अश्रु कणों का हार उपहारस्वरूप मुझे दो। इन अश्रुकण के मोतियों का हार मुझे पहनाओ।

श्रीराम के शान्त वचनों को सुनकर भरत ने निवेदनपूर्वक उनसे कहा—हे आर्य ! मेरे भाग्य में तो आपने धूल ही लिख दी है। मुझको राज्य का सिंहासन, राज्य की धरती देकर आपने मेरे भाग्य में धरती की धूल ही लिख दी है। आपने मूर्ख माँ की न मानने योग्य आज्ञा का तो पालन किया किन्तु मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। मुझे आपने आज्ञाकारी भाई नहीं समझा। मेरे विषय में आपने लेश मात्र भी विचार नहीं किया। अन्यथा माँ के अनुचित वचनों का पालन न करते।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—शान्त। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा यमक अलंकार। (v) **अन्य**—भ्रातृ-प्रेम का चित्रण।

[5]

जिस पर पाले का एक पर्त-सा छाया,
हत जिसकी पंकज-पंक्ति, अचल-सी काया।
उस सरसी-सी, आभरणरहित, सितवसना,
सिहरे प्रभु मां को देख, हुई जड़ रसना। [पृष्ठ 52 – 53]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **मैथिलीशरण गुप्त** रचित **साकेत महाकाव्य** के **कैकैयी का पश्चात्ताप** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर चित्रकूट में आए भरत और माताओं को विधवा के रूप में चित्रित करते हुए गुप्त जी कह रहे हैं—

व्याख्या—माताओं का विधवा रूप ऐसा दृष्टिगोचर हो रहा था, जिस प्रकार कोई तलैया पाले की पर्त छा जाने पर दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि माताओं का कमल के समान चेहरा मुर्झा गया है। आँखों की चमक चली गयी है। शरीर निष्क्रिय हो गया है। उसकी चंचलता समाप्त हो गयी है।

माताओं ने विधवाओं जैसे श्वेत वस्त्र धारण किए हुए थे। आभूषणों का कोई स्थान नहीं था। श्रीराम ने तुरन्त ही इस अवस्था का अनुमान लगा लिया। उनके इस स्वरूप को देखकर श्रीराम एक दम सिहर उठे। उनकी वाणी जड़ हो गयी। एक शब्द भी कहना उनकी सामर्थ्य से परे था।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—तत्सम प्रधान भाषा। (ii) **रस**—करुण रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—उत्प्रेक्षा तथा उपमा अलंकार। (v) **अन्य**—माताओं के विधवा वेश का चित्रण।

[6]

"हे आर्य, रहा क्या भरत-अभीप्सित अब भी ?
मिल गया अकण्टक राज्य उसे जब, तब भी ?
पाया तुमने तरु-तले अरण्य-बसेरा,
रह गया अभीप्सित शेष तदपि क्या मेरा ?
तनु तड़प-तड़प कर तप्त तात ने त्यागा,
क्या रहा अभीप्सित और तथापि अभागा ?
हा ! इसी अयश के हेतु जनन था मेरा,

निज जननी ही के हाथ हनन था मेरा।'
अब कौन अभीप्सित और आर्य, वह किसका ?
संसार नष्ट है भ्रष्ट हुआ घर जिसका।
मुझसे मैंने ही आज स्वयं मुंह फेरा,
हे आर्य, बता दो तुम्हीं अभीप्सित मेरा ?'' [पृष्ठ – 56]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **मैथिलीशरण गुप्त** रचित **साकेत** महाकाव्य के **कैकेयी का पश्चात्ताप** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर चित्रकूट में एकत्र जन समूह के सम्मुख श्रीराम के भरत आगमन का कारण पूछने पर भरतजी उत्तर दे रहे हैं—

व्याख्या—राम के यह पूछने पर कि हे भाई भरत अब अपनी इच्छा प्रकट करो। भरत विह्वल होकर कह उठे ''हे पूज्य ! आप मेरी मनोकामना पूछ रहे हैं ? क्या भरत की अभी भी और कोई कामना शेष है ? मुझे तो आपके वन चले जाने से निष्कंटक राज्य प्राप्त हो गया। आप यहाँ वन प्रदेश में वृक्षों के नीचे निवास कर रहे हैं। क्या अभी भी मेरी कोई अभिलाषा शेष रह गयी है ? मेरी इच्छा पूर्ति के लिए ही तो पिताजी (महाराज दशरथ) ने तड़प-तड़पकर प्राण विसर्जित किये थे। क्या अभी भी मेरी अभागी अभिलाषा बाकी रह गयी ? आप मुझे क्यों लज्जा के सागर में डुबो रहे हैं ? क्या संसार में इसी घोर अपकीर्ति को पाने के लिए मैं जन्मा था ? क्या मेरी मृत्यु मेरी माँ के हाथों ही होनी थी ? (अपयश मृत्यु से भी बढ़कर है जो माँ के कारण मिला है) हे आर्य ! जिस व्यक्ति का घर नष्ट हो (उजड़) गया उसका संसार (जीवन) नष्ट हो गया। उसका कब कौन-सा अभीप्सित शेष रह गया ? मुझे तो लगता है कि मैं स्वयं अपने से विरुद्ध हो गया हूँ। हे आर्य ! आप ही कृपाकर बताइए कि मेरी कौन-सी कामना अभी शेष हो सकती है ?''

काव्य-सौन्दर्य—**(i) भाषा**—तत्सम प्रधान खड़ी बोली। **(ii) रस**—शान्त। **(iii) छन्द**—गेय। **(iv) अलंकार**—अनुप्रास तथा वक्रोक्ति अलंकार। **(v) अन्य**—भरत का पश्चात्ताप।

[7]

''यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।''
चौंके सब सुनकर अटल कैकयी-स्वर को।
सबने रानी की ओर अचानक देखा,
वैधव्य-तुषारावृत्ता यथा विधु-लेखा।
''बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा,
वह सिंही अब थी हहा ! गोमुखी गंगा।
''हाँ जनकर भी मैंने न भरत को जाना,
सब सुन लें, तुमने स्वयं अभी यह माना।
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मैं हूं तात, तुम्हारी मैया।
दुर्बलता का ही चिह्न विशेष शपथ है,
पर, अबलाजन के लिए कौन-सा पथ है ? [पृष्ठ – 56 – 57]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **मैथिलीशरण गुप्त** रचित **साकेत** महाकाव्य के **कैकेयी का पश्चात्ताप** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर श्रीराम के उत्तम व्यवहार पर संकुचित कैकेयी राम से कहती है—

व्याख्या—कैकेयी ने राम से कहा ''यदि यह सच है कि मैंने अपने पुत्र की मनोभावना उसके स्वभाव और भ्रातृभक्ति को न पहचान कर ये सारे दुष्कृत्य किये हैं तो तुम अब अयोध्या लौट चलो।'' कैकेयी के इस दृढ़ स्वर को सुनकर सभा चौंक उठी। सभी की दृष्टि कैकेयी की

ोर उठी और लगा कि जैसे वैधव्य रूपी कुहरे से ढकी चाँदनी ही बैठी हो। यद्यपि कैकेयी के दय में असंख्य भाव और वितर्क उठ रहे थे फिर भी वह अचल भाव से बैठी थी। अब तक जसने एक सिंहनी जैसा कठोर क्रूर आचरण प्रदर्शित किया था, वही कैकेयी आज गोमुखी-गंगा क समान निर्मल शीतल वचनों का उच्चारण कर रही थी। कैकेयी कहने लगी "मैं मानती हूँ कि मैं न्म देकर भी अपने पुत्र के स्वभाव को नहीं पहचान सकी। सबके सामने तुमने यह बात अभी वीकार की है। यदि यह सत्य है तो पुत्र राम ! तुम घर लौट चलो। तुम्हारी माता यह कैकेयी ही समें अपराधिनी है; भरत निर्दोष है। व्यक्ति विशेष शपथ (सौगन्ध) तभी लेता है, जबकि उसका न भीतर से दुर्बल और दोषी होता है फिर भी हम स्त्रियों के पास सिवाय सौगन्ध खाकर अपनी त्यता प्रमाणित करने के और कोई मार्ग शेष नहीं हैं। मैं शपथ पूर्वक कहती हूँ कि मैंने भरत के कसाने पर कोई कार्य नहीं किया है। यदि भरत का किसी प्रकार का उकसावा हो तो जिस प्रकार मैंने पति को गँवा दिया है, उसी प्रकार पुत्र को भी गँवा दूँ।"

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—साहित्यिक खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय छन्द। (iv) **अलंकार**—रूपक तथा उपमा अलंकार। (v) **अन्य**—कैकेयी का पश्चात्ताप व्यक्त हुआ है।

●●

4 कामायनी — मनु की चिन्ता

जयशंकर प्रसाद

● **गागर में सागर**

जयशंकर प्रसाद—जन्म—सन् 1890 ● स्थान-वाराणसी ● पिता—बाबू देवी प्रसाद ● शिक्षा-आठवीं कक्षा तक ● हिन्दी-उर्दू-अंग्रेजी-संस्कृत की घर पर शिक्षा ● संस्कृत से विशेष प्रेम ● वेद तथा उपनिषदों का अध्ययन ● बाल्यकाल से काव्य के प्रति रुचि ● संघर्षपूर्ण जीवन ● पिता की इनके बाल्यकाल में मृत्यु ● पारिवारिक कठिनाइयाँ ● हिन्दी में नवीन युग के सृष्टा ● गद्य में भी कवि रूप भारतीय संस्कृति के प्रतिपादक ● 'कामायनी' मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित।

रचनाएँ—काव्य-ग्रन्थ—(1) प्रेम-पथिक (2) झरना (3) लहर (4) कानन-कुसुम (5) करुणालय (6) कामायनी (7) आँसू (8) चित्राधार।

उपन्यास—(1) तितली (2) कंकाल।

नाटक—(1) अजात शत्रु (2) चन्द्रगुप्त (3) स्कंदगुप्त (4) राज्य श्री (5) विशाख (6) जनमेजय का नाग यज्ञ (7) ध्रुव स्वामिनी।

काव्य-सार—मनु की चिन्ता—मनु की वेदना-उनकी चिन्ता ● हिमालय के उत्तुग शिखर पर बैठे मनु द्वारा सुखमय जीवन का विश्लेषण ● वासना का दुष्परिणामअ मृत्यु शाश्वत सत्य ● नवीन संरचना का क्रम टूटता नहीं ● जीवन सुख-दुःख की कहानी।

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. ''वे सब डूबे, डूबा उनका विभव, बन गया पारावार—
उमड़ रहा था देव-सुखों पर, दुःख जलधि का नाद अपार'
—इन पंक्तियों में किन का वर्णन अभीष्ट है—

(क) देव गणों का
(ख) मानव जन का
(ग) वनवासी जनों का
(घ) राक्षस गणों का
(ङ) अप्सराओं का।

उत्तर—[क] देव गणों का।

प्रश्न 2. ''विकल वासना के प्रतिनिधि वे, सब मुरझाए चले गए।
आह ! जले अपनी ज्वाला से, फिर वे जल में गले गए॥''
—इनमें ''आह !'' शब्द से किस भाव की व्यंजना हो रही है ?''

(क) आश्चर्य
(ख) अफसोस
(ग) दुःख
(घ) समवेदना
(ङ) करुणा।

उत्तर—[ङ] करुणा।

प्रश्न 3. ''बार-बार उस भीषण रव से, कंपती धरती देख विशेष।
मानो नील व्योम उतरा हो, आलिंगन के हेतु विशेष॥''
—इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है ?

(क) उपमा
(ख) रूपक
(ग) उत्प्रेक्षा
(घ) अन्योक्ति
(ङ) श्लेष।

उत्तर—[ग] उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 4. इस पाठ में "चिन्ता" के कई नाम गिनाए गए हैं। इनमें से कौन-सा असंगत है ?

(क) बुद्धि (ख) विवेक
(ग) मनीषा (घ) मति
(ङ) आशा।

उत्तर—[ख] विवेक।

प्रश्न 5. "मनु की चिन्ता" किस महाकाव्य से अवतरित है—

(क) रामचरित मानस से (ख) प्रिय प्रवास से
(ग) कामायनी से (घ) साकेत से।

उत्तर—[ग] कामायनी से।

प्रश्न 6. "अरी व्याधि की सूत्र धारिणी" चिन्ता को क्यों कहा है ?

(क) रोगों के निदान के कारण (ख) राम वाण औषधि के कारण
(ग) अनेक रोगों के प्रारम्भ के कारण (घ) रोगों के विनाश के कारण।

उत्तर—[ग] अनेक रोगों के प्रारम्भ के कारण।

प्रश्न 7. प्रलय के पश्चात् देवताओं ने किस विषय में सोचा ?

(क) जल-प्लावन के विषय में (ख) अपनी चिन्ता के विषय में
(ग) स्वर्ग के विषय में (घ) देव जाति के विनाश के विषय में।

उत्तर—[घ] देव जाति के विनाश के विषय में।

प्रश्न 8. देव सभ्यता किसके मद में हैं—

(क) अतीत के मद में (ख) अमरता के मद में
(ग) संस्कृति के मद में (घ) विलासिता के मद में।

उत्तर—[घ] विलासिता के मद में।

**प्रश्न 9. "तेरी ही विभूति बनती है
सृष्टि सदा होकर अभिशाप।" —कवि चित्रण कर रहा है—**

(क) जल-प्लावन का (ख) अति विलासिता का
(ग) नवीन सृष्टि का (घ) मृत्यु का।

उत्तर—[घ] मृत्यु का।

प्रश्न 10. "अन्धकार में मलिन मित्र"—मित्र शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(क) सूर्य के लिए (ख) चन्द्र के लिए
(ग) तारागण के लिए (घ) बादल के लिए।

उत्तर—[क] सूर्य के लिए।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. देव सभ्यता के विनाश का क्या कारण बताया गया है ?

उत्तर—देव सभ्यता के विनाश का कारण अहंकार एवम् विलासिता बताया गया है।

प्रश्न 2. जयशंकर प्रसाद ने किसे खेत और किसे वर्षा के ओले कहा है ?

उत्तर—जयशंकर प्रसाद ने प्रसन्न हृदय को खेत और चिन्ता को वर्षा के ओले कहा है।

प्रश्न 3. प्रसाद जी ने किसको दुर्जेय बताया है ?

उत्तर—प्रसादजी ने प्रकृति को दुर्जेय बताया है।

प्रश्न 4. अहंकार से क्या नष्ट हो जाता है ?

उत्तर—अहंकार से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

प्रश्न 5. हे अभाव की चपल बालिके, री ''ललाट की खल लेखा'' क्यों कहा है ?
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—चिन्ता से व्यक्ति का जीवन शान्त नहीं रह पाता। भाग्य की रेखा भी सरल नहीं होती। इसीलिए उसको ''ललाट की खल लेखा'' कहा गया है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''प्रिय प्रवास'' में तूफान का जो भयंकर वर्णन हुआ है और 'कामायनी' में जो प्रलय का वर्णन हुआ है, उनमें समानताएँ और असमानताएँ बताइए।

उत्तर—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने प्रिय प्रवास की रचना की है। उन्होंने गोवर्धन धारण शीर्षक से राजा इन्द्र के कुपित हो जाने पर वर्षा का जो चित्रण किया है, वह अत्यन्त आतंकित करने वाला है।

जयंशकर प्रसाद ने कामायनी की रचना की है। उन्होंने प्रलय की भीषणता का चित्रण किया है।

दोनों कवियों के चित्रण में कुछ समानताएँ हैं तो कुछ असमानताएँ भी हैं। समानता निम्नलिखित रूप में है—

समानता—(1) प्रिय प्रवास तथा कामायनी दोनों ही महाकाव्यों में मूसलाधार वर्षा तथा बिजली की दिल दहला देने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है।

(2) वर्षा के जल में मग्न प्रकृति से जन-जीवन की अस्त-व्यस्तता दोनों ही महाकाव्यों में चित्रित है।

(3) जल प्लावन से प्रकृति तथा जनता का डूबकर नष्ट होना दोनों ही महाकाव्यों में है।

(4) प्रकृति की भयंकरता दोनों ही महाकाव्यों में वर्णित है।

असमानताएँ—(1) 'प्रिय प्रवास' में वर्णित प्रकृति प्रकोप किसी को हानि नहीं पहुँचा सका। श्रीकृष्ण ने अपने सुप्रबन्ध से ब्रजवासियों की रक्षा की। 'कामायनी' में प्रकृति का विनाशकारी रूप में वर्णन किया गया है।

(2) 'प्रिय प्रवास' में ब्रजवासियों के ज़ीवन का चित्रण नहीं प्राप्त होता। 'कामायनी' में देवताओं के वैभव का प्रभावशाली चित्रण हुआ है।

(3) 'प्रिय प्रवास' में श्रीकृष्ण की शक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का चित्रण तूफान के माध्यम से हुआ है। 'कामायनी' का प्रलय चित्रण देवताओं की विलासप्रियता तथा स्वेच्छाचरिता के दुष्परिणाम पर प्रकाश डालता है।

(4) 'प्रिय प्रवास' की भाषा अत्यन्त सरस तथा सरल है। 'कामायनी' की भाषा तत्सम प्रधान है।

दोनों ही महाकाव्यों में समानताओं तथा असमानताओं के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 2. कामायनी के 'मनु की चिन्ता' प्रसंग के काव्य-सौष्ठव का विवेचन कीजिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)
(उत्तर सीमा 125 शब्द)

उत्तर—'कामायनी' के चिन्ता सर्ग को महाकाव्य संग्रह में 'मनु की चिन्ता' के नाम से प्रस्तुत किया गया है।

मनु की चिन्ता को व्यक्त करते हुए जयशंकर प्रसाद ने उनकी निराशा, जड़ता तथा अवसाद का चित्रण किया है। कवि ने चिन्ता का अत्यन्त भावात्मक चित्रण किया है। उन्होंने बताया है कि चिन्ता मन का स्वाभाविक धर्म है। जीवन में कभी सुख प्राप्त होता है तो कभी यह जीवन दुःख के सागर में निमग्न हो जाता है।

अतीत की स्मृतियों को अत्यन्त मुग्धकारी बताते हुए प्रसाद जी ने देव-संस्कृति के विनाश की चिन्ता से आहत अपने मन को मृत्यु की निश्चितता से अवगत कराया है। मनु की चिन्ता का आधार जल-प्लावन की घटना को बताया गया है।

काव्य-सौष्ठव—

भाव-पक्ष—(1) प्रेम—जयशकर प्रसाद के महाकाव्य में प्रकृति और प्रेम का विशेष रूप से वर्णन है। राष्ट्रीयता तथा जनजागरण का सन्देश भी उनके काव्य का प्रमुख विषय है। प्रेम की अनुभूति का वर्णन करते हुए वह लिखते हैं—

''इस हमारे और प्रिय के मिलन से
स्वर्ग आकर मेदनी से मिल रहा।''

(2) वेदना—प्रसाद का ''आँसू'' काव्य वेदना से पूर्ण है। 'कामायनी' में भी वेदना की झलक मिलती है। निम्नांकित पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

''शीतल ज्वाला जलती है, ईंधन होता दृगजल का।
यह व्यर्थ साँस चल चलकर, करती है काम अनिल का।''

(3) प्रकृति-चित्रण—प्रकृति को नाना रूपों में चित्रित करते हुए प्रसादजी ने उसे विनाशकारी बताया है—

''पंचभूत का भैरव मिश्रण, शंपाओं का शकल निपात।
उल्का लेकर अमर शक्तियाँ, खोज रही ज्यों खोया प्रात।।''

(4) रहस्य भावना—प्रसादजी ने प्रकृति-चित्रण में रहस्यात्मक कल्पनाओं की सृष्टि में कोई कमी नहीं रहने दी है। रहस्यात्मक कल्पना का उदाहरण है—

'हे अनन्त रमणीय कौन तुम,
यह मैं कैसे कह सकता ?
कैसे हो ? क्या हो इसका तो,
भार-विचार न सह सकता।।'

(5) मानवीकरण—प्रसादजी ने प्राकृतिक दृश्यों को उपमान के रूप में चित्रित किया है। अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करने में जयशंकर प्रसाद का कोई जबाव नहीं है—

''शोषित न यहाँ है कोई, तापित पापी न यहाँ है।
जीवन-वसुधा समतल है, समरस है जो कि जहाँ है।।''

(6) नारी—नारी को श्रद्धा का पात्र मानते हुए प्रसादजी लिखते हैं—

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत-नग पगतल में।''

कला-पक्ष—(1) भाषा—जयशंकर प्रसाद की भाषा प्रभावशाली, कोमल तथा संस्कृतनिष्ठ है। प्रारम्भ में उनकी भाषा ब्रज थी बाद में उन्होंने खड़ी बोली को अपना लिया।

(2) अलंकार—प्रसादजी ने उपमा, रूपक, सन्देह तथा प्रतीप अलंकार का नवीनता के साथ प्रयोग किया है। रूपक तथा मानवीकरण दृष्टव्य है—

''अम्बर पनघट में डुबो रही, ताराघट ऊषा नागरी।''

(3) छन्द—प्रसादजी के गीतों में लय तथा प्रवाह है। विविध छन्दों का प्रयोग उनकी विशेषता है।

(4) शैली—जयशंकर प्रसाद की शैली में प्रसाद, ओज तथा माधुर्य गुण का प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है। शैली में स्वाभाविकता तथा चित्रात्मकता उनकी विशेषता है। यथा—

''उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ कुटिल काल के जालों सी।
चली आ रहीं फेन उगलती, फन फैलाए व्यालों सी।।''

प्रश्न 3. 'कामायनी' के 'मनु की चिन्ता' का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—जयशंकर प्रसाद ने 'मनु की चिन्ता' का प्रारम्भ जल प्लावन की भयंकरता से किया है। मनु जल प्लावन से अत्यन्त सन्तप्त और निराशा का भाव लिए व्यक्त किए गए हैं। उनकी करुण मर्म वेदना, विकल कहानी के समान प्रकट हो रही थी।

चिन्ता को अभाव की चपल बालिका के रूप में चित्रित करते हुए प्रसादजी लिखते हैं—

''हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा।
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ चल-माया की चल-रेखा॥''

चिन्ता को अनेकों नाम से सम्बोधित करते हुए, प्रसादजी ने उसे दूर रहने की इस प्रकार इच्छा व्यक्त की है—

''बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिन्ता तेरे हैं कितने नाम।
अरी पाप है तू, जा, चल जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम॥''

व्यक्ति के दम्भ तथा कुकर्म की बुराई करते हुए, कर्म तथा व्यवहार में एकरूपता पर प्रसादजी ने बल दिया है और कहा है कि हमारी भावना में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त को महत्व दिया जाना चाहिए। विलासिता तथा दम्भ का परित्याग करके अपनी बिखरी हुई शक्तियों को संगठित करने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न 4. महाकाव्य के लक्षण बताते हुए 'कामायनी' की विशेषताएँ बताइये।

उत्तर—महाकाव्य के लक्षण—

1. महाकाव्य का नायक भारतीय आदर्शों के अनुरूप होना चाहिए।
2. नायक का उच्च कुलीन होना आवश्यक है।
3. धीर-वीरता, सत्य निष्ठा और शौर्य नायक का गुण होना चाहिए।
4. महाकाव्य का कथानक किसी प्रसिद्ध चरित्र तथा जीवन मूल्य पर आधारित होना चाहिए।
5. महाकाव्य सर्गों में विभक्त होना चाहिए। सर्गों की संख्या आठ से कम नहीं होनी चाहिए।
6. महाकाव्य का प्रारम्भ विनय, मंगलाचरण आदि से होना चाहिए।
7. श्रृंगार, शान्त अथवा वीररस की प्रधानता होनी चाहिए।
8. विषय वस्तु की प्रधानता के आधार पर महाकाव्य का नाम होना चाहिए।
9. महाकाव्य का प्रत्येक सर्ग आगामी सर्ग की प्रस्तावना के साथ समाप्त होना चाहिए।
10. महाकाव्य से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से कोई एक लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए।

कामायनी की विशेषताएँ—

1. कामायनी के सर्गों का विभाजन व्यक्ति की भावनाओं के अनुरूप चिन्ता, आशा, इड़ा आदि द्वारा हुआ है।
2. कामायनी की घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ मानव-मन को जाग्रत करने में कार्य कर रही हैं।
3. भाव-वर्णन में सूक्ष्म निरीक्षण का प्रभाव है।
4. अलंकारों का भावात्मक प्रयोग हुआ है।
5. कामायनी सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना में सहयोग देने वाला महाकाव्य है।

प्रश्न 5. जयशंकर प्रसाद ने भाव-व्यंजना से काव्य को समृद्ध बनाने में कहाँ तक सहयोग प्रदान किया है ?

उत्तर—माँ भारती के कृपा-प्रसाद, कविवर जयशंकर प्रसाद, हिन्दी की अमर विभूति हैं। अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा से आपने हिन्दी को जो महान् गौरव प्रदान किया वह अतुलनीय है। कवि, कथाकार, नाटककार, निबन्धकार एवं उपन्यासकार, सभी रूपों में वह एक सफल रचनाकार के रूप में सम्मानित हैं। अभिनव माधुर्य और रमणीय भाव-व्यंजना से काव्य को समृद्ध बनाकर आपने एक नव-युग का आरम्भ किया।

भाव-व्यंजना—

(1) **विविध वर्ण्य-विषय**—प्रसादजी ने प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति-चित्रण, दर्शन और धर्म आदि को आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया है।

(2) **भारतीय संस्कृति की झाँकी**—जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति की गरिमा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

(3) **राष्ट्र-प्रेम से परिपूर्ण**—प्रसादजी ने राष्ट्रीय गौरव और स्वाभिमान को अपने साहित्य में सर्वत्र स्थान दिया है। आपकी अनेक रचनाएँ राष्ट्र-प्रेम की उत्कृट भावना जगाने वाली हैं। यथा—

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।

(4) **सजीव प्रकृति-चित्रण**—प्रसादजी ने प्रकृति के विविध पक्षों को बड़ी सजीवता से चित्रित किया है। प्रकृति के सौम्य-सुन्दर और विकृत-भयानक दोनों स्वरूप उनकी रचनाओं में प्राप्त होते हैं। यथा—

सरस तामरस गर्भ विभा पर—नाच रही तरु शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर— मंगल कुंकुम सारा।। (मनोहर स्वरूप)

× × ×

धसती धरा, धधकती ज्वाला ज्वालामुखियों के निःश्वास।
और संकुचित क्रमशः उसके अवयव का होता था ह्रास। (भयानक स्वरूप)

इसके अतिरिक्त प्रकृति का आलंकारिक, मानवीकृत उद्दीपक और उपदेशिका स्वरूप भी प्रसाद में प्राप्त होता है।

(5) **प्रेम और सौन्दर्य की झाँकी**—प्रसाद प्रेम और आनन्द के कवि हैं। प्रेम मनोभाव का बड़ा सूक्ष्म और बहुविधि निरूपण आपकी रचनाओं में हुआ है। प्रेम का वियोग-पक्ष और संयोग-पक्ष दोनों ही पूर्ण छवि के साथ विद्यमान हैं। आपका प्रसिद्ध वियोग-काव्य है 'आँसू'। उसके एक-एक छंद में विरह की सच्ची पीड़ा का चित्र विद्यमान है। यथा—

इस करुणा कलित हृदय में क्यों विकल रागिनी बजती,
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती ?

सौन्दर्य-वर्णन भी प्रसाद जी का सजीव, सटीक और मनमोहक होता है। श्रद्धा के सौन्दर्य का एक शब्द-चित्र दर्शनीय है—

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।।

(6) **छायावादी संस्पर्श**—प्रसाद हिन्दी काव्य में छायावादी प्रवृत्ति के प्रवर्त्तक हैं। 'आँसू', 'झरना' और 'कामायनी' आपके छायावादी कवित्व के परिचायक हैं। छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ आपकी रचनाओं में प्राप्त होती हैं।

(7) **मनोरम प्रतीकों का प्रयोग**—प्रसाद जी भावों को तीव्रता और मूर्तता प्रदान करने के लिए प्रतीकों का सटीक प्रयोग करते हैं—

झंझा झकोर गर्जन थी बिजली थी नीरद-माला।
पाकर इस शून्य हृदय को सबने आ डेरा डाला।।

(8) **आशा और उत्साह के कवि**—प्रसाद का काव्य मानव-जीवन को पुरुषार्थ और आशा का सन्देश देता है। 'कामायनी' में श्रद्धा का प्रोत्साहन भरा स्वर इसका उदाहरण है—

डरो मत अरे अमृत संतान, अग्रसर है मंगल-मय वृद्धि।
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र, खिंची आवेगी सकल समृद्धि।।

(9) **मानवतावादी कवि**—प्रसाद का काव्य मानवता के समग्र उत्थान और चेतना का प्रतिनिधि भी है। उसमें मानव-कल्याण के स्वर हैं—

शक्ति के विद्युत-कण, जो व्यस्त, विकल बिखरे हैं हो निरुपाय।
समन्वय उनका करे समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय।।

(10) **नारी हृदय के चितेरे**—कवि प्रसाद ने अपनी रचनाओं में नारी के विविध गौरवमय स्वरूपों के अभिनव चित्र उपस्थित किये हैं। उनका यह प्रसिद्ध कथन उनके आदर्श नारी रूप का परिचायक है—

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष-स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

महत्वपूर्ण व्याख्याएँ

शब्दार्थ—पृष्ठ- 65 - 67 **उत्तुंग** = बहुत ऊँचा। **पवमान** = पवन। **श्मसान** = विनाश स्थान। **ऊर्जस्वित** = ओजपूर्ण। **स्फीत शिराएँ** = उभरी हुई नसें। **महावट** = महान् वट वृक्ष। **व्याली** = सर्पिणी। **लेखा** = रेखा। जरा = बुढ़ापा। **आधि** = मानसिक दु:ख। **करका** = ओले। **प्रत्यावर्तन** = वापसी। **महामेघ** = महायज्ञ। **हविष्य** = यज्ञ सामग्री। **पारावार** = सीमा, सागर। **कलना** = चमक।

पृष्ठ- 68 - 71 **विश्रृंखल** = बिखरा हुआ। **तिरोहित** = लुप्त, गायब। **मरंद** = पराग। **प्रालेय** = प्रलयंकारी। **वरुण** = जल-देव। **पीन** = धनी। **पंचभूत** = पाँच तत्त्व—पृथ्वी, आकाश, वायु, जल तथा अग्नि। **भैरव मिश्रण** = विनाशकारी मेल। **शंपा** = विजली। **शकल** = टुकड़े-टुकड़े। **ऊभ-चूभ** = डूबना-उतराना। **सौदामिनी** = बिजली।

[1]

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता—कहो उसे जड़ या चेतन।
दूर-दूर तक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के हृदय-समान,
नीरवता-सी शिला-चरण से टकराता फिरता पवमान।
तरुण तपस्वी-सा वह बैठा साधन करता सुर-स्मशान,
नीचे प्रलय सिंधु लहरों का होता था सकरुण अवसान। [पृष्ठ – 65]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **जयशंकर प्रसाद** रचित **कामायनी महाकाव्य** के **मनु की चिन्ता** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर मनु ने प्रकृति की विनाश-लीला का वर्णन करते हुए कहा है—

व्याख्या—प्रसादजी कहते हैं कि एक व्यक्ति हिमालय की ऊँची चोटी पर बैठा हुआ उस महाजल प्लावन को देख रहा था। उसके नेत्र अश्रु पूरित थे। नीचे लहराता जल और ऊपर बर्फ दिखाई दे रही थी। चारों ओर जल ही जल दिखाई दे रहा था। वह जानता था कि नीचे तो पिघला हुआ जल है ही, ऊपर भी जल ही है जो अब बर्फ के रूप में जम गया है।

प्रसादजी ने जल के इन दो रूपों को एक ही ईश्वर को जड़-प्रकृति और चैतन्य-आत्मा के रूप में देखा है और कहा है कि उस व्यक्ति का हृदय चेतनाहीन बना हुआ था। चारों ओर स्तब्धता थी। शान्त वातावरण में तीव्रगति से बहती वायु नीरवता को भंग करती हुई मालूम पड़ रही थी। शान्ति की भावनाओं के सदृश शिलाएँ शान्त थी। शान्त शिलाओं के चरणों में तीव्र गति वायु निरन्तर टक्कर ले रही थी।

प्रसादजी मनु के विषय में बता रहे हैं कि वह तपस्वी के समान उस देव सभ्यता के विनाश-स्थल में बैठे हुए किसी साधना में लीन दिखाई दे रहे थे। प्रलयंकारी जल समुद्र के समान दिखाई दे रहा था। जल की तरंगें पर्वत से टकरा रही थीं और धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं। इस प्रकार जल-प्रलय का धीरे-धीरे अन्त होता जा रहा था।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त तथा वीभत्स रस (iii) **छन्द**—गेय छन्द। (iv) **अलंकार**—उत्प्रेक्षा, उपमा अलंकार। (v) **अन्य**—प्रलय की विनाशलीला का वर्णन।

[2]

''ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण प्रथम कंप-सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खललेखा।
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ चल-माया की चल-रेखा।
इस ग्रह कक्षा की हलचल-री तरल गरल की लघु-लहरी,
जरा अमर-जीवन की, और न कुछ सुनने वाली, बहरी।
अरी व्याधि की सूत्र-धारिणी-अरी आधि, मधुमय अभिशाप।
हृदय-गमन में धूमकेतु-सी, पुण्य-सृष्टि में सुन्दर पाप। [पृष्ठ – 66]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद रचित कामायनी महाकाव्य के मनु की चिन्ता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर मनु की सृष्टि निर्माण की चिन्ता पर प्रकाश डालते हुए कवि कह रहा है—

व्याख्या—मनु चिन्ता के विषय में कहते हैं कि यह चिन्ता मनुष्य के मस्तक पर उभरकर सम्मुख आती है। इस चिन्ता को सर्पिणी के समान मानते हुए कवि कहता है कि यह चिन्ता विश्व-उपवन में सर्पिणी सदृश भ्रमण करती है। यह चिन्ता मनुष्य-जीवन में विष का संचार कर देती है।

चिन्ता को भयंकर विस्फोट करने वाली ज्वालामुखी के समान मानते हुए प्रसादजी कहते हैं कि चिन्ता की अधिकता से व्यक्ति कम्पित हो उठता है। यह चिन्ता व्यक्ति को कँपाकर रख देती है। व्यक्ति को अभावग्रस्त बनाकर उसका जीवन अस्थिर बना देती है।

कवि चिन्ता को व्यक्ति के ललाट की वक्र रेखा मानते हुए कहता है कि इन मस्तक की रेखाओं से व्यक्ति के मन की व्यथा का सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है। चिन्ता के दूसरे पक्ष को प्रस्तुत करते हुए प्रसादजी कहते हैं कि चिन्ताग्रस्त व्यक्ति ही उससे मुक्त होने के लिए अपने मन में कुछ आशाएँ संजोये प्रयत्नशील होता है। परिणामस्वरूप उसके जीवन में पुनः आशाओं का संचार होता है। जीवन खुशियों से भर जाता है। तरंगों के समान जीवन में चंचलता का समावेश होता है। व्यक्ति आलस्य का परित्याग करके क्रियाशील बन जाता है।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—उपमा अलंकार। (v) **अन्य**—चिन्ता का विभिन्न रूपों में प्रभाव।

[3]

''अरी उपेक्षा-भरी अमरते ! री अतृप्ति ! निर्बाध विलास।
द्विधा-रहित अपलक नयनों की भूख-भरी दर्शन की प्यास।
बिछुड़े तेरे सब आलिंगन, पुलक-स्पर्श का पता नहीं,
मधुमय चुंबन कातरतायें, आज न मुख को सता रहीं।
रत्न-सौध के वातायन, जिसमें आता मधु-मदिर समीर,
टकराती होगी अब उनमें तिमिंगलों की भीड़ अधीर।
देवकामिनी के नयनों से जहां नील नलिनों की सृष्टि—
होती थी, अब वहां हो रही प्रलयकारिणी भीषण वृष्टि। [पृष्ठ – 68]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद रचित कामायनी महाकाव्य के मनु की चिन्ता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर कवि प्रलय के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कह रहा है—

व्याख्या—प्रसादजी कहते हैं कि देवताओं का मन भोग-विलास में लिप्त रहा। उन्होंने किसी अन्य की ओर देखा तक नहीं। सबकी उपेक्षा करते रहे। प्रेम की भूख शान्त करने के लिए अप्सराओं के रूप सौन्दर्य की ओर निहारते रहे। अप्सराओं के आगे आँख बिछाए रहे। देवताओं की याचना से तंग अप्सराओं ने अपने शरीर का स्पर्श भी असम्भव बना दिया।

प्रलय ने देवताओं के सपने तथा उनके यथार्थ को बदल कर रख दिया। देवताओं के रत्न जटित महल और उनके झरोखे अब सुगन्धित पवन का भाग नहीं रहे। उन झरोखों से अब समुद्र की मछलियाँ टकराने लगी थीं। जिन देव-प्रासादों में सुन्दरियों के दृष्टिपात से नील-कमलों की वर्षा जैसी होने लगती थी, वहीं अब प्रलयंकारी वर्षा हो रही थी।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**— संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। (ii) **रस**—वीभत्स रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—उल्लेख अलंकार। (v) **अन्य**—प्रलय का मुख्य कारण देवताओं की विलासिता तथा अकर्मण्यता है।

[4]

''एक नाव थी और न उसमें डांडे लगते, या पतवार,
तरल तरंगों में उठ-गिर कर बहती पगली बारंबार।
लगते प्रबल थपेड़े धुंधले तट का था कुछ पता नहीं,
कातरता से भरी निराशा देख नियति पथ बनी वहीं।
लहरें व्योम चूमती उठतीं, चपलायें असंख्य नचतीं,
गरल जलद की खड़ी झड़ी में बूँदें निज संसृति रचतीं।
चपलायें उस जलधि-विश्व में स्वयं चमत्कृत होती थीं,
ज्यों विराट बाड़व-ज्वालायें खंड-खंड हो रोती थीं। [पृष्ठ – 70]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश **जयशंकर प्रसाद** रचित **कामायनी** महाकाव्य के **मनु की चिन्ता** शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर बीज रूप में शेष मनु को एक नाव में बैठे हुए कवि वर्णन करता है—

व्याख्या—प्रसादजी का कहना है कि पृथ्वी पर जल प्लावन से समस्त सृष्टि उसमें समा जाती है। मनु ही शेष रहते हैं। वह नाव में बैठे हुए हैं। बाढ़ के कारण नाव का किसी भी दिशा में मोड़ना सम्भव नहीं हो रहा है। लहरों की चंचलता के कारण मनु की नौका कभी उठती थी तो कभी स्वयं हीं आगे बढ़ जाती थी। लहरों के थपेड़े नाव को कभी पीछे धकेल देते थे तो कभी आगे बढ़ा देते थे। धुंधलका इतना अधिक घना था कि तट कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। मनु ने ऐसी विषम परिस्थिति में अपनी नाव को भाग्य के सहारे छोड़ दिया था।

कवि कहता है कि लहरें बढ़ती जा रही थीं। वह ऊँची भी होती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था कि ये लहरें आकाश को छू लेंगी।

वर्षा हो रही थी। यह वर्षा असाधारण थी। चारों ओर वर्षा की बूँदें दिखाई दे रही थीं। बूँदों के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसा आभास हो रहा था कि इस संसार में प्राणी तो रह ही नहीं रहे। बस बूँदें ही बूँदें हैं। चमकती बिजली है। यह बिजली जब वहाँ फैले जल पर चमकती थी तो ऐसा प्रतीत होता था जैसे समुद्र के अन्दर की विशाल अग्नि विभक्त होकर रो रही है।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—उपमा, रूपक तथा अनुप्रास अलंकार। (v) **अन्य**—जल प्लावन का वर्णन किया गया है।

[5]

''मृत्यु, अरी चिर-निद्रे। तेरा अंक हिमानी-सा शीतल,
तू अनंत में लहर बनाती काल-जलधि की-सी हलचल।
महानृत्य का विषम सम अरी अखिल स्पंदनों की तू माप,
तेरी ही विभूति बनती है सृष्टि सदा होकर अभिशाप।
अधंकार के अट्टहास-सी मुखरित सतत चिरंतन सत्य,
छिपी सृष्टि के कण-कण में तू यह सुन्दर रहस्य है नित्य।
जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील घन-माला में,
सौदामिनी-संधि-सा सुन्दर क्षण भर रहा उजाला में।'' [पृष्ठ – 71]

सन्दर्भ—प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद रचित कामायनी महाकाव्य के मनु की चिन्ता शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग—प्रस्तुत स्थल पर मनु के मृत्यु बोध और मृत्यु की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कवि कह रहा है—

व्याख्या—मनु सोच रहे हैं कि मृत्यु बर्फ की शिला के समान शीतल होती है। मृत्योपरान्त शरीर से प्राण निकलकर उसे निर्जीव कर देते हैं। निष्प्राण शरीर ऐसा रह जाता है जैसे कोई कभी न टूटने वाली नींद में पड़ा हो। चिर निद्रा में विश्राम कर रहा हो। सांसारिक कष्टों से मुक्ति पा गया हो।

समुद्र को काल रूप बताते हुए उसे कवि ने विनाशकारी तथा प्रलयंकारी की संज्ञा दी है और कहा है कि यह मृत्यु ही ऐसी लहरें बनाती है कि जीव उसमें डूबकर सदा सर्वदा के लिए विश्राम पाता है।

काल के विषय में मनु विचार करते हुए कहते हैं कि मृत्यु का महानृत्य जीवों को अपनी बाहों में ऐसा समेट लेता है कि व्यक्ति की धड़कनें बन्द हो जाती हैं। उसका प्रभाव स्पष्ट हो जाता है। चारों ओर मृत्यु का साम्राज्य दृष्टिगोचर होने लगता है। विध्वंस ही विध्वंस दिखाई देता है।

मृत्यु को अत्यन्त भयावह बताते हुए प्रसादजी उसे सत्य बताते हैं और उसके प्रभाव को सर्वत्र व्याप्त बताते हैं और कहते हैं कि विनाश का रहस्य सदा बना रहता है। काल के सम्मुख प्राणी का जीवन अत्यन्त क्षुद्र है। कवि कहता है कि व्यक्ति का जीवन बिजली की चमक के समान है। बिजली चमकती है। एक क्षण के लिए वातावरण को प्रकाश से भर देती है। उसी प्रकार व्यक्ति का जीवन भी है। मृत्यु जीवन की चेतना क्षण भर में ही लुप्त कर देती है।

काव्य-सौन्दर्य—(i) **भाषा**—संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। (ii) **रस**—शान्त रस। (iii) **छन्द**—गेय। (iv) **अलंकार**—अनुप्रास तथा उपमा अलंकार। (v) **अन्य**—मनु की चिन्ताओं का विश्लेषण है।

●●

छन्द, अलंकार, रस तथा काव्य के गुण-दोष

छन्द प्रकरण

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. "पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौ।"
यह किस छन्द का उदाहरण है ?

(क) मन्दाक्रान्ता (ख) मुक्तक
(ग) हरिगीतिका (घ) गीतिका।

उत्तर—[ग] हरिगीतिका।

प्रश्न 2. "सभ्यता की सीढ़ियों पर सूरमा चढ़ने लगे।"
यह किस छंद का उदाहरण है ?

(क) हरिगीतिका (ख) बसन्ततिलका
(ग) चौपायी (घ) गीतिका।

उत्तर—[घ] गीतिका।

प्रश्न 3. दोहा तथा रोला छन्दों के मेल से बनता है—

(क) कुण्डलिया (ख) चौपायी
(ग) शिखरिणी (घ) हरिगीतिका।

उत्तर—[क] कुण्डलिया।

प्रश्न 4. "थे दीखते परम वृद्ध नितान्त रोगी।"
यह चरण किस वार्णिक छन्द का है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

(क) शिखरिणी (ख) बसन्ततिलका।
(ग) द्रुतविलम्बित (घ) मन्दाक्रान्ता।

उत्तर—[ख] बसन्ततिलका।

प्रश्न 5. "दिवस एक प्रभंजन का हुआ।
अति-प्रकोप, घटा नभ में घिरी।"
प्रस्तुत पंक्तियों में वर्णिक छन्द भी हैं ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(क) द्रुत विलम्बित (ख) बसन्ततिलका
(ग) शिखरिणी (घ) मन्दाक्रान्ता।

उत्तर—[क] द्रुतविलम्बित।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. रचना किसे कहते हैं ?

उत्तर—भावों की अभिव्यक्ति को रचना कहते हैं।

प्रश्न 2. छन्दोमयी रचना किसे कहते हैं ?

उत्तर—छन्द के नियमों से बँधी रचना को छन्दोमयी रचना कहते हैं।

प्रश्न 3. छन्दोविहीन रचना किसे कहते हैं ?

उत्तर—छन्द के नियमों में न बँधी हुई रचना को छन्दोविहीन रचना कहते हैं।

प्रश्न 4. पद्य किसे कहते हैं ?

उत्तर—छन्दोमयी रचना को पद्य कहते हैं।

प्रश्न 5. गद्य किसे कहते हैं ?

उत्तर—छन्दोविहीन रचना को गद्य कहते हैं।

प्रश्न 6. स्वर और व्यंजन किसे कहते हैं ?

उत्तर—उच्चारण की पूर्णता में स्वयं सक्षम को 'स्वर' तथा उच्चारण की पूर्णता के लिए स्वरों की सहायता वाले 'व्यंजन' कहलाते हैं।

प्रश्न 7. मात्रा किसे कहते हैं ?

उत्तर—वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उस काल को 'मात्रा' कहते हैं।

प्रश्न 8. लघु वर्ण का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—वर्ण के उच्चारण में थोड़ा समय लगने पर लघु वर्ण कहलाता है।

प्रश्न 9. गुरु वर्ण किसे कहते हैं ?

उत्तर—वर्ण के उच्चारण में अधिक समय लगने पर गुरु या दीर्घ वर्ण कहते हैं।

प्रश्न 10. लघु में किन वर्णों की गणना होती है ? उसे किस प्रकार प्रकट किया जाता है ?

उत्तर—लघु में निम्नांकित वर्णों की गणना होती है—

अ, इ, उ, ऋ, लृ, क, कि, कु, कृ. प्रकट (।) खड़ी पाई चिन्ह से किया जाता है।

प्रश्न 11. गुरु या दीर्घ वर्णों के नाम लिखिए और उसका चिन्ह बताइए।

उत्तर—गुरु वर्ण का उच्चारण लघु वर्ण के उच्चारण से दो गुना अधिक होता है। उसमें दो मात्राएँ मानी जाती हैं जिसे "ऽ" चिन्ह द्वारा प्रकट किया जाता है। ये वर्ण निम्नलिखित हैं—

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, का, की, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः।

प्रश्न 12. गुरु वर्ण को लघु कब गिना जाता है ?

उत्तर—ए और ओ वर्णों का उच्चारण जब ह्रस्व हो तो गुरुवर्ण को लघु गिना जाता है।

प्रश्न 13. गण किसे कहते हैं ?

उत्तर—तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं।

प्रश्न 14. चरण किसे कहते हैं ?

उत्तर—छन्द की पंक्ति को छन्दशास्त्र के अनुसार पद या चरण कहते हैं।

प्रश्न 15. यति किसे कहा जाता है ?

उत्तर—ठहरने या रुकने को विश्राम या यति कहा जाता है।

प्रश्न 16. गति किसे कहते हैं ?

उत्तर—छन्द की लय को ही गति कहते हैं।

प्रश्न 17. तुक का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—छन्द के अन्तिम वर्णों की पारस्परिक समान ध्वनि को 'तुक' कहते हैं।

प्रश्न 18. छन्द किसे कहते हैं ?

उत्तर—मात्रा अथवा वर्ण की निश्चित गणना के आधार पर प्रस्तुत कविता के बाह्य रूप को छन्द कहते हैं।

प्रश्न 19. छन्द कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर—छन्द दो प्रकार के होते हैं—(1) मात्रिक छन्द (2) वर्णिक छन्द।

प्रश्न 20. मात्रिक छन्द किसे कहा जाता है ?

उत्तर—मात्रिक छन्द उसे कहा जाता है जिसमें मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

प्रश्न 21. वार्णिक छन्द किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिन छन्दों में वर्णों की निश्चित संख्या होती है, वे वर्णिक छन्द कहे जाते हैं।

प्रश्न 22. द्रुत विलम्बित छन्द के लक्षण लिखिए। **(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)**

उत्तर—वर्णिक छंद जिसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। द्रुत विलम्बित होता है।

सउत्तर लघु एवं निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. चौपाई के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—चौपाई—चौपाई एक मात्रिक छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में दो गुरु होते हैं जिनसे लय में सुन्दरता आती है।

यथा—	बंदउ	गुरु	पद	पदम	परागा।	
	ऽ॥	।।	।।	।।।	। ऽऽ	= 16 मात्राएँ
	सुरुचि	सुवास	सरस	अनुरागा।		
	।।।	।ऽ।	।।।	।।ऽऽ		= 16 मात्राएँ
	अमिय	मूरिमय	चूरन	चारू।		
	।।।	ऽ।।।	ऽ।।	ऽ ऽ		= 16 मात्राएँ
	समन	सकल	भवरुज	परिवारू।		
	।।।	।।।	।।।।	।।ऽऽ		= 16 मात्राएँ

प्रश्न 2. दोहा छन्द के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—दोहा—दोहा चार चरण का 24 मात्राओं का छन्द है जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 13–13 मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण के अन्त में लघु होता है।

यथा—	मेरी	भव	बाधा	हरौ,		
	ऽ ऽ	।।	ऽ ऽ	।ऽ		= 13 मात्राएँ
	राधा	नागरि	सोइ।			
	ऽ ऽ	ऽ।।	ऽ।			= 13 मात्राएँ
	जा	तन	की	झाँई	परै,	
	ऽ	।।	ऽ	ऽ ऽ	।ऽ	= 13 मात्राएँ
	श्याम	हरित	दुति	होइ ॥		
	ऽ।	।।।	।।	ऽ।		= 11 मात्राएँ

प्रश्न 3. सोरठा छंद का परिचय दीजिए।

उत्तर—सोरठा—सोरठा दोहे का उल्टा होता है जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 11–11 मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 13–13 मात्राएँ होती हैं। प्रथम तथा तृतीय चरण के अन्त में लघु होता है।

यथा—	मैं लखि नारी ज्ञानु,	
	ऽ ।। ऽ ऽ ऽ।	= 11 मात्राएँ
	करि राख्यौ निरधारु यह।	
	।। ऽ ऽ ।।ऽ। ।।	= 13 मात्राएँ

बहई रोग निदानु
|| ऽ ऽ| |ऽ| = 11 मात्राएँ
बहै वैदु औसधि बहै॥
|ऽ ऽ| ऽ|| |ऽ = 13 मात्राएँ

प्रश्न 4. रोला छन्द की परिभाषा तथा उदाहरण लिखिए।

उत्तर—रोला—रोला चार चरण का सम-मात्रिक छन्द है। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। 11 तथा 13 मात्राओं के क्रम से यति रहती है।

यथा— नन्दन वन था जहाँ, वहाँ मरुभूमि बनी है।
ऽ|| || ऽ |ऽ |ऽ ||ऽ| |ऽ ऽ = 24 मात्राएँ
जहाँ सघन थे वृक्ष, वहाँ दावाग्नि घनी है॥
|ऽ ||| ऽ ऽ| |ऽ ऽ ऽ| |ऽ ऽ = 24 मात्राएँ
जहाँ मधुर मालती, सुरभि रहती थी फैली।
|ऽ ||| ऽ|ऽ ||| ||ऽ ऽ ऽऽ = 24 मात्राएँ
फूट रही है आज, वहाँ पर फूट विषैली॥
ऽ| |ऽ ऽ ऽ| |ऽ || ऽ| |ऽऽ = 24 मात्राएँ

प्रश्न 5. गीतिका छन्द का सोदाहरण परिचय दीजिए। (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—गीतिका—गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती हैं। 14, 12 मात्राओं के पश्चात् यति होती है। चरण के अन्त में लघु-गुरु होता है।

यथा— हे प्रभो ! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
ऽ |ऽ ऽऽ|ऽऽ ऽ| ||ऽ ऽ|ऽ = 26 मात्राएँ
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हम से कीजिए॥
ऽ| ऽऽ ऽ|ऽ ऽ ऽ| || ऽ ऽ|ऽ = 26 मात्राएँ
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ऽ|ऽ ||ऽ ||| | || |ऽऽऽ |ऽ = 26 मात्राएँ
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें॥
ऽ|ऽऽ ऽ|ऽ|| ऽ| ||ऽऽ |ऽ = 26 मात्राएँ

प्रश्न 6. हरिगीतिका की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए।

उत्तर—हरिगीतिका—हरिगीतिका चार चरणों का सम-मात्रिक छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। 16 तथा 12 मात्राओं के पश्चात् यति होती है। चरण के अन्त में लघु-गुरु होते हैं।

यथा— खग वृन्द सोता है अतः कल, कल नहीं होता यहाँ।
|| ऽ| ऽऽऽ |ऽ || || |ऽ ऽऽ |ऽ = 28 मात्राएँ
बस मंद मारुत का गमन ही, मौन है खोता यहाँ।
|| ऽ| ऽ|| ऽ ||| ऽ ऽ| ऽ ऽऽ |ऽ = 28 मात्राएँ
इस भाँति धीरे से परस्पर, कह सजगता की कथा।
|| ऽ| ऽऽऽ ||ऽ| || |ऽ|| ऽ |ऽ = 28 मात्राएँ
यों दीखते हैं वृक्ष ये हों विश्व के प्रहरी यथा।
ऽ ऽ|ऽ ऽ ऽ| ऽ ऽ ऽ| ऽ ||ऽ |ऽ = 28 मात्राएँ

प्रश्न 7. कुण्डलिया छन्द के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—कुण्डलिया—कुण्डलिया दोहा तथा रोला छन्दों का सम्मिलित रूप है जिसमें छः चरण होते हैं। प्रारम्भ के दो चरणों में दोहा होता है तथा शेष चार चरणों में रोला होता है। प्रत्येक

चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। दोहे का अन्तिम चरण रोला के पहले चरण के रूप में दुहराया जाता है। प्रायः दोहा का आदि शब्द ही रोला का अन्तिम शब्द होता है।

यथा—दोहा—बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय।
।ऽ ।ऽऽ ऽ।ऽ ऽ ऽऽ ।।ऽ। =24 मात्राएँ
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय॥
ऽ। ।ऽऽ ऽ।ऽ ।। ऽ ऽ। ।ऽ। = 24 मात्राएँ

रोला—
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
।। ऽ ऽ। ।ऽ। ऽ। ऽ ऽ। । ऽऽ = 24 मात्राएँ
खान-पान सम्मान, राग रंग मनहिं न भावै॥
ऽ। ऽ। ऽऽ। ऽ। ।। ।।। । ऽऽ = 24 मात्राएँ
कह गिरधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
।। ।।।।।।ऽ। ऽ। ।। ।।। । ऽऽ = 24 मात्राएँ
खटकत है जिय माहिं, कियो जो बिना बिचारे॥
।।।। ऽ ।। ऽऽ ।ऽ ऽ ।ऽ ।ऽ। = 24 मात्राएँ

प्रश्न 8. छप्पय छन्द के लक्षण तथा उदाहरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—छप्पय—छप्पय छन्द रोला तथा उल्लाला छन्दों के सम्मिलित रूप को कहा जाता है। इसके प्रथम चार चरणों में 24–24 मात्राएँ होती हैं। यति का स्थान 11–13 मात्राओं के पश्चात् होता है। अन्तिम दोनों चरणों में 28–28 और कहीं 26–26 मात्राएँ होती हैं। 15–13 पर यति होती है।

यथा—रोला—सर्वभूत हित महामन्त्र का सबल प्रचारक।
ऽ। ऽ। ।। ।ऽऽऽ ऽ ।।। ऽऽ।। = 24 मात्राएँ
सदय हृदय से एक-एक जन का उपकारक॥
।।। ।।। ऽ ऽ। ऽ। ।। ऽ ।।ऽ।। = 24 मात्राएँ
सत्य भाव से विश्व-बन्धुता का अनुरागी।
ऽ। ऽ। ऽ ऽ। ऽ।ऽ ऽ ।।ऽऽ = 24 मात्राएँ
सकल सिद्धि सर्वस्व सर्वगत सच्चा त्यागी॥
।।। ऽ। ऽऽ। ऽ।।। ऽऽऽऽ = 24 मात्राएँ

उल्लाला— उसकी विचार-धारा धरा के धर्मों में है वही।
।।ऽ ।ऽ। ऽऽ ।ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ।ऽ = 28 मात्राएँ
सब सार्वभौम सिद्धान्त का आदि प्रवर्तक है वही॥
।। ऽ।ऽ। ऽऽ। ऽ ऽ। ।ऽ ।। ऽ ।ऽ = 28 मात्राएँ

प्रश्न 9. मालिनी छन्द के विषय में तुम क्या जानते हो ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—मालिनी—मालिनी वर्णिक सम छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं। इस छन्द में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण पाँच गण होते हैं। 8 तथा 7 वर्णों पर यति होती है।

यथा— प्रमुदित मथु रा के, मा नवों को बनाके
।।।।।। ऽऽ ऽ।ऽऽ ।ऽऽ
नगण नगण मगण यगण यगण
सकुशल रह के और विघ्न-बाधा बचा के।
निज प्रिय सुत दोनों साथ लेके सुखी हो,
जिस दिन पलटेंगे गेह-स्वामी हमारे॥

प्रश्न 10. मन्दाक्रान्ता छन्द को लक्षण तथा उदाहरण सहित समझाइए।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—मन्दाक्रान्ता—मन्दक्रान्ता में 17 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण मे क्रमश: मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं।

यथा— तारे डूबे, तम टल गया छा गया व्योम लाली।
S S S S | | | | | | S S | S S | S S
म भ न त त गुरु
पक्षी बोले, तम चर जगे ज्योति फैली दिशा में।
शाखा डोली, तरु निचय की, कंज फूले सरों में।
धीरे-धीरे, दिनकर कढ़े, तामसी रात बीती॥

प्रश्न 11. बसन्त तिलका छन्द के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—बसन्ततिलका—बसन्ततिलका समवर्ण वृत्त छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण-जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं। इस क्रम से प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं।

यथा— बातें बड़ी सरस थे कहते बिहारी।
SS| S|| |S| |S| S S
तगण भगण जगण जगण गुरु-गुरु
छोटे बड़े सकल का हित चाहते थे॥
अत्यन्त प्यार संग थे मिलते सबों से।
वे थे सहायक बड़े दु:ख के दिनों के॥

प्रश्न 12. सवैया छन्द का लक्षण तथा उदाहरण लिखिए।

उत्तर—सवैया—सवैया समवर्ण-वृत्त छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में 22 से लेकर 26 तक वर्ण होते हैं। गणों की दृष्टि से सवैया तीन प्रकार का होता है—

1. भगण (S | |) से बना सवैया
2. सगण (| | S) से बना सवैया और
3. जगण (| S |) से बना सवैया।

विशेष—मदिरा सवैया (22 वर्ण), मत्त गयन्द या मालती सवैया (23 वर्ण)
चकोर सवैया (23 वर्ण), सुमुखी सवैया (23 वर्ण), किरीट सवैया (24 वर्ण)
अरसात सवैया (24 वर्ण), दुर्मिल सवैया (24 वर्ण), सुन्दरी सवैया (25 वर्ण)
लवंगलता सवैया (25 वर्ण, अरविन्द सवैया (25 वर्ण) सुख सवैया (26 वर्ण)
उपजाति सवैया-जो विभिन्न छन्दों के मेल से बनता है।

यथा—मत्त गयन्द—या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर कौ तजि डारौं।
(23 वर्ण) S | | S | | S | | S | | S| | S | | S | | SS
[सात भगण] भगण भगण भगण भगण भगण भगण भगण गुरु गुरु
दो गुरु

सुन्दरी सवैया— मरते मरते अरि के दल में वह भीषण मार मचा निकली थी
(25 वर्ण) | | S | | S | | S | | S | | S | | S| | S| | S | | S S
[आठ सगण] सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण सगण गुरु
गुरु

लवंग लता सवैया—	जु योग	लवंग	लतानि	लग्यो	तब सूझ	परे	न कछू	घर	बाहर।	
२५ वर्ण	।ऽ।	।ऽ।	।ऽ।	।ऽ	।।	ऽ।	।ऽ ।	।ऽ	।।	ऽ।।
आठ जगण दो लघु	जगण	जगण	जगण	जगण	जगण	जगण	जगण	जगण	लघु	लघु

अलंकार प्रकरण

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. उपमेय का निषेध तथा उपमान की स्थापना करता है—
(क) अन्योक्ति अलंकार (ख) अतिशयोक्ति अलंकार
(ग) अपन्हुति अलंकार (घ) उपमा अलंकार
उत्तर—[ग] अपन्हुति अलंकार।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में मानवीकरण अलंकार का उदाहरण है—
(क) भारत-धरणी के पानी का, जौहर जग को दिखलाएगें।
(ख) जगीं वनस्पतियाँ अलसाईं मुख धोती शीतल जल से।
(ग) घर में लाशें, बाहर लाशें, जनपथ पर सड़ती हैं लाशें।
(घ) कमल नयन गन टेरत-टेरत अधर बदल कुम्हिलानी।
उत्तर—[ख] जगीं वनस्पतियाँ अलसाई, मुख धोती शीतल जल से।

प्रश्न 3. 'मन मलीन तन सुन्दर कैसे! विष रस भरा कनक-घट जैसे। में अलंकार है—
(क) उदाहरण (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) यमक (घ) उपमा।
उत्तर—[क] उदाहरण।

**प्रश्न 4. ''बादल से काले काले, केशों को देख निराले।
नाचा करते हैं निशि-दिन, पालतू मोर मतवाले॥'' में कौन-सा अलंकार है?**
(क) सन्देह (ख) भ्रान्तिमान
(ग) रूपक (घ) उपमा।
उत्तर—[ख] भ्रान्तिमान।

**प्रश्न 5. ''यह मुख है नीले अम्बर में या यह चन्द्र विमल है।
अँधेरे में दीप जला, या सर में खिला कमल है।'' किस अलंकार का उदाहरण है—**
(क) अतिशयोक्ति (ख)अन्योक्ति
(ग) सन्देह (घ) उपमा।
उत्तर—[ग] सन्देह।

प्रश्न 6. उपमान का उपमेय के रूप में किस अलंकार में वर्णन होता है—
(क) उदाहरण (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) दृष्टान्त (घ) प्रतीप।
उत्तर—[घ] प्रतीप।

प्रश्न 7. विरोध न होने पर भी किस अलंकार में विरोध की प्रतीति होती है?
(क) विरोधाभास (ख) प्रतीप
(ग) अपन्हुति (घ) उदाहरण।
उत्तर—[क] विरोधाभास।

**प्रश्न 8. ''करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात तें सिल पर पड़त निसान॥''
इस दोहे में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)**
(क) दृष्टान्त (ख) अनन्वय
(ग) प्रतीप (घ) उदाहरण
उत्तर—[क] दृष्टान्त।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. अलंकार का क्या अर्थ हैं ?

उत्तर—अलंकार आभूषण या गहने को कहते हैं जो वस्तु को सुन्दर बनाने का साधन बनते हैं। साहित्य में काव्य की शोभा बढ़ाने में अलंकारों का महत्व है।

प्रश्न 2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अलंकार के विषय में क्या कहा है ?

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अलंकार के विषय में कहा है—"भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण, क्रिया का अधिक तीव्रता से अनुभव कराने में सहायक होने वाली उक्ति अलंकार है।"

प्रश्न 3. काव्य में अलंकारों की क्या उपयोगिता है ?

उत्तर—काव्य में अलंकारों की उपयोगिता इसलिए है कि ये अलंकार काव्य की रोचकता में वृद्धि करते हैं।

प्रश्न 4. अलंकार के भेद बताइये।

उत्तर—अलंकार निम्न दो प्रकार के होते हैं—

1. शब्दालंकार—काव्य में जब चमत्कार शब्द पर निर्भर हो, तब शब्दालंकार होता है।

यथा—*तीन बेर खाती थीं वे तीन बेरें खाती हैं।*

स्पष्टीकरण—बेर शब्द में चमत्कार है क्योंकि बेर का अर्थ बार या द्फा है तथा बेर है।

2. अर्थालंकार—काव्य में जब चमत्कार अर्थ पर निर्भर हो तब अर्थालंकार होता है।

यथा—*"अधरों पर अलि मंडराते, केशों पर मुग्ध पपीहा।"*

स्पष्टीकरण—अधरों को लाल पुष्प समझकर भौंरें मँड़राते हैं तथा केशों को बादल समझकर पपीहे मुग्ध होते हैं इस प्रकार अर्थ में चमत्कार है।

3. उभयालंकार—शब्द तथा अर्थ दोनों द्वारा जब काव्य में सौन्दर्य वर्धन हो तो उभयालंकार होता है।

यथा—*"जानि स्याम को स्याम घन नाचि उठे वन मोर।"*

स्पष्टीकरण—स्याम शब्द में उसके अर्थ द्वारा चमत्कारी प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 5. शब्दालंकार का कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर—शब्दालंकार का उदाहरण—

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
जा खाये बौरात जग, वा पाये बौराय ॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में कनक शब्द दो बार आया है। दोनों के ही अर्थों में भिन्नता है। अत: चमत्कार शब्द पर ही निर्भर है।

प्रश्न 6. अर्थालंकार का सोदाहरण परिचय दीजिए।

उत्तर—अर्थालंकार का उदाहरण—

'उदित उदय-गिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज हिय हरषे लोचन भृंग॥'

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में उक्ति में चमत्कार अर्थ पर निर्भर है। अत: अर्थालंकार है।

प्रश्न 7. अनुप्रास अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—अनुप्रास अलंकार—काव्य में जहाँ व्यंजनों की आवृत्ति से चमत्कार उत्पन्न होता है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण—*तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।*

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में 'त' व्यंजन की कई बार आवृत्ति हुई है। अतः अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 8. अनुप्रास अलंकार के प्रमुख भेदों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

अनुप्रास अलंकार के भेद—

1. छेकानुप्रास—जहाँ एक अथवा अनेक वर्णों की केवल एक बार आवृत्ति होती है, वहाँ छेकानुप्रास होता है।

यथा— *खगहा करि हरि बाघ बराहा।*
देखि महिष वृष साजु सराहा॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में र, ब, ष तथा स व्यंजनों की एक एक बार आवृत्ति हुई है।

2. लाटानुप्रास—काव्य में जहाँ बिना अर्थ परिवर्तन के शब्दों अथवा सम्पूर्ण चरण की आवृत्ति होती है, वहाँ लाटानुप्रास होता है।

यथा— *जे नर माया बस, नहीं तिनहिं राम आधार।*
जे नर माया बस नहीं, तिनहिं राम आधार॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में सम्पूर्ण चरण की आवृत्ति हुई है किन्तु अन्वय द्वारा अर्थ में अन्तर आया है।

3. श्रुत्यानुप्रास—काव्य में जब एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्गों की आवृत्ति हो तब श्रुत्यानुप्रास होता है।

यथा—*पंकिल पय पंकज पूरित, फल, फूंल, फुरित फागुन में।*
सौरभ भरता था माधव, बूढ़े से बूढ़े मन में॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में प, फ, ब, भ, म की आवृत्ति हुई है जो ओष्ठ से उच्चारित होने वाले व्यंजन है।

4. वृत्यानुप्रास—जब वर्ण या वर्ण-समूह तीन या अधिक बार आए तब वृत्यानुप्रास होता है।

यथा— *हाट, बाट, कोट, ओट, अटन, अगार पौरि,*
खोरि, खोरि, दौरि, दौरि दीनी अति आगि है।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में ट, अ, र, ख तथा द वर्णों की अनेक बार आवृत्ति हुई है। अतः वृत्यानुप्रास है।

5. अन्त्यानुप्रास—जब छन्द के चरण के अन्त में एक ही वर्ण की आवृत्ति हो वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

यथा— *आज बचपन का कोमल गात,*
जरा का पीला पात।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में 'त' वर्ण की छन्द के चरण के अन्त में आवृत्ति हुई है।

प्रश्न 9. पुनरुक्ति प्रकाश का सोदाहरण परिचय दीजिए।

उत्तर—**पुनरुक्ति प्रकाश**—जब किसी शब्द की आवृत्ति तो हुई हो किन्तु अर्थ तथा अन्वय में कोई अन्तर नहीं आवे, वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है।

यथा—*मधुर-मधुर मेरे दीपक! जल।*

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में मधुर शब्द दो बार आया है। किन्तु अर्थ तथा अन्वय एक ही है।

प्रश्न 10. यमक अलंकार के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—भिन्न-भिन्न अर्थों में एक ही शब्द की आवृत्ति को यमक अलंकार कहते हैं।

यथा—*''सुन्यौ कहूँ तरु अरक ते, अरक समान उदोतु।''*

यहाँ 'अरक' शब्द की 'आक' तथा 'सूर्य' अर्थ में आवृत्ति हुई है अत: यमक अलंकार है। इसी प्रकार—

कर का मन का डारि दै मन का मनका फेरि।

यहाँ 'मनका' माला, दाना और मन का अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अत: यमक अलंकार हैं।

प्रश्न 11. श्लेष अलंकार की परिभाषा और उदाहरण दीजिए।

उत्तर—जहाँ एक ही शब्द अनेक अर्थों को प्रकट करता हुआ केवल एक बार प्रयुक्त होता है वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

अजौं तर्‌यौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक रंग।
नाक वास, वेसरि लह्यौ, बसि मुकतन के संग।

यहाँ 'तर्‌यौना' 'श्रुति' 'नाक' 'मुकतन' शब्दों के एक से अधिक अर्थ है। और सभी घटते हैं अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

प्रश्न 12. उपमा अलंकार की उदाहरण-सहित परिभाषा लिखिए।

उत्तर—जहाँ कवि दो वस्तुओं में रूप, गुण, क्रिया आदि की चमत्कार पूर्ण समानता प्रदर्शित करता है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

यथा—*सुनि सुरसरी सम सीतल बानी।*

यह तुलना चार अंगों की सहायता से प्रकट होती है। वे हैं—

(1) **उपमेय**—वह व्यक्ति या वस्तु जिसका वर्णन हो रहा है।

(2) **उपमान**—वह व्यक्ति या वस्तु जिससे तुलना की जाती है।

(3) **साधारण धर्म**—वह गुण जिसको बताया जाता है।

(4) **वाचक शब्द**—समानता को कहने वाला शब्द । **यथा**—सा, जैसा, इव, सदृश।

उपर्युक्त उदाहरण में 'वाणी' का वर्णन हो रहा है अत: वह 'उपमेय' है। 'सुरसरि' से तुलना की जा रही है अत: यह 'उपमान' है। दोनों में समान गुण 'शीतलता' की तुलना की जा रही है अत: यह साधारण धर्म है। इस तुलना को 'सम' शब्द कह रहा है अत: वह वाचक शब्द हुआ।

पूर्णोपमा—जहाँ उपमा के चारों अंग विद्यमान रहते हैं वहाँ 'पूर्णोपमा' होती है।

लुप्तोपमा—जहाँ उपमा का कोई अंग अनुपस्थित रहता है, वहाँ लुप्तोपमा कही जाती है। इसके तीन रूप हो सकते हैं।

उपमान-लुप्तोपमा—जहाँ उपमान का उल्लेख न किया जाय, वहाँ उपमान-लुप्तोपमा होती है। **यथा**—

किस के समान कोमल हो, उपमान न आता मन में।

यहाँ उपमान अनुपस्थित है अत: उपमान लुप्तोपमा है।

धर्म-लुप्तोपमा—जहाँ साधारण धर्म का कथन न हो वहा धर्म-लुप्तोपमा कही जाएगी।

यथा—*यह शिला सा वक्ष ये चट्टान सी मेरी भुजायें।*

यहाँ दोनों तुलनाओं में साधारण कर्म (कठोर) अनुपस्थित है। अत: यह धर्म-लुप्तोपमा है।

वाचक-लुप्तोपमा—जहाँ वाचक शब्द उपस्थित नहीं होता वहाँ वाचक-लुप्तोपमा होता है।

यथा—........................ *कमल कोमल कर में सप्रीत*

प्रस्तुत उदाहरण में कमल कोमल के मध्य कोई समान वाचक न होने के कारण वाचक-लुप्तोपमा है।

प्रश्न 13. वक्रोक्ति अलंकार—जहाँ शब्द में श्लेष हो अथवा स्वर भेद हो जिसके कारण कहे गए शब्द या वाक्य का कोई दूसरा व्यक्ति, दूसरा अर्थ कल्पित करे, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। **यथा**—*''कौ तुम ? हैं घनश्याम हम, तो बरसो कित जाय।''*

स्पष्टीकरण—राधा प्रश्न करती है ''तुम कौन हो ?

कृष्ण कहते हैं—हम घनश्याम (कृष्ण) हैं।

राधा घनश्याम का अर्थ ''काला बादल'' लगाते हुए कहती है—''घनश्याम हो तो कहीं जाकर जल बरसाओ।''

प्रश्न 14. वक्रोक्ति के प्रमुख भेदों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—वक्रोक्ति के प्रमुख भेद—

1. श्लेष वक्रोक्ति—श्लेष के कारण अन्य अर्थ की कल्पना करने पर श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

यथा—*''को तुम!'' हरि, प्यारी! ''कहाँ वानर को पुर काम ?''*

स्पष्टीकरण—राधा प्रश्न करती हैं—''तुम कौन हो ?''

कृष्ण का उत्तर—''हे प्रिये! मैं हरि (कृष्ण) हूँ।

राधा ''हरि'' का अर्थ बन्दर लगाती हैं और कहती है—

''नगर में हरि (बन्दर) का क्या काम है ? जंगल में जाओ।''

2. काकु वक्रोक्ति—जब उच्चारण के कारण सुनने वाला कोई दूसरा अर्थ ले लेता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।

यथा—*''मै सुकुमारि नाथ बन जोगू।'*

स्पष्टीकरण—कण्ठ ध्वनि के कारण ऐसा लगता है कि जानकी जी श्री राम से कहती हैं कि क्या मैं इतनी सुकुमार हूँ कि वन के कष्ट सहन नहीं कर सकती तथा स्वयं ऐसे सहनशील और कठोर हैं कि वन के कष्ट सहन कर लेंगे। मैं ऐसी सुकुमार नहीं हूँ, जो आपके साथ वन के कष्टों को सहन न कर सकूँ।

प्रश्न 15. अन्योक्ति अलंकार का सोदाहरण परिचय दीजिए।

उत्तर—अन्योक्ति अलंकार—अप्रस्तुत विषय द्वारा प्रस्तुत विषय की प्रतीति करना अन्योक्ति अलंकार होता है।

यथा—*रहिमन पावस के समय, धरी कोकिलन मौन*
अब दादुर वक्ता भये, हमहिं पूछिं है कौन ?

स्पष्टीकरण—दादुर तथा कोकिल प्रसंग द्वारा यह प्रतीति कराया गया है कि मूर्खों की सभा में विद्वानों को कोई सम्मान नहीं प्राप्त हो पाता।

प्रश्न 16. अतिशयोक्ति अलंकार की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

उत्तर—अतिशयोक्ति अलंकार—जब किसी विषय का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया जाय तब अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

यथा—*पँखुरी लगे गुलाब की परिहैं गात खरोट।*

स्पष्टीकरण—नायिका की कोमलता का अतिशय वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह इतनी सुकुमार है कि गुलाब की पंखुड़ी लगने मात्र से उसके शरीर पर खरौचें आ जाती हैं।

प्रश्न 17. अनन्वय अलंकार का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।

उत्तर—अनन्वय अलंकार—काव्य में जब किसी वस्तु को अतुलनीय बताया जाय, एक ही वस्तु को उपमेय और उपमान दोनों कहा जाय वहाँ अनन्वय अलंकार होता है।

यथा—*सुन्दर नन्द किशोर से सुन्दर नन्दकिशोर।*

स्पष्टीकरण—नन्द किशोर से सुन्दर नन्दकिशोर ही हैं। उपमेय को ही उपमान बना दिया गया है।

प्रश्न 18. सन्देह अलंकार को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सन्देह अलंकार—काव्य में जब समानता के कारण एक वस्तु में अनेक वस्तुओं के होने की सम्भावना व्यक्त हो और अनिश्चय की स्थिति उत्पन्न हो जाय, तब सन्देह अलंकार होता है।

यथा— *सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।*
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥

स्पष्टीकरण—द्रोपदी के वस्त्र-हरण की दशा में यह निश्चित करना ही सम्भव नहीं रहा कि साड़ी के मध्य नारी छिपी हुई है अथवा नारी के अन्दर साड़ी है या साड़ी की नारी बनी है।

प्रश्न 19. भ्रान्तिमान अलंकार को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भ्रान्तिमान अलंकार—काव्य में जब समानता के कारण उपमेय में उपमान की भ्रान्ति हो तब भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

यथा—*बादल से काले काले, केशों को देख निराले।*
नाचा करते है निशि-दिन, पालतू मोर मतवाले॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में नायिका के काले बालों में मोरों को काले काले बादलों का भ्रम हो गया और वे नाच उठे।

प्रश्न 20. रूपक अलंकार के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—रूपक अलंकार—काव्य में जहाँ उपमेय में उपमान का भेद-रहित आरोप किया जाता है वहाँ रूपक अलंकार होता है।

यथा—*चरन कमल बन्दों हरिराई।*

स्पष्टीकरण—श्रीकृष्ण के चरणों में कमल का आरोप किया गया है।

प्रश्न 21. रूपक अलंकार के प्रमुख भेदों का परिचय दीजिए।

रूपक अलंकार के भेद—

1. सांग रूपक—जब उपमेय में सभी अंगों सहित उपमान का आरोप प्रकट किया जाय तब सांग रूपक होता है।

यथा—*प्रेम अमिअ मन्दर विरहु, भरत पयोधि गंभीर।*
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित, कृपा सिन्धु रघुवीर॥

स्पष्टीकरण—भरत के हृदय-प्रेम को समुद्र मन्थन के सभी अंगों सहित आरोपित किया गया है।

2. निरंग रूपक—काव्य में जब सामान्य रूप से उपमेय पर उपमान का आरोप प्रदर्शित किया जाय तब निरंग रूपक होता है।

यथा—*अवधेस के बालक चारि सदा, "तुलसी" मन मन्दिर में बिहरैं।*

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में मन पर मन्दिर का आरोप किया गया है। उसके अंगों का कोई वर्णन नही है।

प्रश्न 22. उत्प्रेक्षा अलंकार के विषय में सोदाहरण बताइये।

उत्तर—**उत्प्रेक्षा अंलकार**—काव्य में जब उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाय तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

यथा—***लघु तरणि मानो हंसनी तिरती लहर पर।***

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में तरणि में हंसिनी की सम्भावना प्रकट की गयी है।

प्रश्न 23. प्रतीप अलंकार का लक्षण तथा उदाहरण लिखिए।

उत्तर—**प्रतीप अलंकार**—काव्य में जब प्रसिद्ध उपमान का उपमेय के रूप में वर्णन किया जाय तब प्रतीप अलंकार होता है।

यथा—***उसी तपस्वी से लम्बे थे देवदारु दो चार खड़े।***

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में देवदारु के वृक्षों को तपस्वी के समान लम्बा बताया गया है।

प्रश्न 24. दृष्टान्त अलंकार का लक्षण सोदाहरण लिखिए।

उत्तर—**दृष्टान्त अलंकार**—जहाँ उपमेय वाक्य और उपमान-वाक्य के साधारण धर्मों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भांव प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है। इसमें एक तथ्य का उल्लेख करके अन्य प्रसिद्ध तथ्य से उसका समर्थन किया जाता है। वाचक शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता। यथा—***संगति सुमति न पावई परे कुमति के धंध।***

राखौ मेलि कपूर में हींग न होइ सुगंध॥

स्पष्टीकरण—यहाँ 'संगति से श्रेष्ठता न पाना' इस साधारण धर्म का दोनों वाक्यों में बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव है और समानता सूचक किसी वाचक शब्द का उल्लेख नहीं है, अतः दृष्टान्त अलंकार है।

प्रश्न 25. उदाहरण अलंकार का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—**उदाहरण अलंकार**—काव्य में जहाँ एक बात कहकर उसके उदाहरण के रूप में अन्य बात कही जाय वहाँ उदाहरण अलंकार होता है। (जैसे, ज्यों, जिमि आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।)

यथा—***रहिमन अंसुआ नयन ढरि, जिय दुख प्रकट करेइ।***

जाहि निकारौ गेह ते, कस न भेद कहि देइ॥

स्पष्टीकरण—आँखों से आँसू निकल कर मन के रहस्य को प्रकट कर देते हैं इसी प्रकर जिसे घर से निकाला जायेगा, वह घर के रहस्यों को क्यों नहीं प्रकट करेगा ?

प्रश्न 26. यमक तथा श्लेष अलंकारों में भेद बताइये ?

उत्तर—**यमक और श्लेष**—ये दोनों ही शब्दालंकार हैं। परन्तु यमक अलंकार में एक ही शब्द अनेक बार आता है और भिन्न-भिन्न अर्थ देता है।

यथा—***एक मन मोहन तौ बसि कैं उजार्‌यौ मोहि।***

हिय में अनेक मनमोहन बसावो ना॥

स्पष्टीकरण—यहाँ 'मनमोहन' शब्द दो बार आया है। प्रथम 'मनमोहन' का अर्थ श्रीकृष्ण और दूसरे का 'मन को मोहने वाले' अतः यहाँ यमक अलंकार हुआ।

परन्तु श्लेष में एक ही शब्द, एक से अधिक अर्थ प्रकट करता है।

यथा—***पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून***

स्पष्टीकरण—यहाँ पानी शब्द तीन अर्थ प्रकट कर रहा है। 'मोती' के साथ 'चमक', 'मानुस' के साथ 'प्रतिष्ठा' और 'चून' के साथ 'जल'। इस प्रकार यहाँ श्लेष अलंकार हुआ। यही दोनों अलंकारों में अन्तर है।

प्रश्न 27. उपमा तथा रूपक का भेद उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—ये दोनों अर्थालंकार हैं। उपमा में उपमेय को उपमान के समान बताया जाता है और साधारण 'धर्म' तथा 'वाचक शब्द' का प्रयोग होता है। यथा—

'सिन्धु सा उद्दाम अपरम्पार मेरा बल कहाँ है ?'

स्पष्टीकरण—यहाँ 'बल' को 'सिन्धु' के समान उद्दाम और 'अपरम्पार' बताया गया है। यह तुलना साधारण धर्म (उद्दाम-अपरम्पार) और वाचक शब्द (सा) के द्वारा प्रकट हो रही है अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

प्रश्न 28. संदेह तथा भ्रान्तिमान अलंकारों का भेद उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—सन्देह और भ्रान्तिमान—जहाँ एक उपमेय में अनेक उपमानों का सशंय व्यक्त किया जाता है, वहाँ संदेह अलंकार होता है। इसमें वस्तु का निश्चय नहीं होता।

यथा— ***यह मुख है नीले अम्बर में, या यह चन्द्र विमल है।***
अँधेरे में दीप जला, या सर में खिला कमल है॥

स्पष्टीकरण—यहाँ 'मुख' को देखकर कवि अनेक सशंय प्रस्तुत कर रहा है। यह मुख है अथवा चन्द्रमा है, अथवा दीपक है अथवा कमल है। अतः निश्चय न हो पाने से संदेह अलंकार है।

किन्तु भ्रान्तिमान में, उपमेय में किसी उपमान का भ्रम-पूर्ण निश्चय हो जाता है।

यथा—***'अधरों पर अलि मँडराते, केशों पर मुग्ध पपीहा***

यहाँ 'अधरों' को लाल पुष्प समझकर भौंरों का मँडराना तथा केशों को बादल समझकर पपीहे का मुग्ध हो जाना 'भ्रम' पूर्ण निश्चय के कारण है। अतः यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

प्रश्न 29. उपमा तथा उत्प्रेक्षा अलंकारों का अन्तर समझाइए।

उत्तर—उपमा और उत्प्रेक्षा—उपमा में उपमेय को उपमान के समान बताया जाता है, परन्तु उत्प्रेक्षा में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाती है। यथा—

उपमा—*'लघु तरणि हंसनी सी सुन्दर'*

स्पष्टीकरण—'तरणि' को 'हंसिनी' के समान सुन्दर बताया गया है।

उत्प्रेक्षा—*'लघु तरणि मानो हंसिनी तिरती लहर पर'*

यहाँ 'तरणि' में 'हंसिनी' की सम्भावना प्रकट की गयी है।

प्रश्न 30. विरोधाभास तथा विभावना अलंकार का सोदाहरण अन्तर लिखिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993, 94)

उत्तर—विरोधाभास—काव्य में जहाँ वास्तविक विरोध न होकर विरोध सा जान पड़े, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

यथा—***नैन लगे जब से सखी, तब से नैन लगे न।***

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में 'नैन लगे'' और ''नैन लगे न'' में विरोध जैसा लगता है किन्तु ''नैन लगे'' का अर्थ नायक के नेत्रों से नेत्र मिलना तथा ''नैन लगे न'' का अर्थ नींद न आना है। अतः वास्तव में कोई विरोध नहीं है।

विभावना—जहाँ बिना कारण, अपूर्ण कारण या बिना वास्तविक कारण के कार्य की उत्पत्ति हो वहाँ विभावना अलकार होता है।

यथा—***''आनन रहित सकल रस भोगी।***
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी॥

स्पष्टीकरण—बिना आनन सब रसों का भोग करना तथा बिना वाणी के सफल वक्ता होना यह बताता है कि अकारण से कार्य की उत्पत्ति बताई गई है।

प्रश्न 31. उपमा तथा प्रतीप अलंकार का अन्तर लगभग 20 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 1990)

उत्तर—उपमा—ज़हाँ प्रसिद्ध वस्तु से अप्रसिद्ध वस्तु की तुलना अथवा साम्य प्रकट किया गया हो।

यथा—*'हरि-पद कोमल कमल से।'*

प्रतीप—उपमेय से उपमान की तुलना की जाती है और उपमेय को श्रेष्ठ बताया जाता है।

यथा—*"सीय बदन सम हिमकर नाहीं।"*

प्रश्न 32. नीचे लिखी पंक्तियों में आए अर्थालंकार का नाम और लक्षण लगभग 20 शब्दों में स्पष्ट कीजिए। **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 1990)**

'ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवैं दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥"

उत्तर—अलंकार का नाम उदाहरण अंलकार।

लक्षण—राम का उदाहरण दिया गया है कि वह बिना सेवा के दीनों पर दया रखने वाले हैं। उन जैसा दया करने वाला कोई नहीं है। अत: उदाहरण अलंकार है। 'ऐसो' तथा 'जो' वाचक शब्दों का प्रयोग भी उदाहरण अलंकार की पहचान है।

प्रश्न 33. नीचे लिखी पंक्तियों में आए अर्थालंकार का नाम और लक्षण लगभग 20 शब्दों में लिखिए— **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 1991)**

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे ते फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय॥

उत्तर—अलंकार का नाम—दृष्टान्त अलंकार।

लक्षण—प्रस्तुत पंक्तियों में एक बात कहकर, उससे मिलती-जुलती दूसरी बात कही गयी है। प्रथम चरण उपमेय और द्वितीय उपमान है। भिन्न-भिन्न धर्म होते हुए भी बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होने के कारण दृष्टान्त अलंकार है।

प्रश्न 34. *या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहि कोय।*
ज्यों-ज्यों बूड़ै श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥
उक्त दोहे में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा लक्षण लिखिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 1993)

उत्तर—अलंकार का नाम—विरोधाभास अलंकार।

लक्षण—श्याम रंग में डूबना तथा उज्ज्वल रहना दोनों विरोधी बातें हैं। किन्तु यहाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में मन उज्ज्वल हो जाता है।

प्रश्न 35. *'दुसह दुराजु प्रजानु को क्यों न बढ़ै दुख-दंदु।*
अधिक अँधेरो जग करत मिलि मावस रवि-चंदु॥

उक्त दोहे में प्रयुक्त अलंकार का नाम और लक्षण लिखिए। (उत्तर सीमा 50 शब्द)
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—अलंकार का नाम—दृष्टान्त अलंकार।

लक्षण—दोनों चरणों में भिन्न-भिन्न धर्म हैं किन्तु आशय एक ही है। पहला उपमेय तथा दूसरा उपमान है। दोनों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव है। अत: दृष्टान्त अलंकार है।

प्रश्न 36. विरोधाभास अलंकार की परिभाषा सोदाहरण दीजिए।

(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—अलंकार का नाम—लक्षण—काव्य में जब विरोध न होने पर भी विरोध सा दिखाई पड़े तब विरोधाभास अलंकार होता है।

यथा—*नैन लगे जब से सखी, तब से नैन लगे न।*

स्पष्टीकरण—'नैन लगे' और 'नैन लगे न' में विरोध सा प्रतीत होता है किन्तु वास्तविकता यह है कि 'नैन लगे न' का अर्थ नेत्रों से नेत्र मिलना है तथा 'नैन लगे न' का अर्थ है नींद न आना। अत: दोनों में कोई विरोध न होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

रस प्रकरण

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. शृंगार रस का स्थायी भाव है—

(क) रति (ख) हास (ग) उत्साह (घ) विस्मय।

उत्तर—[क] रति।

प्रश्न 2. हास्य रस का स्थायी भाव है—

(क) हास (ख) उत्साह (ग) निर्वेद (घ) वात्सल्य।

उत्तर—[क] हास।

प्रश्न 3. करुण रस का स्थायी भाव क्या है—

(क) रति (ख) शोक (ग) क्रोध (घ) उत्साह

उत्तर—[ख] उत्साह।

प्रश्न 4. वीर रस का स्थायी भाव है—

(क) हास (ख) उत्साह (ग) भय (घ) क्रोध

उत्तर—[ख] शोक।

प्रश्न 5. रौद्र रस का स्थायी भाव क्या है ?

(क) भय (ख) शोक (ग) क्रोध (घ) उत्साह।

उत्तर—[ग] क्रोध।

प्रश्न 6. भयानक रस के स्थायी भाव को कहते हैं—

(क) क्रोध (ख) उत्साह (ग) भय। (घ) विस्मय।

उत्तर—[ग] भय।

प्रश्न 7. वीभत्स रस का स्थायी भाव है—

(क) निर्वेद (ख) जुगुप्सा (ग) उत्साह (घ) भय

उत्तर—[ख] जुगुप्सा।

प्रश्न 8. अद्‌भुत रस के स्थायी भाव का नाम है—

(क) जुगुप्सा (ख) उत्साह (ग) विस्मय (घ) क्रोध।

उत्तर—[ग] विस्मय।

प्रश्न 9. शान्त रस का स्थायी भाव है—

(क) भय (ख) क्रोध (ग) रति (घ) निर्वेद

उत्तर—[घ] निर्वेद।

प्रश्न 10. वत्सल रस का स्थायी भाव क्या है ?

(क) जुगुप्सा (ख) रति (ग) उत्साह (घ) वत्सलता स्नेह।

उत्तर—[घ] वत्सलता स्नेह।

प्रश्न 11. रस-निष्पत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक है—

(क) आचार्य लोल्लट (ख) अभिनव गुप्त (ग) भट्टनायक (घ) आचार्य मम्मट।

उत्तर—[घ] आचार्य मम्मट।

प्रश्न 12. "कहूँ धूम उठत, बरति कहूँ है चिता,
कहूँ होत रोर, कहूँ अरथी धरी अहै,
कहूँ हाड़ परो, कहूँ जरौ अधजरौ बाँस,
कहूँ गीध-भीर, माँस नोचत परी अहै॥

उक्त पंक्तियों में किस रस की व्यंजना है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

(क) शान्त (ख) हास्य (ग) वीभत्स (घ) करुण।

उत्तर—[ग] वीभत्स।

प्रश्न 13. "स्याम-सुरति करि राधिका, तकति तरनिज़ा-तीरु।
अँसुवनु करति तरौंस को, खिनकु खरौं हों नीरु॥"

उक्त दोहे में किस रस की व्यंजना है? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

(क) शान्त (ख) श्रृंगार (ग) करुण (घ) अद्‌भुत।

उत्तर—[ग] करुण रस।

प्रश्न 14. "राम को रूप निहारति जानकी कंगन के नग की परछाही।
यातै सब सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारति नाहीं॥"

उक्त पंक्तियों में किस रस की व्यंजना है ?

(क) शान्त (ख) करुण (ग) हास्य (घ) श्रृंगार।

उत्तर—[घ] श्रृंगार।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. साधारणतः रस का क्या अर्थ है?

उत्तर—साधारणतः रस का अर्थ है—**स्वाद।**

प्रश्न 2. रस का साहित्य में क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—रस का साहित्य में तात्पर्य है उस विशेष आनन्द से जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने से मन में उत्पन्न होता है।

प्रश्न 3. आचार्य विश्वनाथ ने रस के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

उत्तर—आचार्य विश्वनाथ ने रस के सम्बन्ध में कहा है कि रस काव्य की आत्मा होता है।

प्रश्न 4. प्रमुख रस कौन-कौन से हैं?

उत्तर—प्रमुख रस हैं—(1) श्रृंगार (2) हास्य (3) वीर (4) करुण (5) वीभत्स (6) भयानक (7) रौद्र (8) अद्‌भुत (9) शान्त (10) वत्सल।

प्रश्न 5. भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर—मन के विकार को भाव कहते हैं।

प्रश्न 6. स्थायी भाव किसे कहा जाता है ?

उत्तर—जो भाव अन्य भावों को भी अपने में वैसे ही लीन कर लेता है तथा मनुष्य के चित्त में चिरकाल तक रहकर उसे तन्मय कर देता है उसे स्थायी भाव कहा जाता है।

प्रश्न 7. स्थायी भाव के नाम बताइये।

उत्तर—स्थायी भाव के नाम हैं—(1) हास (2) रति (3) शोक (4) उत्साह (5) भय (6) क्रोध (6) जुगुप्सा (8) विस्मय (9) निर्वेद (10) वात्सल्य।

प्रश्न 8. रस प्रक्रिया में विभाव किसे कहा जाता है ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड1993)

उत्तर—रस प्रक्रिया में भाव की उत्पत्ति के कारण को विभाव कहा जाता है।

प्रश्न 9. विभाव के प्रमुख भेदों के नाम लिखिए।

उत्तर—विभाव के प्रमुख भेद है—(1) आलम्बन विभाव (2) आश्रय विभाव (3) उद्दीपन विभाव ।

प्रश्न 10. आलम्बन विभाव किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिस पर आलम्बित होकर स्थायी भाव जाग्रत होते हैं, उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं।

प्रश्न 11. आश्रय विभाव किसे कहा जाता है ?

उत्तर—जिसके हृदय में स्थायी भाव जाग्रत होता है एवम् स्थित रहता है, उसे आश्रय विभाव कहा जाता है।

प्रश्न 12. उद्दीपन विभाव से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—उद्दीपन विभाव से तात्पर्य स्थायीभाव को उद्दीप्त करने वाली, देश कालिक परिस्थिति अथवा आलम्बन की चेष्टाओं को उद्दीप्त करने वाली परिस्थितियों से है।

प्रश्न 13. अनुभाव किसे कहते हैं ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—आश्रय के हृदय में स्थित स्थायी भाव का ज्ञान उसकी जिन शारीरिक चेष्टाओं या वचनों से होता है उन्हें अनुभाव कहते हैं।

प्रश्न 14. अनुभाव के प्रमुख भेदों का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर—अनुभाव के प्रमुख भेद—

(1) कायिक अनुभाव (2) वाचिक अनुभाव (3) आहार्य अनुभाव (4) सात्विक अनुभाव।

प्रश्न 15. कायिक अनुभाव किसे कहते हैं ?

उत्तर—प्रेमी तथा प्रेमिका की कटाक्ष आदि शारीरिक चेष्टाओं को कायिक अनुभाव कहते हैं।

प्रश्न 16. वाचिक अनुभाव किसे कहा जाता है ?

उत्तर—आश्रय की वाणी द्वारा अभिव्यक्ति को वाचिक अनुभाव कहा जाता है।

प्रश्न 17. आहार्य अनुभाव किसे क्रहते हैं ?

उत्तर—कृत्रिम वेश-रचना को आहार्य अनुभाव कहते हैं।

प्रश्न 18. सात्विक अनुभाव किसे कहते हैं?

उत्तर—आश्रय के किसी प्रकार के बिना यत्न के शारीरिक विकारों को सात्विक अनुभाव कहते हैं।

प्रश्न 19. संचारी भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर—अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं।

प्रश्न 20. शृंगार रस के भेदों के नाम बताइए।

उत्तर—शृंगार रस के भेदों के नाम हैं—1. संयोग शृंगार। 2. वियोग शृंगार।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. काव्य में रस किसे कहा जाता है ?

उत्तर—काव्य में रस उस आनन्द को कहा जाता है, जो काव्य को पढ़ने अथवा अभिनय देखने पर अनुभव किया जाता है।

रस को काव्य की आत्मा माना जाता है। बिना रस काव्य का कोई अस्तित्व नहीं होता जैसा कि आचार्य विश्वनाथ का कथन है— **''काव्यस्य शब्दार्थौ शरीरम् रसादिश्चात्मा।''**

आचार्य भरत के विचार से रस के बिना काव्य की कल्पना ही सम्भव नहीं है। इसीलिए तो साहित्य मर्मज्ञों ने सरसता को साहित्य का अभिन्न अंग मानते हुए कहा है—

''वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।''

पाठक तथा श्रोता साहित्य के पठन-पाठन से द्रवीभूत हुए बिना नहीं रह सकता। वह किसी भी प्रकार के अभिनय को देखकर भी आशय ही प्रभावित होता है। उसके मन में अमूर्त अनुभूति सी स्वत: प्रकट हुआ करती है। इस अनुभूति का प्रकाशित रूप ही रस कहा जाता है।

प्रश्न 2. रस के प्रमुख तत्त्व क्या हैं ?

उत्तर—रस के प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) स्थायी भाव—प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में जो सुप्तावस्था में भाव विद्यमान हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं । ये भाव अवसर के अनुसार जाग्रत होते हैं। प्रमुख स्थायी भाव निम्नांकित हैं— 1. रति 2. शोक 3. हास 4. उत्साह 5. क्रोध 6. भय 7. विस्मय 8. जुगुप्सा 9. निर्वेद 10. वात्सल्य।

(ii) विभाव—स्थायी भावों को जाग्रत करने वाला साधन विभाव कहलाता है, जो स्थायी भावों को निद्रा से जाग्रत करने में सहयोग देता है। इसीलिए विभाव को स्थायी भाव का कारण माना जाता है। विभाव दो प्रकार का होता है—

(1) आलम्बन विभाव (2) उद्दीपन विभाव।

(iii) अनुभाव—आश्रय के हृदय में स्थित स्थायी भाव का ज्ञान जिन शारीरिक चेष्टाओं द्वारा होता है, उन्हें अनुभाव कहते हैं।

(iv) संचारी भाव—स्थायी भाव के साथ उत्पन्न होने वाले मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं विद्वानों ने संचारी भाव तेतीस बताए हैं।

(v) आश्रय—रस की अनुभूति करने वाले व्यक्ति को आश्रय कहते हैं। यह विभाव का ही भेद माना जाता है।

प्रश्न 3. शृंगार रस के दोनों पक्षों का परिचय दीजिए।

उत्तर—शृंगार रस के पक्ष—1. संयोग शृंगार 2. वियोग शृंगार।

स्थायी भाव—रति।

1. संयोग शृंगार—काव्य में जब नायक-नायिका के संयोग की स्थिति का वर्णन हो तब संयोग शृंगार होता है।

यथा— *राम को रूप निहारति जानकी कंगन क नग परछाहीं।*
याते सवै सुधि भूल गई, कर टेकि रही पल टारति नाहीं॥

2. वियोग शृंगार—प्रेम होते हुए भी जहाँ मिलन के अभाव का वर्णन हो, वहाँ वियोग शृंगार होता है।

यथा—*''तज्यौ आँच अब विरह की रह्यौ प्रेम रस भीजि।*
नैननु कै मग जल बहै, हियौ पसीज पसीजि॥''

प्रश्न 4. हास्य रस का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर— रस—हास्य स्थायी भाव—हास

हास्य रस—किसी व्यक्ति की असाधारण आकृति, विचित्र वेश-भूषा, बातचीत अथवा चेष्टाओं को देखकर जो विनोद का भाव उत्पन्न होता है उसकी विभावादिकों से पुष्टि ही हास्य रस कहलाती है।

यथा—*''जेहिं दिसि नारद बैठे फूली, सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली।*
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं, देखि-दसा-हर-गन मुसकाहीं॥''

प्रश्न 5. वीर रस का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।

उत्तर—रस—वीर रस। **स्थायी भाव**—उत्साह।

वीर रस—किसी की विपरीत चेष्टाओं को देखकर जब किसी के हृदय में उसके नाश की भावना उठती है और उसके कार्यरूप में परिवर्तित होने का वर्णन होता है तब वीर रस होता है।

यथा—*''जब दहक उठा सीमान्त, पुकारा माँ ने शीश चढ़ाने को।*
नौ जवाँ लहू तब तड़प उठा, हँसते-हँसते बलि जाने को॥''

प्रश्न 6. करुण रस का स्थायी भाव तथा उदाहरण लिखिए।

उत्तर—रस—करुण रस। **स्थायी भाव**—शोक।

करुण रस—धन अथवा किसी प्रिय वस्तु के नष्ट हो जाने पर अपने तथा अपने प्रिय के अनिष्ट की अशंका से, उत्पन्न दु:ख को करुण रस कहते हैं।

यथा— *शोक विकल सब रोवहिं रानी, रूप, शील बल, तेज बखानी।*
करहिं विलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमि तल बारहिं बारा॥

प्रश्न 7. रौद्र रस की परिभाषा देते हुए उदाहरण लिखिए।

उत्तर—रस—रौद्र रस। **स्थायी भाव**—क्रोध।

रौद्र रस—व्यक्ति की निन्दा, देशापमान, जाति निन्दा से उत्पत्र क्रोध, प्रति पक्षी की अनुचित चेष्टाओं से उत्पन्न हृदय के क्रोध का वर्णन रौद्र रस कहलाता है।

यथा—*''उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उनका लगा।*
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा॥''

प्रश्न 8. भयानक रस का परिचय उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—जब 'भय' नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव आदि के संयोग से रस दशा को पहुँचता है तो वह भयानक रस कहा जाता है। **यथा**—

हाट, बाट, कोट, ओठ, अटनि, अगार, पौरि,
खोरि-खोरि दौरि दौरि दीनी अति आगि है।
आरत पुकारत, सम्हारत न कोऊ काहू,
व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि है॥

स्पष्टीकरण—यहाँ हनुमान द्वारा लंका जलाये जाने से भयभीत हो रहे राक्षसों का वर्णन है। स्थायी भाव भय है। आलम्बन हनुमान और जलती हुई लंका है। आश्रय राक्षस-राक्षसियाँ हैं। हनुमान का विकराल रूप, अग्नि की बढ़ती हुई ज्वालाएँ और उनका दौड़-दौड़कर आग लगाना

आदि उद्दीपन हैं। राक्षसों का आर्त होकर पुकारना, व्याकुल होकर भागना इत्यादि अनुभाव है तथा त्रास, चिन्ता, शंका, प्रलाप आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ भयानक रस की व्यंजना हुई है।

प्रश्न 9. वीभत्स रस की परिभाषा देते हुए उसका उदाहरण दीजिए।

उत्तर—जहाँ 'जुगुप्सा' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है, वहाँ वीभत्स रस होता है। **यथा**—

घर में लाशें, बाहर लाशें, जनपथ पर सड़ती हैं लाशें।
आंखें नृशंस यह दृश्य देख मुँद जातीं, घुटती हैं श्वांसें॥

स्पष्टीकरण—यहाँ बंगला देश में पाकिस्तानी अत्याचार का वर्णन है। स्थायी भाव 'जुगुप्सा' (घृणा) है। आलम्बन सड़ती हुई लाशें और आश्रय जन समुदाय या दर्शक है। घृणात्मक दृश्य ही उद्दीपन है और आँखें मूँदना, श्वांस घुटना आदि अनुभाव हैं। ग्लानि, दैन्य, निर्वेद आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार विभावादि से पुष्ट होता हुआ जुगुप्सा भाव वीभत्स रस में परिणत हो रहा है।

प्रश्न 10. अद्भुत रस की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर—जहाँ विस्मय नामक स्थायी भाव विभाव आदि से पुष्ट होकर रस-दशा को प्राप्त होता है, वहाँ अद्भुत रस माना जाता है। यथा—

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा।
तन पुलकित मुख वचन न आवा। नयन मूँदि चरनन सिर नावा॥

स्पष्टीकरण—यहाँ पर कौशल्या द्वारा भगवान् राम के दो बाल-रूप देखकर चकित होने का वर्णन है। स्थायी भाव विस्मय है। आलम्बन राम के दो बाल स्वरूप हैं, और आश्रय कौशल्या है। शरीर का पुलकित होना, मुख से वचन न निकलना, नेत्र बन्द कर लेना, सिर झुकाना आदि अनुभाव हैं। वितर्क, जड़ता इत्यादि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ अद्भुत रस का परिपाक हो रहा है।

प्रश्न 11. शान्त रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—जहाँ 'निर्वेद' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव आदि से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है, वहाँ शान्त रस माना जाता है। यथा—

अब लौं नसानी अब न नसैहों
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिर न डसैहों।
परबस जानि हँस्यों इन इंद्रिन निज बस ह्वै न हँसैहों।
मन मधुकरपन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहों॥

स्पष्टीकरण—यहाँ तुलसी अपने हृदय की स्थिरता और संसार की व्यर्थता आदि का वर्णन कर रहे हैं। **स्थायी भाव** निर्वेद है। **आलम्बन** आय का व्यर्थ जाना है। इन्द्रियों द्वारा उपहास उद्दीपन है। ज्ञान-प्राप्ति, संसार की असारता एवं मन को राम के चरणों में लगाने आदि के कथन अनुभाव हैं। धृति, वितर्क, मति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ शान्त रस का निरूपण है।

प्रश्न 12. वत्सल रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—जहाँ वात्सल्य नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होकर रसत्व को प्राप्त होता है, वहाँ वत्सल रस होता है। इसके संयोग और वियोग दो भेद माने गये हैं। यथा—**संयोग वत्सल**—***जसोदा हरि पालने झुलावैं।***

हलरावैं दुलराइ मल्हावैं जोइ सोइ कछु गावैं। ×××
कबहुँ पलक हरि मूँद ह्वै लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि करि करि सैन बतावैं। ×××

जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ, सो नँद भामिनि पावैं॥

स्पष्टीकरण—यहाँ यशोदा का शिशु कृष्ण के प्रति प्रेम वर्णित है। स्थायी भाव वात्सल्य है। आलम्बन शिशु कृष्ण हैं। आश्रय यशोदा हैं। उद्दीपन कृष्ण की चेष्टाएँ हैं यथा पलक मूँदना, अधर फड़काना आदि। हिलाना, दुलार करना, गाना, संकेत करना आदि अनुभाव है। हर्ष आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ संयोग वत्सल रस की सफल योजना है।

वियोग वत्सल—*जसोदा बार-बार यौं भाखै।*

हैं कोउ ब्रज में हितू हमारौ चलत गुपालहिं राखैं ॥ ×××

कमल नयन गुन टेरत-टेरत अधर बदन कुम्हिलानी।

'सूर' कहाँ लगि प्रगटि जनाऊँ दुखित नंदजू की रानी॥

स्पष्टीकरण—यहाँ कृष्ण-बलराम के मथुरा गमन पर यशोदा के वियोग-दु:ख का वर्णन है। आलम्बन कृष्ण का मथुरा गमन है। आश्रय यशोदा है। श्रीकृष्ण की लीला आदि का स्मरण उद्दीपन है। गुण-कथन, अधर-बदन का कुम्हलाना आदि अनुभाव है। चिन्ता, वितर्क, स्मृति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार वियोग वत्सल की सफल व्यंजना हुई है।

प्रश्नन 13. संचारी भाव किसे कहते हैं? नाम सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—**संचारी भाव**—वे मनोविकार जो स्थायी भावों के साथ उत्पन्न होते हैं, संचारी भाव कहे जाते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि विभाव और अनुभाव से परिपुष्ट स्थायी भाव को अस्वाद योग्य बनाने में जो भाव कुछ समय सहायता करके विदा हो जाते हैं, उन्हें संचारी भाव कहते हैं।

संचारी भावों के नाम—1. निर्वेद 2. स्मृति 3. शंका 4. दीनता 5. चिन्ता 6. ग्लानि 7. मद 8. मोह 9. ईर्ष्या 10. चपलता 11. श्रम 12. लज्जा 13. उग्रता 14.स्वप्न 15. आलस्य 16. हर्ष 17. गर्व 18. जड़ता 19. वितर्क 20. अपस्मार 21. क्रोध 22. व्याधि 23. धैर्य 24. निबोध 25. आवेग 26. उन्माद 27. त्रास 28. मृत्यु 29. निद्रा 30. औत्सुम्य 31. मति 32. अविहत्थ 33. विषाद।

प्रश्न 14. रस-प्रक्रिया में अनुभाव किसे कहते हैं ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—**अनुभाव**—विभाव से उद्दीप्त होने वाले कार्य को अनुभाव कहते हैं यथा—

कहि पठई जिय भावती, पिय आवन की बात।

फूली आंगन में फिरै, अंग न अंग समात।।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में नायिका को जब अपने प्रियतम के आगमन का समाचार प्राप्त होता है तो वह आनन्दित हो उठती है। अंग-अंग आनन्द से पूर्ण हो जाता है जो उसके अंग-अंग से अनुभव हो रहा है।

अनुभाव के भेद—(1) कायिक अनुभाव (2) सात्विक अनुभाव।

(1) कायिक अनुभाव—शरीर द्वारा किये जाने वाले अनुभाव को कायिक अनुभाव कहते हैं। हाथ पटकना, इधर-उधर घूमना आदि किसी भी प्रकार की चेष्टाएँ कायिक अनुभाव हैं।

(2) सात्विक अनुभाव—ऐसे अनुभव जो सत्व से उत्पन्न होकर शरीर के अंगों पर अंकित हो जाते हैं, सात्विक अनुभाव कहे जाते हैं। स्वेद झलकना, शरीर का रोमांचित हो जाना, स्वर टूटना, अंगों का जकड़ जाना, शरीर में कम्पन होना, मूर्छित होना, अश्रु धारा बहना अथवा चेहरे का रंग उड़ना सात्विक अनुभाव के लक्षण हैं।

काव्य-गुण-दोष प्रकरण

सउत्तर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. काव्य के प्रमुख गुण हैं—

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँ

उत्तर—[ख] तीन।

प्रश्न 2. ओज किस रस में मिलता है?

(क) शान्त रस (ख) वीभत्स रस (ग) रौद्र रस (घ) वीर र

उत्तर—[ग] रौद्र रस।

प्रश्न 3. किस रस में माधुर्य गुण अधिक पाया जाता है?

(क) करुण रस में (ख) श्रृंगार रस में (ग) हास्य रस में. (घ) वीर रस

उत्तर—[क] करुण रस में।

प्रश्न 4. किस पंक्ति में अक्रमत्व दोष है ? **(माध्य. शिक्षा बोर्ड 199**

(क) विश्व में लीला निरन्तर कर रहे वे मानवी

(ख) रावण के दरबार में स्थित अंगद का पाद

(ग) मारुत नन्दन मारुत को, मन को, खगराज को वेग लजायौ

(घ) वेद नखत ग्रह जोरि अरध कर को बरजे हम खात।

उत्तर—[ग] मारुत नन्दन मारुत को, मन को, खगराज को वेग लजायौ।

प्रश्न 5. काव्य गत दोषों की संख्या है—

(क) तीन (ख) पाँच (ग) सात (घ) द

उत्तर—[क] तीन।

प्रश्न 6. दुष्क्रमत्व दोष किसमें हैं—

(क) मारुत नन्दन मारुत कौ, मन को, खगराज को वेग लजायौ

ख) नृप मोकौ गिय दीजिए अथवा मत्त गजेन्द्र

(ग) लगे थूककर चाटने इतनी जल्दी आप

(घ) तत्त्व ज्ञान की ज्योति सों, भी आशय कौ नाश।

उत्तर—[ख] नृप मोकौ गिय दीजिए अथवा मत्त गजेन्द्र।

प्रश्न 7. ग्राम्यत्व दोष किसमें है ?

(क) ऐरे घन श्याम तेरे रूप की है चातकी (ख) फूलों की सौन्दर्यता देती है आनन्द

(ग) कूकी-कूकी कलित, कुंजन करत किलोल (घ) मसल दिये नायक ने गोरे-गोरे गाल।

उत्तर—[घ] मसल दिये नायक ने गोरे-गोरे गाल।

सउत्तर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. काव्य गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर—आत्म तत्व के रूप में विद्यमान रस के धर्मों को काव्य-गुण कहते हैं।

प्रश्न 2. ओज गुण से क्या अभिप्राय है ? **(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993**

उत्तर—ओज गुण से अभिप्राय उस गुण से है जो उत्साह, आवेश या चित्त विस्तारक हो।

प्रश्न 3. काव्य में माधुर्य गुण किसे कहते हैं ? (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—चित्त जिस गुण से द्रवित हो जाय, उसे माधुर्य गुण कहते हैं।

प्रश्न 4. काव्य-दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिन कारणों से काव्य का अपकर्ष होता है, उन्हें काव्य-दोष कहते हैं।

प्रश्न 5. ग्राम्यत्व दोष किसे कहा जाता है ?

उत्तर—गँवारू शब्दों का साहित्यिक भाषा में प्रयोग होने पर ग्राम्यत्व दोष कहा जाता है।

प्रश्न 6. दुष्क्रमत्व दोष किसे कहते है ?

उत्तर—जब काव्य में दो शब्दों का क्रम लोक या शास्त्र के विरुद्ध हो तब दुष्क्रमत्व दोष होता है।

प्रश्न 7. अकुमत्व दोष कब होता है ?

उत्तर—काव्य में जब किसी शब्द का अनुचित क्रम से प्रयोग हो, तब अक्रमत्व दोष होता है।

प्रश्न 8. श्रुति कटुत्व दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर—काव्य में जब कटु लगने वाले कठोर वर्णों का प्रयोग हुआ हो तब श्रुति कटुत्व दोष होता है।

प्रश्न 9. न्यून पदत्व दोष का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—काव्य में जब एक पद की न्यूनता हो तब न्यून पदत्व दोष होता है।

प्रश्न 10. च्युत संस्कृति दोष कब होता है ?

उत्तर—काव्य में जब व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध शब्दों का प्रयोग हुआ हो, तब च्युत संस्कृति दोष होता है।

प्रश्न 11. अश्लीलत्व दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर—काव्य में जब घृणास्पद अथवा अमंगलसूचक शब्दों का प्रयोग होता है, तब अश्लीलत्व दोष होता है।

प्रश्न 12. अधिक पदत्व दोष किसे कहते हैं?

उत्तर—काव्य में जब अनुपयुक्त शब्दों का प्रयोग हुआ हो, तब अधिक पदत्व दोष होता है ।

प्रश्न 13. आचार्य मम्मट ने काव्य-दोषों को किस प्रकार विभाजित किया है।

उत्तर—आचार्य मम्मट ने काव्य-दोषों को तीन वर्गों में विभाजित किया है।

1. शब्दकोष 2. अर्थ दोष 3. रस दोष।

प्रश्न 14. प्रसाद गुण किसे कहा जाता है ?

उत्तर—चित्त में सहज और सरल अर्थ के कारण पूर्ण रूपेण रम जाने वाला गुण प्रसाद गुण कहा जाता है।

सउत्तर लघु एवम् निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. काव्य गुण का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए यह बताइये कि काव्य-गुण कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर—काव्य-गुण काव्य की शोभा वृद्धि में सहायक होते हैं। अतः काव्य-गुण उन्हें कहा जाता है, जिनसे काव्य सौन्दर्य में उत्कर्ष प्राप्त होता है।

काव्य में गुणों द्वारा रस का उत्कर्ष होता है। जहाँ काव्य-गुण होंगे वहीं रस भी होगा। गुणों को काव्य की शोभा कहा जा सकता है।

काव्य-गुणों के प्रकार—अधिकांशतः विद्वानों की दृष्टि में काव्य के निम्नांकित गुण हैं—

1. ओज गुण 2. माधुर्य गुण 3. प्रसाद गुण।

संस्कृत आचार्यों का काव्य-गुणों के सम्बन्ध में एक सा मत नहीं है। **आचार्य भरत** के मतानुसार काव्य के दस गुण हैं। **आचार्य आनन्दवर्धन** के विचार से काव्य के तीन गुण हैं। **भोजराज** के मत के अनुसार काव्य के चौबीस गुण हैं।

प्रश्न 2. ओजगुण का उदाहरण देते हुए उसका परिचय दीजिए।

उत्तर—ओजगुण— जिस रचना का श्रवण करके ओजस्वी भावनां का उदय होता है वहाँ काव्य में ओज गुण होता है। इसमें कर्ण कटु शब्दों का प्रयोग होता है और अति दीर्घ समासों की अधिकता रहती है।

विशेष—क्लिष्ट एवम् कर्कशता से युक्त ओज को वीभत्स, वीर तथा रौद्र के लिए उपयुक्त माना गया है।

उदाहरण—*दिल्लिय दलन दबाय कर, सिव सरजा निस्संक।*
लुटि लियौ सूरति सहर बंकक्करि अति डंक॥
बंकक्करि अति डंकक्करि अस संकक्कुलि खल।
सोचच्चकित भरोचच्चलिय विमोचच्च खजल॥

प्रश्न 3. माधुर्य गुण का उदाहरण देते हुए उसे समझाइये। (माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—माधुर्य गुण—जिस रचना द्वारा अन्तःकरण आनन्द से द्रवित होता हो उस रचना में माधुर्य गुण होता है।

माधुर्य गुण शृंगार, करुण तथा शान्त रसों में प्राप्त रहता है। माधुर्य गुण ओज गुण के सर्वथा विपरीत होता है।

विशेष—माधुर्य गुण ओज से पूर्ण रचना में वर्गीय वर्गो, संयुक्ताक्षरों एवम् लम्बे-लम्बे समास वाले शब्दों का दोष होता है।

उदाहरण—*मन्द-मन्द चढ़ि चल्यौ चैत-मिसि चन्द चारु,*
मन्द-मन्द चाँदनी पसारत लतन तें।
मन्द-मन्द जमुना तरंगिनि हिलौर लेति,
मन्द-मन्द मोद मंजु-मल्लिका-सुमनते ॥

प्रश्न 4. प्रसाद गुण का उदाहरण देते हुए उसका परिचय दीजिए ।

उत्तर—प्रसाद गुण—जहाँ सरल तथा सुबोध शब्दों द्वारा वाक्यों की रचना की गयी हो, वहाँ प्रसाद गुण होता है।

विशेष—प्रसाद गुण सभी रसों में मिलता है तथापि शृंगार, अद्भुत, हास्य तथा करुण रस में अधिकांशतः प्रसाद गुण होता है।

उदाहरण— *यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंवल फूल।*
दिन दस के व्यौहार कौं, झूठे रंग न भूल॥

प्रश्न 5. काव्य-दोष किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के हैं?

उत्तर—काव्य-दोष—जिन कारणों से काव्य का अपकर्ष होता है, उन्हें काव्य-दोष कहते हैं। काव्य दोषों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1. **शब्द दोष**—शब्द में पाए जाने वाले दोष।
2. **अर्थ दोष**—अर्थ में पाए जाने वाले दोष।
3. **रस दोष**—रस परिपाक में पाएं जाने वाले दोष।

प्रश्न 6. शब्द दोष का उदाहरण देते हुए समझाइये।

उत्तर—शब्द दोष—रचना में जब शब्द में दोष मिलता है तब शब्द दोष कहा जाता है।

यथा— *कवि के कठिनता कर्म की करते नहीं हम धृष्टता।*
पर क्या न विषमोत्कृष्टता करती विचारोत्कृष्टता॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में "विषमोत्कृष्टता" तथा "विचारोत्कृष्टता" ऐसे शब्द हैं जो कानों को खटकते हैं। अतः शब्दों में दोष हैं।

प्रश्न 7. अर्थ दोष का उदाहरण देते हुए उसका परिचय दीजिए।

उत्तर—**अर्थ दोष**—रचना में जब अर्थ की दृष्टि से अपकर्ष होता है, तब अर्थ दोष कहलाता है।

यथा— *लीन्हों उखारि पहार विशाल चाल्यो तेहि काल विलम्ब न लायो।*
मारुत नन्दन मारुत को, मन को खगराज को वेग लजायो॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में हनुमान जी की गति को पवन, मन तथा गरुड़ के वेग से भी अधिक तीव्र बताया है। यहाँ मन शब्द सबसे पीछे होना चाहिए था, ताकि क्रम का भली भाँति निवाह होता।

प्रश्न 8. रस दोष का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर—**रस दोष**-काव्य में जब रस-परिपाक में अवरोध उत्पन्न होता है, तब रस-दोष होता है।

यथा— *करो प्रेम मधुपान शीघ्र ही यथा समय कर यान विधान।*
यौवन के सरसाल योग में काल रोग है अति बलवान ॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण शृंगार रस का है किन्तु "काल रोग" का प्रयोग शृंगार रस में दोषपूर्ण है। अतः यहाँ रस दोष है।

प्रश्न 9. च्युति संस्कृति दोष का सोदाहरण लक्षण बताइये। अथवा
किन्हीं तीन काव्य दोषों के नाम लिखिए तथा उनमें से किसी एक को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1994)

उत्तर—तीन काव्य दोषों के नाम—

1. च्युति संस्कृति दोष 2. अश्लीलत्व दोष 3. न्यून पदत्त्व दोष।

च्युति संस्कृति दोष—च्युति संस्कृति शब्द दोष है। जब काव्य में व्याकरण के नियमों के विरुद्ध शब्द प्रयोग होता है, तब च्युति संस्कृति दोष माना जाता है।

उदाहरण—फूलों की लावण्यता देती है आनन्द।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में लावण्यता शब्द का प्रयोग अशुद्ध है क्योंकि लावण्य शब्द भाव वाचक है और इसमें 'ता' प्रत्यय लगाना व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धि है।

प्रश्न 10. किन्हीं दो काव्य दोषों के नाम और उनके उदाहरण लिखिए।
(माध्य. शिक्षा बोर्ड 1993)

उत्तर—दो काव्य दोषों के नाम—

1. दुष्क्रमत्व दोष 2. अक्रमत्व दोष।

1. दुष्क्रमत्व दोष—जब काव्य में लोक तथा शास्त्र विरुद्ध बात कही गयी हो, तब दुष्क्रमत्व दोष होता है।

उदाहरण—*लीन्हों उखारि पहार विसाल चाल्यो तेहि काल विलम्ब न लायो।*
मारुत नन्दन, मारुत को, मन को खगराज को वेग लजायो॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में हनुमानजी के वेग के सम्बन्ध में कहा गया है कि उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उसने वायु, मन तथा गरुड़ के वेग को भी लज्जित कर दिया। लोक विरुद्ध बात इस रचना में यह है कि मन की गति सर्वाधिक है। अतः क्रम में उसे अन्त में रखना चाहिए था न कि मध्य में अतः दुष्क्रमत्व दोष है।

2. अक्रमत्व दोष—काव्य में जब शब्दों का क्रम उचित रूप में न हो तब अक्रमत्व दोष होता है।

उदाहरण—*सीता जू रघुनाथ को अमल कमल की माल।*
पहरायी जनु सबन की, हृदयांवलि भूपाल॥

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में सबन शब्द का प्रयोग भूपाल शब्द के पश्चात् होना चाहिए था। अतः क्रम का निर्वाह न होने के कारण अक्रमत्व दोष है।

प्रश्न 11. अश्लीलत्व दोष के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—अश्लीलत्व दोष—रचना में जब घृणास्पद, अमंगलकारी अथवा लज्जास्पद शब्दों का प्रयोग हुआ हो तब अश्लीलत्व दोष होता है।

उदाहरण—*जीमूतन दिन पितृगृह लय पग यह गुदरान।*

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में पितृगृह अमंगलार्थक तथा गुदरान लज्जास्पद है। अतः यहाँ अश्लीलत्व दोष है।

प्रश्न 12. श्रुति कटुत्व दोष के विषय में तुम क्या जानते हो ?

उत्तर—श्रुति कटुत्व दोष—काव्य में जहाँ कठोर शब्दों का प्रयोग हुआ हो जो सुनने में भी कटु हों वहाँ श्रुति कटुत्व दोष होता है।

उदाहरण—*कार्तार्थी तब होहुँगी, मिलिहैं जब पिय आय।*

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में कार्तार्थी शब्द सुनने में कटु है। अतः यहाँ श्रुति कटुत्व दोष है।

प्रश्न 13. ग्राम्यत्व दोष के विषय में सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

उत्तर—ग्राम्यत्व दोष—काव्य में जब ग्रामीण शब्दों का प्रयोग हो, तब ग्राम्यत्व दोष होता है।

उदाहरण—*धनु है यह गौरम दाइन नाहीं।*

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में गौरम दाइन शब्द लोक प्रसिद्ध नहीं है मात्र बुन्देलखण्ड के कुछेक भागों में प्रयुक्त होता है। प्रान्तीय शब्द का साहित्यिक भाषा में प्रयोग होने के कारण ग्राम्यत्व दोष है।

प्रश्न 14. न्यून पदत्व दोष—रचना में जब एक पद की न्यूनता हो, आवश्यक पद का प्रयोग न हुआ हो तब न्यून पदत्व दोष होता है।

उदाहरण—*तो भी सच है, धर्मराज, ज्वाला नयी नहीं थी।*
दुर्योधन के मन में वह, वर्षों से खेल रही थी।

स्पष्टीकरण—प्रस्तुत उदाहरण में यह आवश्यक था कि प्रथम चरण के पश्चात् 'यह' पद का प्रयोग होता किन्तु प्रयोग न होने से न्यून पदत्त्व दोष है।

प्रश्न 15. अधिक पदत्त्व दोष का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

उत्तर—अधिक पदत्त्व दोष—रचना में जब कोई पद सर्वथा अनुपयुक्त हो या अर्थ की दृष्टि से अधिक हो, तब अधिक पदत्व दोष होता है।

उदाहरण—*''डसे तिहारे शत्रु को खग लता अहिराज।''*

अथवा

''मुख से वचन बोलता है तो कौन रोक सकता है उसे।''

स्पष्टीकरण—प्रथम उदाहरण में 'लता' अनुपयुक्त है तथा द्वितीय उदाहरण में 'वचन' की कोई आवश्यकता नहीं है।

न्यू पैटर्न

सुबोध

सीनियर सैकेण्डरी

भाषा भूषण

ऐच्छिक-हिन्दी

(सम्पूर्ण अध्ययन)

कक्षा 12





